चिरसंगिनी

रानी देवी

को

सस्नेह

प्रकाशकीय

हिंदुस्तानी एकेडेमी की बहुत समय से एक योजना रही है कि प्रमुख हिंदी कवियों की समस्त रचनाओं के ऐसे संस्करण प्रकाशित किये जायँ जिनके पाठ यथासंभव पूर्णतया प्रामाणिक तथा अधिकारी विद्वानों द्वारा सुसंपादित हों। मुझे प्रसन्नता है कि इस योजना का पहला ग्रंथ, 'जायसी-ग्रंथावली' के रूप में, पाठकों के समक्ष है।

इस ग्रंथ के संपादक डा० माताप्रसाद गुप्त का हिंदी पाठकों से परिचय कराना अनावश्यक है। डा० गुप्त इधर अनेक वर्षों से अपनी भाषा की पुरानी कृतियों के पाठ-निर्णय के कार्य में लगे रहे हैं; और उन्होंने इस दिशा में अच्छा परिश्रम ही नहीं किया है, किंतु अन्य संशोधकों के लिये मार्ग प्रशस्त किया है। अभी हमारे साहित्य में पाठ-संबंधी अनुसंधान-कार्य प्रारंभिक अवस्था में ही है, और चाहे जिस बड़े कवि को ले लें, हमें उसकी रचनाओं के पाठ-निर्णय में अनेक समस्याओं का सामना करना पड़ता है। इन समस्याओं को हम शास्त्रीय ढंग से कैसे सुलझा सकते हैं, इस विषय में डा० गुप्त के कार्य से इस प्रकार की शोध में लगे हुए लोगों को प्रेरणा मिलेगी, इसकी मुझे पूर्ण आशा है। निश्चय ही यह संस्करण हिंदी के एक बड़े अभाव की पूर्ति करेगा।

इस संबंध में मुझे हिंदुस्तानी एकेडेमी की ओर से अवध के ब्रिटिश इंडियन असोसिएशन के प्रति कृतज्ञता प्रकाश करना है। एकेडेमी को अपने साहित्यिक कार्यों के लिये असोसिएशन से ४०००) की सहायता प्राप्त हुई थी। इसी रकम से एकेडेमी ने २०००) योग्य संपादक को पारिश्रमिक के रूप में भेंट किया है।

हिंदुस्तानी एकेडेमी
उत्तर प्रदेश, इलाहाबाद
नवंबर, १९५१ ई०

धीरेन्द्र वर्मा
मंत्री तथा कोषाध्यक्ष

विषय-सूची

विषय | पृष्ठ-संख्या

भूमिका

पदमावत

अखरावट

आखिरी कलाम

महरी बाईसी

चित्र-सूची

———

वक्तव्य

जायसी के 'पदमावत' की विभिन्न प्रतियों में कितना पाठभेद है, यह उसके किसी भी छंद को लेकर देखा जा सकता है। उदाहरण के लिए आगे एक औसत पाठभेद के छंद के स्लेट्स विभिन्न प्रतियों से लेकर दिए गए हैं। इस पाठभेद के मुख्य कारण निम्नलिखित हैं :

(१) प्रतियों में पाठ-संशोधन की प्रवृत्ति बहुत-कुछ व्यापक रूप में पाई जाती है—पहले का पाठ किसी प्रति के अनुसार था, किंतु पीछे उसके स्वामी को किसी अन्य प्रति का पाठ अधिक प्रामाणिक लगा, और उसने अपनी पूरी प्रति का पाठ उस अन्य प्रति के अनुसार संशोधित कर डाला, यहाँ तक कि पूर्ववर्ती पाठ यत्न करने पर भी कठिनाई से पढ़ा जा सकता है।

(२) प्रतियाँ कभी-कभी एक से अधिक आदर्शों से तैयार की हुई हैं, यह बात उनके हाशियों में स्वतः उनके प्रतिलिपिकारों के हाथों द्वारा दिए हुए पाठांतरों से ज्ञात होती है।

(३) पाठ-परम्परा प्रायः उर्दू (फ़ारसी-अरबी) लिपि में चली है; प्रतियाँ अधिकतर इसी लिपि में हैं, और अच्छी प्रतियाँ तो प्रायः इसी लिपि में हैं। जो प्रतियाँ नागरी लिपि में प्राप्त हुई हैं, उनके भी पूर्वज उर्दू (फ़ारसी-अरबी) लिपि के प्रमाणित हुए हैं। कहने को आवश्यकता नहीं कि उर्दू लिपि मुख्यतः अपने शिकस्त की प्रवृत्तियों के कारण मूल पाठ की विकृति में बहुत सहायक हुई है। किंतु आदि प्रति की लिपि नागरी थी, जिसका पर्याप्त ज्ञान उस के उर्दू के प्रतिलिपिकार—या प्रतिलिपिकारों—को नहीं था, इस कारण भी मूल पाठ की कुछ विकृति हुई है।

(४) 'पदमावत' की भाषा से भी उसके प्रतिलिपिकार यथेष्ट रूप से परिचित नहीं थे—विशेष रूप से उसकी भाषा के ग्रामीण, प्राकृतोद्भूत, हिंदी रूप से। इसलिए उन्होंने भद्दी भूलें की हैं, और ऐसा ज्ञात होता है कि जहाँ-कहीं उन्हें आदर्श का पाठ अर्थहीन ज्ञात हुआ है, पाठ-परिवर्तन में उन्होंने संकोच नहीं किया है।

(५) 'पदमावत' की छंद-योजना से—विशेष रूप से उसके दोहों के रूप से—भी उसके प्रतिलिपिकार यथेष्ट रूप से परिचित नहीं थे, और इसलिए उन्होंने 'पदमावत' के छंदों को—मुख्यतः दोहों को—अपने जाने हुए ढाँचे में ही घटा-बढ़ा कर बैठाने की चेष्टा की है।

(६) 'पदमावत' की प्रतियों में पाठ की पंक्तियाँ प्रायः छंदों की पंक्तियों के अनुसार रक्खी गई थीं, सात अर्द्धालियाँ और उनके अनंतर दोहे की दो पंक्तियाँ एक दूसरे से अलग-अलग लिखी गई थीं, इन पूरी पंक्तियों के पाठांतर जो प्रतिलिपिकारों अथवा प्रतियों के संशोधकों ने हाशियों में लिखे, वे कभी एक पंक्ति के संशोधित पाठ माने गए, कभी दूसरी पंक्ति के, और कभी अतिरिक्त पंक्ति के रूप में मूल पाठ में सम्मिलित कर लिए गए।

(७) सात अर्द्धालियाँ और उसके अनंतर एक दोहे का क्रम ग्रंथ भर में होने के कारण सभी प्रक्षेप उपर्युक्त अर्द्धाली-दोहा क्रम के अनुसार हैं। जहाँ-कहीं दो अर्द्धालियों के बीच में भी विभिन्न प्रतियों में प्रक्षेपवृद्धि की गई है, इस बात का ध्यान रक्खा गया है कि उपर्युक्त अर्द्धाली-दोहा क्रम भंग न हो। अतः छंद-योजना के आधार पर प्रक्षेप-निर्णय असंभव हो गया है। कुल छंद-संख्या किन्हीं भी दो प्रतियों की एक नहीं है—विभिन्न प्रतियों में यह ७५० से लेकर ६५१ तक है। पुनः विभिन्न प्रतियों में पाए जाने वाले समस्त छंदों की संख्या ८८५ है, और केवल ६३१ छंद ऐसे हैं जो सामान्य रूप से समस्त प्रतियों में पाए जाते हैं। इन २५४ छंदों में से अवश्य ही कितने ही प्रामाणिक और कितने ही प्रक्षिप्त होंगे: न सभी प्रामाणिक हो सकते हैं, और न सभी प्रक्षिप्त।

(८) अनेक स्थलों पर ग्रंथ में ऐसे पाठभेद भी मिलते हैं, जिनका समाधान उर्दू या नागरी लिपि के लेखन-प्रमाद या पाठ-प्रमाद की प्रवृत्तियों के द्वारा नहीं हो सकता, न भाषा अथवा छंद-योजना सम्बन्धी पर्याप्त ज्ञान के अभाव-द्वारा ही हो सकता है; और इनमें से अनेक स्थलों पर ऐसे भी भिन्न-भिन्न पाठ विभिन्न प्रतियों में हैं कि वे किसी प्रकार भी एक दूसरे से सम्बद्ध नहीं ज्ञात होते हैं।

'पदमावत' के संपादक को इन एक से एक विकट गुत्थियों को सुलझाते हुए यथासंभव उसकी आदि प्रति के पाठ को पुनर्प्राप्त करना है। किंतु पाठानुसंधान में यही गुत्थियाँ—यथेष्ट ढंग से विश्लेषण के अनंतर—प्रामाणिक पाठ पर पहुँचने में किस प्रकार सहायक भी होती हैं, यह क्रमशः प्रतियों के सामान्य परिचय के अनंतर आने वाले भूमिका के आठ शीर्षकों में आगे

मिलेगा। बाद के दो शीर्षकों में ग्रंथावली के अन्य ग्रंथों के पाठ और ग्रंथावली के अन्य संस्करणों के पाठ के विषय में कहा गया है।

इस ग्रंथावली में सम्मिलित 'अखरावट' का पाठ अन्य प्रतियों के अभाव में पहिले पं० रामचंद्र शुक्ल के संस्करण के अनुसार रक्खा गया था, किंतु संयोग से 'अखरावट' की छपाई प्रारंभ हो जाने के बाद उसकी एक प्राचीन हस्तलिखित प्रति प्रांतीय सेक्रेटेरियट के अनुवाद-विभाग के विशेष कार्याधिकारी श्री गोपालचंद्र सिंह जी से मिल गई। इस प्रति का पाठ शुक्ल जी द्वारा दिए गए पाठ की अपेक्षा अधिक संतोषजनक प्रतीत हुआ। किंतु छपाई आरंभ हो जाने के कारण उसका इससे अधिक उपयोग नहीं किया जा सका कि ग्रंथ के अंत में परिशिष्ट जोड़ कर इस प्रति का पाठांतर मात्र दे दिया जाय।

और इसी प्रकार इस ग्रंथावली में सम्मिलित 'आख़िरी कलाम' का भी पाठ शुक्ल जी के संस्करण के अनुसार रखा गया था, किंतु उसकी एक लीथो की प्रति लखनऊ के श्री कल्बे मुस्तफ़ा जायसी से मिल गई। श्री कल्बे मुस्तफा साहब का कथन था कि इसी प्रति से शुक्ल जी ने भी उसका पाठ अपने संस्करण में दिया था। शुक्ल जी के पाठ को इस प्रति के पाठ से मिलाने पर यह बात ठीक ज्ञात हुई। किंतु इस प्रति में प्रायः प्रत्येक पंक्ति में एक से अधिक व्यक्तियों द्वारा किए गए संशोधन भी हैं, जिनका आधार संशोधकों की कल्पना के अतिरिक्त कदाचित् और कुछ नहीं है। शुक्ल जी ने अधिकतर संशोधनों को स्वीकार करते हुए और अपनी ओर से भी कुछ संशोधन करते हुए रचना का पाठ अपने संस्करण में दिया है। मैंने उक्त लीथो की प्रति का ही पाठ दिया है। इसलिए दोनों पाठों में अंतर यथेष्ट मिलेगा।

पाद-टिप्पणियों का आकार अनावश्यक रूप से बहुत न बढ जावे, इसलिए केवल लेखन-प्रमाद के कारण हुई बहुत-सी भूलें तथा पाठ-परंपरा में सब से नीचे आने वाली प्रतियों के अनावश्यक पाठांतर नहीं दिए जा सके हैं।

जायसी हिंदी साहित्य के सबसे महान् कलाकारों में से हैं। किंतु उनके 'पदमावत' से मैं जितना ही अधिक प्रभावित था, उतना ही उसके प्रकाशित पाठों से असंतुष्ट भी था। हिंदुस्तानी एकेडेमी ने मेरे इस कार्य को प्रकाशित करने का निश्चय कर मुझे अपने पाठानुसंधान-संबंधी कार्य में प्रोत्साहित किया है, उसके लिए मैं उसका आभारी हूँ।

पाठानुसंधान के कार्य में सब से अधिक आवश्यकता हस्तलिखित प्रतियों की होती है; उनके कुछ समय तक सतत उपयोग के बिना इस प्रकार का कार्य

नहीं हो सकता जैसा इस ग्रंथावली में हुआ है। किंतु प्रतियों का मिलना न केवल व्यक्तियों से दुष्प्राप्य है, हमारे देश की संस्थाओं से भी यह प्रायः उतना ही दुष्प्राप्य है। 'रामचरितमानस' और पुनः 'पद्मावत' के पाठानुसंधान के प्रसंग में मुझे इसका विशेष अनुभव हुआ है। ऐसी दशा में जिनसे भी मुझे इस कार्य के लिए प्रतियाँ मिलीं, उनका मैं हृदय से आभारी हूँ। विशेष रूप से कॉमनवेल्थ रिलेशन्स ऑफ़िस लंदन का, जिससे मुझे ज्ञात सब से अधिक महत्त्व की 'पद्मावत' की प्रतियाँ, और 'महरी बाईसी' की प्रति प्राप्त हुई, रॉयल एशियाटिक सोसाइटी बंगाल का, काशीनरेश महाराज विभूति नारायण सिंह का, उत्तर प्रदेश के सेक्रेटेरियट के अनुवाद विभाग के विशेष कार्याधिकारी श्री गोपाल चंद्र सिंह का, हिंदू विश्वविद्यालय काशी का, लखनऊ के श्री बल्के मुस्तफा जादवी का, हरगौंव के महंत गुरुप्रसाद का और इलाहाबाद यूनिवर्सिटी का आभारी हूँ, जिन्होंने इस ग्रंथावली के ग्रंथों की अपनी अलभ्य हस्तलिखित प्रतियाँ और प्राचीन संस्करण इस कार्य के लिए मुझे दिए। इनके अतिरिक्त कैंब्रिज और एडिनबरा विश्वविद्यालयों के अधिकारियों का भी मैं उपकृत हूँ, जिन्होंने इलाहाबाद यूनिवर्सिटी को अपने यहाँ की 'पद्मावत' की प्रतियों की माइक्रोफ़िल्म कॉपियाँ प्रदान कीं।

इन प्रतियों और माइक्रोफ़िल्म कॉपियों को विभिन्न स्थानों से प्राप्त करने में इलाहाबाद यूनिवर्सिटी के वाइस-चांसलर श्री डा० दक्षिणारंजन भट्टाचार्य, उसके हिंदी विभाग के अध्यक्ष और प्रोफ़ेसर श्री डा० धीरेन्द्र वर्मा, तथा उसके सहायक पुस्तकाध्यक्ष श्री भक्तिप्रसाद त्रिवेदी ने मेरी बड़ा भारी सहायता की है; प्रतियों की पाठ-परंपरा के रेखाचित्र यूनिवर्सिटी के हिंदी विभाग के अपने सहयोगी श्री जगदीशप्रसाद गुप्त ने खींचे हैं, और 'पद्मावत' की अधिकतर प्रतियों के चित्र इलाहाबाद यूनिवर्सिटी के फ़ोटोग्राफ़ी विभाग के सहयोग से प्रस्तुत हुए हैं। इसलिए मैं इन का भी आभारी हूँ।

उपर्युक्त सहायता के अतिरिक्त श्रद्धेय डा० धीरेन्द्र वर्मा ने प्रारंभ से ही इस कार्य में, मेरे पिछले समस्त अन्वेषण-कार्यों की भाँति, मेरा प्रोत्साहन भी किया है। ऐसे लंबे और उलझन के कार्यों में अन्य साधनों की अपेक्षा गुरुजनों का प्रोत्साहन कहीं अधिक सहायक हुआ करता है। इसलिए मैं उनके प्रति पुनः आभार-प्रदर्शित करना चाहता हूँ।

हिंदी विभाग,
इलाहाबाद यूनिवर्सिटी,
कृष्ण जन्माष्टमी, २००८ वि०

माताप्रसाद गुप्त

भूमिका

१. 'पद्मावत' की प्रतियाँ

मलिक मुहम्मद जायसी के 'पद्मावत' की जो प्राचीन प्रतियाँ इस कार्य में प्रयुक्त हुई हैं, उनका परिचय नीचे दिया जा रहा है। प्रत्येक प्रति के प्रारंभ में उस संकेत का निर्देश कर दिया गया है जिसके द्वारा उसका उल्लेख ग्रंथ भर में किया गया है।

प्र० १ : यह प्रति १०"×६१/२" आकार के २१८ पत्रों में है, और पूर्ण है। यह फ़ारसी अक्षरों में है, और अत्यंत सुलिखित है। कुछ स्थलों पर यह चित्रित भी है। यह (इबादुल्लाह अलहम्द) खानमुहम्मद, साकिन मुअज़्ज़माबाद उर्फ़ गोरखपुर द्वारा किन्हीं दीनानाथ के लिए शव्वाल, ११०७ हिजरी की लिखी हुई है। यह इस समय कॉमनवेल्थ रिलेशन्स ऑफ़िस, लंदन में है, और वहीं से मुझे प्राप्त हुई थी।

पुष्पिका में लिपिकार, उसके स्थान तथा प्रति के स्वामी के नामों पर गाढ़ी स्याही पोती हुई है, किंतु प्रयास करने पर पूर्व की लिखावट पढ़ी जा सकती है। ऐसा ज्ञात होता है कि इसके स्वामी के यहाँ से किसी समय किसी अनधिकारी व्यक्ति ने इसे हटाया, और इसीलिए उसे यह करने की आवश्यकता पड़ी।

प्र० २ : यह प्रति ६"×६" आकार के २१६ पत्रों में लिखी हुई है, और पूर्ण है। यह नागराक्षरों में है, और साफ़ लिखी हुई है। यह फाल्गुन, सं० १८१८ की लिखी हुई है। लिपिकार ने अपना नाम, पता, तथा अन्य कोई सूचना पुष्पिका में नहीं दी है। यह प्रति श्री काशिराज के पुस्तकालय में है, और उन्हीं से मुझे प्राप्त हुई थी।

द्वि० १ : यह प्रति ६३/४"×६३/४" आकार के ३३८ पत्रों में लिखी हुई है, और पूर्ण है। प्रतिलिपि-काल सन् ४२ (११४२ हिजरी) है, जो पुष्पिका में दिया हुआ है। यह एडिनबरा यूनिवर्सिटी के पुस्तकालय में सुरक्षित है, और इलाहाबाद यूनिवर्सिटी के पुस्तकालय ने इसकी एक माइक्रोफ़िल्म कापी प्राप्त की है। इसी कापी का उपयोग प्रस्तुत कार्य में किया गया है। पाठ की

दृष्टि से यह प्रति अत्यंत त्रुटिपूर्ण है। अनेक छंदों में सात के स्थान पर छः ही अर्द्धालियाँ हैं, किसी छंद का दोहा किसी में, और किसी दूसरे का उसमें लगा हुआ है। अर्द्धालियाँ कभी-कभी अधूरी लिख कर छोड़ दी गई हैं। ऐसा ज्ञात होता है कि कुछ तो इसका प्रतिलिपिकार असावधान था, और कुछ इसकी मूल प्रति ऐसी लिखी हुई थी कि स्थान-स्थान पर पढ़ी नहीं जाती थी।

द्वि० २ : यह प्रति ६३/४"×६३/४" आकार के १८० पत्रों में समाप्त हुई है। प्रति पूर्ण है, और फारसी अक्षरों में अत्यंत सुलिखित है। लिपिकार ने अपना नाम, स्थान आदि कुछ भी नहीं दिया है, केवल प्रतिलिपि-तिथि दी है, जो १११४ हिजरी है। यह प्रति भी कॉमनवेल्थ रिलेशन्स ऑफिस, लंदन में है, और वहीं से मुझे प्राप्त हुई थी।

द्वि० ३ : यह प्रति ६१/२"×६" आकार के १८४ पत्रों में समाप्त हुई है, और पूर्ण है। अक्षर फारसी हैं, और लेख अत्यंत सुंदर है। लिपिकार ने अपना नाम रहीमदाद खाँ, स्थान शाहजहाँपुर, तिथि ११०६ हिजरी दिया है। यह प्रति कॉमनवेल्थ रिलेशन्स ऑफिस, लंदन में है, और वहीं से मुझे प्राप्त हुई थी। इस प्रति में अनेक स्थलों पर पाठ में हस्तक्षेप हुआ है, और पूर्व के पाठ की विकृति हुई है।

द्वि० ४ : यह प्रति लीथो प्रेस द्वारा छापी हुई है, और ६१/२" ×६" आकार के ६२६ पृष्ठों में समाप्त हुई है। इसमें मूल पाठ के अतिरिक्त मुंशी अहमद अली द्वारा किया हुआ उर्दू अनुवाद भी है। यह प्रति भी फारसी अक्षरों में है। इसका प्रकाशन कानपुर से शेख मुहम्मद अज़ीमुल्लाह, पुस्तक-विक्रेता द्वारा १३२३ हिजरी में हुआ था। इसकी एक प्रति मुझे काशी हिंदू विश्वविद्यालय तथा दूसरी श्री कल्बे मुस्तफा जायसी से प्राप्त हुई थी। विश्व-विद्यालय की प्रति में पृ० ७३—१०४ के पूरे चार छपे फार्म नहीं हैं। श्री कल्बे मुस्तफा की प्रति पूर्ण है। यह प्रति यद्यपि मुद्रित है, किंतु ऐसा ज्ञात होता है कि मूल पाठ किसी एक प्रति से लिया गया है, इसलिए इस प्रति का भी उपयोग इस संस्करण में किया गया है।

द्वि० ५ : यह प्रति भी लीथो की छपी है, और १०"×६१/२" के ३५३ पृष्ठों में समाप्त हुई है। इसकी लिपि फारसी है, और मूल के अतिरिक्त हाशिए में उर्दू में भावार्थ भी दिया गया है। टीकाकार अलीहसन हैं। पुस्तक के

प्रकाशक मुंशी नवलकिशोर हैं, और प्रकाशन-तिथि १८७० ई० है। प्रथम संस्करण की तिथि १८६५ दी हुई है। द्वि० ४ की भाँति यद्यपि यह प्रति भी मुद्रित है, किंतु ऐसा ज्ञात होता है कि इसका पाठ भी मूलतः किसी एक हस्तलिखित प्रति के अनुसार है, इसलिए प्रस्तुत कार्य में इसका उपयोग भी किया गया है।

द्वि० ६ : यह प्रति ८″ × ५½″ के आकार के पत्रों में समाप्त हुई है। प्रति पूर्ण है। यह प्रति भी फ़ारसी अक्षरों में लिखी हुई है, और सावधानी के साथ लिखी गई है। केवल एकाध स्थलों पर पंक्तियाँ छूटी हुई हैं—यथा छंद ६४६ का दोहा छूटा हुआ है। प्रति के अंत में लिपिकार द्वारा लिखी हुई कोई पुष्पिका नहीं है, किंतु किसी अन्य व्यक्ति की कुछ लिखावट में कुछ लिखा हुआ था, जिसका अधिकांश मिटा दिया गया है, केवल सन ५३ (११५३ हिजरी ?) पढ़ा जाता है। यह प्रति किंग्स कालेज, कैंब्रिज यूनिवर्सिटी की लाइब्रेरी में है, और इलाहाबाद यूनिवर्सिटी ने इसकी भी एक माइक्रोफिल्म कॉपी प्राप्त की है, जिसका उपयोग प्रस्तुत कार्य में हुआ है।

द्वि० ७ : यह प्रति ६½″ × ६½″ आकार के १६७ पत्रों में समाप्त हुई है। प्रति प्रथम पत्रे को छोड़ कर पूर्ण है। यह कैथी अक्षरों में लिखी हुई है। लिपिकार ने तिथि सन् ११६८, सं० १८४२ जेठ बदी २, मंगलवार, अपना नाम भब्बुलाल कायस्थ, निवास-स्थान मौजा शहरी तारा सलेमपुर···आसपुर सरकार, सूबा बिहार, मुकाम अज़ीमाबाद, महल्ले सुलतानगज लिखा है। यह प्रति रॉयल एशियाटिक सोसाइटी, बंगाल के पुस्तकालय में है, और वहीं से मुझे प्राप्त हुई थी।

तृ० १ तथा (तृ० १) : यह प्रति ८½″ × ६″ के आकार के २१३ पत्रों में समाप्त हुई है, और फ़ारसी अक्षरों में सुलिखित है। यह प्रति यद्यपि पूर्ण है, किंतु प्रारंभ के तीन, अंत के बाइस, और बीच के कई पत्रे (जिसमें प्रस्तुत संपादित पाठ के छंद १—६, १८,२१, २५—३१, ५८०—५८३, ६२४ से अंत तक के आते हैं) बाद के और अन्य हाथ के लिखे हैं। प्राचीन अंश का संकेत तृ० १ तथा अर्वाचीन का (तृ० १) के द्वारा किया गया है। अंतिम पत्रा बाद का है, और उसमें समाप्ति पर कुछ भी नहीं लिखा गया है। किंतु प्राचीन अंश लगभग २०० वर्ष प्राचीन ज्ञात होता है, और बाद का अंश भी कम से कम १०० वर्ष प्राचीन होगा। यह प्रति भी कॉमनवेल्थ रिलेशन्स ऑफिस, लंदन की है, और वहीं से मुझे प्राप्त हुई थी। इस प्रति में

भी पाठ-संशोधन बहुत किया गया है, जिससे पूर्व का पाठ बहुत-विकृत हुआ है। फिर भी पूर्व का अधिकतर पाठ जाना जा सकता है और इसलिए उसका उपयोग किया जा सकता है।

सु० २ : यह प्रति ६½"×५½" आकार के २११ पत्रों में है। इस प्रति में अंत का दोहा प्रतिलिपि करने से रह गया है, और पुष्पिका नहीं है। प्रति सत्रहवीं या अठारहवीं शताब्दी की ज्ञात होती है। लिपि फ़ारसी है। यह बहुत सावधानी से लिखी नहीं गई है—कहीं-कहीं पर दोहे छूट गए हैं। एक स्थान पर प्रति खंडित भी है, जिसके कारण इस का कुछ अंश नहीं है। यह प्रति भी कॉमनवेल्थ रिलेशन्स ऑफिस, लंदन में है, और वहीं से प्रस्तुत कार्य के लिए मुझे मिली थी।

सु० ३ : यह प्रति १२"×८" आकार के ३४० पत्रों में समाप्त हुई है, और पूर्ण है। यह नागराक्षरों में है, और अत्यंत सुलिखित है। केवल एक स्थान पर कुछ पंक्तियाँ अधूरी और कुछ पूरी छोड़ दी गई हैं, कारण कदाचित् यह था कि आदर्श का पाठ वहाँ अपाठ्य था। जिल्द-बँधाई की त्रुटियों के कारण अवश्य कई पन्ने अपने स्थानों से हट कर अन्यत्र लग गए हैं। एक स्थान (४४० छंद) पर इस में अंतिम पाँच पंक्तियाँ अन्य स्थान (छंद ४४५) की दुहरा दी गई हैं। इस प्रति में ३४० चित्रों के पृष्ठ हैं, और ३४० लिखाई के, और समस्त चित्र कौशलपूर्वक बनाए गए हैं। पुष्पिका में तिथि नहीं दी हुई है, केवल लिपिकार का नाम थान कायथ तथा स्थान मिर्ज़ापुर दिया हुआ है। यह प्रति भी कॉमनवेल्थ रिलेशन्स ऑफिस, लंदन की है, और वहीं से मुझे प्राप्त हुई थी।

च० १ : यह प्रति ८"×४" आकार के पत्रों में लिखी गई है। पत्र-संख्या नहीं दी गई है। किन्तु बीच में कुछ पत्रे (जिनमें संपादित पाठ के छंद २६०-२८८, ४२८ ४५६, ४०६-४२४ आते हैं) नहीं हैं। यह फारसी अक्षरों में अत्यंत सुलिखित है। इसके लिपिकार ने अपना नाम ईश्वरप्रसाद निवासस्थान गंगा गोरौनी, लिपिकाल ११६५ हिजरी तथा लिपिस्थान करतारपुर, बिजनौर, दिया है। यह प्रति भी गोपालचंद्रसिंह, ऑफिसर ऑन स्पेशल ड्यूटी, सेक्रेटेरियट, लखनऊ की है, और उन्हीं से मुझे प्राप्त हुई है। इस प्रति के पाठ में कहीं कहीं हस्तक्षेप हुआ है—पूर्व के पाठ को किंचित् बदलने का यत्न किया गया है, किंतु यह अधिक नहीं है, और पूर्व का पाठ प्रायः पढ़ा जा सकता है।

पं० १ : यह प्रति ८½" ×४½" आकार के पन्नों में है और पूर्ण है। यह भी फ़ारसी अक्षरों में है। प्रति के अंत में पुष्पिका है, यद्यपि उसका एक अंश पहले का और दूसरा बाद का, और किंचित् भिन्न स्याही और क़लम का है। तिथि इसमें सन् '२६ (११२६ हिजरी ?) दी हुई है। लिपिकार का पता इस दूसरे अंश में मुहम्मद नगर, परगना सिधौर, सरकार लखनऊ दिया हुआ है। यह प्रति सुलिखित है। किंतु इसके पाठ में भी आदि से अंत तक हस्तक्षेप किया गया है, और पाठ बदलने का यत्न किया गया है। कुशल इतना ही है कि पूर्व का पाठ प्रायः पढ़ा जा सकता है। यह प्रति भी कॉमनवेल्थ रिलेशन्स ऑफ़िस, लंदन में है, और वहीं से मुझे इस कार्य के लिए प्राप्त हुई थी।

इन प्रतियों का उपयोग संपादन में पूर्ण रूप से किया गया है। साथ ही मुझे नीचे लिखी दो प्रतियाँ ऐसी भी प्राप्त हुई थीं जिनका पूर्ण रूप से उपयोग नहीं किया गया है, केवल दस छंदों (२६७ से २७६ तक) में उनके जो पाठांतर मिलते हैं, उन्हें पादटिप्पणी में दे दिया गया है।

गः हरगाँव, डा० जगेसरगंज, जिला सुल्तानपुर के महन्त गुरुप्रसाद की प्रति है, जो सं० १८५८ की है, हिंदी लिपि में है, और पूर्ण है।

खः लखनऊ के वकील श्री कल्बे मुस्तफ़ा जायसी की उर्दू लिपि में अज्ञात तिथि की और अत्यंत खंडित प्रति है। कल्बे मुस्तफ़ा साहब ने खंडित अंशों को किसी अन्य प्रति से उतार कर पुस्तक पूरी कर ली है।

इन दोनों प्रतियों का—विशेष रूप से हरगाँव की प्रति का—पाठ इतना भ्रष्ट है कि ग्रंथ के पाठ के पुनर्निर्माण में इनसे किसी प्रकार की सहायता नहीं मिल सकी, इसलिए केवल उक्त अंश में इनके पाठांतर लिख कर इन्हें छोड़ देना पड़ा। शेष समस्त प्रतियों से इनका पाठभेद कितना है, और किस अंश तक उससे पाठानुसंधान में सहायता ली जा सकती थी, यह उक्त अंश में दिए हुए पाठभेदों से ही स्पष्ट हो जावेगा।

२. प्रतियों की पाठ-विकृति

'पदमावत' की प्रतियों की एक विशेषता, जो अन्य हिंदी रचनाओं की प्रतियों में कम पाई जाती है, यह है कि उनमें प्रतिलिपिकार से भिन्न व्यक्तियों द्वारा किए हुए पाठ-परिवर्तन बहुत मिलते हैं। पुनः, यह परिवर्तन पूर्व के पाठ पर हरताल आदि का लेप कर के नहीं किए गए हैं, वरन् पूर्व की लिखावट

में ही यथासंभव कुछ परिवर्तन करके किए गए हैं, जिससे पूर्व का पाठ प्रायः पढ़ा जा सकता है, यद्यपि कठिनता के साथ। कहीं-कहीं पर काग़ज़ ग़ुरच कर भी यह परिवर्तन किए गए हैं। ऐसे स्थलों पर पूर्व का पाठ जानने में अत्यधिक कठिनता होती है, और कभी-कभी नहीं भी जाना जा सकता है।

पाठ-विकृति की दृष्टि से द्वि० ३, तृ० १, २ तथा पं० १ सबसे प्रमुख हैं। प्रस्तुत संपादन में सर्वत्र प्रतियों का पूर्व का पाठ ही लिया गया है, विकृत पाठ नहीं, इसलिए नीचे उदाहरणार्थ ग्रंथ के पूर्वार्द्ध से ही विकृति के स्थल दिए जा रहे हैं। परिवर्तित पाठ किन अन्य प्रतियों में पूर्व के पाठ के रूप में मिलते हैं, यह बताने की आवश्यकता नहीं है, क्यों कि संपादन में इस परिवर्तित पाठ का उपयोग नहीं किया गया है। फिर भी यदि कोई जानना चाहे, तो नीचे के स्थलों पर संपादित पाठ और पादटिप्पणी में दिए हुए पाठांतरों को देख कर जान सकता है।

द्वि० ३ की पाठ-विकृति :

स्थल	पूर्व का पाठ	परिवर्तित पाठ
१२.६	और भूले और तेहँ	और जो भूले और तेहँ
६६.६	अरकाने	अरकाँवहँ
११२.६	बेह मे	बेह में हिरदे
१२०.३	चरचहिं चेष्टा	चरचहिं चिंता
१२४.४	चोर कि चढ़ कि चढ़ा मंसूरू।	चोर चढ़ा कि चढ़ा मंसूरू।
१५५.८	किलकिला	गिलगिला
१४८.१	सखीं	सघी
२५५.२	कहनै कहा	गहनै गहा

तृ० १ की पाठ-विकृति :

स्थल	पूर्व का पाठ	परिवर्तित पाठ
४०.७	जरा कौ सीछा	जराव कै सीछा
५३.४	दैयँ	दई
५४.१	सुवासू	निवासू
८२.१	चीन्हा	लीना
८५.५	ताको	ताकहँ

स्थल	पूर्व का पाठ	परिवर्तित पाठ
६६.१	फेरि	बहुरि
२३.६	नैन	नैनन्ह

सू० २ की पाठ-विकृति :

१४.३	रविहि	रहहीं
१७.२	तिन्ह्यागी	ते आगे
१७.६	न मूला नाँगा	न कबहूँ खाँगा
१७.८	दानि	दानी
१९.५	दुहुँ	दुइ
२२.३	कर्ला	कादन
२२.३	मति	महँ
२३.६	छाया	घाया
२६.४	साँवकरन	साँवक करन
२७.१	निम्रराया	निम्रर भा
२९.४	खीहा	कीहा
३०.४	कोई	कोइ सो
३०.६	सरसुती	सो संत
३०.८	परस्ती	बान परस्ती
३२.९	ये	वे
३४.३	तस	अति
३४.९	धरी	धरी जो
३६.४	औ केवरा	केवरा
३७.७	हाट	लीन्ह
३८.१	सब	तहँ
४१.१	बाजि होइ	होइ बाजि
४१.४	हस्ति	राए
४२.२	वह	तब
४६.४	बाइ	जाइ
४६.५	दिएँ	लिएँ
६४.९	मोती	मोति
६५.३	तन	जो

स्थल	पूर्व का पाठ	परिवर्तित पाठ
६८.४	फरहर राम	फरत हियँ
६९.३	अनमला	नहिं मला
७०.१	धरि मेलेसि	मेलेसि दुल
७०.६	दा	अदा
७१.५	होइ	हम
७१.७	छाहीं	पाहीं
७५.५	वहि	नहि
७७.२	मँजुमा	मँजूसै
७७.३	चहीं बिकाइ	चाह बिकान
८०.२	नहिं	नहीं
८०.३	मण्ड	महा
८१.६	मधुमालति	पदुमावति
८२.६	मारि	काढ़ि
८२.७	कै	कि
८३.७	सो और जो प्यारी	सुआ सत प्यारी
८४.८	सो	जो
८४.८	सो	ते
८५.४	दामिनी	घामिनी
८७.३	तुम्ह	तूँ
८९.१	रही	अही
१००.७	मकु	माँग
१०८.५	जनु	जुग
१०८.५	अयरवन	अयरपन
१११.१	कंजनार	कंचन तार
११३.४	चाहइ	चाहहिं
११५.१	कंचुकी	कँचुली
११५.६	मैं	मुख
११७.२	पाव अस	पाव को
११६.६,७	खिनहिं	खिनही
११६.८	लीन्हा	लीन्हा जिउ
१२०.२	गारुरी	गारुरू

स्थल	पूर्व का पाठ	परिवर्तित पाठ
१२०.६	जेते	चेतौ
१२७.६	मरै	मिरतक
१३३.३	चलाया	चूरी
१३४.३	देखेन्हि	देखा
१३५.७	कुराई	कोइलि
१३७.५	इहाँ	तहाँ
१३८.५	पूँछहु	छाड़हु
१४३.२	अति	जो
१४४.३	भावा	धावा
१४४.६	काठै	काठहु
१४५.१	औ	जग
१४६.६	हहिं	औ
१४७.१	रँगि	रैनि
१४७.४	आए	छाए
१४६.१	जहँ सो पेम कहँ कुसल	जहाँ सो ताहि कुसल और
१५०.३	सतै	सत्त
१५०.४	ताक सब	ताकइ
१५०.६	खिन तर गहि खिन होइ उपराहीं।	खिनतर खिन होइ ऊपर जाहीं
१५१.४	मन हिरदैं	जो मन महँ
१५१.७	रूसै, मूसै	रूठै, लूटै
१५२.१	पै	इमि
१५२.६	अबिरथाँ	अँबिरथा
१५३.३	हुत	पुनि
१५४.६	चुवा	चुऔ
१५५.४	कहँ	लहि
१५६.६	सहस्र	सहस
१५६,अ.३	सिर लहि देइ उघारि	तौ लहि देइ कहाँर
१५६अ.७	काठहि	काठइँ
१५८.७	अस आव साधि	ऐसे साधहु
१६०.२	जोगाँ, बियोगाँ	जोगू,बियोगू
१६०.७	अहहिं	कहहि

स्थल	पूर्व का पाठ	परिवर्तित पाठ
१६२.२	जोगू, भोगू	जोगी, भोगी
१६२.६	जब	जो
१६४.७	धन	नित
१६६.६	आइ	जाइ
१६७.४	घँधार	घँघोर
१६७.६	मिस	सँग
१६८.२	आवा, लावा	आवैं, लावैं
१६८.५	गहे	गहें
१७०.१	रही	अही
१७२.७	मसि	जस
१७७.५	रहा	अहा
१७८.३	मालति	मालती
१८२.८	धन	तब
१८७.६	कसौंदा	कोइ कसौंदा
१६२.१	तब	पुनि
१६७.२	सब	औ
१६७.४	पछिउँ	पछिम
२००.२	अजहुँ	बुझहिं
२०१.६	महुवा बसंत	बसंत महुवा
२०२.१	कीन्हि तोरि यह	आइ कीन्हि तोरि
२१६.३	गिरहिं	मिलहिं
२१६.६	पुनि	तब
२१७.३	गईं उठि	उठि गईं
२२४.२	सँवराइ	सुनि और
२२४.३	कब लगि	कैसें
२२६.२	लहि	लौं
२२८.८	होइ	हिय
२६१.३-६	ना जनहुँ	न जनहुँ
२३३.६	कँदावत जोगी	मनोहर जोगू
२३३.६	वियोगी	बियोगू
२३४.७	होइ	जस

स्थल	पूर्व का पाठ	परिवर्तित पाठ
२३६.१	जोगि	जोगी
२४०.१	राँध	राज
२४५.३	तन पाहीं	उपराहीं
२४६.८	कैसेहुँ	जानहुँ
२५१.५	बास	बचन
२५५.३	चाँद	कवँल
२६१.४	कस न सो	सो कस नहिं
२६५.१	अग्याँ	अग्या
२६६.३	जेहि तप तपै	जेहि कर करै
२६६.४	दहुँ जोगी कै तहँ क नरेसू	आवा ना जोगी के भेसू
२७३.७	तुरग	तुरा
२७४.६	पछिउँ	पछिम
पं० १ की पाठ-विकृति :		
६.७	भवन	बखुतन (?)
१२.४	पुरान	कुरान
१३.६	जियन	जीव
१७.२	कहे	अहे
१७.२	तियागी	सते कहँ (?)
१७.७	सरि सेउ न दीन्हे	सबही सें बड़े
१७.६	न होई	न होइ न कोई
२३.६	सुना	सुनि कबि
३३.५	निसि क बिछोव औ	[अपाठ्य है]
३८.५	कटाख	कटाछ
३६.७	कतहुँ कान्ह ठग बिद्या लाई।	कंठ काठ मल मैद मोलाई।
४५.१	घूँमहि	घूमै
१६१अ.१,५	पंथ, पथ	पंठ, पठ
१६४.२	जोगी	जोगि
२००.५	आँकत	अंगद
२०७.८	निसरि	रे
२०६.५	तोकाँ	मोकाँ
२१०.२	अपनावा	लाहा

स्थल	पूर्व का पाठ	परिवर्तित पाठ
२१०.३	देइ कि आसा	देइ न पासा
२१६.६	धरमी	धरम
२२६.८	पपिहा जेउँ	पपिहा
२३३.५	कीन्ह बियोगू	जोगी भएऊ
२५०.५	अस	सत
२५५.५	घट	कठ
२६६.१	आइ	अहा
२६२.८	हानि	खानि
२६५.५	दोसरहिं	दोसर
२६६.६	कत	गति
३६६.६	चढ़े	छूटे

इस शुद्धीकरण में वास्तविक संशोधन के स्थान पर पाठ-विकृति ही प्रायः हुई है, यह ऊपर के उदाहरणों से स्वतः ज्ञात होगा। कहने की आवश्यकता नहीं कि इसलिए और भी आदि प्रति के पाठ की प्राप्ति के लिए हमें इस पाठ-विकृति के परे प्रत्येक प्रति के पूर्ववर्ती पाठ को यत्नपूर्वक पुनर्प्राप्त कर के ही पाठानुसंधान में आगे बढ़ना होगा।

३. प्रतियों का आदर्श-बाहुल्य

'पदमावत' की प्रतियों की एक अन्य विशेषता, जो अन्य हिंदी ग्रंथों की प्रतियों में और भी कम मिलती है, यह है कि प्रतियों में मूल पाठ के साथ-साथ हाशिए में पाठांतर भी पाए जाते हैं। यह पाठभेद दो प्रकार के हैं: अन्य हाथों के दिए हुए, और स्वतः प्रतिलिपिकार के हाथ के दिए हुए। इनमें से महत्त्व के पाठांतर स्वतः प्रतिलिपिकार के हाथों के दिए हुए पाठांतर हैं, क्योंकि ऐसे पाठांतरों के मिलने पर हम यह परिणाम निकालने पर बाध्य होते हैं कि या तो प्रतिलिपिकार के सम्मुख एक से अधिक आदर्श थे, और या तो उसके आदर्श में ही पाठांतर भी दिए हुए थे। इन दोनों ही दशाओं में प्रति का मूल पाठ प्रतिलिपिकार ने किसी एक ही आदर्श के अनुसार रक्खा है, अथवा उसके उक्त अन्य आदर्श की सहायता से उसमें कोई परिवर्तन भी किया है, यह कहना कठिन हो जाता है।

प्रयुक्त प्रतियों में से प्र० १, २, द्वि०७ तथा तृ०३ में कोई पाठांतर नहीं

दिए हुए हैं। द्वि०२ में ऐसे पाठांतर अत्यंत कम हैं, और वह भी प्रतिलिपिकार के हाथों के नहीं हैं। तृ०१ में-उसके प्राचीन अंश में-पाठांतर बहुतायत से पाए जाते हैं, किंतु उनमें से कोई भी प्रति लिपिकार के हाथों के नहीं हैं। प्रतिलिपिकार के हाथों के पाठ भेद केवल द्वि० ४, ५ और द्वि० ३ में पाए जाते हैं। इनमें से द्वि० ४ तथा द्वि० ५ लीथो के छपे संस्करण हैं, और इनके पाठांतरों के संबंध में यह संभावना हो सकती है कि यह मूल प्रतिलिपिकार के सामने न रहे हों, केवल संपादक को किसी प्रति से मिलें हों, और उसने उन्हें दे दिया हो।

इस संपादन में उक्त पाठांतरों की इसी संदिग्ध स्थिति के कारण केवल प्रतियों के मूलपाठ का उपयोग किया गया है। फिर भी इन पाठांतरों से विभिन्न प्रतियों के प्रतिलिपिकारों के सामने आए हुए मुख्येतर आदर्श या आदर्शों पर भी प्रकाश पड़ सकता है, इसलिए इन्हें देखना आवश्यक होगा। नीचे केवल ऐसे पाठांतरों का उल्लेख किया जा रहा है, जो प्रतिलिपिकार के हाथों के हैं, और साथ ही उनके सामने कोष्टकों में उन प्रतियों का भी उल्लेख किया जा रहा है, जिनमें वे मूलपाठ के रूप में पाए जाते हैं। पूर्ववत् यहाँ भी ग्रंथ के पूर्वार्द्ध के ही स्थल दिएजा रहे हैं। आशा है कि यह यथेष्ट होंगे।

द्वि० ३ में दिए हुए पाठांतर :

स्थल	मूल पाठ	पाठांतर	अन्य प्रतियाँ
१.५	सत लोक	सत दीप	(प्र० १, द्वि० ३,५, तृ० १, च० १)
३०.८	सेवरा खेवरानानक पंथी	जपा तपा औ सेवरा	(?)
३०.८	सिख साधक अवधूत	सिख साधक आधूत	(?)
३३.६	जिवन हमार मुवहिं एक पासा।	जिएँ मुएँ आछहिं एक पासा।	(?)
४२.५	तुम जेहि चाक चढ़े होइ काँचे।	जौ लहि देव अस्त नहि होई।	(?)
४२.५	आएहु फिरे न थिर होइ बाँचे।	तौ लहि चेत करहु नर लोई।	(?)
५५.१	अवस्थ	उतपति	(तृ० १,३)
५६.१	पूर्नो	कौनों	(प्र० १,२, द्वि० २,४,५, तृ०३, च० १)
१४०.७	यहे यहुत	तुमतें मही	(?)
१५०.३	सत गुर सत मारा सत खेव सँभारा		(च०१)
१६५.७	होउँ मारग जोवउँ हर स्वाँग।	तू देनिहार निरासहि आसा।	(द्वि०७)
१६६.४	उकटी सब मारी	आगे पतझारी	(द्वि० २,४,५, तृ० १, च० १)

स्थल	मूल पाठ	पाठांतर	अन्य प्रतियाँ
२११.८	मारें तेहि क अपराध	महा दुक्ख अपराध ।	(१)
२२१.६	पेम पंथ जो पानि है	जोग तंत जो पानि है	(द्वि० २,४,च० १)
२२२.२	न जनौं सरग बात दहुँ काहा ।	पाँख न पाया पौन न पाया ।	(सभी में है)
२२२.३	काहू न आइ कही फिरि चाहा ।	केहि बिधि मिलौं होउँ केहि छाया ।	(१)
२३०.६	देख कंठ जर लाग सो गेरा ।	कठिन परे सो कंठ लगेरा ।	(१)
२३६.२	सबद बोलि कै स्रवन उघेला ।	गुरू सबद दुइ सरवन मेला ।	(प्र० १,२, द्वि० २,४, च० १)
२३६.३	गुरू बोलाय बेगि चलु चेला ।	कीन्ह सुदिष्टि बेगि चलु चेला ।	
२३६.४	पौन स्वाँस तोसौं मन लाए ।	तोहि अलि कीन्ह आपु भइ केवा ।	(प्र० १,२, द्वि०४, तृ० १, च० १)
२३६.४	जोवै मारग दिस्टि बिछाए ।	औ पठवा है बीच परेवा ।	(,,)
२४०.६	छेंक कीन्ह चाहिअ जौ राजा ।	जंबू कहँ चलिअ जौ राजा ।	(द्वि० ५)
२५५.१	पदमावति उठि टेकै पाया ।	तुम्ह सो मोर खेवक गुर देया ।	(द्वि० २, ४, ५, तृ० ३)
२५५.१	तुम हुत होइ प्रीतम कै छाया ।	उतरौं पार तेही बिधि खेवा ।	(,,)

ऊपर की तालिका को देखने पर द्वि० ३ के पाठांतरों के संबंध में हम इस निष्कर्ष पर पहुँचते हैं कि जिस प्रति से ये पाठांतर दिए गए हैं, वह सम्भवतः एक से अधिक व्यक्तियों द्वारा दिए हुए एक से अधिक आदर्शों के पाठ देती थी । प्रतिलिपिकार के सामने दो से अधिक आदर्श थे, यह कम संभव ज्ञात होता है ।

द्वि०४ में दिए हुए पाठांतर :

स्थल	मूल पाठ	पाठांतर	अन्य प्रतियाँ
१.६	ताकर	तेहिका	(द्वि० ३)
२.१	बहम (पुहुमि ?) समुंद	सात समुद्र	(प्र० १, द्वि० ३)
३.६	कोइ	कोटि	(द्वि० ५, तृ० १)
३.७	पुनि	सँग	(द्वि० २, तृ०३)
६.१	सोइ	एक	(द्वि० ५)
६.१	बड़	सो	(द्वि० ५)

स्थल	मूल पाठ	पाठांतर	अन्य प्रतियाँ
६.५	सो पै मरम जान जेहि नाहीं।	छो जानै जेहि दीन्हेसि नाहीं।	(द्वि० २, ३, ४, ५)
६.७	मरम	सुख	(द्वि० ४, ५)
१५.४	नाथ	पथ	(१)
१७.५	कुलि	जग .	(सभी में है)
२६.४	बाँका	जस बाँक	(द्वि० २, ५)
२८.८	गुया	लौंग	(द्वि० २, ५, च० १)
३०.४	रामजन	रामजनी	(प्र० २, द्वि० २)
३०.६	जारि	पाँच	(द्वि० ३, ५, तृ० १)
३१.२	पान	पानि	(द्वि० ३)
३४.२	सुरँग	तुरँज	(प्र० १, द्वि० ५, तृ० ३)
३६.७	अह निसि बैठि	अलख पंथ	(प्र० २)
३७.४	पंचहि	पोतहिं	(प्र० २, द्वि० ५)
४१.४	लाइ	राय	(प्र० १, २, द्वि० ३, ५, तृ० १, ३, च० १)
४८.६	जनहुँ दिया दिन आछत बरे।	निसि दिन रहै दीप जनु बरे।	(द्वि० ५)
४९.७	सुनी जो	जेतनी	(द्वि० ५, च० १)
५०.१	चंपावति जो रूप अति माहाँ।	चंपावति जो रूप सँवारी।	(द्वि० २, तृ० १, ३)
५०.१	पदुमावति की जोति मन छाहाँ।	पदुमावति चाहै अवतारी।	(द्वि० २, तृ० १, ३)
५५.६	जोगि जती सन्यासी	जोगी जती तपा सन्यासी	(द्वि० ३)
६२.१	चुनि कै	कंचुकि	(प्र० १, २, द्वि० ५)
६८.४	बहुरि तेहि	फुरहरी	(द्वि० ५)
१२२.५	सुमेरू	सरीरू	(द्वि० ५)
१२५.१	टकटका	पेम चित	(प्र० २, द्वि० २, तृ० १, ३, च० १)
२३३.४	मुगुधावति	खँडरावति	(द्वि० ५)
२३६.२	सिर नावा	है ठाढ़ा	(द्वि० ३, ५, तृ० ३)

स्थल	मूल पाठ	पाठांतर	अन्य प्रतियाँ
२३६.३	कीन्ह सुदिष्टि	गुरू बोलाय	(द्वि० ३, ५, तृ० १, ३)
२३७.४	पाती	पत्र	(द्वि० ३, ५, तृ० ३)
२४०.६	कहँ जो	जूक	(द्वि० ५)
२४३.२	उमर	जूक	(द्वि० ५, तृ० ३)
२४५.५	गुरु	कर	(प्र० १,२, तृ० १,३, च० १)
२५१.५	कोटिन्ह	घूमहिं	(द्वि० २, ५)

ऊपर की तालिका को देखने पर ज्ञात होगा ३५ में से २५ स्थलों पर के पाठांतर द्वि० ५ के मूल पाठ में मिलते हैं। शेष किसी एक अन्य प्रति में नहीं मिलते। हो सकता है कि अन्यों के अतिरिक्त द्वि० ५ से—अथवा उसके मूल आदर्श से—द्वि० ४ में ये पाठांतर लिए गए हों।

द्वि० ४ में दिए हुए पाठांतर :

स्थल	मूल पाठ	पाठांतर	अन्य प्रतियाँ
१५.७	चलै	करै	(१)
१५.७	बरी	बरियार	(१)
१७.१	जग दान	बड दान	(१)
३२.४	गवन सोहाइ सो	बरन बरन सो	(१)
३६.५	नाच	काठ	(प्र० १, द्वि० २,३,४, तृ० १,३, च० १)
४३.३	पहिलें पानि राजा पै पिया।	अस वह कुंड पानि जौ पिया।	(१)
८१.६	ज्ञान सो चाहा	कहा पै चाहा	(सभी में है)
१०१.७	जुरा	रचा	(१)
१३६.१	जाइ	रात	(प्र० १)
१८३.५	भरा सब	परासन्ह	(सभी में है)
२४७.६	कुम्हिलाई	मुरझाई	(द्वि० २)
२५४.७	सरवरि	सँचरै	(प्र० १,२ द्वि० २, च० १)
२५५.२	पीऊ	साँऊ	(प्र० १,२, द्वि० ३,४,५, तृ० ३, च० १)
२५६.६	तवाँ	नवाँ	(द्वि० २)
२६६.४	कि नरेसू	के भेसू	(प्र० १, द्वि० २,३,४,७, तृ० ३, च० १)
२६६.५	रहै नहिं	औव नहिं	(१)

इस तालिका को देखने पर ज्ञात होगा कि द्वि० ५ में दिए हुए पाठांतर या तो किसी एक प्रति के नहीं हैं, और या तो जिस प्रति के हैं, वह एक से अधिक प्रतियों का पाठ देती थी।

फलतः आदर्श-बाहुल्य के इस अनुसंधान के द्वारा हम केवल द्वि० ४ के संबंध में यह जानने में समर्थ हुए हैं कि उसका प्रतिलिपिकार द्वि० ५—अथवा उसके किसी पूर्वज—के पाठ से परिचित था, और असंभव नहीं कि उसने उसका किसी अंश में उपयोग भी किया हो। शेष प्रतियों के संबंध में इस प्रकार के किसी निश्चयात्मक परिणाम पर हम नहीं पहुँच सके हैं।

४. आदि प्रति की लिपि

'पदमावत' की प्राप्त प्रतियों में से प्र०२, द्वि० ७, तृ० ३ नागरी लिपि में हैं, शेष फ़ारसी या अरबी लिपि में हैं। किंतु इन तीन नागरी लिपि की प्रतियों के भी आदर्श फ़ारसी या अरबी लिपि में थे, यह नीचे दिए हुए उनके पाठों से प्रकट होगा। यह पाठ विस्तार-भय से केवल उदहारण स्वरूप दिए जा रहे हैं:—

प्र० २ का पाठ :

स्थल	सामान्य पाठ	प्रति का पाठ
२३७.६	कौन	गौन
२४७.७	गई	गए
२५१.५	कोटिन्ह	खूटहिं
२५२.४	गाढ़ी	काढ़ी
२५२.६	कै	गी
२६६.८	जोग	चौक
३१५.६	आपु हीं	आपीं
३३२.८	बीन बंसि	बेन बंस
३५७.१	असाढ़ी	असारही
३६०.६	बीदरी	बेदरी
४२५.८	परथमै	पिरथिमी
४२८.३	पोढ़	पोरह
४३३.५	तहँ	तिन्ह
४३५.४	बाढ़ै, ऊभै	बाढ़ी, ऊभी
४५४.३	सखि सूरहि	सखि सोरह

स्थल	सामान्य पाठ	प्रति का पाठ
४५८.८	पहुँची	पहुँचै
४६७.२	तिरि	तर
४७४.१	चतुर	चित्र
४८०.६	जुगुति	जो गत
५०४.४,५१५.६	गढ़	गर्‌ह
५१३.४	सार	सारि
५१३.८,५३१.८	खेवरे	खेवरे
५२६.८	दिन कोई	दंगवै
द्वि० ७ का पाठ :		
२०१.४	करीलहि	करै कह
३४४.२	धाए	धाई
३४४.२	दिखाए	दिखाई
३५८.८	अढ़वीं	वोर होई
४३५.४	वाढ़ै, ऊभै	वाढ़ी, ऊभी
४५८.८	पहुँची	पहुँचै
५०१.१	कुँभलनेरै, सुमेरै	कुंभलनेरी, सुमेरी
५२६.८	दिन कोई	दंगवै
तृ० ३ का पाठ :		
६४.२	बेकरारा	किरारा
१४१.८	किलकिला	कलकला
१४८.१	गवेजा	कवेजा
२०७.४	पहुँची	पहुँचे
२०८.५	मढ़	मर्‌ह
२१६.६	दिढ़	दिर्‌ह
२२४.८	गै	कै
२२५.५	जरै, मरै	जरई, मरई
२२७.६	मढ	मर्‌ह
२३२.७	चढ़ी	चर्‌ही
२३४.८	राती	राते
२३८.४	धँसि	धपस

स्थल	सामान्य पाठ.	प्रति का पाठ
२४१.४	पञ्चै	पुवै
२४६.१	कर	गै
२६४.७	तन एँगुर	तेनेंगुर
३०१.४	अनचिन्ह	आँचन्ह
३१२.७	चौपर	जोवर
३१५.५	गहे पै	गहउ पिय
३१५.६	गै	कै
३२०.३	थोरइ	थोरी
३२०.६	पी	लै
३२०.६	जेंवन	जीवन
३२३.५	गही, रही	गहे, रहे
३२२.७	हुत	हित
३२६.६	बींदरी	पींडरी
३२६.७	चितेरे, हेरे	चितेरे, हेरी
३२६.७	फिरिगै	भरिकै
३३६.१	कै	गै
३४४.३	फेरी, घेरी	फेरे, घेरे
३५७.४	साँझ	साँच
३६१.७	गुरूइ	फरोइ
३६१.८	भए	भई
३६६.८	लागी दुनहु रहाहिं	लागे दिनहि रहाहिं
३६६.१	चितउर	चितुर
४०२.३	पुरोई, रोई	पुरोए, रोए
४१०.२	सिंघनी, बली	सिंघले, बले
४२४.२	दुलसै	दुलसी
४२८.३	पोढ़	पोरह
४२८.८	फरे	भरी
४३५.४	बाढ़ै, ऊमै	बाढ़ी, ऊमी
४५३.८	ठग लाडू	ठक लादु
४५८.८	पहुँची	पहुँचे
४७२.४	चूनी	चूने

स्थल	सामान्य पाठ	प्रति का पाठ
४६८.८,४६६.६	क्रांति	करानित
४७४.१	चतुर	चित्र
४७७.२	चमतकार	चमटिकार
४६१.५	सरिस	सुरस
४६२.७	छिताई	छुटाई
४६८.५	पाटि ओढैगा	पाटी डेसा
५०१.१	कुंभलनेरै,सुमेरै	कुंभलनेरी,सुमेरी
५०८.३	गौंड	गोंद
५१०.२	चरत,चरै	जरत,जरै
५१३.८	घेवरें	खेवरें
५१४.२,५४३.४	पीत	पेत
५१४.७	सिंघली,कलमली	सिंघले,कलमले
५१६.८	तनु गा	तिनुका
५२०.८	चकमक	जगमग
५२१.२	बड़ाइ	बड़ौ
५२२.२	देखें,लेखें	देखौ,लेखौं
५२३.६	विस्टि	पस्ट
५२४.४	फाटहिं	भाँतिन्ह
५२६.८	दिन कोई	दगवै
५२६.६	जुरै	जुरे
५२७.५	नागसुर	नागसर
५३१.८	घेवरें	खेवरें
५३५.७	निपुंसक	नवंसिक
५३६.३	अन्न	आनि
५४३.७	करी	करे
५४५.२	बदुवा	पटवा
५४७.२	मेंथी	मीठे
५४६.२	पीठे,मीठे	पीठी, मीठी
५५०.६	कही	कहै
५५८.३	बाचा परसि	बाजाहक
५६०.५	ढंग	धनुक

स्थल	सामान्य पाठ	प्रति का पाठ
५६५.८	स्यामि तहँ	स्याम तेहि
५६७.६	जेहि	चह
५७१.६	बिसरिगा	निसरिका
५७७.४	बिधि	बंधि
५८६.७	तन	बिनु
५८७.१	चितउर	चितुर
५९०.६	राती	राते
५९९.३	कुटनी	लुटनी
५९९.७	बहु रिसि	बिहि अखि
६०१.२	तप	तँत
६०१.३	काढहुँ	काढ़ेन्हि
६०२.६	लेहुँ	लीन्ह
६०४.५	लिएँ भई	लेन भए
६०४.५,६१०.६	का	गा
६११.३	मुष्टिक	मस्तिक
६११.५	सुपुरुष	सोपरस
६११.५	टारन	तारन
६११.६	काढ़हुँ	काढ़ेन्हि
६१४.६	टारा	तारा
६१४.७	सरिस	सुरस
६१६.८	कहीं	गहीं
६१७.३	कहा	गहा
६१७.७	भरा हिय	फिराही
६२०.३	चोली,खोली	चोले,खोले
६२०.४	भीजी,चुई	भीजे,चुए
६३१.१	पुरवाई	परौं आन
६३१.४	कनक	लिंग
६३३.२	मुरै	बरै
६३३.५	टूटहिं	लोटहिं
६३४.२	ठायँ न	ठाएन्ह
६३५.३	अमूब	आइऊप

स्थल	सामान्य पाठ	प्रति का पाठ
६१६.४	सिर बाजत	सरजा जित
६४८.३	गिरहिं	करहि
६५०.८	गईं	कँ

किंतु इससे भी आश्चर्य की बात यह है कि 'पदमावत' की जितनी भी प्रतियाँ प्राप्त हुई हैं—चाहे नागरी की हों चाहे फ़ारसी-अरबी लिपि की—सब का मूल आदर्श कवि की प्रति नागरी लिपि में थी। नीचे के उदाहरणों से यह बात भली भाँति प्रमाणित होगी। सुविधा के लिए प्रमाणित पाठ की पूरी पंक्ति भी नीचे दी गई है :—

२४.६ जो गढ़ नए न काऊ चलत होहिं 'सब' चूर।
'अबहिं' चढ़े पुहुमीपति सेर साहि जग सूर॥
'सब' के स्थान पर तृ० १ में पाठ 'सो' है, और 'अबहिं' के स्थान पर द्वि० ४,५,६, पं० १ में 'औहि' है।

२७.१ 'जबहि' दीप निअरावा जाई। जनु कविलास निअर भा आई।
'जबहि' के स्थान पर प्र० १, द्वि० ४,५,६, तृ० २, च० १ में 'औहि' है।

३१.२ पानि मोति अस निरमर तासू। अंब्रित 'बानि' कपूर सुबासू।
'बानि' के स्थान पर द्वि० ४,६ में 'कानि' है।

३७.४ रतन पदारथ मानिक मोती। हीर पँवार सो 'अनवन' जोती।
'अनवन' के स्थान पर द्वि० १,३,४,५,६, च० १ में 'अनवन' है।

४०.२ तरहिं 'कुरुँम' बासुकि कै पीठी। ऊपर इंद्रलोक पर दीठी।
'कुरुँम' के स्थान पर समस्त प्रतियों में 'कुरुँम' है।

४२.३ 'जबही' परी पूजि वह मारा। घरी घरी घरिआर पुकारा।
'जबही' के स्थान पर द्वि० १,४,५,६, च० १ में 'औहि' तथा तृ० २ में 'औही' है।

४५.१ पुनि चलि देखा राज दुआरू। महि 'घूँबिअ' पाइअ नहिं बारू।
'घूँबिअ' के स्थान पर समस्त प्रतियों में 'घूँविअ' है।

४५.६ गिरि पहार 'पब्बै' गहि पेलहिं। बिरिछ उपारि झारि मुख मेलहिं।
'पब्बै' के स्थान पर द्वि० १ में 'परबै' (पब्बै > पब्बै > परबै) है।

४५.६ 'कुरुँम' टूट फन फाटे तिन्ह हस्तिन्ह की चालि।
'कुरुँम' के स्थान पर समस्त प्रतियों में 'कुरुँम' है, केवल द्वि० ४ में 'गिरहिं' है।

४६.४ तील तुलार चाँड औ बाँके। तरपहिं 'तबहि' तायन बिनु हाँके।
'तबहिं' के स्थान पर द्वि० १,४, ५, तृ० २, च० १ में 'तौहि' है।

४८.५ भा कटाव सब 'अनबन' भाँती। चित्र होत गा पाँतिहि पाँती।
'अनबन' के स्थान पर द्वि० १, ४, ५, च० १ में 'अनवन' है।

५६.४ 'तब' लगि रानी सुवा छपावा। 'जब' लगि आइ मँजारिन्ह पावा।
'तब', 'जब' के स्थान पर द्वि० १, तृ० ३ में 'तौ', 'जौ' है।

५८.६ सुआ न रहै खुरुक जिअ अबहिं काल सो आउ।
सतुरु अहै जो करिआ 'कबहु' सो बोरै नाउ॥
'कबहु' के स्थान पर द्वि० ४, ५, ६, पं०१ में 'कौहु' है।

६८.४ ओहँ उड़ानफर तहिंऔ लाए। 'जब' भा पंखि पाँख तन पाए।
'जब' के स्थान पर द्वि० १,४,५,६, च० १ में पाठ 'जौ' है।

७१.३ सुख कुरिआर फरहरी खाना। विख भा 'जबहिं' बिआध तुलाना।
'जबहिं' के स्थान पर द्वि० ४, ५, ६, च० १ में 'जौहिं' है।

७६.१ 'तबहिं' बिआध सुआ लै आवा। कंचन बरन अनूप सोहावा।
'तबहिं' के स्थान पर द्वि० ४, ५, च० १ में पाठ 'तौहिं' है।

७६.१ 'तब' लगि चित्रसेन सिव साजा। रतनसेनि चितउर भा राजा।
'तब' के स्थान पर द्वि० १ में पाठ 'तौ' है।

८५.१ जौं यह सुआ मँदिर महँ रहई। 'कबहु' कि होइ राजा सौं कहई।
'कबहु' के स्थान पर द्वि० ६ में पाठ 'कौहु' है।

८७.७ कहिर सुवै 'जब जब' कह बाता। भोजन बिनु भोजन मुख राता।
'जब जब' के स्थान पर द्वि० २, ३, ४, ५, ६, च० १, पं० १ में 'जो जो' है।

६८.७ 'तब' लगि दुख प्रीतम नहिं भेंटा। जौं भेंटा जरमन्ह दुख मेंटा।
'तब' के स्थान पर द्वि० १ में 'जौ' और तृ० ३ में 'तौ' है।

१०२.६ 'जबहिं' फिराव गगन गहि बोरा। अस ओइ भँवर चक्र के जोरा।
'जबहिं' के स्थान पर द्वि० ४, ५, ६ में 'जौहिं' है।

१०५.५ पुहुप सुगंध करहिं सब आसा। मकु 'हिरगाइ' लेर हम पासा।
'हिरगाइ' के स्थान पर समस्त प्रतियों में 'हिरकाइ' या 'हिरिकाइ' है।

१०६.२ फूल दुपहरी जानहुँ राता। फूल करहिं 'जब जब' कह बाता।
'जब जब' के स्थान पर द्वि० १, २, ३, ५, ६, ७, तृ० १, च० १ में 'जौ जौ' है।

१२२.४ पहिलेहिं मुकुत नेहु · 'जब' जोरा । पुनि होइ कठिन निबाहत ओरा ।
'जब' के स्थान पर द्वि० ६, च० १ में 'जो' है ।

१२४.८-९ अबहूँ जागु अजाने होत आव निसु भोर ।
पुनि किछु हाथ न लागिहि मूसि जाहिं 'जब' चोर ॥
'जब' के स्थान पर द्वि० १ में 'ज्यौं' तथा द्वि० २ में 'जौ' है ।

१३६.३ ओहि मेलान 'जब' पहुँचिहि कोई । 'तब' हम कहब पुरुष भल सोई ।
'जब', 'तब' के स्थान पर द्वि० १,४,५,६, तृ० ३ में 'जौ', 'तव' तथा च० १ में 'जौ', 'तौ' है ।

१५५.७ भा परलौ नियराएन्हि 'जबही' । मरै सो ताकर परलौ 'तबही' ।
'जबही', 'तबही' के स्थान पर द्वि० १, ४, ५, ६, च० १ में 'जौही', 'तौही' है ।

१५६.३ 'कबहु' न ऐस जुड़ान सरीरू । परा अगिनि महँ मलै-समीरू ।
'कबहु' के स्थान पर द्वि० १, ४, ५ में 'कौहु' है ।

१६८.५ गहे बीन मकु रैनि बिहाई । ससि बाहन 'तब' रहै ओनाई ।
'तब' के स्थान पर द्वि० ७ में 'तौ' है ।

१७४.१ 'जब' लगि अवधि चाह सो पाई । दिन जुग बग बिरहिनि कहँ जाई ।
'जब' के स्थान पर द्वि० १ में 'जौ' है ।

१७५.४ रही रोइ 'जब' पदुमिनि रानी । हँसि पूँछहिं सब सखी सयानी ।
'जब' के स्थान पर द्वि० ३, ६, च० १ में 'जौ' है ।

१७६.५ कंचन करी न काँचहि लोभा । जौं नग होइ पाव 'तब' सोभा ।
'तब' के स्थान पर द्वि० ६, तृ० ३ में 'तौ' है ।

१६७.३ देव पूजि 'जब' आइउँ काली । सपन एक निसि देखिउँ आली ।
'जब' के स्थान पर द्वि० १ में 'जौ' है ।

२१२.७ कै जियँ तंतमत सो हेरा । गएउ हेराइ 'जबहि' भा मेरा ।
'जबहि' के स्थान पर द्वि० ४, ५, च० १ में 'जो बहि' तथा प्र० १, २, द्वि० १, २, ६, तृ० ३, पं० १ में 'जोहि' है ।

२१८.४ इहाँ इंद्र अस राजा तपा । 'जबहि' रिसाइ सूर डरि छपा ।
'जबहि के स्थान पर द्वि० २, ३, ५, ६, तृ० १, २, च० १ में 'जोंहि' और द्वि० १ में 'जो चहि' है ।

२४१.४ बाइस सहस सिंघली चाले । गिरि पहार 'पब्बै' सब हाले ।
'पब्बै' के स्थान पर तृ० ३ में 'पुवे' है ।

२४१.७ जनु भुइँचाल जगत महँ परा। 'कुरुँम' पीठि टूटिहि हियँ डरा।
समस्त प्रतियों में 'कुरुँम' के स्थान पर 'कुरुँभ' है।

२४५.८ परगट गुपुत सकल महँ मंडल पूरी रहा 'सब' ठाउँ।
जहँ देखौं ओहि देखौं दोसर नहिं जहँ जाउँ॥
'सब' के स्थान पर द्वि० १, ३, ६, तृ० २, ३ में पाठ 'सो' है।

२४७.३ 'जबहिं' सुरुज कहँ लागेहु राहु। 'तबहिं' कवँल मन भएउ अगाहू।
'जबहि', 'तबहि' के स्थान पर द्वि० १,३,४,५,६, तृ० २, च० १,
पं० १ 'जोहि', 'तोहि' और द्वि० २ में 'चोहि', 'तोहि' है।

२६५.५ मेघ डरहिं बिजुरी जहँ डीठी। 'कुरुँम' डरै धरती जेहि पीठी।
प्र० २ में 'कमठ' है, शेष समस्त प्रतियों में 'कुरुँभ' है।

२६४.६ अब तेहि बाजु राँग भा डोलौं। होइ सार 'तब' बर कै बोलौं।
'तब' के स्थान पर तृ० २ के अतिरिक्त समस्त प्रतियों में 'तौ' है।

३००.४ अनचिन्ह पिउ काँपै मन माहाँ। का मैं कहब गहब 'जब' बाहाँ।
'जब' के स्थान पर द्वि० ४, ६, च० १ में 'जौ' है।

३०६.६ भँवरहि मीचु निअर 'जब' आवा। चंपा बास लेइ कहँ धावा।
'जब' के स्थान पर प्र० १ के अतिरिक्त समस्त प्रतियों में 'जौ' है।

३०७.६ पान सुपारी खैर दुहुँ मेरे करै चकचून।
'तब' लगि रंग न राचै 'जब' लगि होइ न चून॥
'तब', 'जब' के स्थान पर प्र० १, द्वि० १, ४, ५, तृ० १ में 'तौ',
'जौ' है।

३११.३ जेहि उपना सो औटि मरि गएऊ। जरम निनार न 'कबहू' भएऊ।
'कबहू' के स्थान पर द्वि० ४, ५ में 'कौहू' है।

३२६.८ पुनि अभरन बहु काढ़ा 'अनबन' भाँति जराउ।
फेरि फेरि निति पहिरहि जैस जैस मन भाव॥
'अनबन' के स्थान पर प्र० १, द्वि० १,२,३,४,५,६, तृ० १, २,
पं० १ में 'अनवन' है।

३२६.६ भएउ इंद्र कर आएसु प्रस्थावा येह सोइ।
'कबहु' काहु पर प्रभुता 'कबहु' काहु कर होइ॥
'कबहु' के स्थान पर दोनों स्थानों पर द्वि० ४, ५, च० १ में
'कौहु' है।

२५२.२ पहल पहल तन 'रूइ' जो झाँपै। हहलि हहलि अधिको हिय काँपै।
'रूइ' के स्थान पर प्र० २ में 'रूद' है।

२५२.७ रातिहु देवस इहै मन मोरें। लागौं कंत 'छार' जेउँ तोरें।
'छार' के स्थान पर समस्त प्रतियों में 'थार' या 'ठार' है।
'छ' का 'थ', और उर्दू 'थ' का पुनः 'ठ' हुआ ज्ञात होता है।

२६४.४ हिया फाट वह 'जबहि' कूकी। परे आँसु होइ होइ सब लूकी।
'जबहि' के स्थान पर द्वि० २, ६, च० १ में 'जौहि' है।

२६६.७ जस तूँ पंखि होहुँ दिन भरऊँ। चाहौं 'कबहु' जाइ उड़ि परऊँ।
'कबहु' के स्थान पर द्वि० २, ३, ४, ५, ६, तृ० १, २, च० १ पं० १ में 'कौहु' है।

३६०.४ धुवाँ उठै मुख स्वाँस सँघाता। निकसै आगि कहै 'जब' बाता।
'जब' के स्थान पर द्वि० २, ४, ५, ६, ७, तृ० १, च० १, पं० १ में 'जौ' और द्वि० ३ में 'जौं' है।

४१२.५ कहँ अब रहस भोग अब करना। ऐसे जिअन चाहि भल मरना।
'अब' के स्थान पर तृ० ३ में 'औ' है।

४७०.८ होइ अँधियार बीजु खन लौकै 'जबहि' चीर गहि झाँपु।
केस काल आइ कत मैं देखै सँवरि सँवरि जिय काँपु॥
'जबहि' के स्थान पर द्वि० ४, ५, ६, च० १ में पाठ 'जौहि' है।

४८६.२ जनु मूरति वह परगट भई। दरस देखाइ 'तबहि' छपि गई।
'तबहि' के स्थान पर द्वि० २, ४, ५, ६, च० १ में 'तौहि' है।

५१०.७ गिरि पहार 'पब्वै' भे माँटी। हस्ति हेरान तहाँ को चाँटी।
'पब्वै' के स्थान पर तृ० ३ में 'पुवै' है।

५१०.९ जिन्ह जिन्ह के घर खेह हेराने हेरत फिरहिं ते खेह।
अब तौ दिस्टि 'तबहि' पै आवहिं उरजहिं नए उरेह॥
'तबहि' के स्थान पर द्वि० ४, ५, च० १ में पाठ 'तौहि' है।

५२५.५ अस्ट धातु के गोला छूटहिं। गिरि पहार 'पब्वै' सब फूटहिं।
'पब्वै' के स्थान पर तृ० ३ में 'पवै' है।

५३४.५ 'जब' लगि जीभ अहै मुख तोरे। पँवरि उबेलु बिनौ कर जोरे।
'जब' के स्थान पर प्र० २, तृ० ३ में 'जौ' है।

५३६.६ सहस बार जौं धोवहु 'तबहु' गयंदहि पंक।
'तबहु' के स्थान पर द्वि० ४, ५, च० १ में 'तौहु' है।

५४५.२ कटवाँ वटवाँ मिला सुबासू। सीझा 'अनवन' भाँति गरासू।
'अनवन' के स्थान पर द्वि० १, ५,६ में 'अनवन' है।

५५२ ६ लग लग बैठ पँवरिश्रा जहँ सो नवहिं करारि।
तिन्ह 'सब' पँवरि उघारी ठाढ़ भए कर जोरि॥
'सब' के स्थान पर तृ० ३ में 'सो' है।

५५३.८ साहि 'जबहि' गढ देखा कहा देखि कै राजु।
कहिअ राज फुर ताकर सरग करै जो राजु॥
'जबहि' के स्थान पर द्वि० २, ३, ४, ५, ६ में 'जौहि' है।

५६७.३ दरपन साहि पैत तहँ लावा। देखौं 'जबहि' झरोखें आवा।
'जबहि' के स्थान पर द्वि० ४, ५, ६, च० १ म 'जौहि' है।

६१३.५ 'जबहि' आइ जुरिहै वह ठटा। देखत जैस गगन महँ छटा।
'जबहि' के स्थान पर द्वि० ४, ५, ६ च० १ में 'जौहि' है।

६३१.४ कनक 'बानि' गजबेलि सो नाँगी। जानहुँ काल करहिं जिउ माँगी।
'बानि' के स्थान पर समस्त प्रतियों में 'वानि' है।

ऊपर जो उदाहरण दिए गए हैं, उनका विश्लेषण करने पर ज्ञात होगा कि प्रयुक्त प्रतियों में से कोई भी ऐसी नहीं है जिसमें के कुछ-न-कुछ स्थल ऊपर के न आ गए हों। इससे यह प्रकट है कि आदि प्रति नागरी में थी।

५. आदि प्रति की भाषा

'पदमावत' की शब्दावली से पर्याप्त रूप से परिचित न होने के प्रमाण उसके प्रतिलिपिकारों में ही नहीं, सपादकों में भी मिलते हैं। नीचे ग्रंथ से इसलिए ऐसे स्थल मात्र लिए जा रहे हैं, जहाँ न केवल प्रतिलिपिकारों ने वरन् संपादकों ने भी इसी कारण पाठ अशुद्ध दिए हैं। विस्तार-भय से उदाहरण ग्रंथ के पूर्वार्द्ध से ही दिए जा रहे हैं —

२ १ कीन्हेसि 'हेम'[1] समुद्र अपारा। कीन्हेसि मेरु खिखिंद पहारा।
'हेम' ∠ 'हिम'

१०.२ सात सरग जो 'कागर'[2] करई। धरती सात समुँद मसि भरई।
'कागर' ∠ 'काग़ज़' (?)

---

1. प्र० १, २, द्वि० २, ३, ७, तृ० १, २, च० १, प० १ । 2. द्वि० ३, तृ० २, ३, च० १, प० १।

२५.३　अदल कीन्ह उम्मर की नाईं । भइ 'अहान'[3] सगरी दुनियाईं ।
'अहान'∠'आख्यान' (?) = कहावत

२६.५　भा अस सूर पुरुष निरमरा । सूर चाहि 'दह'[4] आगरि करा ।
'दह'∠'दश'।

२७.८　औस दानि जग 'उपना'[5] सेर साहि सुरतान ।
'उपना'='उत्पन्न हुआ'

२४.५　आदि अंत जसि 'कथ्था'[6] अहै । लिखि भाषा चौपाई कहै ।
'कथ्था'∠'कथा' (तुलना० ८२.७)

२६.३　छप्पन कोटि कटक दर साजा । सबै छत्रपति 'औरगन्ह'[7] राजा ।
'औरगन्ह'∠'अरकान' [-ए-दौलत] (तुलना० ६६.६)

२६.५　सोरह सहस घोर घोर सारा । साँवं करन 'बालका'[8] तोखारा ।
'बालका'='बलख का' (?)

२६.३　सारौ सुवा सो रहचह करहीं । 'गिरहिं' (?)[9] परेवा औ करबरहीं ।
'गिरना' = ऊपर से टूट पड़ना (यथा : टूटि परेवा परत गगन ते गिरत न आपु सँभारै—सूरदास)

३१.१　ताल 'तलावरि'[10] बरनि न जाहीं । सूझै वार पार तेन्ह नाहीं ।
'तलावरि'=छोटे ताल

३७.४　रतन पदारथ मानिक मोती । हीर पवाँर सो 'अनबन'[11] जोती ।
'अनबन'=न बनने योग्य, अपूर्व

४१.५　बहु 'बनान'[12] वै नाहर गढ़े । जनु गाजहिं चाहहिं सिर चढ़े ।
'बनान'='बनावट'

४५.६　गिरि पहार 'पब्वै'[13] गहि पेलहिं । बिरिख उपारि झारि मुख मेलहिं ।
'पब्वै'∠'पर्वत' (तुलना० २४१.४, ४२५.५)

---

३. प्र० १, २, द्वि० १, ४, ५, तृ० ३, पं० १ । ४. तृ० १, २, ३, पं० १ । ५. द्वि० ४, ७ के अतिरिक्त समस्त में । ६. प्र० १, तृ० २ के अतिरिक्त समस्त में । ७. द्वि० ४, ५ के अतिरिक्त समस्त में । ८. प्र० १, २, द्वि० १, ४, ५, ६, तृ० २, च० १, पं० १ । ९. द्वि० २, तृ० २, च० १, पं० १ में 'किरहिं' । १०. प्र० १, २, तृ० १, २, ३, च० १, पं० १ । ११. द्वि० २, ५, तृ० ३ के अतिरिक्त समस्त में 'अनबन' । १२. प्र० १, २, द्वि० ४, ५, ६, तृ० १, २, पं० १ में 'बनान' द्वि० ७, तृ० ३ में 'बिनान' । १३. प्र० २, द्वि० २, ४, ७, तृ० ३, पं० १ ।

४६.४ तील तोलार चाँट श्री बाँके। तरप्रहिं तबहिं 'तायन'[१४] बिनु हाँके।
'तायन'=कोड़ा

५२.५ सूर परस सों भएउ 'किरोरा'[१५]। किरिन जामि उपना नग हीरा।
'किरोरा'='क्रीड़ा' (तुलना० ३१७.२,४)

६२.१ धरीं तीर सब 'छीपक'[१६] सारी। सरवर महँ पैठीं सब बारी।
'छीपक'=छपी हुई, छापादार

६६.१ पदुमावति तहँ खेल 'धमारी'[१७]। सुश्रा मँदिर महँ देखि मँजारी।
'धमारी'='धमार' [की भाँति]

६७.३ रानी सुना 'सुक्ख'[१८] सब गएऊ। जनु निसि परी श्रस्त दिन गएऊ।
'सुक्ख' ∠ 'सुख'

६८.१ जौ लहि पिंजर श्रहा परेवा। श्रहा 'बाँदि'[१९] कीन्हेसि निति सेवा।
'बाँदि'='बंदी'

६८.४ तेहि बँदि हुतें जो छूटै पावा। पुनि फिरि 'बाँदि'[२०] होइ कित श्रावा।
'बाँदि'='बंदी'

७०.३ बिखदाना कत दइश्र 'श्रँकूरा'[२१]। जेहि भा मरन डहन धरि चूरा।
'श्रँकूरा'='श्रंकुरित किया', उत्पन्न किया

७१.४ काहेक भोग बिरिखि श्रस फरा। 'श्रड़ा'[२२] लाइ पंखिन्ह कहँ धरा।
'श्रड़ा'=चुभने वाली वस्तु (यथा बेर का 'श्राँड़ा')

७१.५ होइ निचित बैठे तिहि 'श्रड़ा'[२३]। तब जाना खोंचा हिय गड़ा।
'श्रड़ा' यथा ऊपर

७८.१ कहेसि पंखि खाधुक 'मानवा'[२४]। निठुर ते कहिश्र जे पर 'मँसुखवा'।
'मानवा' ∠ 'मानव'; 'मँसुखवा'=माँस खाने वाले

---

१४. प्र० २, द्वि० ३, च० १, पं० १ में 'तायन', द्वि० २ में 'ताय'। १५. द्वि० ४, ५ के अतिरिक्त समस्त में। १६. द्वि० १, २, ३, ४, ५, ६, तृ० १, ३, च०.१ में 'छीपक', तृ० २, पं० १ में 'चंपक'। १७. प्र० २, द्वि० १, ४, ६, ७, तृ० १,०, च० १। १८. प्र० २, द्वि० २, ४, ५, ६, ७, तृ० १, च० १। १९. प्र० २, द्वि० १, २, ३, ४, ५, ७, तृ० २, प० १। २०. तृ० ३, द्वि० ४ के अतिरिक्त समस्त में। २१. द्वि० ४, ५ के अतिरिक्त समस्त में। २२. प्र० २, च० १ के अतिरिक्त समस्त में। २३. प्र० २, द्वि० ३ के अतिरिक्त समस्त में। २४. द्वि० २, ६, तृ० १, २, ३, च० १, पं० १।

८३.४ 'भलेहिं सु श्रौर पियारी नाहीं ।'[२५] मोरें रूप कि कोइ जग माहीं ।
'भलेहिं सु श्रौर पियारी नाहीं'=सो भले ही पति की श्रौर भी (मेरे अतिरिक्त) प्रिय पत्नियाँ हैं

८६.४ जो 'तिवाईं'[२६] के काज न जाना । परै धोख पाछैं पछिताना ।
'तिवाईं'=स्त्री

८७.८ मायँ नहिं वैसारिश्र 'सठहि' [२७] मुवा जो लोन ।
'सठहि'='शठ को'

८६.६ तेहि रिस हौं परहेलिउँ 'निगड़ रोस किय'[२८]नाहँ ।
'निगड़ रोस किय'=कठिन रोष किया

६१.६ मान 'मते' [२९] हौं गरब जो कीन्हा । कंत तुम्हार मरम मैं लीन्हा ।
'मते'='मत से', विचार से

६६.६ अष्टौ कुरी नाग 'श्रोरगाने' [३०] मै फेसन्हि के बाँद ।
'श्रोरगाने' ∠'श्ररकान' [-ए-दौलत] (तुलना० २६.१)

१०३.७ समुँद हिलोर फिरहिं जनु झूले । खजन 'लुरहिं' [३१] मिरिग जनु भूले ।
'लुरना'='लोटना' (तुलना० २६७.२)

१०५.५ पुहुप सुगंध करहिं सब श्रासा । मकु 'हिरगाइ'[३२] लेइ हम पासा ।
'हिरगाइ'='हिलगा कर', निकट लाकर (यथा 'हिलगि' १३७.६)

१०७.३ वह सो जोति हीरा उपराहीं । हीरा 'दिपहि'[३३] सो तेहि परिछाहीं ।
'दिपना'=प्रदीप्त होना

१०८.७ श्रमर भागत पिंगल श्रौ गीना । 'श्ररथ जूझ'[३४] पंडित नहिं जीना ।
'श्ररथ जूझ' ∠'श्रर्थयुद्ध' (शास्त्रार्थ)

---

२५. द्वि० १, २, ४, ७, पं० १; (द्वि० ३, तृ० १ में—मुश्रा श्रौर—) । २६. द्वि० ५ में 'तिरिश्रा', द्वि० १, पं० १ में 'तिवानि', शेष समस्त में 'तिवाईं' । २७. तृ० ३ के अतिरिक्त समस्त में । २८. द्वि० १,३, ६, तृ० १, २ च० १, पं० १ । २९. प्र० २, द्वि० १, २, ५, ६, तृ० २, च० १, पं० २, । ३०. प्र० १, २, तृ० ३ के अतिरिक्त सभी में 'मानमते' द्वि० ७, में 'मानमती' । ३१. प्र० २, द्वि०,२,३, तृ० २ में 'श्रोरगाने' । तृ० ३ में 'सब श्रोरंगे' । ३२. द्वि० १, ६, तृ० २, च० १ में 'हिरगाइ' । ३३. द्वि० २, तृ० ३ के अतिरिक्त समस्त में । ३४. प्र० १, द्वि० १, २, ४, ५, ६, ७, तृ० १, २, ३, पं० १, में 'जूझ', द्वि० ३ में 'जो चढ़' ।

१११.१ बरनौं गीवँ कूँज कै रीसी। 'कंजनार'[35] जनु लागेउ सीसी।
'कजनार' ∠ 'कंजनाल'

११२.६ ठावँहि ठावँ 'बेह'[36] भे हिरदै ऊभि साँस लेइ नित्त।
'बेह' ∠ बेध, (छिद्र)

११३.६ काहूँ घुअइ न 'पारे'[37] गए मरोरत हाथ।
'पारना'=सकना (तुलना २१६.६)

११५.२ लहरैं देत पीठि जनु चढ़ा। चीर ओढ़ावा 'कंचुकि'[38] मढ़ा।
'कंचुकी' 7 'केंचुली'

११६.७ मानहुँ बीन गहे कामिनी। 'रागहिं'[39] सबै राग रागिनी।
'रागना'=गाना

११७.६ तेहि अरघानि भवँर सब लुबुधे तजहिं न 'नीवी'[40] बंध।
'नीवी'=फुँदना (तुलना २६८.६)

१२२.२ तासौं जूझि जात जौं जीता। जात न 'किरसुन'[41] तजि गोपीता।
'किरसुन' ∠ 'कृष्ण'

१२४.५ तूँ राजा का पहिरसि कथा। तोरे 'घटहि'[42] माँझ दस पंथा।
'घटहि'='घट (अंतःकरण) ही'

१२४.८ अबहूँ जागु अयाने होत आव 'निसु'[43] भोर।
'निसु'=बिलकुल

१२७.१ गनक कहहिं करु गवन न आजू। दिन लै चलहु 'फरै'[44] सिधि काजू।
'फरै'=फल दे

१२८.१ चहुँ दिसि आन 'साँटिअन्हि'[45] फेरी। भै कटकाई राजा केरी।
'साँटिअन्हि'=साँटा-बरदारों ने

---

३५. द्वि० २, ३, ६, ७, तृ० २ में 'कजनार', प० १ में 'कजतार'। ३६. द्वि० १, २, ७, तृ० २, च० १। ३७. द्वि० ३, ४, ५, ६, ७, तृ० १,२ च० १, पं० १, में 'पारे', तृ० ३ में 'पारेउ'। ३८. द्वि० १, २, ७, तृ० २, ३। ३९. प्र० २, द्वि० १, ३, ६, ७, तृ० ३ में 'रागहि' प्र० १, द्वि० २, ४, ५, तृ० १, प० १ में लागहिं। ४०. द्वि० २, ३, ६, तृ० २ में 'तीवी', पं० १ में 'तिनवै', तृ० १ में 'पीवी'। ४१. द्वि० १, ६, ७, तृ० १, २, पं० १। ४२. द्वि० १, २ के अतिरिक्त समस्त में। ४३. प्र० २, तृ० ३ के अतिरिक्त समस्त में। ४४. प्र० १, २, द्वि० १, २, ३, ७, तृ० २ में 'परै' तृ० १ में 'भरै'। ४५. प्र० १, द्वि० १, तृ० २ के अतिरिक्त समस्त में।

२३२.७ जस कुरकुटा पै भंखु चाहा। जोगिहि तात भात 'दहुँ'[४६] काहा।
'दहुँ'='घीं'

२३३.२ बार गोर 'रजियाउर'[४७] रता। सो लै चला सुग्रा परबता।
'रजियाउर'=राजकाश

२३६.१ कया 'मलै'[४८] तेहि भसम मलीजा। चलि दस कोस ग्रोस निति भीजा।
'मलै'='मलय', चंदन

२३६.६ किंगरी हाथ गहें बैरागी। पाँच तंतु धुनि 'उठै' लागी।
'उठै'=उठने

२४१.१ गजपति कहा सीस 'बरु'[५०] माँगा। एतने बोल न होइहि खाँगा।
'बरु'=भले ही (तुलना १४२.५)

२४१.७ तुम्ह सुखिश्रा अपने घर राजा। एत जो 'दुक्ख'[५१] सहहु केहि काजा।
'दुक्ख'∠दुःख

२४२.५ श्रौ जेइँ समुँद पेम कर देखा। तेइँ यह समुँद बुंद 'बरु'[५२] लेखा।
'बरु'=भले ही (तुलना १४१.१)

२४६.४ बोहित दीन्ह दीन्ह 'नै'[५३] साजू।
'नै'=नए

२५०.१ सत साथी सत कर 'सहिवाँरू'[५४]। सत्त खेइ लै लावै पारू।
'सहिवाँरू'∠'सम्हारू'∠'संभार'

२५५.२ नीर होइ तर ऊपर सोई। 'महनारंभ'[५५] समुँद जस होई।
'महनारंभ'∠मंथनारंभ (तुलना ४६३.१)

२५७.५ कोई खाहिं पवन कर झोला। कोई करहिं पात जेउँ 'दोला'[५६]।
'दोला'∠'दोल' (झूला)

---

४६. प्र० १, २, द्वि० १, २, ६, ७, तृ० १, २, पं० १। ४७. प्र० २, द्वि० १, २, ३, ४, ५, ६, ७, तृ० १, २ में 'रजियाउर', तृ० ३ में 'राजाबाउर', च० १, पं० १ में "रजबाउर"। ४८. प्र० २, द्वि० ३, तृ० ३ के अतिरिक्त समस्त में। ४९. द्वि० १, २, तृ० १, २। ५०. द्वि० २, ४, ५, ६, तृ० १, २, प० १,। ५१. प्र० १, द्वि० १, ४, ५, तृ० ३, पं० १,। ५२. प्र० १, द्वि० ३, ४, ५, ७, तृ० २, पं० १,। ५३. द्वि० २, ४, तृ० २, ३, च० १, पं० १। ५४. प्र० २, द्वि० २, ३, ७, तृ० १, २ ५५. प्र० २, द्वि० ७ में 'महनारंभ' प्र० १ में 'मंथनश्ररंभ' द्वि० २, ३, ४, ५, तृ० १ में 'महाश्ररंभ' तृ० २ 'तहाँ श्ररंभ' में। ५६. द्वि० ३, पं० १ के अतिरिक्त समस्त में।

१६६.७ केसरि बरन हिश्रा मा तोरा । मानहुँ मनहिं भएउ किछु 'फोरा'[५७] ।
'फोरा' ∠ 'फोड़ा'

१७१.१ पदुमावति तूँ 'सुबुधि'[५८] सयानी । तोहि सरि समुँद न पूजै रानी ।
'सुबुधि'=सुबुद्धिवाली

१७१.५ जोबन जो रे 'मतँग'[५९] गज अहै । गहु गिश्रान श्राँकुस जिमि गहै ।
'मतँग'=उन्मत्त

१७२.६ कनक 'बानि'[६०] जोबन कत कीन्हा । श्रौ तन कठिन बिरह दुख दीन्हा ।
'बानि'=के वर्ण का

१७७.८ कहाँ रतन 'रतनाकर'[६१] कंचन कहाँ सुमेरु ।
'रतनाकर' ∠ 'रत्नाकर' (समुद्र)

१७६.६ नग कर मरम सो जरिश्रा जाना । जरै सो श्रस नग हीर 'पखाना'[६२] ।
'पखाना' ∠ 'पाषाण' (बहुमूल्य पत्थर)

१८१.८ बसै मीन जल धरती श्रंबा 'बिरिख'[६३] श्रकास' ।
'बिरिख' ∠ 'वृक्ष' ।

१८३.५ नवल सिंगार 'बनाफति'[६४] कीन्हा । सीस परासन्ह सेंदुर दीन्हा ।
'बनाफति' ∠ 'वनस्पति'

१८५.१ भै 'श्रहान' [६५] पदुमावति चली । छतिस कुरी भै गोहने चली ।
'श्रहान' ∠ 'श्राह्वान'

१८६.१ फर फूलन्ह सब डारि 'श्रोनाई'[६६] । झुंड बाँधि कै पंचमि गाई ।
'श्रोनाना'=झुकाना

१६४.१ सुनि सो बात रानी 'सिउँ'[६७] चढ़ी । कहाँ सो जोगी देखौं मढ़ी ।
'सिउँ'=संग

१६६.४ फूल झरे सूखी फुलवारी । दिस्टि परीं उकठी सब 'झारीं'[६८] ।
'झारीं'=झाड़ियाँ

---

५७. प्र० २, द्वि० २, ३, ४, ५, ६, ७, तृ० ३, च० १ । ५८. प्र० २, द्वि० १, ३, ६, तृ० २, पं० १ । ५९. द्वि० २, ३, ५, ७ के अतिरिक्त समस्त में । ६०. प्र० २, द्वि० १, ३, ४, ५, ६, ७, तृ० २, पं० १ । ६१. प्र० १, द्वि० १, २, ३, ६, तृ० १, पं० १ । ६२. द्वि० १, ३, ६, तृ० २, पं० १ । ६३. द्वि० १, २, ३, ४, ७, तृ० २, ३, च० १, पं० १ । ६४. प्र० १, २, द्वि० १ के अतिरिक्त समस्त में । ६५. द्वि० १, २, ५, ६, तृ० १, च० १, पं० १ में 'श्रहान', द्वि० ३, ४, तृ० २ में 'श्राहाँ' । ६६. प्र० १, २, द्वि० २, ७, तृ० २, च० १, पं० १ । ६७. द्वि० २, ४, ७, तृ० १, २, च० १, पं० १ । ६८. द्वि० १, २, ४, ५, ६, ७, तृ० १, २, च० १, पं० १ ।

१९९.८ दिया देखि सो चंदन 'घेवरा'[६९] मिलि कै लिखा बिछोव।
'घेवरना'=सींचना

२००.१ जनहुँ 'सरागिनि'[७०] होइ होइ लागे। सब तन दागि सिंघरन दागे।
'सरागिनि' ∠ 'शराग्नि' (सरकंडे में लगी हुई आग)

२०५.८ महमद चिनगी 'अनँग'[७१] की सुनि महि गगन डेराइ।
'अनँग' ∠ 'अनंग'

२०६.९ 'कनै'[७२] पहार होत है रावट को राखै गहि पाइँ।
'कनै' ∠ कनक (तुलना ०१६०.५)

२२८.१ रोवँहि रोवँ बान वै फूटे। सोतहि सोत रुहिर 'मकु;'[७३] छूटे।
'मकु'=मानो

२२९.७ अब धँसि लीन्ह चहै तेहि आसा। पावै साँस कि मरै 'निरासा'[७४]।
'निरासा'=बिना साँस के (तुलना ११९.५;२०१.८)

२३४.७ होहु चकोर दिस्टि ससि पाहाँ। औ रवि होहु कवँल 'दधि'[७५] माहाँ।
'दधि'=उदधि, सरोवर

२४१.४ चाइस सहस सिंघली चाले। गिरि पहार 'पव्वै'[७६] सब हाले।
'पव्वै' ∠ पर्वत (तुलना ४५.६; ५२५.२)

२४५.८ गुरू मोर मोरैं 'हित'[७७] दीन्हें तुरगहि ठाठ।
'हित'=भलाई के लिए

२५१.५ उदधि समुँद जस तरँग देखावा। चपु कोटिन्ह[७८] मुख एक न आवा।
'कोटिन्ह'=करोड़ों

२५४.७ प्रीति अकेलि बेलि चढ़ि छावा। दोसर बेलि न 'पसरै'[७९] पावा।
'पसरना'=फैलना

२६६.२ तेहि रावन अस को बरिबंडा। जेहि दस सीस बीस 'भुअडंडा'[८०]।
'भुअडंडा' ∠ 'भुजदंड' (तुलना ४६७.८)

---

६९. प्र० २, द्वि० १, २, ३, ६, ७, तृ० २, ३, पं० १ में 'घेवरा' द्वि० ४ 'धौरा'। ७०. द्वि० ७, तृ० ३ के अतिरिक्त समस्त में। ७१. प्र० २, द्वि० ६, च० १, पं० १। ७२. द्वि० १, ६, ७, तृ० १, २, ३, पं० १। ७३. प्र० १, २ के अतिरिक्त समस्त में। ७४. द्वि० २, ६, ७, तृ० २, ३, च० १, पं० १। ७५. प्र० १, द्वि० १, ४, ७, तृ० १, च० १ पं० १। ७६. द्वि० ६, ७, तृ० १, पं० १ में 'पव्वै', द्वि० ४, ५ में 'पव्वै' तृ० ३ में 'पुवै', च० १ में 'पत्तै'। ७७. द्वि० १, ७, तृ० १, २, ३। ७८. द्वि० १, ४, ६, ७ पं० १ में 'कोटिन्ह' द्वि० ३ में 'कोटि', प्र० १, २, तृ० १, च० १ में 'खोटिन्ह',। ७९. द्वि० १, ३, ४, ६, ७, तृ० १, २। ८०. प्र० २, द्वि० ४ के अतिरिक्त समस्त में।

२६६.१ सोइ बिनती 'सिउँ'[८१] करै पसीठी। पहिले करूर अंत होइ मीठी।
'सिउँ'=सँग (तुलना २८६.३)

२८६.३ सुरज लीन्ह चाँद पहिराई। हार नखत तरइन्ह 'सिउँ' पाई[८२]।
'सिउँ' यथा ऊपर

२९९.१ का बरनौं अभरन 'उर'[८३] हारा। ससि पहिरे नखतन्ह कै मारा।
'उर'=हृदय

२९९.६ 'नीवी'[८४] कवँल करी जनु बाँधी। बिसा लंक जानहुँ दुइ आधी।
'नीवी'=फुँदना (तुलना ११७.६)

३०१.७ मान न करु 'थोरा'[८५] करु लाडू। मान करत रिस मानै चाडू।
'थोरा' ∠ 'थोड़ा'

३०६.८ रैनि जो देखिअ चंद मुख 'मकु'[८६] तन होइ 'अनूप'[८७]।
'मकु'=मानो, इसलिए कि; 'अनूप'=अनुपम

३१७.२ 'किरिरा'[८८] काम केलि अनुहारी। 'किरिरा'[८८] जेहिं नहिं सो न सुनारी।

३१७.३ 'किरिरा'[८८] होइ कंतकर तोखू। 'किरिरा'[८८] किहें पाव धनि मोखू।

३१७.४ जेहि 'किरिरा'[८८] सो सोहाग सोहागी। चंदन जैस स्यामि कँठ लागी।
'किरिरा' ∠ 'क्रीड़ा' (कामकेलि) (तुलना ५२.५)

३१८.४ लूटे अंग रंग सब भेसा। छूटी 'मंग'[८९] भंग भे केसा।
'मंग' ∠ माँग

३२६.६ पेमचा डोरिआ औ 'चौदरी'[९०]। स्याम सेत पिअरी औ हरी।
'चौदरी'=चौदर की बनी (साड़ी)

३३०.३ राजा कर भल मानहिं भाई। जेइँ हम कहँ यह 'भुम्मि'[९१] देखाई।
'भुम्मि' ∠ 'भूमि'

३३२.३ चंदन अगर 'चतुरसम'[९२] भरीं। नए चार जानहुँ अवतरीं।
'चतुरसम'=चंदन, केशर, कस्तूरी और कपूर से बना हुआ एक द्रव

---

८१. प्र० १, द्वि० ६,७, तृ० २, च० १, पं० १। ८२. तृ० १, पं० १ में 'सिउँ', शेष में 'सों'। ८३. द्वि० १, २, ५, ६, तृ० २, ३। ८४. प्र० २, द्वि० ६ में 'नीवी', द्वि० २, तृ० २ में 'बिनवै'। ८५. द्वि० २, ४, ५, ६, ७, तृ० १, २। ८६. द्वि० १, ६ के अतिरिक्त समस्त में 'मकु'। ८७. द्वि० १ के अतिरिक्त समस्त में 'अनूप'। ८८. प्र० १, द्वि० ७, में 'क्रीड़ा', शेष में 'किरिला'। ८९. तृ० २, च० १ के अतिरिक्त समस्त में। ९०. प्र० २, द्वि० १, २, ३, ४, ५, ६, तृ० १, च० १, पं० १ में 'चौदरी', प्र० २ में 'बिदरी'। ९१. प्र० १, २, द्वि० ४, ५, तृ० १, च० १, पं० १। ९२. द्वि० २, तृ० ३ के अतिरिक्त समस्त में।

२३४.२ उहाँ त कोपि 'बैरि'[93] देर मँहीं। इहाँ त अधर अमिअ रस खंडीं।
'बैरि' ∠ बैरी

२३४.६ उहाँ त 'लूसौं'[94] कटक सँघारू। इहाँ त जितौं तुम्हार सिंगारू।
'लूसना'=तहस नहस करना ? (तुलना २६७.८)

२३७.१ रितु पावस 'बिरसै'[95] पिउ पावा। सावन भादौं अधिक सोहावा।
'बिरसना' ∠ 'बिलसना'

२३७.५ सीतल बूँद ऊँच 'चौवारा'[96]। हरिअर सब देखिअ संसारा।
'चौवारा'=चारो ओर दरवाज़े वाला खंड

२४१.८ सारस जोरी किमि हरी मारि गएउ 'किन खगि'[97]।
मारि गएउ 'किन खगि'='क्यों न खगी को' मार गया

२४२.४ सरि हिय हेरि हार 'मैन'[98] मारी। 'हहरि'[99] परान तजै अब नारी।
'मैन' ∠ 'मदन'; 'हहरि'=हाय छोड़कर

२४७.१ लाग कुआर नीर जग घटा। अबहूँ आउ पिउ 'परभुमिलटा'[100]।
'परभुमिलटा'=परदेश पर अनुरक्त

२५२.२ तरिवर झरे झरे बन ढाँखा। भइ 'अनपत्त'[101] फूल फर साखा।
'अनपत्त'=पत्रहीन

२५६.४ बुद बुद महँ जानहुँ जीऊ। 'कुंजा'[102] गुंजि करहिं पिउ पीऊ।
'कुंजा' ∠ क्रौञ्च (तुलना २११.१)

२६२.२ आँधरि बूढ़ि 'सुतहि'[103] दुख रोवा। जोवन रतन कहाँ भुइँ टोवा।
'सुतहिं'=सुत (पुत्र) के ही

२६६.४ ब्रह्म रुद्र हरि बाचा तोही। सो निजु 'अंत'[104] बात कहु मोही।
'अंत'=अतःकरण की

---

९३. द्वि० ४, ६ के अतिरिक्त समस्त में। ९४. द्वि० १, ३, ४, ६, ७, तृ० ३, च० १, पं० १ में 'लूसौं', द्वि० २ में 'लुहसौं'। ९५. द्वि० १, ३, ६, तृ० ३, च० १ के अतिरिक्त समस्त में। ९६. द्वि० ५, तृ० १ के अतिरिक्त समस्त में। ९७. प्र० २, द्वि० १, २, ४, ५, ६, च० १, प० १ में 'किन खगि' तृ० १ में 'नहि खगि'। ९८. द्वि० १, पं० १। ९९. द्वि० १, ५, ७, के अतिरिक्त समस्त में। १००. द्वि० ३, ४, ५, के अतिरिक्त समस्त में। १०१. प्र० १, द्वि० २, ४, ६, ७, तृ० १ में 'अनपत्त' द्वि० १, तृ० ३, च० १ में 'उनंत' प्र० २, पं० १ में 'अनंत', तृ० २ में 'उतपत्ति', द्वि० ५ में 'उतंत'। १०२. प्र० १, द्वि० १, ६, तृ० २, पं० १ में 'कुंजा', प्र० २, द्वि० ३, ४, तृ० ३, च० १ में 'गुंजा', तृ० १ में 'कूँचा'। १०३. द्वि० २, ६, तृ० १, ३ में 'सुतहि', द्वि० ४, ५, च० १ में 'सुठि', तृ० २ में 'सो तोहि'। १०४. द्वि० १, २, ४, ५, ६, तृ० २ में 'अत', द्वि० ३, च० १, पं० १ में 'अति'।

इस शब्दावली पर यदि ध्यान दिया जाये तो ज्ञात होगा कि कुछ तो इसमें ऐसी शब्दावली है जो प्राकृत की है, कुछ ऐसी है जो ग्रामीण है, और कुछ ऐसी है जो सामान्य हिंदी की है। भूलें प्रतिलिपिकारों एवं सम्पादकों ने तीनों के सम्बन्ध में की हैं, किंतु प्राकृत की शब्दावली के सम्बन्ध में सब से अधिक, उससे कम ग्रामीण शब्दावली के सम्बन्ध में, और सब से कम सामान्य हिंदी की शब्दावली के सम्बन्ध में।

जायसी के व्याकरण से भी—यद्यपि उनकी शब्दावली से कम—उनके प्रतिलिपकारों और संपादकों ने यथेष्ट परिचय नहीं प्रदर्शित किया है। इसलिए नीचे यहाँ भी ऐसे ही स्थल दिए जा रहे हैं जहाँ संपादित प्रतियों में भी पाठ अशुद्ध है, और ये स्थल भी ग्रन्थ के पूर्वार्द्ध से हैं :—

८.६ ना कोई है ओहि के रूपा। न ओहि काहु अस 'तइस'[१०५], अनूपा।
'तइस'='ऐसा' (तुलना ३४२.१)

१०.६ 'एत'[१०६] कीन्ह सब गुन परगटा। अबहूँ समुँद बूँद नहिं घटा।
'एत'=इतना

२६.७ नरपती क 'कहाव'[१०७] नरिंदू। भुअपती क जग दोसर इंदू।
'कहाव'=कहलाता है

५२.५ कन्या रासि उदौ जग किया। पदुमावती नाउँ 'जिसु'[१०८] दिया।
'जिसु'=जिसका

५७.४ ठाकुर अंत चहै जौं मारा। 'तहँ'[१०९] सेवक कहँ कहाँ उबारा।
'तहँ'=तब, ऐसी परिस्थिति में

५६.१ एक देवस 'कौनिऊँ'[११०] तिथि आई। मानुस रोदक चली अन्हाई।
'कौनिउँ'=कोई, 'तिथि'=त्योहार, पर्व

६६.६ ऐ गोसाईं तूँ ऐस बिधाता। जावँत जीव 'सबक'[१११] भखदाता।
'सब क'=सब को

८९.६ जो न कंत कै आयसु माहाँ। कौनु भरोस नारि कै 'नाहाँ'[११२]।
'नाहाँ'=नाह (नाथ) को

---

१०५. प्र० १, द्वि० ५, ६, ७ के अतिरिक्त समस्त में। १०६. प्र० १, २, द्वि० ३ तृ० के अतिरिक्त समस्त में। १०७. प्र० २, द्वि० १, ६, ७, तृ० ३, पं० १। १०८. प्र० १, २, द्वि० ३ के अतिरिक्त समस्त में। १०९. द्वि० २ के अतिरिक्त समस्त में। ११०. द्वि० ३, तृ० १ के अतिरिक्त समस्त में। १११. द्वि० १, ६, ७, तृ० १, २, पं० १। ११२. द्वि० ४, ६, तृ० २, ३, पं० १।

८०.७ कै कै फेर 'श्रंत'[११३] बहु दोसी। बारहिं बार फिरइन सँतोषी।
'श्रंत'=श्रंत में, नितांत

१२१.२ तुम श्रबही जेइँ घर पोईं। कँवल न बैठि बैठ 'हहु'[११४] कोईं।
'हहु'='हो'

१२७.४ पंडित 'भुलान'[११५] न जानै चालू। जीउ लेत दिन पूँछ न कालू।
'भुलान'=भूला हुश्रा

१६८.४ कलपसमान रैनि 'हठि'[११६] बाढ़ी। तिल तिल भरि जुग जुग बर गाढ़ी।
'हठि'=हठपूर्वक

२१२.१ सुनि कै महादेव कै 'भषा'[११७]। सिद्ध पुरुष राजे मन लखा।
'भषा'=कहा हुश्रा

३२०.२ जहँ मद तहाँ कहाँ संभारा। कै सो 'खुमरिहा'[११८] कै मतवारा।
३२०.७ मोर होत तब पलुह सरीरू। पाव 'खुमरिहा' [११८] सीतल नीरू।
'खुमरिहा'=खुमारी वाला

३४२.१ पिउ बियोग श्रस बाउर जीऊ। पपिहा 'तस'[११९] बोलै पिउ पीऊ।
'तस'=ऐसा (तुलना ८.६)

३६२.५ नैनन्ह दिस्टि 'त'[१२०] दिया बराहीं। घर श्रँधियार पूत जौं नाहीं।
'त'='तो'

३६३.४ जहँ जहँ पुहुमी जरी भा रेहू। बिरह के दगध होइ जनि 'केहू'[१२१]।
'केहू'=कोई भी

जायसी के प्रतिलिपिकार श्रौर संपादक उत्तरोत्तर जायसी के समय की भाषा से दूर हटते श्रा रहे थे, श्रौर इनमें से श्रनेक श्रवधी-प्रदेश के भी नहीं थे, ऐसी दशा में जायसी की भाषा के विषय में इनसे भूलें होना स्वाभाविक था। इनमें व्याकरण के विषय में उतनी भूलें नहीं मिलतीं जितनी शब्दावली के विषय में मिलती हैं। 'पदमावत' के मूल पाठ के श्रनुसंधान में जायसी के प्रतिलिपिकारों की भाषा—शब्दावली श्रौर व्याकरण-संबंधी ऊपर बताई गईं कमजोरियाँ इसलिए महत्त्व की हैं।

---

११३. द्वि० ४ के अतिरिक्त समस्त में। ११४. द्वि० ७, तृ० २, च० १। ११५. प्र० १, २, द्वि० ३, ४, तृ० ३ के अतिरिक्त समस्त में। ११६. प्र० १, २, द्वि० ३, ४, ६, ७ तृ० २, ३, च० १। ११७. प्र० २, तृ० २, ३, के अतिरिक्त समस्त में। ११८. प्र० १, द्वि० १, ४ के अतिरिक्त समस्त में। ११९. द्वि० १, ५, ६, तृ० २, पं० १। १२०. द्वि० १, ६, में 'त', द्वि० २, ४, ५, तृ० २, २, च० २ में 'त' तृ० ३ में 'तो'। १२१. प्र० १, २, द्वि० ३, ४ के अतिरिक्त समस्त में।

६. आदि भति की छंद-योजना

जायसी के छंद चौपाई और दोहा हैं, किंतु इनके विषय में उन्होंने बड़ी स्वतंत्रता दिखाई है। नीचे के स्थलों से, जो केवल उदाहरण-स्वरूप ग्रंथ के पूर्वार्द्ध से लिए गए हैं, यह बात भली-भाँति स्पष्ट हो जावेगी, क्योंकि इन स्थलों पर शब्दों के निकाले अथवा रक्खे जाने पर अर्थ पूरा-पूरा नहीं लगता है। फिर भी प्रतिलिपिकारों और संपादकों ने इन समस्त स्थलों पर उक्त दोनों छंदों के अपने साँचों में ही जायसी के छंदों को भी बैठाने का यत्न किया है :—

मुहमद तहाँ निचिंत पथ जेहि सँग मुरसिद पीर।
जेहिं रे नाव 'करिआ औ खेवक'[1] बेगि पाव सो तीर ॥ १६ ॥

तीसरे चरण में मात्राओं और शब्दों का आधिक्य है।

सेवरा खेवरा 'बानपरस्ती'[2] सिध साधक अवधूत।
आसन मारि बैठ सब जारि आतमा भूत ॥ ३० ॥

प्रथम चरण में मात्राधिक्य है, और तृतीय में मात्राएँ कम हैं।

चरपट चोर धूत गँठिछोरा मिलेरहहिं तेहि नाँच।
जो तेहि हाट 'सजग भा अगुमन'[3] गथ ताकर पै बाँच ॥ ३६ ॥

प्रथम और तृतीय चरणों में मात्राधिक्य है।

हिय न समाइ दिस्टि नहिं पहुँचै जानहु ठाढ़ सुमेरु।
कहँ लगि कहौं उँचाई 'ताकरि'[4] कहँ लगि बरनौं फेरु ॥ ४० ॥

प्रथम और तृतीय चरणों में मात्राधिक्य है।

कुंवरि बतीसौ लकवनी असि सब माहँ अनूप।
जावँत 'सिंघलदीपइ'[5] सबै बखानैं रूप ॥ ४६ ॥

तृतीय चरण में मात्राएँ कम हैं।

आनि धरी आगे बहु साखा। भुगुति 'न मिटै जौलहि विधि'[6] राखा। ६६.४

दूसरे चरण के 'मिटै' के 'टै' को ह्रस्व के रूप में पढ़ना पड़ता है।

होइ निचिंत बैठे तेहि 'अड़ा'[7]। तब जाना खोंचा हिय गड़ा। ७१.५

दोनों पंक्तियों के दोनों चरणों में एक एक मात्रा कम है।

---

[1]. द्वि० १, ५ तृ० २, पं० १ के अतिरिक्त समस्त में। [2]. द्वि० २, ३, ४ तृ० २, ३ के अतिरिक्त समस्त में। [3]. प्र० १, द्वि० १, ७ के अतिरिक्त समस्त में। [4]. प्र० १,२, द्वि० ४, ६, ७, तृ० १, ३, पं० १। [5]. प्र० १, २, द्वि० १, ४, ५, ६, ७, तृ० १, च० १, पं० १। [6]. द्वि० १, ३, ७, तृ० १। [7]. प्र० २ द्वि० ३ के अतिरिक्त समस्त में।

करेसि पंखिलापुरू 'मानवा'[८] । निठुर तेक हिय जे पर 'मँमुलया'[८] । ७८.१

दोनों चरणों में एक-एक मात्रा कम है।

जो जो सुनै 'धुनै सिर राजा'[९] प्रीति क होइ अगाहु ।
अस गुनवंत 'नाहि भल सुअटा'[१०] बाउर करिहि काहु ॥ ८२ ॥

प्रथम और तृतीय चरणों में मात्राएँ अधिक हैं।

जौ लहि जिअौं 'रातिदिन सुमिरौं'[११] मरौं तो ओहि लै नाउँ ।
मुख राता तन 'हरिअर कीन्हे'[१२] ओहु जगत लै नाऊँ ॥ ६३ ॥

प्रथम और तृतीय चरणों में मात्राएँ अधिक हैं।

तीनि लोक 'चौदह खँड'[१३] सबै परै मोहि सूझि ।
पेम छाड़ि किछु और न लोना जौं देखौं मन बूझि ॥ ६६ ॥

प्रथम चरण में मात्राएँ कम किंतु तृतीय चरण में अधिक हैं।

लीतिर गीवँ जो फाँद हैं नितहि पुकारै दोख ।
सकति हँकारि 'फाँद गियँ मेली'[१४] कत मारै होइ मोख ॥ ६७ ॥

केवल तृतीय चरण में मात्राएँ अधिक हैं।

अस फँदवारे केस वै राजा परा सीस गियँ फाँद ।
अष्टौ कुरी नाग 'ओरगाने'[१५] भै केसन्हि के बाँद ॥ ६६ ॥

प्रथम और तृतीय चरणों में मात्राएँ अधिक हैं।

कंठसिरी 'मुकुताहल माला'[१६] सोहै अभरन गीवँ ।
को होइ हार कंठ ओहि लागै केइँ तपु साधा जीवँ ॥ १११ ॥

प्रथम और तृतीय चरणों में मात्राएँ अधिक हैं।

सिर करवत तन 'करसी लै लै'[१७] बहुत सीके तेहि आस ।
बहुत धूम 'घूँटत मैं देखें'[१८] उतरु न देइ निरास ॥ ११४ ॥

प्रथम और तृतीय चरणों में मात्राएँ अधिक है।

किस्न कै करा[१९] चढ़ा ओहि माथे । तब सो छूट अब छूट न नाथें । ११५.५

प्रथम चरण का 'कै' ह्रस्व की भाँति पढ़ा जाता है।

---

८. द्वि० २, ६, तृ० १, २, ३, च० १, पं० २ । ९. द्वि० २ के अतिरिक्त समस्त में । १०. प्र० १, तृ० ३ के अतिरिक्त समस्त में । ११. द्वि० १, ४, ७, तृ० ३, पं० १ । १२. द्वि० ३, ४, ५, ६, तृ० २, पं० १ । १३. प्र० १, २ के अतिरिक्त समस्त में । १४. प्र० १ के अतिरिक्त समस्त में । १५. प्र० १, द्वि० २ के अतिरिक्त समस्त में । १६. प्र० १ के अतिरिक्त समस्त में । १७. द्वि० २, ३, ६, ७, तृ० १, २, ३, पं० २ । १८. द्वि० १, ४, ५, ६, ७, तृ० १, २, ३, पं० १ । १९. द्वि० १, ६, तृ० १, २ ।

बेधि रहा जग बासना परिमल मेद सुगंधि।
तेहि अरघानि भवँर 'सब लुबुधे'[२०] तजहिं न नीवी बंध ॥ ११७ ॥

तृतीय चरण में मात्राएँ अधिक हैं।

पंथ 'सुरिन्ह कर'[२१] उठा अँकूरू। चोर चढ़ै कि चढ़ै मंसूरू। १२४.४

'पंथ' को 'पँथ' की भाँति पढ़ना पड़ता है।

देखु अंत अस होइहि गुरू दीन्ह उपदेस।
सिंघल दीप 'जाब मैं'[२२] माता मोर अदेस ॥ १३० ॥

प्रथम और तृतीय चरणों में मात्राएँ कम हैं।

खार खीर दधि उदधि 'सुरा जल'[२३] पुनि किलकिला अकूत।
को चढ़ि नाँघहि समुद 'ये सातौ'[२४] है काकर अस 'बूत' ॥ १४१ ॥

प्रथम और तृतीय चरणों में मात्राधिक्य है।

रावन चहा सौहँ 'होइ हेरा'[२५] उतरि गए दस माँथ।
संकर धरा लिलाट भुइँ और को जोगी नाँथ ॥ १६१ ॥

प्रथम चरण में मात्राएँ अधिक हैं।

चारिहुँ चक्र फिरै मन खोजत डंड न रहै थिर मार।
होइ के भसम पवन 'सग धावौं'[२६] जहाँ सो प्रान अधार ॥ १६७ ॥

प्रथम और तृतीय चरणों में मात्राएँ अधिक हैं।

जस मरजिया समुँद धँसि मारै हाथ आव तब सीप।
ढूँढ़ि लेहि ओहि 'सरग दुआरी'[२७] औ चढु सिंघलदीप ॥ २१५ ॥

प्रथम और तृतीय चरणों में मात्राएँ अधिक हैं।

रूप तुम्हार 'जीव कै आपन'[२८] पिंड कमावा फेरि।
आपु हेराइ रहा 'तेहि खँड होइ'[२९] काल न पावै हेरि ॥ २५६ ॥

प्रथम और तृतीय चरणों में मात्राएँ अधिक हैं।

गए जो बाजन बाजते 'जिन्हहि'[३०] मारन रन माहँ।
फिरि बाजन तेइ बाजे मंगलचार ओनाहँ ॥ २७४ ॥

---

२० द्वि० ७ के अतिरिक्त समस्त में मात्राएँ अधिक हैं, यद्यपि भिन्न-भिन्न ढंग से।
२१. प्र० १, द्वि० ३, ६, च० १ के अतिरिक्त समस्त में। २२. तृ० २ के अतिरिक्त समस्त में। २३. प्र० १, द्वि० ६, तृ० ३ के अतिरिक्त समस्त में। २४. प्र० १, २, द्वि० ७ के अतिरिक्त समस्त में। २५. प्र० १, २, द्वि० ७ के अतिरिक्त समस्त में। २६. प्र० १, २, द्वि० ४ के अतिरिक्त समस्त में। २७. प्र० १ के अतिरिक्त समस्त में। २८. तृ० १, पं० १ के अतिरिक्त समस्त में। २९. तृ० १, पं० १ के अतिरिक्त समस्त में।
३०. प्र० १, द्वि० १, ४ के अतिरिक्त समस्त में।

द्वितीय चरण में मात्राधिक्य तथा है, तृतीय चरण में मात्राएँ कम हैं।

राखि हिय हेरि हार 'मैन'[31] मारी। हहरि परान तजै अब नारी। १४२.४
प्रथम चरण के 'मैन' का 'मै' मात्राधिक्य के कारण ह्रस्व की भाँति पढ़ा जाता है।

ऊपर के स्थलों पर मात्राओं की जो अधिकता और कमी बताई गई है, वह दोहे की चौबीस और चौपाई की सोलह मात्राएँ मान कर बताई गई है, जिसके अनुसार प्रतिलिपिकारों और संपादकों ने पाठों को शुद्ध करने का यत्न किया है। किंतु इन समस्त स्थलों पर यदि उनके पाठांतरों को देखा जावे तो ज्ञात होगा कि उनका पाठ किसी प्रकार भी मान्य नहीं हो सकता। फलतः यह भली-भाँति प्रमाणित है कि जायसी दोनों छंदों की मात्राओं के संबंध में पर्याप्त स्वतंत्रता रखते थे। उनके पूरे ग्रंथ के संपादन और उसके पाठ-निर्धारण में उनकी इस प्रवृत्ति का यथेष्ट ध्यान रखना पड़ेगा।

७. प्रतियों का प्रतिलिपि-संबंध

किसी भी ग्रंथ की विभिन्न प्रतियों का प्रतिलिपि-संबंध ऐसे पाठांतरों से निर्धारित होता है जिन्हें निर्विवाद रूप से भूलें माना जा सके। 'पदमावत' की प्रतियों में ऊपर हमने जो आदर्श-बाहुल्य और पाठ-विकृति की प्रवृत्तियाँ देखी हैं, उसके अनंतर यह कल्पना करना हमारे लिए स्वाभाविक होगा कि प्रतियों में ऐसी भूलें बहुत कम रह गई होंगी जिन्हें प्रतिलिपिकार अज्ञात भाव से कर बैठते हैं, और जिन्हें उनके उत्तराधिकारी प्रतिलिपिकार भी बराबर उसी प्रकार 'मक्षिका स्थाने मक्षिका' न्याय से करते जाते हैं। फिर भी इस प्रकार की जो भूलें समान रूप से एक से अधिक प्रतियों में पाई जाती हैं, उनके संबंध में ज्ञातव्य विवरण और विवेचन नीचे प्रस्तुत किया जा रहा है।

(१) ८१.६ सामान्य पाठ है : 'गुनी न कोई आपु सराहा। जो सो बिकाइ कहा पै चाहा।' प्र० १,२ में इसके स्थान पर है, 'सुर्वे सो आपन गुन दरसावा। हीरामनि तब नाउँ कहावा।' पाठांतर का दूसरा चरण ग्रंथ में अन्यत्र इस प्रकार आया है :—

---

31. द्वि० १, पं० १।

दमनहि नल जसहंस मेरावा। तुम्ह हीरामनि नाउँ कहावा। (२५५.७) और इन प्रतियों में भी वहाँ पर दूसरा चरण यही है। विवेचनीय स्थल पर पाठांतर प्रसंग-विरुद्ध भी है—वह घटना के उल्लेख के रूप में है, किंतु पूरे छंद में प्रथम पंक्ति से लेकर अंतिम पंक्ति तक हीरामनि का कथन चलता है, इसलिए प्रसंग में सामान्य पाठ ही लग सकता है, पाठांतर नहीं।

(२) ८७.२,७ द्वितीय पंक्ति का सामान्य पाठ है: 'रानी उतर मान सौं दीन्हा। पंडित सुश्रा मँजारी लीन्हा।' द्वि० २ में इसके स्थान पर है 'बेगि सुवा लै आवहु रानी। नींद परै कछु कहै कहानी।' छंद की तीसरी पंक्ति है: 'मैं पूँछा सिंघल पदुमिनी। उतर दीन्ह तूँ को नागिनी।' सामान्य पाठ के साथ ही इस तीसरी पंक्ति की संगति लगती है, उसके अभाव में इसकी कोई संगति नहीं रहती है, इसलिए सामान्य पाठ की शुद्धता और पाठांतर की अशुद्धि प्रकट है।

सप्तम पंक्ति का सामान्य पाठ है: 'रुहिर चुश्रै जब-जब कह बाता। भोजन बिनु भोजन मुख राता।' तृ० २ में इसके स्थान पर है: 'श्रैस भएउ तूँ नहिं उठि आनी। नींद परै कछु कहै कहानी।' इस पंक्ति के पूर्व और पश्चात् की पंक्तियों में नागमती द्वारा राजा से की हुई हीरामनि की शिकायत है। उस शिकायत के बीच पाटांतर की पंक्ति स्पष्ट ही असंगत है।

और भी ध्यान देने की बात यह है कि उपर्युक्त द्वितीय पंक्ति के पाठांतर का दूसरा चरण वही है जो इस सप्तम पक्ति के पाठांतर का है। इससे ज्ञात होता है कि पाठांतर की पंक्ति द्वि० २ और तृ० २ के सामान्य पूर्वज में हाशिए में लिखी हुई थी जिसको कुछ हेर-फेर के साथ दोनों प्रतियों अथवा उनके अपने-अपने पूर्वजों के लिपिकारों ने इस प्रकार दो विभिन्न पंक्तियों के संशोधित पाठ के रूप में ग्रहण किया।

(३) १५०-६ सामान्य पाठ है: 'डोलहिं बोहित लहरैं खाहीं। खिन तर खिनहि होहिं उपराहीं।' द्वि० ४,५ में इस पंक्ति के दूसरे चरण का पाठ है: 'सहस कोस एक पल महँ जाहीं।' किंतु यह चरण अन्यत्र भी आया है: 'धावहिं बोहित मन उपराहीं। सहस कोस एक पल महँ जाहीं।' (१४७.२) और द्वि० ४,५ में भी यहाँ दूसरा चरण अभिन्न है। प्रसंग में पाठांतर का पाठ उक्त अन्य स्थल पर ही संगत है, जहाँ बोहितों की गति का उल्लेख किया गया है। विवेचनीय स्थल पर बोहितों के लहरों द्वारा झकोले खाने का वर्णन है, इसलिए सामान्य पाठ ही संगत होगा।

(४) १५१.२-३ सामान्य पाठ है : 'आगि जो उपनी ओहि समुंदा। लंका जरी ओहि एक बुंदा। विरह जो उपना ओह दुत गाढ़ा। खिन न बुझाइ जगत तस बाढ़ा।' प्र० १, २, द्वि० ४, ६, तृ० १, च० १ में उद्धृत प्रथम अर्द्धाली के 'आगि जो उपनी' के स्थान पर है 'विरह जो उपना' और उद्धृत द्वितीय अर्द्धाली के विरह जो उपना के स्थान पर है 'आगि जो उपनी', और इसके अतिरिक्त दूसरी अर्द्धाली के 'गाढ़ा' तथा 'बाढ़ा' के स्थान पर है 'गाढ़ी' तथा 'बाढ़ी'। लंका 'आग' से ही जली थी, 'विरह' से नहीं, और 'विरह' और 'आग' में 'विरह' ही न बुझने वाला है, 'आगि' नहीं। ठीक यही भाव अन्यत्र भी इस प्रकार आए हैं :

लंका बुझी आगि जो लागी। यह न बुझै तस उपज बजागी। २५३-३

विरह बजागि बीच का कोई। आगि जो छुवै जाइ जरि सोई।

आगि बुझाइ ढोइ जल काढ़हि। ओह न बुझाइ आगि अति बाढ़इ।

१८०.१-२

विवेचनीय के बाद की पंक्ति है : जेहि सो विरह तेहि आगि न डीठी। सौहँ जरै फिरि देइ न पीठी।' यह पंक्ति भी सामान्य पाठ का ही समर्थन करती है। इसलिए पाठांतर की अशुद्धि प्रकट है।

(५) १५६.२ सामान्य पाठ है : 'एहि ठाउँ कहँ गुरु सँग कीजे। गुरु सँग होइ पार तौ लीजे।' द्वि० २, ४, तृ० २, च० १, पं० १ में इसके स्थान पर है : 'एही पथ सब कहँ है जाना। होइ दुसरे बिसवास निदाना।'

द्वि० ६ में यही पाठांतर निम्नलिखित पंक्ति के स्थान पर है :
"खाँडे चाहि पैनि पैनाई। बार चाहि पातरि पतराई।' १५६.७

प्र० १, २, में यही पाठांतर निम्नलिखित पंक्ति के स्थान पर है :
"तीस सहस' कोस कै पाटा। अस साँकर चलि सकै न चाँटा।' १५६.६

प्रसंग यहाँ पर अनेक पंथों में से किसी एक पंथ के चयन का नहीं है, वरन् पंथ की दुर्गमता का है, इसलिए सामान्य पाठ ही सर्वत्र संगत है, पाठांतर किसी भी स्थान पर संगत नहीं है। ऐसा ज्ञात होता है कि उपर्युक्त पाठांतर इन प्रतियों के सामान्य पूर्वज में हाशिए में लिखा हुआ था, जिसे इस प्रकार भिन्न-भिन्न ढंग से संशोधन समझ कर इन प्रतियों अथवा इनके अपने-अपने पूर्वजों ने ग्रहण किया।

तृ० १ में उपर्युक्त पाठांतर की पंक्ति अतिरिक्त पंक्ति के रूप में है।

द्वि० ७, में प्र० १, २ की भाँति १५६.६ के स्थान पर है :

'ओही पंथ जाना सब काहू। ओही पंथ महँ होइ निबाहू।'

अन्य पाठांतर और इस पाठांतर की शब्दावली प्रायः एक ही है, केवल द्वितीय चरण में वह किंचित् भिन्न है, इसलिए द्वि० ७ को भी उपर्युक्त प्रतियों के सामान्य पूर्वज की परंपरा में लेना चाहिए।

(६) २०३.२ सामान्य पाठ है : 'जौ' पहिले अपुने सिर परई। सो का काहु के धरहरि करई।' प्र० २ में इसके स्थान पर है : 'जबहीं आगि अपुने सिर लागा। आनि बुझावै कहाँ को जागा।' और तृ० १ में सामान्य पाठ की भी पंक्ति है, और पाठांतर की भी—अर्थात् छंद में सात अर्द्धालियों के स्थान पर आठ अर्द्धालियाँ हैं। सामान्य पाठ की संगति प्रकट है—उसमें 'अपुने सिर परने' का कर्म 'गाज' है, जो पूर्ववर्ती पंक्ति में आया है; पाठांतर में 'अपुने सिर' में 'आग लगने' का कथन है। 'सिर पर गाज पड़ना' ही लोक-सम्मत है, 'सिर में आग लगना' नहीं। इसके अतिरिक्त 'आगि' स्त्रीलिंग कर्म के साथ 'लागा' पुल्लिंग क्रिया व्याकरण से असंमत है। इसलिए पाठांतर की अशुद्धि प्रकट है। ऐसा ज्ञात होता है कि प्र० २ तथा तृ० १ के सामान्य पूर्वज में पाठांतर की पंक्ति हाशिए में लिखी थी, इसी से प्र० २ तथा तृ० १ अथवा उनके अपने-अपने पूर्वजों ने पाठांतर को इस प्रकार विभिन्न ढंग पर ग्रहण किया।

(७) ८ २१२.७-६ सामान्य पाठ है :

'कै जिय तंत मंत सौं हेरा। गएउ हेराइ जबहिं भा मेरा।
बिनु गुरु पंथ न पाइअ भूलै सोइ जो मेंट।
जोगी सिद्ध होइ तब जब गोरख सौं भेंट॥'

इन पंक्तियों के स्थान पर प्र० १, द्वि० ७ में हैं :

'जौं' भलि होति लच्छिमी नारी। तजि महेस कित होत भिखारी।
जो जो सुनै सो रोवै दुरहिं रकता के आँसु।
रोम रोम तन रोवै सोत सोत भर माँसु॥'

छंद २१२ की पंक्तियाँ उस अवसर की हैं, जब परीक्षा लेने के लिए आए हुए महेश और पार्वती को रत्नसेन उनके सिद्धों के लक्षण से भाँप लेता है। २१२.७ के पाठांतर में महेश और लक्ष्मी के विच्छेद की बात कही गई है। २१२.८-६ के पाठांतर में सुनने और सुन कर रोने का कथन है। यह दोनों ही कथन असंगत हैं। लक्ष्मी और महेश का कोई युग्म नहीं है; और लाक्षणिक

अर्थ में भी लक्ष्मी (धन-संपदा) महेश के पास कभी थी, इसकी कोई कथा ज्ञात नहीं है, न यहाँ लक्ष्मी के अच्छे-बुरे होने अथवा उसके संचय या त्याग का कोई प्रसंग है। यहाँ किसी के सुनने और सुन कर रोने का भी प्रसंग नहीं है। इसलिए छंद २१२ के पाठांतर की अशुद्धि प्रकट है।

(८) २१३.८-९ सामान्य पाठ है :

'रस रोवै जस करै निउ फरै रकत औ माँसु।
रोवँ रोवँ सब रोवहिं सोत सोत भरि आँसु॥'

इसके स्थान पर प्र० १, द्वि० ७ में २१२.८-९ के सामान्य पाठ का ऊपर दिया हुआ दोहा है।

कुल छंद २१३ तथा छंद २१४.४ तक में रत्नसेन के रोने का प्रसंग है। प्रकट है कि इनके बीच सामान्य पाठ ही संगत है, बिना गुरु के पंथ की प्राप्ति अथवा साधना की सिद्धि के उल्लेख का पाठांतर नहीं। इस स्थलों पर भी पाठांतर की अशुद्धि अतः प्रकट है।

(९) २३१.४ सामान्य पाठ है : 'ना जनहुँ भयउ मलैगिरि बासा। ना जनहुँ रवि होइ चढ़ा अकासा।' तृ० २ में यह पंक्ति नहीं है, और इसकी पूर्ति शेष अर्द्धालियों के अंत में निम्नलिखित पंक्ति देकर की गई है :

'ना जेहिं अस्थिर भा रँग राता। ना जेहिं हम जिउ भा वह गाता।'

पाठांतर की यह पंक्ति द्वि० २ में किसी पंक्ति के स्थान पर नहीं वरन् एक अतिरिक्त आठवीं पंक्ति के रूप में दी हुई है।

विवेचनीय स्थल पर पद्मावती के वह कथन दिए गए हैं, जो उसने हीरामनि को संबोधित करके रत्नसेन की पत्रिका पाने पर रत्नसेन के संबंध में किए हैं, और पाठांतर के कथन छंद की निम्नलिखित पंक्तियों में भी आते हैं जो समान रूप से विवेचनीय प्रतियों में भी मिलती हैं :

हौं जानति हौं अबहूँ काँचा। ना जनहुँ प्रीति रंग थिर राँचा। २३१.३
ना जनहुँ करा भृंगि कै होई। ना जनहुँ अबहुँ जिओ मरि सोई। २३१.६

इसलिए पाठांतर की अशुद्धि प्रकट है। ऐसा ज्ञात होता है कि पाठांतर की पंक्ति तृ० २ तथा द्वि० २ के सामान्य पूर्वज में हाशिए में लिखी हुई थी, जिसके कारण उक्त दोनों प्रतियों अथवा उनके अपने-अपने पूर्वजों ने उसे इस प्रकार विभिन्न ढंग पर ग्रहण किया।

(१०) २३६.४ सामान्य पाठ है : 'तोहि अलि कीन्ह आपु भइ केवा। हौं पठवा कै बीच परेवा।' द्वि० १, ३, ५ तृ० २ में यह पंक्ति नहीं है, और

इसके स्थान पर छंद की अंतिम अर्द्धाली के रूप में निम्नलिखित पंक्ति दी हुई है :

'श्रौ अस कहै' हौं नैन पसारे । दरसन चाहीं रूप तुम्हारे ।'

द्वि० २ में पाठांतर की यही पक्ति किसी अन्य पंक्ति के स्थान पर नहीं, वरन् एक अतिरिक्त, आठवीं पंक्ति के रूप में दी हुई है। किंतु प्रायः इसी उक्ति की पक्ति छंद में एक अन्य भी आई हुई है, जो इन प्रतियों में भी शेष प्रतियों की भाँति मिलती है :

'पवन स्वाँस तो सों मन लाए । जोवै मारग दिष्टि बिछाए ।' (२३६.५)

इसलिए पाठांतर की अशुद्धि प्रकट है। ऐसा ज्ञात होता है कि एक ओर द्वि० १, ३, ५, तृ० ३ तथा दूसरी ओर द्वि० २ के सामान्य पूर्वज में पाठांतर की उपर्युक्त पक्ति हाशिए में लिखी हुई थी, जिसका उपयोग इन प्रतियों अथवा इनके अपने-अपने पूर्वजों ने इस प्रकार विभिन्न ढंग से किया।

(११) २५५.६-७ सामान्य पाठ है : 'दसईं अवस्था असि मोहि भारी। दसएँ लखन होहु उपकारी। दमनहिं नल जस हंस मेरावा। तुम्ह हीरामनि नाउँ कहावा।' द्वि० २, ४, ५, तृ० ३ में छठी पंक्ति के स्थान पर, तथा द्वि० ६ में उद्धृत सातवीं पंक्ति के स्थान पर पाठ है :

'तुम्ह सो मोर खेवक गुरु देऊ। उतरौं पार तेहि बिधि खेऊ।'

इस पाठांतर का 'सो' निरर्थक है और केवल भरती के लिए लाया हुआ है; इसी प्रकार इसका 'खेऊ'='खेउ' 'गुरु देऊ'='गुरुदेव' के लिए अनादरात्मक है। पाठांतर की कुछ प्रतियों में 'गुरुदेवा' और 'खेवा' पाठ है। 'खेवा' क्रिया का भूतकालिक रूप है—यदि उसे क्रिया का रूप माना जाये तो—विधि का रूप नहीं है जो होना चाहिए था। इसलिए पाठांतर की अशुद्धि प्रकट है। ऐसा ज्ञात होता है कि एक ओर द्वि० २, ३, ४, ५ तथा दूसरी ओर द्वि० ६ के *सामान्य पूर्वज में पाठांतर हाशिए में लिखा था, जिसे इन प्रतियों* अथवा इनके अपने-अपने पूर्वजों ने इस प्रकार भिन्न-भिन्न ढंग से लिया।

(१२) २६६.१ सामान्य पाठ है : 'रावन गरब बिरोधा रामू। औ ओहि गरब भएउ संग्रामू।' इसके स्थान पर द्वि० ६, तृ० ३ में है : 'बोली भाँट फुरहि हम झूठे। जौं यह गरब देखि तोहि रूठे।' द्वि० २ में यह पंक्ति अतिरिक्त पंक्ति के रूप में छंद के प्रारंभ में ही दी हुई है। पूर्व के दोहे की प्रथम पक्ति है :

'बोला भाँट नरेस सुनु गरब न छाजा जीव।'

यहाँ पर 'भोला भाँट' कहने के अनंतर पुनः एक ही पंक्ति के अंतर पर 'भोली भाँट' कहने में पुनरुक्ति प्रकट है। पुनः 'तोहि रूठे' अर्थहीन है, और 'गरब देखि' 'झूठे' होने में असंगति भी स्पष्ट है। इसलिए पाठांतर की अशुद्धि प्रमाणित है। ऐसा ज्ञात होता है कि द्वि० ६, तृ० ३ एक ओर, और द्वि० २ दूसरी ओर, के सामान्य पूर्वज में पाठांतर की पंक्ति हाशिए में लिखी हुई थी, जिससे उसका उपयोग इन प्रतियों ने अथवा इनके अपने-अपने पूर्वजों ने इस प्रकार विभिन्न ढंग से किया।

(१३) २७०.५ सामान्य पाठ है : 'अस्तुति करत मिला बहु भाँती। राजैं सुना भई हिए साँती।' इसके स्थान पर प्र० १, द्वि० ७, तृ० १ में है : 'हीरामनि है पंडित परेवा। कीन्हेसि पदुमावति कै सेवा।' छंद की अगली पंक्ति है : 'जानहुँ जरत अगिनि जल परा। होइ फुलवारि रहस हिएँ भरा।' प्रकट है कि इस पंक्ति के साथ संगति सामान्य पाठ की ही है, पाठांतर की नहीं।

द्वि० ६ में ऊपर का पाठांतर छंद की निम्नलिखित पंक्ति के स्थान पर दिया हुआ है : 'राजैं मिलि पूँछी हँसि बाता। कस तन पीत भएउ मुख राता।' (२७०.७)। किंतु अगले छंद की सातवीं अर्द्धाली इस प्रकार है : 'जो ओहि सँवरै एकै तुँही। सोई पंखि जगत रतमुँही।' इसमें 'भएउ मुख राता' का उत्तर स्पष्ट है, इसलिए इस स्थल पर भी सामान्य पाठ ही प्रसंग-सम्मत है, पाठांतर नहीं।

इसके अतिरिक्त पाठांतर की उपर्युक्त पंक्ति अन्यत्र इस प्रकार आ चुकी है : 'हीरामनि जो तुम्हार परेवा। गा चितउर औ कीन्हेसि सेवा।' (२६६.२) और उपर्युक्त पाठांतर की समस्त प्रतियों में भी उक्त पंक्ति का पाठ अभिन्न है। इसलिए भी पाठांतर की अशुद्धि निर्विवाद रूप से प्रमाणित है।

ऐसा ज्ञात होता है कि प्र० १, द्वि० ७, तृ० १ एक ओर, और द्वि० ६ दूसरी ओर, के सामान्य पूर्वज में उक्त पाठांतर हाशिए में लिखा हुआ था, जिससे उक्त प्रतियों अथवा उनके अपने-अपने पूर्वजों ने उसे इस प्रकार भिन्न-भिन्न ढंग से लिया।

(१४) २७२.४ सामान्य पाठ है : 'तहँ चितउर गढ़ देखेउँ ऊँचा। ऊँच राज सरि तोहि पहूँचा।' प्र० १, द्वि० ७ में इस के स्थान पर है : 'तहँवाँ मैं चितउर गढ़ देखा। महाराज नहिं जाइ बिसेखा।' दोनों पाठ प्रसंग में खप सकते हैं। किंतु पाठांतर के दूसरे चरण की शब्दावली अन्यत्र भी आई हुई है:

'अति निरमल नहिं जाई बिसेखा। जस दरपन महँ दरसन देखा।' (२८६.५) और विवेचनीय प्रतियों में भी उसका पाठ अभिन्न है। इसलिए पाठांतर की अशुद्धि प्रकट है।

(१५) २७६.१ सामान्य पाठ है : 'रतनसेनि कहँ कापर आए। हीरा मोति पदारथ लाए।' इस पंक्ति के दूसरे चरण के स्थान पर तृ० २ में पाठ है : 'लिहें जो आए आइ सिर नाए।' और द्वि० २ में सामान्य पाठ के दोनों चरणों के बीच निम्नलिखित दो चरण आते हैं : 'लिहें जो आए आइ सिर नाए। पाट पटंबर सुरँग सुहाए।' कपड़ों का उल्लेख करते समय उनकी बहुमूल्यता का वर्णन प्रसंग में आवश्यक है, क्योंकि वे एक राजा द्वारा दूसरे राजा के लिए, जो दूलह भी है, भेजे गए हैं—उन्हें लाने वालों के नमस्कार का उल्लेख करना उतना आवश्यक नहीं माना जा सकता। इसलिए तृ० २ के पाठांतर की अशुद्धि प्रकट है। द्वि० २ के पाठांतर में लाने वालों के नमस्कारोल्लेख के अतिरिक्त कपड़ों के भेदों का भी उल्लेख हुआ है। किंतु उसका 'पटंबर' ग्रन्थ में अन्यत्र नहीं आया है, और 'पाट' तथा 'पटम्बर' में परस्पर पुनरुक्ति भी है। इसलिए द्वि० २ का पाठांतर भी अशुद्ध ज्ञात होता है। ऐसा ज्ञात होता है कि तृ० २ और द्वि० २ के सामान्य पूर्वज में पाठांतर हाशिए में लिखा हुआ था, जिससे दोनों प्रतियों अथवा उनके अपने-अपने पूर्वजों ने उसे इस प्रकार विभिन्न ढंग से लिया।

(१६) २७७.५ सामान्य पाठ है : 'सब दिन तपा जैस हिय माहाँ। तैसि रात पाई सुख छाहाँ।' प्र० १, द्वि० ७ में यह पंक्ति नहीं है। किंतु इस पंक्ति के अभाव की पूर्ति छंद के प्रारम्भ में ही निम्नलिखित पंक्ति रख कर की गई है : 'भोग चढ़ाउ उतारहु जोगू। जो तप करै सो मानै भोगू।' इस पाठांतर में पूर्ववर्ती छंद की निम्नलिखित पंक्ति का भाव दुहराया गया है : 'जेहि लगि तुम्ह साधा तप जोगू। लेहु राज मानहु सुख भोगू।' (२७६.३) इसलिए पाठांतर में पुनरुक्ति स्पष्ट है।

२७६.३ के स्थान पर प्र० १, द्वि० ७ में निम्नलिखित पंक्ति है : 'लीजे राज साज तुम्ह जोगू। अब सो सँवरि उतारहु जोगू।' इस पाठ के साथ विवेचनीय स्थल पर पाठांतर में पुनरुक्ति और भी स्पष्ट है।

इसके अतिरिक्त विवेचनीय स्थल के पाठांतर में रत्नसेन को संबोधन है, जो पिछले छंद में मौर बाँध कर दूलह के वेष में घोड़े पर सवार होने के लिए रत्नसेन से की गई प्रार्थना के साथ समाप्त हो चुका है। इसलिए और भी पाठांतर की अशुद्धि प्रकट है।

(१७) २८१. ८-६ सामान्य पाठ है : 'पाँति पाँति सब बैठे भाँति भाँति जेवनार। कनक पत्र तर धोती कनक पत्र पनवार।' प्र० १, २, द्वि० ७ में इसके स्थान पर है : 'मँडप फेर सराहना (प्र० २ करहिं रहस रस मंडप) छतीस (प्र० २ छत्तीस) कुरी सब जाति। धनि राजा सिंघल कर (प्र० २ धनि रानी सिंघल कै, द्वि० ७ धनि राज राजा कर) जाकर ऐसि बरात।' मंडप वर्णन का प्रसंग आगे छंद २८५ में आया है, जब जेवनार के अनंतर विवाह के लिए दूलह मंडप में जाता है। जेवनार मंडप में होता भी नहीं है। और इसके अतिरिक्त पाठांतर की दूसरी पंक्ति में पूर्व के एक छंद की निम्न-लिखित पंक्ति, जो विवेचनीय प्रतियों में भी पाई जाती है, दुहराई गई है :

'धनि रानी पदुमावति जाकरि ऐसि बरात।' (२७४.६)

इसलिए पाठांतर की अशुद्धि प्रकट है।

(१८) २६१.१-२ सामान्य पाठ है : 'सात खंड ऊपर कबिलासू। तहँ सोवनार सेज सुखबासू। चारि खंभ चारिहुँ दिसि धरे। हीरा रतन पदारथ जरे'। प्र० १ में इसके स्थान पर है : 'पुनि तहँ रतनसेनि पगु धारा। जहँ नवरतन सेज सोवनारा। पुतरी गढ़ि गढ़ि खंभन्ह काढ़ीं। जनु सजीव सेवा सब ठाढ़ीं।' किंतु पाठांतर की यह पंक्तियाँ पूर्व के छंद की प्रथम और द्वितीय पंक्तियों के रूप में समस्त प्रतियों में—इस पाठांतर की प्रति में भी—आती हैं। इसलिए पाठांतर की अशुद्धि प्रकट है।

द्वि० ७ में विवेचनीय पंक्तियों के स्थान पर हैं :

'चारि खंभ साजे चौबारा। का बरनौं उत्तिम सोवनारा।
खंभन्ह लागे पदारथ सोई। बरहिं दीप उजियारा होई।'

'चौबारा'='चार दरवाजों के कक्ष में' चार खंभों का सजना निरर्थक लगता है, और इसी प्रकार 'पदारथ' के साथ लगा हुआ 'सोई' भी निरा भरती का है। खंभों का उल्लेख पाठांतर में एक बार कर लेने के अनंतर पुनः उसका वर्णन करना भी कुछ असंगत सा लगता है। इसलिए इस पाठांतर की भी अशुद्धि प्रकट है।

ऐसा ज्ञात होता है कि प्र० १ तथा द्वि० ७ के सामान्य पूर्वज में छंद की प्रथम दो पंक्तियाँ अपाठ्य थीं, इसलिए उनके अभाव की पूर्ति दोनों प्रतियों अथवा उनके अपने-अपने पूर्वजों ने इस प्रकार भिन्न-भिन्न ढंग से की।

(१६) ३१६.१ सामान्य पाठ है : 'कहि सत भाउ भएउ कँठ लागू। जनु कंचन औ मिला सोहागू'। च० १ में इसके स्थान पर है : 'रतनसेनि

सो कंत सुजानू। पटरस बिंदक सो रति मानू।' द्वि० ४, ५, ६ में पाठांतर को यही पंक्ति एक अतिरिक्त छंद में आई है। विवेचनीय छंद में बाद की पंक्ति का एक चरण है : 'पटरस बिंदक चतुर सो भोगी।' इसलिए पाठांतर में पुनरुक्ति प्रकट है। ऐसा ज्ञात होता है कि एक ओर च० १ तथा दूसरी ओर द्वि० ४, ५, ६ के सामान्य पूर्वज में उक्त अतिरिक्त छंद हाशिए में दिया हुआ था, जिसके कारण इन प्रतियों अथवा इनके अपने-अपने पूर्वजों ने इस प्रकार का पाठ दिया।

कदाचित् पुनरुक्ति को बचाने के लिए ही द्वि० ५, च० १ में उक्त बाद की पंक्ति के उपर्युक्त चरण का पाठ इस प्रकार कर दिया गया है : 'पटरस रसिक चतुर रस (च० १ सो) भोगी।' किंतु फिर भी पुनरुक्ति बनी हुई है।

(२०) ३२३.२ सामान्य पाठ है : 'रानी तुम्ह ऐसी सुकुँआरा। फूल बास तन जीउ तुम्हारा।' द्वि० ३, तृ० २ में दूसरे चरण का पाठ है : 'पान फूल के रहहु अधारा।' किंतु समस्त प्रतियों में यही पाठ अन्यत्र भी आया है—और इन प्रतियों में भी यह वहाँ पर है—'खीर अहार न कर सुकुँआरा। पान फूल के रहै अधारा।' (१३४.२) 'खीर अहार' के प्रसंग में वहाँ पर 'पान फूल के आधार पर रहना' प्रासंगिक ही है, किंतु यहाँ पर आहार का प्रसंग नहीं है, विहार का प्रसंग है जैसा निम्नलिखित पंक्ति से ज्ञात होगा—'रहि न सकेउ हिरदै पर हारू। कैसे सहिहु कंत कर मारू।' अतः प्रकट है कि विवेचनीय स्थल पर पाठांतर अशुद्ध है, और स्मृति के कारण भूल से आ गया है।

(२१) ३३७.४ सामान्य पाठ है : 'रँगराती पिउ सँग निसि जागी। गरजै चमकि चौंकि कँठ लागी।' द्वि० ६ में यह पंक्ति नहीं है। इसके स्थान पर यथा ३३७.२ निम्नलिखित पंक्ति आई है : 'पदुमावति चाहत रितु पाई। गँगन सुहावन भुमि सुहाई।' द्वि० ४ में यह पंक्ति छंद में एक अतिरिक्त पंक्ति के रूप में है—सामान्य पाठ की शेष पंक्तियाँ तो उसमें हैं ही।

यह छंद पद्मावती-रत्नसेन के संयोग शृंगार-संबंधी षट ऋतु वर्णन में से है। प्रकरण में इसके अतिरिक्त पाँच छंद आते हैं, और पाँचों में एक न एक ऋतु का वर्णन करते हुए किसी न किसी पंक्ति में नायक-नायिका पारस्परिक सन्निकर्ष से विशेष आनंद-लाभ करते हुए बताए जाते हैं। प्रस्तुत छंद में नायक और नायिका के पारस्परिक सन्निकर्ष का उल्लेख केवल विवेचनीय पंक्ति में हुआ है, और उसके पाठांतर में नहीं हुआ है।

इसलिए पाठांतर अप्रामाणिक ज्ञात होता है। ऐसा ज्ञात होता है कि द्वि० ६ और द्वि० ४ के सामान्य पूर्वज में पाठांतर की उपर्युक्त पंक्ति हाशिए में लिखी थी, जिससे दोनों ने अथवा दोनों के अपने-अपने पूर्वजों ने उसे इस प्रकार भिन्न-भिन्न ढंग से लिया।

(२२) ४१४-२ सामान्य पाठ है: 'तेहि चढ़ि अलक भुअंगिनि डसा। सिर पर चढ़े हिऍं परगसा।' प्र० १,२, पं० १ में द्वितीय चरण है: 'सीस चढ़ी मानुस कहँ डसा।' पाठांतर में प्रथम चरण की पुनरुक्ति प्रकट है, और दोनों चरणों का तुक एक ही 'डसा' हो, यह भी चिंत्य है। इसलिए पाठांतर की अशुद्धि स्पष्ट है।

(२३) ४४१.३ सामान्य पाठ है: 'मंछ कच्छ दादुर तोहि पासा। बग पंखी निसि बासर बासा।' प्र० १, द्वि० २, पं० १ में द्वितीय चरण है: 'बग औ पखि रहहिं (प्र०१ बग कर पाँति रहै) तुव पासा।' प्रथम चरण के तुक के रूप में 'तोहि पासा' आता है, इसलिए पुनः द्वितीय चरण के तुक के रूप में आए हुए 'तुव पासा' पाठ में अशुद्धि प्रकट है।

(२४) ४४२.१ सामान्य पाठ है: 'का तोहि गरब सिंगार पराएँ। अबहीं लेहिं लूसि सब ठाएँ।' इसके स्थान पर प्र० १,२, द्वि० ४ का पाठ है 'हौं तोहि चाहि ऊँचि नागेसरि। निसिदिन हिए चढ़ावौं केसरि।' पूर्ववर्ती छंदों की अंतिम पंक्ति है: 'तूँ नागिनि मोरि आसा लुबुधी मरसि कि हरकौं जाइ।' जिससे यह स्पष्ट है कि उक्त छंद में पद्मावती का कथन है। विवेचनीय के परवर्ती छंद की प्रथम पंक्ति है: 'पदमावति सुनि उतर न सही। नागमती नागिनि जिमि गही।' जिससे यह स्पष्ट है कि विवेचनीय बीच के छंद में नागमती द्वारा पद्मावती के पूर्वोक्त कथन का उत्तर होना चाहिए। और विवेचनीय छंद में ही बाद की पंक्ति है: 'हौं साँवरि सलोनि सुभ नैना।' यह भी उसी परिणाम की पुष्टि करती है - क्योंकि नागमती ही साँवली थी। किंतु पाठांतर की पंक्ति में नागेसरि=नागमती को संबोधन है, और यह पद्मावती के कथन के रूप में है। इसलिए पाठांतर की अशुद्धि प्रकट है।

कुछ छंद पूर्व पाठांतर का कथन प्रायः उन्हीं शब्दों में इस प्रकार आया है: 'कँवल के हिय रोवाँ तौ केसरि। तेहि नहिं सरि पूजै नागेसरि।' इसलिए पाठांतर में पुनरुक्ति भी है, और यह निर्विवाद रूप से अप्रामाणिक है।

द्वि० २, पं० १ में ऊपर दिया हुआ पाठांतर छंद की निम्नलिखित पंक्ति

के स्थान पर आता है: 'साँवरि जहाँ लोनि सुठि नीकी। का गोरी सरवरि कर फीकी।' (४४३.७) ऊपर दिए हुए कारणों से यहाँ पर उक्त पाठांतर प्रसंग-विरुद्ध है और उसमें पुनरुक्ति प्रकट है।

ऐसा ज्ञात होता है कि प्र० १,२, द्वि० ४ एक ओर तथा द्वि० २, पं० १ दूसरी ओर, के सामान्य पूर्वज में यह पाठांतर हाशिए में लिखा हुआ था। जिससे भिन्न भिन्न पंक्तियों का संशोधित पाठ समझ कर इन प्रतियों अथवा इनके अपने-अपने पूर्वजों ने उसे इस प्रकार ग्रहण किया।

(२५) ४५३.१ सामान्य पाठ है : 'भएउ चेत चेतन तब जागा। बकत न आव टकटका लागा।' द्वि० १,२,३,४,५, तृ० १,२,३, पं० १ में इसके स्थान पर है: 'भएउ चेत चेतन चित चेता। नैन झरोखे जीव सकेता।' पाठांतर का पहला चरण इन प्रतियों में भी ४५७.१ का प्रथम चरण है, और पाठांतर के दूसरे चरण का 'नैन झरोखा' प्रस्तुत छंद की दूसरी ही पंक्ति के दूसरे चरण में आता है। ऐसी दशा में पाठांतर की अशुद्धि प्रकट है।

(२६) ४८१.५ सामान्य पाठ है : 'पुनि तेहि ठाउँ परी तिरिरेखा। नैन ठाउँ जिउ होइ सो देखा।' प्र० १,२ में दूसरा चरण है : 'घूँटत पीक लीक अस देखा।' अन्यत्र आया है : 'पुनि तेहि ठाउँ परी तिरिरेखा। घूँटत पीक लीक सब देखा।' (१११.६) और प्र० १,२ में भी वहाँ पर पाठ अभिन्न है। ऐसी दशा में विवेचनीय स्थल पर प्र० १,२ के पाठ में पुनरुक्ति और इसलिए अशुद्धि प्रकट है।

(२७) ५१३.४ सामान्य पाठ है : 'बरन बरन पखरे अति लोने सार सँवारि लिखे सब सोने।' द्वि० ४, ५ में दूसरा चरण है : 'जानहुँ चित्र सँवारे सोने।' किंतु यही चरण द्वि० ५ और च० १ को छोड़कर समस्त प्रतियों में ३१.७ का दूसरा चरण है।

द्वि० ५, च० १ में वहाँ पाठांतर है : 'खनि पतार पानी तेहिं काढ़ा। खीर समुँद निकसा हुत बाढ़ा।' प्रसंग वहाँ सिंघल के सरोवर—मानसरोवर—के वर्णन का है। उसके जल के विषय में उक्त छंद की प्रथम दो पंक्तियों में कहा गया है :

'मान सरोवर देखिअ काहा। भरा समुँद अस अति अवगाहा।
पानि मोति अस निरमर तासू। अंब्रित बानि कपूर सुबासू।'

इसके बाद की पंक्तियों में उक्त छंद में सरोवर के घाटों, उनकी सीढ़ियों, उसमें खिले हुए कमलों, उसमें होने वाले मोतियों, और उनको चुगने

वाले हंसों का वर्णन किया गया है। यह सब करने के बाद सरोवर के जल के विषय में पुनरावर्तन, और बहुत कुछ पूर्व के ही शब्दों में, पुनरुक्तिपूर्ण है, और यहाँ पर द्वि० ५, च० १ की अशुद्धि प्रकट है। अतः विवेचनीय स्थल पर भी पाठांतर की अशुद्धि प्रमाणित है।

(२८) ५३०.४ सामान्य पाठ है : 'सेत फटिक सब लागे गढ़ा। बाँध उठाइ चहूँ गढ़ मढ़ा।' द्वि० १, तृ० १ में इसके स्थान पर है : 'खंड पर खंड होत उठाइ लस जाहीं। जानहुँ चढ़ा गगन उपराहीं।' छंद की अगली पंक्ति है : 'खंड ऊपर खंड होहिं पटाऊ। चित्र अनेग अनेग कटाऊ।' और समस्त प्रतियों में—पाठांतर की प्रतियों में भी—इस पंक्ति का पाठ अभिन्न है। अतः पाठांतर में पुनरुक्ति प्रकट है। इसके अतिरिक्त पाठांतर के द्वितीय चरण में 'चढ़ा' क्रिया का कोई 'कर्ता' भी नहीं है। इसलिए अशुद्धि प्रमाणित है।

(२९) ५३०.५ सामान्य पाठ है : 'खँड ऊपर खँड होहिं पटाऊं। चित्र अनेग अनेग कटाऊ।' तृ० १ में इसके स्थान पर है 'खंड पर खंड जो खंड सँवारे। कनक बान तेहि ऊपर धारे।' 'खँड पर खँड जो खंड' में 'जो खंड' की निरर्थकता और पुनरुक्ति अति प्रकट है, और युद्ध में, इसके अतिरिक्त, 'कनक बान' धारण करना भी असंगत ज्ञात होता है। द्वि० १ में पंक्ति छूटी हुई है। ऊपर ५३०.४ के संबंध में हम देख चुके हैं कि तृ० १ और द्वि० १ में अशुद्धि-साम्य है। ऐसा ज्ञात होता है कि यह अशुद्धि-साम्य भी दोनों के सामान्य पूर्वज के कारण है। हो सकता है कि सामान्य पूर्वज का पाठ अपाठ्य रहा हो, और इसलिए एक में वह उतारा ही न गया हो और दूसरे में उसके स्थान पर दूसरा पाठ रख दिया गया हो। और यह भी असंभव नहीं कि द्वि० १ के पूर्वज में भी तृ० १ का पाठांतर रहा हो किंतु उसमें पूर्व की पंक्ति तथा यह पंक्ति दोनों एक ही शब्दों 'खँड पर खँड' से प्रारंभ होती थीं, इसलिए भूल से दोनों में से एक पंक्ति द्वि० १ में छूट गई हो।

(३०) ५१७.५ सामान्य पाठ है : 'पै बिनु सपत न अस मन माना। सपत के बोल बचा परवाना।' प्र० १, २, पं० १ में इसके स्थान पर है : 'जो धरनी दै राखहि जीऊ। सो तौ आहि निपुंसिक पीऊ।' पूर्व की एक पंक्ति है : 'जौं येह बचन तौ माथें मोरें। सेवा करौं ठाढ़ कर जोरें।' और यह वाक्य रत्नसेन का है। सरजा ने इसके उत्तर में कहा है 'नाहत माँझ भँवर हति गींवाँ। सरजैं कहा मंद यहु जीवाँ। खंभ जो गरब लेहि जग

मारू। ताकर- बोझ न टरै पहारू ।' और आगे सरजा ने छलपूर्वक शपथ भी ली हैः 'सरजैं सपत कीन्ह छर...'। इसलिए प्रसंग में पाठांतर नहीं, सामान्य पाठ ही संगत है।

पाठांतर की पंक्ति अन्यत्र आ भी चुकी है (५३५.७), केवल प्र० १, २, पं० १ में वहाँ पर भी अन्य पाठ है : 'जौं येहि बीच डरै नहिं कोई। देखु कालि धौं काकर होई।' इस स्थल पर पूर्व की पंक्ति है : 'तेहि दिन चाँचरि चाहौं जोरी। समदौं फागु लाइ कै होरी।' और बाद की पंक्ति है :

'अब हौं जौहर साजि कै कीन्ह चहौं उजियार।
फागु गएँ होरी बुझें कोउ समेटहु छार॥'

'जौहर' के इस प्रसंग में डर की आशंका अथवा विजय की कल्पना असंगत लगती है, और इसलिए पाठांतर अप्रामाणिक ज्ञात होता है।

(३१) ६१६.६-७ सामान्य पाठ है : 'मकु पिय दिष्टि समानेउ चालू। हुलसा पीठि कढ़ावै सालू। कुच तुंबी अब पीठि गड़ोवौं। कहेहि जो हूक कढ़ि रस ढोवौं।' प्र० १, २ में इनके स्थान पर है : 'तब मुख मोंछ जीउ पर खेलौं। स्यामि काज इन्द्रासन पेलौं। पुरुष बोलि कै टरै न पाछू। दसन गयंद गीवँ नहिं काछू।' किंतु पाठांतर की यह पंक्तियाँ अन्यत्र ६१८.६-७ होकर आई हुई हैं, और इन प्रतियों में भी वहाँ पर हैं। छंद ६१६ बादल की स्त्री की उस मानसिक ऊहापोह का वर्णन करता है जो बादल के उसकी ओर से मुँह फेर लेने पर हुई है, और छंद ६१८ बादल का अपनी स्त्री से उस राज-संकट के समय अपने स्वामिधर्म संबंधी कथन प्रस्तुत करता है। अतः छंद ६१६ में सामान्य पाठ की पंक्तियाँ ही प्रासंगिक मानी जा सकती हैं, और छंद ६१८ में भी इसी प्रकार सामान्य पाठ की ही पंक्तियाँ प्रासंगिक मानी जा सकती हैं। अतः पाठांतर की अशुद्धि प्रकट है।

६१८.६ का पाठ प्र० १, २ में भी वही है जो अन्य प्रतियों में है, केवल ६१८.७ का पाठ बदला हुआ हैः 'आजु करौं रन भारथ सोई। अस रन करौं करै नहिं कोई।' इस पाठांतर में 'आजु करौं रन' और 'अस रन करौं' में पुनरुक्ति तथा 'भारथ सोई'—विशेष रूप से 'सोई'—की निरर्थकता प्रकट है। और इसलिए यह पाठांतर भी ग्राह्य नहीं हो सकता।

(३२) ६२३.४ सामान्य पाठ है; 'बिनै करै आई हौं ढोली। चितउर की मो सिउँ है कोली।' द्वि० ३, ६, ७, तृ० २ में इसके स्थान पर है : 'बिनती करै जहाँ पै पुंजी। तब भँडार की मो सिउँ कुंजी।' द्वि० ४, ५ में

यह पाठांतर छंद की निम्नलिखित पंक्ति के स्थान पर दिया हुआ है : 'तजा कोइ मा छोड़ बुझावा। पातसाहि सौं विनवै धावा।' (६२३.७) प्रसंग के अनुसार पाठांतर ६२३.४ के स्थान पर ही आ सकता है, ६२३.७ के स्थान पर नहीं, यह प्रकट है। किंतु ६२३.४ के सामान्य पाठ का 'चितउर की मो सिउँ है कीली।' जहाँ नितांत प्रसंगोचित और सार्थक है, पाठांतर का 'जहाँ पै पुंजी' पूरा आशय नहीं देता है : उससे 'चितौर में जहाँ पर पूँजी है' अर्थ अनिवार्य रूप से नहीं लिया जा सकता। इसके अतिरिक्त 'पूँजी' 'भँडार पर' नहीं होती है 'भँडार में', होती है, इसलिए 'जहाँ पै पुंजी' पाठ भाषा की सामान्य आवश्यकताओं के ध्यान से भी त्रुटि पूर्ण है।

ऐसा ज्ञात होता है कि द्वि० ३, ६, ७, तृ० २ एक ओर और द्वि० ४, ५ दूसरी ओर, के सामान्य पूर्वज में पाठांतर की पंक्ति हाशिए में लिखी हुई थी, जिससे इन प्रतियों अथवा इनके अपने अपने पूर्वजों ने उसका पाठ इस प्रकार विभिन्न ढंग से ग्रहण किया।

तृ० ३ में ६२३.४ के स्थान पर है : 'विनती करै कर जोरे खरी। लै सौंपहुँ राजहि एक घरी।' किंतु पाठांतर की यह पंक्ति समस्त प्रतियों में—और द्वि० ४ में भी—६२४.७ है। तृ० ३ का पाठांतर मान लेने से 'लै सौंपने' का कोई कर्म छंद में नहीं रह जाता—वह क्या सौंपेगी? इसलिए तृ० ३ के पाठांतर की भी अशुद्धि प्रकट है।

इस पाठांतर के ध्यान से असंभव नहीं कि तृ० ३ किसी प्रकार द्वि० ३, ६, ७, तृ० २ से संबधित हो।

(३३) ऊपर जिस प्रकार के प्रतिलिपि-संबंध की चर्चा की गई है, उससे निकटतर प्रतिलिपि-संबंध के प्रमाण द्वि० ४ और द्वि० ५ में ही मिलते हैं। ऐसे समस्त स्थलों का उल्लेख अनावश्यक होगा, केवल ग्रंथ के अंतिम चतुर्थांश से स्थलों का उल्लेख नीचे किया जा रहा है। पुनः विस्तार भय से केवल सामान्य पाठ की पंक्ति और पाठांतर मात्र का निर्देश किया जा रहा है:

(५२०.६) 'छुटे होइ नौं लोहै कहै माँझ उठ आगि।'
इन प्रतियों में 'कहै' नहीं है।

(५३२.३) 'हठि चूरौं तौ जौहर होई। पदुमिनि पाव हिएँ मनि सोई।'
'चूरौं' के स्थान के स्थान पर दोनों प्रतियों में 'जूरैं' ('जोरै' या 'चूरै'!) है।

(५३१.५) 'पाइन कर रिपु पाइन हीरा। बेधौं रतन पान दै बीरा।'
'रिपु' के स्थान पर दोनों में 'करब' है।

(५३५.६) 'तेहि दिन चाँचरि चाहीं जोरी। समदौं फागु लाइ कै होरी।'
'तेहि' के स्थान पर दोनों में 'नहिं' है।

(५३५.७) 'जो दै गिरिदिनि रावत जीऊ। सो कय आदि निर्पुसिक पीऊ।'
'निर्पुसिक' के स्थान दोनों में पर 'नमिउसिक' है।

(५३८.६) 'भोर होइ जौं लागी उठहिं रोर कै काग।
मसि छूटै सब रैनि कै कागा कार्यं अभाग' ॥
'कार्यं' के स्थान पर दोनों में 'गार्यं' है।

(५५४.१) 'कुवाँ बावरी भाँतिन्ह भाँती। मढ़ मंडप तहँ मे चहुँ पाँती।'
'चहुँ' के स्थान पर दोनों में 'चउ' है।

(५५५.७) 'जावँत कहिश्रै चित्र कटाऊ। तावँत पवँरिन्ह लाग जराऊ।'
'कहिश्रै' के स्थान पर दोनों में 'लीन्है' है।

(५५७.४) 'नट नाटक पतुरिनि औ बाजा। आनि अखार सबै तहँ साजा।'
'तहँ' के स्थान पर दोनों में 'महँ' है।

(५६०.५) 'मारहिं धनुक फेरि सर ओही। पनघट घाट दंग जित होहीं।'
'पनघट' के स्थान पर दोनों में 'बनघट' है।

(५६४.२) 'पानी देहिं कपूर क बासा। पिश्रै न पानी दास पिश्रासा।'
'न' के स्थान पर दोनों में 'तेहि' है।

(५७२.८) 'राघौ आघौ होत जौं कत आछत जियँ साघ।
ओहि बिनु आध बाध बर सकै त लै अपराध ॥'
'ओहि बिनु आध' के स्थान पर दोनों में 'ओहि तन राधि' है।

(५८६.१) 'लै पूरी भरि दाल अछूती। चितउर चली पैज कै दूती।'
'पैज' के स्थान पर दोनों में 'चीन्ह' है।

(५८६.२) 'कुमुदिनि कंठ लाइ सुठि रोई। पुनि लै रोग वारि मुख धोई।'
'वारि' के स्थान पर दोनों में 'डारि' है।

(५६६.३) 'दोख मरा तन चेतन कैसा। तेहि क सँदेस सुनावहि बेसा।'
'कैसा', 'बेसा' के स्थान पर दोनों में क्रमशः 'किया', 'पिया' है।

(६०६.७) 'मन माला फेरत तँत ओही। पाँचौ भूत भसम तन होहीं।'
'भसम' के स्थान पर दोनों में पाठ 'भम' है।

(६२६.६) 'सुपुरुस भागि न जानि भएँ भीर सुहँ लेइ।
　　　　अथिर घर गहें दुहूँ कर स्वामि काज जिउ देइ॥'
　　　　'अथिर' के स्थान पर दोनों में 'सूर' है।

(६४४.६) 'बास फूल घिउ छीर जस निरमल नीर मँठाहँ।
　　　　तस कि घटै घट पूरुष ज्यों रे अगिनि पटाहँ॥'
　　'तस कि घटै घट पूरुष' के स्थान पर दोनों में 'निघटै घट सब पौरुष' है।

द्वि० ४, और द्वि० ५ की यह सामान्य अशुद्धियाँ उनके सामान्य पूर्वज की ओर अत्यंत स्पष्ट रूप से निर्देश करती हैं, और निश्चित रूप से उस सामान्य पूर्वज में प्रायः लिपि प्रमाद से उपस्थित हुई हैं यह बात उर्दू लिपि की प्रवृत्तियों के साधारण ज्ञान से भी जानी जा सकती है। इस प्रकार का अशुद्धि—साम्य दो चार स्थलों पर बिना सामान्य पूर्वज के भी संभव है, किंतु इतने बाहुल्य के साथ अन्यथा असंभव है। फिर उदाहरण के लिए जान बूझ कर ऐसे स्थलों को ऊपर लिया गया है जहाँ बिना किसी तर्क-वितर्क के अशुद्धि देखी जा सके और निर्विवाद रूप से स्वीकार की जा सके। अन्यथा दोनों प्रतियों में पाठ साम्य इतना है जितना ऊपर आई हुई किन्हीं भी दो प्रतियों में नहीं है, और यह बात संपादित पाठ के साथ दिए हुए टिप्पणी के पाठांतरों से स्वतः देखी जा सकती है।

विभिन्न प्रतियों में उपर्युक्त स्थल इस प्रकार बँटे हुए हैं :—

च० १—१५३.२,३; १५६. २; ३१६.१
तृ० १—१५३.२, ३; १५६.२; २०३.२; २७०.५; ४५३.१; ५३०.४,५
तृ० २—८७.२,७; १५६.२; २३१.४; २९६.१; ३२३.२; ४५३.१; ६२३.४
पं० १—१५६.५; ४१४.३; ४४१.३; ४४३.१,७; ४५३.१; ५३७.५
द्वि० १—२३६.४; ४५३.१; ५३०.४,५
तृ० ३—२३६.४; २५५.६,७; २६६.१; ४५३.१
द्वि० ३—२३६.४; ३२३.२; ४५३.१; ६२३.४
द्वि० २—८७.२,७; १५६.२; २३१.४; २३६.४; २५५.६,७; २६६.१;
　　　२७६.१; ४४१.३; ४४३.१,७; ४५३.१
द्वि० ५—१५०.६; २३६.४; २५५.६,७; ३१६.१; ४५३.१; ५१३.४; ६२३.४
द्वि० ४—१५३.२,३; १५६.२; २५५.६,७; ३१६.१; ३२३.७; ४४३.१,७;
　　　४५३.१; ६२३.४
द्वि० ६—१५३.२,३; १५६.२; २२५.६,७; २६६.१; २७०.५; ३१६.१;
　　　३३७.४

द्वि० ७—१५६.२; २१२.७,९; २१३.८,९; २७०.५; २७२.४; २७७.५; .२८३.८,९; २९१.१,२; ६२३.४

प्र० १—१५३.२,३; १५६.२; २१२.७,९; २१३.८,९; २७०.५; २७२.४; २७७.५; २८३.८,९; २९१.१,२; ४४१.३, ४४३.१,७

प्र० २—१५३.२,३; १५६.२; २०३.२; २८३.८,९; ४४३.१,७

और इनके आधार पर विभिन्न प्रतियों का जो प्रतिलिपि-संबंध निर्धारित होता है, उसे अन्यत्र दिए हुए चित्र द्वारा व्यक्त किया जा सकता है।

इस प्रतिलिपि-संबंध के अनुसार विभिन्न प्रतियाँ निम्नलिखित पीढ़ियों में बाँटी जा सकती हैं :—

(१) पं० १, तृ० १ तृ० २, तृ० ३, च० १,
(२) द्वि० १, द्वि० २, द्वि० ३
(३) द्वि० ४, द्वि० ५, द्वि० ७
(४) द्वि० ६, प्र० १, प्र० २

प्रथम पीढ़ी की प्रतियाँ प्रायः स्वतंत्र प्रतिलिपियाँ, अथवा स्वतंत्र प्रतिलिपियों की परम्परा में हैं। दूसरी पीढ़ी की प्रतियाँ प्रथम पीढ़ी की उक्त प्रतियों की प्रतिलिपि-परम्परा में हैं। इसी प्रकार तीसरी दूसरी की, और चौथी तीसरी की प्रतिलिपि-परम्परा में हैं।

कहने की आवश्यकता नहीं कि सबसे अधिक महत्त्व की प्रतियाँ प्रथम पीढ़ी की हैं। वे परस्पर प्रायः स्वतंत्र हैं, और मूल के निकटतम हैं, इसलिये पाठ-निर्धारण में प्रायः पर्याप्त होनीं चाहिएँ। आवश्यकता पड़ने पर दूसरी पीढ़ी की प्रतियों की भी, किंतु उनके संबंधों को समझ कर सहायता ली जा सकती है; तीसरी की सहायता पाठ-निर्धारण में यथासंभव न लेनी चाहिए, और चौथी पीढ़ी की तो अवश्य ही न लेनी चाहिए।

८. प्रतियों का प्रक्षेप-संबंध

'पदमावत' की विभिन्न प्रतियों में कुल मिला कर ८८५ छंद पाए जाते हैं। प्रश्न यह है कि इनमें से कितने प्रामाणिक और कितने प्रक्षिप्त हैं। प्रयुक्त चौदह प्रतियों में उनकी स्थिति इस प्रकार है।

एक प्रति में न मिलने वाले छंद :

प्र०१—३८६, ४३७, ५८६

प्र०२—१२२, २२१.२-२८२.१, ३१३.८-३१४.७, ४८७.८-४८८.७, ५८९-५९२

द्वि०१—३७०, ४२१, ४२४

द्वि०२—२७४

द्वि०७—६६, ६७, २६०, ५०४, ५०६, ६१३-६१६, ६३७ ६३६

तृ०१—४८६, ४८७, ५०५, ५२८ उ

तृ०२—१११, १८०.३ १८१.२, ५४२

च०१—३६६, ५६४ ५६७

पं०१—१५.८-१६.७, ५४६.८-५४९.७

दो प्रतियों में न मिलने वाले छंद :

द्वि० ६, तृ० ३—२६३, २६७, २६८

द्वि०६, च०१—४१८ अ

तृ०२, तृ० ३—१८० अ

तीन प्रतियों में न मिलने वाले छंद :

प्र०२, द्वि० ७, च०१—१५६ अ

द्वि० २, च० १, पं० १—३११ अ

पाँच प्रतियों में न मिलने वाले छंद :

द्वि० ३, तृ० १, २, च० १, पं०१—१८५ अ

छः प्रतियों में न मिलने वाले छंद :

प्र० २, द्वि० १, ७, तृ० २, च० १, पं०१—२६२ अ

शेष छंदों में ऐसे ही रह जाते हैं जो या तो सात या सात से अधिक प्रतियों में नहीं मिलते, या समस्त प्रतियों में मिलते हैं।

विभिन्न प्रतियों में न मिलने वाले छंद दो प्रकार के हो सकते हैं, वे जो प्रतिलिपिकार की भूल से छूट गए हों, और दूसरे वे जो प्रक्षिप्त हों। इन दोनों को एक-दूसरे से अलग करने का केवल एक मार्ग है—यह है अंतर्साक्ष्य की सहायता से—प्रसंग, कवि के प्रयोग, प्रबंध की आवश्यकताओं, व्याकरण आदि के समस्त दृष्टिकोणों से उनका निरीक्षण।

ऊपर एक प्रति में न मिलने वाले छंदों में से समस्त इसी प्रकार के हैं जो अंतर्साक्ष्य की दृष्टि से अनिवार्य अथवा आवश्यक हैं—केवल एक छंद ५२८३ ऐसा है जो न केवल इस प्रकार अनिवार्य या आवश्यक नहीं है वरन प्रसंग, प्रयोग, प्रबंध, व्याकरण आदि की सभी दृष्टियों से प्रक्षिप्त ज्ञात होता है। इसका विस्तृत विवेचन नीचे किया गया है।

दो प्रतियों में न मिलने वाले छंदों में से केवल तीन २६३,२६७,२६८

इस प्रकार के हैं जो अंतर्साक्ष्य की दृष्टि से अनिवार्य हैं।

प्रसंग रत्नसेन को शूली देने का है—उसे वधस्थल पर ले जाया गया है। रत्नसेन सिर नीचा किए हुए है। उसका दसौंधी भाँट उसकी यह दशा देख कर उसे पुरुषार्थ करने के लिये प्रोत्साहित करता है, और इसके अनंतर गंधर्वसेन के सामने जा कर उसे बाएँ हाथ से नमस्कार करते हुए कहता है कि भाँट महेश की मूर्ति हुआ करता है, (उसका कथन मान्य होता है), योगी (रत्नसेन) और वह (गंधर्वसेन) पानी और आग के समान हैं, दोनों में युद्ध होना ठीक नहीं है, रत्नसेन उससे भिक्षा माँग रहा है, जिसे उसे देकर युद्ध का निवारण करना चाहिए। छंद २६३ में यही कहा गया है।

छंद २६५ में कहा गया है :

भइ अग्या को भाँट अभाऊ। बाएँ हाथ देइ बरम्हाऊ।
को जोगी अस नगरी मोरी। जो दै सेंध चढ़ै गढ़ चोरी।

प्रकट है कि २६३ में आए हुए विवरणों के अभाव में २६५ की ये पंक्तियाँ नितांत असंगत हैं। २६४, २६५, २६६ में उक्त भाँट और गंधर्वसेन का कथोपकथन है। वह २६३ की भूमिका के बिना सभी दृष्टियों से असंभव है। इसी प्रकार छंद २६६ में जो कुछ कहा गया है, वह २६७, २६८ की भूमिका के बिना असंभव है। इसलिये छंद २६३, २६७, २६८ की अनिवार्यता प्रकट है। तृ० ३ तथा द्वि० ६ के प्रक्षिप्त छंदों का मिलान करने पर ज्ञात होता है कि द्वि० ६, तृ० ३ की प्रक्षेप-परंपरा में है। असंभव नहीं कि तृ० ३ में न होने के कारण ये छंद द्वि० ६ में भी न आये हों।

दो प्रतियों में न मिलने वाले शेष छंदों की स्थिति इनसे भिन्न है। उनका विस्तृत विवेचन नीचे किया गया है। उससे ज्ञात होगा कि अन्तर्साक्ष्य की दृष्टि से उनमें से कोई भी प्रामाणिक नहीं माना जा सकता।

तीन, पाँच, और छः प्रतियों में न मिलने वाले छंदों के विषय में यह कल्पना करना सामान्यतः उचित नहीं होगा कि वे भूल से इतनी—और जैसा आगे चल कर हम देखेंगे एक दूसरे से बहुत-कुछ भिन्न शाखाओं की—प्रतियों में एक साथ छूट गए हैं; और नीचे अन्य छंदों के साथ इनका जो विवेचन किया गया है, उससे भी यही ज्ञात होगा कि अन्तर्साक्ष्य की दृष्टि से इनमें से कोई भी न केवल अनिवार्य या आवश्यक नहीं है, वरन् प्रामाणिक भी स्वीकार नहीं किया जा सकता।

जो छंद चौदह में से सात या अधिक प्रतियों में नहीं मिलते, उनके संबंध

में बहिसाक्ष्य का ही विरोधी साक्ष्य उन्हें प्रक्षिप्त मानने के लिये पर्याप्त होना चाहिए, किंतु अंतर्साक्ष्य भी उसका समर्थन करता है। और जो छंद समस्त प्रतियों में मिलते हैं, उन्हें प्रक्षिप्त मानने अथवा प्रामाणिक न मानने का कोई कारण नहीं रह जाता है।

ग्रंथ में उपर्युक्त रीति से निर्धारित कुल प्राप्त प्रक्षेपों की संख्या २३० है। उन सब के संबंध का विस्तृत विवेचन न यहाँ संभव है, और न आवश्यक। इसलिए उदाहरण-स्वरूप केवल ऐसे प्रक्षिप्त छंदों का विवेचन किया जा सकता है, जो प्रक्षेप-संबंध निर्धारण के लिये सब से अधिक महत्त्व के हैं, क्योंकि वे निर्धारित पाठ-परम्परा में सभी दृष्टियों से आदि या मूल प्रति के निकटतम पड़ने वाली आठ प्रतियों में से किसी में और उसके अतिरिक्त किसी भी अन्य प्रति में आते हैं। इस प्रकार के प्रक्षिप्त छंद केवल ४६ हैं। और आधे दर्जन छंद ऐसे भी लिये जा सकते हैं जो यद्यपि उपर्युक्त आठ प्रतियों में से किसी एक ही में पाए जाते हैं, अन्य किसी प्रति में नहीं पाए जाते हैं। इन ५२ प्रक्षिप्त छंदों का विवेचन नीचे किया जा रहा है।

(१) ६० अ—यह छंद प्र० १, २, ४, ५, ६, ७, पं० १ में नहीं है। इसमें पूर्ववर्ती मूल के छंद के भाव दुहराए गए हैं, यथा :

जौ लहि अहै पिता कर राजू। खेलि लेहु जो खेलहु आजू। (६०.४)
फूलि लेहु नैहर जब ताई। पुनि कत फूलन देइहैं साई। (६० अ.३)
कत आवन पुनि अपने हाथाँ। कत मिलिकै खेलब एक साथाँ। (६० .३)
कत नैहर पुनि आउन कत सासुर यह केलि। (६० अ.८)

सासु नँनद बोलिन्ह जिउ लेहीं। दारुन ससुर न आवै देहीं। (६०.७)
सासु नँनद के भौंह सिकोरे। रहब सँकोचि दुओ कर जोरे। (६० अ.६)

साथ ही पूर्ववर्ती मूल का छंद सभी प्रतियों में मिलता है, इसलिए इस अतिरिक्त छंद का प्रक्षिप्त होना प्रकट है।

(२) १५६ अ—यह छंद प्र० २, द्वि० ७, च० १ में नहीं है। प्रसंग में यह अनावश्यक है। इसके अतिरिक्त इसकी प्रथम पंक्ति में रत्नसेन अपने साथियों को 'सुपुरुष होने' और 'धीरा करने' के लिए 'बीड़ा' देता है। किंतु बीड़ा किसी असामान्य पुरुषार्थ का कार्य संपादित करने के लिए दिया और लिया जाता है, 'सुपुरुष होने' या 'धीरा करने' के लिए नहीं। पुनः इस छंद में दो बार राजा का कथन आता है: एक बार प्रथम पंक्ति में, और दूसरी बार चौथी पंक्ति में; किंतु दोनों में से एक भी स्थान पर यह नहीं कहा जाता है

कि यह कथन राजा का है, और यह दोष स्पष्ट खटकता है। इन कारणों से यह छंद भी प्रक्षिप्त ज्ञात होता है।

(३) १६३ अ—यह छंद द्वि० १, २, ४, ६, तृ० १, २, ३, च० १, पं० १, में नहीं है। मूल के पूर्ववर्ती छंद में रत्नसेन ने कहा है :

राजैं.कहा दरस जौं पावौं। परवत काह गँगन कहँ धावौं।
जेहि परवत पर दरसन लहना। सिर सौं चढ़ौं पाय का कहना।
मोहिं भाउ ऊँचे सो ठाऊँ। ऊँचे लेउँ पिरीतम नाऊँ।

और इसी प्रसंग में यह ऊँचे के संग का भी समर्थन करता है। नीच के संग का यहाँ का प्रसंग नहीं है। किंतु प्रस्तुत पूरे छंद में ऊँचे संग की प्रशंसा की तुलना में 'नीच संग' की निंदा की गई है। साथ ही उक्त पूर्ववर्ती छंद की प्रायः शब्दावली तक ले ली गई है। इसलिए यह छंद प्रक्षिप्त ज्ञात होता है।

(४) १८० अ—तृ० २, ३ में यह छंद नहीं है। पश्चात् के छंद की पहली पंक्ति है: 'हीरामनि जो कही रस बाता।...' जिससे यह प्रकट है कि उसके पूर्व हीरामनि की बात आई है। किंतु प्रस्तुत अतिरिक्त छंद में पद्मावती की बात आती है, हीरामनि की बात इसके पूर्ववर्ती छंद में आती है। फिर प्रस्तुत अतिरिक्त छंद में पूर्ववर्ती और परवर्ती छंदों की शब्दावली ही नहीं, पंक्तियाँ तक आती है; यथा उसकी निम्नलिखित पंक्ति :

हीरामनि जौं कही रस बाता। सुनि कै रतन पदारथ राता।

जो समस्त प्रतियों में—और इन प्रतियों में भी—निरपवाद रूप से १७९.१ है। इसलिए यह छंद स्पष्ट ही प्रक्षिप्त है।

(५) १८५ अ—यह छंद द्वि० ३, तृ० १, २, च० १, पं० १ में नहीं है। प्रसंग में यह अनावश्यक है। मूल के पूर्ववर्ती छंद में कवि ने पद्मावती के साथ विश्वनाथ पूजा के लिए जाती हुई कतिपय जातियों की कन्याओं का उल्लेख किया है। उसी सूची को प्रस्तुत अतिरिक्त छंद द्वारा बढ़ाया गया है। किंतु इस छंद की सूची में वेश्याओं तक को विश्वनाथ पूजा के लिए अग्रसर किया गया है, और उक्त पूजा के वातावरण को उन्हें 'मूँदी' और 'बिकसी' 'कली' कह कर दूषित किया गया है :

कै सिंगार बहु 'बेसवा' चलीं। जहँ लगि 'मूँदी बिकसी कलीं'। (.४)

'बेसवा' शब्द भी चिंत्य है। जायसी ने 'बेसा' शब्द का प्रयोग किया है, 'बेसवा' का नहीं :

कै सिंगार जहँ बैठी बेगा। (१८८.१)
तेहि क सँदेस सुनावसि बेगा। (५६६.२)

इसलिए यह छंद स्पष्ट ही प्रक्षिप्त है।

(६) २३१ अ—यह छंद प्र० १, २, द्वि० १, २, ४, तृ० १, २, च० १, पं० १ में नहीं है। इस छंद का सारा संदेश रत्नसेन का है, जिसे हीरामनि पदमावती को सुना रहा है। किंतु हीरामनि का समस्त कथन छंद २२७ से प्रारंभ हो कर २३० पर समाप्त हो जाता है। छंद २३१ में पद्मावती रत्नसेन के उक्त संदेश का उत्तर मौखिक रूप में, और २३२-३४ में वह उसके संदेश का उत्तर लिखित रूप में देती है। अतः २३१-२३२, २३२-२३३ अथवा २३३-२३४ के बीच में इस अतिरिक्त छंद की असंगति प्रकट है। पुनः इस अतिरिक्त छंद में कहीं यह भी नहीं कहा गया है कि कथन रत्नसेन का है, जैसा कि वह वास्तव में है, न किसी अन्य प्रकार से इस प्रबंध-त्रुटि का परिहार किया गया है। इसलिए यह अतिरिक्त छंद भी प्रक्षिप्त ज्ञात होता है।

(७ ८) २६२ अ, आ—२६२ अ प० २, द्वि० १, ७, तृ० २, च० १, पं० १ में नहीं है, और २६२ आ, प्र० १, २, द्वि० १, ६, ७, तृ० १, २, ३, च० १, पं० १ में नहीं है। इन दोनों छंदों में नायक के 'सत' की थाह लेने के लिए महादेव और पार्वती अग्रसर होते हैं :

आइ गुपुत होइ देखन लागे। दहुँ मूरति कस सती सभागे। (२६२अ.७)
पारवती सुनि सत्त सराहा। औ फिरि मुख महेस कर चाहा। (२६२आ.५)

किन्तु इसके पूर्व ही छंद २०९-२१० में पार्वती जी भर कर रत्नसेन के प्रेम और एकनिष्ठा की परीक्षा ले चुकी हैं, और उस परीक्षा में रत्नसेन को सफल पाकर महेश से उसके प्रेम और एकनिष्ठा की प्रशंसा भी कर चुकी हैं। पुनः उन्हें इन अतिरिक्त छंदों में, उसी कार्य के लिए प्रस्तुत करना किसी अनधिकारी व्यक्ति की ही कल्पना लगती है, ग्रंथ के लेखक की नहीं।

(९) २६२ इ--यह छंद प्र० १, २, द्वि० १, २, ६, ७, तृ० १, २, ३, च० १, प० १ में नहीं है। इस छंद में कहा गया है कि हीरामनि वध-स्थान पर गया है और उसने रत्नसेन से पदमावती की दशा कही है :

कहि सँदेस सब बिपति सुनाई। बिकल बहुत किछु कहा न जाई।
काढ़ि प्रान बैठी लेइ हाथा। जिऐ तौ जिऔं मरहिं एक साथा।
(२६२ इ. ५-६)

और इसके अनन्तर वह भाँट वेशधारी महेश के साथ गंधर्वसेन के पास पहुँचा है :

हीरामनि औ भाँट दसौंधी भए जिउ पर एक ठाउँ।
चलि सो जाइ अब देख तहँ जहँ बैठ रह राव॥

किंतु, आगे रत्नसेन की ओर से उसके भाँट ने हीरामनि को बुला कर उससे रत्नसेन के कुल आदि के बारे में पूँछने के लिए गंधर्वसेन से अनुरोध किया है (२६८. ४-५), जिस पर हीरामनि बुलाया भी गया है (२६९. २-३)। वहाँ हीरामनि मजूषा में है, जिसमें से वह खोलकर निकाला जाता है, और गंधर्वसेन के सामने पहली बार आता है :

खोला आगे आनि मँजूषा। मिला निकसि बहु दिन कर रूषा। (२६९.४)

फलतः उपर्युक्त अतिरिक्त छंद का कथन स्पष्ट ही असंगत और प्रक्षिप्त है।

(१०) २६४ आ—यह छंद प्र० १, २, द्वि० १, ३, ४, ५, ६, ७, तृ० १, २, च० १, प० १ में नहीं है। इसके पूर्ववर्ती मूल के छंदों में भाँट ने गंधर्वसेन से कहा है कि उसे रत्नसेन से युद्ध न करना चाहिए, और परवर्ती मूल के छंद में गंधर्वसेन ने भाँट की उस बात का उत्तर दिया है। बीच के इस अतिरिक्त छंद में कहा गया है :

राजा रिसहिं सुनी नहिं बाता। अति रिसि भरा कोह भा राता।...

काहू कहा न मानै राजा राजहि अति रिसि कीन्ह।
धरि मारहु सब जोगी राइ रजायसु दीन्ह॥

अतिरिक्त छंद का यह समस्त कथन पूर्ववर्ती मूल छंदों में किए गए कथनों के विपरीत पड़ता है, और इस वैषम्य का कोई समाधान भी प्रस्तुत अतिरिक्त छंद में नहीं है, इसलिए यह भी प्रक्षिप्त ज्ञात होता है।

(११) २६४ अ२—केवल द्वि० २ में यह छंद है, शेष किसी प्रति में नहीं है। इसमें कहा गया है कि भाँट-वेषधारी महेश ने जब गंधर्वसेन से रत्नसेन को अपनी कन्या देने के लिए कहा, तो हनुमान ने तत्क्षण गड़ी हुई शूली को उखाड़ कर मूली की भाँति अपने मुख में रख लिया (२६४ अ २. १-२), और अपनी लंगूर से ऐसा महायुद्ध किया कि रुधिर के पनारे बहने लगे (२६४अ. ३-४); साथ ही दोनों ओर के योद्धा भिड़े, सवार से सवार और पैदल से पैदल भिड़े, और खड्ग, धनुष-बाण, सेल, साँगी और गोला चले (२६४ अ२. ५-७)। मूल के छंदों में रत्नसेन की ओर से जो अहिंसात्मक सत्याग्रह प्रस्तुत किया गया है, अपने लक्ष्य की प्राप्ति के लिए उसके आत्म-बलिदान की जो कथा उपस्थित की गई है, उसका पूरा निराकरण इस छंद की पंक्तियों में होता है। अतः इसका भी प्रक्षिप्त होना प्रकट है।

(१२-१७) २६८ अ, आ, इ, ई, उ तथा २७४ अ—ये समस्त छंद प्र० १, २, द्वि० १, ७, तृ० १, २, च० १, पं० १ में नहीं हैं। इन छंदों में भी महादेव जी की भाँट वेश में अवतारणा की गई है, और दोनों ओर से महाभारत करा दिया गया है।

२६८ अ में प्रायः वही बातें दुहराई गई हैं जो अन्य छंदों में कही गई हैं, यथा :

आगि बुझाइ पानि सों तूँ राजा मन बूझु।
तोरें बार खपर है लीन्हें भिष्या देहि न जूझु॥ (२६३. ८-६)
माँगी भीख खपर लेइ मुए न छाड़ै बार।
बूझहु कनक कचोरी भीखि देहु नहिं मार॥ (२६८अ. ८-६)

जंबू दीप चितउर देसा। चित्रसेन बड़ तहाँ नरेसा।
रतनसेनि यह ताकर बेटा। कुल चौहान जाइ नहिं मेंटा। (२६८. ३-३)
राज कुँवर यह होइ न जोगी। सुनि पदुमावति भएउ वियोगी।
जंबू दीप राज घर बेटा। जो है लिखा सो जाइ न मेंटा।
(२६८ अ. ४-५)

हीरामनि जो तुम्हार परेवा। गा चित उर औ कीन्हेसि सेवा।
तेहि बोलाइ पूँछहु वह देसू। दहुँ जोगी की तहँक नरेसू।
(२६६. ३-४)

तुम्हरहि सुआ जाइ ओहि आना। औ जेहि कर बर कै तेइ माना।
(२६८ अ. ६)

उसमें निम्नलिखित पंक्ति भी, जो अन्य प्रतियों के साथ ही इन प्रतियों में भी २६३.६ है, और केवल तृ० ३ में नहीं है, अवश्यः दुहराई गई है :

गंध्रपसेन तू राजा महा। हौं महेस मूरति सुनु कहा। (२६८ अ. २)

फलतः यह प्रकट है कि यह छंद भी प्रक्षित है।

२६८ आ में छंद २६५ की बातों का सारांश आया है। २६५ में गंधर्वसेन कहता है कि इंद्र, कृष्ण, ब्रह्मा, बलि, वासुकि, धरती, मंदर, मेरु, चंद्र, सूर्य, गगन, कुवेर, मेघ, कूर्म आदि सभी उससे डरते हैं, और यदि वह चाहे तो उन्हें उनके केश पकड़ कर 'भंग' कर सकता है, फिर उसके सामने कीट और पतंग जैसे राजा क्या हैं? यहाँ वह कहता है :

जेहि अस साध होइ जिउ खोवा। सो पतंग दीरक तस रोवा।
सुर नर मुनि सब गध्रप देवा। तेहि को गनै करहिं नित सेवा।
(२६८ अ. ६-७)

अतः यह छंद भी प्रक्षिप्त ज्ञात होता है।

२६८ इ में रणक्षेत्र में अगद आते हैं, (रामकथा की भाँति) वे सभा में पैर रोपते हैं (१६८ इ. ५), और उनके आगे विपक्ष के जो पाँच हाथी आते हैं, उन्हें वे सूँड पकड़ कर ऐसा फेंकते हैं कि वे पृथ्वी पर गिरते तक नहीं। (२६८ इ. ६ ७)

२६८ ई में हनुमान जी भी पधारते हैं, और उनके आगे जब हाथी बढ़ाए जाते हैं, तो वे सारी विपक्ष की सेना को अपनी पूँछ में लपेट कर बहुत कुछ समाप्त ही कर डालते हैं।

२६८ उ में हनुमान जी की पूँछ लोक, ब्रह्मांड, स्वर्ग, पाताल, आदि को लपेटे हुए दिखाई पड़ती है (२६८ उ. २-३), बलि, वासुकि, राहु, नक्षत्र, सूर्य, चंद्र, समस्त दानव, राक्षस, तथा आठौ (या 'अहुठौ ?) वज्र रणक्षेत्र में आ जुटते हैं (२६८ उ. ४५)। इतना ही नहीं, महादेव जी भी रणक्षेत्र में खड़े दिखाई पड़ते हैं, और उनको देख कर राजा उनके चरणों में पड़ता है, और कहता है कि कन्या उन्हीं की है, वे उसे जिसे चाहें उसे दें। (२६८ उ. ८६)

कहने की आवश्यकता नहीं कि जिन कारणों से २६४ अ २ प्रक्षिप्त है, उन्हीं कारणों से ये अतिरिक्त छंद भी प्रक्षिप्त ज्ञात होते हैं।

जिन प्रतियों में ये अतिरिक्त छंद हैं, उनमें परवर्ती मूल के छंद २६६ के प्रथम चरण का पाठ भी इन्हीं छंदों के अनुसार है। सामान्य पाठ है:

'सोइ (भाँट) बिनती सिउँ करै बसीठी' (२६६.१)।

और इन प्रतियों में है' 'तब महेस उठि कीन्ह बसीठा'।

२७४ अ—महादेव जी की इस बसीठी के अनंतर भी गधर्वसेन उनकी बातों की जाँच हीरामनि को बुलाकर करता है, और अंत में जब वह पूरा निश्चय कर लेता है कि रत्नसेन योगी नहीं राजकुमार है, वह महादेव जी को संबोधित करके कहता है:

बोल गोसाईं कर मैं माना। काह सो जुगुति उतर कह आना।

(२७४ अ. १)

जब वह एक बार महादेव जी से कह चुका था:

जेहि चाहिय तेहि दीजिय बारि गोसाईं केरि। (२६८ उ. ६)

तब न तो महादेव जी को उठ कर बसीठी करने की आवश्यकता थी, और न महादेव जी की बसीठी में किए गए कथनों की सचाई का उसे हीरामनि से पता लगाना था। महादेव जी की बिदाई की भी कोई बात इन छंदों में

नहीं आती, न मूल के छंदों में आती है। इसलिए यह स्पष्ट है कि बसीठी के रूप में महादेव जी की सारी कल्पना ही प्रक्षिप्त है।

पुनः २७४ अ में सभी प्रतियों में मूल में अन्यत्र आई हुई कुछ पंक्तियाँ तक भी दुहराई हुई मिलती हैं, यथा :

भा बरोक औ तिलक सँवारा। (२७४.२), (२७४ अ. २)

दोबार बरोक और तिलक होना तो किसी प्रकार संभव नहीं माना जा सकता। इसलिए २७४ अ का भी प्रक्षिप्त होना प्रमाणित है।

(१८) २६८ अ १—यह छंद केवल द्वि०२ में है, और किसी प्रति में नहीं है। इस छंद का भाव वही है जो अन्यत्र इसी प्रति के एक अन्य प्रक्षिप्त छंद २६४ आ में आ चुका है, जिसका विवेचन ऊपर हो चुका है। उन्हीं कारणों से, और पुनः एक ही भावों की पुनरावृत्ति होने के कारण, यह छंद भी प्रक्षिप्त है।

(१९-२१) २८४ अ, आ, इ—ये छंद प्र०२, द्वि० १, ३, ७, तृ० १, पं० १ में नहीं हैं। इनमें से प्रथम में कहा गया है कि जेवनार के समय बीन नहीं बजा, इसलिए दूलह रत्नसेन ने भोजन करना नहीं प्रारंभ किया; दूसरे में कारण पूछा जाने पर रत्नसेन ने नाद की महिमा निरूपित की है, और पूछा है कि इस अवसर पर नाद का निषेध क्यों किया गया; तीसरे में उसके इस प्रश्न का समाधान यह कह कर किया गया है कि नाद-श्रवण से उन्माद होता, जिस प्रकार मद-पान से होता है, इसलिए उसका निषेध किया गया।

विवाह के इस समस्त प्रसंग में बाजों के बजने का वर्णन हुआ है :

गए जो बाजन बाजते जिन्हहि मारन रन माहँ।
फिरि बाजन तेइ बाजे मंगल चार उनाहँ॥ (२७४)

बाजन बाजे कोटि पचासा। भा अनद सगरौं कबिलासा। (२७५.२)
साजा राजा बाजन बाजे। मदन सहाय दुवौ दर गाजे। (२७६.१)
बाजत गाजत भा असवारा। सब सिंघल नै कीन्ह जोहारा। (२७७.३)
बाजत आवै राजा मंदिर कहँ होइ मंगलाचार। (२७७.६)
तुम्ह जानहु पिअ आवै साजा। यह सब सिर पर धम धम बाजा। (२८१.४)
आइ बजावत पैठि बराता। पान फूल सेंदुर सब राता। (२८२.१)

यदि नाद से उन्माद की उत्पत्ति होती थी, तो जेवनार के समय ही उसका निषेध क्यों किया गया, अन्य अवसरों पर उसका निषेध क्यों नहीं किया गया?

फिर, 'पंडित और विद्वाना' ('विद्वान्' ग्रंथ में अन्यत्र कहीं नहीं आया है) जिन शब्दों में उस दूलह राजा से भोजन करने के लिए 'विनय' करते हैं, वह भी ध्यान देने योग्य है :

भूख तौ जनु अम्रित है सूखा। धूप तौ सीअर नींदै रूखा।
नींद तौ भुइँ जनु सेज सपेती। छाँटहु का चतुराई एती।

उद्धृत पंक्तियों से ध्वनि यह निकलती है कि 'तुम्हें भूख ही नहीं है, नहीं तो इतने सुस्वादु भोजन की क्या बात, रूखा-सूखा भी तुम खाते।' 'छाँटहु का चतुराई एती' कहना तो इस 'विनय' और 'विद्वत्ता' की पराकाष्ठा है। यदि दूलह चुपचाप बैठा था, और भोजन नहीं कर रहा था, तो उसे ऐसा कहने के लिए कौन सा अवसर था ? इससे अधिक 'अविनय' और 'मूर्खता' की बात कदाचित् ही दूसरी हो सकती थी। इसलिए यह छंद भी प्रक्षिप्त ज्ञात होता है।

(२२-२३) २८८ अ, आ—ये दोनों छंद प्र० १, २, द्वि० १, ४, ७, तृ० १, २, च० १, पं० १ में नहीं हैं। इनमें धौराहर के सात खंडों का वर्णन किया गया है। किंतु छंद २८९.१ में कहा गया है : 'सात खंड सातौ कविलासा। का बरनौं जग ऊपर बासा।' और इसके पश्चात् उनका वर्णन किया गया है। छंद २८९ की शब्दावली ही नहीं पंक्तियाँ भी इनमें दुहराई गई हैं :

हीरा ईंटि कपूर गिलावा। मलयागिरि चंदन सब लावा।
(२८९.२)
पाँचव हीरा ईंटि गढ़ावा। औ सब लाग कपूर गिलावा।
(२८८ आ. ३)
चूना कीन्ह औटि गज मोती। मोतिहु चाहि अधिक तेहि जोती।
(२८९.३)
छठएँ लाग रतन गज मोती। होइ उजियार जगत तेहि जोती।
(२८८ आ. ४)
अति निरमल नहिं जाइ बिसेखा। जस दरपन महँ दरसन देखा।
(२८९.५)
जस दरपन महँ देखै देहा। तैस साज सब कीन्ह उरेहा।
(२८८ अ. ४)
भुइँ गच जानहुँ समुँद हिलोरा। कनक खंभ जनु रचा हिंडोरा।
(२८९.६)

जगर मगर सब खंभे परहीं। निसि दिन जनहुँ दिया अस बरहीं।
(२८८ आ. ५)

रतन पदारथ होइ उजियारा। भूले दीपक औ मसियारा।
(२८६.७)

तहाँ न दीपक औ मसियारा। सब नग जोति होइ उजियारा।
(२८८ आ. ७)

पुनः, कहा जाता है :

देखि बखानै राजा भीवँसेन का राज।
धनि चक्कवै राजा जेइँ रे मँदिर अस साज ॥

यह 'भीमसेन' कौन है ? यह ग्रंथ में अन्यत्र तो कहीं आया नहीं है। अतः यह प्रकट है कि ये दोनों छंद भी प्रक्षिप्त हैं।

(२४-२६) ३१५ अ, आ, इ—ये अतिरिक्त छंद प्र० १, २, द्वि० १, ३, ७, तृ० १, २, च० १, पं० १ में नहीं है, और द्वि० २ में इनमें से केवल दूसरे और तीसरे नहीं हैं। प्रथम में पद्मावती रत्नसेन से प्रश्न करती है कि उसने सिंघल और उसके विषय में कैसे जाना, और ऐसे दुर्गम (प्रेम के) मार्ग को महादेव जी ने उसे कहाँ दिखाया। दूसरे में पद्मावती के इन प्रश्नों का उत्तर देते हुए रत्नसेन कहता है कि सिंघल के और उसके बारे में उसे सुवे ने बताया, किंतु प्रेममार्ग संबंधी उक्त प्रश्न का कोई उत्तर भी रत्नसेन के कथनों में नहीं है। तीसरे छंद में रत्नसेन के उत्तर से पद्मावती संतुष्ट होकर उसके प्रति अपने अनुराग का कथन करती है।

कहने की आवश्यकता नहीं कि पद्मावती के प्रश्नों का जो उत्तर रत्नसेन ने यहाँ दिया है, वह हीरामनि ने पद्मावती को अपनी पहली ही भेंट में बहुत पूर्व दिया था (छंद १७७, १७८)। सारी कथा हो जाने के बाद रत्नसेन से पद्मावती का यह प्रश्न करना वैसा ही लगता है जैसे सारी 'रामायण' हो जाने के बाद भरत राम से प्रश्न कर रहे हों कि उनका वनवास क्यों हुआ था ?

पुनः, छंद ३१४, ३१५ की तथा इन छंदों की निम्नलिखित पंक्तियाँ भी तुलनीय हैं :

बिहँसी धनि सुनि कै सत बाता। निस्चै तूँ मोरे रँग राता।
(३१४.१)

बिहँसी धनि सुनि कै सत भाऊ। हौं रामा तूँ रावन राऊ।
(३१५ इ.१)

निसँ भवँर कँवल रस रसा। जो जेहि मन सो तेहि मन बसा।
(३१४.१)
रहा जो भँवर कँवल की आसा। कस न भोग मानै रस बासा।
(३१५ इ. २)
जब हीरामनि भएउ सँदेसी। तुम्ह हुत मँडप गइउँ परदेसी।
(३१४.३)
जब हुँत कहि गा पंखि सँदेसी। सुनिउँ कि आवा है परदेसी।
(३१५ इ. ४)
बिनु जल मीन तपी तस जीऊ। चातकि भइउँ कहत पिउ पीऊ।
(३१५.२)
तब हुँत तुम्ह बिनु रहै न जीऊ। चातकि भइउँ कहत पिउ पीऊ।
(३१५ इ. ५)
जरिउँ बिरह जस दीपक बाती। पँथ जोवत भइउँ सीप सेवाती।
(३१५.३)
भइउँ चकोरि सो पंथ निहारी। समुँद सीप जस नैन पसारी।
(३१५ इ. ६)
डारि डारि जेउँ कोइलि भई। भइउँ चकोरि नींद निसि गई।
(३१५.३)
भइउँ बिरह दहि कोइलि कारी। डारि डारि जिमि कूकि पुकारी।
(३१५ इ. ६)

अतः इन अतिरिक्त छंदों भी का प्रक्षिप्त होना भली भाँति प्रमाणित है।

(२७) ३३२ अ—यह छंद द्वि० २, ६, तृ० १, २, ३, च० १, पं० १ में नहीं है। पद्मावती ने इसमें शिव को कलश चढ़ाया है। ऊपर छंद १६१ में पद्मावती ने महादेव से कहा था :

'बर सँजोग मोहि मेरवहु कलस जाति हौं मानि।
जेहि दिन इंछा पूजै बेगि चढ़ावहुँ आनि॥'

उसी मनौती की पूर्ति पद्मावती से प्रस्तुत अतिरिक्त छंद में कराई गई है। प्रश्न यह है कि क्या यह पूर्ति कवि द्वारा कराई गई हो सकती है?

इस संबंध में उपर्युक्त मनौती के प्रसंग की निम्नलिखित पंक्तियाँ देखने योग्य हैं :

इंछि इंछि बिनई जसि जानी। पुनि कर जोरि ठाढ़ि भइ रानी।
उतर को देइ देव मरि गएऊ। सबद अकूट मँडप महँ भएऊ।

काटि पवारा जैस परेवा। मर मा ईस ग्रौर को देवा।...
भल हम ग्राइ मनावा देवा। गा जनु सोइ को मानै सेवा।
को इंछा पूरै दुख खोवा। जेहि मानै ग्राए सोइ सोवा।
(१६२.१-७)

इन कथनों के बाद भी जायसी की पद्मावती ने ग्रपनी मनौती पूरी की होगी, यह संदिग्ध है। इसके ग्रतिरिक्त पूर्वोक्त स्थल पर तो देवता को पद्मावती के दर्शन से प्राण विसर्जन करते हुए दिखाया गया है, ग्रौर यहाँ वह उसे देख कर हिलता-डुलता तक नहीं। ग्रतः यह छंद भी प्रक्षिप्त ज्ञात होता है।

इस ग्रतिरिक्त छंद में निम्नलिखित प्रयोग भी चिंत्य हैं: 'झँफ', 'दुंदुभि', ग्रौर 'प्रनाम'। ये रूप ग्रन्थ में ग्रन्यत्र नहीं ग्राते हैं। 'माँफ', ग्रौर 'दुंदु' रूप तो मिलते भी हैं, 'प्रनाम' का कोई ग्रन्य रूप भी नहीं मिलता।

(२८) ३६१ ग्र—यह छंद द्वि० २, च० १, पं० १ में नहीं है। पक्षी के द्वारा नागमती ने इस छंद में पद्मावती के पास भी संदेश भेजा है, जिसमें उसने प्रार्थना की है:

ग्रबहुँ मया कर कर जिउ फेरा। मोहि जियाउ कंत देइ मेरा।
(३६१ ग्र. ६)

किंतु यह प्रार्थना भी पद्मावती को 'बैरिनि' कहते हुए की गई है, यह देखने योग्य है:

सवति न होसि होसि तूँ 'बैरिनि' मोर कंत जेहि हाथ।
ग्रानि मिलाउ एक बेर कैसेहुँ तोर पाय मोर माथ॥

ग्रसंगति स्पष्ट है। इसके ग्रतिरिक्त, न उस पक्षी ने सिंघल पहुँच कर पद्मावती को नागमती का कोई संदेश दिया है, न उससे मिला ही है, ग्रौर न दोनों सौतों के मिलने पर कहीं इसकी चर्चा ग्राई है। कुछ प्रयोग भी इस छंद में चिंत्य हैं, यथा: 'चैन' ग्रौर 'मेरा'। ग्रंथ में ये दोनों प्रयोग ग्रन्यत्र नहीं मिलते। ग्रतः यह छंद भी प्रक्षिप्त ज्ञात होता है।

(२६-३१) ३८३ ग्रा, इ, ई—ये छंद द्वि० १, ३, तृ० १, २, ३, च० १, पं० १ में नहीं हैं। छंद ३८२, ३८३ में यात्रा-विचार सम्बन्धी कुछ बातों का उल्लेख किया गया है। इन ग्रतिरिक्त छंदों में उन्हीं का ग्रौर विस्तार किया गया है। किंतु छंद ३८३ के ग्रंत में—दिशाशूल ग्रौर योगिनी चक्रों का ग्रलग ग्रलग विचार प्रस्तुत करके कहा गया है:

यह गति चक्र जोगिनी बाँचहु जौ चाहहु सिधि होन।

इस शब्दावली से ऐसा लगता है कि उस प्रकरण को समाप्त कर दिया गया है। किंतु इन अतिरिक्त छंदों में छंद ३८२ के विचार भी—किंचित् भेद के साथ—पुनः दुहराए गए हैं, यथा दिशाशूल के सम्बन्ध में :

आदित सुक पछिउँ दिसि राहू। बिहफै दखिन लंक दिसि डाहू।

(३८२.१-२)

सोम सनीचर पुरुब न चालू। मंगर बुध उतर दिसि कालू।
आदित होइ उतर कहँ कालू। सोमकाल पाइच नहिं चालू।
भौम काल पछिउँ बुध निरिता। गुरु दखिन औ सुक अगनौता।
पूरुब काल सनीचर बसै। पीठि काल देइ चलै त हँसै।

(३८३ आ. ५-७)

अतः यह स्पष्ट है कि ये छंद भी प्रक्षिप्त हैं।

(३२) ३८५ अ—यह छंद प्र० १, २, द्वि० १, २, ४, ५, ६, ७, तृ० १, ३, पं० १ में नहीं है। इसमें हीरामनि समस्त रानियों, चित्तौर के कुँवरों और सिंघल के भी कुँवरों का रत्नसेन के साथ चित्तौर के लिए प्रस्थान वर्णित है। हीरामनि कथा में पुनः कहीं नहीं आता, सिंघल की रानी के रूप में केवल पद्मावती मिलती है, और सिंघल के कुँवर भी पुनः कहीं नहीं मिलते। इस छंद की कुछ पंक्तियाँ भी इसके अतिरिक्त निरर्थक-सी लगती हैं :

औ जत गवन चार के आयी। (.१)
तहँ पहुँचाइ चले भलि सेवा। (.२)

पुनः चित्तौर के लिए 'देस' शब्द आया है, जो ग्रंथ में अन्यत्र नहीं मिलता है :

जे सब कुँवर 'देस' के अहे। (.५)

इन कारणों से यह छंद भी प्रक्षिप्त ज्ञात होता है।

(३३) ४१८ अ—यह छंद द्वि० ६, च० १ में नहीं है। इसमें पूर्ववर्ती मूल के छंद की ही बातों को कुछ संशोधन परिवर्धन के साथ दुहराया गया है; और यहाँ भी पद्मावती रत्नसेन के पैरों में पड़ती है :

पाय परी धनि पिय के नैनन्हि सों रज मेटि। (४१८.८)

कै नेउछावरि जीउ उवारी। पायन्ह परी 'धालि गिय' नारी। (४१८अ.३)

किंतु इतना ही नहीं, इस अतिरिक्त छंद में रत्नसेन को भी पद्मावती के पैरों में गिराया गया है :

राजा रोव 'घालि गियँ पागा'। पदुमावति के पायन्ह लागा। (४१८ अ.५) पद्मावती का रत्नसेन के पैरों में पुनः गिरना, और उससे भी अधिक रत्नसेन का पद्मावती के पैरों में गिरना, प्रक्षिप्त ही ज्ञात होता है। 'घालि गियँ' भी इस छंद में एक विचित्र पहेली है—पद्मावती रत्नसेन के पैरों में 'गिय घालि' गिरती है, और रत्नसेन पद्मावती के पैरों में 'गियँ पाग घालि' गिरते हैं। यह प्रयोग ग्रंथ में अन्यत्र नहीं आए हैं, इसलिए चिंत्य हैं।

इस छंद के दोहे में 'मुहम्मद' नाम अवश्य आता है :

'मुहमद' मीत जो मन बसै तेहि मिलाव विधि आनि।

किंतु अनेक प्रक्षिप्त दोहों में ऐसा हुआ है, यथा :

२२ अ—जो केवल द्वि० १ में है।)

५७६ अ—जो केवल प्र० १, २ में है।

६४८ अ—जो केवल प्र० १, २, द्वि० ६, ७, (तृ० १) में है।

६५८ इ—जो केवल प्र० १, २, (तृ० १) में है।

६५३ इ—जो केवल प्र० १, २, द्वि० ७, (तृ० १) में है।

इसलिए यह बात छंद के प्रक्षिप्त प्रमाणित होने में बाधक नहीं होती है।

(३४,३५) ४१८ ई, उ—ये छंद प्र० १,२, द्वि० १,२,३,६,७, तृ० १, ३, च० १, प० १ में नहीं हैं। इनमें पद्मावती लक्ष्मी से अपना सारा खोया हुआ धन लौटाने को कहती है, जिसे वह नवीन रत्नादि के साथ उसे लौटा देती है। यह विस्तार वर्णित कथा के विरुद्ध है, क्योंकि आगे के ही एक छंद में रत्नसेन कहता है :

राजैं पदुमावति सौं कहा। साठि नाँठि कछु गाँठि न रहा। (४२०.२)

और पद्मावती इसका समर्थन करते हुए कहती है :

अहा दरब तब कीन्ह न गाँठी। पुनि कित मिलै लच्छि जौं नाँठी। (४२१.२)

अतः यह छंद प्रक्षिप्त ज्ञात होता है।

(३६,३७) ४१६ अ, आ—दोनों छंद प्र० १, २ द्वि० ३, ७ में हैं, और द्वि० ४, ५ में इनमें से केवल दूसरा है। पहले छंद में जगन्नाथ जी के मंदिर की परिचर्या तथा प्रसाद के विस्तार हैं, और दूसरे में रत्नसेन के साथी कुँवरों का जगन्नाथपुरी में आ मिलने का वर्णन है।

पहले छंद में कहा जाता है कि एक ही दिन में करोड़ भोग लगते हैं, लाखों व्यंजन बनते हैं और इतना ही नहीं 'लाखन' के साथ 'बहुत अंपारा' विशेषण भी प्रयुक्त होता है :

लासन 'जेंवन बहुत अपारा।' (.२)

छंद में व्याकरण और भाषा संबंधी और भी विचित्रताएँ हैं। कहा गया है :

जो जन गा सो भोजन 'पावहिं'। सो जेवहिं पड़ि सीस 'चढ़ावहिं'। (.३)

'जो' 'सो' एक वचन कर्त्ता के साथ बहुवचन क्रियाएँ 'पावहिं' 'चढ़ावहिं' हैं। पुनः, कहा गया है :

और बिकाइ जो हाँडिन्ह ऊँच नीच सब लेइ।
भाँतिन केहु काहु के फोरे टूक टूक 'होइ' 'तेइ'॥

'तेइ'='ते ही' बहुवचन कर्त्ता के साथ 'होइ' एकवचन क्रिया रक्खी हुई है। और, 'जपी' 'तपी' के स्थान पर 'जप' 'तप' आया है :

पहिले भोग गोसाइँ चढ़ावहिं। तेहिं पाछें 'तप जप' सब पावहिं। (.२)

अतः यह नितांत स्पष्ट है कि उक्त छंद प्रक्षिप्त है।

दूसरे छंद में शाब्दिक पुनरुक्तियों की भरमार है : 'बेकरार' के साथ 'विकल', 'अचेत' के साथ 'चेत नहिं नेकौ', और 'पदुमावति' के साथ 'पदुमिनी' में यह पुनरुक्ति अपनी भद्दगी की पराकाष्टा को पहुँच गई है :

कुँवरन्ह जो बहि धाटन्ह लागे। बहु 'बेकरार' मुए जनु जागे।
'बिकल' 'अचेत' 'चेतनहिं नेकौं'। संग सखा नहिं देखौ एकौ।

सोइ हीरामनि रतन रवि सोइ 'पदुमावति' लाल।
सोइ कुवँर सोइ 'पदुमिनी' सोइ प्रेम प्रतिपाल।

ग्रंथ में अन्यत्र कहीं ऐसी भद्दी पुनरुक्तियाँ नहीं मिलतीं। इसलिए यह छंद भी प्रक्षिप्त ज्ञात होता है।

(३८-४०) ४४५ अ, आ, इ—इन तीन छदों में से प्रथम और तृतीय द्वि० १, २, तृ० १, २, ३, च० १, प० १ में नहीं हैं, और द्वितीय तो द्वि० ३ के अतिरिक्त किसी प्रति में नहीं है।

प्रथम छंद में नागमती और पद्मावती में जो कलह हुआ, उसको केवल शब्दों द्वारा शांत न करके भोजन-शयन आदि के द्वारा रत्नसेन ने शांत किया है। साथ ही इसमें कुछ प्रयोग भी चिंत्य हैं :

सीझी 'पाँच अमित' जेवनारा। औ भोजन छप्पन परकारा। (.३)

'पचामृत' का भोजन से कोई संबंध नहीं रहा है।

हुलसीं सरस खजहजा खाईं। भोग करत 'बिहसीं' ' रहसाईं'। (.४)

'रहसा कर' = 'आनंदित होकर' 'विहँसना' की परस्पर असगत लगते हैं।

सभा सो सबै सुभर मन कहा। सोई अस जो गुरु भल कहा। (.७)
इस पंक्ति का कोई अर्थ—कोई संगति—नहीं ज्ञात होता है। इस पंक्ति का एक पाठांतर यह भी है :

एकेक रैनि देइ रति दानू। दुहुँ क सँतोष रहस सनमानू।
पुरुषों के लिए 'रतिदान' देना भी प्रयोग-सम्मत नहीं ज्ञात होता है।

द्वितीय छंद में केवल पद्मावती और नागमती की विशेषताओं का उल्लेख करते हुए उनके संग में रत्नसेन के एक वर्ष व्यतीत करने का उल्लेख किया गया है। इस छंद की प्रायः सभी पंक्तियों में निरर्थक शब्दों की पुनरावृत्ति और भरमार है :

पदम नाग पदम अंग सुहाए। चँदन मलैगिरि अंग लगाए। (.२)
पदम पदारथ पदिक नवेलीं। कारी सैन बनी अलबेली। (.३)
गोरी साँवरि नवल सलोनी। कोकिल चातक कंठ बिलोनी। (.४)
छह रितु बारह मास गँवाने। पदम नाग कर आरस माने। (.७)
पुहुप बास रस माहँ भरि जोबन सीस सुबंध। (.६)

तृतीय छंद में पद्मावती और नागमती के एक-एक पुत्र कवँलसेन और नागसेन के उत्पन्न होने और उनकी जन्मपत्री के फलादि सुनने का उल्लेख है। इन दोनों पुत्रों का यहाँ के अतिरिक्त संपूर्ण कथा में नाम तक नहीं आया है। इसके अतिरिक्त इसमें अनेक चिंत्य प्रयोग भी हैं :

कहेन्हि बड़े दोउ राजा होहीं। ऐसे पूत होहिं सब 'तोहीं'।
'तोहीं' किसके लिए है—पद्मावती के लिए या नागमती के लिए ? या रत्नसेन के लिए, जो छंद में कहीं नहीं आता है ?

नवौ खंड के राजन्ह 'जाहीं'। औ किछु दुंद होइ दल माहीं।
'जाहीं' के क्या अर्थ हैं, और 'दल' किसका है, यह भी ज्ञात नहीं होता है।

खोलि भँडारहि दान देवावा। 'दुखी' सुखी करि 'मान बढ़ावा'।
'दुखी' एकवचन से 'दुखियों' का अर्थ नहीं लिया जा सकता, फिर दुखियों के 'मान बढ़ाने' का क्या अर्थ है ?

फलतः ये तीनों छंद भी प्रक्षिप्त ज्ञात होते हैं।

(४१) ४४७ अ—यह छंद द्वि० १, २, ४, ५, तृ० १, २, ३, च० १, पं० १ में नहीं है। राघवचेतन ने अमावस्या को द्वितीया बता कर चंद्रदर्शन करा दिया है। उसी के संबंध में इस छंद में पंडितों का कथन है कि यह

चंद्रमा केवल सात कोस तक दिखाई पड़ता है, आगे नहीं, और इसकी जाँच सरलता से की जा सकती है, यदि चारों ओर घुड़सवार भेजे जावें जो सात कोस की सीमा के बाहर जाकर देख आवें। ऐसा ही किया जाता है, और पंडितों का कथन सत्य निकलता है। इस छंद में भी अनेक विंत्य प्रयोग हैं :

पवन पाव जो तुरै पलानहु। चहुँ ओर असवार 'धवावहु'। (.३)
चहूँ ओर असवार 'धवाए'। एक निमिष महँ देखत आए। (.४)
दुइजि क चाँद छीन 'सब' चीन्हा। 'झूठा' झूठ 'फुर' फुर कीन्हा।

'धवाना' ग्रंथ भर में कहीं अन्यत्र नहीं आया है। 'सब ने' के अर्थ में 'सब' का प्रयोग शुद्ध नहीं ज्ञात होता है, अन्यत्र 'सबहिं' आया है, यथा :

सबहिं सराहा सिंघलपुरी। (२७२.७)

'झूठा' और 'फुर' भी कर्म के रूप नहीं हैं। 'फुर' का 'फुर' करना भी जायसी की भाषा-संबंधी प्रवृत्तियों के अनुरूप नहीं ज्ञात होता—उसमें कुछ भोजपुरी की प्रवृत्ति दिखाई पड़ती है।

इन कारणों से यह छंद भी प्रक्षिप्त ज्ञात होता है।

(४२,४३) ४४८ अ, आ—ये छंद द्वि० १, २, ४, ५, तृ० १, २, ३, च० १, पं० १ में नहीं हैं। इन दोनों छंदों में राघवचेतन ने रत्नसेन को एक और चमत्कार दिखाया है। वह प्रलय का दृश्य प्रस्तुत करता है, जो क्षण भर रहता है, और पुनः उसका जल तक नहीं दिखाई पड़ता है :

राघौ औंत दिस्टिबँध खेला बहुरि न देखा नीर।

राघव का यह चमत्कार दिखाना—चन्द्रदर्शन वाले चमत्कार-प्रदर्शन के अनंतर—अपने विरोधी पंडितों के कथन को स्वतः प्रमाणित करना और अपने लिए निर्वासन बुलाना था, क्योंकि पंडितों ने चंद्रदर्शन संबंधी विवाद के प्रसंग में असत्य पक्ष वाले को निर्वासन मिलने की बाज़ी ही लगाई थी :

तेहि पर भए पैज कै कहा। झूठ होइ सो देस न रहा। (४४७.७)

भाषा और प्रयोग संबंधी विचित्रताएँ इसमें भी प्रकट हैं; यथा :

'अति परलौ' आवा। (४४८ आ. २)
बूड़हिं हय 'फरकत' सिर काढ़े। (४४८ आ. २)
'गोते' खाहीं। (४४८ आ. ३)
बूड़हिं कोट बुरुज 'थहराने'। (४४८ आ. ४)
बूड़ नगर सब 'जलहर' छावा। (४४८ आ. ५)

राघौ श्रैस 'मगंल' देखरावा। (४४८ श्र. ५)
पढ़ि पंडित लिहे 'बीर'। (४४८ श्र. ६)

श्रतः ये दोनों छंद भी स्पष्ट रूप से प्रक्षिप्त ज्ञात होते हैं।

(४४) ४८४ श्र—यह छंद द्वि० १, २, ४, ५, ६, ७, तृ० १, २, ३, च० १, पं० १ में नहीं है। इसमें पद्मावती के शरीर का वर्णन है। उसकी उपमा कमल से दी गई है। शरीर के वर्ण का उल्लेख पद्मावती की समस्त रूप-चर्चा के प्रारंभ में ही है (छंद ४६८), श्रौर इन प्रतियों में भी यह स्थल निरपवाद रूप से मिलता है। फलतः इस अतिरिक्त छंद में पुनरुक्ति प्रकट है, श्रौर यह छंद प्रक्षिप्त ज्ञात होता है।

(४५) ५२८ उ—यह छंद केवल तृ० १ में नहीं है, शेष समस्त प्रतियों में है। किंतु इसमें मूल पाठ के पूर्ववर्ती छंद ५२८ की कतिपय पंक्तियों की पुनरावृत्ति मिलती है :

छहउ राग गाए भल गुनी। श्रौ गाईं छत्तिस रागिनी। (५२८.५)
छहउ राग नाची पातुरिनी। पुनि तिन्हके लीन्हेंसि रागिनी। (५२८उ.१)

रागों के गाए जाने के स्थान पर उनका नृत्य करना श्रवश्य इस छंद में विशेष है किंतु यह उसी प्रकार कदाचित् श्रशक्तापूर्ण भी है। पुनः इसमें छत्तीस रागिनियों क भी नृत्य का विस्तार किया गया है, किंतु नाम उनमें से कुछ ही के दिए गए हैं। इस सबके श्रतिरिक्त इसमें भरती के शब्दों, श्रौर व्याकरण-श्रसंमत प्रयोगों की भी भरमार है :

भा कल्यान कान्हरा 'कीन्हे'। केदारा विहागरा 'लीन्हे'।
ललित बगाला गावहिं 'सोई'। श्रासावरी भएउ 'सब कोई'।
धनासरी सुही सो 'कीन्हे'। भएउ बेलावल मारू 'लीन्हे'।
(५२८ उ. २, ३, ४)

श्रतः यह छंद भी प्रक्षिप्त ज्ञात होता है।

(४६) ५३४ श्र—यह छंद केवल द्वि० १ श्रौर तृ० २ में है, शेष प्रतियों में नहीं है। इसमें पूर्ववर्ती तथा परवर्ती छंदों की बातें दुहराई गई हैं, यथा :

जो दै गिरहिनि राखत जीऊ। सो कस श्राहि निपुंसक पीऊ। (५३४.७)
जो धरनी देकै घर राखा। पुरुष न कहिश्र निपुंसक भाखा। (५३४ श्र.३)
भलेहि साह पुहुमी-पतिभारी। माँग न कोइ पुरुष कै नारी। (४८६.३)
दान मान सुमिरत संसारा। माँग न कोइ पुरुष कै दारा। (५३४ श्र.२)

दरब लेइ तौ मानौं सेव करौं गहि पाउँ। (४६१.८)
जौं यह बचन तौ माथें मोरें। सेवा करौं ठाढ़ कर जोरें। (५३६.४)
जाँवत कहिश्र सेव सेवकाई। ताँवत करौं माँथ भुइँ लाई।
अरथ दरब औ हस्ति तोखारा। रतन पदारथ देहुँ भँडारा।
देस कोस औ राज दोहाई। जो माँगै सो देउँ सबाई।
औ कर जोरे सेवा सारौं। पै एक धरनी देइ न पारौं।
जहँ लगि लच्छि पराथति राज काज ब्योहार।
सब पाएन्ह तर वारौं जो रे अरथ भँडार॥ ५३४ अ॥

फलतः यह छंद स्पष्ट ही प्रक्षिप्त ज्ञात होता है।

(४७-४६) ६११ अ, आ, इ—ये छंद केवल तृ० २ में हैं, और किसी प्रति में नहीं हैं। इनमें पद्मावती और गोरा-बादिल के संवाद का वह अंश कुछ और खींचा गया है, जिसमें पद्मावती की ओर से साधुवाद और गोरा-बादिल की ओर से उसके सबंध में स्वामिभक्ति के कथन हैं। इनमें कुछ पंक्तियाँ अन्य छंदों से प्रायः ज्यों की त्यों ले ली गई हैं :

हौं सेवक तुम्ह आदि गोसाईं। सेवा करौं जिश्रौं जब ताईं। (२७०.५)
हम सेवक तुम्ह दोइ गोसाईं। अस्तुति कौन करौं कहँ ताईं। (६११अ.१)
सत्त जहाँ साहस सिधि पावा। औ सतवादी पुरुष कहावा। (६२.४)
साहस सिउँ लच्छन सिधि होई। साहस करत न बहुरै कोई।
साहस करत अहो मोहि ताईं। सिधि अब तुमही देउ गोसाईं।
साहस जहाँ सिद्धि तहँ लच्छन देखहु बूझि। ६११ इ।
तुम्ह चिरजिवहु जौ लहि महि गगन औ जौ लहि हम आउ। (३७६.८)
तुम्ह जिश्र जौ लहि सेस औ धुवहु अचल अडोल। (६११ अ. ८)

और निम्नलिखित पंक्ति जो समस्त प्रतियों मे—और इन अतिरिक्त छंदों की प्रतियों में भी—६०७.७ है, ज्यों की त्यों इस अतिरिक्त छंद-समूह में आई है :

उलटि बहा गंगा कर पानी। सेवक बार आइ जो रानी।

प्रयोगों की दृष्टि से भी नीचे की पंक्तियों के चिह्नित पद चिंत्य हैं, पूरे ग्रंथ में ये अन्यत्र नहीं मिलते :

तुम्ह परसाद बिधि कीन्ह 'परारा'।
माथें छत्र सोहाग का बिहँसि चेरि 'कल्लोल'।
सेवा लागि जीव पर 'खेवा'।
यह जिउ नेवछावरि 'पहिं रानी'।

जुग जुग जगत 'राज राजधानी' ।
जुग जुग नाथ आप तुम्ह राज साज सुख 'भेव' ।
विधि 'प्रसाद' आवे पर सोई ।

अतः इन छंदों का भी प्रक्षिप्त होना प्रकट है।

(५०) ६२६ अ—यह छंद द्वि० १, २, ४, ५, ६, तृ० १, २, ३, च० १, पं० १ में नहीं है। इसमें रत्नसेन का पीछा करती हुई अलाउद्दीन की सेना को रोकने के विषय में गोरा के वीरतापूर्ण वाक्यों का विस्तार किया गया है। इसमें पूर्ववर्ती छंद के दोहे की प्रतिच्छाया दिखाई पड़ती है :

होइ नलनील आजु हौं देहुँ समुद्र महँ मेड़ ।
कटक साहि कर टेकौं होइ सुमेर रन मेंड़ ॥ ६२६ ॥

आजु सुमेर होइ रन कोपौं । आजु समुँद अगस्ति होइ रोपौं । (६२६अ.७)

इस अतिरिक्त छंद में भी ऐसे प्रयोगों की भरमार है जो ग्रंथ में अन्यत्र नहीं मिलते :

बंदि हौं ताहि 'छड़ैहै' ठाऊँ । (.१)
आजु 'दुसहस' बाहु बल बाढ़ा । (.२)
आजु हनुवँत होइ 'मारौं हाँका'। (.३)
रसना 'सेर' सहज जनु ताका । (.३)
मारि साहि कौ घालौं 'कीसा' । (.४)
जीतौं साहि अलावदि 'कीता' । (.५)
भारत माहँ 'करौं सिव माला' । (.६)
आनि बिआहौं दल दलौं सीस सामि के 'काम' । (.६)

फलतः यह छंद भी प्रक्षिप्त ज्ञात होता है।

(५१) ६३७ अ १—यह छंद द्वि० १,२,३,४,५,६,७, तृ० २,३, च० १, पं० १ में नहीं है, और तृ० १ में भी बाद को जोड़े गए अंश में है। इसमें गोरा के रणक्षेत्र में मारे जाने के बाद उसके भाँट दलपति और सरजा के खवास अख्तियार के परस्पर वीरता-पूर्वक लड़-मरने का वर्णन है। इसमें भी अनेक प्रयोग ऐसे हैं जो ग्रंथ में अन्यत्र नहीं आते हैं, यथा :

तुरुक कहै गोरा सिर काटा । मारौं ताहि 'सीस लहु फाटा' । (.४)
जेहि क सामि सरजा अस जूझै । तेहि कहँ जिअन कौन बिधि 'जूझै' । (.६)
अखतियार सरजा क खवासू । एकै तेग 'गनै रन वासू' । (.७)

'दवदवाइ' दलपति कहँ दौरे 'लटपटाइं' रहे खेत ।
सामि काज जूझे दोउ 'कै ग्रता मुख सेत' ॥ ६३७ अ१ ॥

अतः यह छंद भी प्रक्षिप्त ज्ञात होता है ।

(५२) ६४७ अ१—यह छंद केवल द्वि० १ तथा (तृ० १) में पाया जाता है, शेष किसी प्रति में नहीं है। यह अतिरिक्त छंद रत्नसेन की मृत्यु पर उसकी महानता द्योतन के लिए रक्खा गया है। इसमें भी अनेक प्रयोग ऐसे हैं जो ग्रंथ में अन्यत्र नहीं पाए जाते हैं, यथा :

आजु सीस कै 'टरि गइ रती' । (.१)
आजु चतुर्भुज 'चकता करीं' । आजु चलाए 'सदना सरीं' । (.४)
आजु सुमेर डोल 'भा हाला' । आजु 'तयार होइ' धौं काला । (.५)
आजु पतन 'औ होइहि कटा' । (.७)
आजु महा परलौ भा आजु जगत जनु 'मेंट' । (.८)

इसलिए यह छंद भी प्रक्षिप्त ज्ञात होता है ।

विभिन्न प्रतियों में प्राप्त प्रक्षिप्त छंदों की तालिका नीचे दी जाती है ।

प० १—१५६ अ, १८० अ, ५२८ उ

च० १—६० अ, १८० अ, ३२५ अ, ५२८ उ

तृ० १—६० अ, १५६ अ, १८० अ, २६२ अ, २६३ अ १, २६८ इ, ई, उ, ३६१ अ, ४१८ अ

तृ० २—६० अ, ६१ अ, आ, ८६ अ, ६० अ, १५६ अ, ३६१ अ, ३८५ अ, ४१८ अ, अ १, आ, इ, ई, उ, ५२८ उ, ५३४ अ, ५५४ अ, ६११ अ, आ, इ, ६२६ अ१, आ१, ६३७ अ, आ, इ

तृ० ३—६० अ, १५६ अ, १६८ अ, १८५ अ, २३१ अ, २६२ अ, २६८ अ, इ, ई, उ, २७४ अ, २८४ अ, आ, इ, २८८ अ, आ, ३१५ अ, आ, इ, ३१८ अ, आ, ३६१ अ, ४१८ अ, ५२८ उ

द्वि० १—२२ अ, १५६ अ, १८० अ, १८५ अ१, २६४ अ१, आ, इ, ई, उ, ३६१ अ, ४१८ अ, ५२८ अ, आ, इ, ई, उ, ऊ, ए, ५२६ अ, आ, इ, ५३४ अ, ६४७ अ१

द्वि० २—१५६ अ, १८० अ, २६२ अ, आ, २६४ आ, अ २, २६८ अ, इ, ई, उ, अ१, २७४ अ, आ, २८४ अ, आ, इ, २८७ अ, २८८ आ, ३१५ अ, आ, इ, ३८३ आ, इ, ई, ४१८ अ, ५२८ उ

द्वि० ३—६० अ, १५६ अ, १५८ अ, १६३ अ, १८० अ, २३१ अ, २६२ अ, आ, इ, २६४ अ, आ, २६८ अ, इ, ई, उ, २७४ अ, २८८ अ, आ, २८६ अ१, ३३२ अ, ३६१ अ, ३८५ अ, ४१८ अ, ४१६ अ, आ, ४४५ अ, आ, इ, ४४७ अ, ४४८ अ, आ, ४४६ अ१, ४७४ अ, ४८४ अ, ४६६ अ, ५२८ उ, ५७४ अ, ६२६ अ, ६३७ अ १

द्वि० ४—१२५ अ, १३३ अ, १४८ अ, आ, १५६ अ, १८० अ, १८५ अ, २६२ अ, आ, इ, २६८ अ, आ, इ, ई, उ, २७४ अ, २८४ अ, आ, इ, २६३ अ, ३१५ अ, आ, इ, ३१६ अ, ३३२ अ, ३६१ अ, ३८३ अ, आ, इ, ई, ४१८ अ, ई, उ, ४१६ आ, ४२६ अ, ४४५ अ, इ, ४६८ अ, ५२८ उ, ५७४ अ, ५८३ अ, आ, इ, ५६३ अ१, ६०३ अ, ६११ अ१

द्वि० ५—१२५ अ, १३३ अ, १४८ अ, आ, १५६ अ, १६३ अ, १८० अ, १८५ अ, २३१ अ, २३८ अ, आ, २६२ अ, आ, इ, २६८ अ, आ, इ, ई, उ, २७४ अ, २८४ अ, आ, इ, ३१५ अ, आ, इ, ३१६ अ, ३३२ अ, ३६१ अ, ३८३ अ, आ, इ, ई, ४१८ अ, ई, उ, ४१६ आ, ४२६ अ, ४४५ अ, इ, ४६८ अ, ५२८ उ, ५७४ अ, ५८३ अ, आ, इ, ५६३ अ१, ६०३ अ, ६११ अ१

द्वि० ६—१५६ अ, १८० अ, १८५ अ, २३१ अ, २६२ अ, २६८ अ, आ, इ, ई, उ, २७४ अ, २८४ अ, आ, इ, २८८ अ, आ, २६३ अ, ३१५ अ, आ, इ, ३१६ अ, ३६१ अ, ३८३ आ, इ, ई, ४२६ अ, ४४५ अ, इ, ४४७ अ, ४४८ अ, आ, ४६१ अ, ४६८ अ, ४६६ अ, ५०० अ, ५२८ उ, ५७४ अ, ५८३ अ, आ, इ, ६०३ अ, ६११ अ१, ६२६ अ, आ, इ ई, उ, ऊ, ६२६ अ, ६४० अ, आ, इ, ६४१ अ, ६४४ अ, आ, इ, ई, उ, ऊ, ए, अ, अः, ६४५ अ, आ, ६४६ अ, ६४८ अ

द्वि० ७—११८ अ, १६३ अ, १८० अ, १८५ अ, २७३ अ, आ, २७४ अ, ३३२ अ, ३६१ अ, ३८३ आ, इ, ई, ४१८ अ, ४१६ अ, आ, ४२६ अ, ४४५ अ, इ, ४४७ अ, ४४८ अ, आ, ४६१ अ, ४६८ अ, ४६६ अ, ५०० अ, ५२८ उ, ५७४ अ, ५७६ अ१, ५८३ अ, आ, इ, ६०३ अ, ६११ अ१, ६२६ अ, आ, इ, ई, उ, ऊ, ६२६ अ,

६४० अ, आ, इ, ६४१ अ, ६४४ अ, आ, इ, ई, उ, ऊ, ए, ऐ, ओ, औ, अं, अः, ६४५ अ, आ, ६४८ अ, ६४६ अ, ६५० अ, ६५१ अ, आ, इ, ई, उ, ऊ, ए, ऐ, ओ औ, अं

प्र० १—६० अ१, ६० अ२, ६४ अ, आ, ११८ अ, १३३ अ, १५६ अ, १६३ अ, १८० अ, १८५ अ, २३८ अ, आ, २६२ अ, २८४ अ, आ, इ, २८६ अ, ३३२ अ, ३६१ अ, ३८३ आ, इ, ई, ३८८ अ, आ, इ, ई, उ, ऊ, ४०२ अ, ४१८ अ, ४१६ अ, आ, ४२५ अ, आ, ४२६ अ, आ, ४४५ अ, इ, ४४६ अ, आ, इ, ई, ४४७ अ, ४४८ अ, आ, ४४६ अ, आ, इ, ई, उ, ४६१ अ, ४८४ अ, ४६४ अ, आ, ४६६ अ, ५०० अ, ५०२ अ, ५०३ अ, आ, इ, ई, ५२८ उ, ५३३ अ, आ, ५३७ अ, आ, इ, ई, ५५१ अ, ५७४ अ, ५७६ अ, आ, इ, ई, उ, ५८३ अ, आ, ई, ५६३ अ, आ, इ, ई, उ, ऊ, ए, ऐ, ६०० अ, आ, इ, ई, उ, ऊ, ए, ऐ, ६०३ अ, ६०८ अ, आ, इ, ६११ अ१, ६१६ अ, ६२१ अ, ६२६ अ, आ, इ, ई, उ, ऊ, ६२६ अ, ६३७ अ१, ६४० अ, आ, इ, ६४१ अ, ६४४ अ, आ, इ, ई, उ, ऊ, ए, ऐ, ओ, औ, अं, अः, ६४५ अ, आ, ६४६ अ, ६४७ आ, इ, ६४८ अ, ६५० अ, ६५१ अ, आ, इ, ई, उ, ऊ, ए, ऐ, ओ, औ, अं, ६५१ अ १, ६५२ अ, आ, इ, ई, उ, ऊ

प्र० २—६० अ१, अ२, ६४ अ, आ, ११८ अ, १६३ अ, १८० अ, १८५ अ, ३३२ अ, ३६१ अ, ३८३ आ, इ, ई, ३८८ अ, आ, इ, ई, उ, ऊ, ४०२ अ, ४०४ अ, ४१८ अ, ४१६ अ, आ, ४२५ अ, आ, ४२६ अ, आ, ४४५ अ, इ, ४४६ अ, आ, इ, ई, ४४७ अ, ४४८ अ, आ, ४४६ अ, आ, इ, ई, उ, ४६१ अ, ४६६ अ, ४८४ अ, ४६४ अ, आ, ४६६ अ, ५०० अ, ५०२ अ, ५०३ अ, आ, इ, ई, ५२८ उ, ५३३ अ, आ, ५३७ अ, आ, इ, ई, ५५१ अ, ५७४ अ, ५७६ अ, आ, इ, ई, उ, ५८३ अ, आ, इ, ५६३ अ, आ, इ, ई, उ, ऊ, ए, ऐ, ६०० अ, आ, इ, ई, उ, ऊ, ए, ऐ, ६०३ अ, ६०८ अ, आ, इ, ६११ अ१, ६१६ अ, ६२१ अ, ६२६ अ, आ, इ, ई, उ, ऊ, ६२६ अ, आ, ६३७ अ१, ६४० अ, आ, इ, ६४१ अ, ६४४ अ, आ, इ, ई, उ, ऊ, ए, ऐ, ओ, औ, अं, अः, ६४५ अ, आ ६४६ अ, ६४७ अ, आ, इ,

६४८ अ, ६५० अ, ६५१ अ, अ, इ, ई, उ, ऊ, ए, ऐ, ओ, औ, अं, ६५१ अ१, ६५२ अ, आ, इ, ई, उ, ऊ

(तृ० १)—१३३ अ, ५८३ अ, आ, ई, ६२६ अ, आ, इ, ई, उ, ऊ, ६३७ अ१, ६४० अ, आ, इ, ६४१ अ, ६४७ अ१, ६४८ अ, ६५० अ, ६५१ अ, आ, इ, ई, उ, ऊ, ए, ऐ, ओ, औ, अ, ६५१ अ१, ६५२ अ, आ, इ, ई, उ, ऊ (यह ध्यान देने योग्य है कि ६४७ अ १ के अतिरिक्त ये सभी प्रक्षिप्त छंद प्र० १ में, और उसके तथा १३३ अ के अतिरिक्त सभी प्रक्षिप्त छंद प्र० २ में मिल जाते हैं।)

यदि सम्यक् रूप से व्यक्त करना चाहें, तो 'पदमावत' की उपर्युक्त विभिन्न प्रतियों के प्रक्षेप सम्बन्ध को हम अन्यत्र प्रदर्शित चित्र द्वारा व्यक्त कर सकते हैं। यह देखने की आवश्यकता है कि विभिन्न प्रतियों का यह प्रक्षेप-सम्बन्ध कितना उलझा है। इतना उलझा हुआ प्रक्षेप सम्बन्ध बहुत कम ग्रंथों का मिलेगा। इस उलझन का कारण यह है कि 'पदमावत' की प्रतियों में आदान-प्रदान मुख्यतः प्रक्षेप के क्षेत्र में बहुत पहिले से और बहुत अधिक होता आया है।

सुगमता के लिए किंचित् स्थूल रूप से उपर्युक्त प्रक्षेप-सबंध को हम इस प्रकार भी प्रस्तुत कर सकते हैं:
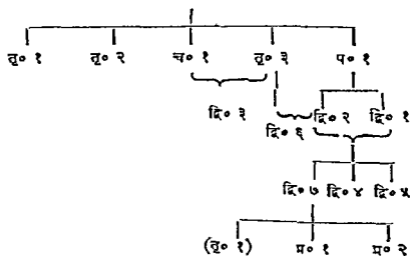
और इस चित्र के अनुसार विभिन्न प्रतियों को हम निम्नलिखित पीढ़ियों में बाँट सकते हैं:

(१) पं० १, च० १, तृ० १, तृ० २, तृ० ३
(२) द्वि० १, २, ३
(३) द्वि० ६, ७, ४, ५
(४) प्र० १, २

प्रथम पीढ़ी की प्रतियाँ प्रायः स्वतंत्र प्रक्षेप-परम्परा में हैं। दूसरी पीढ़ी की प्रतियाँ अमिश्रित अथवा मिश्रित किंतु प्रथम पीढ़ी की प्रतियों की प्रक्षेप-परम्परा में है। तीसरी पीढ़ी की प्रतियाँ दूसरी पीढ़ी की प्रतियों की अमिश्रित अथवा मिश्रित प्रक्षेप-परम्परा में हैं। चौथी पीढ़ी की प्रतियाँ, इसी प्रकार, तीसरी पीढ़ी की प्रतियों की प्रक्षेप-परम्परा में हैं।

कहने की आवश्यकता नहीं कि सब से अधिक महत्त्व की प्रतियाँ यहाँ भी प्रथम पीढ़ी की हैं; वे प्रायः स्वतंत्र हैं, और मूल के निकटतम हैं। उनके अनंतर महत्त्व की प्रतियाँ दूसरी पीढ़ी की हैं। तीसरी पीढ़ी की प्रतियाँ अपेक्षाकृत बहुत कम महत्त्व की हैं, और इसी प्रकार चतुर्थ पीढ़ी की प्रतियाँ प्रायः महत्त्वहीन हैं।

यह ध्यान दिलाना आवश्यक होगा कि प्रक्षेप-संबंध पाठ-निर्धारण में उतना निर्णयात्मक नहीं होता जितना प्रतिलिपि संबंध हुआ करता है, इसीलिए संपादन-शास्त्र में प्रतिलिपि-संबंध को 'मुख्य संबंध' और प्रक्षेप-संबंध को 'गौण संबंध' कहा गया है। किन्हीं दो प्रतियों का प्रक्षेप-संबंध सिद्ध केवल इतना करता है कि प्रक्षेप के आदान-प्रदान के संबंध में दोनों परस्पर आबद्ध हैं, यद्यपि वह इस बात की संभावना अवश्य सामने रखता है कि उनमें ग्रंथ के सामान्य पाठ के संबंध में भी आदान-प्रदान हुआ होगा।

ऊपर प्रतिलिपि-संबंध के अनुसार जो पीढ़ियाँ हमने निर्धारित की हैं, उनसे तुलना करने पर ज्ञात होगा कि यहाँ प्रक्षेप-संबंध के अनुसार जो पीढ़ियाँ हमने निर्धारित की हैं, वे बहुत कम भिन्न हैं। मुख्य भेद यही है कि प्रक्षेप-परम्परा की तीसरी पीढ़ी की द्वि० ६ प्रतिलिपि परम्परा की चौथी पीढ़ी में है। ऐसे भेद की अवस्था में सामान्यतः नीचे वाली पीढ़ी ही अधिक मान्य होनी चाहिए।

६. प्रतियों का पाठांतर-संबंध

विभिन्न प्रतियों में ऐसे भी पाठांतर मिलते हैं, जिनकी प्रामाणिक होने की असंभावना उतनी स्वतःसिद्ध नहीं है जितनी प्रतिलिपि-संबंध स्थापित करने वाले पाठांतरों की हमने ऊपर देखी है। ऐसी दशा में उनके

आधार पर प्रतियों का पाठ-संबंध तभी माना जा सकता है जब अशुद्धि-वाक्य के ये स्थल बहुतायत से हों, और अशुद्धियाँ यदि सर्वथा कवि द्वारा असंभव नहीं तो कम संभव अवश्य मानी जा सकें। नीचे इसी प्रकार के पाठांतरों का विवेचन किया जा रहा है।

(१) १३.७ निर्धारित पाठ है: 'औ अति गरू पुहुमिपति भारी। टेकि पुहुमि सब सिहिटि सँभारी।' प्र० १, द्वि० ७, तृ० २ में इसके स्थान पर है: 'ओही सकइ पुहुमिपति भारी। पुहुमिभार सब लीन्ह सँभारी।' इस पाठांतर का प्रथम चरण अर्थहीन ज्ञात होता है।

(२) ३१.७ निर्धारित पाठ है: 'कनक पंति पैरहिं अति लोने। जानहुँ चित्र सँवारे सोने।' द्वि० ५, च० १ में इसके स्थान पर है: 'खनि पतार पानी तेहिं काढ़ा। खीर समुँद निकसा हुत बाढ़ा।' इस छंद में सिंघल के सरोवर—मानसरोवर का वर्णन किया गया है। उसके जल के विषय में छंद की प्रथम तथा द्वितीय पंक्तियों में इस प्रकार कहा गया है:

मानसरोदक देखिअ काहा। भरा समुँद अस अति औगाहा।
पानि मोति अस निरमर तासू। अंब्रित बानि कपूर सुबासू।

बाद की पंक्तियों में उक्त सरोवर के घाटों, उनकी सीढ़ियों, सरोवर में खिले हुए कमलों, सरोवर में होने वाले मोतियों, और उनको चुगने वाले हंसों का वर्णन है। इन सब वर्णन के अनंतर पुनः सरोवर के जल के वर्णन के लिए लौटना, और प्रायः उन्हीं शब्दों में जिन शब्दों में छंद के प्रारम्भ में उसका वर्णन किया गया है कवि-सम्मत नहीं ज्ञात होता है; उससे कहीं अधिक कवि-सम्मत हंसों के वर्णन के अनंतर अन्य सरोवर के पक्षियों का वर्णन ज्ञात होता है।

(३) ६१.५ निर्धारित पाठ है: 'सँवरिहि साँवरि गोरिहि गोरी। आपनि आपनि लीन्हि सो जोरी।' प्र० १, २, तृ० १ में इस पंक्ति के दूसरे चरण के स्थान पर है: 'जो जेहि जोग सो तेहि कर जोरी।' पुलिङ्ग संबंधवाचक चिह्न 'कर'='का' स्त्रीलिंग संज्ञा 'जोरि'='जोड़ी' के साथ नहीं लग सकता। इसके अतिरिक्त पाठांतर को स्वीकार करने पर वाक्य में क्रिया का सर्वथा अभाव हो जाता है। और='कर' का अर्थ यदि 'हाथ' लिया जावे, तो 'कर जोरी'='हाथ जोड़कर' प्रसंग में अर्थहीन होता है।

(४) ६४.५ निर्धारित पाठ है: 'नैन सीप आँसुन्ह तस भरे। जानहुँ मोति गिरहिं सब ढरे।' दूसरे चरण का पाठ द्वि० २, तृ० २ में है: 'सीपि फूटि जिमि मोती झरे।' 'नैन सीप' में आँसू 'तस'='इस प्रकार' 'भरे'=

'आए' के 'तस' का उत्तर निर्धारित पाठ में ही मिलता है, द्वि० २, तृ० २ के पाठ में नहीं। और, इसके अतिरिक्त 'सीप के फूटने' में आँखों के फूटने की भी व्यंजना हो सकती है, जो कवि-अभीष्ट नहीं हो सकती।

(५) १४३.५ निर्धारित पाठ है : 'अब एहि समुँद परौं होइ मरा। पेम मोर पानी कै करा।' द्वि० ४, ६ में दूसरे चरण का पाठ हैं 'मुए केर पानी का करा।' किंतु पाठांतर में 'करा' 'किया' के अर्थ में आया है, जो व्याकरण के अनुसार अशुद्ध है, और कवि के प्रयोगों के भी विरुद्ध है। 'करा' शब्द ग्रंथ के बहु-प्रयुक्त शब्दों में से है, किंतु सर्वत्र 'कला' के लिए वह प्रयुक्त हुआ है, 'किया' के लिए नहीं।

(६) १७४.२ निर्धारित पाठ है : 'नींद भूख अह निसि गे दोऊ। हिए मॉंझ जस कलपै कोऊ।' द्वि० १, ५, तृ० २, ३ में द्वितीय चरण का पाठ है : 'सेज केवॉंछ लाव जनु सोऊ।' नींद के लिए तो प्रथम चरण में कहा ही जा चुका है, वह 'सोऊ' कौन है जो सेज में 'केवॉंछ' लगाता है, यह स्पष्ट नहीं है।

(७) २२१.६ निर्धारित पाठ है : 'गढ़ कै गरब खेह मिलि गए। मंदिल उठहिं दहहिं भै नए।' द्वि० ४, ५, ६, तृ० ३ में इसके स्थान पर हैं : 'जो गढ़ए गढ़ जॉंवत भए। जो गढ़ गरब करहिं ते गए।' दोनों पाठों के द्वितीय चरण प्रायः समान हैं, किंतु पाठांतर के प्रथम चरण का पाठ भी द्वितीय चरण से ही लिया गया प्रतीत होता है, और वाक्य-विन्यास की दृष्टि से पाठांतर का पाठ अपूर्ण और निरर्थक है।

(८) २६४-१-२ निर्धारित पाठ है : 'जोगी न होहि आहि सो भोजू। जानै भेद करै सो खोजू। भारथ होइ जूझ जौं ओधा। होहिं सहाय आइ सब जोधा।' द्वि० ३, ६, तृ० १, ३ में पाठ है: 'भॉंट मेल ईसुर जस भाषा। हनुवॅंत बीर रहै नहिं राखा। लीन्हि चूरि ओइ ततखन सूरी। धरि मुख मेलेसि जानहुँ मूरी।' 'लीन्हि' और 'मेलेसि' क्रियाओं के रूपों में वैषम्य प्रकट है। 'मेलेसि' के साथ सुगमता से 'लीन्हेसि' अथवा 'लीन्हि' के साथ उसी प्रकार 'मेली' पाठ रक्खा जा सकता था। इसके अतिरिक्त जब शूली को हनुमान जी ने इस प्रकार मुँह में रख लिया, तब तो गंधर्वसेन को समक्ष आ जानी चाहिए थी। किंतु प्रकरण में कथा इसके बिलकुल विपरीत है।

(९) २६४.८-९ निर्धारित पाठ है : 'बोला भॉंट नरेस सुनु गरब न छाजा जीवँ। कुंभकरन की खोपरी बूड़त बॉंचा भीवँ।' इसके स्थान पर द्वि० ६,

तृ० ३ में हैं: 'ताको को सरवरि करै अरे अरे झूठे भाँट। छार होहि जो चालौं गज हस्तिन्ह के ठाट।' विवेचनीय पंक्तियों के पूर्व गंधर्वसेन की गर्वोक्तियों की पंक्तियाँ हैं, जिनमें से अंतिम है : 'वहीं तो सब भाँगी धरि केसा। और को कीट पतंग नरेसा।' आगे के छंद में भाँट द्वारा दिया हुआ इस गर्वोक्ति का उत्तर है, और उसकी पहली पंक्ति है : 'रावन गरब बिरोधा रामू। ओ ओहि गरब भएउ संग्रामू।' इन दोनों पंक्तियों के बीच कहीं न कहीं यह आना चाहिए कि गंधर्वसेन की बातों के उत्तर में भाँट ने कहा। निर्धारित पाठ में यह आता है, और पाठांतर में नहीं आता। इसके अतिरिक्त पाठांतर के पाठ में भरती के शब्द आए, हैं और शब्दोंकी पुनरावृत्ति भी है: 'अरे अरे' और 'गज हस्तिन्ह' उनके ज्वलंत उदाहरण हैं।

(१०) २६५.१ निर्धारित पाठ है: 'भै अग्याँ को भाँट अभाऊ। बाएँ हाथ देइ बरम्हाऊ।' इसके स्थान पर द्वि० ३,६, तृ० ३ में है 'अनरथ होइ रे भाँट भिखारी। का तूँ मोहि देसि असि गारी।' इसके पूर्व भाँट का कथन आया है। उसे सुन कर राजा ने यह कहना आरम्भ किया है, इस प्रकार का उल्लेख प्रसंग में आवश्यक है। निर्धारित पाठ के 'भै अग्याँ' द्वारा यही उल्लेख हुआ है, और पाठांतर में इस प्रकार की कोई शब्दावली नहीं है। इसके अतिरिक्त पाठांतर में राजा से जो यह कहलाया गया है कि भाँट ने उसे गाली दी है, वह भी किसी अर्थ में ठीक नहीं माना जा सकता।

(११) २६५.२ निर्धारित पाठ है: 'को जोगी अस नगरी मोरी। जो दे सेंधि चढ़ै गढ़ चोरी।' इसके स्थान पर द्वि० ६, तृ० ३ में है 'को मोहि जोग होइ जग पारा। जाखौं हेरौं होइ जार छारा।' 'होइ जग पारा' में एक प्रकार से दूरान्वय दोष तो है ही, गंधर्वसेन के 'जोग'='योग्य' होने का कोई अर्थ नहीं ज्ञात होता है, और न अपने योग्य होने के विरुद्ध किसी पर उसे ऐसा रुष्ट ही होना चाहिए कि उसे वह देख कर भस्म कर दे।

(१२) २६७.१ निर्धारित पाठ है: 'और जो भाँट उहाँ हुत आगें। बिनै उठा राजहि रिसि लागें।' इसके स्थान पर प्र० १, द्वि० ७ का पाठ है : 'सुनि कै भाँट भाँट जत जाती। राजा कहँ उठि कीन्हि बिनाती।' भाँटों की जाति मात्र का उठ कर राजा से बिनती करना असंभव और असंगत लगता है, क्योंकि भाँटों की पंचायत वहाँ कोई हो नहीं रही थी। और बिनती भी किसी 'कहँ'='को' नहीं की जाती है, 'सों'='से' की जाती है।

(१३) २६८.१ निर्धारित पाठ है : 'जौ सत पूँछहु गँधरब राजा। सत पै कहौं परै किन गाजा।' प्र० १, द्वि० ७ में इसके स्थान पर है : 'जौ

राजा तुम्ह पूँछहु श्रंतू। सत्ते कहौं जोहि परजंतू।' 'श्रंतू' की संगति कदाचित् किसी प्रकार लग भी जावे, पाठांतर के 'परजंतू'(पर्यंत)='तक' की संगति किसी प्रकार नहीं लग सकती है

(१४) २७६.३ निर्धारित पाठ है : 'जेहि लगि तुम्ह साधा तप जोगू। लेहु राज मानहु सुख भोगू।' इसके स्थान पर प्र० १, द्वि० ७ का पाठ है : 'लीजै (कीजै-द्वि० ७) राज साज तुम्ह जोगू। श्रब सो सँवरि उतारहु (चढ़ावहु-द्वि० ७) जोगू।' पाठांतर के दोनों चरणों में तुक 'जोगू' 'जोगू' का है, जिससे एक भद्दी पुनरुक्ति श्राती है। उसके 'लीजै' (या कीजै') के रूप भी चिंत्य हैं; पूरे छंद में विधि की क्रियाएँ 'हु' श्रंत हैं : 'करहु', 'उतारहु', 'धारहु', 'काढ़हु', 'पहिरहु', 'छोरहु', 'झारहु', 'लेहु', 'देहु', 'तजहु', 'बाँधहु', 'तानहु', श्रौर 'होहु'; उनके साथ 'लीजै' या 'कीजै' रूप ग्राह्य नहीं है। पुनः 'सँवरि'='स्मरण करके' का कोई प्रसंग नही है, एवं जोग का 'उतारना' भी श्रसंगत लगता है, श्रौर उससे भी श्रधिक जोग का 'चढ़ाना'।

(१५) ३३९.१, ३४०.१ निर्धारित पाठ है : 'श्राइ सिसिर रितु तहाँ न सीऊ। श्रगहन पूस जहाँ पर पीऊ।' श्रौर 'रितु हेवंत संग पीउ न पाला। माघ फागुन सुख सीउ सियाला।' प्र० १, २, द्वि० ७ में प्रथम स्थल पर 'सिसिर' के स्थान पर 'हेम' तथा द्वितीय स्थल पर 'हेवंत' के स्थान पर 'सिसिर' है। किंतु श्रगहन-पूस के महीने 'हेमंत' श्रौर माघ फागुन के महीने 'शिशिर' के माने गए हैं। प्रश्न यह है कि यहाँ पर कौन सा पाठ मान्य होगा। यदि प्र० १, २, द्वि० ७ के पाठ को प्रामाणिक माना जावे, तो परिणाम में यह मानना पड़ेगा कि शेष समस्त प्रतियाँ निश्चित रूप से एक ही प्रतिलिपि-परम्परा में है, जिसमें प्रारम्भ में ही पाठ-विकृति हुई है, श्रौर प्र० १, २, द्वि० ७ उससे भिन्न प्रतिलिपि-परम्परा में है, जिसमें पाठ-विकृति नहीं हुई है, श्रथवा प्र० १, २, द्वि० ७ शेष समस्त प्रतियों से पाठ-परम्परा में पूर्व श्राती हैं। किंतु श्रन्यत्र हम सर्वत्र देखते हैं कि जो पाठ केवल प्र० १, २, द्वि० ७ में मिलता है, श्रन्यत्र नहीं मिलता, वह श्रप्रामाणिक ठहरता है, श्रौर प्रतिलिपि-परम्परा तथा प्रक्षेप-परम्परा—दोनों में ये प्रतियाँ सब से नीचे की पीढ़ी में श्राती हैं। ऐसी दशा में इन दोनों स्थलों पर भी प्र० १, २, द्वि० ७ के पाठ को श्रप्रामाणिक श्रौर श्रन्य समस्त प्रतियों में समान रूप में मिलने वाले पाठ को प्रामाणिक मानना होगा। कवि से भूलें होना भी असंभव नहीं माना जा सकता।

(१६) ३६६.८-६ निर्धारित पाठ है : 'काया जीउ मिलाइ कै कीन्हेसि

अनँद उछाहूँ। लवटि बिछोउ दीन्ह तस कोउ न जानै काहूँ।' दोहे के तीसरे चरण का पाठ प्र० १, २, द्वि० ७ में है 'बिछुरे आपु आपु कहँ पल महँ (आपु आपु कहँ—प्र० २, आपु आपु कहँ दोऊ—द्वि० ७)।' यह शब्दावली छंद की छठी पंक्ति के दूसरे चरण में इस प्रकार आई हुई है: 'पल महँ आपु आपु कहँ भए।' इसलिए पाठांतर में पुनरुक्ति है। दोहे के प्रथम दो चरणों में जो कुछ कहा गया है, उसके ध्यान से निर्धारित पाठ पाठांतर की अपेक्षा अधिक संगत भी लगता है।

(१७) ३६६.८-६ उपर्युक्त दोहे का पाठांतर द्वि० २,४,५,६ तथा पं०१ में है 'काया जीउ मिलाइ के मारि करै दुइ खंड। तन रोवत धरती परा जीउ चला ब्रह्मंड।' मारने-मरने अथवा जीव के ब्रह्मांड जाने का यहाँ कोई प्रसंग नहीं है।

द्वि० ७ में इस पाठांतर के शेष चरण ज्यों के त्यों ले लिए गए हैं, केवल चौथा चरण इस प्रकार है: 'एक पलक एक दंड'। शेष चरणों के पाठांतर के सम्बन्ध में ऊपर विचार हो चुका है। चौथे चरण का इस प्रति का पाठांतर और भी असंगत ज्ञात होता है।

(१८) ४२४.१ निर्धारित पाठ है: 'अब लगि सखी पवन हा ताता। आजु लाग मोहिं सीतल बाता।' द्वि० ४, ५ में प्रथम चरण के 'हा ताता'='तप्त था' के स्थान पर पाठ है 'आ हाता', जो स्पष्ट ही निरर्थक ज्ञात होता है।

(१६) ४३७.८-६ निर्धारित पाठ है: 'सुरुज किरिन तोहि रावै सरवर लहरि न पूज। करम बिहून ये दूनौं कोउ रे धोबि कोउ भूँज॥' द्वि० ४,५ में दूसरी पंक्ति का पाठ है: 'भँवर इहाँ तोहि पावै धूप देह तोरि भूँज।' प्रथम पंक्ति में जो 'सुरुज किरिन तोहि रावै' कहा गया है, 'धूप देह तोरि भूँज' में उसका ठीक विपरीत कथन है, इसलिए पाठांतर की असंगति प्रकट है।

(२०) ४४३.५ निर्धारित पाठ है: 'विद्रुम अधर रंग रस राते। जूड़ अमी अस रवि परभाते।' द्वि० ७, पं० २ में द्वितीय चरण का पाठ है: 'जो दामिनी अमर बिनु ताके।' और द्वि० १ में है 'चूव अमी रस और हो ताते।' दोनो ही पाठांतर अंशतः उर्दू लिपि की त्रुटियों से उत्पन्न तो हैं ही, वे असंगत भी लगते हैं।

(२१) ४४७.७ निर्धारित पाठ है: 'राघौ करत जाखिनी पूजा। चहत सो रूप देखावत दूजा। तेहि घर भए पैज कै कहा। झूठ होइ सो देस न

रहा।' दूसरी पंक्ति का पाठ प्र० १, २, द्वि० ३, ४, ५, ६, पं० १ में है: 'तोहि ऊपर राघौ बर खाँचा। दुइज आज तौ पंडित साँचा।' पाठांतर में आए हुए 'ऊपर' की असंगति और निर्धारित पाठ के 'बर'='बल' की संगति प्रकट है। पाठांतर का 'बर खाँचना'='बल खींचना' भी अर्थहीन लगता है। इसके अतिरिक्त, रत्नसेन ने आगे चलकर राघवचेतन का जो देश-निकाला किया है, उसके लिए भी निर्धारित पाठ प्रसंग में आवश्यक है।

(२२) ४४७.६ निर्धारित पाठ है: 'पंथ गरंथ न जे चलहिं ते भूलहिं बन माँझ।' प्र० १, २, पं० १ में इसके स्थान पर है: 'पँडितहि पँडित न देखइ भएउ बैर दुहुँ माँझ।' प्रसंग में राघवचेतन और शेष पंडितों में बैर तो हुआ है, किंतु 'पंडितों' और राघवचेतन को 'दुहुँ' शब्द से व्यक्त करना समीचीन नहीं है। इसके स्थान पर 'तिन्ह' शब्द सुगमता से रक्खा जा सकता था। अन्यथा भी निर्धारित पाठ पाठांतर से अधिक संगत ज्ञात होता है।

(२३) ४८१.४ निर्धारित पाठ है: 'तीवर पाहन परस पखाना। लोह छुअत कंचन होइ बाना।' द्वि० ३, ७ में द्वितीय चरण का पाठ है 'पूज सो कनक दुआदस बाना।' 'पूज'='पूरा होता है' यहाँ असंगत है। यदि उसका अर्थ 'पूरा करता है' लिया जावे, तो यह नहीं कहा गया है कि वह किस प्रकार पूरा करता है।

(२४) ४६१.२ निर्धारित पाठ है: 'जिऔं लेइ घर कारन कोई। सो घर देइ जो जोगी होई।' प्र० १,२, द्वि० ७, पं० १ में पाठ है: 'जियतै लेइ घर कारन भोगी। घरनि सो देइ होइ जो जोगी।' पाठांतर का प्रथम चरण अर्थहीन ज्ञात होता है।

(२५) ५१५.४ निर्धारित पाठ है: 'चढ़ा बजाइ चढ़ै जस इंदू। देव-लोक गोहन सब हिंदू।' दूसरे चरण का पाठ प्र० १,२ में है 'जहाँ हनिवंत बैठ होइ इंदू।' पाठांतर की असंगति प्रकट है।

(२६) ५२७.२ निर्धारित पाठ है: 'सौहँ साहि जहँ उतरा आछा। ऊपर नाच अखारा काँछा।' द्वि० १, तृ० १ में पाठ है: 'सौहैं साहि फेरि जहँ दीठी। पातरि नारि चूर दै पीठी।' पाठांतर के दूसरे चरण में 'पातर' के साथ 'नारि' निरर्थक है, और 'चूर' की भी कोई संगति नहीं ज्ञात होती है।

(२७) ५२८.५ निर्धारित पाठ है : 'छवउ राग गाएनि मल गुनी। औ गाएनि छत्तिस रागिनी।' प्र० १,२, द्वि० ७ में पाठ है : 'छवउ राग ये प्रथमहिं गाए। पुनि तीसौ भारजा सुनाए।' कर्म 'भारजा' स्त्रीलिंग है, इसलिए उसकी क्रिया भी स्त्रीलिंग की 'सुनाईं' होनी चाहिए थी, पुल्लिंग 'सुनाए' नहीं। पाठांतर की अशुद्धि फलतः प्रकट है।

(२८) ५२८.७ निर्धारित पाठ है : 'सरस कंठ मल राग सुनावहिं। सबद देहिं मानहुँ सर लावहिं।' प्र० १,२, पं० १ में यह पंक्ति नहीं है। इसके स्थान पर निर्धारित पाठ की प्रथम और द्वितीय पंक्तियों के बीच निम्नलिखित पंक्ति है : 'छवउ राज नाचहिं जस तारा। सगरौ कटक होइ झनकारा।' 'तारा' प्रस्तुत प्रसंग में निरर्थक है, और रागों का नृत्य भी प्रयोग-सम्मत नहीं ज्ञात होता है।

(२९) ५२८.८ निर्धारित पाठ है : 'सुनि सुनि सीस धुनहिं सब कर मलि मलि पछिताहिं।' दोहे के प्रथम चरण का पाठ प्र० १, २ में है : 'धनुक बान तहँ पहुँचहिं नाहीं'। बाणों का न पहुँचना तो संगत है, किंतु 'धनुष' का न पहुँचना स्पष्ट ही असंगत है, क्योंकि वे तो वाण चलाने वाले के हाथों में बने रहते हैं।

द्वि० ७ में पाठ है 'धनुक बान तहँ पहुँचे' दोनों का पहुँचना, जैसा इस पाठांतर में है, और भी असंगत है; यदि दोनों पहुँच रहे थे, तब हाथ मल-मल कर पछताने की क्या आवश्यकता थी?

(३०) ५२८.८-९ निर्धारित पाठ है : 'सुनि सुनि सीस धुनहिं सब कर मलि मलि पछिताहिं। कब हम हाथ चढ़हिं ये पातरि नैनन्ह के दुख जाहिं।' च० १, पं० १ में इसके स्थान पर है : 'पाछें नाच होइ मल नाचत होइ मिनुसार। बाजे तुरुक तरातर (तुरुक औ तुर्रा—च० १) आछे जस बनिजार।' नाच 'पाछें' नहीं, सामने हो रहा था : 'पतुरिनि नाचैं दिहें जो पीठी। परि भी सौंह साहि कै डीठी।' (५२९.१) और 'आछेइ जस बनिजार' की भी कोई संगति नहीं ज्ञात होती है।

(३१) ५२९.२-३ निर्धारित पाठ है : 'देखत साहि सिंहासन गूँजा। कब लगि मिरिग चंद रथ भूँजा। छाड़हु बान जाहिं उपराहीं। गरब फेर सिर सदा तराहीं।' प्रथम पंक्ति के द्वितीय चरण का पाठ प्र० १, २, पं० १ में है : 'साहि सिंहासन ऊपर गूँजा। देखा चाँद सरग भा दूजा।' दूसरी

पंक्ति में बादशाह उस की ओर पीठ करके नाचती हुई नर्तकी को लक्ष्य करके बाण चलाने की आज्ञा देता है, इसलिए उसे देखकर उसके विषय में स्वर्ग में दूसरे 'चन्द्रमा' की कल्पना करना बादशाह के लिए संगत नहीं माना जा सकता।

(३२) ५२६.७ निर्धारित पाठ है : 'उदसा नाँच नचनिआ मारा। रहसे तुरुक बाजि गए तारा।' प्र० १, २, द्वि० ६, पं० १ में यह पंक्ति नहीं है, और इसके स्थान पर सामान्य पाठ की प्रथम और द्वितीय पंक्तियों के बीच में है 'जबहि लाल दै वैठी चूरी। देखा साहि मई रिसि पूरी।' पाठांतर का 'वैठो चूरी' अर्थहीन ज्ञात होता है। इसके अतिरिक्त बाद की पंक्ति में पुनः 'देखना' क्रिया आती है, जिससे पाठांतर में पुनरुक्ति भी ज्ञात होती है।

(३३) ५३०.३ निर्धारित पाठ है : 'इनिवँत होइ सब लाग गुहारा। आवहिं चहुँ दिसि केर पहारा।' द्वि० १, तृ० १ में पाठ है : 'चले पखान चहुँ दिसि आवहिं। गढ़ि गढ़ि कारे करि बैसावहिं।' पाषाणों का (स्वतः) चला आना, और 'बैठाना' क्रिया का लुप्तकर्त्ता युक्त होना—दोनों ठीक नहीं लगते हैं, और 'कारे करि' तो अर्थहीन ज्ञात होता है।

(३४) ५३०.५ निर्धारित पाठ है : 'खँड ऊपर खँड होइ पटाऊ। चित्र अनेग अनेग कटाऊ।' प्र० १, २ में प्रथम चरण का पाठ है: 'खँड पर खंड भाउ पर भाऊ।' 'भाउ पर भाऊ' प्रसंग में सर्वथा अर्थहीन ज्ञात होता है।

(३५) ५३०.७ निर्धारित पाठ है : 'भा गरगच्च अस कहत न आवा। मनहुँ उठाइ गँगन कहँ लावा।' द्वि० १, तृ० १ में पाठ है, 'चित्तरसारी होहिं अनेका। लिक्खहिं मोकल मेरु औ बेका।' पाठांतर के 'मोकल मेरु औ बेका' नितांत निरर्थक लगते हैं।

(३६) ५४५.३ निर्धारित पाठ है : 'बहुतै सोंधे घिरित बघारा। औ तहँ कुहँकुहँ पीसि उतारा।' प्र० १, २ में पाठ है : 'बहुतै सोंधे घिउ महँ तरे। कस्तूरी केसर पीसि उतारे।' 'तरे' औ 'उतारे' में असाधारण तुक-वैषम्य प्रकट है, और 'पीसि उतारे' भी असंगत लगता है।

(३७) ५५४.१ निर्धारित पाठ है : 'चढ़ि गढ़ ऊपर चकगति देखी। इंद्रपुरी सो जानु बिसेखी।' प्र० १, २, पं० १ में पाठ है : 'पुनि देखा

गढ़ ऊपर बसा। पुनि राजा जाकरि अति दसा।' पाठांतर की क्रिया 'बसा' कर्महीन है, और उसका 'अति दसा'—जिसमें सामान्यतः 'गिरी हुई दशा' की व्यंजना होनी चाहिए—असंगत लगता है।

(३८) ५६७.३ निर्धारित पाठ है : 'दरपन साहि भीत तहँ लावा। देखौं जबहिं झरोखे आवा।' प्र० १,२, पं० १ में पाठ है : 'रचा खेल दरपन धरि आगे। रही सुदिष्टि धौरहर लागें।' 'लागें'—'लगने पर' सर्वथा असंगत है, 'सुदिष्टि' स्त्रीलिंग कर्म के साथ 'लागी' क्रिया ही संगत और व्याकरण-सम्मत होती। इसके अतिरिक्त यदि शाह को धौरहर की ओर 'सुदिष्टि' लगाए ही रहना था, तो उसने अपने आगे 'दरपन' क्यों रक्खा! धौरहर की ओर सुदिष्टि लगाए रहने पर तो उसे पद्मावती का दर्शन कदाचित् असंभव ही हो जाता।

(३६) ५६७.४-५ निर्धारित पाठ है : 'खेलहिं दुऔ साहि औ राजा। साहि क रुख दरपन रह साजा। प्रेम क लुबुध पयादे पाऊँ। चलै सौहँ ताकै कोनहाऊँ।' इनमें से प्रथम पंक्ति का पाठ प्र० १,२, पं० १ में है: 'मकु धनि झाँकहि आइ झरोखे। दरस होइ सतरँज के धोखे।' दूसरी पंक्ति के प्रसंग में पाठांतर की पहली पंक्ति की संगति नहीं लगती, यह स्पष्ट है।

(४०) ६६५.५ निर्धारित पाठ है : 'रुख माँगत रुख तासौं भयऊ। भा सह माँत खेल मिटि गयऊ।' प्र० १,२, तृ० १, पं० १ में इसके स्थान पर है : 'भा रुख दाव जो मुहरा भेंटा। भा सह माँत खेल सब मेंटा।' पाठांतर का प्रथम चरण अर्थहीन लगता है।

(४१) ५८०.१ निर्धारित पाठ है : 'पूँछेन्हि बहुत न बोला राजा। लीन्हेसि चुपि मींचु मन साजा।' प्र० १, २, पं० १ में इसके स्थान पर है : 'पूछा बहुत न राजा बोला। दीन्ह केवार न कैसेहुँ खोला।' अभी तक राजा किसी कोठरी में बंद नहीं किया गया था, वह बंद बाद की पंक्ति में किया जाता है : 'लानि गढ़ ओबरी महँ लै राखा।' ऐसी दशा में 'दीन्ह केवार न कैसेहुँ खोला' असंभव है।

(४२) ५८३.८-६ निर्धारित पाठ है : 'कवन खंड हौं हेरौं कहाँ मिलहु हो नाहँ। हेरे कतहुँ न पावौ बसहु तौ हिरदय माहँ।' प्रथम पंक्ति का पाठ प्र० १,२ में है : 'को गुरु अगुवा (कुकुरा कौवा—प्र० १) होइ सखि कहाँ मिलहु

हो नाहँ।' पूरे छंद में और विवेचनीय पंक्ति में भी संबोधन 'नाहँ' को है : 'तुम्ह बिनु कंत को लावै तीरा।' (.४), 'कवने जतन कंत तुम्ह पावौं।' (.७), 'कहाँ मिलहु हो नाहँ।' (.८), 'बसहु तो हिरदे माहँ।' (.६) 'सखि' को जो संबोधन पाठांतर में किया गया है, वह इसलिए असंगत लगता है। इसके अतिरिक्त पाठांतर में 'गुरु' के होते हुए 'अगुवा' अनावश्यक है; और 'कुकुरा कौवा' की असंगति तो स्वतः प्रकट है।

(४३) ५६६.३ निर्धारित पाठ है : 'लोना सोइ जहाँ मसि रेखा। मसि पुतरिन्ह निरमल जग देखा।' प्र० १,२ में इस पंक्ति का पाठ है : 'मसि सोभा केतेहुँ जग देखा। मसि कोटी (गौनी—प्र० २) रोमावलि रेखा।' पाठांतर के 'केतेहुँ'='कितना भी' (४१) और 'कोटी' (अथवा 'गौनी'—प्र० २) का प्रसंग में कोई अर्थ नहीं ज्ञात होता है।

(४४) ६०४.५ निर्धारित पाठ है : 'का सो भोग जेहि अंत न कोऊ। एहि दुख लिएँ भई सुख देऊ।' प्र० १, २ में पाठ है : 'का सो भोग जेहि अंत न खेवा। जेहि दुख लिएँ भई महि देवा।' पाठांतर के 'खेवा' और 'महिदेवा' प्रसंग में अर्थहीन ज्ञात होते हैं।

(४५) ६१२.३ निर्धारित पाठ है : 'कँवल चरन भुइँ भरत दुखावहु। चढ़हु सिंघासन मँदिल सिधावहु।' प्र० १, २, पं० १ में पाठ है : 'साजि सिंघासन आगे आने। कँवल चरन धरि भुइँ कुम्हिलाने।' पूर्व की पंक्ति है 'साजि सिंघासन तानहिं छातू। तुम्ह माथें जुग जुग अहिवातू।' इसके द्वितीय चरण में गोरा-बादिल द्वारा पद्मावती को संबोधन है। निर्धारित पाठ में विवेचनीय पंक्ति के भी दोनों चरणों में पद्मावती को संबोधन है, किंतु पाठांतर की पंक्ति के प्रथम चरण में पुनः सिंहासन सजा कर उसे आगे लाने का उल्लेख है, जो पूर्ववर्ती पंक्ति में हो चुका है, जिससे उसमें पुनरुक्ति स्पष्ट है, और तब पुनः पद्मावती को संबोधन है। इसके अतिरिक्त पाठांतर का दूसरा चरण अर्थहीन लगता है। 'धरि' के स्थान पर 'धरिअ' होता तो भले ही किसी प्रकार संगति लग सकती थी।

(४६) ६१४.७ निर्धारित पाठ है : 'हनिवँत सरिस जंघ बर जोरौं। धँसौं समुंद स्वामि बँदि छोरौं।' प्र० १, २, प० १ में पाठ है : 'हनिवँत जस राघौ बँदि छोरी। धँसौं समुंद करौं सखि जोरी (पोरी—प्र० २)। पाठांतर के 'जोरी' (अथवा 'पोरी'—प्र० २) का कोई अर्थ नहीं ज्ञात होता है। यदि 'जोरी' 'जोर'

के लिए आया है तो यह स्पष्ट ही अशुद्ध है, और अन्यत्र जायसी में कहीं भी इस प्रकार नहीं प्रयुक्त हुआ है।

(४७) ६१५.१ निर्धारित पाठ है : 'बादिल गवन जूझि कहँ साजा। तैसेहिं गवन आइ घर बाजा।' प्र० १, २ में पाठ है : 'जा दिन बादिल चलै सिधाया। ओही देवस गौना गइ आया।' 'चलना' और 'सिधारना' समानार्थी हैं; 'चलने के लिए चला'—(अथवा 'गया') निरर्थक है, फिर 'कहाँ चलने के लिए गया!' इस प्रश्न का भी कोई उत्तर पाठांतर में नहीं है।

(४८) ६१७.१ निर्धारित पाठ है : 'मान किहें जौं पिउहिं न पावौं। तजौं मान कर जोरि मनावौं।' प्र० १, २, पं० १ में इसके स्थान पर है: 'ठाढ़ि ठाढ़ि मन कीन्ह तेवानू (गियानू—पं० १)। जौ पै पीठि भाव असमानू (जौ पिय जाइ न भावै मानू—पं० १)। 'तेवानू' प्रसंग में अर्थहीन है, और अन्यत्र जायसी में नहीं आया है; 'पीठि भाव अस मानू' भी अर्थहीन ज्ञात होता है। पं० १ के पाठ का 'भावै' भी असंगत ज्ञात होता है—प्रियतम के जाने पर मान का भाना, न भाना कोई अर्थ नहीं रखते हैं।

(४९) ६१७.७ निर्धारित पाठ है : 'तहँ सब आस भरा हिय वेधा। भँवर न तजै बास रस लेवा।' यह पंक्ति प्र० १, २, प० १ में नहीं है। इसके स्थान पर निर्धारित पाठ की प्रथम और द्वितीय पंक्तियों के बीच निम्नलिखित पंक्ति है : 'तजौं लाज कर जोरि मनावौं। करौं ढिठाइ पीठि जौ पावौं।' पाठांतर के 'पीठि जौ पावौं' का प्रसंग में कोई अर्थ नहीं ज्ञात होता है। 'पीठ पाना' तो पराङ्मुख करने के अर्थ में प्रयुक्त होता है, यथा : 'जिन्हकै लहहिं न रिपु रन पीठी।' ('मानस', बाल० २३१), जो यहाँ प्रसंग-विरुद्ध भी होगा।

(५०) ६१८.७ निर्धारित पाठ है : 'पुरुष बोलि कै टरै न पाछू। दसन गयंद गीवँ नहिं काछू।' प्र० १, २ में इसके स्थान पर पाठ है : 'आजु करौं रन भारथ सोई। अस रन करौं करै नहिं कोई।' पाठांतर का 'सोई' निरा भरती का है, और इसके अतिरिक्त 'आजु करौं रन' और 'अस रन करौं' में पुनरुक्ति भी है।

(५१) ६१८.८ निर्धारित पाठ है : 'तूँ अबला धनि मुगुध बुधि जानै जाननिहार। जहँ पुरुषन्ह कहँ बीर रस भाव न तहाँ सिंगार।' प्र० १, २,

पं० १ में द्वितीय चरण का पाठ है 'अज्हुँ समुझि पगु धारि'। 'अजहुँ समुझि' और 'पगु धारि'—दोनों प्रसंग में अर्थहीन ही नहीं असंगत भी हैं।

(५२) ६२०-२ निर्धारित पाठ है: 'उठे सो धूम नैन करुआने। जब ही आँसु रोइ बेहराने।' प्र० १, द्वि० ७ में दूसरे चरण का पाठ है: 'चुवहिं आँसु रोवहिं बिहसाने।' 'बिहसाने' का प्रसग नहीं है—उसमें प्रसंग-विरोध फलतः स्पष्ट है। प्र० २, पं० १ में इसी चरण का पाठ है: 'हिअ (ए—पं० १) दौ लाइ कंत (लागि कठ—पं०१) बिहराने।' बाद की पंक्तियों में हार चीर आदि के भीगने का उल्लेख हुआ है, जिसके कारण यह पाठांतर असगति कारक भी है।

(५३) ६२०.३ निर्धारित पाठ है: 'भीजे हार चीर हिय चोली। रही अछूति कंत नहीं खोली।' प्र० २, प० १ में इसके स्थान पर पाठ है: 'चले आँसु धनि बहुरि न बोली। भीजेउ हार चीर उर मेली।' 'बोली' और 'मेली' का तुक—वैषम्य तो प्रकट है ही 'चीर' पुल्लिंग है, यथा:

'हार चीर अरुझाना जहाँ छुअइ तहँ काँट।' (१८८.९)

इसलिए उसके साथ 'मेली' स्त्रीलिंग किया किसी प्रकार भी व्याकरण-सम्मत नहीं मानी जा सकती। पूर्व की पक्ति में आँसुओं के गिरने का उल्लेख आ चुका है: 'जब ही आँसु रोइ बेहराने' इसलिए पाठांतर के पाठ में पुनरुक्ति भी है। प्र० २ तथा पं० १ में उक्त पक्ति का भी पाठ भिन्न है, जैसा हम ऊपर देख चुके हैं, इसलिए प्र० २ तथा प० १ के दोनों पंक्तियों के पाठ-भेद परस्पर संबद्ध ज्ञात होते हैं।

(५४) ६२०.४ निर्धारित पाठ है: 'भीजी अलक चुई कटि मंडन। भीजे भँवर कँवल सिर फुंदन।' प्र० १, २, द्वि० ७, पं० १ में पाठ है: 'भीजै अलक चुवै गति मदे। भीजै भँवर कँवल रस बदे।' अलकों का 'मंद गति' से चूना, और भँवरों का कँवल के रस का 'बदी' होना—अथवा 'बंदा' होना—दोनों निरर्थक लगते हैं। यह पाठांतर अंशतः उर्दू लिपि की त्रुटियों के कारण भी हुआ ज्ञात होता है।

(५५) ६२०.६ निर्धारित पाठ है: 'छाड़ि चला हिरदै दै डाहू। निठुर नाहँ आपन नहिं काहूँ।' प्र० २, प० १ में पाठ है: 'जो तुम्ह कत जूझ अब साधा। तुम्ह किए साका मैं सत बाँधा।' 'जूझ' का 'साधना' न जायसी में ही अन्यत्र आया है, और न अन्यथा प्रयोग-सम्मत लगता है। इसके

अतिरिक्त प्रथम चरण का दोहा पाठ इन प्रतियों में है, उसको लेते हुए दूसरे चरण के 'तुम्ह किए साका' में पुनरुक्ति भी है।

(५६) ६२०.८६ निर्धारित पाठ है : 'रोए कंत न बाहुरै तेहि रोएँ का काज। कंत धरा मन जूझि रन धनि साजे सब साज।' प्र० २, पं० १ में पाठ है : 'तुम्ह ली गै रन साइस मोहिं दै माँग सिंदूर। देहु पँवारे है सखी बाजे मंदिर तूर।' 'रन साइस' को 'तुम्ह ली गै' कहना असंगत लगता है, और इससे भी अनहोना यह कि रणक्षेत्र में जाने के अपने पति के निश्चय से किसी प्रकार समझौता करने के अनंतर कोई भी स्त्री बाजे बजवाने की आज्ञा दे।

प्र० १, द्वि० ७ में केवल दोहे की द्वितीय पंक्ति का पाठ भिन्न है, और वह इस प्रकार है : 'देहु पँवारे (बधावा—द्वि० ७) है सखी मंदिल बाजहि आज।' यहाँ भी मंदिल का 'बजना' असंगत लगता है, और पति के रण-प्रयाण के उपलक्ष में पत्नी का पँवारा या बधावा बजवाना उतना ही अनहोना लगता है।

(५७) ६२१.४ निर्धारित पाठ है : 'सजग जो नाहि काहु बर बाँधा। बधिक हुतें हस्ती गा बाँधा।' प्र० १, २, पं० १ में पाठ है : 'सुबुधि सिआर सिंघ कहँ मारा। कुबुधि जो सिंघ कूप परि मरा।' पाठांतर के दूसरे चरण में भी वही बात कही गई है जो उसके प्रथम चरण में है - अतः पुनरुक्ति उसमें स्पष्ट है। 'मारा' और 'मरा' का तुक-वैषम्य भी विचार्य है।

(५८) ६२३.४ निर्धारित पाठ है : 'बिनै करै आई हौं ढीली। चितउर की मो सिउँ है कीली।' प्र० १, २, पं० १ में पाठ है : 'बिनती करै भाँति सो केती। चितउर की कुंजी मोहिं सेती।' पाठांतर के दूसरे चरण का वाक्य अपूर्ण है।

(५९) ६२३.६ निर्धारित पाठ है : 'बिनवहु पातिसाहि के आगे। एक बात दीजै मोहिं माँगे।' द्वि० ३, तृ० ३ में दूसरे चरण का पाठ है : 'अब सो थाति आवै सँग लागें।' 'थाति' स्त्रीलिंग कर्त्ता के लिए 'लागें' क्रिया अशुद्ध है, 'लागी' शुद्ध होगा। फिर थाती का संग लगी हुई आना भी संगत नहीं लगता।

(६०) ६२७.२ निर्धारित पाठ है : 'पिता मरै जो सारै साथें। मींचु न देइ पूत के माथें।' द्वि० ६, तृ० २ में इसके स्थान पर है : 'पिता बरोक मरै जो (जिउ—द्वि० ६) लिए। आपन मींचु भएउ तेहि (न पूँछहि—द्वि० ६) दिए।'—पाठांतर की सारी पंक्ति ही अर्थहीन ज्ञात होती है।

(६१) ६३३.५ निर्धारित पाठ है : 'लोटहिं कंध कबंध निनारे। माँठ मजीठि जानु रन ढारे।' प्र० १,२ का पाठ है : 'सेल कि ममकि उठै असरारा। माँठ मँजीठि जानु रन ढारा।' पाठांतर का पहला चरण अर्थहीन लगता है।

(६२) ६३८.७ निर्धारित पाठ है : 'देखि चाँद असि पदुमिनि रानी। सखी कमोद सबै बिगसानी।' प्र० १, २, तृ० ३, पं० १ में इसके स्थान पर है : 'दिनकर गहन सो कीन्ह पयाना। निसि कर गहन आइ निअराना।' पूर्व की पंक्ति है 'अस्तु अस्तु सुनि भा किलकिला। आगें मिलइ कटक सब चला।' और बाद की पक्तियाँ हैं : 'गहन छूटइ दिनकर कर ससि सौं होइ मेराउ। मँदिल सिंघासन साजा बाजा नगर बधाउ।' प्र० १, २, द्वि० ३, पं० १ का पाठ मानने पर पाठातर के प्रथम चरण में पुनरुक्ति होती है, क्योंकि दोहे के प्रथम चरण में वही शब्दावली आई है, और प्रसग से विरोध भी होता है, क्योंकि निसिकर के गहन की गभीर विभीषिका सामने आ जाती है, जो उस हर्ष के प्रसंग में कवि-अभीष्ट नहीं ज्ञात होती है। भाषा की दृष्टि से भी पाठातर अशुद्ध है : 'गहन' 'दिनकर कर' और 'निसिकर कर' होता है, 'दिन कर' ='दिन का' अथवा 'निसि कर'='निसि का' नहीं।

(६३) ६४०.८६ निर्धारित पाठ है : 'जौं सूरज सिर ऊपर तब सो कँवल सुख छात। नाहिं त मरै सरोवर सूखै पुरइनि पात।' द्वि० २,३, च० १ में पाठ है : 'तुम्ह बिनु हौं किछु नाहीं जौं तुम्ह तौ सिर छात। जौ तुम्ह करहु सुदिस्टि पिय तौ मोहि होइ अहिवात।' 'तुम्ह बिनु हौं किछु नाहीं' और 'जौ तुम्ह करहु सुदिस्टि पिय'—विशेष रूप से दूसरा—प्रसग में असगत लगते हैं। रतनसेन की सुदिस्टि तो पद्मावती पर सदैव ही थी—जब वह अलाउद्दीन के बंदीगृह में था तब भी थी।

उपर्युक्त में से निम्नलिखित संख्याओं के बीच पाठांतर दोनों—प्रतिलिपि तथा प्रक्षेप—संबधों से सिद्ध हैं :

प्र० १, २ : (२५), (३४), (३६), (४२), (४३), (४४), (४७), (५०), (६१)

प्र० १, २, द्वि० ७ : (१५), (१६), (२७), (२८)...

द्वि० ६, तृ० ३, : (६), (११)

द्वि० ४, ५ : (१८), (१६)

द्वि० ३, तृ० ३ : (५६)

द्वि० ३, द्वि० ६, तृ० ३ : (१०)

प्र० १, २ द्वि० २, ४, ५, ६, पं० १ : (२१)

निम्नलिखित सत्ताईस केवल प्रतिलिपि-संबंध से सिद्ध हैं :

प्र० १, २, पं० १ : (२२), (२८), (३१), (३७), (३८), (३६), (४१), (४५), (४६), (४८), (४६), (५१), (५७), (५८)

प्र० १, द्वि० ७ : (१२), (१३), (१४), (५२)

द्वि० १, तृ० १ : (२६), (३३), (३५)

प्र० २, पं० १ : (५३), (५५)

द्वि० ४, ६ : (५)

द्वि० २, तृ० २ : (४)

द्वि० ६, तृ० २ : (६०)

द्वि० ५, चं० १ : (२)

निम्नलिखित दो केवल प्रक्षेप-संबंध से सिद्ध हैं :

द्वि० २, ४, ५, ६, ७ : (१७)

द्वि० ४, ५, ६, तृ० ३ (७)

शेष चौदह निम्नलिखित हैं :

प्र० १, २, द्वि० ७, पं० १ : (२४), (५४), (५६)

द्वि० ७, पं० १ : (२०)

प्र० १, २, तृ० १ : (३)

प्र० १, २, द्वि० ६, पं० १ : (३२)

प्र० १, २, तृ० १, प० १ : (४०)

प्र० १, २, तृ० ३, पं० १ : (६२)

द्वि० २, ३, च० १ : (६३)

द्वि० ३, ६, तृ० १, ३ : (८)

च० १, पं० १ : (३०)

प्र० १, द्वि० ६, ७, तृ० २ : (१)

द्वि० ३, द्वि० ७ : (२३)

द्वि० १, ५, तृ० २, ३ : (६)

इनमें से केवल प्र० १, २, द्वि० ७, पं० १ के पाठांतर-साम्य के स्थल

एक से अधिक हैं, और इसलिए विचारणीय हैं। प्र० १, २, द्वि० ७ का प्रतिलिपि एव प्रक्षेप-संबंध ऊपर देखा जा चुका है ; प्रस्तुत पाठांतर—संबंध को मानने के लिए केवल यह मानना होगा कि प० १ का प्रतिलिपि-संबंध द्वि० ७ से भी है; और यह मान लेने पर द्वि० ७, पं० १ के पाठांतर-साम्य का स्थल (२०) भी सिद्ध हो जाता है।

चौदह स्थलों में उपर्युक्त तीन+एक=चार स्थलों के सिद्ध हो जाने पर केवल दस स्थल उपर्युक्त प्रकारों से असिद्ध ठहरते है। हाशियों में पाठांतर लिखने की जो प्रवृत्ति हमने 'पदमावत' की प्रतियों में सामान्यतः देखी है, उसके ध्यान से इतने असिद्ध स्थल—तिरसठ में केवल दस—नितांत स्वाभाविक हैं।

शेष तिरपन में से बीस+सत्ताइस+चार=इक्कावन प्रतिलिपि संबंध से सिद्ध हो जाते हैं, और बीस+दो=बाइस प्रक्षेप-संबध से सिद्ध होते हैं। इससे विभिन्न प्रतियों के प्रतिलिपि और प्रक्षेप-संबंध के जिन परिणामों पर हम ऊपर पहुँचे हैं, उनकी मान्यता प्रमाणित होती है। प्रतिलिपि-संबध और प्रक्षेप संबंध के सापेक्षिक महत्त्व में इस प्रकार का अन्तर होना भी स्वाभाविक है, और इस दृष्टि से भी सम्पादन-शास्त्रियों ने प्रतिलिपि-संबंध को 'मुख्य संबंध' और प्रक्षेप-संबध को 'गौण संबध' माना है।

इस शीर्षक के अंतर्गत केवल पाठांतर के ऐसे स्थल लिए गए हैं, जो किसी न किसी प्रकार अशुद्ध ठहरते हैं। किंतु ग्रंथ में अनेकानेक ऐसे स्थल भी हैं, जहाँ के दोनों या उससे अधिक भी पाठ विभिन्न दृष्टियों से—कुछ कम या अधिक—सम्मत और सगत ज्ञात होते हैं। और यह असम्भव भी नहीं है कि सभी स्थलों पर कवि ने जो पाठ दिया हो उससे भिन्न किंतु उतना ही सम्मत और संगत पाठ न दिया जा सकता हो।

इसलिए प्रतियों के प्रतिलिपि-संबध और प्रक्षेप-संबध के विषय में अंतिम रूप से ऊपर जिस परिणाम पर हम पहुँचे हैं, उसी के आधार पर हमें ग्रंथ के समस्त पाठभेदों का निराकरण करना होगा। वस्तुतः इन संबंधों का निर्धारण स्वतः साध्य नहीं है, साध्य तो है प्रामाणिक पाठ की प्राप्ति, और उसी के लिए इन समस्त संबंधों का निर्धारण साधन रूप में अनिवार्य हुआ है।

१०. ग्रंथावली के अन्य ग्रंथ

'पदमावत' के अतिरिक्त जायसी कृत माने हुए दो अन्य ग्रंथ भी प्राप्त थे—

'अखरावट' और 'आखिरी कलाम'। पं० रामचन्द्र शुक्ल को इनके उर्दू अक्षरों में मुद्रित एक-एक संस्करण मिले थे। उन्हीं से लेकर अपनी जायसी-ग्रंथावली में शुक्लजी ने इन ग्रंथों के पाठ दिए थे। मुझे भी इन ग्रंथों की कोई प्राचीन प्रतियाँ नहीं मिल सकीं, इसलिए वही क्रिया मुझे भी करनी पड़ रही है। इन ग्रंथों का पाठ असंतोषजनक है। भविष्य में यदि प्राचीन प्रतियाँ उपलब्ध हो सकीं, तो इनका भी संपादन संभव हो सकेगा।

उपर्युक्त के अतिरिक्त खोज में मुझे जायसी की एक अन्य कृति मिली है, जिसे इस संस्करण में पहिली बार प्रकाशित किया जा रहा है। यह है 'महरी बाईसी'। यह नाम मेरा दिया हुआ है, स्पष्ट नामोल्लेख कृति में नहीं है। केवल 'महरी' गाने का उल्लेख कृति में जहाँ-तहाँ हुआ है, और इस कृति में कुल बाइस गीत हैं, इसलिए यह नाम दे दिया गया है। संभव ही नहीं, आशा भी है कि आगे की खोजों में इस कृति का ठीक नाम ज्ञात हो जावेगा।

यह कृति केवल सन् ११६४ हिजरी की एक प्रति के आधार पर संपादित हुई है, जो ऊपर वर्णित द्वि० २ के प्रारंभ में उसी जिल्द में दी हुई है। लिखावट प्रायः शिकस्त है, और दिया हुआ पाठ अत्यत कठिनतापूर्वक उससे प्राप्त किया गया है। प्रति में कहीं-कहीं शब्द और पंक्तियाँ छूटी हुई हैं। उन स्थलों का यथास्थान निर्देश कर दिया गया है। भविष्य में यदि और प्रतियाँ प्राप्त हो सकीं तो इस रचना का भी यथेष्ट संपादन संभव हो सकेगा।

इन तीनों कृतियों की प्रामाणिकता के बारे में मुझे संदेह है, किंतु वैज्ञानिक रीति से पाठ-निर्धारण के बिना उस संदेह का निराकरण असंभव है। मुझे विश्वास है कि जिन सज्जनों के पास भी इन ग्रंथों की हस्तलिखित या मुद्रित प्रतियाँ होंगी, अथवा उनके कहीं भी होने की जानकारी होगी, वे उनके संबंध में मुझे सूचित करके इन कृतियों के भी प्रामाणिक पाठ-निर्धारण में मेरे सहायक होंगे।

११. ग्रंथावली के अन्य संस्करण

'पदमावत' के निम्नलिखित संस्करण ज्ञात हैं :

१—रामजसन मिश्र द्वारा संपादित, चन्द्रप्रभा प्रेस काशी से, १८८४ में प्रकाशित।

२—नवलकिशोर प्रेस, लखनऊ से १८८१ में प्रकाशित, (सम्पादक अज्ञात) ।

३—मौलवी अलीहसन द्वारा सम्पादित, मुंशी नवलकिशोर द्वारा प्रकाशित (तिथि अज्ञात) ।

४—शेख अहमद अली द्वारा सम्पादित, शेख मुहम्मद अज़ीम उल्लाह द्वारा कानपुर से प्रकाशित, (तिथि अज्ञात) ।

५—सर जार्ज ए० ग्रियर्सन और महामहोपाध्याय पं० सुधाकर द्विवेदी द्वारा सम्पादित, रॉयल एशियाटिक सोसाइटी, बंगाल, कलकत्ता द्वारा १८९६-१९११ में प्रकाशित ।

६—पं० रामचन्द्र शुक्ल द्वारा सम्पादित, नागरी प्रचारिणी सभा, काशी द्वारा, १९२४ में प्रकाशित ।

७—डा० सूर्यकांत द्वारा सम्पादित, पंजाब यूनिवर्सिटी, लाहौर से १९३४ में प्रकाशित ।

८—पं० भगवती प्रसाद द्वारा सम्पादित, नवलकिशोर प्रेस, लखनऊ द्वारा प्रकाशित, (तिथि अज्ञात) ।

९—डा० लक्ष्मीधर द्वारा सम्पादित, लूज़क एंड कंपनी, लंदन द्वारा १९४९ में प्रकाशित ।

१०—बंगवासी फ़र्म द्वारा १८९६ में प्रकाशित, (सम्पादक अज्ञात) ।

इनमें से रामजसन मिश्र द्वारा सम्पादित संस्करण नागरी प्रचारिणी सभा, काशी के पुराने सूचीपत्रों में दिया हुआ है, किंतु सभा को लिखने पर ज्ञात हुआ कि वहाँ वह नहीं है। बंगवासी फ़र्म वाले संस्करण का पता भी नहीं लग सका कि वह कहाँ मिल सकेगा।

नवलकिशोर प्रेस से प्रकाशित १८८१ के संस्करण की छठी आवृत्ति वहाँ से प्राप्त हुई। उसे देख कर बड़ी निराशा हुई। न उस पर सम्पादक का नाम है, और न यह लिखा हुआ है कि किन प्रतियों के अनुसार उसका पाठ निर्धारित किया गया है। मंगलमूर्ति गणेश जी का चित्र मात्र देकर ग्रंथ प्रारम्भ करना यथेष्ट समझा गया है। इसके पाठ से परिचय कराने के लिए नीचे उन्हीं नौ पंक्तियों का पाठ दिया जा रहा है, जिनका पाठ अन्यत्र विभिन्न प्रतियों के चित्रों में दिया गया है :

नामी कुण्ड सो मलय समीरू । समुद्र भँवर जस भये गँभीरू ।
बहुते भँवर बौंडर भये । पहुँच न सके स्वर्ग कहँ गये ।

चन्दन माँझ कुरंगिन खोजू। वेहि को पाव को राजा भोजू।
को वहि लागहियचल सीझा। कासहिं लिखी देव को रीझा।
सोहै कमल सुगन्ध सरीरू। समुद्र लहर सोहै तन चीरू।
झूलहिं रतनपाट के झोरा। साज मदन वहिका वहँ कोपा।
अबहिं सो अहै कमल की करी। न जनों कौन भँवर वहँ धरी।

बेध रही जग वासना, निरमल मेद सुगन्ध।
तेहि अरघान भँवर सब लुब्धे, तजहिं न दिये बन्ध॥

इसे देखने पर ज्ञात होगा कि ग्रंथ के पाठ को शोध करके शुद्ध कर देने में पंडित जी ने कोई कसर नहीं रख छोड़ी है। टिप्पणी में उन्होंने शब्दार्थ भी दिये हैं। उसके सम्बन्ध में हमें विचार करने की आवश्यकता नहीं है।

मौलवी अलीहसन और शेख अहमद अली खाँ के संस्करणों में भी प्रतियों का कोई उल्लेख नहीं है, किंतु सम्पादक ज्ञात हैं। इनमें पाठ प्रायः अछूता छोड़ा हुआ ज्ञात होता है—कम से कम किन्हीं पंडित जी की वैसी कृपा इन पर नहीं हुई है, यह प्रकट है, जैसी उपर्युक्त नवलकिशोर प्रेस के संस्करण पर हुई है। इसलिए इन दोनों प्रतियों का पाठ उपयोगी है, और प्रस्तुत संस्करण में उनका उपयोग भी किया गया है। उपर्युक्त पंक्तियों के चिन्ह इन प्रतियों से अन्यत्र दिये जा चुके हैं।

शेष संस्करण ज्ञात रूप से सम्पादित संस्करण हैं। उनके संबंध में नीचे क्रमशः विचार प्रस्तुत किए जा रहे हैं।

ग्रियर्सन का संस्करण—यह प्रस्तुत संस्करण के छंद २७४ तक ही है। विभिन्न पीढ़ियों की हमारी निम्नलिखित प्रतियाँ ग्रियर्सन को प्राप्त थीं :

(१) तृ० १,२
(२) द्वि० २, ३
(३) द्वि० ४, ५
(४) प्र० १

इनके अतिरिक्त उन्हें तीन कैथी लिपि की तथा एक उदयपुर की नागरी लिपि की भी प्रतियाँ प्राप्त थीं।[१] कैथी की प्रतियों में से केवल एक के पाठांतर उन्होंने अपने संस्करण में दिये हैं, शेष दोनों कैथी

१—खेद है कि यत्न करने पर भी इनमें से कोई प्रति प्राप्त नहीं हो सकी।

प्रतियों के पाठांतर न देते हुए लिखा है कि इनका पाठ भी इसी प्रति से मिलता-जुलता है।

उन्होंने यह भी लिखा है कि ये दोनों कैथी की प्रतियाँ बहुत भ्रष्ट पाठ की हैं, और पाठ-निर्धारण में इनका उपयोग भी प्रायः नहीं किया है। उदयपुर की प्रति के पाठांतर उन्होंने दिए हैं। उक्त कैथी की और उदयपुर की प्रतियाँ पाठ की दृष्टि से प्र० १ की या उस से भी किंचित् नीचे की पीढ़ी की ज्ञात होती हैं।

संपादन के संबंध में ग्रियर्सन ने दो सिद्धान्तों का उल्लेख किया है। एक तो यह कि उन्होंने प्रायः प्रतियों का बहुमत ग्रहण किया है, और दूसरा यह कि द्वि० २ के पाठ को उन्होंने सामान्यतः ग्रहण किया है, और उसे आधार-प्रति माना है। इन दोनों सिद्धान्तों के द्वारा प्राप्त परिणामों पर विचार कर लेना चाहिये।

उदयपुर की तथा कैथी की उपर्युक्त प्रतियों को लेने पर बहुमत तीसरी, चौथी और पाँचवीं पीढ़ियों का ही रहता है, और द्वि० २ को आधार-प्रति मानने पर भी वह दूसरी पीढ़ी से आगे नहीं बढ़ता। किंतु इन सिद्धान्तों का भी यथेष्ट उपयोग उन्होंने पाठ-निर्णय या प्रक्षेप निर्णय में नहीं किया है। यह निम्न- लिखित उदाहरणों से प्रकट होगा।

ऊपर विभिन्न प्रतियों का पाठ-संबंध निर्धारण करने में हमने प्रतिलिपि-संबंधी जिन भूलों का निरीक्षण किया है, उनमें से ११वीं संख्या की भूल इस संस्करण के मूल पाठ में भी पाई जाती है। जैसा वहाँ बताया गया है, कि द्वि० २, ४, ५, तृ० ३ में २५५.६ के स्थान पर तथा द्वि० ६ में २५५.७ के स्थान पर निम्नलिखित पंक्ति पाई जाती है :

तुम्ह सो मोर खेवक गुरु देऊ। उतरौं पार तेही विधि खेऊ।

जिससे ज्ञात यह होता है कि यह पाठ दोनों प्रकार की प्रतियों के सामान्य पूर्वज में हाशिए पर लिखा हुआ था, जिससे द्वि० २,४, ५, तृ०३ के पूर्वज ने उसे एक पंक्ति और द्वि० ६ के पूर्वज ने उसे दूसरी पंक्ति का ठीक पाठ मान कर उसे इस प्रकार भिन्न-भिन्न ढंगों से ग्रहण किया। ग्रियर्सन को द्वि० ६ प्राप्त नहीं थी। इसलिए वे इस ढंग से विवेचनीय पंक्ति के संबंध नहीं सोच सकते थे। किंतु यह पाठान्तर उनकी प्रतियों में से केवल दो में—द्वि० २, तृ० ३ में था—शेष समस्त प्रतियों में मूल पाठ की ही पंक्ति थी, इसलिए

प्रतियों का बहुमत उसके पक्ष में था, और द्वि० ३ में भी मूल पाठ की ही पंक्ति थी, इसलिए उनकी आधार-प्रति का भी साक्ष्य इसी के पक्ष में था। फिर भी ग्रियर्सन ने उक्त पाठान्तर की ही पंक्ति को ग्रहण किया।

पुनः ऊपर जिन छंदों को विभिन्न प्रतियों में प्रक्षिप्त माना गया है, उनमें से निम्नलिखित ग्रियर्सन के संस्करण में मूल पाठ के रूप में सम्मिलित कर लिए गए हैं :

६०अ, १५६अ, १८०अ, १८५अ, २६२ अ, २६२आ, २६२इ, २६८अ, २६८ आ, २६८ इ, २६८ ई, २६८ उ ।

इनमें से ६० अ उनकी केवल तीन प्रतियों—द्वि० ३, तृ० ३, तथा एक कैथी की प्रति—में था, और प्रतियों का बहुमत इसके विपक्ष में था। फि भी ग्रियर्सन ने इसे मूल में ग्रहण कर लिया।

इनके अतिरिक्त एक और प्रक्षिप्त छद भी ग्रियर्सन ने मूल पाठ में रख लिय है, वह है ५५ अ, जो मुझे प्राप्त किसी भी प्राचीन प्रति—हस्तलिखित या मुद्रि —में नहीं मिला है। ग्रियर्सन की प्रतियों में भी यह केवल एक कैथी की प्रति में था, और उसी के प्रमाण पर उन्होंने इसे मूल पाठ में ग्रहण किया है।

यहाँ तक तो ग्रियर्सन के अपने द्वारा निर्धारित सिद्धान्तों के अनुसार उनके पाठ के विषय में हुआ। कहने की आवश्यकता नहीं कि उनके ये दोनों सिद्धान्त वैज्ञानिक दृष्टि से ठीक नहीं थे। प्रामाणिक पाठ-निर्णय के संबंध में संपादन विज्ञान के जो सिद्धान्त हैं, उनसे ग्रियर्सन अपरिचित ज्ञात होते हैं। प्रतिलिपि-संबंध, प्रक्षेप-संबध, अथवा पाठान्तर संबध के आधार पर विभिन्न प्रतियों के पाठों की स्थिति निर्धारित करके पाठ-निर्धारण का कोई प्रयास उन्होंने नहीं किया है।

ग्रियर्सन की टिप्पणियों को देखने पर यह तो ज्ञात होता है कि उनका ध्यान प्रतियों के सामान्य उर्दू लिपि में लिखे गए पूर्वज की ओर था। किंतु, ऊपर हम देख चुके हैं, 'पदमावत' की आदि प्रति नागरी लिपि में थी, जिसके उर्दू-लिपि के रूपांतर से प्रस्तुत प्रतियों की विभिन्न परपराएँ निकलीं। इसलिए और भी ग्रियर्सन का संस्करण आदि प्रति के पाठ तक न पहुँच कर बीच ही तक रह गया है। उन्हें जायसी की भाषा तथा उनकी छद-योजना के भी स्वरूपों का ठोक-ठीक परिज्ञान नहीं ज्ञात होता है।

शुक्ल जी का संस्करण—पं० रामचन्द्र शुक्ल ने अपने संस्करण वक्तव्य में लिखा है कि उनके देखने में 'पदमावत' के चार संस्करण

३—एक नवलकिशोर प्रेस का, दूसरा प० रामजसन मिश्र का, तीसरा कानपुर के किसी प्रेस का, और चौथा ग्रियर्सन का। उन्होंने लिखा है, "प्रथम दो संस्करण किसी काम के नहीं हैं। एक चौपाई का भी पाठ शुद्ध नहीं। शब्द बिना इस विचार के रक्खे हुए हैं कि उनका कुछ अर्थ भी हो सकता है या नहीं।" इन दोनों के संबंध में ऊपर लिखा जा चुका है। शेष दोनों के संबंध में उन्होंने लिखा है, "कानपुर वाले उर्दू संस्करण को कुछ लोगों ने अच्छा बताया। पर देखने पर वह भी इसी श्रेणी का निकला। उसमें विशेषता इतनी ही है कि चौपाइयों के नीचे अर्थ भी दिया हुआ है।" इस संस्करण से इसके अनंतर शुक्ल जी नें अर्थों के कुछ उदाहरण दिये हैं, पाठ से कोई उदाहरण देकर उसके विषय में और कुछ नहीं कहा है। ग्रियर्सन के संस्करण के संबंध में पहले उन्होंने सुधाकर जी की दी हुई टीका-टिप्पणी की आलोचना की है, उसके अनंतर पाठ के विषय में कहा है, "कहीं-कहीं अर्थ ठीक बैठाने के लिए पाठ भी विकृत कर दिया गया है, जैसे

(१) 'कतहुँ चिरहँटा पंखिन्ह लावा' का 'कतहुँ छरहटा पेखन्ह लावा' कर दिया गया है, और 'छरहटा' का अर्थ किया गया है 'छार लगाने वाले, नकल करने वाले'।

(२) जहाँ 'गथ' शब्द आया है (जिसे हिंदी कविता का साधारण ज्ञान रखने वाले भी जानते हैं) वहाँ 'गँठि' कर दिया गया है।

(३) इसी प्रकार 'अरकाना' (अरकाने दौलत अर्थात् सरदार या उमरा) का 'अरगाना' करके 'अलग होना' अर्थ किया गया है।"

टीकाओं और टिप्पणियों के संबंध में जो कुछ शुक्ल जी ने कहा है, उससे हमारा यहाँ प्रयोजन नहीं है। केवल पाठ के संबंध में हमें विचार करना है।

(१) ३६.५ निर्धारित पाठ है : 'कतहुँ छरहटा पेखन लावा।' शुक्ल जी का कहना है कि 'छरहटा' के स्थान पर 'चिरहँटा' और 'पेखन' के स्थान पर 'पंखिन्ह' होना चाहिए। किंतु शुक्ल जी का बताया हुआ यह पाठ न ग्रियर्सन को किसी हस्तलिखित प्रति में मिला था और न मुझे मिला है। शुक्ल जी को यद्यपि उन्होंने कहा नहीं है, यह पाठ नवलकिशोर प्रेस वाले उक्त संस्करण में मिला था जिसकी पाठभ्रष्टता की स्वतः उन्होंने निंदा की है। और 'चिरहँटा' का अर्थ उन्होंने 'बहेलिया' किया है। यह अर्थ भी उन्होंने किस प्रमाण पर किया है, यह अज्ञात है; न लोक भाषा में यह अर्थ मिलता है, और न जायसी ने ही अन्यत्र कहीं इस अर्थ में शब्द का प्रयोग

किया है। 'पहेलिया' के अर्थ में जायसी ने 'चिरिहार' शब्द का प्रयोग किया है :

फल चिरिहार छुकत लेइ लावा। (७०.४)

गुनि यागइन विनवा चिरिहारू। (७८.१)

यदि 'पहेलिया' अर्थ के लिए जायसी को कोई शब्द रखना होता, तो वे 'चिरहँटा' के स्थान पर कदाचित् 'चिरिहरा' रखते :

फतहुँ 'चिरिहरा' पंखिन्ह लावा।

किंतु लिपि की संभावनाओं के ध्यान से 'चिरिहरा' का 'चिरहँटा' या 'छुरहटा' नहीं हो सकता, इसलिए 'चिरिहरा' पाठ भी मान्य नहीं हो सकता।

'पंखिन्ह' का अर्थ तो 'चिड़ियाँ' होता ही है, और उर्दू लिपि की संभावनाओं के अनुसार 'पंखिन्ह' का 'पेखन्ह' हो भी सकता है। किंतु प्रतियों में 'पेखन' ही मिलता है; न 'पंखिन्ह' मिलता है, और न 'पेखन्ह'। नवलकिशोर प्रेस वाले उक्त संस्करण में शुक्ल जी को पाठ मिला 'पंखी' और ग्रियर्सन में मिला 'पेखन्ह', इसीलिए कदाचित् शुक्ल जी ने 'पंखिन्ह' पाठ कर दिया, यद्यपि कानपुर वाले संस्करण में पाठ 'पेखन' था।

अर्थ की दृष्टि से भी 'छुरहटा पेखन लावा' विचारणीय है। 'छुरहट' शब्द यद्यपि 'पदमावत' के मूल पाठ के छंदों में नहीं मिलता है, एक प्रक्षिप्त छंद में मिलता है, जिसे ग्रियर्सन और शुक्ल जी—दोनों ने अपने-अपने संस्करणों में मूल पाठ में सम्मिलित कर लिया है। ग्रियर्सन में वहाँ पाठ है :

खिन इक महँ 'छुरहट' होइ बीता। दर महँ छुरहि रहै सो जीता।

और शुक्ल जी में है :

खिन इक महँ 'झुरमुट' होइ बीता। दर महँ चढ़ि जो रहै सो जीता।

इस प्रसंग में उक्त नवलकिशोर प्रेस तथा कानपुर वाले संस्करणों का पाठ भी द्रष्टव्य है। नवलकिशोर प्रेस में है :

खिन इक महँ 'झुरमुट' हो बीता। दर महँ चढ़े जो रहै सो जीता।

कानपुर में है :

खिन इक महँ 'झुरमुट' हो बीता। दर महँ चढ़ें जो रहै सो जीता।

ऐसा ज्ञात होता है कि प्रतियों का बहुमत और शब्द की सार्थकता देख कर

शुक्ल जी ने 'छरहँट' के स्थान पर 'झुरमुट' पाठ को ही ग्रहण किया। 'झुरमुट' का अर्थ शुक्ल जी ने किया है 'अँधेरा'। अँधेरा—संध्या का विरल अंधकार—'झुटपुटा' कहलाता है, 'झुरमुट' नहीं। 'झुरमुट' शब्द 'छोटी झाड़ी' के अर्थ में और प्रायः 'झाड़ी' के साथ प्रयुक्त होता है। किंतु यहाँ पर न 'अँधेरा' का कोई प्रसग है, और न 'झाड़ी' का। और एक चरण में 'अंधकार' होकर समाप्त भी नहीं हो जाता, जैसा 'होइ बीता' से नितांत स्पष्ट है। प्रसंग 'छरहट' का ही है। और 'छरहट' की व्युत्पत्ति है 'छल+हट्ट' 'छल'='इंद्रजाल' की 'हट्ट'='हाट'। वहाँ पर अगद और हनुमान के पराक्रम के जो दृश्य आते हैं, महेश के घटे और विष्णु के शख के जो नाद सुनाई पड़ते हैं, समस्त दानव, राक्षस, 'अहुठी बज्र' जो जुटे हुए दिखाई पड़ते हैं, वे सब इस 'छलहट्ट' के ही अग हैं। यही 'छरहट' या 'छलहट्ट' वहाँ सिंघल-वर्णन में भी आया है।

'पेखन' शब्द के सबध मे अधिक कहने की आवश्यकता नहीं है। 'पेखना'='देखना' तो जायसी में बराबर आया ही है, तुलसीदास में 'पेखन' शब्द का भी 'तमाशे' या दृश्य के अर्थ में सुंदर प्रयोग हुआ है :

जग पेखन तुम्ह देखनहारे। बिधि हरि संभु नचावन हारे।

शुक्ल जी 'पेखन' और उसके इस अर्थ से कदाचित् परिचित रहे होंगे, और उनके पास के कानपुर के संस्करण में 'पेखन' पाठ के साथ ही 'तमाशा' उसका अर्थ भी दिया हुआ था। इन अर्थों को ध्यान में रखते हुए यदि पंक्ति का अर्थ दिया जावे, तो वह होगा : "कहीं 'छल की हाट' और 'खेल-तमाशे' लोगों ने लगा रक्खे हैं;" और दूसरे चरण के 'कतहुँ पखडी काठ नचावा' के प्रसंग में यही अर्थ विशेष संगत भी ज्ञात होगा।

(२) 'गथ' शब्द ग्रियर्सन के संस्करण में निम्नलिखित दो स्थलों पर ही आया है :

चेटक लाइ हरहिं मन जौ लहि 'गथ' होइ फेंट। (३८.८)

जो तेहि हाट सजग भा 'गथ' ताकर पै बाँच। (३९.६)

ग्रियर्सन के अतिरिक्त उक्त नवलकिशोर प्रेस तथा कानपुर वाले संस्करणों में भी इन स्थलों पर पाठ 'गाठि' है। यद्यपि शुक्ल जी ने कहा नहीं है, असंभव नहीं कि उन्हे 'गथ' पाठ प० रामजसन के संस्करण या कैथी की उक्त प्रति में मिला हो, जिसका उल्लेख शुक्ल जी ने किया है, क्योंकि इन स्थलों पर 'गथ' पाठ मुझे भी हिंदी और उर्दू लिपियों की अनेक हस्तलिखित

प्रतियों में मिला है। इन स्थलों पर पाठ 'गय' ही होना चाहिए, यह मान्य है।

किंतु, ग्रियर्सन द्वारा यह पाठ-विकृति नहीं हुई है; ग्रियर्सन ने जिन प्रतियों का उपयोग किया था उनमें से अधिकतर में, और जिस प्रति को उन्होंने आधार-प्रति माना था, उसमें पाठ 'गठि' ही था, अतएव 'गठि' पाठ स्वीकार करने में उन्होंने कोई पाठ-विकृति न कर अपने द्वारा निर्धारित सिद्धांतों का पालन ही किया है। उन प्रतियों में भी 'गय' का 'गठि' पाठ की गई पाठ-विकृति के रूप में नहीं हुआ है, वरन् उर्दू लिपि की विशेषताओं के कारण हुआ है, क्योंकि 'गय' और 'गठि' दोनों प्राचीन उर्दू लिपि में एक ही प्रकार से लिखे जाते थे।

(३) ग्रियर्सन में 'अरगाना' शब्द निम्नलिखित स्थल पर आया है :

जावँत अहहिं सकल अरगाना। साँवर लेहु दूरि है जाना। (१२८.२)

'अरगाना' के स्थान पर 'अरकाना' पाठ होने के संबंध में शुक्ल जी का प्रमाण 'अरकाने-दौलत' उसकी व्युत्पत्ति पर आधारित है। 'अरकाना' पाठ और उसकी 'अरकाने-दौलत' व्युत्पत्ति दोनों शुक्ल जी को उक्त कानपुर वाले संस्करण से मिले हैं, यद्यपि शुक्ल जी ने यह लिखा नहीं है— उसमें मूल में पाठ 'अरकाना' तथा अनुवाद में 'अरकाने-दौलत' दिए हुए हैं।

किंतु भाषा की संभावनाओं की ओर उनका ध्यान नहीं गया—'अरकाना' का 'भाषा' में 'अरगाना' और 'अरगाना' का 'उरगाना' या 'ओरगाना' हुआ होना स्वाभाविक है, यथा शोक से 'निसोगा' (४२.७) '(५८.८)' 'अनेक' से 'अनेग' (३७.३) 'विकसे' से 'बिगसे' (३२६.८)। 'पदमावत' में यह शब्द अन्यत्र इसी रूप में आया भी है। एक स्थान पर है :

राघवचेतन चेतन महा। आई 'ओरगि' राजा के रहा। (४४६.१)

'ओरगि' शब्द की इस व्युत्पत्ति को न समझ कर शुक्ल जी ने वहाँ पाठ दिया है :

आऊ सरि राजा के रहा।

यद्यपि नवलकिशोर प्रेस, और कानपुर वाली उक्त प्रतियों में पाठ 'ओरकि' था—जो 'ओरगि' का ही उर्दू लिपि की विशेषताओं के कारण विकृत पाठ है। दूसरे स्थान पर है :

अष्टौ कुरी नाग 'ओरगाने' भै फेसन्हि के माँद। (६६·६)

'ओरगाने' के स्थान पर नवलकिशोर प्रेस वाले में पाठ 'उरके' था, कानपुर वाले में 'अरुके' था, और ग्रियर्सन में 'सच' पाठ स्वीकृत किया गया था। कदाचित् कानपुर वाले संस्करण का ही अनुसरण करते हुए शुक्ल जी ने भी पाठ 'अरुके' दिया। किंतु यदि ग्रियर्सन द्वारा दिये हुये पाठांतरों पर उन्होंने ध्यान दिया होता, तो उन्हें ज्ञात होता कि प्र० १ तथा तृ० १ के अतिरिक्त उनकी सभी प्रतियों में इसके स्थान पर 'उरगाने' 'उरगानेउ' 'ओरगाएन' 'अउँरगे' पाठ है। ग्रियर्सन ने स्वतः इस स्थल पर—कदाचित् 'ओरगाने' शब्द से अपरिचित होने के कारण—प्रतियों के बहुमत एवं आधार-प्रति विषयक अपने दोनों सिद्धान्तों का उल्लंघन किया था। शुक्ल जी शब्द से तो परिचित थे, किंतु उन्होंने कदाचित् ग्रियर्सन के संस्करण में दिये हुए पाठांतरों पर कोई ध्यान नहीं दिया, अन्यथा कदाचित् वे भी 'ओरगाने' पाठ ही स्वीकार करते।

इन सबसे भी अधिक विचारणीय यह है कि शुक्ल जी ने पूर्ववर्ती संस्करणों के विषय में इस प्रकार के आरोप किसी भी हस्तलिखित प्रति के प्रमाण पर नहीं किए हैं, वरन् या तो किसी मुद्रित संस्करण के आधार पर किए हैं, और या तो अपने अनुमानों के प्रमाण पर। हस्तलिखित प्रति के नाम पर केवल एक प्रति का उपयोग उन्होंने किया था, जिसके विषय में उन्होंने केवल इतना कहा है कि वह कैथी लिपि में थी। उन्होंने यह नहीं बताया है कि वह उन्हें कहाँ से मिली थी, किस तिथि की थी, किसकी लिखी हुई थी, किस आकार-प्रकार की थी, और उसका पाठ कैसा था। पूर्ववर्ती संस्करणों के पाठों के बारे में तो उन्होंने इतना लिखा, उक्त हस्तलिखित प्रति के पाठ के सम्बन्ध में एक शब्द भी नहीं लिखा।

शुक्ल जी के संस्करण का पाठ जैसा है, उसे भी हमें देखना है। उसमें *निम्नलिखित तैंतालीस छंद भी पाए जाते हैं, जो प्रस्तुत संस्करण में प्रक्षिप्त* माने गए हैं :

५५ अ, ६० अ, १५६ अ, १८० अ, २६२ अ, २६२ आ, २६२ इ, २६८ अ, २६८ आ, २६८ इ, २६८ ई, २६८ उ, २७४ अ, २८४ अ, २८४ आ, २८४ इ, २६३ अ, ३१५ अ, ३१५ आ, ३१५ इ, ३१६ अ, ३३१ अ, ३६१ अ, ३८३ अ, ३८३ आ, ३८३ इ, ३८३ ई, ४१८ अ, ८१८ ई, ४१८ उ, ४२६ अ, ४४५ अ, ४४५ इ, ४६८ अ, ५२८ उ, ५७४ अ, ५८३ अ, ५८३ आ, ५८३ इ, ५६३ अ१, ६०३ अ, ६११ अ१, ६३३ अ।

प्रतियों में मिला है। इन स्थलों पर पाठ 'गथ' ही होना चाहिए, यह मान्य है।

किंतु, ग्रियर्सन द्वारा यह पाठ-विकृति नहीं हुई है; ग्रियर्सन ने जिन प्रतियों का उपयोग किया था उनमें से अधिकतर में, और जिस प्रति को उन्होंने आधार-प्रति माना था, उसमें पाठ 'गठि' ही था, अतएव 'गठि' पाठ स्वीकार करने में उन्होंने कोई पाठ-विकृति न कर अपने द्वारा निर्धारित सिद्धांतों का पालन ही किया है। उन प्रतियों में भी 'गथ' का 'गठि' पाठ की गई पाठ-विकृति के रूप में नहीं हुआ है, वरन् उर्दू लिपि की विशेषताओं के कारण हुआ है, क्योंकि 'गथ' और 'गठि' दोनों प्राचीन उर्दू लिपि में एक ही प्रकार से लिखे जाते थे।

(३) ग्रियर्सन में 'अरगाना' शब्द निम्नलिखित स्थल पर आया है :

जावँत अहहिं सकल अरगाना। साँवर लेहु दूरि है जाना। (१२८.२)

'अरगाना' के स्थान पर 'अरकाना' पाठ होने के संबंध में शुक्ल जी का प्रमाण 'अरकाने-दौलत' उसकी व्युत्पत्ति पर आधारित है। 'अरकाना' पाठ और उसकी 'अरकाने-दौलत' व्युत्पत्ति दोनों शुक्ल जी को उक्त कानपुर वाले संस्करण से मिले हैं, यद्यपि शुक्ल जी ने यह लिखा नहीं है—उसमें मूल में पाठ 'अरकाना' तथा अनुवाद में 'अरकाने-दौलत' दिए हुए हैं।

किंतु भाषा की संभावनाओं की ओर उनका ध्यान नहीं गया—'अरकाना' का 'भाषा' में 'अरगाना' और 'अरगाना' का 'उरगाना' या 'ओरगाना' हुआ होना स्वाभाविक है, यथा शोक से 'निसोगा' (४२.७) '(५८.८)' 'अनेक' से 'अनेग' (३७.३) 'बिकसै' से 'बिगसै' (३२६.८)। 'पदमावत' में यह शब्द अन्यत्र इसी रूप में आया भी है। एक स्थान पर है :

राघवचेतन चेतन महा। आई 'ओरगि' राजा के रहा। (४४६.१)

'[illegible]' शब्द की इस व्युत्पत्ति को न समझकर शुक्ल जी ने वहाँ पाठ [illegible]या है :

आऊ सरि राजा के रहा।

यद्यपि नवलकिशोर प्रेस, और कानपुर वाली उक्त प्रतियों में पाठ 'ओरकि' था—जो 'ओरगि' का ही उर्दू लिपि की विशेषताओं के कारण विकृत पाठ है। दूसरे स्थान पर है :

अष्टी कुरी नाग 'ओरगाने' भै केसन्हि के यौंद। (६६'६)

'ओरगाने' के स्थान पर नवलकिशोर प्रेस वाले में पाठ 'उरके' था, कानपुर वाले में 'अरुझे' था, और ग्रियर्सन में 'रुव' पाठ स्वीकृत किया गया था। कदाचित् कानपुर वाले संस्करण का ही अनुसरण करते हुए शुक्ल जी ने भी पाठ 'अरुझे' दिया। किंतु यदि ग्रियर्सन द्वारा दिये हुये पाठांतरों पर उन्होंने ध्यान दिया होता, तो उन्हें ज्ञात होता कि प्र० १ तथा तृ० १ के अतिरिक्त उनकी सभी प्रतियों में इसके स्थान पर 'उरगाने' 'उरगानेउ' 'ओरगाएन' 'अउँरगे' पाठ है। ग्रियर्सन ने स्वतः इस स्थल पर—कदाचित् 'ओरगाने' शब्द से अपरिचित होने के कारण—प्रतियों के बहुमत एवं आधार-प्रति विषयक अपने दोनों सिद्धान्तों का उल्लंघन किया था। शुक्ल जी शब्द से तो परिचित थे, किंतु उन्होंने कदाचित् ग्रियर्सन के संस्करण में दिये हुए पाठांतरों पर कोई ध्यान नहीं दिया, अन्यथा कदाचित् वे भी 'ओरगाने' पाठ ही स्वीकार करते।

इन सबसे भी अधिक विचारणीय यह है कि शुक्ल जी ने पूर्ववर्ती संस्करणों के विषय में इस प्रकार के आरोप किसी भी हस्तलिखित प्रति के प्रमाण पर नहीं किए हैं, वरन् या तो किसी मुद्रित संस्करण के आधार पर किए हैं, और या तो अपने अनुमानों के प्रमाण पर। हस्तलिखित प्रति के नाम पर केवल एक प्रति का उपयोग उन्होंने किया था, जिसके विषय में उन्होंने केवल इतना कहा है कि वह कैथी लिपि में थी। उन्होंने यह नहीं बताया है कि वह उन्हें कहाँ से मिली थी, किस तिथि की थी, किसकी लिखी हुई थी, किस आकार-प्रकार की थी, और उसका पाठ कैसा था। पूर्ववर्ती संस्करणों के पाठों के बारे में तो उन्होंने इतना लिखा, उक्त हस्तलिखित प्रति के पाठ के सम्बन्ध में एक शब्द भी नहीं लिखा।

शुक्ल जी के संस्करण का पाठ जैसा है, उसे भी हमें देखना है। उसमें निम्नलिखित तैंतालीस छंद भी पाए जाते हैं, जो प्रस्तुत संस्करण में प्रक्षिप्त माने गए हैं :

५५ अ, ६० अ, १५६ अ, १८० अ, २६२ अ, २६२ आ, २६२ इ, २६८ अ, २६८ आ, २६८ इ, २६८ ई, २६८ उ, २७४ अ, २८४ अ, २८४ आ, २८४ इ, २६३ अ, ३१५ अ, ३१५ आ, ३१५ इ, ३१६ अ, ३३२ अ, ३६१ अ, ३८३ अ, ३८३ आ, ३८३ इ, ३८३ ई, ४१८ अ, ८१८ ई, ४१८ उ, ४२६ अ, ४४५ अ, ४४५ इ, ४६८ अ, ५२८ उ, ५७४ अ, ५८३ अ, ५८३ आ, ५८३ इ, ५६३ अ१, ६०३ अ, ६११ अ१, १३३ अ।

विभिन्न प्रतियों का प्रक्षेप-संबंध निर्धारित करते हुए इनमें से अधिकतर का विस्तृत विवेचन किया जा चुका है, केवल दो के संबंध में यहाँ कुछ कहना आवश्यक है। एक है ५५ अ, जो प्रस्तुत संस्करण के लिए प्रयुक्त किसी भी प्रति में नहीं मिलता है। ग्रियर्सन के संस्करण में अवश्य यह छंद है, किंतु उन्हें भी केवल एक कैथी की प्रति में मिला था, जो, जैसा बताया जा चुका है, पाठ की दृष्टि से उनके और मेरे द्वारा प्रयुक्त समस्त प्रतियों से नीचे की पीढ़ी की थी। शुक्ल जी ने केवल ग्रियर्सन के प्रमाण पर इसे स्वीकृत किया, या कोई और प्रमाण उन्हें इसके पक्ष में प्राप्त हुए थे, यह अज्ञात है।

दूसरा, ऊपर दिया हुआ १२३ अ है। यह शुक्ल जी के संस्करणमें प्रायः अंत में आता है, और कथा के गूढार्थ का निर्देश करता है—चित्तौर को तन, राजा को मन, सिंहल को हृदय, पद्मिनी को बुद्धि आदि बताता है। यह छंद शुक्ल जी को नवलकिशोर प्रेस, और कानपुर वाले संस्करणों में मिला था, कदाचित् इसीलिए उन्होंने इसे प्रामाणिक मान कर ग्रंथ के मूल पाठ में स्थान दिया। मुझे केवल दो हस्तलिखित प्रतियों में यह छंद मिला है, प्र० १, तथा (तृ० १)। ऊपर हम यह देख चुके हैं कि यह प्रतियाँ पाठ परम्परा में सब से नीची पीढ़ी में आती हैं। इसलिए यह छंद निश्चित रूप से प्रक्षिप्त है। किंतु इस छंद को प्रामाणिक मान लेने के कारण जायसी के रूपक-निर्वाह के विषय में शुक्ल जी ने और उनके पीछे के जायसी के समस्त समालोचकों ने कितना बड़ा वितंडावाद किया है!

प्रक्षिप्त छंदों की उपर्युक्त तालिका को देखने पर ज्ञात होगा कि ग्रंथ के उस अंश में जो ग्रियर्सन के भी संस्करण में आता है, १८५ अ को छोड़ कर सभी उक्त संस्करण के हैं, क्योंकि वे अन्यथा किसी भी एक प्रति में नहीं मिलते; शेषांश के समस्त प्रक्षिप्त छंद यदि किसी एक प्रति में मिलते हैं तो वह है द्वि० ४, अर्थात् कानपुर का वह संस्करण जिसके विषय में शुक्ल जी के विचारों से हम ऊपर परिचित हो चुके हैं। इस अंश में उन्होंने द्वि० ४ का केवल एक अतिरिक्त छंद छोड़ा है, वह है ४१६ अ। फलतः दोनों संस्करणों का ऋण शुक्ल जी पर प्रकट है, और कम से कम प्रक्षिप्त और प्रामाणिक-छंद-निर्णय में रुपये में सवा पंद्रह आने है। जिनका इतना ऋण शुक्ल जी पर है, उनकी जिन शब्दों में खबर शुक्ल जी ने अपनी प्रस्तावना में ली है, वह शुक्ल जी जैसे समालोचक के लिए ही संभव था।

ग्रियर्सन के संस्करण के पाठ पर विचार करते हुए हमने ऊपर देखा है कि उसमें प्रतिलिपि की उन भूलों में से एक—ग्यारहवीं—आ गई है जिनके

आधार पर हमने विभिन्न प्रतियों का प्रतिलिपि-संबंध निर्धारित किया है। यह भूल शुक्ल जी के संस्करण में भी आ गई है। ग्रियर्सन के अतिरिक्त यह द्वि० ४—अर्थात् कानपुर के संस्करण—में भी मिलती है। दोनों संस्करणों का जैसा ऋण शुक्ल जी के ऊपर है, उससे यह स्वाभाविक ही था।

प्रतिलिपि-परम्परा, प्रक्षेप-परम्परा, पाठांतर-परम्परा आदि के आधार पर ग्रंथ के पाठ-निर्धारण की बात ही शुक्ल जी के संस्करण के विषय में न सोचनी चाहिए, क्योंकि प्रति के नाम पर केवल एक हस्तलिखित प्रति का उन्होंने उपयोग किया, और वह भी किस अंश तक—यह बताने की उन्होंने आवश्यकता नहीं समझी।

उर्दू लिपि के कारण पाठ-विकृति की संभावनाओं पर उन्होंने अवश्य कुछ ध्यान दिया था, किंतु ग्रियर्सन ने भी इस प्रकार का ध्यान दिया था, और दोनों में अंतर अधिक नहीं है। ग्रियर्सन की भाँति ही शुक्ल जी का ध्यान भी इस बात की ओर नहीं गया कि वास्तव में 'पदमावत' की आदि प्रति उर्दू नहीं, नागरी लिपि में थी। इसलिए वे भी उसी प्रकार मार्ग के बीच में ही रह गए जैसे ग्रियर्सन। जायसी की भाषा और छंद-योजना के स्वरूपों का भी ठीक-ठीक परिज्ञान उनके संस्करण में नहीं दिखाई पड़ता है।

डा० सूर्यकांत शास्त्री का संस्करण—यह संस्करण भी ग्रंथ के उसी अंश तक का है, जिसका ग्रियर्सन का है, और इसके सम्पादक ने प्रस्तावना में यह भी कहा है कि इस संस्करण का पाठ उन्होंने सावधानी के साथ ग्रियर्सन के संस्करण पर आधारित रक्खा है। उन्होंने यह भी लिखा है कि ग्रियर्सन का पाठ उन्हें प्रामाणिक ज्ञात हुआ है, क्योंकि वह पंजाब (अब पश्चिमी पंजाब) यूनिवर्सिटी के पुस्तकालय में सुरक्षित एक प्राचीन हस्तलिखित प्रति के पाठ से मिलता है।[१] उन्होंने इस प्रति का कोई परिचय नहीं दिया है, इसलिए उनके इस कथन पर विचार करना असम्भव है। और शुक्ल जी के संस्करण का उल्लेख करते हुए उन्होंने लिखा है कि "यह ग्रियर्सन के संस्करण से बहुत भिन्न है, और उसकी यह भिन्नता भी ग्रंथ के पाठ और उसकी भाषा—दोनों के विषय में ग़लत दिशा में है।" ऊपर ग्रियर्सन और शुक्ल जी के संस्करणों के संबंध में पर्याप्त रूप से विचार हो चुका है। इसलिए संपादक के इस कथन पर भी विचार करने की आवश्यकता नहीं है।

[१] खेद है कि यह प्रति यत्न करने पर भी नहीं प्राप्त हो सकी।

डा० सूर्यकांत के संस्करण का पाठ डा० ग्रियर्सन के पाठ पर ही आधारित है, इसलिए ग्रियर्सन के संस्करण पर विचार कर लेने के अनंतर उसके विषय में अलग से कुछ कहने की आवश्यकता नहीं है। डा० सूर्यकांत के संस्करण का महत्त्व वस्तुतः उनके द्वारा प्रस्तुत की गई 'पदमावत' की शब्द-सूची (Index) के कारण है, और प्रस्तुत संस्करण में उसका यथेष्ट उपयोग किया गया है।

पं० भगवती प्रसाद पांडेय का संस्करण—सम्पादक ने अपने दीबाचे में ग्रंथ के मूल पाठ के चार संस्करणों का उल्लेख किया है—एक नवलकिशोर प्रेस लखनऊ का, दूसरा कानपुर का, तीसरा ग्रियर्सन का, और चौथा शुक्ल जी का। इन पर अलग-अलग कोई विचार न करके, उन्होंने लिखा है "इसमें कोई शक नहीं कि पंडित जी (पं० रामचन्द्र शुक्ल) मौसूफ ने तसनीफात जायसी की तालीफ फरमा कर जो एहसान अदबी दुनिया पर फरमाया है, उसकी तारीफ करना आफताब को चिराग़ दिखाना है।...'जायसी-ग्रंथावली' के सिवाए जितने भी नुस्खे 'पदमावत' के मिले वह सब बेहद मशकूक और गलत हैं।" इसीलिए इस संस्करण का पाठ उन्होंने शुक्ल जी के सस्करण के ही अनुसार रक्खा है। पांडेय जी ने जिन प्रतियों का उल्लेख किया है, उन पर ऊपर विचार किया जा चुका है, और पांडेय जी का संस्करण पाठ की दिशा में कोई नया प्रयास नहीं है, इसलिए उसके संबंध में अलग से विचार करने की आवश्यकता नहीं है।

डा० लक्ष्मीधर का संस्करण—यह ग्रियर्सन की ही दिशा में प्रस्तुत संस्करण के छंद २७५ से ३७३ तक के ग्रंथ का संस्करण है। इसके लिए प्रयुक्त हस्तलिखित प्रतियाँ निर्धारित पीढ़ियों के अनुसार निम्न-लिखित हैं :

(१) तृ० १, २, ३
(२) द्वि० २, ३
(३) प्र० १

इन प्रतियों के अतिरिक्त संपादक ने शुक्ल जी के संस्करण का भी उपयोग किया है।

प्रस्तावना में सपादक ने कहा है कि उन्होंने भी ग्रियर्सन की भाँति द्वि० ३ को आधार प्रति माना है। इससे अधिक प्रकाश उन्होंने अपने सपादन-

सिद्धान्तों पर नहीं डाला है। यह अतः सम्पादन किस प्रकार का हुआ है, यह हमें बहुत कुछ अपने ही यत्नों से समझना होगा।

इस संस्करण की छंद-संख्या १०६ है, किन्तु इसमें ऐसे भी सात छंद सम्मिलित कर लिए गए हैं जिन्हें ऊपर हमने प्रक्षिप्त पाया है। इनमें से चार ही—२८८ अ, २८८ आ, ३३२ अ, ३६१ अ—ऐसे हैं जो कुछ अन्य प्रतियों के साथ द्वि० ३ में भी मिलते हैं, और कदाचित् मुख्यतः द्वि० ३ के प्रमाण पर मूल पाठ में ग्रहण कर लिए गए हैं। शेष तीन—२८४ अ, आ, इ—अन्य प्रतियों में ही हैं, द्वि० ३—आधार-प्रति—में नहीं है, और फिर भी मूल पाठ में सम्मिलित कर लिए गए हैं। अतः यह प्रकट है कि ग्रियर्सन की भाँति इन्होंने भी आधार-प्रति के सिद्धान्त का यथेष्ट निर्वाह नहीं किया है।

दूसरी ओर संपादक ने ग्रंथ के परिशिष्ट में इस अंश के उन छंदों का भी पाठ दिया है जिन्हें उन्होंने प्रक्षिप्त माना है। इन छंदों में उन्होंने प्रस्तुत संस्करण में मूल पाठ में रक्खे गए छंद ३७७ को भी रक्खा है, जो उनके और मेरे द्वारा प्रयुक्त समस्त प्रतियों में पाया जाता है, और अन्य समस्त संस्करणों में भी मिलता है। उनकी इस भूल का कारण यह है कि उनकी दृष्टि केवल उपर्युक्त अंश की सीमा के भीतर संकुचित थी। उन्हें यह छंद द्वि० ३ में छंद ३७२ और ३७३ (प्रस्तुत संस्करण) के बीच मिला, और यहीं पर उन्होंने उक्त छंद को अपनी अन्य प्रतियों में ढूँढ़ा, और जब वह अन्य प्रतियों में यहाँ न मिला, तो इसे प्रक्षिप्त मान लिया। अपनी सीमा से केवल चार छंद बाहर तक यदि संपादक ने दृष्टि डाली होती, तो उन्हें वहाँ यह छंद उनकी अन्य समस्त प्रतियों में मिल जाता।

जिन छंदों को उन्होंने इस परिशिष्ट में दिया है, ऐसा ज्ञात होता है कि वैसे भी उन्हें पर्याप्त ध्यान से नहीं देखा, क्योंकि छंद २८४ और २८५ (प्रस्तुत संस्करण) के बीच में आने वाले तीन प्रक्षिप्त छंदों का पाठ उन्होंने एक बार शुक्ल जी के संस्करण के प्रक्षिप्त छंदों के रूप में, और पुनः तृ० ३ के प्रक्षिप्त छंदों के रूप में दिया है।

इस संस्करण में भी ग्रियर्सन के संस्करण की भाँति द्वि० ३ को आधार-प्रति मानने के कारण उसकी अशुद्धियाँ आ गई हैं। ऐसी केवल एक भूल की ओर ध्यान आकृष्ट करना यथेष्ट होगा, जो ऊपर प्रतियों के प्रतिलिपि-संबंध निर्धारित करने वाली भूलों की सूची में सम्मिलित की गई है—यह है उस सूची की बीसवीं। निर्धारित पाठ है 'रानी तुम्ह ऐसी सुकुआरा। फूल

थाप तनु जीउ तुम्हारा।' (१२१.२) दूसरे चरण का पाठ इस संस्करण में है : 'पान फूल के रहहु अधारा।' यह चरण समस्त प्रतियों में १३४.२ का दूसरा चरण है, और उसी प्रकार द्वि० ३ में भी है, और जैसा हम देख चुके हैं, प्रसंग की दृष्टि से भी वही उपयुक्त है, यहाँ नहीं। इसलिए अशुद्धि प्रकट है।

इस संस्करण के लिए संपादक ने इंडिया ऑफ़िस, लंदन के बाहर की ही नहीं, इंडिया ऑफ़िस लंदन की भी कुल प्रतियों को देखने की आवश्यकता नहीं समझी। पाठ की दृष्टि के ऊपर हमने देखा है पं० १ का विशेष महत्त्व है: संपूर्ण ग्रंथ में उसमें सब से कम—केवल तीन—प्रक्षिप्त छंद हैं, और ग्रंथ के इस अंश में कोई भी नहीं हैं। यह प्रति भी इंडिया ऑफ़िस, लंदन की है। किंतु इसका उपयोग संपादक ने नहीं किया है।

संपादक ने यह पाठ लंदन यूनिवर्सिटी की पी-एच०डी० की थीसिस के रूप में संपादित किया है, किंतु न इसमें उन्होंने उर्दू या हिंदी लिपियों की विभिन्न प्रवृत्तियों के कारण ग्रंथ की पाठ-विकृति की संभावनाओं पर कोई विचार किया है, न प्रतियों की प्रतिलिपि-परम्परा, प्रक्षेप-परम्परा, और पाठांतर-परम्परा पर विचार किया है, और न जायसी की भाषा और छंद-योजना पर पाठ-निर्धारण में यथेष्ट ध्यान दिया है। फिर भी आश्चर्य यह है कि इसी को समालोचनात्मक संपादन कहा गया है, और इसी पर संपादक को लंदन यूनिवर्सिटी की पी-एच० डी० उपाधि मिली है।

संपादित पाठ के अतिरिक्त डॉ० लक्ष्मीधर ने इस अंश का अंग्रेजी अनुवाद और शब्द-सूची (Glossary) भी दी है, और इसके अतिरिक्त जायसी और नानक की भाषाओं की तुलनात्मक समीक्षा की है। उनकी शब्द-सूची से ही प्रस्तुत संस्करण में कुछ सहायता ली जा सकी है।

पद्मावत

[१]

सँवरौं आदि एक करतारू। जेइँ जिउ दीन्ह कीन्ह संसारू[1]।
कीन्हेसि प्रथम जोति परगासू। कीन्हेसि तेहिं[2] पिरीति[3] कबिलासू[4]।
कीन्हेसि अगिनि पवन जल[5] खेहा। कीन्हेसि बहुतइ रंग उरेहा[6]।
कीन्हेसि धरती सरग पतारू। कीन्हेसि बरन बरन अवतारू।
कीन्हेसि सात दीप[7] ब्रह्मंडा[8]। कीन्हेसि भुवन चौदहउ[9] खंडा।
कीन्हेसि दिन दिनअर[10] ससि राती। कीन्हेसि नखत तराइन पाँती[11]।
कीन्हेसि धूप सीउ औ[12] छाहाँ। कीन्हेसि मेघ बीजु तेहि[13] माहाँ।

कीन्ह सबइ[14] अस जाकर दोसरहि छाज न काहु।
पहिलेहिं तेहिक[15] नाउँ लइ कथा कहौं[16] अवगाहु[17] ॥१

[२]

कीन्हेसि हेवँ समुंद्र अपारा[1]। कीन्हेसि मेरु खिखिंद[2] पहारा।
कीन्हेसि नदी नार औ झरना। कीन्हेसि मगर मंछ बहु बरना[3]।

---

[१] १. प्र० २ करतारू २. प्र० १, (तृ० १), च० १ तिन्हहि ३. प्र० २ प्रिथिमी, द्वि० २, ३ परबत ४. (तृ० १) कैलासू ५. प्र० २ अरु ६. द्वि० ३ औ रेहा ७. द्वि० २ सात सरग, द्वि० ४ सपत मही, तृ० २ सपत भरत, तृ० ३ सत्त सरा ८. द्वि० ५ महिमंडा, द्वि० ६ नौखंडा ९. प्र० २ चतुर्दस १०. द्वि० ४ दिनेस ११. प्र० २ धूप दीप बहु भांती १२. प्र० २ बहु १३. प्र० २ जल १४. (तृ० १), तृ० २ कीन्हेसि सब १५. प्र० १, द्वि० ४ ठाकर, द्वि० १ तेहि कै, द्वि० ३, तृ० २, पं० १ तेहि का १६. द्वि० ६, पं० १ करौं १७. प्र० १, द्वि० ६ अरु काह, द्वि० ५, (तृ० १), तृ० २ अरकाह, तृ० ३ अरिगाहु।

[२] १. द्वि० २ औंर समुद्र अपारा, द्वि० ३ सातउ समुँद अपारा, द्वि० ४ बहम (हेम?) समुंद अपारा, द्वि० ५ सात समुंद अपारा, द्वि० ६ भुवन समुंद अपारा, २. प्र० २ गहिवउ मेरु, तृ० ३ मेरु खंड खंड ३. द्वि० २ तरना

कीन्हेसि सीप मोंति बहु भरे। कीन्हेसि बहुतइ नग निरमरे।
कीन्हेसि बनखँड औ जरि मूरी। कीन्हेसि तरिवर तार खजूरी।
कीन्हेसि साउज आरन रहहीं। कीन्हेसि पंखि[४] उड़हिं जह[५] चहहीं।
कीन्हेसि बरन सेत औ स्यामा। कीन्हेसि भूख नींद बिसरामा।
कीन्हेसि पान फूल बहु[६] भोगू। कीन्हेसि बहु ओषद बहु[७] रोगू।

निमिख न लाग करत ओहि सबइ कीन्ह पल एक।
गगन अंतरिख[८] राखा[९] बाज[१०] खंभ बिनु[११] टेक ॥[१२]

[३]

कीन्हेसि मानुस दिहिस[१] बड़ाई। कीन्हेसि अन्न भुगुति तेहिं पाई[२]।
कीन्हेसि राजा भूँजहिं राजू। कीन्हेसि हस्ति घोर तिन्ह[३] साजू।
कीन्हेसि तिन्ह कहँ[४] बहुत[५] बेरासू[६]। कीन्हेसि कोइ ठाकुर कोइ दासू।
कीन्हेसि दरब गरब जेहिं होई। कीन्हेसि लोभ अघाइ न कोई।
कीन्हेसि जिअन[७] सदा सब चहा। कीन्हेसि मीचु न कोई रहा।
कीन्हेसि सुख औ कोड[८] अनंदू। कीन्हेसि दुख चिंता औ[९] दंदू[१०]।
कीन्हेसि कोइ भिखारि कोइ धनी। कीन्हेसि सँपति बिपति पुनि[११] घनी।

कीन्हेसि कोइ निभरोसी[१२] कीन्हेसि कोइ बरिआर।
छार हुते[१३] सब कीन्हेसि पुनि कीन्हेसि[१४] सब[१५] छार ॥

[४]

कीन्हेसि अगर कस्तुरी बेना। कीन्हेसि भीवँसेन औ चेना।

---

४. प्र० १ पछि ५. प्र० २ उडन कहँ, द्वि० ७ उड़ै जो ६. तृ० ३ औ ७. द्वि० २ औ ८. प्र० १ अंतरिछ ९. प्र० १ राखेउ, द्वि० १ राखेसि, १०. द्वि० १, तृ० २ बाम्ह, द्वि० ४ बाह्र ११. द्वि० ६ पुनि १२. प्र० २ में इस छंद के पूर्व छंद २ की पाँच पंक्तियाँ दुहराई हुई हैं।

[३] १. प्र०१, द्वि० १, तृ० ३ दीन्हि २. द्वि० ३, ५ तेहि खाई, तृ० ३ तिन्ह आई ३. द्वि० ३ घोर बहु, द्वि० ६ घोरन्ह ४. द्वि० १ तिन्हहि, च० १ बहु गुन ५. च० १ भोग ६. द्वि० ५ परासू ७. तृ० ३ जीव ८. द्वि० ५, (तृ० १) कोटि ९. तृ० २, ३ बहु १०. द्वि० १, ५, (तृ० १) धंदू ११. द्वि० १, ३, ६, च० १ बहु, द्वि० ५ तृ० ३ संग, प्र० १, २ अति १२. तृ० ३ भरोसा १३. द्वि० ३ छार हुते १४. च० १ अंत कीन्ह १५. प्र० २, तृ० २, चा०, ? ३ तिन्ह।

कीन्हेसि नाग मुखहि विष बसा। कीन्हेसि मंत्र हरइ जेहिं डसा।
कीन्हेसि अमिअ जिअन जेहि पाएँ[1]। कीन्हेसि विष जो मीचु तेहि खाएँ[2]।
कीन्हेसि ऊखि मीठि रस भरी। कीन्हेसि करुइ वेलि बहु फरी[3]।
कीन्हेसि मधु लावइ लइ माखी। कीन्हेसि भवँर पतंग[4] औ पाँखी।
कीन्हेसि लोवा उंदुर[5] चाँटी[6]। कीन्हेसि बहुत रहहिं खनि माँटी।
कीन्हेसि राकस भूत परेता। कीन्हेसि भोकस देव दयंता[7]।

कीन्हेसि सहस अठारह बरन बरन उपराजि।
भुगुति दिहेसि पुनि सब कहँ सकल साजना साजि॥

[५]

धनपति[1] उहइ जेहिक संसारू। सबहि देइ नित घट न भँडारू।
जावँत जगति हस्ति औ चाँटा। सब कहँ भुगुति रात दिन बाँटा।
ताकरि दिस्टि सबहिं उपराहीं। मित्र सत्रु कोइ विसरइ नाहीं।
पंखि[2] पतंग न विसरइ कोई। परगट गुपुत जहाँ लगि होई।
भोग भुगुति बहु भाँति उपाई। सबहि खियावइ[3] आपु न खाई।
ताकर इहइ सो[4] खाना पिअना। सब कहँ देइ[5] भुगुति औ जिअना।
सबहि आस ताकरि हरि स्वाँसा[6]। ओह न काहु कइ आस निरासा।

जुग जुग देत घटा[7] नहिं उभै हाथ तस कीन्ह।
अउर जो देहिं[8] जगत महँ सो सब ताकर दीन्ह॥

---

[४] १. द्वि० ४ जिअइ, द्वि० ६, तृ० ३ जीव २. द्वि० १ पाएँ, जो खाइ मर जाएँ, द्वि० ५ पाएहि, मीचु तेहि खाएहिं, तृ० ३ पाई, मीचु तेहि खाई ३. द्वि० २ तूँबरी, (तृ० १) विष भरा ४. द्वि० १, ३, ६, पं० १ पंखि, तृ० ३ नाग, द्वि० ७ फुनिग ५. प्र०१ एँदुर, द्वि० ७ इंदुर ६. तृ० २ कीन्हेसि मधु लावइ चाँटी ७. द्वि० ६, तृ० २ कीन्हेसि राकस देव दयंता। कीन्हेसि भोकस भूत परेता (तृ० २ दयंता)।

[५] १. द्वि० ७ धनइत २. (तृ० १) फनिग ३. द्वि० २, ३ खवावइ ४. प्र० २, द्वि० २, ३, ४ जो ५. द्वि० ५ सबहिन्ह देइ तृ० २, पं० १ सब ही दीन्ह ६. प्र० १ सबहि सो ताकरि हेरइ आसा। द्वि० ५ सबइ आस हर ताकरि आसा ७. द्वि० ७, पं० १ न निघटेउ, द्वि० ६ घटइ नहिं, तृ० २ खाइ नहिं ८. द्वि० १, २, ५ देन, तृ० ३ (दे) इ।

[६]

आदि सोई बरनौं बड़[1] राजा। आदिहुँ[2] अंत राज जेहि छाजा।
सदा सरबदा राज करेई। औ जेहि चहइ राज तेहि देई।
छत्रहि अछत[3] निछत्रहि छावा[4]। दोसर नाहिं जो सरवरि पावा।
परवत ढाह देख सब लोगू। चाँटहि करइ हस्ति कर जोगू।
बज्रहि तिन कै मारि[5] उड़ाई[6]। तिनहि बज्र की देइ बड़ाई।
ताकर कीन्ह न जानइ कोई। करै सोइ जो मन चित[7] होई।
काहू भोग[8] भुगुति सुख सारा। काहू भीख भवन[9] दुख मारा[10]।

सबइ नास्ति वह अस्थिर अइस साज जेहिं केर[11]।
एक साजइ अउ भाँजइ चहइ सँवारइ फेर॥

[७]

अलख अरूप[1] अबरन सो करता। वह सब सों सब ओहिसों[2] बरता[3]।
परगट गुपुत सो[4] सरब बियापी[5]। धरमी चीन्ह चीन्ह नहिं[6] पापी[7]।
ना ओहि पूत न पिता न माता। ना ओहि कुटुँब न कोइ[8] सँग नाता।
जना न काहु न कोइ ओइँ[8] जना। जहँ लगि सब ताकर सिरजना।
ओइँ सब कीन्ह जहाँ लगि कोई। वह न कीन्ह काहू कर होई।
हुत[9] पहिलेइँ औ अब[10] है सोई। पुनि सो रहहि रहिहि नहिं कोई।

---

[६] १. द्वि० ५ पं० १, एक बरनउँ सो, द्वि० ६ एक बरनौं बड़ २. द्वि० २ आदि ३. प्र० १ छत्र अछत्र, प्र० २ छत्रिहि मारि, द्वि० १ छत्रपति अछरत, द्वि० २, ३, (तृ० १) छतार अछत, द्वि० ६ छत्रहि छत्र ४. द्वि० १ राज जो पावा, तृ० १ निछतार छावा ५. तृ० २ धहि केर ६. प्र० १ लड़ाई ७. प्र० १ करै सो जो मन चिंता, च० १ जो मन चिंत करै सो, पं० १ धरै सोर मन चिंत ८. पं० १ भवन ९. प्र० १ भूँख भीख, द्वि० १ भीख भोग; द्वि० ३ भीख भवन, द्वि० ५ भूख भवन, पं० १ भोग भुवन १०. च० १ फारा ११. द्वि० ६ तोरि।

[७] १. द्वि० १, ३, ४, तृ० ३ रूप २. द्वि० ३, तृ० २ महँ ३. द्वि० १ यह संसार सो ओहि सों बरता ४. तृ० ३ जो ५. पं० १ जहाँ लगि पाप, नहिं पाप ६. द्वि० ५ चीन्ह न चीन्हइ, द्वि० १ जिन्हे जिन्हे जो ७. प्र० १ मोहि, द्वि० ४ कोउ ८. प्र० १ न कोई ९. प्र० १ हुता, द्वि० १ रहा १०. प्र० १ सो पहिलहि सो

अउर जो होइ सो[११] बाउर अंधा। दिन हुइ चार मरइ करि[१२] धंधा।

जो ओइँ चहा[१३] सो कीन्हेसि करइ जो चाहइ कीन्ह।
बरजन हार न कोई सबइ चहइ[१४] जिअ दीन्ह॥

[८]

एहि बिधि[१] चीन्हहु करहु गिआनू। जस पुरान महँ लिखा बखानू।
जीउ नाहिं पै जिअइ गोसाईं। कर नाहीं पै करइ सबाई[३]।
जीभ नाहिं पै सब किछु बोला। तन नाहीं जो डोलाव सो[४] डोला।
स्रवन नाहिं पै सब किछु सुना। हिअ नाहीं गुनना सब[५] गुना।
नैन नाहिं पै सब किछु देखा। कवन भांति अस[६] जाइ बिसेखा।
ना कोइ है[७] ओहि के रूपा। न ओहि काहु अस तइस अनूपा[८]।
ना ओहि ठाउँ न ओहि बिन ठाऊँ। रूप रेख बिनु निरमल नाऊँ।

ना वह[९] मिला न बेहरा[१०] अइस रहा भरपूरि।
दिस्टिवंत कहँ निअरें अंध मुरुख कहँ[११] दूरि॥

[९]

अउर[१] जो दीन्हेसि रतन अमोला। ताकर मरम न जानइ भोला।
दीन्हेसि रसना औ रस भोगू। दीन्हेसि दसन जो बिहसइ जोगू[२]।

---

११. प्र० १ जो होहिं, द्वि० ७ जो कहै, तृ० १ होइ सो १२. प्र० १ मरहिं, (तृ० १) मरन १३. प्र० १ चाह १४. द्वि० १ चाही, द्वि० २, ४, ५, तृ० ३ चाह।

[८] १. द्वि० ४ तेहि बिधि, द्वि० ५ तेहि बुधि २. द्वि० ५, (तृ० १) चीन्हि जो, तृ० २ चहौं ३. प्र० १ सबै कराही ४. प्र० १ तन नहिं डिगइ डोलाव सो, द्वि० ५ तन नाहीं सब ठाहर ५. द्वि० १, (तृ० १) पै गुन सब, द्वि० ५ पै सब कुछ ६. द्वि० २ सो ७. द्वि० ३ कोइ आहिन ८. प्र० १, द्वि० ७ ना काहू अस रूप अनूपा, प्र० २ वह सब से है रूप अनूपा, द्वि० २ में यह अर्धाली नहीं है, द्वि० ४ ना ओहि अस कोइ तइस अनूपा, द्वि० ५ ना ओहि सों कोइ आहि अनूपा, द्वि० ६ ना कोई वह अइस अनूपा ९. द्वि० ४ है १०. द्वि० ४, ६ बिछुडा, ११. प्र० १ मुगुध कहँ, द्वि० १ मुक्ख पहँ, द्वि० ५ मूरखहि।

[९] १. द्वि० २ पुनि, तृ० ३, पं० १ सबहि २. प्र० १, द्वि० ३ बिहसी लोगू, तृ० ३ बिहुसो जोगू, द्वि० ४ बिहसन जोगू

दीन्हेसि जग देखइ कहँ नैना । दीन्हेसि स्रवन सुनइ कहँ[3] बैना ।
दीन्हेसि कंठ बोल जेहि माहाँ । दीन्हेसि कर पल्लौ बर[4] बाहाँ ।
दीन्हेसि चरन अनूप चलाहीं । सोई जान जेहि दीन्हेसि नाहीं[5] ।
जोबन मरम[6] जान पै बूढ़ा । मिला न तरुनापा जग[7] ढूँढ़ा ।
सुख कर[8] मरम न जानइ[9] राजा । दुखी जान जाकहँ दुख बाजा ।

कया क मरम जान पै रोगी भोगी रहइ निचिंत ।
सब कर मरम गोसाईं जानइ[10] जो घटघट महँ[11] नित[12] ॥

[१०]

अति अपार करता कर[1] करना । बरनि न कोई पारइ[2] बरना ।
सात सरग जौं कागर[3] करई[4] । धरती सात समुँद[4] मसि भरई[5] ।
जावँत जग साखा बन ढाँखा । जावँत केस रोवँ पँखि पाँखा ।
जावँत रेह खेह जहँ ताईं[6] । मेघ बूँद[7] औ गगन तराईं ।
सब लिखनी कइ लिखि[8] संसारू । लिखि न जाइ गति समुँद[9] अपारू ।
एत कीन्ह सब[10] गुन परगटा । अबहूँ समुँद[11] बूँद नहिं घटा ।
अइस जानि मन गरब न होई[12] । गरब करइ मन बाउर सोई[13] ।

---

३. द्वि० २ चह ४. तृ० २ दुइ, तृ० ३ धर ५ तृ० ३ मरम जान जेहि नाहों ६. द्वि० २ जरम ७. प्र० २ नाहि तरु नापा, द्वि० २ न तरुनापा सब, द्वि० ६ न तरुनापा चाहै ८. द्वि० २ पेमक, तृ० ३, च० १ दुख कर ९. तृ० २ न जानै, द्वि० १, ६, च० १, पं० १ जान होइ १०. द्वि० ३ जान पै करता ११. द्वि० १ है, द्वि० २, च० १ बर १२. तृ० ३ चित्त ।

[१०] १ द्वि० ३, ४, तृ० ३ के २ प्र० १, द्वि० ५, ६, (तृ० १) बरनि न कोई पावद, प्र० २ बरनि न कोई सकै अस, द्वि० १ बरै न कोई पारे, द्वि० २ बरनि न पार काहु जिन, द्वि० ३, ४ बरनि न काहू पारै ३. प्र० १, २, द्वि० १, २, ४, ५, ६, (तृ० १) कागद, द्वि० ७ कागन ४. द्वि० ७सरग ५. द्वि० २ होई, होई ६. द्वि० ५, ६, ७, (तृ० १) पं० १ दुनिआई ७. द्वि० ३ पवन ८. द्वि० ५ लिखइ ९ प्र० १, (तृ० १), तृ०३ कवि समुद, द्वि० २ अनि समु द, द्वि० ७ विधि चित्र १०. प्र० १ एते गुनन्ह, प्र० २ एते गुन अहुगुन, द्वि० ३ अइस कीन्ह सब तृ० ३ एक गुनन्हि सब, ११ द्वि० ४ दीन्ह समुँद तेहि, द्वि० ५, तृ० २ अबहुँ समुद महँ, द्वि० ६, पं० १ अबहुँ समुद तेहि, द्वि० ३ तबहुँ समुद १२. द्वि० १ उठा, भूठा १३. द्वि० ३ दहु ।

बड़[13] गुनवंत गोसाईं चहइ सो होइ तेहि[14] बेगि ।
औ अस गुनी सँवारइ जो गुन करइ[15] अनेग ॥

[११]

कीन्हेसि पुरुष एक निरमरा । नाउँ मुहम्मद पूनिउँ करा ।
प्रथम जोति विधि तेहि कै[1] साजी । औ तेहि प्रीति सिस्टि उपराजी ।
दीपक लेसि[2] जगत कहँ[3] दीन्हा । भा निरमल जग मारग चीन्हा ।
जौं न होत अस[4] पुरुष[5] उज्यारा । सूझि न परत पंथ अँधियारा ।
दोसरइँ ठाँव[6] दई[7] ओइँ लिखे । भए धरमी जो पाढ़ित[8] सिखे ।
जगत[9] बसीठ दई[10] ओइँ कीन्हे । दोउ जग तरा नाउँ ओहि[11] लीन्हे ।
जेइँ नहिं लीन्ह जरम सो[12] नाऊ । ताकहँ कीन्ह नरक महँ ठाऊँ ।

गुन अवगुन विधि पूँछत[13] होइहि लेख अउ जोख ।
ओन्ह बिनउब आगे होइ करब[14] जगत कर[15] मोख ॥

[१२]

चारि मीत जो मुहमद ठाऊँ । चहुँक[1] दुहुँ जग[2] निरमर नाऊँ ।
अबाबकर सिद्दीक सयाने[3] । पहिलइँ सिदिक दीन ओइँ[4] आने ।
पुनि जो[5] उमर खिताब सुहाए । भा जग अदल दीन जौं[6] आए ।
पुनि उसमान पँडित बड़[7] गुनी । लिखा पुरान[8] जो आयत सुनी ।

---

१४. द्वि० ३ बर सो, द्वि० ५ सँवारइ   १५. द्वि० ३, ५, चहइ ।

[११] १. प्र० १ उन्ह कइ, प० १ तावरि   २. द्वि० ३, ४ अरस   ३. पं० १ महँ   ४. प्र० १, तृ० ३, प० १ नहि होत   ५. पं० १ जात   ६. तृ० १ नाउँ   ७. प्र० १ दुनी   ८. प्र० १ पढ़ता   ९. द्वि० ४, ७, तृ० २ उमति   १०, द्वि० ७ दीन्ह   ११. द्वि० १ तेहिं, द्वि० ६ जिहि   १२. प्र० १, द्वि० ६ जनम ओहि, द्वि० २ जरमन्ह सो   १३. प्र० १, २, द्वि० ३, ४, ६, (तृ० १) पूँछब   १४. द्वि० ५ करइ, द्वि० ४, तृ० १ करत   १५. प० १ सरहि कर ।

[१२] १. प्र० १ चहु, द्वि० ५ जिहि वा, द्वि० ६ सबहि   २ प्र० १ दीह जग, द्वि० ६ चहू कर   ३ प० १ बखाने   ४ प्र० १ दीन तब, द्वि० १ दान निन्ह   ५. प्र० १, द्वि० ६ सो, (तृ० १) तेहि   ६. तृ० २ बोई नो, द्वि० २ दीन वै   ७. द्वि० १ अति, द्वि० ३ बहु   ८. प्र० १, तृ० २, प० १ कुरान ।

चौथइँ अली सिंघ बरियारू[९]। सौंह न कोई रहा जुझारू[१०]।
चारिउ एक मतइँ एक बाता। एक पंथ[११] औ एक सँघाता।
बचन जो एक सुनाएन्हि साँचा। भए परधान[१२] दुहूँ जग बाँचा[१३]।
जो पुरान बिधि पठवा[१४] सोई पढ़त[१५] गिरंथ।
अउर जो भूले आवत[१६] ते सुनि लागत तेहि[१७] पंथ ॥

[१३]

सेरसाहि ढिल्ली सुलतानू[१]। चारिउ खंड तपइ जस भानू।
ओही[२] छाज छात[३] औ पाटू। सब राजा भुइँ[४] धरहिं लिलाटू।
जाति सूर औ खाँडइ सूरा। औ बुधिवंत[५] सबइ गुन[६] पूरा।
सूर नवाईं नवउ खंड मई। सातउ दीप दुनी सब नई।
तहँ लगि राज खरग बर[७] लीन्हा। इसकंदर जुलकरन जो कीन्हा[८]।
हाथ सुलेमा केरि अगूठी। जग कहँ जिअन[९] दीन्ह[१०] तेहि मूठी।
औ अति गरू पुहुमिपति[११] भारी। टेकि पुहुमि सब सिस्टि सँभारी[१२]।
दीन्ह असीस मुहम्मद[१३] करहु जुगहि[१४] जुग राज।
पातसाहि[१५] तुम्ह जग के जग तुम्हार मुहताज ॥

---

९. प्र० १ बरिआरा १०. प्र० २ द्वि० २, ३, ५, (तृ० १), तृ० २, च० १ चढ़इ त काँपइ सरग पतारू, द्वि० ४ जिन्ह डर काँपइ सरग पतारू, द्वि० ६ बल सो काँपइ सरग पतारू ११. प्र० १ सग १२ द्वि० ५ भए पुरान, द्वि० ३, (तृ० १), भा पुरान १३. (यथा २) द्वि० ६ चारि मीत का करौं बडाई। आदि अंत जैसी चलि आई। १४. द्वि० ७ निरमैवौ १५ प्र० १ पढ १६ प्र० १, (तृ० १) आवहि, द्वि० १ आवतहि द्वि० ३ अउर तेई १७. प्र० १, (तृ० १) ते सुनि लागहि, द्वि० ५, प० १ सो सुनि लागे, तृ० ३ ते सब लागे, तृ० २ ते सुनि लागत, द्वि० ४, ६, (तृ० १) सो सुनि लागत, च० १ सो सुनि पावत।

[१३] १. प्र० १ सुरतानू २. द्वि० ३ ओहि कहँ ३. प्र० १, २, द्वि० २, ६, (तृ० १) राज, तृ० ३ छत्र ४. तृ० १ सुनि ५. प्र० १ गुनवंत ६. द्वि० ३ विधि, तृ० ३ निधि ७. प्र० १ बल, द्वि० २ पर ८. प्र० १ न कीन्हा, द्वि० १ सो कीन्हा ९. द्वि० ५ दान दियो, द्वि० ६ जीव दीन्ह १०. द्वि० ३ चहर ११. द्वि० २ बहुत १२ प्र० १, द्वि० ६, ७, तृ० २ औ ही सवर पुहुमि पति भारी। पुहुमि भार सब लीन्ह सभारी। (तृ० २ लै सीस संभारी) १३. द्वि० ३ सबइ मिलि १४. प्र० १ चहूँ १५. प्र० १ द्वि० ५, (तृ० २) बादसाहि।

[१४]

बरनौं सूर पुहुमिपति राजा। पुहुमि न भार सहइ जो साजा।
हय गय सेन चलइ जग पूरी[1]। परबत टूटि[2] उड़हिं होइ धूरी।
रेनु रइनि होइ रविहि गरासा।[3] मानुस पंखि लेहिं फिरि बासा।
ऊपर होइ छावइ महि मंडा। षट खँड धरति अष्ट ब्रह्मंडा[4]।*
डोलइ गगन इंद्र डरि काँपा। बासुकि जाइ पतारहिं चाँपा।*
मेरु धसमसइ समुँद सुखाई। बन खँड टूटि खेह मिलि[5] जाई।*
अगिलहि काहिं पानि खर बाँटा[6]। पछिलेहि काहिं न काँदहु आँटा[7]।*

जो गढ़ नए न काऊ चलत होहिं सत[8] चूर।
जबहिं[9] चढ़इ पुहुमीपति सेरसाहि जगसूर॥

[१५]

अदल कहौं जस प्रिथिमी होई। चाँटहि[1] चलत न दुखवइ कोई।

---

[१४] १. प्र० १ गय रेनु, द्वि० २,३, तृ० १ मय सेन। २. प्र० १, तृ० ३ फूटि। ३. प्र० १ घर रैनि होइ दिनहि गरासा, द्वि० २, ३ दिनहि रैनि होइ रविहि गरासा, द्वि० २ रवी रैनि होइ दिनहि गरासा, द्वि० ४, ५ परइ रैनि होइ रविहि गरासा, तृ० १ में यह अर्द्धाली नहीं है, तृ० २ रैनि होइ जो रविहि गरासा, च० १ रेनु रैनि होइ गगन गरासा, पं० १ रेनु रैनि होइ दिनहि गरासा।
४. प्र० १, २ ऊपर होइ छावइ महिमंडा। डोलइ धरती औ ब्रह्मंडा।
द्वि० १ " " " ब्रह्मंडा। खाँडइ धरति सिरिटि नौ खंडा।
द्वि० २ " " " " । खट खँड अष्ट भए ब्रह्मंडा।
द्वि० ६ " " " महिमंडा। चौदह खंड धरति ब्रह्मंडा।
पं० १ " " " " । षट खँड धरति अष्ट ब्रह्मंडा।
द्वि० ४ सत खंड धरती भइ षट खंडा। ऊपर अष्ट भए ब्रह्मंडा।
द्वि० ५ भुइं उड़ि अंतरिछ गइ मृतमंडा। ऊपर होइ छावइ महिमंडा।
द्वि० ३ तृ०३ भुइं तजि अंतरिख गयो मृतमंडा। खट खँड धरति अष्ट ब्रह्मंडा।
तृ० १ भुइं उड़ि अंतरिख मृतमंडा। " " " " "।
५. तृ० ३ गै। ६. द्वि० ४ घर बाँटा, द्वि० ७ खन्द छाटा। ७. तृ० ३ पाछे परा सो काँदह चाँटा, द्वि० ६ पछिलेहि काहि न काँदहु आँटा। ८. प्र० १, द्वि० १, ३, ४, ५, सब, तृ० १ सो, च० १ ते। ९. द्वि० १ जब कहुँ पं० १ जोहि। * तृ० २ में इनके स्थान पर १८. ४, ५, ६, ७ हैं।

[१५] १. तृ० ३ चाँटा।

नौसेरवाँ जो आदिल कहा। साहि अदल सरि[2] सोउ[3] न अहा[4]।
अदल कीन्ह उम्मर की नाईं। भइ अहान[5] सिगरी[6] दुनिआईं।
परी नाथ कोइ छुअइ न पारा। मारग मानुस सोन उछारा[7]।
गउव[8] सिंघ रेंगहिं एक बाटा। दूअउ पानि पिअहिं एक घाटा।
नीर खीर छानइ दरबारा। दूध पानि सो[9] करइ[10] निरारा।[11]
धरम निआउ चलइ सत भाषा। दूबर बरिअ दुनहुँ[12] सम राखा।

सब पिरथिमी असीसइ जोरि जोरि कै हाथ[13]।
गाँग[14]जउँन जौं लहि जल[15]तौं लहि अम्मर[16]माथ[17]॥

[१६]

पुनि रूपवंत बखानौं काहा[1]। जावँत जगत सबइ मुख चाहा[1]।
ससि चौदसि जो दइअ सँवारा। तेहूँ चाहि रूप[2] उँजियारा।
पाप जाइ[3] जौ दरसन दीसा। जग जोहारि कइ[4] देइ असीसा।
जइस भान जग ऊपर तपा। सबइ रूप ओहि आगें छपा।
भा अस सूर पुरुष निरमरा। सूर चाहि दह[5] आगरि करा।
सौंह दिस्टि कइ हेरि न जाई। जेइँ देखा[6] सो[7] रहा सिर नाई।
रूप सवाई [illegible] चढ़ा। निधि सुर[illegible] ऊपर गढ़ा।

रूपवंत[८] मनि माथें चंद्र घाट वह बाढ़ि।
मेदिनि दरस लोभानी अस्तुति बिनवइ ठाढ़ि॥

[१७]

पुनि दातार[१] दइअ बड़[२] कीन्हा। अस जग दान न काहूँ दीन्हा।
बलि औ बिक्रम दानि[३] बड़ अहे[४]। हेतिम करन तिआगी कहे[५]।
सेरसाहि सरि पूज न कोऊ। समुँद सुमेर घटहिं नित[५] दोऊ।
दान डाँक बाजइ दरबारा। कीरति गई समुद्रहं[६] पारा।
कंचन बरिस सोर[७] जग[८] भएऊ। दारिद भागि देसंतर गएऊ।
जौं कोइ जाइ एक बेर[९] माँगा। जरमहु होइ[१०] न भूखा नाँगा।
दस असुमेध जग्गि जेइँ[११] कीन्हा। दान पुन्नि सरि सेउ[१२] न दीन्हा[१३]।

अइस दानि जग उपना[१४] सेरसाहि सुलतान।
ना अस भएउ न होइहि ना कोइ देइ अस दान[१५]॥

[१८]

सैयद असरफ पीर[१] पिआरा। तिन्ह[२] मोहिं पंथ दीन्ह उजिआरा।
लेसा हिएँ[३] पेम कर दिया। उठी[४] जोति भा निरमल हिया।
मारग हुत अँधियार असूझा[५]। भा अँजोर सब जाना बूझा।
खार समुद्र पाप मोर मेला। बोहित धरम लीन्ह[६] कइ चेला।

---

८. प्र० १, तृ० १, च० १, पं० १ दरपवत।

[१७] १. द्वि० १ अवतार। २. द्वि० ५ जग। ३. प्र० १, द्वि० ३ बलि बिक्रम-दानी। ४. द्वि० २,५,७, तृ० १,२ कहे, अहे, द्वि० ४ अहे, अहे, द्वि० १ कहे, कहे। ५. द्वि० ५ भँडारी दोऊ ६. प्र० १ समुँद के। ७. तृ० २ परसि सूर। ८. द्वि० ४,६,७ कुलि। ९. प्र० १ बार एक, द्वि० ५, तृ० १, पं० १ एक बर। १०. द्वि० ३, तृ० २ भएउ। ११. प्र० १ जग्य जिन्ह, प्र० २ जगत जिन्ह। १२. प्र० १ निन्हहु सुरसरि दान, द्वि० ३ दान पुन्नि सरि ताहु, द्वि० १ दान पुन्नि सरि वेहुँ। १३. द्वि० ४,५ चीन्हा १४. द्वि० ४ दीन्हा, द्वि० ७ ऊपर। १५. तृ० २ ना ओहि अस कोइ दान।

[१८] द्वि० ३ जो पीर। २. प्र० १, द्वि० ५ जिन्ह, तृ० २ वहि। ३. प्र० १ लेसेन्हि एक। ४. द्वि० ३ ओहीं, द्वि० १,(तृ० १) भई। ५. प्र० १, द्वि० ४ हुता अँधेर असूझा, द्वि० १ हुता सो आगें सूझा, तृ० ३ हुत अँधियार जो सूझा, द्वि० ३ हुत अँधेर जो सूझा। ६. द्वि० ४ कीन्ह।

नौसेरवाँ जो आदिल कहा । साहि अदल सरि[२] सोउ[३] न अहा[४] ।
अदल कीन्ह उम्मर की नाईं । भइ अहान[५] सिगरी[६] दुनिआईं ।
परी नाथ कोइ छुअइ ना पारा । मारग मानुस सोन उछारा[७] ।
गउव[८] सिंघ रेंगहिं एक बाटा । दूअउ पानि पिअहिं एक घाटा ।
नीर खीर छानइ दरबारा । दूध पानि सो[९] करइ[१०] निरारा ।[११]
धरम निआउ चलइ सत भाखा । दूबर बरिअ दुनहुँ[१२] सम राखा ।

सब पिरथिमी असीसइ जोरि जोरि कै हाथ[१३] ।
गाँग[१४] जउँन जौं लहि जल[१५] तौं लहि अम्मर[१६] माथ[१७] ॥

[१६]

पुनि रुपवंत बखानौं काहा[१] । जावँत जगत सबइ मुख चाहा[१] ।
ससि चौदसि जो दइअ सँवारा । तेहूँ चाहि रूप[२] उँजियारा ।
पाप जाइ[३] जौं दरसन दीसा । जग जोहारि कइ[४] देइ असीसा ।
जइस भानु जग ऊपर तपा । सबइ रूप ओहि आगें छपा ।
भा अस सूर पुरुष निरमरा । सूर चाहि दह[५] आगरि करा ।
सौंह दिस्टि कइ हेरि न जाई । जेइँ देखा[६] सो[७] रहा सिर नाई ।
रूप सवाई दिन दिन चढ़ा । बिधि सुरूप जग ऊपर गढ़ा ।

---

२. द्वि० ३ साह अदल सम, तृ० २ सेरसाहि सरि । ३. तृ० ३ सेउ, तृ० १ सोह । ४. द्वि० १, तृ० १, ३, पं० १ रहा ५. द्वि० २ तृ० १, ३, भई आन, द्वि० ६, ७, तृ० २, च० २ फिरी आन । ६. द्वि० ४, तृ० २ सगल । ७. द्वि० ५ से उनिआरा, द्वि० २, ४, तृ० १ सों उजियारा । ८. द्वि० ४, तृ० ३ गाय । ९. तृ० २ धरि, द्वि० ४ धर, द्वि० ३ दोउ । १०. प्र० १ होइ । ११. द्वि० ६ कीरति गई समुंदर पारा । १२. द्वि० ३, तृ० २ एक । १३. प्र० १ लाइ लाइ मुइ माथ, द्वि० २, तृ० २ जोरि जोरि दुइ हाथ । १४. द्वि० ३ गगन । १५. तृ० १ जग । १६. द्वि० ४ अमर सो, तृ० १ अमर तो । १७. द्वि० २, तृ० २ नाथ ।

[१६] १. द्वि० ३, तृ० २ कहा, चहा । २. द्वि० २, तृ० २ अधिक । ३. द्वि० ३ घटइ । ४. तृ० २ जगत जोहारै । ५. द्वि० २, ३, ६, ७, बहि, प्र० २, ४, ५, तृ० १, च० १ दस । ६. प्र० १ जेइं जेइं देख, द्वि० ३ जो दखइ सो, तृ० २ जेइं हेरा सो । ७. प्र० १, द्वि० ३ रहै ।

रूपवंत[८] मनि माथें चंद्र घाट वह वाढ़ि।
मेदिनि दरस लोभानी अस्तुति बिनवइ ठाढ़ि॥

[१७]

पुनि दातार[१] दइअ बड़[२] कीन्हा। अस जग दान न काहूँ दीन्हा।
बलि औ बिक्रम दानि[३] बड़ अहे[४]। हेतिम करन तिआगी कहे[४]।
सेरसाहि सरि पूज न कोऊ। समुँद सुमेर घटहिं नित[५] दोऊ।
दान डाँक बाजइ दरबारा। कीरति गई समुद्रहँ[६] पारा।
कंचन बरिस सोर[७] जग[८] भएऊ। दारिद भागि देसंतर गएऊ।
जौं कोइ जाइ एक बेर[९] माँगा। जरमहु होइ[१०] न भूखा नाँगा।
दस असुमेध जगि जेइँ[११] कीन्हा। दान पुन्नि सरि सेउ[१२] न दीन्हा[१३]।

अइस दानि जग उपना[१४] सेरसाहि सुलतान।
ना अस भएउ न होइहि ना कोइ देइ अस दान[१५]॥

[१८]

सैयद असरफ पीर[१] पिआरा। तिन्ह[२] मोहिं पंथ दीन्ह उजिआरा।
लेसा हिएँ[३] पेम कर दिया। उठी[४] जोति भा निरमल हिया।
मारग हुत अँधियार असूझा[५]। भा अँजोर सब जाना बूझा।
खार समुद्र पाप मोर मेला। बोहित धरम लीन्ह[६] कइ चेला।

---

८. प्र० १, तृ० १, च० १, पं० १ दरपवत।

[१७] १. द्वि० १ भवतार। २. द्वि० ५ जग। ३. प्र० १, द्वि० ३ बलि बिक्रम-दानी। ४. द्वि० २,५,७, तृ० १,२ वहे, अहे, द्वि० ४ भादे, अदे, द्वि० १ वहे, कहे। ५. द्वि० ५ भँडारी दोऊ ६. प्र० १ समुँद के। ७. तृ० ३ परसि सुर। ८. द्वि० ४,६,७ कुलि। ९. प्र० १ बार एक, द्वि० ५, ५ तृ० १, पं० १ एक वर। १०. द्वि० ३, तृ० २ भएउ। ११. प्र० १ जगय जिन्ह, प्र० २ जगत जिन्ह। १२. प्र० १ निन्हहु सरसरि दान, द्वि० २ दान पुन्नि सरि ताहु, द्वि० १ दान पुन्नि सरि वेहु। १३. द्वि० ४,५ चीन्हा १४. द्वि० ४ दीन्हा, द्वि० ७ ऊपर। १५. तृ० २ ना ओहि अस कोइ दान।

[१८] द्वि० ३ जो पीर। २. प्र० १, द्वि० ५ जिन्ह, तृ० २ वहि। ३. प्र० १ रेसेन्हि एक। ४. द्वि० ३ ओही, द्वि० १,(तृ० १) भई। ५. प्र० १, द्वि० ४ हुता अँधेर असूझा, द्वि० १ हुता सो आगें सूझा, तृ० ३ हुत अँधियार जो सूझा, द्वि० ३ हुत अँधेर जो सूझा। ६. द्वि० ४ कीन्ह।

उन्ह[7] मोर करिअ[8] पोढ़ कर गहा। पाएउँ तीर घाट जो[9] अहा।
जा कहँ अइस होहिं[10] कँड़हारा। तुरित बेगि सो पावइ[11] पारा।
दस्तगीर गाढ़े के साथी। जहँ[12] अवगाह देहिं तहँ हाथी।

जहाँगीर ओइ चिस्ती निहकलंक जस[13] चाँद।
ओइ मखदूम जगत के हौं उन्हके[14] घर बाँद॥

[१९]

उन्ह[1] घर रतन एक निरमरा। हाजी सेख सभागइँ[2] भरा।
तिन्ह घर दुइ दीपक उजिआरे। पंथ देइ कहँ दइअ सँवारे।
सेख मुबारक[3] पूनिउँ करा। सेख कमाल जगत निरमरा।
दुऔ अचल ध्रुव डोलहिं नाहीं। मेरु खिखिंद[4] तिनहुँ[5] उपराहीं[6]।[7]
दीन्ह जोति औ रूप गोसाईं। कीन्ह खँभ दुहुँ जगत[8] की ताईं।
दुहूँ खंभ टेकी सब[10] मही। दुहुँ के[11] भार सिस्टि थिर[12] रही।[13]
जिन्ह दरसे औ परसे[14] पाया। पाप हरा निरमल भौ[15] काया।

महमद तहाँ निचिंत पथ जेहि सँग मुरसिद पीर।
जेहि रे नाव करिआ औ खेवक[16] बेग पाव[17] सो तीर॥

---

७. द्वि० १ तिन्ह। ८. प्र० २ मोर कर, द्वि० ४ कर मोर। ९. प्र० १, द्वि० ४ जहँ। १०. द्वि० १, ३, च० १ होइ। ११. प्र० १, तृ० २ गहै बेगि लै लावइ, द्वि० २,(तृ० १) ताहि गहइ लै लावइ, द्वि० १, ३ तुरित बेगिसो उतरइ, पं०१ बाँह गहइ लै लावइ। १२. प्र० १ जौ, द्वि० ५ महँ। १३ द्वि० ७ रूप· जैस नग। १४. द्वि० १ उन्ह, तृ० ३ ओन्हकर।

[१९] १. प्र० १, द्वि० १, २, ४, ७, च० १ तिन्ह २. प्र० २ भाग गुन, द्वि० २ सभा गुन, द्वि० ४,६,च० १ सभै गुन, द्वि०३ सोभागइ। ३. तृ०२ ममारख, द्वि० ४,५ मुहम्मद। ४. तृ० ३ खँड खँड। ५ द्वि० २ भवा, द्वि० ४ न भवा, द्वि० ५ तहँवा, च० १ दुहु जग। ६. प्र० १ परिछाहीं, च० १ के ताईं। ७. द्वि० १ मेरु धसै औ समुद सुखाहीं। ८. प्र० १, द्वि० ५, ३ जग ९. तृ० १ खंभइ। १०. तृ० २ सत। ११. द्वि० ७ औतेहि। १२. द्वि० ५ सत। १३. द्वि० १ पलटि भेस सब सिस्टि सँभारी। १४. तृ० ३ दरसेउ औ परसेउ। १५. प्र० १ द्वि० ५, तृ० २ भइ, द्वि० ७, पं० १ देहि। १६. द्वि० १ करिआ होइ, द्वि०५ नाव औ खेवक, तृ० २ नाव अस खेवक, पं० १ करिआ अस खेवक। १७. द्वि० ५ लाग।

[२०]

गुरु मोहदी[1] खेवक मैं सेवा[2]। चलै उताइल जिन्हकर[3] खेवा।
अगुआ भएउ सेख बुरहानू[4]। पंथ लाइ जेहिं दीन्ह गिआनू[5]।
अलहदाद भल तिन्ह कर गुरू। दीन दुनिअ रोसन सुरखुरू।
सैयद महमद के ओइ चेला। सिद्ध पुरुष संगम जेहिं खेला[6]।
दानिआल गुरु पंथ लखाए। हजरति ख्वाज खिजिर तिन्ह[7] पाए।
भए परसन ओहि[8] हजरति ख्वाजे। लइ मेरए जहँ सैयद राजे।
उन्ह सौं मैं पाई जब[9] करनी। लघरी जीभ[10] प्रेम कवि[11] बरनी।

ओइ सो गुरु[12] हौं चेला निति बिनवौं भा चेर।
उन्ह हुति[13] देखइ पावौं[14] दरस गोसाईं केर॥

[२१]

एक नैन कबि मुहमद गुनी। सोइ बिमोहा जेइँ कवि सुनी।
चाँद जइस जग बिधि औतारा। दीन्ह कलंक कीन्ह उजिआरा।
जग सूझा एकइ नैनाहाँ। उवा[1] सूक[2] अस[3] नखतन्ह माहाँ।
जौं लहि अंबहि डाभ न होई। तौ लहि सुगंध बसाइ न सोई[4]।
कीन्ह समुद्र पानि जौं खारा। तौ अति[5] भएउ[6] असूझ अपारा।
जौं सुमेरु तिरसूल बिनासा। भा कंचनगिरि[7] लाग अकासा।
जौं लहि घरी कलंक न परा। काँच होइ नहिं[8] कंचन करा[9]।

---

[२०] १. द्वि० १ मुहमद-। २. द्वि० ७ कनि महँ देखु इहै मैं सेवा। ३. द्वि० ६, तृ० १ जाकर। ५. तृ० ३ ताकर। ६. प्र० १, तृ० ३ सिद्धन्ह पुरुषन्ह सँग जेहिं खेना, द्वि० ४ भए सिद्ध जो तिन्ह सँग खेना, द्वि० २, ६ जेइँ रे सिद्ध पुरुष सँग खेला। ७. द्वि० २, ४, ३ जिन्ह। ८. प्र० १, द्वि० ५ तेहि, तृ० ३ जे। ९. तृ० ३ सब, तृ० १ जो। १०. तृ० २ उयर नैन। ११. प्र० १,२, द्वि० २,४, (तृ० १), तृ० ३ परम छबि, च० १ परम गति। १२. प्र० १, पं० १ तेहि घर का, द्वि० १, (तृ० १) तेहिं गुरु का १३. प्र० १ सैं। १४. प्र० १, ४, तृ० २ पाएउ।

[२१] १. द्वि० ७ हुआ। २. प्र० १ सुक, तृ० ३ सुर। ३. तृ० २ जस ४. द्वि० १, ४, ५ कोई। ५. प्र० १ सुठि, द्वि० १, ३, ४, तृ० २, पं० १ अस ६. प्र० १, (तृ० १), तृ० १, २, पं० १ कीन्ह। ७. द्वि० ५, ६, (तृ० १), २ गइ। ८. द्वि० १, काँच होइ तब, तृ० ३ कंचन होइ न, द्वि० ४ तौ लहि होइ न। ९. द्वि० १, ४ सरा।

एक नैन जस दरपन औ तेहि निरमल भाउ।
सब रूपवंत पाँय गहि[10] मुख जोवहिं[11] कइ चाउ[12] ॥

[२२]

चारि मीत कवि मुहमद पाए। जोरि मिताई सरि पहुँचाए।
यूसुफ मलिक पंडित औ[1] ग्यानी। पहिलें भेद बात उन्ह जानी[2]।
पुनि सलार काँदन[3] मति माहाँ। खाँडे दान उभै निति बाहाँ।
मिआँ सलोने सिंघ[4] अपारू[5]। बीर खेत रन[7] खरग[8] जुझारू।
सेख बड़े बड़ सिद्ध बखाने। कइ अदेस सिद्धन्ह बड़ माने[9]।
चारिउ चतुरदसौ गुन[10] पढ़े। औ सँग जोग[11] गोसाईं गढ़े[12]।
बिरिख[13] जो आछहिं[14] चंदन पासाँ। चंदन होहिं[14] बेधि[15] तेहि बासाँ।

मुहमद चारिउ मीत मिलि भए जो एकइ चित्त।
एहि जग साथ जो निबहा[16] ओहि[17] जग बिछुरन[18] कित्त॥*

[२३]

जायस नगर धरम अस्थानू[1]। तहवाँ यह[2] कवि कीन्ह बखानू।

---

१०. प्र० १ रूपवंत मुख जोइहि। ११. द्वि० ५, ३ चाहहि, द्वि० ४ देखइ, द्वि० ७ चाहन। १२. प्र० १ सेव करहिं गहि पाउ।

[२२] १. प्र० १ जो पंडित, द्वि० ५ पडित बडु, (तृ०१), तृ०३ पँडित बड। २. तृ० २ अलख लखाव बात जिन्ह जानी। ३. प्र० १, द्वि० २, (तृ० १) कादन, तृ० ३ कंदन, द्वि० ३ गानन। ४. द्वि० ५ सुर। ५. प्र० १ सिद्ध। ६. द्वि० ५ बरिआरू। ७. प्र १ औ। ८. तृ० २ जाँनि। ९. प्र० १ जाना। १०. तृ० ३ चारि चतुर गुन दस वेद, द्वि० ४, ५, ६, तृ० २ प० १ चारिउ चतुर दसागुन। ११. तृ० ३ संजोग। १२. तृ० ३ में अर्द्धाली ५ ही दुहराई गई है। १३. द्वि० ७ पुरुष। १४. द्वि० ४, ५ होइ जो होइ, (तृ० १), द्वि० ३, प० १ जो उपने, होहि, द्वि० १ जो उपना, रहा, द्वि० ७ जो आपे, होहि। १५. द्वि० ३, तृ० ३ बोधि होहिं। १६. प्र० १ निबाहा, द्वि० १ उपना, द्वि० ५ बरठी, द्वि०६ दीन्हा। १७. द्वि० १ दस। १८. द्वि० ३ बिछुरै। * द्वि० १ में इसके अनन्तर एक अतिरिक्त छंद है।

[२३] १. द्वि० १ कर थाना २. प्र० १, २ तहाँ आइ कवि, द्वि० २ तहँ उन्ह कबिनन्ह, तृ० ३ तहाँ अवर कवि, द्वि० ४, ५ तहाँ जाइ कवि, द्वि० ७, पं० १ तहाँ अवनि कवि।

औ बिनती[3] पंडितन्ह[4] सौं भजा[5]। टूट सँवारेहु मेरएहु सजा[6]।
हौं सब कबिन्ह केर[6] पछिलगा। किछु कहि चला तबल दइ डगा[7]।
हिअ भंडार नग आहि जो पूँजी[8]। खोली जीभ तारा[9] कै कूँजी।
रतन पदारथ बोलइ बोला। सुरस पेम मधु[10] भरी अमोला।
जेहि के बोल बिरह के घाया[11]। कहु तेहि भूख[12] कहाँ तेहि छाया[13]।
फेरे[14] भेस रहइ भा तपा। धूरि लपेटा[15] मानिक छपा।

मुहमद कबि जो प्रेम[16] का ना तन[17] रकत न माँसु।
जेइँ मुख देखा तेइँ[18] हँसा सुना तो[19] आए आँसु[20]॥

[२४]

सन नौ सै सैंतालिस[1] अहै[2]। कथा अरंभ बैन कबि[3] कहै[2]।
सिंघल दीप पदुमिनी[4] रानी। रतनसेनि चितउर गढ़ आनी[5]।
अलाउदीं ढिल्ली सुलतानू। राघौ चेतन कीन्ह बखानू।
सुना साहि[6] गढ़ छेंका आई[7]। हिंदू तुरुकहि भई लराई।
आदि अंत जसि कथ्या[8] अहै। लिखि[9] भाषा चौपाई कहै।

---

३. द्वि० २ कइ बिनती, द्वि० ४ औ कइ बिनती, तृ० १ बिनती करि ४. द्वि० ४ कबितन्ह। ५. द्वि० १, ७, तृ० ३ भाजा, साजा, द्वि० ३ भाखे, साखे, पं० १ चही, गही। ६. द्वि० ३ पंडितन्हकर प्र० १, द्वि० २, ३, ४, ५ तृ० १, ३ कबितन्हि कर। ७. तृ० ३ गी। ८. प्र० १ नग जो कछु, द्वि० ३ आहइ जो। ९. तृ० ३ खोलु जीय तारा, द्वि० १ खोजु जीय ताला। १०. प्र० १, द्वि० १, ६ रस, तृ० ३, तृ० १ मद, पं० १ बड ११. प्र० १ गाया। १२. द्वि० २, ५, तृ० १, च० १, पं० १ कहँ तेहि रूप। १३. प्र० १, द्वि० १ नींद कहँ छाया, द्वि० २ कहाँ कै माया, तृ० ३ नींद का माया, द्वि० ५ कहाँ तेहि छाया। १४. प्र० १ लाएँ। १५. द्वि० १ लपेटौं। १६. द्वि० २, ३, तृ० १ परम। १७. तृ० ३ भाव न, द्वि० ३ ना तेहि। १८. द्वि० ४ सो। १९. प्र० १, द्वि० ५ सुने तेहि, द्वि० २, ६ तृ० १, २, पं० १ सुन। तौ, तृ० ३ सुनतहि, च० १ सुनि कबि। २०. द्वि० १ सासु।

[२४] १. द्वि० ५, तृ० २ पं० १ सत्ताइस, द्वि० ७, ३ पैंतालिस २. प्र० १ अहा, कहा। ३. प्र० १ तादि दिन। ४. तृ० १ कि पदुमिनि। ५. तृ० ३ राजा। ६. द्वि० ४ सुनि पदुमिनि। ७. द्वि० ३ आई। ८. प्र० १, तृ० २ कथा जो, द्वि० ७ कथा असि, पं० १ बस कथ्या। ९. द्वि० ४ कइ।

फमि बिश्रास रस[10] फौंला पूरी । दूरिहि निअर निअर भा दूरी[11] ।
निअरहि दूरि फूल सँग काँटा । दूरि जो निअरे जस[12] गुर चाँटा ।

भँवर आइ बनखंड हुति[13] लेहि कँवल कै बास ।
दादुर बास न पावहिं भलेहिं[14] जो आछहिं[15] पास ॥

[२५]

सिंघल दीप कथा अब गावौं । औ सो[1] पदुमिनि बरनि सुनावौं ।
बरनक[2] दरपन भाँति बिसेखा । जेहिं जस रूप[3] सो तैसेइ देखा[4] ।
धनि सो दीप जहँ दीपक नारी[5] । औ सो पदुमिनि दइअँ अवतारी[7] ।
सात दीप बरनहि सब लोगू । एकौ दीप न ओहि[8] सरि जोगू ।
दिया दीप नहिं तस[9] उजिआरा । सराँ दीप[10] सरि होइ न पारा[11] ।
जंबू दीप कहौं[12] तस नाहीं । पूज न लंक दीप[13] परिछाहीं[14] ।
दीप कुसस्थल[15] आरन परा[16] । दीप महुस्थल मानुस हरा[17] ।

---

१०. द्वि० २, ७, च० १ जस, द्वि० ७ जे । ११. प्र० १, द्वि० ६ दूरि जो निअरै निअरैं दूरी, द्वि० ५ दूरिहि निअरैं निअरैं दूरी, द्वि० ४, ३, च० १ दूरि सो निअर निअर सो दूरी, तृ० २ दूरिहि निअर निअर होइ दूरी । १२. च० १ दूरि सो निअर जैस, द्वि० ४ दूरि न निअर सो जस, द्वि० २ दूरि निअर जैसे । १३. प्र० १, द्वि० ५, तृ० १, पं० १ सौं, द्वि० २, ७ तैं । १४. द्वि० ४, ५ फलहिं, तृ० १ सदा । १५. द्वि० १ जाइ जो, द्वि० २ सो आछइ, द्वि० ३ आछहिं बहि ।

[२५] १. द्वि० ४, तृ० १ सब । २. द्वि० ५ निरमल दरपन भाँति, द्वि० ३ परतख दरपन भाँति, द्वि० ७ बदन कुंदन जस भान । ३. प्र० १ जो जेहि भाँति, द्वि० २, (तृ० १) जो जेहि रूप, तृ० ३ जो जस रूप । ४. च० १ बरनक जस दरपन निरमरा । तेहि उस दरसन जेहि जस करा । ५. तृ० ३ धन्य देस । ६. प्र० २, तृ० ३ जेहि दीपक नारी, द्वि० २, ४, ५, ७, तृ० २, च० १ जहँ दीपक बारी । ७. प्र० १, द्वि० १, ५, ६, (तृ० १) औ सो पदुमिनि दई सँवारी, द्वि० ३ औ बिधिनै पदुमिनि अवतारी, च० १ औ पदुमिनि जहँवा अवतारी । ८. द्वि० ३, तृ० २ तेहि । ९. द्वि० १ नाहीं । १०. तृ० ३ सरद दीप, द्वि० ३, ६, पं० १ सरन दीप । ११. द्वि० १ दीप कुसस्थल होइ न पारा । १२. प्र० १ कहा । १३. तृ० २ सरां दीन । १४. प्र० १ सरि पूज न ताहीं, द्वि० ५ सरि पूज न छाहीं, द्वि० ३, तृ० २ नहिं पूजइ छाहीं । १५. प्र० १, द्वि० ४, द्वि० ३ कुंभस्थल, द्वि० ५ उदस्थल । १६. तृ० ३

सब संसार परथमैं[18] आए सातौं[19] दीप ।
एकौ दीप न उत्तिम[20] सिंघल दीप समीप ॥

[२६]

गंध्रपसेन सुगंध नरेसू । सो[1] राजा यह[2] ताकर देसू ।
लंका सुना जो रावन राजू । तेहु चाहि बड़ ताकर साजू ।
छप्पन कोटि कटक दर साजा । सबै छत्रपति औरँगन्ह[3] राजा ।
सोरह सहस घोर घोरसारा । सावँकरन बालका[4] तुखारा[5] ।
सात सहस हस्ती सिंघली । जिमि[6] कबिलास एरापति बली[7] ।[8]
असुपती क सिरमौर कहावा । गजपती क[9] आँकुस गज नावा[10] ।
नरपती क कहाव[11] नरिंदू । भुअपती क जग[12] दोसर इंदू ।

अइस चक्कवै राजा चहूँ खंड भै होइ[13] ।
सबै आइ सिर नावहिं सरवरि करै न कोइ[14] ॥

[२७]

जबहि[1] दीप निअरावा[2] जाई । जनु कबिलास निअर भा[3] आई ।
घन अँबराउँ लाग चहुँ पासा । उठै पुहुमि हुति[4] लाग अकासा ।

---

[17]. तृ० ३ आर न पारा । [18]. तृ० ३ सबै सार प्रिथिमी कर, द्वि० ७ सब संसार पिरिथिमी । [19]. प्र० १, द्वि० ३ औ सातौ सब, द्वि० ४ है सो सातौ । [20]. प्र० १ उपमा, द्वि०२ पावौं, द्वि० ३ ऊपर ।

[२६] [1]. प्र० १ धनि । [2]. द्वि० २,५, तृ० ३ और । [3]. द्वि० ४,५ औ गद [4]. तृ० ३ चालुक, द्वि० ४,५ जस बाँक, द्वि० ७ औ तुरकी, (तृ० २), द्वि० ३ बाँक । [5]. द्वि० ४ मुखारा, (तृ० २) तुम्हारा । [6]. प्र० २, द्वि० ५, तृ० १,३, पं० १ इमि, द्वि० ४, च० १ जनु । [7]. द्वि० ३ नित बली । [8]. द्वि० १ जिमि रूप केला औ महचली । [9]. द्वि० ७ गजपति सिर । [10]. द्वि० ७, च० १ आँकुस गहि नावा । [11]. प्र० १ कहौं जो आहि, द्वि० २,३,४,५, तृ० २, कहौ और, (तृ० २) कहनाव, च० १ को आहि । [12]. प्र० १ महँ । [13]. तृ० ३ चारिहुँ खँड भै होइ, तृ० २ चारिहुँ खंड नहिं कोइ । [14]. द्वि० १ चहूं खड भै होइ ।

[२७] [1]. प्र० १, द्वि० ३,४,५, च० १, जाँहि (हिंदी मूल) । [2]. द्वि० २ निअर गो, द्वि० ५ निअर भा । [3]. प्र० १ भौ । [4]. प्र० १, द्वि० १ तिन

तरिवर सबै मलैगिरि लाए। भै जग[५] छाँह रैनि होइ छाए[६]।
मलै समीर सोहाई[७] छाहाँ। जेठ जाड़ लागै तेहि[८] माहाँ।
ओही छाँह रैनि होइ आवै[९]। हरिअर सबै अकास दिखावै।
पंथिक जौं पहुँचै सहि[१०] घामू। दुख बिसरै सुख होइ बिसरामू।
जिन्ह वह पाई[११] छाँह अनूपा। बहुरि न[१२] आइ सही यह[१३] धूपा।

अस अवराउँ सघन घन[१४] बरनि न पारौं[१५] अंत।
फूलै फरै छहूँ रितु[१६] जानहु सदा बसंत॥

[२८]

फरे आँब अति सघन सोहाए। औ जस[१] फरे अधिक सिर नाए।
कटहर डार पींड सो पाके। बड़हर सोउ अनूप अति[२] ताके।
खिरनी पाकि खाँड असि मीठी। जाँबु जो पाकि भँवर असि डीठी।
नरिअर[३] फरे फरी[४] खुरहुरी। फुरी[५] जानु इंद्रासन पुरी।
पुनि महु चुवै सो[६]अधिक मिठासू। मधु जस मीठ पुहुप[७] जस बासू।
और खजहजा आव न[८] नाऊँ। देखा सब[९] रावन[१०] अँबराऊँ।
लाग सबै जस[११] अंम्रित साखा। रहै[१२]लोभाइ सोइ जोइ[१३]चाखा।

---

५. तृ० ३ सीतल, द्वि० ६, द्वि० ३ भइ तसि। ६. द्वि० १, ४,५, पं० १ आए। ७. प्र० १ सोहावन। ८. (तृ० १) तन। ९. तृ० २ महा नीक जिमि कोमल छावा। १०. प्र० १सहि आवै, द्वि० १,२ पहुँचै तेहि, द्वि० ४, च० १ पहुँचै सहिकै। ११. प्र० १ जबहिं पाव वह। १२. द्वि० ४, तृ० १ फिरि नहिं। १३. प्र० १ सो, द्वि० २ दुख। १४. द्वि० २, सघन सो, च० १ सुहावन। १५. द्वि० १, पारै, तृ० १ ३ पारहिं, तृ० २ पावौं। १६. द्वि० २ चहूँ दिसि।

[२८] १. प्र० १ जो, द्वि० ७ जत। २. प्र० १ अति अनूप फर, द्वि० १ सोइ अनूप फर, द्वि० ४, च० १ अति अनूप सब, द्वि० ३ फर अनूप अस। ३. च० १, जैफर। ४. द्वि० ४ जो फरी। ५. द्वि० १ तेहि, द्वि० २ सदा। ६. प्र० १,२, द्वि० ४,५ महुआ चुवै सो, तृ० ३ पुनि मधु चुवै सो, तृ० १ चुवै जो महुआ, द्वि० ३ पुनि महुआ चुवै। ७. च० १ कहुन। ८. द्वि० १ अनूप तेहि, द्वि० ४, ५ अनवन (हिंदी मूल)। ९. द्वि० ७ जत, (तृ० १) जस, पं० १ जनु। १०. प्र० १ सोभित। ११. प्र० १, मस। १२. प्र० १ रहा। १३. प्र० १ सोइ लेइ, द्वि० २ कोइ जौं।

गुआ[१४] सुपारी जायफर सब फर फरे अपूरि।
आस पास घनि इँबिली औ घन तार खजूरि॥

[२९]

बसहिं पंखि बोलहि बहु भापा। करहिं हुलास देखि कै[१] साखा।
भोर होत बासहिं[3] चुहचुही। बोलहिं पाँडुक एकै तुहीं।
सारौ सुवा सो[3] रहचह करहीं[४]। गिरहिं[५] परेवा औ[६] करबरहीं[७]।
पिउ पिउ लागै करै[८] पपीहा। तुही तुही[९] कह गुडुरू[१०] खीहा।
कुहू कुहू[११] कोइल करि राखा[१२]। औ भिंगराज बोल बहु भाषा[13]।
दही दही[१४] कै महरि पुकारा। हारिल बिनवै आपनि हारा।
कुहकहिं मोर सोहावन लागा[१५]। होइ कोराहर बोलहिं कागा[१६]।[१७]

जावँत पंखि कहे सब[१८] बैठे भरि अँबराउँ।
आपनि आपनि भापा[१९] लेहिं दइअ कर नाउँ॥

[३०]

पैग पैग[१] पर कुआँ बावरी। साजी बैठक औ[२] पाँवरी[3]।
औरु कुंड बहु[४] ठाँवहि ठाँऊ। सब तीरथ औ तिन्ह के नाऊँ॥

---

१४. द्वि० २, ५, तृ० २, च० १ लौंग।

[२९] १. च० १ सब। २. द्वि० ६, प० १ बोलहिं। ३. द्वि० ४, ५, द्वि० ३ च० १ सुवा जो, प० १ सूवा। ४. द्वि० ७ सोर बहु करहीं, तृ० ३ रहस करेहीं। ५. प्र० १ घिरिन, प्र० २, द्वि० ४,५,७, तृ० १ घुरहिं, तृ० २ दुरहिं, द्वि० ३ कठिन, द्वि० ६ छुरहिं, द्वि० १ बोल। ६. प्र० १ तहँ। ७. तृ० ३ कुररेहीं। ८. द्वि० ५ करै जो लागा। ९. प्र० १, द्वि० २,४, ५, द्वि० ३ तुहीं तुहीं कारि, तृ० ३ तूही तूहा। १०. प्र० १ गुडरा, द्वि० ४ गाडुर। ११. तृ० ३ बहो बहो, च० १ बहु भाखी। १२. च० १ बोल बोलता। 13. च० १ फाग सब मिला। १४. द्वि० ४ दई दई।
१५. द्वि० १ कुहुकै कोकिल रागा। १६. प्र० १ रुगरी बागा। १७. द्वि० १ बैठि कोलाहल करहिं जो कागा, तृ० २ कलकउर करहिं काग अनुरागा। १८. प्र० १ भरे सब, द्वि० १ तृ० ३ जगत के, द्वि० ५ बन के, च० १ कहे बन। १९. द्वि० ४ भाषा बोलहि।

[३०] १. द्वि० ७ परग परग। २ तृ० ३ साजे पंथिक कहँ जो। ३. प्र० १ चौपारी, तृ० २ चावरी। ४. प्र० १ ठंइ सब, प्र० २, द्वि० ३ कुंड मर

मढ़[५] मंडप[६] चहुँ पास सँवारे। जपा तपा सब आसन मारे।
कोइ रिखेस्वर कोइ सन्यासी। कोइ रामजन[६] कोइ मसवासी[७]।
कोई ब्रह्मचर्ज पँथ[८] लागे। कोइ दिगंवर आछहिं नाँगे।
कोइ सरसुती सिद्ध[९] कोइ जोगी। कोइ निरास पँथ बैठ बियोगी।
कोइ महेसुर जंगम जती[१०]। कोइ एक परखै देवी सती।

सेवरा खेवरा वानपरस्त.[११] सिध[१२] साधक अवधूत।
आसन मारि बैठ सब[१३] जारि[१४] आतमा भूत[१५]॥

[३१]

मानसरोदक[१] देखिअ[२] काहा। भरा समुँद अस[३] अति[४] अवगाहा।
पानि[५] मोति अस निरमर तासू। अंम्रित बानि[६] कपूर सुबासू।
लंक दीप कै सिला अनाई[७]। बाँधा सरवर घाट बनाई[७]।
खँडखँड सीढ़ी भईं गरेरी[८]। उतरहिं चढ़हिं[९] लोग चहुँ फेरी।
फूला कँवल रहा होइ राता। सहस सहस पंखुरिन्ह कर छाता[१०]।
उलथहिं सीप मोंति उतिराहीं[११]। चुगहिं हंस औ[१२] केलि कराहीं।

---

५. द्वि० ३ मढ़। ६. प्र० २, द्वि० २ पं०१, रामजनी, द्वि० ५, (तृ० १) रामजति, च० १ रामजपी। ७. प्र० १ द्वि० १,४,५, (तृ० १) कोइ बिसवासी। ८. प्र० १ सौ। ९. द्वि० १, तृ० ३, तृ० २ संत सिद्ध, द्वि० २, पं० १ सनसंत सिद्ध, द्वि० ५ सरसुती संत, द्वि० ४,६, द्वि० ३, च० १ सुनिसंत सिद्ध, द्वि० ७ सुन्यी तपसी। १०. तृ० १ जोगी। ११. तृ० ३ बानपर, द्वि० ४ पारधी, द्वि० २ बान सिख, तृ० २ बान परस, द्वि० ३ नानक पंथी। १२. द्वि० ४,५, तृ० १, च० १, पं० १ सिन्न। १३. प्र० १ जंगम जती सन्यासी। १४. द्वि० ७ पाय। १५. प्र० १ सेवरा औ अवधूत, द्वि० ३, ५, ६, तृ० १, पं० १ पाँच आतमा भूत।

[३१] १. प्र० १ सरोवर। २. प्र० १,२, द्वि० ४ देखौं, द्वि० ५,७, तृ० ३ बरनौं, च० १ एक जो। ३. प्र० १, द्वि० ३ जल। ४. द्वि० ३ दर। ५. प्र०१ जल। ६. द्वि० १, पं० १ पानि, द्वि० २, तृ० ३ आनि, द्वि० ४ बानि (हिंदीमूल), द्वि० ५, बरन, तृ० १ नीर। ७. प्र० १, द्वि० १, तृ० २ मँगाई, बनाई, तृ० ३ मँगाए, सोहाए। ८. प्र० १ उपर गरेरी, द्वि० १ दीन्ह गरेरी, द्वि० ३ बहुतेरी। ९. तृ० ३ उतरै लाग। १०. तृ० ३ पाता। ११. प्र० १ छितराही। १२. द्वि० ४ बहु।

कनक पंखि पैरहिं[13] अति लोने। जानहु चित्र सँवारे[14] सोने[15]॥

ऊपर पाल[16] चहूँ दिसि अंब्रित फर सब रूख।
देखि रूप सरवर कर गइ पिआस औ भूख॥

[३२]

पानि भरइ आवहिं पनिहारी। रूप सुरूप पदुमिनी नारीं[1]॥
पदुम गंध तेन्ह अंग बसाहीं। भँवर लागि तेन्ह संग फिराहीं।
लंक सिंघिनी साँरग नैनी। हंसगामिनी[2] कोकिल[3] बैनी।
आवहिं झुंड सो[4] पाँतिहि पाँती। गवन[5] सोहाइ सो[6] भाँतिहि भाँती॥
केस मेघावरि सिर ता पाईं[7]। चमकहिं दसन बीज की नाईं।
कनक कलस मुख चंद दिपाहीं। रहस कोड[8] सों[9] आवहिं जाहीं[10]।
जासौं वै हेरहिं चख नारीं। बाँक नैन[11] जनु हनहिं कटारी॥

मानहु मैन मुरति सब[12] अछरीं बरन[13] अनूप।
जेन्हिकी ये[14] पनिहारी सो[15] रानी केहि रूप॥

[३३]

ताल तलावरि[1] बरनि न जाहीं। सूझइ वारपार तेन्ह[2] नाहीं॥

---

१३. तृ० ३ पौरहिं। १४. द्वि० १,२, तृ० १, पं० १ कीन्हि सब, तृ० २ लिखा सब, द्वि० ६ कीन्ह धरि, द्वि० ७, ३, कीन्ह गढ़ि। १५. द्वि० ५, च० १ खनि पतार पानी जेहि काढ़ा। खीर समुँद निकसा हुत बाढ़ा। १६. द्वि० २,४ ताल, द्वि० ७ बेलि, च० १ पानि।

[३२] १. च० १ तरुनी सिंघल दीप की बारीं। २. प्र० १ गवन औ। ३. तृ० २ सारँग। ४. प्र० १ झुंडहि, द्वि० ४ चहुँ दिसि। ५. प्र० १, द्वि० १ चाल। ६. प्र० १, द्वि० ४ सुहावन। ७. प्र० १, द्वि० ७, तृ० ३, पाताईं, द्वि० १ बरताईं। ८. द्वि० १, ३, ५, तृ० १ च० १ केलि। ९. प्र० १ सब, पं० १ सिउँ। १०. द्वि० ७ रहसत केलि करत सभ जाहीं। ११. द्वि० ४ नैन बान। १२. द्वि० ५ माथे कनक गागरी, द्वि० ७ मानहु मोर मैन तनु, तृ० २ मानहु मैन मूरती। १३. द्वि० ५ आवहिं रूप, द्वि० ७ अछरी रूप। १४. प्र० १ जाकरि असि, द्वि० १ जहाँ की असि। १५. प्र० १, द्वि० ३, ४,५ ते।

[३३] १. द्वि० १,७ तलाव, द्वि० ४,५,६, पं० १ तलावा, द्वि० २ तलाव सो, द्वि० ३ तला औ। २. प्र० १ जेहि, द्वि० ५ कछु, तृ० २ सो।

फूले कुमुद केत[3] उजिआरे। जानहुँ उए गगन महँ तारे।
उतरहिं मेघ चढ़हिं लै पानी। चमकहिं मंछ बीजु[4] की बानी।
पैरहिं[5] पंखि सो संगहि[6] संगा। सेत पीत राते बहु[7] रंगा।[8]
चकई चकवा केलि कराहीं[9]। निसि बिछुरहिं[10] औ दिनहि मिलाहीं[10]।
कुरलहिं सारस भरे हुलासा[11]। जिअन हमार मुअहिं एक पासा[12]।
केंवा[13] सोन[14] ढेक बग लेदी। रहे अपूरि मीन जल भेदी[15]।

नग अमोल तेन्ह तालन्ह[16] दिनहिं बरहिं[17] जनु दीप।
जो मरजिआ होइ[18] तहँ सो पावइ यह सीप॥

[३४]

पुनि जो लाग[1] बहु[2] अंब्रित बारी। फरीं अनूप होइ रखवारी।
नवरँग[3] नीबू सुरँग[4] जँभीरा। औ बादाम बेद[5] अंजीरा।
गलगल[6] तुरंज[7] सदाफर फरे। नारँग अति राते[8] रस[9] भरे।
किसमिस सेब फरे नौ पाता[10]। दारिवँ दाख देखि मन राता[11]।

---

3. प्र० १, द्वि० ४,६ कँवल कुमुद। 4. तृ० ३ मंछ रुच्छ, द्वि० १ पखि बीजु 5. तृ० ३ पौरहिं, द्वि० ५ तैरहिं। 6. द्वि० २ रहसि एक। 7. प्र० १, तृ० १,३, पं० १ राते सब, द्वि० २ सब निन्हके। 8. च० १ कनक पंखि पैरहिं अति सोने। जानहु चित्र सँवारे सोने। (तुलना० ३१.७)। 9. प्र० २, द्वि० १, तृ० ३ क बिछोहा। 10. तृ० ३ करेहीं, दिनहि मिलि लेहीं, द्वि० ४,५, कराहीं, दिन मिलि जाहीं, च० १ कराही, औ देवस मिलाहीं। 11. प्र० १, द्वि० ५ करहिं हुलासा, द्वि० ४, तृ० २, च० १ जिअन हमारा। 12. द्वि० २,५ जीवन मरन सो एकहि पासा। द्वि ४, तृ० ?, च० १ मुएहु न बिछुरै साथ पिआरा। 13. द्वि० २ लेना, द्वि० ४ तृ० ३ बोलहि, द्वि० ३ नकठा 14. द्वि० १सेदं। 15. च० १ होइ जल जिअन मीन रस भेदी। 16. द्वि० २ तहँ नागन्ह, द्वि० ४ तहँ उपजहिं ~ 17. च० १ जरहिं। 18. प्र० १ होइ धँसइ, द्वि० ६, च० १ तहँ परइ, द्वि० १ भै रहै।

[३४] 1. द्वि० ४,५, च० १ आस पास। 2. द्वि० २ तहँ, च० १ सब। 3. प्र० १ बागद। 4. प्र० १, द्वि० ५,६, तृ० ३ तुरँज। 5. प्र० १ बेदान, द्वि० १, ५ बहु बेर, द्वि० ४ बहु पेड़, प० १ बेर। 6. प्र० १, तृ० ३ गागल 7. द्वि० १ तुन, तृ० ३ सुरँग। 8. द्वि० ४ औ अनार, तृ० २ तसराते द्वि० ७ रकत राते। 9. द्वि० ७ रँग। 10. प्र० १, द्वि० ५, च० १फरे सौ बाना, राता, तृ० १ होइ फरे पाना, राता। 11. प्र० १, द्वि० १ सुहावनि।

लागि सोहाई[11] हरपारेउरी। ओनइ रही केरन्ह की घउरी।
फरे तूत कमरख औ निउँजी। राय करौंदा बैरि[12] चिरउँजी[13]।
संखदराउ[14] छोहारा डीठे। औरु खजहजा खाटे मीठे[15]।

पानी देहिं खँडवानी कुआँहि[16] खाँड बहु मेलि।
लागीं घरी रहट की सींचहिं अंब्रित बेलि॥

[३५]

पुनि[1] फुलवारी लागि चहुँ पासा। बिरिख बेधि[2] चंदन भै[3] बासा।
बहुत[4] फूल फूली घन बेली। केवरा चंपा कुंद चँबेली।
सुरँग गुलाल कदम औ कूजा। सुगँध[5] बकौरी[6] गंध्रप[7] पूजा।
नागेसरि सदबरग नेवारी। औ सिंगारहार फुलवारी।
सोन जरद फूलीं[8] सेवती[9]। रूप मंजरी औ मालती[10]।
जाही जूही बकचुन लावा। पुहुप[11] सुदरसन लाग[12] सोहावा।
बोलसिरी[13] बेइलि[14] औ करना। सबहि फूल फूले बहु बरना।

तेन्ह सिर फूल चढ़हिं वै जेन्ह थैं मनि भागु।
आछहिं सदा सुगंध भै[15] जनु बसंत औ फागु[16]॥

[३६]

सिंघल नगर देखु[1] पुनि[2] बसा[3]। धनि राजा असि जाकरि दसा[3]।

१२, प्र० १ और। १३. द्वि० १ खिरौंजी। १४. द्वि०५, तृ० २, च० १ सुगंध राव, द्वि० ४ सँगतरा, द्वि० ३ राय सुगंध। १५. द्वि० २ अंब्रित फर बहु फरे अपूरी। अउ तहँलागि सार्जावन पूरी (अतिरिक्त पंक्ति के रूप में १६४.४) १६. द्वि० २ कूरहिं।

[३५] १. द्वि० ४ बहु। २. प्र० १ बेलि। ३. तृ० ३ भौ, द्वि० ३ पहिं। ४. प्र० १, द्वि० १,७ पुहुप, तृ० २ पूर औ। ५. द्वि० १ सुरँग। ६. तृ० ३ बिकौरा। ७. द्वि० १ अभित। ८. द्वि० १ सोन बरन भै फूल ९. तृ० ३ सेवानी। १०. तृ० ३ औ मालति जानी। ११. द्वि० १ और द्वि० २,४,७, तृ० ३ बहुत। १२. द्वि० १ दीख। १३. प्र० १, तृ० ३ मौलसिरी। १४. प्र० १ जो बेइलि, द्वि० १,२,३, बेला। १५. प्र० १ भौ, द्वि० ३ पहि। १६. च० १ सोई पेड़ सुगंध होइ जहां पौन बहि लाग।

[३६] १. द्वि० ६ दीप नगर, च० १ दीप देखु। २. प्र० १ तस, तृ० ३ फिरि, द्वि० ४. च० १ गन ३. द्वि० १, बासा, जाकर कबिलासा।

फूले कुमुद केत[3] उजिआरे। जानहुँ उए गगन महँ तारे।
उतरहिं मेघ चढ़हिं लै पानी। चमकहिं मंछ बीजु[4] की बानी।
पैरहिं[5] पंखि सो संगहि[6] संगा। सेत पीत राते बहु[7] रंगा।[8]
चकई चकवा केलि कराहीं[9]। निसि बिछुरहिं औ दिनहिं मिलाहीं[10]।
कुरलहिं सारस भरे हुलासा[11]। जिअन हमार मुअहिं एक पासा[12]।
केंवा[13] सोन[14] ढेक बग लेदी। रहे अपूरि मीन जल भेदी[15]।

नग अमोल तेन्ह तालन्ह[16] दिनहिं बरहिं[17] जनु दीप।
जो मरजिआ होइ[18] तहँ सो पावइ वह सीप॥

[३४]

पुनि जो लाग[1] बहु[2] अंब्रित बारी। फरीं अनूप होइ रखवारी।
नवरँग[3] नीबू सुरँग[4] जँभीरा। औ बादाम बेद[5] अंजीरा।
गलगल[6] तुरँज[7] सदाफर फरे। नारँग अति राते[8] रस[9] भरे।
किसमिस सेव फरे नौ पाता[10]। दारिउँ दाख देखि मन राता[11]।

---

3. प्र० १, द्वि० ४,६ कँवल कुमुद। 4. तृ० ३ मंध कच्छ, द्वि० १ पंखि बीजु 5. तृ० ३ पीरहिं, द्वि० ५ तैरहिं। 6. द्वि० १ रहसि एक। 7. प्र० १, तृ० १,३, पं० १ राते सब, द्वि० १ सब तिन्हके। 8. च० १ कनक पंखि पैरहिं अति लोने। जानहु चित्र सँवारे सोने। (तुलना० ३१.७)। 9. प्र० १, द्वि० १, तृ० ३ क बिछोवा। 10. तृ० ३ करेहीं, दिनहि मिलि लेहीं, द्वि० ४,५, कराही, दिन मिलि जाहीं, च० १ कराही, औ देवस मिलाहीं। 11. प्र० १, द्वि० ५ करहिं हुलासा, द्वि० ४, तृ० २, च० १ जिअन हमारा। 12. द्वि० २,५ जीवन मरन सो एकहि धारा। द्वि ४, तृ० २, च० १ मुएहु न बिछुरै साथ पिआरा। 13. द्वि० २ लेना, द्वि० ४ तृ० ३ बोनहि, द्वि० ३ नकठा 14. द्वि० १ सेद। 15. च० १ होइ जल जिअन मीन रस भेदी। 16. द्वि० २ तहँ नागन्ह, द्वि० ४ तहँ उपजहिं 17. च० १ जरहिं। 18. प्र० १ होइ धँसर, द्वि० ६, च० २ तहँ परइ, द्वि० १ भै रहै।

[३४] 1. द्वि० ४,५, च० १ आस पास। 2. द्वि० २ तहँ, च० १ सब। 3. प्र० १ कागद। 4. प्र० १, द्वि० ५,६, तृ० ३ तुरँज। 5. प्र० १ बेदान, द्वि० २, ५ बहु बेद, द्वि० ४ बहु पेड़, पं० १ बेर। 6. प्र० १, तृ० ३ गागल 7. द्वि० १ तुन, तृ० ३ सुरँग। 8. द्वि० ४ औ अनार, तृ० २ ससराने द्वि० ७ रकत राते। 9. द्वि० ७ रँग। 10. प्र० १, द्वि० ५, च० १ फरे सो बाता, राता, तृ० १ होइ फरे पाता, राता। 11. प्र० १, द्वि० १ सुहावनि।

लागि सोहाई[११] हरपारेउरी। ओनइ रही केरन्द की घउरी[१]।
फरे तूत कमरख औ निउंजी। राय करौंदा बैरि[१२] चिरउँजी[१३]।
संखदराउ[१४] छोहारा डीठे। औरु खजहजा खाटे मीठे[१५]।

पानी देहिं खँडवानी कुआँहि[१६] खाँड बहु मेलि।
लागीं घरी रहट की सींचहिं अंम्रित वेलि॥

[३५]

पुनि[१] फुलवारी लागि चहुँ पासा। विरिख वेधि[२] चंदन भै[३] वासा।
वहुत[४] फूल फूली घन वेली। केवरा चंपा कुंद चँवेली।
सुरँग गुलाल कदम औ कूजा। सुगँध[५] बकौरी[६] गंध्रप[७] पूजा।
नागेसरि सदवरग नेवारी। औ सिंगारहार फुलवारी।
सोन जरद फूलीं[८] सेवती[९]। रूप मंजरी औ मालती[१०]।
जाही जूही वकचुन लावा। पुहुप[११] सुदरसन लाग[१२] सोहावा।
बोलसिरी[१३] बेइलि[१४] औ करना। सबहि फूल फूले बहु बरना।

तेन्ह सिर फूल चढ़हिं वै जेन्ह थैं मनि भागु।
आछहिं सदा सुगंध भे[१५] जनु बसंत औ फागु[१६]॥

[३६]

सिंघल नगर देखु[१] पुनि[२] वसा[३]। धनि राजा असि जाकरि दसा[३]।

१२, प्र० १ और। १३. द्वि० १ खिरौंजी। १४. द्वि०५, तृ० २, च० १ सुगंध राव, द्वि० ४ सँगतरा, द्वि० ३ राय सुगंध। १५. द्वि० २ अंम्रृत फर बहु फरे अपूरी। अउ तहँलागि सर्जावन पूरी (अतिरिक्त पंक्ति के रूप में १६४.४) १६. द्वि० १ कूआहिं।

[३५] १. द्वि० ४ वहु। २. प्र० १ वेनि। ३. तृ० ३ भौ, द्वि० ३ पहिं। ४. प्र० १, द्वि० १,७ पुहुप, तृ० ३ पूर औ। ५. द्वि० १ सुरँग। ६. तृ० ३ बिजौरा। ७. द्वि० १ अमित। ८. द्वि० १ सोन वरन भै फूल ९. तृ० ३ सेवानी। १०. तृ० ३ औ मालति जानी। ११. द्वि० १ और द्वि० २,४,७, तृ० ३ बहुउ। १२. द्वि० १ दीख। १३. प्र० १, तृ० ३ मौलसिरी। १४. प्र० १ ओ वेइलि, द्वि० १,२,३, वेला। १५. प्र० १ भो, द्वि० ३ पहि। १६. च० १ सोई पेड़ सुगंध होइ जहां पौन वहि लाग।

[३६] १, द्वि० ६ दीप नगर, च० १ दीप देखु। २. प्र० १ तस, तृ० ३ फिरि. द्वि० ४. च० १ घन ३. द्वि० १, बासा, जाकर कविलासा।

ऊँची पँवरी ऊँच अवासा। जनु कबिलास इंद्र कर[४] बासा।
राउ राँक सब घर घर सुखी। जो देखिअ सो हँसता मुखी।
रचि रचि राखे चंदन चौरा[५]। पोते अगर मेद औ केवरा।
सब चौपारिन्ह चंदन खँभा। ओठँघि सभापति बैठे सभा[६]।
जनहुँ सभा देवतन्ह कै जुरी। परी द्रिस्टि इंद्रासन पुरी।
सबै गुनी पंडित औ ग्याता। संसकिरत सब के मुख बाता[७]।

औहिक पंथ[८] सवाँरहिं[९] जस सिवलोक[१०] अनूप[११]।
घर घर नारि पदुमिनी मोहहिं दरसन रूप[११]॥

[३७]

पुनि देखिअ सिंघल की हाटा। नवौ निद्धि लछिमी सब बाटा[२]।
कनक हाट सब कुँहकुँह लीपी। बैठ महाजन सिंघल दीपी।
रचे हँथौड़ा[३] रूपइँ ढारी। चित्र कटाउ अनेग सँवारी।
रतन पदारथ मानिक मोती। हीर पँवार सो अनबन[४] जोती।
सोन रूप सब[५] भएउ पसारा। धवलसिरी[६] पोतहिं घर बारा[७]।

---

४. च० १ दीन्ह दहु। ५. द्वि० २, तृ० १ चौरा। ६. द्वि० १ ओठँघि ओठँघि बैठे अउ सभा, द्वि० ४ औ तहँ बैठ सभापति सभा, द्वि० ५ ओठँघि सभा तब बैठ्यो राजा, तृ० १ ठेंगि सभापति बैठे सभा, च० १ ओठँघि सभा सब बैठे सभा। ७. द्वि० ५ राता। ८. द्वि० १ ओही क ग्रंथ, प्र० १, २, तृ० १, २, ३, च० १ माईक पथ, द्वि० २ नाहक पंथ, द्वि० ४ अहनिसि रैठि, द्वि० ५ अलख पंथ, द्वि० ३, पं० १ आधक पंथ, द्वि० ६ अंगक पंथ, द्वि० ७ औ अस पंथ। ९. प्र० १ सरोज ससि। १०. प्र० १ सोभित कला। ११. प्र० १ २, अनूप, सुभ दरसन सुभ रूप, द्वि० २,४,५,६, तृ० १,२ अनूप, सब अछरी के रूप। च० १ भेष, पाप हरैं जो देष।

[३७] १. च० १ बा बरनौं। २. द्वि० ३, तृ० ३ पाटा। ३. प्र० १ हाथ रचे सब, द्वि० ७ रचे हाट सब। ४. द्वि० २ हीरालाल पना बहु, द्वि० ५ हीरा लाइ सँवारे, तृ० २ हीरा लाल मानक बहु, द्वि० ३,४,५, च० १ हीर पँवार सो अनवन (हिंदी मूल)। ५. प्र० १, द्वि० २,४,५,७, च० १, पं० २ भल। ६. पं० २ रह्यो बिसरि। ७. द्वि० १ पित-वहिं घर बारा, प्र० १ पाटहि पटसारा, द्वि० ४ पच्छहिं बनिजारा, द्वि० २,३, तृ० १, च० १ पटवहिं घर बारा, तृ० ३ पाटहिं घर बारा, पं० १ पव-नहिं घर बारा।

औ कपूर बेना कस्तूरी। चंदन अगर रहा भरिपूरी।
जेइँ न हाट एहि लीन्ह[9] बेसाहा। ताकहँ आन हाट कित[10] लाहा।

कोई करै बेसाहना काहू केर बिकाइ।
कोई चला[11] लाभ सौं[12] कोई मूर गवाँइ॥

[३८]

पुनि सिंगार हाट धनि[1] देसा[2]। कइ सिंगार तहँ[3] बैठी बेसा।
मुख तँबोर तन[4] चीर कुसुंभी। कानन्ह कनक जराऊ खुंभी।
हाथ बीन सुनि मिरिग भुलाहीं। नर मोहहिं सुनि[5] पैगु न[6]जाहीं[7]।
भौंह धनुक तह नैन अहेरी। मारहिं बान सान[8] सौं[9] फेरी[10]।
अलक कपोल डोल हँसि देहीं। लाइ कटाख[11] मारि[12] जिउ लेहीं।
कुच कंचुकि जानहुँ जुग सारी। अंचल देहि सुभावहिं ढारी[14]।
केत खेलार हारि[15] तेन्ह पासा। हाथ झारि होइ[16] चलहिं निरासा।

चेटक लाइ हरहिं मन जौ लहि गथ है फेंट[17]।
साँठि नाठि[18] उठि[19]भए बटाऊ[20] ना[21]पहिचान न भेंट॥

---

९. प्र० १ अस हाट न लीन्ह, द्वि० ६ बहि पहिलेहिं हाट, तृ० २ तेहि नहीं हाट, पं० १ न लीन्ह तेहि हाट। १०. प्र० १,२ नहिं, तृ० ३ कस, पं० १ का। ११. तृ० ३ चलै। १२. प्र० १, च० १ लै।

[३८] १. प्र० १ कइ। २. द्वि० ६ पुनि देखिअ सिंघल कै हाटा। ३. द्वि० ४,६, च० १ सर। ४. द्वि० २,५, तृ० १ सिर। ५. प्र० १ मोहित होहिं, द्वि० १ नर मोइहिं पुनि, तृ० ३ नरमोहहिं गुन, द्वि० ३ सुर मोहहिं सुनि। ६. द्वि० ६ पर कोउ न। ७. प्र० १ पैगु नहिं जाहीं। ८. द्वि० ४ सैन। ९. प्र० १ वै। १०. द्वि० ५ हेरी। ११. तृ० २ वाम कटाछ। १२. च० १ काढि। १४. द्वि० २ सारी, द्वि० ३ टारी, द्वि० ५ दारी। १५. प्र० १ केते खेलि रहे, द्वि० १ केते खेलार रहहिं, तृ० २ कत खेलार हारे। १६. द्वि० ५ उठि, द्वि० १ कै। १७. द्वि० ५ गथ होइ फेट, द्वि० ६ गथ भा भेट। १८. द्वि० १ घटे। १९. द्वि० ५ पुनि, द्वि० ७ भै। २०. प्र० १ उठि भागा, द्वि० २ औ यह भए, द्वि० १ नहिं पूछहिं, द्वि० ४ उठि भागई, तृ० १ पुनि भेट न पावै। २१. द्वि० १ जस।

[३९]

लै लै बैठ[1] फूल फुलहारी[2]। पान अपूरब धरे सँवारी[3]।
सोंधा सबै बैठु लै गाँधी[4]। बहुल[5] कपूर खिरौरी बाँधी[4]।
कतहूँ पंडित पढ़हिं पुरानू। धरम पंथ[6] कर करहिं बखानू।
कतहूँ कथा कहै कछु कोई। कतहूँ नाच कोड भलि होई।
कतहुँ छरहटा पेखन लावा। कतहूँ पाखँड[7] काठ नचावा[8]।
कतहूँ नाद सबद[9] होइ भला। कतहूँ नाटक चेटक कला[10]।
कतहुँ काहुँ[11] ठग बिया[12]लाई। कतहुँ लेहिं मानुस बौराई[13]।

चरपट चोर धूत[14] गँठिछोरा मिले रहहिं तेहि नाँच।
जो तेहि[15] नाँच[16] सजग भा अगुमन[17]गथ ताकर पै[18]बाँच॥

[४०]

पुनि आइअ[1]सिंघल गढ़ पासा। का बरनौं जस लाग अकासा[2]।
तरहिं कुरुंम[3] बासुकि कै पीठी। ऊपर इन्द्रलोक पर[4] डीठी।
परा खोह[5] चहुँ दिसि तस[6]बाँका। काँपै जाँघि जाइ नहिं झाँका।
अगम असूझ देखि डर खाई। परै सो[7] सप्त पतारंह जाई।

---

[३९] १. प्र० २, द्वि० ६, तृ० २ बैठ सिंगारहाट, द्वि० ७ बैठ सिंगारहार, द्वि० ५ लै कै फूल बैठ। २. द्वि० ७, तृ० ३ फुलवारी। ३ द्वि० १ पुज कपूर सो धरे सँवारी। औ लै बैठे फूल सँवारी। ४. तृ० ३ गधा, बंधी। ५ प्र० १, द्वि० ७ बहुत, द्वि० ४ फूल, द्वि० ६ आव, द्वि० ३ मेलि, च० १ धरे। ६ तृ० ३ रासि, द्वि० ३ पाव। ७. द्वि० १ पेखन, द्वि० ४, ६, तृ० २ परवंडी। ८. द्वि० ५ नाँच नचावा, तृ० २ नाच बनावा। ९. द्वि० ४ नाँव सबद, द्वि० ७ नाद निरित, द्वि० ३ नाद बेद। १०. तृ० ३ चला। ११. प्र० १, द्वि० ५, तृ० १ काहुँ, प्र० २ कतहुँ। १२. द्वि० २ ठगौरी। १३. प्र० १ मानव कर लेहिं छलाई, तृ० २ लेहिं काहु बौराई। १४. द्वि० ४ ठग चरवट लोभ। १५ द्वि० पहि। १६. प्र० १, द्वि० १, २, ३, तृ० २, पं० १ हाट, प्र० २ माँहि, द्वि० ६, च० १ रहै। १७. प्र० २ द्वि० १, ७ भा। १८. प्र० १ गथ ता कर सो, द्वि० ७ अगुमन ग्रथ पै।

[४०] १. तृ० १ ओहि। २. द्वि० १ अस उत्तिम बासा, द्वि० ४, ५, तृ० ३ जनु लाग अकासा। ३. द्वि० १ कूँम शेष प्रतियों में कुरुंम (हिंदीमूल)। ४. प्र० १ सब, तृ० ३ सों, पं० १ बर। ५. प्र० १ खाँव फेर, द्वि० ४ परा खाँव। ६. द्वि० ५ सब। ७. तृ० हेसो।

नव पँवरीं बाँकी नव खंडा। नवहुँ जो[८] चढ़ै जाइ[९] ब्रह्मंडा।
कंचन कोट जरे नग सीसा[१०]। नखतन्ह भरा बीजु[११] अस[१२] दीसा।
लंका चाहि ऊँच गढ़ ताका[१३]। निरखि न जाइ दिस्टि मन थाका।

हिअ न समाइ दिस्टि नहिं पहुँचै जानहु ठाढ़ सुमेरु।
कहँ लगि कहौं ऊँचाई ताकरि[१४] कहँ लगि बरनौं फेरु॥

[४१]

निति गढ़ बाँचि चलै ससि[१]सूरू। नाहिं त बाजि होइ रथ चूरू[२]।
पवरी नवौ[३] बज्र कइ साजी। सहस सहस तहँ बैठे पाजी।
फिरहिं पाँच कोटवार सो[५]भँवरी। काँपै पाँय[६] चँपत वै[७] पँवरी।
पँवरिहिं पँवरि सिंघ[८]गढ़ि काढ़े। डरपहिं राय[९] देखि तेन्ह ठाढ़े।
बहु बनान[१०] वै नाहर गढ़े। जनु गाजहिं[११] चाहहिं सिर चढ़े।
टारहिं पूँछि पसारहिं जीहा। कुंजर डरहिं कि गुजरि[१२] लीहा[१३]।
कनक सिला गढ़ि सीढ़ी लाई। जगमगाहिं गढ़ ऊपर ताईं।

नवौ खंड नव पँवरीं औ तहँ बज्र[१४] केवार।
चारि बसेरें सों[१५]चढ़ै सत[१६]सत सौं चढ़ै जो[१७]पार॥

---

८. प्र० १ जो तेहि, द्वि० २, तृ० २, च० १ तिन्ह कै, द्वि० ३ जो नहिं। ९. द्वि० २, तृ० २ चढ़ै। १०. प्र० १, द्वि० २, ३ जरे कौसीसा, द्वि० ४ जड़ावै सीसा, द्वि० ७ जरे नग सीमा, तृ० १ जरा पुनि सीसा। ११. द्वि० ४, ६ गगन, द्वि० ३ निरखि। १२. प्र० १, द्वि० २, पं० १ जनु, द्वि० ३ तहँ। १३. प्र० १, च० १ बाँका। १४. द्वि० १, २, ३, ५, तृ० २, च० १ उँचाई।

[४१] १. प्र० १ जग। २. तृ० २ होइ बाजि रथ चूरू, द्वि० ७ होइ तबाजि चक चूरू, तृ० १ होइ बाजि कर चूर। ३. तृ० २ नवौ पवरि। ५. प्र० १ तेहँ। ६. तृ० २ जाँघ। ७. प्र० २ जेहिं। ८. तृ० ३ सिघल। ९. द्वि० २ हस्ति, द्वि० ४ लाइ, द्वि० ७ गयंद। १०. द्वि० १ यहै बान, द्वि० २ यहै जान, द्वि० ७, तृ० ३ बहु बिनान, द्वि० ३, च० १ बहु बनाव। ११. प्र० २ अस गाजहिं। १२. प्र० १ लीलै, तृ० ३ कुंजल। १३. द्वि० २ चीन्हा, तृ० १ लीहा। १४. द्वि० ७ दशा, तृ० १ नवौ। १५. प्र० १, तृ० १, च० १ जो। १६. तृ० २ सिर। १७. प्र० १, च० १ चढ़ै सो, द्वि० ५, ६ उतरै।

[४२]

नवौं[1] पँवरि पर[2] दसौं दुआरू। तेहि पर बाज राज घरिआरू।
घरी सो बैठि[3] गनै घरिआरी। पहर पहर सो आपनि[4] बारी[5]।
जबहिं[6] घरी पूजी वह[7] मारा। घरी घरी घरिआर पुकारा[8]।
परा जो डाँड जगत सब डाँड़ा। का निचिंत माँटी कर भाँडा।
तुम्ह तेहि चाक चढ़े होइ काँचे। आएहु फिरै न थिर होइ बाँचे[10]।
घरी जो भरै घटै तुम आऊ। का निचिंत सोवहि रे[11] बटाऊ।
पहरहि पहर गजर नित होई[12]। हिआ निसोगा जाग न सोई[13]।

मुहमद जीवन जल भरन[14] रहँट घरी[15] की रीति।
घरी सो आई ज्यों भरी[16] ढरी जनम गा बीति[17]॥

[४३]

गढ़ पर[1] नीर खीर[2] दुइ नदी। पानी भरहिं जैसे दुरुपदी।
औरु कुंड एक मोतीचूरू। पानी अंब्रित कीच[3] कपूरू।
ओहि क पानि राजा पै पिआ। बिरिध[4] होइ नहि जौलहि जिआ।
कंचन बिरिख एक तेहि पासा। जस कलपतरु इंद्र कविलासा।
मूल पतार सरग ओहि[5] साखा। अमर बेलि को पाव को[6] चाखा।

---

[४२] १. द्वि० २,४,५,७, च० १ नव। २. द्वि० ५,६ भी। ३. प्र० १ घरी जो बैठि, द्वि० २ घरी घरी सो। ४. द्वि० २,४,५, तृ० ३ पहर सो अपनी अपनी। ६. द्वि० ४,५, च० १ जौहि, तृ० २ जौ री (हिंदी मूल) ७. प्र० १ तब। ८. द्वि० ७ (यथा.७) जौलगि देवस अन नहिं होई। तौ लहि चेत करहु नर लोई। ९. प्र० १ भएउ सो फेर, तृ० ३ आएहु रहे, द्वि० ३,४, आपहि फिरे, द्वि० ५ अवहि न फिरे, च० १ अबहुँ न भरे। १०. प्र० १ नाहि फिर बाचे। ११. प्र० १ अब सोवहु, तृ० ३ हौ सोवहु. द्वि० ४,५ सोवहु जो। १२. द्वि० २ पुनि। १३. प्र० १ हिया बसन बानी सुन सोई, तृ० ३ हिय न सुगार जाग नहिं सोई, द्वि० ४ हिया बजर मन जाग न सोई, च० १ तबहु निसोगा जाग न सोई। १४. द्वि० १ तजमरन, द्वि० ७ दिन भरन। १५. प्र० १ जैसि रहट, द्वि० ३ गवनइ घरी। १६ प्र० १,२ घरी जो आई मरन की। १७. प्र० १ जनम गयो तब बीति, द्वि० ७ जनम गयो निमि बीति।

[४३] १. प्र० १ तर। २. प्र० १ छीर। ३. द्वि० १ बास, तृ० ३ काँच ४. च० १ बूढ़। ५. प्र० १ गौ। ६. द्वि० २ अस पाव को, तृ० ३ पावै को, तृ० १ को पाव न।

चाँद पात औ फूल तराईं। होइ उजिआर नगर जहँ ताईं[७]।
वह फर पावै तपि कै कोई। बिरिध खाइ नव[८] जोवन होई।

राजा भए भिखारी सुनि वह अंब्रित भोग।
जेइँ पावा सो अमर भा ना किछु[९] ब्याधि न रोग॥

[४४]

गढ़ पर बसहिं चारि[१] गढ़पती। असुपति गजपति औ नरपती[३]।
सब क धौरहर सोनें साजा। औ अपने अपने घर[४] राजा।
रूपवंत धनवंत सभागे। परस पखान[५] पँवरि तेन्ह लागे।
भोग बेरास सदा सब[७] माना। दुख चिंता कोइ जरम न[८] जाना।
मँदिर मँदिर सबकें चौपारी। बैठि कुँवर सब खेलहिं सारी।
पाँसा ढरै खेल भलि[९] होई। खरग दान सरि पूज न कोई।
भाँट बरनि कहि[१०] कीरति भली। पावहिं हस्ति घोर सिंघली।

मँदिर मँदिर फुलवारी[११] चोवा चंदन बास।
निसि दिन रहै बसंत भा[१२] छहु[१३] रितु बारहु मास॥

[४५]

पुनि चलि देखा राज दुआरू। महि घूँबिअ पाइअ[१]नहिं बारू[२]।[३]
हस्ति सिंघली बाँधे बारा। जनु सजीव[४] सब ठाढ़ पहारा।

---

७. तृ० १ भर सो नगर बरनौं वहँ ताईं। ८ तृ० ३ तौ। ९. प्र० १, द्वि० ७ तेहि।

[४४] १. प्र० १,२, द्वि० ७, प० १ भारी। २ द्वि० ७, च० १ भुअपती। ३. द्वि० ४ अनुपनि गनपति नद नरपती, द्वि० ५ असुपति गजपती भुवनपति औ नरपती। ४ द्वि० ४, च० १ सब। ५ द्वि० ४ पाहन। ६. प्र० १ पाँव तिन्ह, द्वि० ७ पँवारन। ७. तृ० २ सबै वेउ, द्वि० ६ सबै सुख। ८. तृ० ३ कोउ कहूँ न, द्वि० ५, तृ० १ कोई नहि। ९. तृ० ३ खेट भलि, द्वि० ७ खेज बहु। १०. द्वि० ४ सब। ११. प्र० २ मंदिर मंदिर सब के फुलवारी। १२. तृ० २ होइ। १३. द्वि० ६, हो, द्वि० ३ षट।

[४५] १. द्वि० ५ मास फेर पाइअ, द्वि० ७ महिपति मुखहिं पाव। २. पं० १ पारू। ३. द्वि० ६ तेहिपर बाज राज घरिआरू।(४२·१)[४] तृ० १ मैदान।

कवनौ[५] सेत पीत रतनारे। कवनौ[६] हरे धूप औ कारे[६]।
बरनहि[७] बरन गगन जस मेघा। औ तिन्ह गगन पीठ[८] जनु[९] ठेंघा।
सिंघल के बरने सिंघली। एकेक[१०] चाहि सो एकेक[११] बली।
गिरि[१२]पहार पब्बै[१३]गहि[१४]पेलहिं। बिरिख उपारि[१५]झारि[१६]मुख मेलहिं।
मात निमत सब गरजहिं बाँधे। निसि दिन रहहिं महाउत काँधे।

धरती भार न अँगवै[१७] पाँव धरत उठ[१८] हालि।
कुरुँम[१९] टूट[२०] फन[२१] फाटे तिन्ह हस्तिन्ह की चालि।

[४६]

पुनि बाँधे[१] रजबार तुरंगा। का बरनौं जस[२] उन्हके रंगा।
लील समुंद[३] चाल जग जानै। हाँसुल भँवर किआह बखानै।
हरे[४] कुरंग[५] महुअ बहु भाँती। गुरं कोकाह[७] बलाह[८] सो पाँती[९]।
तीख तुखार चाँड़ औ बाँके। तरपहिं तबहि[१०]तायन[११] बिनु हाँके।
मन तें अगुमन डोलहिं बागा[१३]। देत[१४] उसास गगन सिर लागा।

---

५. द्वि० २, च० १ कोई कोई। ६. प्र० १ अनि, द्वि० ५ अस। ७. द्वि० ३ फेरहिं। ८. प्र० १ भार बैठि गगन, द्वि० २,४, ५, ३ उठहिं गगन बैठि। ९. द्वि० ७, च० २ गै। १०. प्र० १ एकहि। ११. प्र० १ एक बड़। १२. च० १ गढ। १३ प्र० १, द्वि० ५,६, तृ० १.२, च० १ परबत, द्वि० १ परबै, द्वि० ३ हस्ती। १४. प्र० १, द्वि० ४ ५, च० १ कहँ, द्वि० ७ ते। १५. प्र० १, द्वि० ४,५,६ उन्मारि। १६. द्वि० ४ झार। १७. द्वि० ७ न लै मकै। १८. द्वि० २ मरि। १९. द्वि० ४ गिरहि, शेष प्रतियों में कुरुँम है (यथा ४०.२ हिंदी मूल)। २०. प्र० १ धसै। २१. च० १ मन।

[४६] १. द्वि० ७ बरनौं। २. तृ० ३ हौं। ३. प्र० १ च० १ मुरंग, द्वि० २, तृ० ३ नील। ४. द्वि० ४ चौधर, द्वि० जरदा। ५. द्वि० २ माहरे। ६. प्र० २, च० १ सुपंग। ७. द्वि० २ मक। ८. द्वि० १ बोरै, द्वि० २, तृ० १ बोलाह। ९. प्र० २, तृ० १ सो मार्ना, द्वि० १ निसु जानै। १०. द्वि० ४,५, तृ० २, च० १ नौहि (हिंदी मूल), द्वि० ६ रहि। ११. प्र० १ तैज, द्वि० १,६ पाय, द्वि० २ ताय, द्वि० ५ ताजि, द्वि० ७ जाहिं, तृ० ३ जान। १३. द्वि० १,३ आगा, द्वि० २ तुरागा, तृ० ३ राजा, तृ० १ रागा, द्वि० ७, च० १ बेरागा, पं० १ तुरंगा। १४. प्र० १, द्वि० ४ लेत।

पावहिं साँस[१५] समुँद पर[१६] धावहिं। बूड़ न पावँ पार होइ आवहिं[१७]।
थिर न रहहिं रिस लोह चबाहीं। भाँजहि[१८] पूँछि सीस उपराहीं।

अस तुखार सब देखे जनु मन के रथवाह[१९]।
नैन पलक[२०] पहुँचावहिं जहँ पहुँचा कोउ चाह॥

[४७]

राज सभा पुनि[१] दीख बईठी[२]। इंद्रसभा जनु परि गइ[३] डीठी।
धनि राजा असि सभा सँवारी। जानहु फूलि रही फुलवारी।
मुकुट बंध सब[४] बैठे राजा। दर[५] निसान नित[६] जेन्ह के बाजा[७]।
रूपवंत[८] मनि दिपै[९] लिलाटा। माँथें छात[१०] बैठ सब[११] पाटा[१२]।
मानहु कँवल सरोवर[१३] फूले। सभा क रूप[१४] देखि मन[१५] भूले।
पान कपूर मेद कस्तूरी। सुगँध बास भरि[१६] रही अपूरी[१७]।
माँझ ऊँच इंद्रासन साजा। गंध्रपसेनि बैठ जहँ[१८] राजा।

छत्र गगन लहि ताकर सूर तवै[१९] जसु आपु।
सभा कँवल जिमि बिगसै माँथे बड़[२०] परतापु॥

[४८]

साजा राजमँदिर कबिलासू[१]। सोने कर सब पुहुमि[२] अकासू[३]।

---

१५. द्वि० ४ पौन समान। १६. द्वि० ७ समुँद उडावहि, तृ० ३ गगन चहँ धावहि। १७. द्वि० ३ पहुँचावहि। १८. द्वि० ३ धावहि, द्वि० ६ भागी जहि। १९. प्र० १ मनमथ के दाह द्वि० २ इदर रथवाह। २०. द्वि० २,६ निमिख।

[४७] १. द्वि० ५, प० १ सब। २. तृ० १ बैठी देखी। ३. द्वि० २ अमि आवइ द्वि० ३ जनु,जुरी सो। ४ प्र० १ बाँधि कै, द्वि० ७, ३ बाँधि सब। ५. द्वि० ७ धन, द्वि० ३ द्वार। ६. प्र० १, द्वि० २, ५, ६, तृ० १, ३, पं० १ सब। ७. द्वि० ५, ७ साजा। ८. तृ० १ दरपवन्त। ९. प्र० २ धनवत। १०. तृ० ३ छत्र। ११. प्र० १, द्वि० ६ निति। १२. द्वि० ५ राजा। १३. च० १ हाथ कँवल जस सरवर। १४. द्वि० ७ ब्रह्मा जस रूप, च० १ भाग इरूप। १५. प्र० १ देवता, द्वि० ७ देखि जनु, तृ० ३ देखि मन। १६. द्वि० ४, तृ० १, च० १ सब, द्वि० ६ निति। १७. द्वि० ३ भरिपूरी। १८. प्र० १, द्वि० २, ५, ६, तृ० १ बैठ तहँ, पं० १ बैठ बड। १९. द्वि० ५ दिपै। २०. प्र० १ मनि।

[४८] १. प्र० १, तृ० ३ रनिवासू। २. द्वि० ३ धरति, द्वि० ७ मंदिल।

सात खंड धौराहर साजा । उहै सँवारि सकै अस राजा ।
हीरा ईंट कपूर गिलावा । औ नग लाइ सरग लै[4] लावा[5] ।
जाँवत सबै उरेह उरेहे । भाँति भाँति नग[6] लाग उबेहे ।
भा कटाव सब अनबन[7] भाँती । चित्र होत गा[8] पाँतिहि पाँती[9] ।
लागे खंभ मनि मानिक जरे । जनहु दिया दिन आछत[10] बरे[11] ।
देखि धौरहर कर उँजियारा । छपि[12] गे चाँद सूर औ तारा ।
सुने[13] सात बैकुंठ जस तस साजे खँड सात ।
बेहर बेहर भाउ तेन्ह[14] खँड खँड ऊपर[15] जात[16] ॥

[४६]

बरनौं राज मंदिर[1] रनिवासू । अछरिन्ह भरा जानु[2] कबिलासू ।
सोरह सहस पदुमिनी रानी । एक एक तें रूप बखानी ।
अति सुरूप औ अति सुकुवारा । पान फूल के रहहिं अधारा ।
तिन्ह ऊपर चंपावति रानी । महा सुरूप पाट परधानी ।
पाट बैसि रह किए सिंगारू । सब रानी ओहि करहिं जोहारू ।
निति नव[3] रंग सुरंगम सोई । प्रथमै बैस[4] न सरवरि कोई ।
सकल[6] दीप महँ चुनि चुनि आनी[7] । तेन्ह महँ दीपक[8] बारह बानी[9] ।

---

३. प्र० १ अवासू । ४. तृ० १ पै । ५. प्र० १ मलयागिरि चंदन सब लाना । ६. प्र० १, तृ० ३ सब । ७. द्वि० ४, ५, च० १ अनवन (हिंदी मूल) । ८. प्र० १, द्वि० २, ४, ५, ६, च० १ कटाव भो, तृ० ३ गोटिका, प्र० २ उरेहा, तृ० २ अनेग भो । ९. प्र० १, द्वि० २, ६ भाँतिहि भाँती । १०. प्र० २ निसि दिन ही दीपक जनु, तृ० २ जनहुँ दिया दिन निसि कहँ द्वि० ३ जानहुँ दिया रैनि दिन । ११. द्वि० ४, ६ धरे । १२. च० १ भपि । १३. द्वि० ५ साजे । १४. द्वि० २, ३, ५, ६, तम । १५. द्वि० ६ तस । १६. द्वि० २, ४, ३ ठान । १७. तृ० ३ में, ४, ५ के पहले चरण और ६, ७, ८, ९ छूटे हुए हैं ।

[४९] १. प्र० १ राजा कर । २. तृ० ३ जनहुँ । ३. द्वि० ७ अनि नौरंग, च० १ निति नव रंग । ४. द्वि० ६ प्रथमै बासन, द्वि० ७ प्रीनि मानहि तोहि, तृ० २ परथम तैसन, च० १ प्रथमै अदम । ५. तृ० ३ होई । ६. द्वि० ४, ५, च० १ सिंघल । ७. द्वि० ४ सुनी जो रानी, द्वि० ५, च० १ जेतनी रानी, द्वि० ६ रही जो रानी, तृ० १ जनी सो रानी । ८. द्वि० ५ कंचन । ९. प० १ (यथा-२) सकल दीप महँ जो उजिआरी । चुनि चुनि लीन्हि आप सो नारी

कुअँरि बतीसौ लक्खनी[10] अस सब माँह अनूप।
जौंवत सिंघल दीपइ[12] सबै बखानइ[13] रूप ॥

[५०]

चंपावति जो रूप उतिमाहाँ। पदुमावति कि जोति मन छाहाँ[1]।
भै चाहै असि कथा सलोनी[2]। मेटि न जाइ लिखी[3] जसि होनी।
सिंघल दीप भएउ तब[4] नाऊँ। जौं अस दिया दीन्ह[5] तेहि ठाऊँ।
प्रथम सो जोति गगन निरमई। पुनि सो पिता माथें मनि भई।
पुनि वह जोति मातु घट आई। तेहि ओदर आदर बहु[6] पाई।
जस औधान पूर[7] होइ तासू। दिन दिन हिएँ[8] होइ परगासू।
जस अंचल झीनें[9] महँ दिया। तस उजियार देखावै हिया।
सोनै मँदिर[10] सँवारै औ चंदन[11] सब लीप।
दिया जो मनि सिव लोक महँ[12] उपना[13] सिंघलदीप ॥

[५१]

भए दस मास पूरि भै[1] घरी। पदुमावति कन्या औतरी।
जानहु सुरुज किरिन हुति[2] काढ़ी। सुरुज करा घाटि वह बाढ़ी।
भा निसि माँह दिन क[3] परगासू। सब उजिआर भएउ कबिलासू।

---

१०. तृ० ३ बन्न सुलरद्दनि। १२. द्वि० २, ३, तृ० ३, सिंघल दीप महँ, तृ० २ सिंघल दीप है। १३. प्र० १, द्वि० ७ सराहहिं, द्वि० ३ भुलाने, च० १ बखानइ।

[५०] १. प्र० १, द्वि० ६ चंपावति रूपवंती माहाँ। पदुमावति कि जोति मन छाहाँ। द्वि० १, ३, ५ चंपावति जो रूप मनि ताहाँ। पदमावति सो जोति की छाँहाँ। (द्वि० ५ की जोति की छाहाँ।) द्वि० ७ चंपावति सो नाव सोहाई। पदुमावति भई तेहि की जाई। २. प्र० १ कन्या अति लोनी, द्वि० ६, तृ० २ असि कथ्था लोनी, तृ० ३ अति कथा सलोनी। ३. तृ० ३ कथा। ४. प्र० १ तस। ५. द्वि० ४, ६ दीपक भा, तृ० ३ दिया दीप, द्वि० ५ दिया जरा, पं० १ दिया दिपहिं। ६. द्वि० २ सो। ७. तृ० ३ रूप। ८. च० १ व। ९. द्वि० ५ १.इँ छिपाए। १०. तृ० ३ सोनै सब मँदिर। ११. द्वि० १ सोनै सब। १२. प्र० १ मान मेरुक महँ, द्वि० ६ निहूँ लोक महँ। १३. प्र० १, तृ० ३ उपरा।

[५१] १. प्र० १ पूजिअव, द्वि० ४ पूरि बइ, द्वि० ७ पुनी भौ, पं० १ पूरि जब। २. प्र० १, द्वि० ७ नै, पं० १ सो। ३. द्वि० २ दीपक।

अतें रूप मूरति[4] परगटी। पूनिउँ ससि सो[5] खीन होइ[6] घटी।
घटतहि घटत अमावस भई। दुइ दिन लाज गाड़ि[7] मुइँ गई।
पुनि जौं उठी दुइजि होइ नई[8]। निहकलंक ससि[10] बिधि निरमई[11]।
पदुम गंध बेधा जग बासा। भँवर पतंग भए[12] चहुँ पासा।
अतें रूप[13] भइ कन्या[14] जेहि सरि पूज न[15] कोइ।
धनि सो देस[16] रुपवंता जहाँ जनम अस होइ॥

[५२]

भइ छठि राति छठी सुख मानी। रहस कोड सौं रैनि बिहानी।
भा बिहान पंडित सब[1] आए। काढ़ि पुरान[2] जनम अरथाए।
उत्तिम घरी जनम भा तासू। चाँद उवा भुइँ दिया अकासू।
कन्या रासि उदौ[3] जग किया[4]। पदुमावती[5] नाउँ जिसु[6] दिया[7]।
सूर परस सौं भएउ किरीरा[8]। किरिन जामि उपना[8] नग हीरा[9]।
तेहि तें अधिक पदारथ करा। रतन जोग[10] उपना निरमरा[11]।
सिंघल दीप भएउ अवतारू[12]। जंबू दीप जाइ जम बारू[13]।
रामा आइ अजोध्याँ उपने[14] लखन बतीसौ संग।
रावन राइ रूप सब[15] भूले दीपक जैस पतंग॥

---

४. द्वि० ६ उत्तिम रूप मुरति च० १ अते रूप पदुमिनि। ५. प्र० १ कला। ६. प्र० १ औ। ७. प्र० १ लाज पकरि, द्वि० १ खीन लाज। ८. प्र० १ मरि गई, च० १ भुइँ रही। ९. प्र० १ की नाई, द्वि० ५, होइ आवेइ, द्वि० ७ दिन आरे, तृ० १ होइ जोनी। १०. द्वि० १ सो, पं० १ अति। ११. तृ० १ निरमोनी। १२. प्र० १, द्वि० ३, ४, ५, तृ० २, च० १ भवहि द्वि० २ फिरहिं। १३. प्र० १ अति सुरूप। १४. द्वि० ७ भइ परगट कन्या। १५. द्वि० ५ जेहि सरूप नहिं। १६. प्र० १ दीप।

[५२] १. द्वि० ७, तृ० ३ जन। २. द्वि० ३ काढ़ि गरंथ, तृ० २, च० १ पोथा काढ़ि। ३. द्वि० २ दोउ, तृ० १ गरू, च० १ नाऊँ। ४. द्वि० ३ कीन्हा, दीन्हा। ५. द्वि० १ पदुमावति रासिक, तृ० १ पदुमिनि रासि। ६. प्र० १, २ नाऊँ भा, द्वि० ३ माना तेहि। ७. द्वि० ४, ५ गुरीरा। ८. तृ० ३ उपमा। ९. प्र० १ निरमरा। १०. द्वि० १, ६, तृ० २ जोति। ११. द्वि० ४, पं० १ माथें मनि बरा। १२. द्वि० २, ७, ३ अवतारा, जमुआरा। १३. प्र० १, द्वि० ७, तृ० २, ३ आए अजोध्या। १४. प्र० १, द्वि० ५ राएरूप, तृ० १ देखि सबहि, द्वि० १ राइ रूप। १५. प्र० १, पं० १ तस, द्वि० ४ सन, तृ० १ बर।

[५३]

अही जनम पत्री सो[1] लिखी। दै असीस बहुरे[2] जोतिषी।
पाँच बरिस महँ[3] भई सो बारी[4]। दीन्ह[5] पुरान पढ़ै बैसारी[6]।
भै पदुमावति पंडित गुनी। चहूँ खंड के राजन्ह सुनी।
सिंघल दीप राज घर बारी। महा सुरूप दैयँ औतारी।
एक पदुमिनि औ पंडित पढ़ी। दहुँ केहि जोग दैयँ असि[7] गढ़ी।
जाकहँ लिखी लच्छि घर[8] होनी। असि[10] सो पाव पढ़ी औ लोनी।
सप्त[11] दीप के बर जो ओनाहीं[12]। उतर न पावहिं फिरि फिरि जाहीं।[13]

राजा कहै गरब कै हौं रे इंद्र सिवलोक।
को सरि मोसों पावै कासों करौं बरोक॥

[५४]

बारह बरिस माँह भइ[1] रानी। राजैं सुना सँजोग सयानी।[2]
सात खंड धौराहर तासू। पदुमिनि कहँ सो[3] दीन्ह नेवासू।[4]
औ दीन्हीं संग[5] सखी सहेली। जो सँग[6] करहिं रहस[7] रस[8] केली।
सबै नवल पिय संग न सोईं। कँवल पास जनु बिगसहिं[9] कोईं।
सुआ एक पदुमावति ठाऊँ। महा पंडित हीरामनि नाऊँ।
दैयँ दीन्ह पंखिहि असि जोती। नैन रतन[10] मुख मानिक मोंती।

---

[५३] १. द्वि० १, ७, तस, तृ० २ जो। २. द्वि० २, ४, ५, तृ० ३, च० १ आसीस फिरे। ३. प्र० १ बइ। ४. द्वि० ५, जो बारी च० १ जो रानी। ५. द्वि० ३ बेद। ६. प्र० १, तृ० ३ बैठारी। ७. प्र० १, द्वि० ५, तृ० २ गोसाईं। ८. च० १, तिही कहँ। ९. द्वि० १ जा कहँ लिखी होइ असि होनी। १०. द्वि० १ ससि। ११. द्वि० १ सकल। १२. द्वि० १ बर जो ओराहीं, तृ० ३ बरैखो आवहि, द्वि० ४ बरए आवहि, द्वि० ६ बरै ओनाहीं, द्वि० ७ बर ओहि आवहि, तृ० २ बर जो अवाहीं। १३. द्वि० ४, तृ० ३ फिरि फिरि जाहि उतर नहि पावहिं, द्वि० ७ उतर न पावहि फेरि सिधावहि।

[५४] १. द्वि० ४ महँ भई सो। २ द्वि० १ बारह बरिस महँ भइ सो बारी। धुजा धौरी और करी सँवारी।(५५. १) ३. प्र० १ पदुमावति कहँ। ४. द्वि० ५ अवास, तृ० १ सुवासू। ५ प्र० १ औ दीन्हौं सत, द्वि० २ ओनहिन सँग पुनि। ६. प्र० १ निसि दिन। ७. द्वि० ६ रहहिं करहि। ८. द्वि० ४ औ। ९. प्र० १ जस बिगसी, च० १ जैसे सब। १०. च० १ रकत।

कंचन बरन सुआ अति लोना। मानहु मिला सोहागहि सोना।
रहहिं एक सँग दोऊ[12] पढ़हिं सासतर[13] बेद।
बरम्हा सीस डोलावहिं सुनत लाग तस भेद॥

[५५]

भइ ओनंत[1] पदुमावति बारी। धज धोरैं सब करी[2] सँवारी।
जग बेधा तेइ अंग सुबासा। भँवर आइ लुबुधे चहुँ पासा।
बेनी नाग मलैगिरि पीठी[3]। ससि माँथे होइ दुइजि बईठी।
भौंहैं धनुक साँधि सर[4] फेरी। नैन कुरगिनि भूलि जनु[5] हेरी।
नासिक कीर[6] कँवल मुख सोहा[7]। पदुमिनि रूप देखि जग मोहा[8]।
मानिक अधर दसन जनु[9] हीरा। हिअ हुलसै कुच कनक जँभीरा।
केहरि लंक गवन गज हरे। सुर नर देखि माथ भुइँ धरे।
जग कोइ दिस्टि न आवै आछहिं नैन[10] अकास।
जोगी जती सन्यासी[11] तप साधहिं तेहि आस॥

[५६]

राजै सुना दिस्टि भइ आना। बुधि जो देइ सँग सुआ सयाना।
भएउ रजाएसु मारहु सुआ। सूर सनाव[1] चाँद जहँ[2] उआ।
सतुरु सुआ के नाऊ बारी। सुनि[3] धाए जस धाव मँजारी।
तब[4] लगि रानी सुआ छपावा। जब[5] लगि आइ मँजारिन्ह[5] पावा।

---

१२. तृ० १ दूनी। १३ तृ० २ सास्त्र धी।

[५५] १. प्र० १ अनद, द्वि० २,४ अनंत, तृ० १, ३ उनपनि, द्वि०५ अनंत, द्वि०३ अवस्था। २. द्वि० ५ रचि रचि बिधि सब कला। ३. तृ० २ अब उजिआर भई जग दाठी। ४. द्वि० ४ मान सन। ५. प्र० १, तृ० ३ जेइँ। ६. द्वि० ६ सुवा। ७. प्र० १, च० १ सोभा। ८. प्र० १ च० १, लोभा। ९. प्र० १, द्वि० ७ नग। १०. द्वि० ४ चतुरहँ नैन, द्वि० ५ अछरिन्ह होइँ, तृ० २ आजों नैन। ११. द्वि० ३ जोगी जती तपा सन्यासी, प० १ जोगी तपी सन्यासी।

[५६] १. प्र० १ सूर न सुनै, द्वि० ४ सूर न आय, द्वि० ५ सुरइ सुना, द्वि० ६ सूर न आव, द्वि० ७ सूर नाम। २. द्वि० २ जस, तृ० ३ जेउँ। ३. प्र० १ अस। ४. तृ० ३ तौ, जौ (हिंदी मूल)। ५. तृ० ३ जौ लहि ब्याधा आइ न।

पिता क आएसु माँथे मोरे। कहहु जाइ[६] विनवै कर जोरे।
पंखि न कोई[७] होइ सुजानू। जानै भुगुति कि जान उड़ानू।
सुआ जो पढ़ै पढ़ाए बैना। तेहि कत बुधि[८] जेहि हिएँ न नैना[९]।
मानिक मोति देखावहु हिएँ न ग्यान करेइ।
दारिवँ दाख जानि कै[१०] अबहिं[११] ठोर भरि[१२] लेइ॥

[५७]

वै तौ फिरे उतर अस पावा। बिनवा सुऐं हिएँ डरु खावा।
रानी तुम्ह जुग जुग सुख आऊ। हौं अब[१] बनोबास[२] कहँ जाऊँ[३]।[४]
मोंतिहि[५] जौं मलीन होइ करा। पुनि सो पानि कहाँ निरमरा।
ठाकुर अंत चहै जौं[६] मारा। तहँ[७] सेवक कहँ कहाँ उबारा।
जेहि घर काल मँजारी नाचा। पंखी नाउँ जीउ नहिं बाँचा[८]।
मैं तुम्ह राज बहुत सुख देखा। जौं पूँछहु दे जाइ न लेखा।
जो इंछा मन कीन्ह सो जेंवा। भा पछिताउ चलेउँ बिनु सेवा।
मारै सोइ निसोगा[९] डरै न अपने दोस।
केला[१०] केलि करै का जौं भा बैरि परोस॥

[५८]

रानी उतर दीन्ह कै मया[१]। जौं जिउ जाइ रहै किमि कया[१]।

---

६. द्वि० २ कहि न जाइ। ७. प्र० १ न होखे (भोजपुरी प्रभाव)। ८. तृ० ३ जीभ। ९. प्र० १ हिए कत नैना, तृ० ३ हिए हो नैना। १०. द्वि० ५ छाटि कै, द्वि० ७ देखि कै। ११. प्र० १ अजहुँ, प्र० २ १ द्वि० ३, ५ च० १ अंब, द्वि० २ नौंब, द्वि० ४ ऊभि, द्वि० ७, तृ० १ तबहिं, पं० १ आपु। १२. प्र० १ रखि, च० १ कइ।

[५७] १. द्वि० २, तृ० २ हौं पंखी, द्वि० ५ होइ अग्यां। २. द्वि० ४ दास बनौं, द्वि० ९ बचलौं बास। ३. तृ० ३ गहि पाऊँ। ४. द्वि० ६ हौं रे दास तबौं कह याऊ। ५. तृ० १ तहँ तुम्ह। ६. प्र० १, द्वि० ४, ५, च० १ जेहि। ७. द्वि० २ वहि। ८. द्वि० २, च० १ न पाँखी, द्वि० ७ जीव सो, द्वि० २ जीउ कहँ। ९. तृ० ३ न सुअटा, तृ० २ सो का डरै। १०. तृ० ३ अकेला।

[५८] १. प्र० १, द्वि० १, तृ० ३ माया काया। २. प्र० १, द्वि० २, ४, च० १ तोहि सेवा बिछुरत, द्वि० १ तोहितें बिछुरन मैं, द्वि० ३ तोहि कौ बिछुरन हौं।

हीरामनि तूँ प्रान परेवा। धोख न लाग करत तोहि सेवा।
तेहि सेवा बिछुरन[2] नहि आखौं। पींजर हिए घालि तोहिं[3] राखौं।
हौं मानुस तूँ पंखि पिआरा। धरम पिरीति तहाँ को मारा।
का सो[4] प्रीति तन[5] माहँ बिदाई[6]। सोइ प्रीति जिअ साथ जो जाई।
प्रीति भार लै हिएँ न सोचू। ओहिं पंथ भल होइ कि पोचू[7]।
प्रीति पहार भार जौं काँधा। सो कस[8] छूट लाइ जिअ[9] बाँधा।

सुआ न रहै सुरुक जिअ अबहि काल सो आउ।
सतुरु अहै[10] जो करिआ कबहुँ सो[11] बौरे नाउ॥

[५६]

एक देवस कौनिउ[1] तिथि आई। मानसरोदक[2] चली अन्हाई[3]।
पदुमावति सब सखीं बोलाईं। जनु फुलवारि सबै चलि आईं।
कोइ चंपा कोइ कुंद सहेलीं[4]। कोइ सुकेत[5] करना रस बेली[6]।
कोइ सु गुलाल सुदरसन[7] राती। कोइ बकौरि बकचुन बिहँसाती[8]।
कोई सु बोलसरि[10] पुहुपावती। कोइ जाही जूही सेवती[11]।
कोइ सोनजरद जेउँ[12] केसरि। कोइ सिंगारहार नागेसरि।
कोइ कूजा[13] सदबरग चँबेली। कोई कदम सुरस रस बेली[14]।[15]

---

३. प्र० २. द्वि० २, ५, कै। ४. द्वि० १ गयो। ५. द्वि० १ मन, तृ० ३ छिन, च० १ जहँ। ६. द्वि० १, २, ४, ५, ६, ७, तृ० २, च० १, पं० १ बिलाई, द्वि० ३ मिलाई। ७. द्वि० ४ मोचू। ८. द्वि० ४ ततकत। ९. प्र० २ चित। १०. प्र० १ होइ। ११. द्वि० ४, ५, ६, पं० १ कौंदु (हिंदी मूल) सो, द्वि० १ कबहुँ तो, तृ० ३ कहूँ सो, च० १ सोपै।

[५६] १. द्वि० ३, तृ० २ पून्यो। २. प्र० १, द्वि० २, ५, पं० १ सरोवर। ३. प्र० २ तृ० ३ नहाई। ४. च० १ नेवारी, द्वि० १, ७, तृ० २, पं० १ चँबेली। ५. प्र० २ केत, द्वि० ७, तृ० ३, केतुकि। ६. च० १ रस-बारी। ७. प्र० २ सद बरगजु। ८. द्वि० ३ बकौरि कचन बिहसाती, द्वि० १ बकाउरि मुगुचुन बिहसानी, द्वि० ७ बकाउरि कच बिहसाती। द्वि० २ बकाउरि बकचुन भानी, तृ० ३ बिकाउ बकचुन बिहसाती, द्वि० २, ४ सुबकाउरि बकचुन भानी। १०. प्र० २, द्वि० ७, तृ० ३, प० १ मौलसिरि। ११. प्र० १ मालती। १२. प्र० १, २ जिमि, द्वि० २ जस, तृ० २ जनु। १३. द्वि० ७, तृ० ३ कुंद। १४. द्वि० ३, ७, तृ० २, ३ सुरस रस केली, च० १ सुरस रस बेली. पं० १ पनवारी बेली। १५. द्वि० १ कोइ सो गुलाल सुदरसन कुजा। कोइ सो दमन पाव भल पूजा।

चलीं सबै मालति सँग फूले[16] कँवल कमोद[17]।
बेधि रहे[18] गन गंधप बास परिमलामोद[19]॥

[६०]

खेलत मानसरोवर[1] गईं। जाइ पालि[2] पर ठाढ़ी भईं।
देखि सरोवर रहसहिं केली[3]। पदुमावति सौं कहहिं सहेली।
ऐ रानी मन देखु बिचारी। एहि[4] नैहर रहना दिन चारी।
जौ लहि अहै[5] पिता कर राजू। खेलि लेहु जौं खेलहु[6] आजू।
पुनि सासुर हम गौनब काली। कित हम कित यह सरवर[7] पाली[8]।
कित आवन[9] पुनि अपने हाथाँ। कित मिलिकै खेलब एक[10] साथाँ।
सासु ननँद बोलिन्ह जिउ लेहीं[11]। दारुन[12] ससुर न आवै[13] देहीं।

पिउ पिआर सब[14] ऊपर सो पुनि करै दहुँ[15] काह।
कहुँ सुख राखै की दुख[16] दहुँ कस[17] जरम निबाहु॥*

[६१]

सरवर तीर पदुमिनीं आई। खोंपा छोरि केस मोकराई[1]।

---

१६. प्र० २ फूला, द्वि० १ जानहु। १७. द्वि० १ कुमेद, बेध। १८. प्र० २ रहा। १९. प्र० १, तृ० १ परीमल मोद, द्वि० ६, तृ० ३, पं० १ परमदामोद, द्वि० ७ जो परम अमोद।

[६०] १. द्वि० २, च० १ सरोदक। २. द्वि० २, ६ ताल, द्वि० ३ पार। ३. द्वि० ४ हँसी कुलेलीं, द्वि० ५ हिएँ कुलेलीं, तृ० १ करहिं जो केली। ४. द्वि० ४ तहँ। ५. प्र० १, २, द्वि० ३ आहि। ६. तृ० ३ खेलहु खेलि लेहु। ७. प्र० १ नैहर यह। ८. प्र० २ आली, द्वि० २, ४, ६ ताली। ९. प्र० १, २ आउब, तृ० ३ खेलब। १०. द्वि० १ खेलै पाउब, द्वि० २, तृ० ३ खेलै आउब, द्वि० ५ मिलि कै आउब एक। ११. प्र० २ बोलब दुख देईं। १२. च० १ देवर। १३. प्र० १, द्वि० ३, ५ निसरै, तृ० १ उतार। १४. द्वि० १ जग। १५. द्वि० ४, तृ० ३ सेउ दहूँ करै। १६. प्र० १, २, द्वि० ६ दहुँ सुख राखै कै दुखी, तृ० ३ कै दुख राखै कै सुख, द्वि० ५ तहँ सुख राखै कै दुख। .. १७. प्र० १ कस होइ।

*द्वि० ३, तृ० १, २, ३, च० १, में यहाँ एक अतिरिक्त छंद है, और प्र० १, २ में उससे भिन्न दो अतिरिक्त छंद हैं। (देखिए परिशिष्ट)

[६१] १. द्वि० ४, ५ सिसराई, च० १ मुँगराई।

ससि मुख अंग मलैगिरि रानी[2]। नागन्ह झाँपि लीन्ह अरधानी[3]।
ओनए मेघ[4] परी जग छाहाँ। ससि की सरन[5] लीन्ह जनु राहाँ[6]।
छपि गै दिनहि[7] भानु कै दसा। लै निसि नखत चाँद[8] परगसा।
भूलि चकोर दिस्टि तहँ[9] लावा[10]। मेघ घटा महँ[11] चाँद देखावा[12]।
दसन दामिनी कोकिल भाषीं। भौंहैं धनुक गगन लै राखीं।
नैन खँजन[13] दुइ केलि करेहीं[14]। कुच नारँग मधुकर रस लेहीं[14]।

सरवर रूप बिमोहा हिएँ हिलोर करेइ[15]।
पाय छुअइ मकु पावौं तेहि मिसु[16] लहरैं देइ[17]॥*

[६२]

धरीं तीर[1] सब[2] छीपक[3] सारीं[4]। सरवर महँ पैठीं[5] सब[6] बारी[7]।
पाएँ नीर[8] जानु सब बेलीं[9]। हुलसी करहिं[10] काम कै केलीं।
नवल बसंत सँवारहि[11] करीं। होइ परगट चाहहिं[12] रस भरीं।
करिल[13] केस बिसहर[14] बिसभरे[15]। लहरैं[16] लेहि कँवल मुख धरे।
उठे कोंप जनु दारिउ दाखा। भई ओनंत[17] प्रेम कै साखा।

---

२. द्वि० ४, ६, प० १ बामा, चहुँपासा। ३. प्र० १ चनक सुगंध दुआदस बानी। ४. द्वि० ५ ओनई घटा। ६. तृ० ३ तहाँ। ७. तृ० ३ गा दीन। ८. प्र० १ मद निसि चाँद नखत। ९. प्र० १, २, द्वि० १, २, ६, तृ० २ मन, द्वि० ३, तृ० ३ तेहि, द्वि० ४ मुख। १०. तृ० १ आवा। ११. द्वि० १ निमि, तृ० ३, प० १ तर, द्वि० ४ मुख, द्वि० ५ बर, तृ० १ नव। १२. द्वि० १ छपावा। १३. प्र० २ औ खंजन। १४. द्वि० २ कराहीं। दहुँ वह रस कोउ पावा नाहीं। १५. च० १ हिलोरै लेइ। १६. प्र० १, द्वि० २, ४, तृ० १ एहि मिसु, द्वि० ५ तनमन, द्वि० ६ एहि मन। १७. प्र० १, द्वि० ३, ४, तृ० १ लेहैं।

*तृ० २ में इसके अनंतर दो अतिरिक्त छंद हैं। (देखिये परिशिष्ट)

[६२] १. प्र० २ उतारि, च० १ छोरि। २. प्र० १ लै। ३. प्र० १, २, द्वि० ७ कंचुकि, तृ० २, प० १ चंपक, द्वि० २, ३, ४, तृ० १, ३ चुनि कै। ४. द्वि० १ तीर उतारि धरीं सब सारीं। ५. प्र० १, २, द्वि० ४ माँह पैठि। ६. प्र० २ वर। ७. द्वि० २, ६ नारीं। ८. प्र० १, २, द्वि० ४, ५, ६, च० १ पानी तीर, द्वि० २ ३, पाएँ तीर। ९. द्वि० १ पानी माँझ जो रहीं सहेलीं, द्वि० ७ पाइ नीर जइ सबै सहेलीं। १०. द्वि० ३, च० १ हुलसीं कली, द्वि० २ हाँसहिं करहि, तृ० २ रहसी करहिं। ११. द्वि० ६ नवल कै। १२. द्वि० २, ५, ३ जानहु, द्वि० ६ जो आहिं। १३. द्वि० २ करले, द्वि० ४ काले, तृ० १ करन। १४. तृ० ३ बिहरा। १५. द्वि० २ तस। १६. द्वि०२ बहुरे।

सरवर नहिं[१८] समाइ[१९] संसारा। चाँद नहाइ[२०] पैठ लिए तारा।
धनि[२१] सो नीर ससि[२२] तरईं उईं[२३]। अब कत[२४] दिस्टि कँवल औ कुईं[२३]।

चकई बिछुरि पुकारै कहाँ मिलहु[२५] हो नाँह।
एक चाँद निसि सरग पर दिन दोसर जल माँह॥

[६३]

लागीं केलि[१] करै मँझ नीरा। हंस लजाइ बैठ होइ[२] तीरा।
पदुमावति कौतुक करि[३] राखी। तुम्ह ससि[४] होहु तराइन साखी।
बादि मेलि कै खेल पमारा। हारु देइ जौं खेलत हारा।
सँवरिहि साँवरि गोरिहि गोरी। आपनि आपनि लीन्हि सो जोरी[५]।
बूझि खेल खेलहु एक साथा। हारु न होइ पराएँ हाथा।
आजुहि खेल बहुरि कित होई। खेल[६] गएँ[७] कत खेलै[८] कोई।
धनि सो खेल खेलहि[९] रस पेमा। रौताई औ कूसल[१०] खेमा।

मुहमद बारि[११] परेम की जेउँ भावै तेउँ खेलु।
तीलहि फूलहि[१२] संग जेउँ[१३] होइ[१४] फुलाएल तेल॥

[६४]

सखी एक तेइँ खेल[१] न जाना। चित अचेत भइ[२] हार गँवाना।

---

१७. प्र० २, द्वि० २ अनंत, द्वि० ४ उतपनि, द्वि० ५ अनिअंत। १८. प्र० १, २, द्वि० ४, ६ महँ, च० १ महँ न। १९. प्र० १ समान। २०. तृ० २, द्वि० ३ अन्हाइ। २१. द्वि० ७ कै। २२. द्वि० २ जस। २३. प्र० १, २ उईं तराईं, उगाईं। २४. तृ० १ देखत। २५. द्वि० ४, तृ० ३ मिलौं हो, प्र० १, द्वि० ३ मिलन हो।

[६३] १. तृ० ३ केरि। २. प्र० १ भौ, प्र० २, द्वि० २, ३ तेहि। ३. द्वि० २, ७ तृ० ३, च० १, पं० १ कहँ, द्वि० ४, ६, तृ० २ कह। ४. प्र० १, द्वि० १ सौंख। ५. प्र० १, २, तृ० २ जो जेहि जोग सो तेहिं कर जोरी, द्वि० १ जेहि जस बर्ना सो तेहि कर जोरी, द्वि० ७ चुनि चुनि लेही सो आपनि जोरी। ६. तृ० ३ खेलि। ७. प्र० २ लेहु। ८. द्वि० ४ खेलइ। ९. तृ० ३ खेल १०. प्र० १ द्वि० ५ कूसर। ११. द्वि० ४ बाजी। १२. द्वि० ७ फुरलहिं। १३. प्र० १ संगही, प्र० २ जो संग है, द्वि० ३ संगमा। १४. द्वि० २ नाउँ।

[६४] १. प्र० २, द्वि० ५ खेलि। २. प्र० २ भर अचेत तब, द्वि० २ भइ अचेत जब, तृ० ३ भइ अचेत मन।

कँवल डार गहि[3] भै बेकरारा[4]। कासौं[5] पुकारौं आपन हारा।
कत खेलै आइउँ एहि[6] साथाँ[7]। हार गँवाइ चलिउँ लै हाथाँ[8]।
घर पैठत पूँछब एहि[9] हारू। कौनु उतर पाउबि[10] पैसारू।
नैन सीप आँसुन्ह तस भरे। जानहु मोंति गिरहिं[11] सब[12] ढरे[13]।
सखिन्ह कहा बौरी कोकिला। कौनु पानि जेहि पौनु न मिला।
हारु गँवाइ सो ऐसेहिं रोवा। हेरि हेराइ लेहु जौं खोवा।

लागीं सब मिलि हेरै बूड़ि बूड़ि एक साथ।
कोई उठी[14] मोंति लै घोंघा[15] काहू हाथ॥

[६५]

कहा मानसर चहा[1] सो पाई[2]। पारस रूप इहाँ लगि[3] आई[4]।
भा निरमर तेन्ह पायन्ह परसें[5]। पावा रूप रूप कें[6] दरसें[7]।
मलै समीर बास तन[8] आई। भा सीतल गै[9] तपनि बुझाई।
न जनौं[10] कौनु पौन[11] लै आवा। पुन्नि दसा[12] भै पाप गँवावा[13]।
ततखन हार बेगि उतिराना। पावा सखिन्ह चंद बिहँसाना।

---

३. द्वि० ३ सो। ४. तृ० ३ यहँ भौ किरारा (उर्दू मूल)। ५. प्र० २ कासुँ, तृ० ३ कासु, तृ० १ काहि। ६. द्वि० २, ७, च० १ तेहि, द्वि० ५ एक। ७. द्वि० ७ मार्थों। ८. द्वि० ७, तृ० १, ३ सार्थों। ९. प्र० १ जब, द्वि० ४ तेहि, द्वि० ३ कहँ। १०. प्र० २ देवै, द्वि० ४, तृ० १ पाउर, च० १ पाउब। ११. प्र० १ गोंद, प्र० २ करहु, द्वि० ५ करहि। १२. प्र० २ रस भरे, द्वि० ४ तस ढरे, द्वि० ७ हिम ढरे। १३. द्वि० २ तृ० २—सीपि फुटि जिमि कौनी भरे, ५० १ नैनन्ह नीर ढरे तेहि जोनी जनहु मंद कहि टूटहि मोनी। १४. प्र० १ निवर, प्र० २ उठा, तृ० ३ उठै। १५. प्र० १, तृ० २, ३, च० १ घोंघी।

*प्र० १, २ में इसके अनंतर दो अतिरिक्त छंद हैं। (देखिए परिशिष्ट)

[६५] १. प्र० १, २ द्वि० ७ चाह, तृ० २ जहाँ। २. प्र० १, २ पावा, द्वि० ४ तृ० १ पानी। ३. द्वि० १ इहवाँ चलि, तृ० ३ इहाँ सो, द्वि० ४ होइ बैठी, तृ० १ इहाँ एक, च० १ इहाँ लहि, द्वि० २ जहाँ लगि। ४. प्र० १ आवा, द्वि० ४, तृ० १ रानी। ५. प० १ परसन, दरसन। ६. तृ० ३ रूप केर, द्वि० १ आपु जब। ७. प्र० १ सहँ, प्र० २ तब, तृ० ३ तस। ८. तृ० ३ तन। ९. तृ० ३ जानी। १०. द्वि० १ पाप, तृ० ३ रूप। ११. तृ० ३ सदा। १२. तृ० ३ नसावा। १३. द्वि० ५ बिकसा कँवल।

बिगसे कुमुद[१४] देखि ससि रेखा। भै तेहिं रूप[१५] जहाँ जो देखा[१६]।
पाए रूप रूप जस चहे[१७]। ससि मुख सब[१८] दरपन होइ रहे[१९]।
नैंन जो देखे कँवल भए[२०] निरमर नीर[२१] सरीर।
हँसत जो देखे हंस भए[२२] दसन जोति[२३] नग हीर॥

[६६]

पदुमावति तहँ[१] खेल धमारी[२]। सुआ मँदिर महँ देखि[३] मँजारी।
कहेसि चलौं जौं लहि तन पाँखा। जिउ लै उड़ा ताकि बन ढाँखा।
जाइ परा बनखँड जिउ[४] लीन्हे। मिले पंखि बहु आदर कीन्हे।
आनि धरीं आगें बहु[५] साखा। भुगुति न मिटै जौं लहिं बिधि[६] राखा।
पाई भुगुति सुक्ख[७] मन भएऊ। अहा जो दुक्ख बिसरि सब गएऊ।
ऐ गोसाइँ तू ऐस[८] बिधाता। जाँवत जीउ[९] सब क[१०] भख दाता।
पाहन महँ न पतंग बिसारा। जहँ तोहिं सँवर[११] दीन्ह तुइँ चारा[१२]।
तब लगि सोग[१३] बिछोह कर भोजन परा[१४] न पेट।
पुनि बिसरा[१५] भा सँवरना[१६] जनु सपनें भइ[१७] भेंट॥*

---

१४. द्वि० १ ससि रूप, द्वि० २,४, ५ तेहि ओप, तृ० ३ तहँ ओर। १५. प्र० १ हराजेइँ, प्र० २ हार जिन्ह, द्वि० १ दरस जिन्ह, तृ० ३ जहाँ लगि। १६. प्र० १, २ तेहि तस रूप जैस जेहि चहा। १७. द्वि० ४ जनु। १८. प्र० १ दरसन कै रहा, प्र० २ दरपन कै रहा। १९. द्वि० १ पाए रूप अपु जब दरसे, भै ससि रूप दरपन भै बिगसे। २०. तृ० ३ हंस भे, तृ० १ कँवल मुख। २१. प्र० १ मसीर। २२. प्र० १ कनूभा, प्र० २ कँवल। २३. तृ० १ देखि।

[६६] १. द्वि० १ तब, तृ० ३ तेहि। २. प्र० १, द्वि० २, ५, ३ दुलारी, तृ० ३, प० १ दुआरी। ३. द्वि० २, ४, ६ परी। ४. तृ० ३ डह। ५. प्र० १, २, द्वि० ७ फर, द्वि० २, ३, च० १ सब। ६. प्र० १, २, द्वि० २, ३,४, ५, ६, तृ० २, च० १, प० १ न मेटइ जौं लहि राखा, द्वि० १ न मिटइ जौ लगि जिउ राखा। ७. तृ० ३ सोख। ८. द्वि० १ जगत, तृ० ३ जग। ९. प्र० १, २ सबन्हि, द्वि० २, च० १ सब कहँ, तृ० ३ सब कर, द्वि० ४, ५, ३ सब का। १०. प्र० २, तृ० ३ सँवरि। ११. द्वि० ४ तेही कहँ चारा। १२. द्वि० १ पाहन माझ जो कीट पतगू, जेहि जेहि दान्ह न कबहूँ सगू। १३. च० २ सोच। १४. प्र० २ जब लगि मरइ न पेट। १५. द्वि ६ बिसरावा १७. प्र० १ सपना भी, तृ० १ सपने नहि।

* यह छंद द्वि० ७ में नहीं है, किंतु प्रसंग में अनिवार्य है, यह प्रकट है।

[६७]

पदुमावति पहँ आइ[1] भँडारी। कहेसि मँदिर महँ परी मँजारी॥
सुआ जो उतर देत हा[2] पूँछा। उड़ि गा पिंजर न बोलै छूँछा[3]॥
रानी सुना सुखत मन गएऊ[4]। जनु निसि परी अस्त दिन भएऊ॥
गहने गही[5] चाँद कै करा[6]। आँसु गगन जनु नखतन्ह[7] भरा[8]॥
टूटि पालि सरवर बहि[9] लागे। कँवल बूड़ मधुकर उड़ि भागे॥
एहि बिधि आँसु नखत[10] होइ चुए। गगन छाँड़ि सरवर भरि[11] उए॥
चिहुर चुवहिं[12] मोतिन्ह कै माला। अब हम फिरि[13] बाँधा चहुँ[14] बाला[15]॥

उड़ि यह[16] सुअटा कहँ[17] बसा खोजहु सखी सो बासु[18]।
दहुँ है धरति कि सरग गा पवन न पावै[19] तासु[20]॥

[६८]

चहूँ पास समुझावहिं सखी। कहाँ सो अब पाइअ गा[1] पँखी॥
जौं लहि पिंजर अहा परेवा। अहा बाँदि[2] कीन्हेसि निति[3] सेवा॥

---

[६७] १. प्र० १ गइ। २. प्र० १ देत हुत, तृ० ३ दन तईं, द्वि० ४ दीन्हा। ३. प्र० १ उड़िगा हस पीँजरा छूछा। ४. प्र० १, द्वि० ३ सुखि जिअ गयऊ, तृ० ३ सूखि तब गयऊ, द्वि० १ दुक्ख जिअ भएऊ, तृ० २ बिसरि सुख गएऊ, पं० १ दरप सब गएऊ। ५. प्र० २ लीन जो कई। ६. द्वि० ४, तृ० १ चाँद कै रेखा, च० १ चदन कै करा। ७. प्र० १ आसु तहि नखत गगन सब, प्र० २ आँसु नखत गगन सब। ८. द्वि० ४, तृ० १ पेखा। ९. प्र० १, २, द्वि० ६, तृ० २ टूटि टुटि परे पारा पर, द्वि० २ टुटि टुटि परे ताल पर, च० १ सरवर बूड पाल पर प० १ टूटि पाल सरवर महँ। १०. प्र० २, द्वि० ४ गगन। ११. द्वि० ५ महँ। १२. तृ० ३ चार चुए, द्वि० ५ झरहिं चुवहिं' द्वि० ३ जनहु टूटि। १३. प्र० १, द्वि० २, ३, ४, ५, तृ० ३, च० १ अब सकेत, तृ० १, २ पुनि हम भरि। १४. प्र० १ कै बाँधहु, प्र० २ बाँधहु चहुँ, द्वि० १, ४, तृ० १ बाँधा चहुँ। १५. प्र० २, द्वि० १, २, ४, ३ पाला। १६. तृ० २ उड़ि दहुँ, च० २ आनि यह। १७. प्र० १ तहँ। १८. प्र० १, २ पास, द्वि० १ ठाउ, द्वि० ५, च० १ तासु। १९. प्र० १ कौन मिलावा, द्वि० १ जहाँ पाऊँ, प० १ पवनि पावै। २०. प्र० २, द्वि० २, ४, ५, च० १ बासु, द्वि० १ तहाँ जाउँ।

[६८] १. प्र० १, २ कहा मो पाइअ उड़िगा, तृ० १ गा सो कहाँ पाइअ अब। २. प्र० १ रहा बदि, द्वि० ६, तृ० १, च० १ अहा बाँध, तृ० ३ अहा बदि, द्वि० ३ रहा बाँद।

तेहिं बँदि हुतें जौं[४] छूटै पावा। पुनि फिरि[५] बाँदि होइ[६] कित आवा।
ओइँ उड़ान फर तहिअै खाए। जब[८] भा पंखि पाँख तन पाए[९]।
पिंजर जेहि क सौंपि[१०] तेहि गएऊ। जो जाकर सो ताकर भएऊ।
दस बाटैं[११] जेहि पिंजर माहाँ।[१२] कैसें बाँच मँजारी पाहाँ।
एइँ धरती अस केतन[१३] लीले। तस पेट गाढ़ बहुरि नहिं[१४] ढीले।

जहाँ न राति न देवस है जहाँ न पौन न पानि[१५]।
तेहि बन होइ सुअटा बसा[१६] को रे[१७] मिलावै आनि॥

[६६]

सुअैं तहाँ दिन दस[१] कलि काटी। आइ[२] बिआध ढुका लै टाटी।
पैग पैग[३] भुइँ चाँपत आवा। पंखिन्ह देखि सबन्हि[४] डर खावा।
देखहु कछु अचरिजु अनभला[६]। तरिवर एक आवत है चला।
एहि बन रहत[७] गई हम आऊ। तरिवर चलत न देखा काऊ।
आजु जो तरिवर चल[८] भल नाहीं। आवहु एहि बन छांड़ि पराहीं।
वै तौ उड़े ओरु[९] बन ताका। पंडित सुआ भूलि मन थाका।
साखा देखि राज जनु पावा। बैठ[१०] निचिंत चला वह आवा।

---

३. प्र० १, २, द्वि० १ तोरि। ४. प्र० १ तेहिं बंदितें, तृ० ३ तेहु बँदि हुति। ५. प्र० १, द्वि० १ सो। ६. तृ० २ बंदि होइ, द्वि० ४ बंदि होने। ७. द्वि० ६ तेहि दिन खाए, द्वि० ५ फुरहरि मैं खाए, द्वि० ३ भौ मरहर खाए, च० १ फर हेरि न आए। ८. द्वि० ४, ५, च० १ जौ (हिंदी मूल)। ९. द्वि० २, ३ तन आए, द्वि० १, ४, ५, ६ तृ० १ तन लाए, च० १ तेहिं जाए। १०. प्र० १ सो तन। ११. तृ० ३ पिंजर, प्र० १ दुआर। १२. प्र० २ जेहिं पिंजर महँ दह दिसि राहा। १३. प्र० १, २ द्वि० २ केतेइ, च० १ केतक। १४. प्र० १ अइस गाढ़ अबहूं नहिं, प्र० २ पेट गाढ़ नाहीं तसु, द्वि० ५ असुपति गजपति असवरि, द्वि० ३ अस बड़ पेट न कबहूं। १५. प्र० १, २, द्वि० ३ तहाँ न पौन की पानि, तृ० ३ जहाँ पौन न लेइ अरपानि। १६. प्र० १, २, सुअटा चलि बसा। १७. प्र० १, २ द्वि० १, ४ कौन।

[६९] १. तृ० १ दिवस दिन। २. द्वि० २ जाइ। ३. प्र० २, द्वि० १ परग परग। ४. प्र० १, २, द्वि० ७, च० १ हिएँ। ५. तृ० १ आजु। ६. द्वि ७, तृ० १ नहिं भला। ७. प्र० १, २ बसत। ८. प्र० १ तरिवर आजु चला। ९. प्र० १, च० १ आन। १०. प्र० १, द्वि० ४ रहा, प्र० २ रहाँ।

पाँच थान कर खाँचा लासा भरे सो[11] पाँच।
पाँख भरे तनु अरुझा कत मारे[12] बिनु बाँच ॥

[७०]

बँदि भा सुआ करत सुख[1] केली। चूरि पाँख धरि मेलेसि[3] डेली।
तहवाँ बहुल पंखि[4] खरभरहीं। आपु आपु कहँ रोदन[5] करहीं।
बिख दाना कत दैय अँगूरा[6]। जेहि भा मरन डहन धरि[7] धूरा।
जौं न होति चारा कै आसा। कत चिरिहार ढुकत लै लासा।
एइँ बिख चारें सब बुधि ठगी। औ भा[8] काल हाथ लै[9] लगी।
एहि झूठी माया मन भूला। चूरे[10] पाँख जैस[11] तन[12] फूला[13]।
यहु मन कठिन मरै नहिं मारा। जार[14] न देखु देखु पै चारा।

हम तौ बुद्धि गँवाई[15], बिख चारा अस खाइ।
तूँ सुअटा पंडित हता[16] तूँ कत[17] फाँदा[18] आइ ॥

[७१]

सुऐं कहा हमहूँ अस भूले[1]। टूट हिंडोर गरब जेहि[2] भूले[3]।
केरा के बन लीन्ह बसेरा। परा साथ तहँ[4] बैरी[5] केरा।

---

११. प्र० १, २ द्वि० ७ ते, द्वि० ३ जो। १२. प्र०२ रे मुए।

[७०] १. द्वि० ७ फाँदा, च० १ पढ़ित। २. च० १ रस। ३. प्र० २ नाएसि। ४. प्र० १ तहाँ पखि बहुते, प्र० २, द्वि० ५ तहाँ बहुत पखी, द्वि० २, ३, ७, तृ० ३ तहवाँ पखि बहुत, तृ० २ तहवाँ बहु पखी। ५. तृ० ३ रोवन। ६. द्वि० ४ अँगूरा। ७. तृ० ३ बिधि। ८. प्र० १, २, द्वि० ४, ५, ७ आण्उ, तृ० १ औ। ९. तृ० २ मांचु लै, द्वि० ३ हाथ कै। १०. तृ० ३ जोर। ११. तृ० ३ तैस। १२. प्र० १, त्रिन, प्र० २ तिन, १३. द्वि० २ भूला। १४. प्र० १, तृ० ३ जाल, द्वि० ५ काल। १५. प्र० १, २ द्वि० ७, तृ० २, पं० १ कुबुधि गँवावा। १६. द्वि० १ पंडित अहै, तृ० ३ अस पंडित, द्वि० ६ पंडित हा। १७. प्र० १, २ सो कत, तृ० ३, कहाँ कत, तृ० १, २ कत रे। १८. प्र० २ फाँदेसि, तृ० ३ [illegible]

सुख कुरिआर फरहरी[६] खाना। बिख भा जबहिं[७] बिआध तुलाना।
काहेक[८] भोग[९]बिरिख अस फरा। अड़ा[१०] लाइ पंखिन्ह कहँ धरा।
होइ निचिंत बैठे तेहि अड़ा[११]। तब जाना खोंचा हिय[१२] गड़ा[११]।
सुखी चिंत[१३]जोरब धन[१४]करना। यह न चिंत[१५] आगे है मरना।
भूले हमहु गरब तेहि माहाँ[१६]। सो बिसरा पावा जेहि पाहाँ[१६]।

चरत न खुरुक कीन्ह तब[१७]जब सो चरा[१८]सुख सोइ।
अब जो फाँद परा गियँ तब[१९] रोएँ का होइ॥

[७२]

सुनि कै[१] उतर आँसु सब[२] पोंछे। कौनु पंख बाँधा[३] बुधि ओछे।
पंखिन्ह बुधि जौं होति उजयारी। पढ़ा सुआ कत धरति मंजारी।
कत तीतर बन जीभ उघेला[५]। सकति हँकारि फाँदि गियँ मेला[५]।
ता दिन ब्याध भएउ जिउ लेवा। उठे पाँख भा नाउँ परेवा।
भै बिआधि[६] तिस्ना सँग[७] खाधू। सूझै भुगुति न सूझ बिआधू।
हमहिं लोभ ओइँ मेला चारा। हमहिं गरब[८] वह[९] चाहै मारा।
हम निचिंत वह[९] आउ छपाना। कौनु बिआधहि दोख[१०] अपना।

---

६. प्र० २ जुरुहरी, द्वि० १ खुरुहरी तृ० ३ फुरुहरी। ७. प्र० १,२, तृ० ३ तबहि, द्वि० ४, ५, च० १ जौहि। (हिंदी मूल) ८. प्र० १, २ काहे को, तृ० ३ काहे। ९. प्र० २ भूख, द्वि० ३ फूल। १०. प्र० २, च० १ आड़। ११. प्र० २, द्वि० ३ आड़ा, गाड़ा। १२. प्र० १, २, द्वि० १ जब। १३. द्वि० ६, च० १ सबके चित, द्वि० २, तृ० २ सबके जीभ, तृ० ३ सुख निचिंत। १४. प्र० १, २ जो र बध, तृ० ३ जोरत धन, द्वि० ५ जो बंधन, तृ० १ चोर बधन। १५. प्र० २ हहै चिंत, द्वि० ७ हम निचिंत। १६. प्र० १ पाहाँ, माहाँ, च० १ माहाँ, छाहाँ। १७. द्वि० २, ७, च० १ जिम। १८. प्र० १, २ चारा, तृ० १, च० १ रै चरा। १९. प्र० १, २, द्वि० ७, तृ० ३ तउ।

[७२] १. प्र० १ संगिन, पं० १ सुनि वह। २. प्र० १, २ तरा, द्वि० ४ जब, द्वि० ५ पुनि, द्वि० १ तौ, द्वि० ३, च० १ तब। ३. तृ० ३ बाचे। ४. प्र० १ छूछे। ५. तृ० ३ उघेले, मेले। ६. प्र० १ भा ब्याधा, द्वि० २ बिआध द्वि० ३ भै ब्याधा। ७. प्र० १, २ मन। ८. तृ० १ हम गरबी। ९. द्वि० ३ बहु। १०. द्वि० ६ छावस।

सो औगुन कत कीजै जिउ दीजै जेहि काज।
अब कहना कछु नाहीं[11] मस्ट भली पँछिराज[12] ॥

[७३]

चित्रसेन चितउर गढ़ राजा। कै गढ़ कोटि[1] चित्र· जेइँ[2] साजा।
तेहि कुल रतनसेनि उजिआरा[3]। धनि जननी[4] जनमा अस बारा।
पंडित गुनि[5] सामुद्रिक देखहिं[6]। देखि रूप औ लगन बिसेखहिं।[7]
रतनसेनि एहि· कुल औतरा[8]। रतन जोति मनि माथें बरा[8]।[9]
पदिक[10] पदारथ लिखी[11] सो जोरी। चाँद सुरुज जसि होइ[12] अँजोरी[13]।
जस मालति कहँ[14] भँवर बियोगी। तस ओहि लागि होइ यह[15] जोगी।
सिंघल दीप जाइ ओहि[16] पावा[17]। सिद्ध होइ चितउर लै[18] आवा।
भोग भोज जस मानै[19] बिक्रम साका कीन्ह।
परखि सो रतन पारखी[20] सबै लखन लिखि दीन्ह ॥

[७४]

चितउर गढ़ क[1] एक बनिजारा। सिंघल दीप चला बैपारा।
बाँभन एक हुत[2] नष्ट[3] भिखारी। सो पुनि चला चलत बैपारी।

---

११. तृ० १ अब का कहना कछु नाहीं। १२. प्र० १, २, द्वि० २, ३, ५, ६, तृ० १, २, च० १ बछराज।

[७३] १. प्र० २, तृ० ३ कोट। २. प्र० १, २, लंक सम, पं० १ चित्र सब। ३. प्र० १ निरमरा। ४. द्वि० २, तृ० १ सो जेइँ। ५. प्र० २, द्वि० २, तृ० २, च० १ गुनीं, तृ० ३ गुनि। ६. द्वि० ३, च० १ देखा, बिसेखा। ७. तृ० ३ में अतिरिक्त पंक्ति—अस गरंथ महं देखु बिचारी, सिंघल दीप बिआहबि नारी। ८. प्र० १, द्वि० ५ यह कुल निरमरा, बरा, प्र० २ एह नग निरमरा, बरा, तृ० २ यहि लगन औतरा, बरा, तृ० ३ यह नग अवतारा, बारा। ९. द्वि० १ बरनि न जाइ रूप औ करा। १०. द्वि० ४ पदुम। ११. तृ० ३ लिखु। १३. प्र० १ अगन। १४. द्वि० ४ गुन। १५. द्वि० ४, ६, तृ० १, २ चलै होइ। १६. प्र० १, २ सो, द्वि० २ यह। १७. द्वि० १ चाहा। १८. प्र० १, द्वि० १ गढ़। १९. तृ० ३ माना। २०. प्र० १ परीखिन्ह, द्वि० २ पारखिन्ह, तृ० ३ पारिखा,

[७४] १. प्र० १, द्वि० २, ३, ५, तृ० १ कर। २. तृ० ३ एक जो। ३. प्र० १, २, द्वि० २, ७, निष्ट, तृ० ३, पं० १ निमठ, द्वि० ३ सठ।

रिनि काहू कर[४] लीन्हेसि काढ़ी। मकु तहँ गएँ होइ किछु बाढ़ी।
मारग कठिन बहुत दुख भए[५]। नाँघि समुद्र दीप ओहि[६] गए[५]।
देखि हाट किछु सूझ न ओरा। सबै बहुत किछु दीख न[७] थोरा।
पै सुठि ऊँच बनिज तह केरा। धनी[८] पाउ निधनी मुख हेरा।
लाख करोरन्हि बस्तु[९] बिकाई[१०]। सहसन्हि केर न कोइ ओनाई[१०]।

सबहीं लीन्ह बेसाहना[११] औ घर कीन्ह बहोर।
बाँभन तहाँ लेइ का गाँठि[१२] साँठि सुठि[१३] थोर॥

[७५]

झुरवै[१] ठाढ़ कहाँ हौं[२] आवा। बनिज न मिला रहा पछितावा।
लाभ जानि आएउँ एहि हाटाँ। मूर गँवाइ चलेउँ तेहि[४] बाटाँ।
का मैं मरन सिखावन सिखी। आएउँ मरै मीचु हुति लिखी।
अपने चलत न[५] कीन्हि कुबानी[६]। लाभ न दीख मूर भौ[७] हानी।
का मैं बोवा जरम ओहि[८] भूँजी। खाइ चलेउँ घरहूँ कै पूँजी।
जेहि बेवहरिआ कर बेवहारू। का लै देव जौं छेंकिहि बारू।
घर कैसें पैठब मैं छूँछें। कौन उतर देबेउँ[१०] तिन्ह पूँछें।

साथ चला सत बिचला[११] भए[१२] बिच समुँद पहार।
आस निरासा[१३] हौं फिरौं[१४] तूँ बिधि देहि अधार[१५]॥

---

४. तृ० ३ कै ५, प्र० १, २, द्वि० ७, ३ भएऊ, गएऊ। ६. प्र० १, २ तेहि ७. प्र० १, २ आहि न, तृ० ३ है नहि। ८. तृ० ३ धनिक। ९. तृ० ३ बनिज। १०. तृ० ३ बिकाही, ओनाहीं। ११. तृ० ३ बेसहनी, द्वि० ४ बे सामन। १२. प्र० १, द्वि० ७ दाम। १३. द्वि० ६ सिधु।

[७५] १. द्वि० ४, ५ तृ० ३ झूरै। २. प्र० १ द्वि० १, कहाँ मैं, प्र० २ काहे को मैं, द्वि० ४, ३ काहे कहाँ, तृ० ३, च० १ काहे कहँ, पं० १ काहे कौं, द्वि० ५ कौं काहेक। ३. द्वि० ३ लाग। ४. द्वि० ५ एहि। ५. प्र० १, २ द्वि० ७, तृ० १ चलत सो, तृ० ३ चलत जे, पं० १ चलते। ६. द्वि० ५, ३, च० १ गियानी। ७. प्र० १, द्वि० ४ भा, प्र० २, द्वि० ३, ५, तृ० १, च० १ भै। ८. प्र० १ यह, तृ० ३ जे, द्वि० ४ नहिं। ९. द्वि० १ गाँठि। १०. द्वि० २, तृ० १ देबौ, तृ० ३ पाउब, द्वि० १, ३, च० १, पं० १ देबौं, च० १ देउब। ११. द्वि० ४ सँग बिछुरा। १२. प्र० १, तृ० १ भा, प्र० २ भौ। १३. तृ० ३ अैस निरासी। १४. प्र० २ मैं चला। १५. प्र० २ अहार।

[७६]

तबहिं[1] बिआध सुआ लै आवा। कंचन बरन अनूप सोहावा।
बेंचै लाग हाट लै[2] ओहीं। मोल रतन[3] मानिक जहँ[4] होहीं।
सुआ को पूँछ पतिंग मँदारे[5]। चलन देखि आछै[6] मन मारे[7]।
बाँभन आइ सुआ सौं[8] पूँछा। दहुँ गुनवंत कि निरगुन छूँछा।
कहु परवते जो गुन तोहिं पाहाँ। गुन न छपाइअ हिरदे माहाँ।
हम तुम्ह जाति बराभन[9] दोऊ। जातिहि जाति पूँछ सब कोऊ।
पंडित हहु तो[9] सुनावहु बेदू। बिन पूँछे पाइअ नहिं भेदू।
हौं[10] बाँभन औ पंडित कहु आपन गुन सोइ।
पढ़े के आगे जो पढ़ै दून लाभ तेहि[11] होइ॥

[७७]

तब गुन मोहि अहा हो देवा। जब[1] पिंजर हुँत[2] छूट परेवा।
अब गुन कवन जो बँदि जजमाना[3]। घालि मँजूसा बेंचै आना।
पंडित होइ सो[4] हाट न चढ़ा[5]। चहौं[6] बिकाइ[7] भूलि गा पढ़ा[5]।
दुइ मारग देखौं एहि हाटाँ। दैउ चलावै दहुँ केहि बाटाँ।
रोवत रकत भएउ मुख राता। तन भा पिअर[8] कहौं का बाता।
राते स्याम कंठ दुइ गीवाँ। तिन्ह दुइ फाँद[9] डरौं सुठि[10] जीवा।

---

[७६] १. द्वि० २, ५ तौलहि, द्वि० ४, ५ च० १ तौहि (हिंदीमूल)। २. प्र० २ चढि। ३. द्वि० १ मोति। ४. प्र० १, २ द्वि० २ होहि। ५. तृ० ३ पतग मदोरे, मोरे, द्वि० १ पतंग पँखारे, मारे द्वि० ५ पतंग मडारे, मारे, द्वि० ७ पतंग निनारे, मारे, द्वि० ४ पंखि अँडारे, मारे, द्वि० ३ बधिक मनझारे, मारे। ६. प्र० २ चालु न देखु रहै, द्वि० ३ चलन न देख रहै, च० १ चलन न देख आछै। ७. प्र० २ कहँ। ८. च० १ बरावर। ९. प्र० १, २ अहहु, तृ० ३ हहु जो, द्वि० ५, ३ हो तौ, च० १ होहु। १०. प्र० २ मैं। ११. द्वि० १ पै।

[७७] १. द्वि० ७, तृ० २, च० १ बिनु। २. प्र० १ ते छूट, प्र० २ महँ हुता, द्वि० १ महँ अहा, तृ० ३ सौं छूट। ३. प्र० १ महँ आना। ४. तृ० ३ सो जो। ५. प्र० २ चढ़ई, पढ़ई। ६. प्र० १ चहै, प्र० २ चढ़ा। ७. प्र० १, द्वि० २, ३, ४, ६, ७, तृ० १, ३ बिकान। ८. द्वि० २, ३, पीत। ९. प्र० १, २ तेहि डर अधिक, तृ० १ तहँ दुइ जीम। १०. प्र० १ डरै सो।

अब हौं[11] कंठ फाँद गिवँ[12] चीन्हा। दहुँ कै फाँद[13] चाह का कीन्हा।
पढ़ि गुनि देखा बहुत मैं है आगें डरु सोइ।
धंध जगत सब[14] जानि कै[15] भूलि रहा बुधि खोइ॥

[७८]

सुनि बाँभन बिनवा चिरिहारू। करु पंखिन्ह कहँ मया[1] न मारू।
कत रे निठुर जिउ बधसि[2] परावा। हत्या केर न तोहि डरु आवा।
कहेसि पंखि खाधुक मानवा[4]। निठुर ते कहिअ जे पर मँसु खवा[4]।
अ बहिं रोइ जाहि कै रोवना। तबहुँ न तजहिं भोग सुख सोवना।
औ जानहिं तन[6] होइहि नासू। पोखहिं माँसु[7] पराएँ माँसू।
जौं न होत अस पर मँस खाघू। कत पंखिन्ह कहँ धरत[8] बिआघू।
जौं रे ब्याध पंखी निति धरई। सो बेचत[9] मन[10] लोभ न करई।
बाँभन सुआ बेसाहा सुनि मति बेद गरंथ।
मिला आइ कै साथिन्ह भा चितउर के पंथ॥

[७९]

तब[1] लगि चित्रसेनि सिव साजा। रतनसेनि चितउर भा राजा।
आइ बात तेहिं आगें चली। रजा बनिज आव[2] सिंघली।
हहिं गजमोति भरीं सब[3] सीपी। औरु बस्तु बहु सिंघल दीपी।

---

११. तृ० ३ अबहूँ, द्वि० ४ अबही। १२. प्र०२ कर, द्वि० २, ३ को, द्वि० ४ ७ दुइ। १३. प्र० २ जिअ फाँद, द्वि० २, ३, तृ० २ जियँ बाँधि, तृ० ३ कै बदि, प० १ कै बाँद। १४. प्र० १, २ जिअ। १५. द्वि० २ जायकै।

[७८] १. प्र० १ दया। २, प्र० १, २ हतसि। ३. द्वि० २ में यह पंक्ति छूटी हुई है। ४. प्र० १, २ खाधुक मन लावा, खावा, द्वि० ४ खाधुक मावा, खावा, द्वि० ५ का दुक्ख जनावा, खावा, द्वि० ३, ७ खाधुक मनावा, खावा, द्वि० १ खाधुक मन लावा, निठुर अहा तो पेम सँतावा। ५. तृ० ३ सोइ रो, तृ० २ कहिमैं, द्वि० ३ तेइ। ६. प्र० १, २ अउतरि जनकर। ७. द्वि० ३ आपु। ८. प्र० २ फिरत, तृ० १ गहैं, च० १ परै। ९. द्वि० ५, च० १ निर्चित। १०. प्र० २ जिउ।

[७९] १. द्वि० १ लौ (हिंदी मूल)। २. प्र० १, द्वि० १, ५ राजा बनिज आए, तृ० ३ राजा बनिज आवा, द्वि० ३ आवा बहुत बनिज, पं० १ राजा बनिज आएउ। ३. द्वि० २ औ, द्वि० ४ सत, द्वि० ७ नग।

बाँभन एक सुआ लै आवा। कंचन बरन अनूप सोहावा।
राते स्याम[4] कंठ दुइ काँठा[5]। राते डहन[7] लिखे सब पाठा[8]।
औ दुइ नैन सोहावन राता। राता ठोर अमिअ रस बाता।
मस्तक[8] टीका काँध जनेऊ। कबि बिआस पंडित सहदेऊ।

बोल अरथ सौं बोलै सुनत सीस पै[9] डोल।
राजमँदिर महँ चाहिअ अस वह[10] सुआ अमोल॥

[८०]

भई[1] रजाएसु जन दौराए[2]। बाँभन सुआ बेगि लै आए।
बिप्र असीसि बिनति औधारा। सुआ जीउ[3] नहिं करौं निनारा।
पै यह पेट भएउ[4] बिसवासी। जेहिं नाए सब[5] तपा सँन्यासी।
दारा सेज जहाँ जेहि[6] नाहीं। सुइँ परि रहै लाइ गिव बाहीं।
अंध रहै जो देख न[7] नैना। गूँग रहै मुख आव[8] न बैना।
बहिर रहै सरवन नहिं सुना। पै एक पेट न रह[9] निरगुना[10]।
कै कै फेर[11] अंत[12] बहु[13] दोषी। बारहिं बार फिरै न[14] संतोषी[15]।

---

४. प्र० १, २, द्वि० ४, ३ सब। ५. प्र० १, ७ ठोर। ३. प्र० १, २ कंठा, पंथा। ७. द्वि० २ पान। ८. प्र० १, २ माँथे। ९. प्र० १, २, द्वि० ५ सब। १०. प्र० १, २ असमन, द्वि० १ अस है।

[८०] १. द्वि० १, ५, द्वि० १, २ भएउ। २. द्वि० ३ दुइ धाए। ३. द्वि० १, ३, पं० १ जरम, द्वि० ६ जिअन। ४. द्वि० ३, ५, ६, तृ० १, च० १ भवा। ५. प्र० १, २, द्वि० ३, च० १ नाए, द्वि० २, ४, ५, पं० १ नावा, तृ० ३ नवा, तृ० १ नवाए। ६. द्वि० १ औ घर सेज जहाँ जेहि, तृ० ३ जेहि हैं नींद सेज जौं, द्वि० ५ दारी सेज जहाँ किछु, द्वि० २, ३, तृ० २ डासन सेज जहाँ जेहि (द्वि० २—किछु)। ७. प्र० १ सो जेहि नाहिं। ८. द्वि० ५ औौर, द्वि० ३ बहै। ९. द्वि० १ भवा। १०. तृ० ३ देखा राज बहुत सुख पावा, चारौं बेद पढ़त सुन आवा। ११. द्वि० २ भीर, च० १ फिरै। १२. द्वि० ४ आप। १३. द्वि० ५, च० १ यहु। १४. द्वि० १ नहिं। १५. तृ० ३ हरे बरन कँठ राते रेखा, जनौं स्याम अहै बिन्दु बिसेखा।

सो मोहिं लिहैं मँगावै[१६] लावै भूख पिआस।
जौं न होत अस बैरी[१७] तौ केहि काहू कै[१८] आस॥

[८१]

सुऐं असीस दीन्ह बड़ साजू[१]। बड़ परताप अखंडित राजू[१]।
भागवंत बड़ विधि[२] औतारा[३]। जहाँ भाग तह रूप जोहारा[३]।
कोउ केहु पास आस कै गौना। जो निरास दिढ़ आसन मौना[४]।
कोउ बिनु पूँछे बोल[५] जो बोला। होइ बोल माँटी के मोला।
पढ़ि गुनि जानि[६] वेद मत[७] भेऊ। पूँछी बात कहीं[८] सहदेऊ।
गुनी न कोई[९] आपु सराहा। जौं सो बिकाइ कहा पै चाहा[१०]।[११]
जौं लहि गुन परगट नहिं होई। तौ लहि मरम न जानै कोई।

चतुर[१२] वेद हौं पंडित हीरामनि मोहि नाउँ।
पदुमावति[१३] सों मेरवौं[१४] सेव करौं तेहि[१५] ठाउँ॥

[८२]

रतनसेनि हीरामनि चीन्हा[१]। एक लाख[२] बाँभन कहँ दीन्हा।
बिप्र असीसा[३] कीन्ह पयाना[४]। सुआ सो राजमँदिर महँ आना।

---

१६. प्र० १, २ फिरावै। १७. प्र० २ पेट अस बैरी, तृ० ३ अस पनिता।
१८. प्र० १ कत काहू कै, तृ० ३ कोउ काहूकत, द्वि० ४ कहँ काहू कै।

[८१] १. प्र० १ राजू, साजू। २. तृ० ३ बिधि जेहि, द्वि० ४ बुध जेहि। ३. तृ० ३ अवतारू, गोहारू। ४. द्वि० १ में इस पंक्ति के स्थान पर निम्नलिखित दो (यथा १-२) हैं :

देखा सुवा लोन अति राजा। कहा कि परगट करु गुन साजा।
काहु कि पंडित तव न इन कोई। आपुन बताइ आपुन गुन होई।

५. प्र० १, २ अनपूछे बोलै। ६. च० १ जेहि महँ म्वल। ७. तृ० ३ हुति। ८. तृ० ३ कहै हि, द्वि० ७ कहै। ९. तृ० ३ चीन कोइ जै। १०. द्वि० ५ ग्यान सो जाहा। ११. प्र० १, २ सुवै सो आपन गुन दरसावा, हीरामनि तव नावँ कहावा। (तुलना २५५.७) १२. प्र० १, २ चारि। १३. प्र० २ मधु मालति। १४. तृ० ३ कर सुभटा। १५. प्र० १, २ सबँ तृ० ३ ओहि, तृ० १ जेहि।

[८२] १. प्र० २ लीन्हा। २. प्र० १ लाख टका, द्वि० १ एक लच्छ। ३. तृ० ३ असीस कै, तृ० १ असीस कहि। ४. प्र० १ बिनति औधारा।

बरनौं काह सुआ कै भाखा। धनि सो नाउँ हीरामनि राखा।
जौं बोलै तौं मानिक[5] मूँगा। नाहिं तौ मौन[6] बाँध होइ[7] गूँगा।
जौं बोलै राजा मुख जोवा। जनहुँ मोति हिअ हार पिरोवा[8]।
जनहुँ मारि मुख अंब्रित मेला। गुरु होइ आपु कीन्ह यह[10] चेला।
सुरुज चाँद कै कथ्था कहा[11]। पेम क गहन लाइ चित रहा[11]।

जो जो[12] सुनै धुनै सिर[13] राजा प्रीति क होइ अगाहु[14]।
अस गुनवंत नाहिं भल सुअटा[15] बाउर करिहै काहु[16]॥

[८३]

दिन दस पाँच तहाँ[1] जो भए। राजा कतहुँ[2] अहेरैं गए।
नागमती रुपवंती रानी। सब रनिवास पाट परधानी।
कै सिंगार दरपन कर लीन्हा। दरसन देखि गरब जियँ कीन्हा।
भलेहि सो और पिआरी नाहाँ[3]। मोरे रूप कि कोइ जग माहाँ।
हँसत सुआ पहँ आइ सो नारी[4]। दीन्हि कसौटी औ बनवारी[5]।

---

५. तृ० ३ तौ मोती, द्वि० ४ सब मानिक। ६. तृ० ३ पीन। ७. प्र० १, २, द्वि० २ रहै। ८. प्र० १, २ चुवै मोति हिअ हार पिरोवा, तृ० ३ मानिक मोती माँग पिरोवा। ९. तृ० २, ३ जीभ मारि मुख, द्वि० ३ चहै ढारि विष। १०. द्वि० २, तृ० ३ जग। ११. प्र० १, २, द्वि० १ कहै, चितग है, द्वि० ४ कहा, जिउ गहा। १२. द्वि० ४ ज्यों ज्यों। १३. तृ० ३ सीस धुनै। १४. प्र० १ परतख होइ अवगाह, प्र० २ परतख होइ अगाह, तृ० ३ सुनत पेम होइ ताहि, द्वि० ३ राजा प्रीति अगाइ, पं० १ प्रीतिक होइ अगाह। १५ प्र० १ अस गुनवन्त सुवा भल नाहीं, तृ० ३ अस गुनवंता नहिं भला। १६. प्र० १, द्वि० १ कीन्ह जो चाह, प्र० २, प० २ किआ चह वाह, द्वि० २ धरै टर वाहि, द्वि० ३ कीजै चाह, च० १ कै जिउ चाह।

[८३] १. प्र० २ दहा। २. प्र० २ बहुरि। ३. प्र० १, २ भलेहि सुआ हौ सौपी नाहाँ, तृ० ३ भलेहि सोइन्ह पिआरी नाहाँ, द्वि० ५ बोलहु सुआ पिआरे नाहाँ, द्वि० ६ भलेऊँ सुवा सो प्यारी नाहाँ, द्वि० ३, तृ० १ भलेहि सुआ और प्यारी नाहाँ, प० १ भलहि सुआ रे प्यारी नाहाँ, तृ० २ भलेहँ सुआ जो प्यारी नाहाँ। ४. तृ० ३ बारी। ५. द्वि० ५ पनवारी।

सुआ पान दहुँ कहु[6] कसि सोना[7]। सिंघलदीप तोर कस लोना[8]।
कौन दिस्टि तोरी[9] रुपमनी[9]। दहुँ हौं लोनि[10] कि वै पदुमिनी[9]।

जौं न कहसि सत सुअटा तोहि राजा कै आन।
है कोई एहि जगत महँ मोरें रूप समान॥

[८४]

सँवरि रूप पदुमावति केरा। हँसा सुआ रानी मुख हेरा।
जेहि सरवर महँ हंस न आवा। बकुली[1] तेहिं जल[2] हंस कहावा।
दैयँ कीन्ह अस जगत अनूपा। एक एक तें आगरि रूपा।
कै मन गरब न छाजा काहू। चाँद घटा औ लागा[3] राहू।
लोनि बिलोनि तहाँ को कहा। लोनी सोइ कंत जेहिं चहा।
का पूँछहु सिंघल की नारी[4]। दिनहिं न[5] पूजै निसि[6] अँधिआरी।
पुहुप[7] सुगंध सो[8] तिन्ह कै काया। जहाँ माँथ का बरनौं पाया।

गढ़ी सो सोने सोंधै भरी सो रूपै[9] भाग।
सुनत रूखि भै[10] रानी हिएँ लोन अस लाग॥

[८५]

जौं यह सुआ मँदिर महँ रहई[1]। कबहुँ कि होइ[2] राजा सौं कहई।
सुनि राजा पुनि होइ बियोगी। छाड़ै राज चलै होइ जोगी।

---

६. तृ० ३ देरी कसि. । द्वि० २ पासि सुख कहु, द्वि० ५ तोर कहु कस, द्वि० १ तोहि यसु अस द्वि० ३ कसि रहु कस। ७. द्वि० २ सुनी, लोनी। ८. प्र० १, २, च० १ सिस्टि मोरी। ९. प्र० १, २ पदुमिनी, रुपमनी। १०. प्र० २ कहु हौं लोनि, तृ० ३ कहुँ हौं नीकी।

[८४] १. प्र० १, २, द्वि० ५ बकुला। २. तृ० ३ सर। ३. प्र० १ घटइ जिनि लाग, प्र० २ घटा जैा लागी, द्वि० ७ घटा कह लागा। ४. तृ० ३ बारी। ५. प्र० २, द्वि० ३, तृ० ३ कि। ६. द्वि० २ रैनि। ७. द्वि० ५ कनक। ८. द्वि० १ सुबास सो, प्र० २ जहाँ लगि। ९. प्र० २ भरी सो रोकी, तृ० ३ सो रूपै अलि। १०. प्र० १, २, द्वि० २, ४, तृ० २, सुखि गइ, च० १ रोक गइ, पं० १ रूखि गइ।

[८५] १. द्वि० २, ५, ७, तृ० २, ३, च० १, पं० १ अहई। २. प्र० २ कबहुँ कि धार, द्वि० ५ कौन होइ, द्वि० ६ कौहु होइ (हिंदी मूल)।

पिउ राखै[3] नहिं होइ अँगूरू[4]। सबद न देइ बिरह तवँचूरू[5]।
धाइ धामिनी[6] बेगि हँकारी। ओहि सौंपा[7] जिअ[8] रिसि न सँभारी[9]।
देखु यह सुअटा है[10] मँदचाला। भएउ न ताकर जाकर पाला।
मुख कह आन पेट बस[11] आना। तेहि औगुन दस हाट बिकाना।
पंखि न राखिअ[12] होइ[13] कुभाखी। लइ लै मारु जहाँ नहिं साखी।

जेहि[14] दिन कहँ हौं निति डरौं[15] रैनि[16] छपावौं[17] सूर।
लै चह दीन्ह[18] कँवल कहँ मोकहँ होइ मँजूर॥

[८६]

धाइ सुआ लै[1] मारै गई। समुझि[2] गिआन हिएँ मति[3] भई।
सुआ सो राजा कर बिसरामी। मारि न जाइ चहै जेहि सामी।
यह[4] पंडित खंडित बैरागू। दोस ताहि जेहि सूझ न आगू।
जौं[4] तिवाईं[5] के काज[6] न जाना। परै धोख[7] पाछें पछिताना।
नागमती नागिनि बुधि ताऊ[8]। सुआ मँजूर होइ नहिं काऊ[9]।

---

3. प्र० २ राखिअ, तृ० ३ गसी। 4. द्वि० ७ जारा अवहि छोन मुख मूरू। 5. द्वि० १, पं० १ सब दिन दहै देह तवँचूरू। द्वि० २ सब दिन दहै बिरह तन चूरू द्वि० ५ सबद न देइ बहुरि तमचूरू, द्वि० ७ जब लगि नाहिं बोलत तमचूरू, तृ० १ सबद दिए न होइ तमचूरू, द्वि० ३ सेंदुर दिए रहत तमचूरू, च० १ सब दिएँ नहिं रह तमचूरू। 6. प्र० १ औ दामिनि, प्र० २ जो धामिनि, पं० १ धाइ कौं। 7. द्वि० १ भइ क्रिरोध। 8. द्वि० १ कनि, द्वि० २ सो, द्वि० ३ हिय। 9. प्र० २, तृ० ३ रीसि सँभारी। 10. प्र० १, २, द्वि० १ धाइ सुअटा। 11. प्र० १, २, द्वि० १, ६ कछु, द्वि० ४ पै। 12. प्र० १, २, होखै (भोजपुरी प्रभाव)। 13. द्वि० २ भई। 14. प्र० १ ता, प्र० २ तेहि। 15. द्वि० ३ डरौं औ। 16. द्वि० ३ दिनहिं। 17. प्र० १, २, छपावै। 18. द्वि० २ लै जो दीन्ह, द्वि० ५, तृ० २ सो लै देइ।

[८६] 1. प्र० २ कहँ। 2. प्र० १, २ उपजा। 3. द्वि० २, तृ० ३ हर। 4. प्र० १, २, पं० १ जेइँ। 5. द्वि० ५, ३ तिरिआ, द्वि० १, पं० १ तिवानि। 6. प्र० १, २, द्वि० १ मरम। 7. प्र० १, २, च० १ दोस। 8. द्वि० ४ ताही, काही। 9. प्र० १, २ च० १, द्वि० ३, ५, ७, तृ० १ माहीं, माही, द्वि० १, माही, नाहीं, द्वि० ७ माहीं, मार्दीं।

जौ न कंत के आएसु माहाँ[९]। कौनु भरोस नारि कै नाहाँ[९]।
मकु एहि खोज होइ निसि[१०] आई। तुरै रोग[११] हरि माथैं जाई[१२]।

दुइ सो छपाए ना छपैं एक हत्या औ पापु।
अंतहु करहिं बिनास ये[१३] सै[१४] साखी दै आपु[१५]॥

[८७]

राखा सुआ धाइ मति[१] साजा। भएउ खोज निसि आएँ[२] राजा।
रानी[३] उतर मान सौं दीन्हा। पंडित सुआ मँजारी लीन्हा[४]।
मैं पूँछा सिंघल पदुमिनी। उतरु दीन्ह तूँ को[५] नागिनी।
वै जस दिन तूँ निसि अँधिआरी। जहाँ बसंत करील को बारी[६]।
का तोर पुरुष रैनि को राऊ। उलू न जान देवस कर भाऊ।
का वह पंखि कोटि महँ कोटी[८]। अस बड़ बोल जीभ कहँ[९] छोटी।
रुहिर चुऐ जब जब[११] कह बाता। भोजन बिनु भोजन मुख राता।[१२]

माथैं नहिं बैसारिअ सठहि सुआ जौं[१३] लोन।
कान टूट जेहि अभरन[१४] का लै करब[१५] सो सोन॥*

---

१०. प्र० १ रस, प्र० २ ससि, द्वि० १ तस। ११. प्र० १ दोख। १२. द्वि० ७ बिसाई। १३. द्वि० २, ७, पुनि, द्वि० ६ ते, तृ० २ सै, तृ० १, २ वै। १४. द्वि० १ सत्र। १५. प्र० २ कहै।

[८७] १. द्वि० ७ मन। २. प्र० १ जब आएउ, द्वि० १ निसि आवा, द्वि० ६ आएउ निसि। ३. प्र० २ धनि। ४. द्वि० २ बेगि सुवा लै आवहु रानी, नींद परै कछु कहै कहानी। ५. प्र० १. २ क्या। ६. (१) अहसि न देखौं तस उजिआरी। ८. प्र० १ बेट महँ कोटी, छोटी, प्र० २, तृ० ३ कोडि महँ कोटी, छोटी, द्वि० २ खोट महँ खोटै, छोटै, द्वि० १ कोटि महँ कोटी, मोटी, द्वि० ७ कोटि महँ गोटी, छोटी। ९. प्र० १ सठ, प्र० २ तेहि, द्वि० ७ मुख। ११. द्वि० २, ५, ६, तृ० १, पं० १ जो जो (हिंदी मूल), तृ० ३ ज्यों ज्यों। १२. तृ० २ रुहिर चुऐ जो जो कह बैना। रकत आइ भरि मोरे नैना। १३. प्र० १, २ जौं सुवटा सुठि लोन, द्वि० २ अंतहु सुवा सो लोन, तृ० ३ जौ सुठि सुवा बड लोन, द्वि० ४ सो तेहि जो सुवा है लोन, द्वि० ५ का सठ सुवा सलोन, द्वि० ७ सुठिहि सुवा जौं लोन। १४. द्वि० ७, तृ० ३ पाहरे। १५. द्वि० ४ करै, तृ० १ सरब।

* तृ० २ में इस छंद में मूल पाठ की .१, .२, .३, .५, .७ तथा अन्य ७ अर्द्धालियाँ आती हैं। (देखिए परिशिष्ट)

[८८]

राजैं सुनि बियोग तस[1] माना। जैसें[2] हिएँ[3] बिक्रम पछिताना।
यह[4] हीरामनि पंडित सुआ। जौं बोलै सौ अंब्रित चुआ।
पटित दुख खडित[5] निरदोखा। पंडित हुतें परै नहि धोखा।
पंडित केरि जीभि मुख सूधी। पंडित बात न कहै निबूधी[6]।
पंडित सुमति देइ पथ लावा। जो कुपथ तेहि पँडित न भावा।
पंडित राते बदन[7] सरेखा। जो हत्यार रुहिर पै देखा।
कै[8] परान घट आनहु मती[9]। कै चलि होहु सुआ सँग सती।

जनि जानहु कै अँगुन मंदिर होइ[10] सुख राज।
आएसु मेटि कंत कर काकर भा न अकाज[11]॥

[८९]

चाँद जैस धनि उजिआरि[1] अही। भा पिउ रोस गहन[2] अस[3] गही।
परम[4] सोहाग निबाहि न पारी[5]। भा दोहाग सेवाँ जब[6] हारी।
एतनिक दोस बिरचि[7] पिउ रूठा। जो पिउ आपन कहै सो मूठा।
ऐसें गरब न भूलै कोई। जेहि डर बहुत पिआरी सोई।
रानी आइ धाइ के पासाँ। सुआ[8] मुआ सेंवर कै[9] आसाँ[10]।

---

[८८] १. द्वि० १ दुख। २. द्वि० १ ऐसै। ३. प्र० १, २ जस हिरदै। ४. तृ० ३ आउ। ५. द्वि० ७ पढित। ६. प्र० १, २ न कहै बिरुद्धी, तृ० ३ कहै निरबूधी. द्वि० ४ न कहै निबुद्धी, द्वि० ७, च० १ न कहै निरबूधी, द्वि० ५, ३ न कहै बियोधी, तृ० १ कहै निबूध। ७. पं० २ बरन। ८. ० ३ गए। ९. प्र० १, २ राखहु मतो। १०. प्र० १, २ करहु। ११. द्वि० ६, तृ० ३ न भएउ अकाज, द्वि० ४ भा अम वाज।

[८९] १. प्र० १, २ आछरि। २. द्वि० २ खना। ३. प्र० १ गा, प्र० २ जो। ४. प्र० २, तृ० ३ पिरम, तृ० २ पेम। ५. द्वि० ७ सोहागिनि नाहि पिआरी। ६. तृ० ३ जीति, द्वि० ७ जनि। ७. प्र० १ लागि। ८. प्र० १ सुनग, प्र० २, द्वि० १ सुवा। ९. प्र० १, २, द्वि० २ करि सेंवर। १०. द्वि० ३ तस मुख मूर न तन महँ साँस।

परा प्रीति कंचन महँ सीसा। बिथरि[11] न मिलै स्याम पै दीसा।
कहाँ सोनार[12] पास जेहि जाऊं। देइ सोहाग करै एक ठाऊं।

मैं पिय प्रीति भरोसें गरब कीन्ह जिअ माहँ।
तेहि रिसि[13] हौं परहेलिउँ[14] निगड़ रोस किअ[15] नाहँ।

[६०]

उतर धाइ तब दीन्ह रिसाई। रिसि आपुहि बुधि औरहि खाई।
मैं जो कहा रिसि करहु न बाला। को न गएउ एहि रिसि कर घाला।
तूँ रिसि भरी न देखसि आगू। रिसि महँ काकर भएउ सोहागू।
बिरस बिरोध रिसिहि पैं होई। रिसि मारै तेहि मार न कोई।
जेहि की रिसि मरिए रस जीजै[1]। सो रस तजि रिसि कबहुँ न कीजै।
जेहि रिसि तेहि[3] रस जोगै न जाई। बिनु रस हरदि होइ पिअराई।
कंत सोहाग कि[4] पाइअ साँधा। पावै सोइ जो ओहिं चित बाँधा[6]।

रहै जो पिय के आएसु औ बरतै होइ खीन[7]।
सोइ चाँद अस निरमरि जरम न होइ मलीन॥[*]

---

११. प्र० १ नवहुँ, द्वि० १ बिछुरि, द्वि० ४ बिहरि। १२. तृ० ३ सो नारि। १३. तृ० ३ तेहि दुख हौं, द्वि० ७ नै जानौं। १४. प्र० २ परहेलिनि, द्वि० २, तृ० ३, च० १ परहेली, द्वि० ७ परहेल बिनु। १५. प्र० १ निगुन रोस भौ तृ० ३ निरँग रोस किए, द्वि० ७ हारी रोस किय, तृ० १ नेक रोस किए, द्वि० ३ रूस्यो नागर, द्वि० ४ निगड़ रोस का।

[६०] प्र० १, २, द्वि० ७ जहवाँ रिस मारे रस पीजै, द्वि० १ जेहि के रिस मरिए रस छीजै, तृ० ३ रिसहि जो मरिए औ रस जीजै, द्वि० ६ जेहि के रिस मरिए रस दीजै, तृ० १ जिय कै रिस मरिए रस जीजै। २. तृ० ३ अनरीस, द्वि० ४, ६ रिसि कोह, तृ० २ रिसि कोहु। ३. प्र० १ जाकहं रिस। ४. प्र० २ चूकि, द्वि० ६ चुकइ, द्वि० ३ गोइ। ५. प्र० १, द्वि० १,३,७ न, द्वि० २, ५, तृ० १, च० १ की। ७. द्वि० ४, तृ० ३ हीन। ८. प्र० २ सो देखु चाँद जग निरमल, प्र० १, तृ० १ सोई देखिअ चाँद अस, द्वि० ४ सो धनि चाँद असि निरमलि, द्वि० ५ निरमल देखिअ चाँद अस, च० १ सोइ चाँद असि देखिअ।

* तृ० २ में इसके अनंतर एक अतिरिक्त छंद है। (देखिये परिशिष्ट)

[६१]

सुआ हारि समुझी[1] मन[2] रानी। सुआ दीन्ह राजा कहँ[3] आनी।
मान मते हौं[4] गरब जो कीन्हा। कंव तुम्हार मरम मैं लीन्हा।
सेवा करै जो बरहौं मासा। एतनिक औगुन करहु बिनासा।
जौं तुम्ह देइ नाइ कै गीवाँ। छाँड़हु नहि बिनु मारें[5] जीवाँ।
मिलतहि महँ[6] जनु अहहु[7] निनारे। तुम्ह सौं अहै[8] अदेस पिआरे।
मैं जाना तुम्ह मोहीं[9] माहाँ। देखौं ताकि तौ हहु सब पाहाँ[10]।
का रानी का चेरी कोई। जा कहँ मया करहु भलि सोई[11]।

तुम्ह सौं कोइ न जीता हारे बररुचि[12] भोज।
पहिलें आपु जो खोवै[13] करै तुम्हारा[14] खोज॥

[६२]

राजें कहा सत्त कहु सुआ। बिनु सत कस[1] जस सेंवर भुआ[2]।
होइ मुख रात सत्त की बाता[3]। जहाँ सत्त तहँ धरम सँघाता।
बाँधी सिस्टि अहै सत[4] केरी। लछिमी आहि सत्त की चेरी।

---

[९१] १. प्र० १ समुझा। २. प्र० २, तस, द्वि० ७ पिउ। ३. द्वि० २ तृ० ३ पहँ, द्वि० ४ पै। ४. प्र० १, २ न गमर्ता मैं, तृ० ३ नागमती हिय, द्वि० ७ मानमर्ता गो। ५. प्र० १, २ छाटहु ताहि न मारहु, द्वि० १ मारहु पै नहिं छाँड़हु, तृ० १ छाँटहु नहिं मारहु पुनि। ६. तृ० ३ मिलेहि माँह। ७. द्वि० २ अहहिं, तृ० ३ हौन, द्वि० ७ अजहुँ। ८ द्वि० २ कहहिं, तृ० ३ अ.ौ, द्वि० ७ होइ, द्वि० ३ आहि। ९. प्र० १, २ हहु मोहि, द्वि० १ अहो मोहि, तृ० ३, च०१ मन मोहि। १० प्र० १, २ तौ हहु जग पाहाँ, द्वि० १ सकल जग पाहाँ, द्वि० ४,५ चहौं सब माहाँ, द्वि० ३ तौ सब हिय पाहाँ। ११. प्र० २ जेहि टर बहुत पिआरी सोई। १२. द्वि० ४ बिक्रम। १३. प्र०, १, २ द्वि० ३, ४, ५, ६, तृ० २, च० १ खोर कै। १४. तृ० ३ करै तुम्हार सो, तृ० २ सो करै तुम्हारा।

[९२] १. प्र० १ कर। २. तृ० ३ बिनु सत कस सेंवर जस हुआ, तृ० १ सत्त न कहसि मानहु सुर सुआ। ३. प्र० २ सत्तहि तें आहि मुख राता। ४. प्र० १, २ तृ० ३ जो सत्तहि, द्वि० ७ सभै सत, तृ० १ धरम सत, प० १ सत्तहि।

सत्त[5] जहाँ साहस[6] सिधि पावा। औं सतवादी पुरुष कहावा।
सत कहँ सती सँवारै सरा[7]। आगि लाइ चहुँ दिसि सत जरा[7]।[8]
दुइ जग तरा सत्त जेइँ राखा। औ पिआर दैअहि सत[9] भाखा।
सो सत छाँड़ि जो धरम बिनासा। का[10]मति हिएँ कीन्ह सत नासा[11]।

तुम्ह सयान औ पंडित असत न भाखहु काउ।
सत्त कहहु सो मोसौं[12] दहुँ काकर अनियाउ॥

[९३]

सत्त कहत राजा जिउ जाऊ। पै मुख असत न भाखौं काऊ।
हौं सत लै निसरा एहि[2] पतें[3]। सिंघल दीप राज घर हुतें।
पदुमावति राजा कै बारी। पदुम गंध ससि[4]बिधि औतारी[5]।
ससि मुख अंग मलैगिरि रानी। कनक सुगंध दुआदस बानी[6]।
हहिं जो पदुमिनि सिंघल माहाँ। सुगँध सुरूप सो[7]ओहि की छाहाँ।
हीरामनि हौं तेहि क परेवा। कंठा फूट करत तेहि सेवा।
औ पाएउँ मानुस कै भाखा। नाहिं त कहाँ[8] मूँठि भरि[9] पाँखा।

---

५. तृ० ३ सती (उर्दू मूल)। ६. प्र० २ सच्सा, द्वि० १ सहसै।
७. प्र० १, २ सारा, नारा द्वि० ३ सरा, भाषा, तृ० ३ सरा, चरा।
८. द्वि० १ अभी लाइके चाहै जरा। ९. प्र० १ औ पिआर दै अस तन,
द्वि० १ औ पिअ दीन्ही बचन कै, द्वि० ४ औ पै पार देहि सत। १०. द्वि० ६
धो। ११. प्र० १ धा मतिहीन जो धरम बिनासा, तृ० ३ का मतिहीन
सत जेइँ नासा, प्र० २ का मतिहीन जो सनि बिनासा, द्वि० ७ का तप
हीन कीन्ह सत नासा। १२. प्र० १ तुम्ह मोसौं, प्र० २, द्वि० १ हीरामनि,
द्वि० ३ तुम्ह मोतैं।

[९३] प्र० २ अस तन बोलौं, पं० १ सत्त न भाखौं। २. तृ० ३ हौं एहि सत
निसरा लै। ३. तृ० ३ पथे, द्वि० ४ सतें। ४. प्र० १, २, तृ० ३
सों। ५. प्र० १, २, द्वि० १, ५, तृ० १ दरअ सँवारी, द्वि० ७ है अस बानी
(हिंदी मूल), द्वि० २ बदन औतारी। ६ तृ० ३ (यथा. ३) पदुमावति कर
किए बखानू, नागमती दिसि मन महँ आनू। तृ० २ चंद्र बदनि मलयागिर
रानी, कनक सुगध दुआ दस बानी। ७ तृ० ३ रूप सत। ८. द्वि० ६
पखि। ९. द्वि० १ एक।

जौं लहि जिऔं रात दिन सुमिरौं मरौं[10] तो ओहि लै नाउँ[11]।
मुख राता तन हरि‍ः र कीन्हे[12] ओहँ जगत[13] लै[14] जाउँ ॥

[६४]

हीरामनि जौं कँवल बखाना। सुनि राजा होइ[1] भँवर[2] भुलाना।
आगें आउ पंखि उजिआरे। कहहि सो दीप पतंग कै मारे[3]।
रहा[4] जो कनक सुबासिक ठाऊँ। कस न होइ हीरामनि नाऊँ।
को राजा[5] कस दीप[6] उतंगू। जेहि रे सुनत मन भएउ पतंगू।
सुनि सो समुँद[7] चखु भे किलकिला। कँवलहि चहौं भँवर होइ मिला।
कहु सुगंध धनि कसि निरमरी। भा[8] अलि संग कि अबहीं[9] करी।
औ कहु तहँ जो पदुमिनि लोनी। घर घर सब के होइ जसि[10] होनी।

सबै बखान तहाँ कर[11] कहत सो मोसौं आउ।
चहौं[12] दीप वह देखा सुनत उठा तस[13] चाउ ॥

[६५]

का राजा हौं बरनौं तासू। सिंघल दीप आहि कबिलासू।

---

१०. प्र० १, २, द्वि० २, ३, ५, ६, तृ० १, २, च० १ जौं लहि जिऔं राति दिन। ११. प्र० १, २ द्वि० २, ३, ५, च० १ मँवर मरौ लै नाउँ, प्र० २ भरौं सो लै लै नाउँ, द्वि० १, तृ० १ सँवरौं ओहि कै नाउँ, द्वि० ४, ६, तृ० २ सँवरि मरौं ओहि नाउँ। १२. प्र० १, २, च० १, द्वि० १, २, ७, तृ० १, ३ मुख राता तन हरिअर। १३. प्र० १, २ दुहुँ जग जस, द्वि० ३ दुहुँ जग रूपै, द्वि० १ एहि जग जसु, पं० १ दुहूँ जगत। १४. तृ० १ कै जाउँ, तृ० २, पं० १ लै नाउँ।

[६४] १. प्र० १, २ भै। २. प्र० २ भरम। ३. द्वि० १ पतंग पखारे, द्वि० २ पंखि के बारे, द्वि० ७, तृ० ३, पं० १ पतिंग कै मारे, द्वि० ४ सिंघल के बारे, तृ० १ पतिंग के मारें, द्वि० ३ पतंग बारे, च० १ पतंग के नारे। ४. द्वि० १, तृ० ३ अहा। ५. द्वि० २ अस। ६. प्र० १, २ दस। ७. तृ० १ सरद। ८. द्वि० ३, ४, तृ० १ दहुँ। ९. प्र० १, द्वि० १ अजहूँ, द्वि० ६ अबहूँ। १०. प्र० १ होहिं जो होनी, प्र० २ होइ जग होनी, द्वि० १ होइ सलोनी, तृ० १ होहिं जिम होनी, द्वि० २, ३, ४, च० १, पं० १ होहिं जहँ लोनी। ११. तृ० ३ भाउ सत, द्वि० ७ तहाँ जस। १२. तृ० ३ औ रे, द्वि० ७ जनहुँ। १३. प्र० २ चित, द्वि० ७ मोहि।

जो गा तहाँ भुलानेउ सोई। गे जुग बीत[1] न बहुरा[2] कोई।
घर घर पदुमिनि छतिसौ जाती। सदा बसंत देवस औ राती।
जेहि जेहि बरन फूल फुलवारी। तेहि तेहि बरन सुगंध सो नारी।
गंध्रपसेनि तहाँ बड़ राजा[3]। अछरिन्ह माहँ इंद्र बिधि[3] साजा।
सो पदुमावति ताकरि बारी। औ सब दीप माहिं उजिआरी।
चहूँ खंड के बर जो[5] ओनाहीं[6]। गरबन्ह राजा बोलै नाहीं[7]।

उअत सूर जस देखिअ[8] चाँद छपै तेहि[9] धूप।
औसै रुधै जाहिं छपि[10] पदुमावति के रूप॥

[६६]

सुनि रबि नाउँ रतन भा राता। पंडित फेरि इहै[1] कहु बाता।
तुइँ सुरंग मूरति वह कही। चित महँ लागि चित्र होइ रही[2]।
जनु होइ सुरुज आइ[3] मन बसी[4]। सब घट पूरि हिऐं परगसी[4]।
अब हौं सुरुज[5] चाँद वह छाया[6]। जल बिनु मीन रकत बिनु काया।
किरिनि करा भा[7] पेम अँकूरू। जौं ससि सरग मिलौं[8] होइ सूरू।
सहसहुँ करौं रूप मन भूला। जहँ जहँ दिस्टि कवल जनु[9] फूला।

---

[६५] १. द्वि० २ प्रीति। २. प्र० १, २ पलटा, द्वि० २ बहु रेउ, तृ० ३ बहुरो।
३. द्वि० १ तहा नृप छाजा द्वि० ३,६ तहाँ कर राजा। ४. प्र० २ इंद्र बड़, द्वि० ६, प० १ इंद्र अस, द्वि० ५ इंद्रासन। ५. प्र० १, २ बरै, तृ० ३ बरेस, तृ० १ वर। ६. प्र० १ ओनाहीं, उतर न पावहिं फिरि फिरि जाहीं। द्वि० १ औ लाहीं, गरबन्ह तिन्हहिं बोलावत नाहीं। द्वि० ७ उन्ह आवहिं, फिरि फिरि जाहिं उतर नहिं पावहिं। प्र० २ ओनाहीं, राजा गरब सौं बोलै नाहीं। द्वि० २ ओनाहीं, राजा करनहि कि बोलै नाहीं। ८. प्र० १ जिमि देखनइ। ९. द्वि० ४ जोहि। १०. प्र० १, २ छपैं सब रानी।

[६६] १. प्र० १, २, द्वि० ६, तृ० २ फेरि वहइ, द्वि० ७ बहुरि उहै। २. प्र० २ भै राता। ३. प्र० १ सूर आइ, द्वि० ४ सुरुज अही। ४. द्वि० ७ हिए परगासा, मन बासा। ५. प्र० १, २ सूर। ६. द्वि० २, ३ छया, कया। ७. प्र० १ परते कआ भा, प्र० २ प्रीति कराभा, द्वि० ३, गिरत किरिनि भा। ८. द्वि० ४, ५, ६ चढ़ौ। ९. प्र० १, द्वि० २ मनु, प्र० २, द्वि० ७, तृ० ३ तहँ, द्वि० १ भै।

तहाँ भँवर जेउँ[१०] कँवला गंधी। भै ससि राहु केरि रिनि बंधी[११]।
तीनि लोक चौदह खंड[१२] सबै परै[१३] मोहि सूझि।
पेम छाँड़ि किछु और न लोना जौं देखौं[१४] मन बूझि॥

[६७]

पेम सुनत मन भूलु न[१] राजा। कठिन पेम सिर देइ तौ[२] छाजा।
पेम फाँद जो परा न छूटा[३]। जीउ दीन्ह बहु फाँद[४] न टूटा।
गिरगिट छंद धरै दुख[५] तेता। खिन खिन रात[६]पीत[७]खिन सेता।
जानि पुछारि जो भै[८] बनबासी। रोवँ रोवँ परे[९] फाँद नगवासी।
पाँखन्ह[१०] फिरि फिरि परा सो फाँदू। उड़ि न सकै अरुझी भा बाँदू।
मुयों मुयों[११]अहनिसि[१२] चिललाई। ओहि रोस नागन्ह[१३]धरि[१४]खाई।
पाँडुक सुआ कंठ ओहि चीन्हा। जेहि गियँ परा चाह जिउ दीन्हा।
तीतिर गियँ जो फाँद है नितहि पुकारै दोख।
सकति हँकारि फाँद गियँ मेलै[१५] कब मारै होइ मोख[१६]॥

[६८]

राजै[१] लीन्ह ऊभ भरि[१] साँसा। ऐस बोल जनि बोलु निरासा।

---

१०. प्र० २ जिमि, द्वि० ३, ५, तृ० १ अहँ। ११. प्र० १ केरि सन बंधी, द्वि० १ केर ओन बंधी, तृ० १ निरिनि रबिबंधी। १२. प्र० १, २ भुवन। १३. प्र० १, २, द्वि० ?, तृ० ३ परा। १४. द्वि० ६, ७ देखा, द्वि० ३, तृ० २ देखिअ, च० १ देखेउँ।

[९७] १. द्वि० २ भूला। २. प्र० १ दिन्ह, द्वि० ? देइ न, तृ० ३ देइ जो, द्वि० ५ देइ तेहि, तृ० १ देइ नवाँहि च० १ देइ त। ३. द्वि० १ परा सो लूटा, द्वि० ३ परै न छूटा। ४. द्वि० ? औ दीन्ह। द्वि० ३ दिन। ६. प्र० १, २, द्वि० ५ होर। ७. तृ० ३ पेत (उर्दू मूल)। ८. प्र० १ जानि पिचोर भई, प्र० २ जानि पिचोर भआ, तृ० ३ पुनि पुछार जौ भई, तृ० २ जानि बूझि जो भइ। ९. प्र० १, २ रोवँहि रोवँ। १०. प्र० १ पंखिन्ह। ११. द्वि० ३ करन्हि। १२. द्वि० ६ निसि दिन। १३. तृ० १ ता यहँ। १४. प्र० १, २ धै, द्वि० २, च० १ कहँ। १५ प्र० १ फाँद गियँ, च० १ फाँद गियँ मेला। १६. द्वि० १ मुएँ भलेहि होइ मोख, द्वि० ७ होइ मोर कब मोख, द्वि० ३, ५ कत मारै होइ मोख, तृ० १ कब मारै बिन ओ ख, द्वि० ६ कत मारै बिन मोख।

[९८] १. प्र० १, २. द्वि० ४, ५, ३ कै, द्वि० २, तृ० २ मन, च० १ मरि।

भलेहिं पेम है कठिन दुहेला। दुइ जग तरा पेम जेइँ खेला।
दुख भीतर जो[2] पेम मधु राखा। गंजन मरन[3] सहै[4] सो चाखा।
जेइँ[5] नहिं सीस पेम पँथ लावा। सो प्रिथिमी महँ काहे कों आवा।
अब मैं पेम पंथ सिर मेला। पाँव न ठेलु राखु कै चेला।
पेम बार सो कहै जो[7] देखा। जेइँ न देख का जान बिसेखा[8]।[9]
तब[10] लगि दुख प्रीतम नहिं भेंटा। जब भेंटा जरमन्ह[11] दुख मेटा।

जसि अनूप तुइँ देखी[12] नख सिख बरनि सिंगार।
है मोहि आस मिलन कै जौं मेरवै[13] करतार॥

[९९]

का सिंगार ओहि[1] बरनौं राजा। ओहि क सिंगार ओहि पै[2] छाजा।
प्रथम हि सीस कस्तुरी केसा। बलि[3] बासुकि को औरु नरेसा।
भँवर[4] केस वह मालति[5] रानी। बिसहर लुरहिं लेहिं अरघानी।
बेनी छोरि झारु जौं बारा। सरग पतार होइ अँधियारा।
कौंवल कुटिल केस[6] नग कारे। लहरन्हि भरे भुअंग बिसारे[7]।
बेधे जानु मलैगिरि बासा। सीस चढ़े लोटहिं चहुँ पासा।
घुँघुरवारि[8] अलकैं बिख भरीं। सिंकरीं पेम[9] चहहिं[10] गियँ परीं।

---

२. प्र० १ के गढ़ि, प्र० २ ही भीतर, द्वि० ४ भीतर सो। ३. द्वि० ३, च० १ गंजन बरन, तृ० १ कंचन मरम। ४. द्वि० २ बहै, द्वि० ४, ७ चढ़ै। ५. प्र० २ जौ। ६. प्र० १, द्वि० २, ७, द्वि० ३ पेम फाँद सिर, द्वि० ४, ६, तृ० ३, च० १ पेम पाइँ सिर, द्वि० ५ पाइ पेम पँथ। ७. प्र० १ जो कहै सो, प्र० २ जो गहै सो, द्वि० १ जेइँ जाव। ८. प्र० २ सरेषा ९. द्वि० १ तब जानै सो होइ सरेषा। १०. तृ० ३ तौ (हिंदी मूल)। ११. प्र० १ मिलतहि को न जनम, प्र० २ मिलै तौ गवन जनम, द्वि० २, ३, ६, तृ० २ मिला तो गएउ जरम, द्वि० ५, तृ० ३, पं० १ मिला तो गा जरम क, द्वि० ४ जो सौं भेंटि जरम, च० १ मिला तेहि गएउ जनम। १२. द्वि० ४, ५, च० १ बरनी, द्वि० ७ बरनै। १३. द्वि० ५ पुरवै।

[९९] १. प्र० १, २ मैं, द्वि० ६ हौं। २. प्र० १ सब। ३. तृ० १ बन। ४. प्र० २ दुसर। ५. द्वि० १ मलैगिरि। ६. प्र० १ कुटिल केस बिसहर, प्र० २, द्वि० ३ कौंनिल कुटिल केस, च० १ नवल कुटिल केस। ७. द्वि० २, ४ पसारे। ८. प्र० १, २, द्वि० २, ६, ७, च० १ घुँघुरारी। ९. द्वि० १ साँकरि जैस, तृ० ३ सकरे फाँद, द्वि० ७ सकरी प्रेम, च० २ सगरे पेम। १०. द्वि० १ पेम, द्वि० ७ आवै।

अस फँदवारे केस वै राजा परा सीस गियँ फांद।
अस्टौ कुरी नाग ओरगाने[11] भै केसन्हि के[12] बाँद ॥

[१००]

बरनौं माँग सीस उपराहीं। सेंदुर अबहिं[1] चढ़ा तेहि[2] नाहीं।
बिनु सेंदुर अस जानहुँ[3] दिया। उजिअर पंथ[4] रैनि महँ[5] किया।
कंचन रेख कसौटी कसी। जनु घन महँ दामिनि परगसी।
सुरुज किरिनि[5]जस गगन बिसेखी। जमुना माँझ[6] सरसुती[7] देखी।
खाँडै धार[8] रुहिर जनु भरा। करवत लै बेनी पर धरा।
तेहि पर पूरि धरे जौं मोती। जमुना माँझ गाँग[9] कै सोती।
करवत तपा लेहिं होइ चूरू। मकु सो रुहिर[10] लै देइ[11] सेंदूरू।

कनक दुआदस बानि होइ[12] चह[13] सोहाग वह माँग।
सेवा करहिं नखत औ[14] तरई[15] उऔ गगन निसि[17] गाँग[18]॥

[१०१]

कहौं लिलाट दुइजि कै जोती। दुइजिहि जोति कहाँ जग ओती।
सहस कराँ[1] जो[2] सुरुज दिपाई[3]। देखि लिलाट सोउ छपि जाई[3]।

---

११. प्र० १ नाग वै, द्वि० १ नाग सब, तृ० ३ नाग सब ओरँगे, द्वि० ४, ६ नाग मत्र अरके, द्वि० ५ नाग सत्र हरि कै, च० १ नाग सब वारगे, द्वि० ७, पं० १ नाग ओरगावन, तृ० २ नाग भरषानी। १२. द्वि० ४ तेहि केसिन्ह, द्वि० ?, ५ भए केस के।

[१००] १. द्वि० २, तृ० ३ अजहुँ। २. द्वि० ५ जेहि, द्वि० ७ वोहि। ३. द्वि० ३ गगन महँ, च० १ गगन निसि। ४. प्र० १, २ पंथ उजिआर। ५. प्र० १, २ सूर किरिनि, द्वि० १ सूर चाँद। ६. प्र० १, २ महँ जनु, तृ० १ माँझ जस। ७. प्र० १, २, तृ० ३ सुरसरी। ८. प्र० १, २, तृ० १ टेख, द्वि० १ देसु। ९. प्र० २, तृ० ३ गगन। १०. द्वि० ६ सोरह। ११. प्र० १, २, धारइ। १२. द्वि० १ माँगतेहि। १३. प्र० १, २ चढ़, द्वि० ४ चढ़ै। १४. द्वि० ५ ससि। १५. तृ० ३ तारे। १६. प्र० १, द्वि० ४, ७, तृ० १ चढ़े। १७. द्वि० ४, ६ सिर, तृ० १, ५ मस, द्वि० ३ जस। १८. प्र० २ संग, तृ० ३ भाँग, द्वि० ५ साँग।

[१०१] १. प्र० १ सहसौ कला। २. तृ० १ सो, च० १ ओर। ३. प्र० २, तृ० ३ दिपाही, जाही।

का सरवरि[४] तेहि[५] देउं मयकू। चाँद कलंकी वह निकलंकू।
औ[६] चाँदहि पुनि राहु गरासा। वह बिनु[७] राहु सदा परगासा।
तेहि लिलाट पर तिलक बईठा। दुइजि पाट[८] जानहुँ ध्रुव डीठा।
कनक पाट जनु बैठेउ[९] राजा। सबै सिंगार[१०] अत्र[११] लै साजा।
ओहि आगें थिर रहै न कोऊ। दहुँ काकह अस जुरा सँजोऊ।

खरग धनुक औ चक्र बान दुइ[१२] जग मारन तिन्ह नाउँ[१४]।
सुनि कै[१५] परा मुरुछि कै[१६] राजा मो कहँ भए एक ठाउँ[१७]॥

[१०२]

भौंहैं स्याम धनुकु जनु नाना। जासौं हेर[१] मार[२] बिख बाना।
उहै[३] धनुक उन्ह भौंहन्ह चढ़ा। केइ[४] हतियार काल अस गढ़ा।
उहै धनुक किरसुन पहँ अहा। उहै धनुक राघौ[५] कर गहा[६]।
उहै धनुक रावन संघारा। उहै धनुक कंसासुर मारा।
उहै धनुक बेधा हुत राहू। मारा ओहीं सहसर बाहू।
उहै धनुक मैं ओपहं चीन्हा। धानुक[७] आपु बेझ[८] जग कीन्हा।
उन्ह भौंहन्हि सरि केउ न जीता। आछरिं छपीं छपीं गोपीता।

---

४. द्वि० १ सरै, तृ० १ सुर नर। ५. प्र० १, २ में। ६. प्र० २ जौ। ७. तृ० ३ पर। ८. द्वि० ४, ५, ६, ३ पास। ९. प्र० २ बैठे, तृ० ३ बैठा, द्वि० ७ बैसेउ। १०. द्वि० ७ बदन लिलाट। ११. द्वि० २, तृ० १ उतर। १२. प्र० १. द्वि० २, ४, ५, ३, च० १ चक्र बान, द्वि० १ चक्र जस। १४. प्र० १, २, तृ० १ जग मारन तेहि नाउँ, द्वि० २ दुहुँ जग मारक नाउँ, तृ० ३ जग मारै कहँ आउ, द्वि० ५ दुइ जग मारन नाउँ, द्वि० ७ जग मारक तिन्ह नाउँ, द्वि० ३ जग मारन तिन नाउँ, च० १ औ जग मारन नाउँ। १५. प्र० १, २ सुनतहिं। १६. द्वि० ३ गा। १७. प्र० १ भा एक ठाउँ, प्र० २ भएउ बेपाउ द्वि० १ गए कुठाँव।

[१०२] १. १ जात न हेरि। २. तृ० ३ लाग। ३. द्वि० ७, तृ० ३ हनै, द्वि० ४, च० २ स्याम। ४. तृ० ३ क्यों। ५. च० १ रामचंद्र। ६. तृ० ३ में यह पंक्ति छूटी हुई है। ७. प्र० १, २, च० १ धनुक। ८. द्वि० २ पच्छ' द्वि० ३ गेंद, च० १ बान।

भौंह धनुक धनि धानुक[९] दोसर सरि न कराइ[१०]।
गगन धनुक जो[११] ऊगवै[१२] लाजन्ह सो छपि जाइ[१३] ॥

[१०३]

नैन बाँक[१] सरि पूज न कोऊ। मान समुँद अस उलथहिं दोऊ।
राते कवल करहिं अलि[२] भवाँ[३]। घूमहिं माँति चहहिं उपसवाँ[३]।
उठहिं[४] तुरंग लेहिं नहिं बागा[५]। चाहहिं उलथि[६] गगन कहँ लागा।
पवन झकोरहिं[७] देहिं[८] हलोरा। सरग लाइ[९] भुइं लाइ बहोरा।
जग डोलै डोलत नैनाहाँ। उलटि अडार चाह पल माहाँ।
जबहिं फिराव[१०] गगन गहि बोरा[११]। अस वै भवर चक्र[१२] के जोरा।
समुद हिंडोर[१३] करहिं जनु[१४] भूले। खंजन लुरहिं[१५] मिरिग जनु[१६] भूले।

सुभर[१७] समुँद अस नैन दुइ[१८] मानिक भरे तरंग।
आवत तीर जाहिं फिरि[१९] काल[२०] भवर[२१] तेन्ह[२२] संग ॥

[१०४]

बरुनी का बरनौं इमि[१] बनी। साँधे बान जानु दुइ अनी[२]।

---

९. द्वि० ४ औ धनुका, द्वि० ७, च० १ नस ओवहैं। १०. तृ० ३ करहिं। ११. प्र० २ सो। १२. द्वि० १ उनहै, तृ० ३ उगवहिं। १३. तृ० ३ सो छपि जाहिं, तृ० १ सोउ छिलाइ।

[१०३] १. द्वि० १, २ बान। २. प्र० २ रवि। ३. प्र० १, २, तृ० ३ भावाँ, अपभावों। ४. प्र० २, द्वि० ७ देहि। ५. प्र० २ लागा। ६. द्वि० १ चाहहिं उठाइ, द्वि० २, ५ जानहुँ उनटि, तृ० १, २ चाहहिं उनटि। ७. द्वि० ७ तर गनि। ८. द्वि० ७, च० १ उठहिं। ९. प्र० २ जाइ। १०. प्र० २ एकहि फिराव, द्वि० ४, ५ जोहि (हिंदी मूल) फिराइ, द्वि० ३, तृ० २ जो (हिंदी मूल) फिर आव, च० १ नइहि फिराइ। ११. तृ० १ कहँ पूरा। १२. द्वि० ५ भवहि भँवर। १३. प्र० १, द्वि० ५ हिलोर। १४. प्र० १, २ तस। १५. च० १ कंचन लरहिं, प्र० ७, तृ० ३ खंजन लरहिं। १६. तृ० ३ नन। १७. द्वि० ५ भरे। १८. तृ० ३ यह नना। १९. प्र० १, २ मनहुँ फिरावहिं, द्वि० ४, ६ तृ० ३ तीर फिरावहिं, द्वि० ३ तीर फिरावइ। २०. तृ० ३ कँवल। २१. तृ० १ भँवहि। २२. प्र० १, २ तेहि।

[१०४] १. तृ० १ अब का बरनौं। २. तृ० ३ जानहुँ दुइ भैना।

जुरी राम रावन कै सैना। बीच[3] समुंद भए दुइ[4] नैना।
वारहिं पार बनावरि साँधी। जासौं हेर[5] लाग[6] बिख बाँधी।
उन्ह बानन्ह अस को को न मारा। बेधि रहा सगरौं संसारा।
गँगन नखत जस[7] जाहिं न गने। हैं[8] सब बान ओहि के हने।
धरती बान बेधि[9] सब[10] राखी। साखा ठाढ़ि देहिं[11] सब साखी।
रोवँ रोवँ मानुस तन ठाढ़े। सोतहि सोत बेधि तन[12] काढ़े।

बरुनि बान[13] सब[14] ओपहँ[15] बेधे रन[16] बन[17] ढंख।
सउजन्ह[18] तन सब[19] रोवाँ पंखिन्ह तन सब[20] पंख॥

[१०५]

नासिक खरग देउँ[1] केहि जोगू। खरग खीन ओहि बदन सँजोगू।
नासिक देखि लजानेउ सुआ। सूक आइ बेसरि[2] होइ[3] उआ।
सुआ सो पिअर[4] हिरामनि[5] लाजा[6]। औरु[7] भाउ का बरनौं राजा।
सुआ सो नाँक कठोर पँवारी। वह कोंवलि तिल पुहुप सँवारी।
पुहुप सुगंध करहिं सब[8] आसा। मकु हिरगाइ[9] लेइ हम बासा।
अधर दसन पर नासिक सोभा[10]। दारिवँ देखि सुआ मन लोभा[10]।
खंजन दुहुँ दिसि केलि कराहीं। दहुँ वह रस को पाव को[11] नाहीं।

---

३. द्वि० १ आँतर। ४. द्वि० २, ७, पं० १ ओइ। ५. प्र० १, २ द्वि० ७ जा कहँ छूट, द्वि० १ ऊहि तन ताक। ६. द्वि० ६, ३ च० १ मार। ७. प्र० १ सब। ८. प्र० १, २ द्वि०६ हैं ते, द्वि० १ तस वै, द्वि० ३,४ तृ० २, च० १ वै। ९. तृ० ३ बेधि जनु। १०. द्वि० २ भुइं। ११. तृ० ३ ढारब देरि। १२. प्र० १ सब, द्वि० ४, पं० १ अस, तृ० २ कै। १३. द्वि० ६ पास। १४. प्र० १, २, द्वि० ६, च० १ अस, द्वि० ३, ४ जस, पं० १ जनु। १५. द्वि० १ औं भै। १६. द्वि० २ बेधि रहै। १७. द्वि० २ रन। १८. प्र० १, २ साउज, द्वि० ३ भउजन्ह। १९. द्वि० २ जब। २०. द्वि० २ जब तब, द्वि० ७ सवन्ह रोवँ।

[१०५] १. द्वि० २ देवान। २. प्र० १ बेसर सरकि सुक्क। ३. प्र० २ पर। ४. द्वि० ३ सँवरि। ५. प्र० १ हीरामनि भा। ६. प्र० २ साजा। ७. प्र० २, द्वि० २, ६ तृ० १, २ ओहिका। ८. द्वि० १ मन। ९. प्र० १, द्वि० २,३, ४, ५, ७, तृ० १, पं० १ हिरकाइ, प्र० २, तृ० ३ हिरिकाइ। १०. प्र० २ सोहा, मोहा। ११. तृ० ३ कोउ पावति।

देखि अमिअ रस अधरन्हि[12] भएउ[13] नासिका फीर।
पवन बास पहुँचावै[14] अस रम[15] छाँड़ न तीर[16]॥

[१०६]

अधर सुरंग अमिअ रस भरे। बिंब[1] सुरंग लाजि बन फरे[2]।
फूल[3] दुपहरी मानहुँ राता। फूल[4] झरहिं[5] जब जब[5] कह बाता।
हीरा गहै[6] सो[7] बिद्रुम धारा[8]। बिहँसत जगत होइ उजिआरा।
भए मँजीठ पानन्ह रँग लागें। कुसुम रंग थिर रहा न आगें।
अस कै अधर अमिअ भरि[9] राखे। अबहिं[10] अछूत न काहूँ चाखे।
मुख तँबोल रँग[11] धारहिं[12] रसा[12]। केहि मुख जोग सो अंब्रित बसा।
राता जगत देखि रँग राते[13]। रुहिर भरे आछहिं बिहँसाते।

अमिअ अधर अस राजा[14] सब जग आस करेइ।
केहि कहँ कँवल बिगासा[15] को[15] मधुकर[16] रस लेइ॥

[१०७]

दसन चौक[1] बैठे जनु हीरा। औ बिच बिच[2] रँग स्याम गँभीरा।

---

१२. द्वि० ७ अधर रस अमिअन्ह। १३. प्र० १, २ लोभेउ। १४. प्र० १ बास रंचक पहुँचावै, प्र० २ पहुँचावै ताकहँ। १५. प्र० २, तृ० ३ आसम। १६. द्वि० ७ मीर।

[१०६] १. तृ० ३ निपट। २. द्वि० २ मुईं परे। ३. द्वि० ७ पुहुप। ४. तृ० ३ परै, तृ० १ परहिं। ५. तृ० ३ ज्यों ज्यों, द्वि० ७ जौ जौ (हिंदी मूल), द्वि० १, २, ३, ५, ६, तृ० १, च० १ जो जो (हिंदी मूल)। ६. प्र० १, २, द्वि० ४, ५, तृ० १, च० १ दसन, द्वि० १ लहि, द्वि० ७ लहै, तृ० ३ धरैं, द्वि० ७ लहै. तृ० २ किएँ। ७. द्वि० २, च० १ जो। ८. प्र० २, तृ० ३ दारा। ९. तृ० ३, पं० १ रस। १०. प्र० १, द्वि० ३, तृ० २ अजहुँ, द्वि० ७ अहहिं। ११. तृ० ३ रस। १२. प्र० २, तृ० ३ दारहिं, द्वि० ७ धारिन्ह, द्वि० ३ अधरन्हि। १३. प्र० २ जग। १४. प्र० १ रानी। १५. तृ० ३ बिगासै। १६. प्र० १ अंब्रित।

[१०७] १. द्वि० १, ३ जोग। २. द्वि० २ ऊँच नीच।

जनु भादौं निसि[३] दामिनि[४] दीसी[५]। चमकि उठी तसि[६] भीनि[७] बतीसी[५]।
वह जो जोति हीरा उपराहीं। हीरा दीपहिं[८] सो तेहि परिछाहीं।
जेहि दिन दसन जोति निरमई। बहुतन्ह जोति जोति ओहि भई।
रवि ससि नखत दीन्हि[८] ओहि जोती। रतन पदारथ मानिक मोती।
जहँ जहँ बिहसि सुभावहिं हँसी। तहँ तहँ छिटकि जोति परगसी।
दामिनि[१०] दमकि न सरवरि पूजा। पुनि[११] वह जोति और को दूजा।

बिहँसत हँसत दसन[१२] तस[१३] चमके पाहन उठे भरक्कि[१४]।
दारिवँ सरि जो न कै सका[१५] फाटेउ हिया दरक्कि[१६]॥

[१०८]

रसना कहौं[१] जो कह रस बाता। अंब्रित बचन सुनत मन राता।
हरै सो सुर[२] चात्रिक कोकिला[३]। बीन बंसि[४] वह बैनु न मिला।
चात्रिक कोकिल रहहिं जो नाहीं[५]। सुनि वह बैन[६] लाजि छपि जाहीं।
भरे[७] पेम मधु बोलै बोला[८]। सुनै सो माति घुमि कै[९] डोला।
चतुर बेद मति सब ओहि पाहाँ। रिग जजु साम अथर्बन माहाँ।
एक एक बोल अरथ चौगुना। इंद्र मोह बरम्हा सिर धुना।
अमर[९] भारथ पिंगल औ गीता। अरथ जूझ[१०] पंडित नहिं जीता[११]।

---

३. द्वि० ३ घन। ४. तृ० १ आवै। ५. द्वि० १ न दीसा, बतीसा। ६. प्र० १, २ जनु। ७. द्वि० १ भई, द्वि० २ मुई, द्वि० ४ पं० १ तहाँ, द्वि० ६ तृ० १ बनी। ८. द्वि० ३ दीन्ह, तृ० ३ जोति। ९. प्र० २ सब। १०. द्वि० ७ न कीन्हा। ११. प्र० २, द्वि० ५, तृ० १ बिन। १२. प्र० २ बिहँसत दसन। १३. प्र० १ जो, प्र० २ सो, तृ० १ वै। १४. द्वि० ७ भरक्कि (हिंदी मूल ?)। १५. द्वि० ७ न कीन्हा। १६. प्र०. १, २ द्वि० २, ६, ७, ३, च० १, पं० १ तरक्कि, च० १ छलक्कि।

[१०८] १. द्वि० ७ सुनहु। २. प्र० १, द्वि० ७ सुरस, प्र० २ सुसर, तृ० ३ सो सरि, द्वि० ६ ससि सरत, तृ० १ होइ तस। ३. प्र० २ मोरा। ४. प्र० २ बैन बंस(उर्दू मूल), द्वि० ३ बिनु बसंत। ५. तृ० ३ सरि न कराहिं। ६. तृ० ३ बोल। ७. द्वि० ६ तेहि रे। ८. द्वि० १ मै मधुरे बोला, तृ० ३ रस भरे अमोला, तृ० १ मद भरे अमोला। ९. प्र० २ तन। १०. प्र० १, तृ० ३, च० १ जो जो, द्वि० ३ जो वह। ११. प्र० २ हो जीता।

भायसती[12] ब्याकरन सरसुती[13] पिंगल[14] पाठ[15] पुरान।
बेद[16] भेद सैं बात[17] कहु तस जनु लागहिं बान[18]॥

[१०६]

पुनि बरनौं का सुरँग कपोला। एक नारँग के दुऔ[1] अमोला।
पुहुप पंक रस[3] अंब्रित साँधे। केइँ ये[4] सुरँग खिरौरा बाँधे।
तेहि कपोल बाएँ तिल परा। जेइँ[5] तिल देख सो तिल तिल जरा।
जनु घुँघुची वह तिल करमुहाँ[6]। बिरह बान साँधा[7] सामुहाँ[8]।
अगिनि बान तिल जानहुँ[8] सूझा। एक कटाख लाख दुइ[9] जूझा।
सो तिल काल मेटि नहिं गएऊ। अब वह[10] गाल[11] काल जग[12] भएऊ।
देखत नैन परी परिछाहीं[13]। तेहतें[14] रात स्याम उपराहीं।

सो तिल देखि कपोल पर गँगन रहा[15] धुव गाड़ि।
खिनहि उठै खिन बूड़ै[16] डोलै नहिं[17] तिल छाँड़ि[18]॥

---

१२. च० १ भागवंत। १३. प्र० २ जन, द्वि० ३ सर, द्वि० ६ सरेसे, द्वि० ५ सुबल, द्वि० १ बिमौटी, द्वि० ७ सरमै, तृ० २ सुने, तृ० ३ सत। १४. द्वि० १ औ सुठि पिंगल पाठ, तृ० ३ सन सी पढ़ै, प्र० २ औ बहु पाठ। १६. द्वि० ३ भेद। १७. प्र० २ सौ बार। १८. प्र० १ जनु लागन सर जान, प्र० २ तस जनु लागु रस बान, द्वि० ५ जनु लागहि हिय बान, द्वि० ४, तृ० २ सुनि जनु लागहिं बान, द्वि० ७ जनु लागै सर बान, तृ० १ जनु रासहिं सुनि बान, द्वि० ३ तस सुनि लागहिं बान, च० १ जनु लागहिं बिस बान।

[१०६] १. प्र० २ सुरँग। २. द्वि० १ कपोला। ३. तृ० ३ पंक अस, द्वि० ४, ६ सुरँग रस। ४. प्र० २ पै, तृ० ३ क्यों। ५. तृ० ३ जोर। ६. प्र० २ करमुखी, जानहुँ ससिमुखा। ७. प्र० १, २ जानहु, द्वि० १ मारेसि। ८. च० १ जाइ न। ९. द्वि० २, तृ० ३ दस। १०. द्वि० ३ तिल। ११. द्वि० १ गरी, द्वि० २, ३, ४, ५, तृ० १, ३, च० १ काल। १२. द्वि० २ जगत कहँ। १३. च० १ जेहिं छाही, तृ० १ मुरझाहीं। १४. प्र० १, २, द्वि० २, ५, ७, तृ० ३, च० १ तन। १५. प्र० १, २, द्वि० २, तृ० १, पं० १ गएउ। १६. प्र० २ खन बूड़ै भूला। १७. द्वि० १ छाँड़ न सो। १८. प्र० १ नहिं तिल जाइ छौ छाँड़ि, तृ० १ डोलै नहिं पग छाँड़ि।

[११०]

स्रवन सीप दुइ दीप[1] सँवारे। कुंडल[2] कनक रचे उजिआरे।
मनि कुंडल चमकहिं[3] अति लोने। जनु कौंधा लौकहिं[4] दुहुँ कोने।
दुहुँ दिसि चाँद सुरुज[5] चमकाहीं। नखतन्ह भरे निरखि नहिं जाहीं।
तेहि पर खूँट दीप दुइ बारे[6]। दुइ ध्रुव दुऔ खूँट बैसारे[6]।
पहिरे खुंभी सिंघल दीपी। जानहुँ भरी कचपची सीपी।
खिन खिन जबहिं चीर सिर गहा। काँपत बीज दुहूँ दिसि रहा।
डरपहिं देव लोक सिंघला। परै न बीज टूटि[9] एहि[10] कला।

करहिं नखत सब सेवा स्रवन दिपहिं अस[11] दोउ।
चाँद सुरुज[5] अस गहने[12] और जगत का कोउ॥

[१११]

बरनौं गीवँ कूँज[1] कै रीसी[2]। कंज नार जनु लागेउ[3] सीसी।
कुँदें[4] फेरि जानु गिउ काढ़ी[5]। हरी पुछारि ठगी[6] जनु ठाढ़ी[5]।
जनु हिय काढ़ि परेवा ठाढ़ा। तेहि तें अधिक भाउ गिउ[7] बाढ़ा[8]।
चाक चढ़ाइ साँच जनु कीन्हा। बाग[9] तुरंग जानु गहि लीन्हा।

---

[११०] १. तृ० ३ सीप। २. तृ० २ कुंदन। ३. तृ० २ झमकहिं। ४. तृ० ३ की भार कीन्ह। ५. प्र० १ सूर। ६. प्र० २ बरै, लै धरै, तृ० ३, ३ बारे, बैसी पैआरे, तृ० १ मनिआरे, बैठारे, द्वि० २, ३ तारे, बैठारे। ७. प्र० २ खोंटिला, द्वि० ५, तृ० १ खूँटी। ८. द्वि०-५ वहजरी, तृ० १, द्वि० ३ गजमोती। ९. च० १ जग जनि छाडि जाहु। १०. द्वि० ५ तेहि, तृ० १ कोंड़ि। ११. प्र० १ सीप अस, द्वि० १ दिपहिं बड, तृ० ३ दिपहिं नग। १२. प्र० १, द्वि० २, ५, तृ० १ कहने, प्र० २, तृ० ३ गोदने, द्वि० ४, च० २ बाँहिये, द्वि० ७ गहें भय।

[१११] १. द्वि० ३ कूँच। २. तृ० २ दीसी। ३. प्र० १, २, द्वि० १, ४, ५, तृ० १, च० १ कंचन तार लाग जनु, तृ० ३ कनक तार जनु लागेउ, द्वि० ३ कंज नार मकु लागेउ, पं० १ कंज तार जनु लागेउ। ४. द्वि० ३ कुँदेरे। ५. प्र० २ काढ़ा, ठाढ़ा। ६. प्र० १ हारि पुछारि हरी, प्र० २ मनहुँ पुछारि मींर। ७. प्र० २ जिअ। ८. द्वि० १ ठाढ़ा। ९. प्र० १, द्वि० २, ४, तृ० २, पं० १ बाँक, प्र० २ बाग, तृ० ३ कंक।

गिउ[10] मँजूर तँवचुर जो हारा[11]। वहँ[12] पुकारहिं साँझ सँकारा।
पुनि तिहि[13] ठाउँ परी तिरि[14] रेखा। घूँटत[15] पीक लीक[16] सब देखा[17]।
धनि सो[18] गीव दीन्हेउ बिधि[19] भाऊ[20]। दहुँ, कासौं लै करै मेराऊ।

कंठ सिरी मुकुताहल माला[21] सोहै अभरन गीवँ।
को होइ[22] हार कंठ ओहि लागै केइँ[23] तपु साधा जीवँ॥

[११२]

कनक दंड दुइ भुजा[1] कलाई। जानहुँ फेरि कुँदेरैं भाई[2]।
कदलि खाँभ[3] की जानहुँ जोरी। औ राती ओहि[4] कँवल हथोरी।
जानहुँ रकत हथोरीं बूड़ीं। रवि परभात तात वह जूड़ीं।
हिया काढ़ि जनु लीन्हेसि हाथाँ। रकत[5] भरीं अँगुरी तेहिं साथाँ।
औ पहिरें नग जरी अँगूठी। जग बिनु जीव जीव[6] ओहि मूठी।
बाँहू कंगन टाड़ सलोनी। डोलति बाँह भाउ गति[7] लोनी[8]।
जानहुँ गति[9] बेड़िनि देखराई[10]। बाँह डोलाइ जीउ लै जाई।

---

१०. द्वि० ७ अमीअ। ११. प्र० २ कहा। १२. प्र० १ अजहुँ। १३. तृ० ३ तिय। १४. प्र० १ निय, प्र० २ तृ० ३ तिनि। १५. प्र० २ छुटा जो, द्वि० २, ४, ३ घूँट जो। १६. द्वि० १ पीक। १७. प्र० १ घूँः न पीक लीक अनु देखा, च० १ नैन ठाउँ होइ जो देखा (तुलना० ४८१-५)। १८. द्वि० ४ ओही, द्वि० २, धन्य, द्वि० २ वहै, तृ० १ दई। १९. प्र० १ दीन्ह बड़ा, द्वि० २ जीव दीन्हेउ, तृ० ३ दीन्हेउ विष, तृ० १ दीन्हेउ बड, च० १ बिधि दीन्ह सो। २०. द्वि० ३ काकहँ दई सरै कै चाऊ। २१. प्र० १ मुकुताहल, प्र० २, द्वि० ५, ७ मुकतावलि माला। २२. तृ० ३ कोइ। २३. च० १ जेइँ।

[११२] १. प्र० १ भुज बनी, द्वि० ४ वै भुजा। २. प्र० १, २, द्वि० १, तृ० १, ३ लाई। ३. तृ० ३ गाभ। ४. प्र० २ और ते अधिक, तृ० ३ औ राती अथ। ५. तृ० ३, पं० १ रुहिर। ६. प्र० २ जीवन। ७. प्र० १, द्वि० ७ अति। ८. प्र० २, द्वि० १ होनी, द्वि० ६ लोनी। ९. द्वि० ६, तृ० २ गुन। १०. प्र० १ जिन जिउ देइ तिन्हहिं लै जाई, प्र० २ जानहुँ गति रंभा देखलाई, द्वि० २ जानहु गनि पीरन देखराई, तृ० ३ बाहुँ गति बैरी दै लाई, तृ० २ जानहुँ गति पहिरै देखराई, द्वि० ३ जानहु गति पतुरिनि देखराई।

भुज[11] उपमा पँवनारि न पूजी खीन भई तेहि चिंत।
ठाँवहिं ठाँव बेह[13] भे[14] हिरदें ऊभि[15] साँस लेइ निंत॥

[११३]

हिया थार कुच कंचन लाडू[1]। कनक कचोर[2] उठे करि चाडू।
कुंदन बेल साजि[3] जनु कूँदे। अंब्रित भरे रतन[4] दुइ[5] मूँदे।
बेधे भँवर कंट केतुकी। चाहहिं बेध कीन्ह कँचुकी।
जोबन बान[6] लेहिं नहिं बागा। चाहहिं हुलसि[8] हिएँ हठ[9] लागा।
अगिनि बान दुइ[11] जानहु साँधे। जग बेधहिं जौं होहिं न बाँधे।
उतग जँभीर होइ रखवारी। छुइ को[12] सकै राजा कै बारी।
दारिवँ दाख फरे अनचाखे[13]। अस नारंग दहुँ का कहँ राखे।

राजा बहुत मुए[14] तपि लाइ लाइ भुइँ माथ।
काहूँ छुऐ न[15] पारे[16] गए मरोरत हाथ॥

[११४]

पेट पत्र चंदन जनु लावा। कुंकुह केसरि बरन सोहावा[1]।

---

११. द्वि० ४ पाहुँन। १२. द्वि० २ उत्तिम। १३. प्र० १, २, द्वि० ३, ४,५,६, तृ० १, पं० १ बेध, तृ० ३ बेम्ह। १४. द्वि० ६ रे। १५. तृ० ३ भै हिए ऊभि, प्र० १ भै हिरदै।

[११३] १. प्र० २ लाईं, कर चाईं, द्वि० २, च० १ लाडू, होइ चाडू, तृ० ३ लाही, जनु चाही। २. प्र० २ कटोर। ३. प्र० १ कनक गले, प्र० २ बेल जानु, द्वि० १ बेल साँच। ४. प्र० १, २, द्वि० ४, ३ रतन मैन। ५. प्र० १, २, तृ० ३ दै, द्वि० २ वै। ६. प्र० १ बास, द्वि० ४ बाग, द्वि० १ जानहु, द्वि० ३ पानि। ७. प्र० १ रस, द्वि० ४ तेहि। ८. प्र० १ सोईं, तृ० ३ भुलसि। ९. प्र० १ हिएँ महिं, द्वि० ४ हिएँ कँठ, द्वि० ६ हिए पुनि, तृ० २ हिए तें, द्वि० ३ हुलसि हिय। १०. प्र० २ में यह पंक्ति छूट गई है। ११. प्र० २ जनु। १२. प्र० १ न। १३. प्र० १, २ नहिं चाखे, द्वि० ५ अब चाखा, द्वि० ७ बिन चाखे। १४. प्र० २ भूले। १५. तृ० १ छोरि। १६. प्र० १ पावा, प्र० २ पाएउ, द्वि० १, २, च० १ पाए, तृ० ३ परेउ।

[११४] १. प्र० २ चंदन लावा।

खीर अहार न कर[2] सुकुवाँरा[3]। पान फूल के रहै[4] अधारा[3]।
स्याम भुअंगिनि रोमावली[5]। नाभी निकसि[6] कँवल कहँ चली।
आइ दुहूँ नारग बिच भई। देखि मँजूर ठमकि रहि गई।
जनहुँ चढ़ी[7] भवरन्हि[8] कै पाँती। चंदन खाँभ[9] बास कै[10] माँती।
कै[11] कालिंद्री बिरह सताई। चलि पयाग अरइल बिच आई।
नाभी कुंडर[12] बानारसी। सौंह को होइ मीचु तहँ बसी।

सिर करवत तन करसी लै लै बहुत[13] सीझे तेहि आस।
बहुत धूम घूँटत मैं देखे[14] उतरु न देइ[15] निरास॥

[११५]

बैरिनि[1] पीठि लीन्ह[2] ओइँ पाछैं। जनु फिरि-चली अपछरा काछैं।
मलयागिरि कै पीठि सँवारी। बेनी नाग चढ़ा जनु कारी।
लहरैं देत[3] पीठि जनु[4] चढ़ा। चीर ओढ़ावा कंचुकि[5] मढ़ा।
दहुँ का कहँ असि बेनी कीन्ही। चंदन बास भुअंगन्ह दीन्ही।
किस्न कै करा चढ़ा[6] ओहि माथे। तब सो छूट अब छूट न नाथे।
कारी कँवल गहे मुख[7] देखा। ससि पाछैं जस राहु बिसेखा[8]।

---

२. द्वि० २ सुरँग, द्वि० ४ करै। ३. प्र० २ तृ० ३ सुकुमारी, अधारी। ४. प्र० ? औ पवन। ५. तृ० ३ बनी रोमावली। ६. तृ० ३ बेधि। ७. द्वि० ७ चली। ८. तृ० ३ नागन्ह। १०. द्वि० ३ गौ। ११. द्वि० ३ गै। १२. प्र० १ कुंड जो भई, प्र० २ कुंडल जानहु, द्वि० २ कुंडस, द्वि० ७ कुंड जस, तृ० ३ कुंडर बीच। १३. प्र० १, २ करसी लै, द्वि० १ करसी लक, द्वि० ४, ५ करसी लैं लै, च० १ कल्पहिं बहुत। १४. प्र० १, २, द्वि० २, ३, च० १ घँटत मुए। १५. प्र० १ बहुतक मुए, द्वि० २ देखे नहीं।

[११५] १. द्वि० ४, ५ चोगी, द्वि० ३ पानर, च० १ बेनी। २. प्र० १ दीन्ह। ३. तृ० ३ लेत। ४ तृ० ३ जानहु पीठि। ५. प्र० १ ओढ़ाइ जनु केंचुल, प्र० २, च० १ ओढ़ावा कंचुरी, द्वि० ३, ४, ५, ६, तृ० १, पं० १ ओढ़ावा केंचुल। ६. प्र० १, २ कारी बिरन चढ़े, द्वि० २ त्रिगुन चढ़ा नाथि, द्वि० ४, ५, तृ० ३, प १ बिरन करा चढ़ा, द्वि० ३ त्रिगुन करा चढ़ी, च० १ बिरन फेर साज, द्वि० ७ नेम सो कारी। ७. द्वि० २ मँ। ८. प्र० ? (यथा. ७) जग न भैस बेनी दहुँ देखा, जो पावै सो नवल सरेखा।

को देखै पावै वह नागू। सो देखै माथें मनि[9] भागू।

पन्नग पंकज मुख गहे[10] खंजन तहाँ बईठ।
छात[11] सिंघासन राज धन[12] ता कहँ होइ जो[13] डीठ॥

[११६]

लंक पुहुमि[1] अस आहि न काहूँ। केहरि कहौं न ओहि[2] सरि ताहूँ।
बसा[3] लंक बरनै जग झीनी[4]। तेहि तें अधिक लंक वह खीनी।
परिहँस पिअर भए तेहिं बसा[5]। लीन्हे लंक[6] लोगन्ह[7] कहँ डँसा।
जानहुँ नलिनि[8] खंड दुइ भई। दुहूँ बिच लंक[9] तार रहि गई।
हिय सौं मोरि चलै वह तागा[10]। पैग देत कत सहि सक[11] लागा[12]।
छुद्र घंटि मोहहिं नर[13] राजा। इंद्र अखार आइ जनु साजा[14]।
मानहुँ बीन गहे कामिनी। गावहिं[15] सबै राग रागिनी।

सिंघ न[16] जीता लंक सरि[17] हारि लीन्ह बन बासु।
तेहिं रिसि रकत पिअै मनई[18] कर खाइ मारि कै माँसु॥

---

९. द्वि० १, २, ६, जेहि। १०. द्वि० २, पं० १ फुनग जो पंकज मुख गहे, द्वि० ६ अस बंक जो तरहिं, च० १ पंकज कँवल मुख गहे। ११. प्र० १ औरं। १२. प्र० १ यक सगुन। १३. प्र० १ ताकहँ मिलइ जो, द्वि० ३ सो पावै जिन्ह।

[११६] १. द्वि० २ उपहम, द्वि० ५, ३ कहौं, तृ० १ उपम। २. द्वि १ न तेहि, तृ० ३ न होइ। ३. प्र० २ नीसा। ४. द्वि० ७ हीनी। ५. प्र० १ पिअर भए तेहि रिसा, तृ० ३ पिअर भएँ बन बसा, द्वि० ३ एहीं पिअर भए बसा। ६. द्वि० १ लीन्हें डंक, पं० १ वहीं लंक। ७. तृ० २ नागन्ह, द्वि० ४, ५, च० १ मानुस। ८. द्वि० २, ३ मैन। ९. च० १ कनक। १०. प्र० १ कै तागा, प्र० २ एक धावत, तृ० ३ जनु तागा, द्वि० ३, तृ० १ वह बागा। ११. द्वि० २ सहसरत। १२. प्र० १ धागा। १३. प्र० १ घंटिका मोहैं, प्र० २ घंटिका मइहि सुनि। १४. द्वि० ५ बाजा। १५. प्र० १, द्वि० २, ४, ५, तृ० १, पं० १ लागहिं, च० १ बाजहिं, तृ० २ अलापहि। १६. तृ० ३ सिंघिनि। १७. द्वि० ३ मरि हारा। १८. प्र० १, २, द्वि० ३, ४, ५, तृ० २ मानस।

खीर अहार न कर[2] सुकुवाँरा[3]। पान फूल के रहै[4] अधारा[3]।
स्याम भुअंगिनि रोमावली[5]। नाभी निकसि[6] कँवल कहँ चली।
आइ दुहूँ नारग बिच भई। देखि मँजूर ठमकि रहि गई।
जनहुँ चढ़ी[7] भँवरन्हि[8] के पाँती। चंदन खाँभ[9] बास कै[10] माँती।
कै[11] कालिंद्री बिरह सताई। चलि पयाग अरइल बिच आई।
नाभी कुंडर[12] बानारसी। सौंह को होइ मीचु तहँ बसी।

सिर करवत तन करसी लै लै बहुत[13] सीझे तेहि आस।
बहुत धूम घूँटत मैं देखे[14] उतरु न देइ[15] निरास॥

[११५]

बैरिनि[1] पीठि लीन्ह[2] ओइ पाछें। जनु फिरि चली अपछरा काछें।
मलयागिरि कै पीठि सँवारी। बेनी नाग चढ़ा जनु कारी।
लहरैं देत[3] पीठि जनु[4] चढ़ा। चीर ओढ़ावा कंचुकि[5] मढ़ा।
दहुँ का कहँ असि बेनी कीन्ही। चंदन बास भुअंगन्ह दीन्ही।
किस्न कै करा चढ़ा[6] ओहि माथें। तब सो छूट अब छूट न नाथें।
कारी कँवल गहे मुख[7] देखा। ससि पाछें जस राहु बिसेखा[8]।

---

२. द्वि० २ सुरँग, द्वि० ४ करै। ३. प्र० २ तृ० ३ सुकुमारी, अधारी। ४. प्र० २ औ पवन। ५. तृ० ३ बनी रोमावली। ६. तृ० २ बेधि। ७. द्वि० ७ चली। ८. तृ० ३ नागन्ह। १०. द्वि० ३ गो। ११. द्वि० ३ गै। १२. प्र० १ कुंड जो भई, प्र० २ कुंडल जानहु, द्वि० २ कुंडस, द्वि० ७ कुंड जस, तृ० ३ कुंडर बीच। १३. प्र० १, २ करसी लै, द्वि० १ करसी लंक, द्वि० ४, ५ करसी लै लै, च० १ कलपहिं बहुत। १४. प्र० १, २, द्वि० २, ३, च० १ घँटत मुए। १५. प्र० १ बहुतक मुए, द्वि० २ देखे नहीं।

[११५] १. द्वि० ४, ५ चोटी, द्वि० ३ पातर, च० १ बेनी। २. प्र० १ दीन्ह। ३. तृ० ३ लेत। ४. तृ० ३ जानहु पीठि। ५. प्र० १ ओढ़ाइ जनु केंचुल, प्र० २, च० १ ओढ़ावा कंचुरि, द्वि० ३, ४, ५, ६, तृ० १, पं० १ ओढ़ावा केंचुल। ६. प्र० १, २ कारी किरन चढ़े, द्वि० २ किसुन चढ़ा नाथि, द्वि० ४, ५, तृ० ३, पं० १ किरन करा चढ़ा, द्वि० ३ किरसुन करा चढ़ी, च० १ किशन केर साज, द्वि० ७ केस सो कारी। ७. द्वि० २ मैं। ८. प्र० २ (यथा, ७) जग न अैस बेनी दहुँ देखा, जो पावै सो नवल सरेखा।

को देखै पावै वह नागू। सो देखै माथें मनि[9] भागू।

पन्नग पंकज मुख गहे[10] खंजन तहाँ बईठ।
छात[11] सिंघासन राज धन[12] ता कहँ होइ जो[13] डीठ॥

[११६]

लंक पुहुमि[1] अस आहि न काहूँ। केहरि कहौं न ओहि[2] सरि ताहूँ।
बसा[3] लंक बरनै जग झीनी[4]। तेहि तें अधिक लंक वह खीनी।
परिहँस पिअर भए तेहिं बसा[5]। लीन्हे लंक[6] लोगन्ह[7] कहँ डँसा।
जानहुँ नलिनि[8] खंड दुइ भई। दुहुँ बिच लंक[9] तार रहि गई।
हिय सौं मोरि चलै वह तागा[10]। पैग देत कत सहि सक[11] लागा[12]।
छुद्र घंटि मोहहिं नर[13] राजा। इंद्र अखार आइ जनु साजा[14]।
मानहुँ बीन गहे कामिनी। रागहिं[15] सबै राग रागिनी।

सिंघ न[16] जीता लंक सरि[17] हारि लीन्ह बन बासु।
तेहिं रिसि रकत पिअै मनई[18] कर खाइ मारि कै माँसु॥

---

९. द्वि० १, २, ६, ओहि। १०. द्वि० २, पं० १ फुनग जो पंकज मुख गहे, द्वि० ६ अस बंक जो तरहिं, च० १ पंकज कँवल मुख गहे। ११. प्र० २ औरि। १२. प्र० १ वह सगुन। १३. प्र० १ ताकहँ मिलइ जो, द्वि० ३ सो पावै जिन्ह।

[११६] १. द्वि० २ उपहम, द्वि० ५, ३ कहीं, तृ० १ उपम। २. द्वि १ न तेहि, तृ० ३ न होइ। ३. प्र० २ मीसा। ४. द्वि० ७ हीनी। ५. प्र० १ पिअर भए तेहि रिसा, तृ० ३ पिअर भएँ बन बसा, द्वि० ३ एही पिअर भए दसा। ६. द्वि० १ लीन्हें टंक, पं० १ वहीं लंक। ७. तृ० ३ नागन्ह, द्वि० ४, ५, च० १ मानुस। ८. द्वि० २, ३ मैन। ९. च० १ कनक। १०. प्र० १ कै तागा, प्र० २ एक धागा, तृ० ३ जनु तागा, द्वि० ३, तृ० १ वह धागा। ११. द्वि० २ सहसइत। १२. प्र० १ भागा। १३. प्र० १ घंटिका मोहैं, प्र० २ घंटिका सहहिं मुनि। १४. द्वि० ५ बाजा। १५. प्र० १, द्वि० २, ४, ५, तृ० १, पं० १ लागहिं, च० १ बाजहिं, तृ० २ अलापहिं। १६. तृ० ३ सिंघिनि। १७. द्वि० ३ भरि हारा। १८. प्र० १, २, द्वि० ३, ४, ५, तृ० २ मानुस।

[११७]

नाभी कुंडर[1] मलै समीरू। समुँद भँवर जस भँवै गँभीरू[2]।
बहुतै भँवर[3] बौंडरा भए। पहुँचि न सके सरग कहँ गए[4]।
चंदन माँझ कुरंगिनि खोजू। दहुँ को पाव को राजा भोजू[5]।
को ओहि लागि हिवंचल[6] सीझा। का कहँ लिखी ऐस को[7] रीझा।
तीवइ[8] कँवल सुगंध सरीरू[9]। समुँद लहरि सोहै[10] तन चीरू।
झूलहिं[11] रतन पाट के झोंपा। साजि मदन दहुँ[12] कापहँ कोपा[13]।[14]
अबहिं सो आहि कँवल कै करी। न जनौं कवन भँवर[15] कहँ धरी।

बेधि रहा जग बासना परिमल मेद सुगंध।
तेहि अरघानि भँवर सब लुबुधे तजहिं न नीवी[16] बँध॥

[११८]

बरनौं नितँब[1] लंक[2] कै सोभा। औ गज गवन देखि सब[3] लोभा।

---

[११७] १. प्र० २ कुंद, पं० १ कुंड पर, द्वि० ५, तृ० २ कुंड सो, द्वि० २ कुंद जो। २. प्र० २ लहरि जो वह नीरू। ३. द्वि० २ लोह, द्वि० ६ घूर। ४. प्र० २ कँवल कली जस विगसत राए। ५. प्र० २ जैसे फिरै भँवर केहि भोगू। ६. द्वि० १ होइ रस। ७. तृ० ३ लिखी भीम की, द्वि० ४ ऐस रची को। ८. प्र० १ नवल, प्र० २, द्वि० २ नीवी, द्वि० ४ कोवल, द्वि० ५ सोहै, च० १ सोहै, तृ० १ तन वह। ९. द्वि० ६ कँवल सुगंध सुहाइ सरीरू। १०. प्र० २ सोहही। ११. द्वि० ४ सोलहि। १२. द्वि० ६ अम। १३. प्र० १ रोपा। १४. तृ० ३ मदन भँडार रोमावलि गई, जनु दरपन कै मूँठि सो भई। १५. प्र० २ कँवल नम। १६. प्र० १ लुबुधे तजहिं न तेहि सनमंध, प्र० २ बार बुध तरुनी बंध, द्वि० १ लुबुधे तजहिं न सोई बंध, द्वि० २, ३, ६, तृ० २ लुबुधे तजहिं न नीवी बंध। द्वि० ४ लुबुधे तजहिं न ताकर रंध, द्वि० ५ लुबुधे तजहिं न देई बंध, द्वि० ७ तपही नीमी बंध, तृ० १ लुबुधे तजहिं न पीवी बंध, तृ० ३ लुबुधे तजहिं न (तेहिं) सँग बंध, च० १ लुबुधे तजहिं न अपने बंध, पं० १ तजहिं न तिन वै बंध।

[११८] १. प्र० १ कहौं जाँघि, प्र० २, द्वि० ४, ६, तृ० १, च० १ बरनौं तेसि, द्वि० २. तृ० २ बरनौं जपक। २. द्वि० २, तृ० २ लंक तर, द्वि० ६, च० १ जंघ कै, तृ० १, ३ कनक कै। ३. द्वि० २ मन, तृ० ३ जग।

जुरे[४] जंघ सोभा अति पाए। केरा खाँभ[५] फेरि जनु लाए।
कँवल चरन अति रात[६] बिसेखे। रहहिं पाट पर पुहुमि न देखे।
देवता हाथ[७] हाथ पगु लेहीं[८]। पगु पर जहाँ[९] सीस तहँ देहीं।
माँथें भाग को दहुँ अस पावा। कँवल चरन लै सीस चढ़ावा।
चूरा[१०] चाँद सुरुज उजिआरा पायल[११]बीच[१२]करहिं झनकारा[१३]।
अनवट बिछिआ नखत तराईं। पहुँचि सकै को पावन्हि ताईं।

बरनि सिंगार न जानेउ नखसिख जैस अभोग[१४]।
तस जग किछौ[१५] न पावौं उपमा देउँ ओहि जोग[१६] ॥*

[११६]

सुनतहि राजा गा मुरछाई[१]। जानहुँ लहरि सुरुज[२] कै आई।
पेम घाव दुख जान न कोई। जेहि लागै जानै पै सोई।
परा सो पेम समुंद अपारा। लहरहि लहर होइ[३] बिसँभारा।
बिरह भँवर होइ[४] भाँवरि देई। खिन खिन जीव हिलोरहि[५] लेई।
खिनहि निसास[६] बूड़ि जिउ जाई। खिनहि[७] उठै निसँसै[८] बौराई[९]।

---

४. द्वि० ४ जोरि, द्वि० ७ जोरी। ५. प्र० १ केदलि खांभ, द्वि० २ तृ० ३, च० १ केरा गाभ। ६. द्वि० २ रकत। ७. द्वि० २ लोकि। ८. प्र० २ देखहिं। ९. प्र० १, २, द्वि० ४, ३, च० १ जहँ पगु धरै पं० १ जहँ पगु परै। १० द्वि० १ जुरे, द्वि० २ जूरा, द्वि० ३ जरा। ११ प्र० २ पायन्ह। १२. प्र० १, द्वि० ७ बीछु। १३. प्र० १, द्वि० ४ चमकारा, द्वि० ६ जमकारा। १४. प्र० १, द्वि० ७ सिंगार। १५. प्र० १ तस जगत नहिं, प्र० २ तस जगत न पावै किछु, द्वि० २ तस किछु जगत न पावौं- द्वि० ३ तस किछु उपमन पाएउँ। १६. प्र० १, द्वि० ७ जो नारि।

*प्र० १, २, द्वि० ७ में इसके अनन्तर एक अतिरिक्त छंद है। (देखिये परिशिष्ट)

[११९] १. द्वि० ४, ५, तृ० २, च० १, पं० १ मुरझाई। २. प्र० १ सुरा, द्वि० १ बिरह। ३. द्वि० २ लहर लहर होइ गा, तृ० ३ लहरहिं लहर लेइ। ४. प्र० २ दै, द्वि० २ आ। ५. द्वि० ४ बरनइ। ६. तृ० ३ साँस। ७. द्वि० २ छीन। ८. प्र० १, २, द्वि० २, तृ० २, ३, निसरइ, द्वि० १ जैसें। ९. प्र० २ यह बिरहा जो जानै जिआ, सो तजि गए रहसि कै पिआ।

खिनहिं पीत खिन होइ मुख सेता । खिनहिं चेत खिन होइ अचेता[10] ।
कठिन मरन तें पेम बेवस्था[11] । ना जिउ[12] जियन न दसईं अवस्था[13] ।

जनु लेनिहारन्ह[14] लीन्ह जिउ[15] हरहिं तरासहिं[16] ताहि[17] ।
एतना बोल न आव[18] मुख करहिं तराहि तराहि ॥

[१२०]

जहँ लगि कुटुँब लोग औ नेगी । राजा राय आए सब बेगी ।
जाँवत गुनी गारुरी[2] आए । ओझा बैद सयान बोलाए ।
चरचहिं चेष्टा[4] परिखहिं[5] नारी । निअर नाहिं ओपद तेहिं[6] बारी ।
है राजहिं लखन[7] कै करा । सकति बान[8] मोहा है परा[9] ।
नहिं सो राम[10] हनिवँत बड़ि[11] दूरी । को लै आव सजीवनि मूरी ।
बिनौ करहिं जेते[12] गढ़पती । का जिउ कीन्ह कवनि मति[13] मती ।
कहहु सो पीर काह बिनु[14] खाँगा । समुँद सुमेरु आव तुम्ह माँगा[15] ।

---

[10]. प्र० २ चलहु सुआ हम तहाँ जाईं, जहाँ देखों पदुमिनी माईं । [11]. प्र० १, २, द्वि० ६, तृ० ३ अवस्था । [12]. तृ० ३ जानहु जोवन, द्वि० २, ३ ना जेहि जीव, च० १ जेईं जीवन है । [13]. प्र० १, २ मरन बरस्था, द्वि० २, तृ० १ दसईं अवस्था, द्वि० ४, ५ जाइ अवस्था, तृ० ३ सकै बेवस्था, द्वि० ६ होइ अवस्था । [14]. प्र० १, २, तृ० ३ लवहारें, द्वि० २ नरहारन्ह, द्वि० ६ कबहारन्ह, तृ० १ नदहारन्ह, द्वि० ३ बनहार । [15]. द्वि० ६, तृ० २, पं० १ लीन्हा । [16]. द्वि० १ परासहि । [17]. प्र० १ हरि हरि हरासहिं ताहिं, प्र० २ हरि हरि श्रीयहि चाहि, द्वि० २ हरि हरि जनौ तरासें ताहि, तृ० १ हरि हरि आस न ताहि । [18]. द्वि० २ आव, द्वि० ३ जो आव ।

[१२०] [1]. प्र० ३ नेग । [2]. प्र० १ गरुरिया, प्र० ४ गारुरि सद, पं० १ गारुरू । [3]. प्र० ४ औ नहँ । [4]. प्र० २ देखहिं चेष्टा, द्वि० १ चरचहिं चिन्ता, द्वि० २ चरचि चेष्टा, तृ० १ चरचहि चिंता । [5]. द्वि० २, ४, पं० १ निरखहिं । [6]. प्र० १ सो ओपद, प्र० २ ओपद आ । [7]. प्र० १, २ लखन, द्वि० ५ लछिमन । [8]. द्वि० ३ सन कै बान । [9]. तृ० ३ मोहे अपछरा । [10]. द्वि० २ नहिं रामा, द्वि० ४ तहँ सो राम, द्वि० ६ सो रामा । [11]. पं० १ बल । [12]. प्र० १, २, द्वि० १, २, ६, तृ० ३ जेतहु । [13]. प्र० २ मन, तृ० ३ गनि । [14]. द्वि० ४, ५ पुनि । [15]. प्र० २ मंगा ।

धावन तहाँ पठावहु[16] देहिं लाख दस रोक।
है सो बेलि[17] जेहि बारी आनहिं[18] सबै बरोक[19] ॥

[१२१]

जौं भा चेत उठा बैरागा। बाउर जनहुँ सोइ अस जागा।
आवन जगत[2] बालक जस रोवा। उठा रोइ हा ग्यान सो[3] खोवा।
हौं तो अहा अमरपुर जहाँ। इहाँ मरनपुर[4] आएउँ कहाँ।
केइँ उपकार[5] मरन[6] कर कीन्हा। सकति जगाइ जीउ हरि[7] लीन्हा।
सोवत अहा जहाँ सुख साखा। कस न तहाँ सोवत बिधि[8] राखा।
अब जिउ तहाँ इहाँ तन[9] सूना। कब लगि रहै[10] परान बिहूना।
जौं[11] जिउ घटहिं[12] काल के हाथाँ। घटन[13] नीक[14] पै जीउ निसाथाँ[15]॥[16]

अहुठ हाथ तन सरवर[17] हिया कँवल तेहि माँह।
नैनन्हि जानहु निअरें कर पहुँचत अवगाह[18] ॥[19]

---

१६. द्वि० २ नोर्वाँह। १७. प्र० २ बेली, द्वि० २ तन। १८. प्र० १, द्वि० १ आनिअ, तृ० ३ आनहु, पं० १ आन्हु। १९. प्र० १ रहै (हिंदी मूल) बरोन, द्वि० ३ सब तेहि रोग।

[१२१] १. प्र० २ सोइ व एक, द्वि० ४, ५ सोवत उठि। २. प्र० १ जगत आइ, प्र० २ जगत अवनी, द्वि० ४ आवत जग, द्वि० ५ आइ जगत, तृ० ३ आवन जग। ३. द्वि० १ हियँ ज्ञान जस, द्वि० ६ वह ज्ञान सो, तृ० १, च० १ हिअ ज्ञान सो। ४. प्र० २ अमरपुर, तृ० ३ मरन पुनि। ५. प्र० २ अपकार, तृ० ३ उपचार। ६. प्र० २ मरम घर, द्वि० ५ मरनपुर। ७. तृ० ३ जाव जेइँ हरिकै, द्वि० ३, च० १, प० १ हँकारि जीउ हरि। ८. द्वि० ४ नहिं (?), च० १ बिन। ९. प्र० २ गाधर। १०. प्र० १ कैसे रहै, द्वि० ६ कब लगि रह तन। ११. प्र० १ जेहँ। १२. प्र० १ दीन्ह। १३ द्वि० २, ३ कठिन। १४. तृ० ६ नपइँ। १५. द्वि० २ लै जीवन साथ। १६ प्र० २ तुम अबहीं जेइँ घर पोइँ, कँवलन बैठहु पैठहु चोरैं। (१२३.२) १७. प्र० १ तन सरवर भा औ हत। १८. प्र० ४ कर्रा, पहुँचत नाहिं। १९. प्र० २ राज करहु तुम राजा मम तोहरे भंडार, रानी नागमती अस मो बेगर हु तुम सार।

[१२२]

सयन्हि कहा मन समझहु राजा। काल सतें कै जूझि[1] न छाजा[2]।
तासौं[3] जूझि जात जौं जीता[4]। जात न किरसुन तजि[5] गोपीता[6]।
औ नहिं नेहु काहु सौं कीजै। नाउँ मीठ खाएँ जिउ दीजै।
पहिलेहिं सुक्ख नेहु जब[7] जोरा। पुनि होइ[8] कठिन निबाहत ओरा।
अहुठ हाथ तन जैस सुमेरू[10]। पहुँचि न जाइ[11] परा तस फेरू।
गँगन दिस्टि सौं[12] जाइ पहुँचा। पेम अदिस्ट[13] गँगन सौं ऊँचा।
धुव[14] तें ऊँच पेम धुव उवा[15]। सिर दै पाउ देइ[16] सो छुवा।

तुम्ह राजा औ सुखिआ करहु राज सुख भोग।
एहि रे[17] पंथ सो पहुँचै सहै जो दुक्ख बियोग॥*

[१२३]

सुऐं कहा मन समुझहु[1] राजा। करत पिरीत[2] कठिन है काजा[3]।

---

[१२२] १. प्र० १ जूझ काल सों किएँ, द्वि० २ काल सनान कै जूझि, तृ० ३ काल से नि कै जूझि, द्वि० ५ काल सों बहु जूझि, द्वि० ४ कालहु ते कोउ जूझि, च० १ काल सनान कै जूझि। २. द्वि० ३ साजा। ३. तृ० ३ सानी। ४. प्र० १, द्वि० २, ५, च० १ जीता, गोपीता, द्वि० १ औसा, ससि बीता, तृ० ३ जीतना, गोपिना, द्वि० ४ जिना, गोपिना, द्वि० ३ ज्तिा, गोपिता। ५. प्र० १ तजि नहिं किरन जान, द्वि० २, ४, ५, ३, च० १ जान न किसन तजि, तृ० ३ जात न किस्न जान। ६. तृ० १ तासौं दुख कहै इमि बीरा, जेहि सुनि धरि लागइ पर पीरा। (तुलना० ३९१.१)। ७. द्वि० २ जन, द्वि० ६, च० १ जो (हिंदी मूल)। ८. द्वि० २ सुठि, द्वि० ३ सो। ९. द्वि० ५ रहन हाथ, द्वि० ३ औ न साथ। १०. द्वि० ५ सरीरू। ११. प्र० १ मिला न जाइ, द्वि० ५ पहुँचि न सकै। १२. तृ० ३ औं. पं० १ तें। १३. तृ० ३ दिस्टि। १४. तृ० ३ धुर्म्रा। १५. तृ० १ जो धुवा। १६. द्वि० ३ धरै। १७. द्वि० ६ तेहि रे।

*यह छंद प्र० २ में नहीं है, किंतु प्रसंग में आवश्यक लगता है। अगले छंद की प्रथम पंक्ति प्रायः इस छंद की प्रथम पंक्ति जैसी है, कदाचित् इसीलिए यह छंद उसमें छूटा है।

[१२३] १. प्र० १, तृ० १ मोसौं सुन, द्वि० ३ मन चेतहु। २. तृ० ३ प्रीति करब, द्वि० ४, ३ करब पिरीति। ३. प्र० २ .ौ चाहहु सिघन कै बारी, पहिरौ केवरा पटंबर उतारी।

तुम्ह अबहीं जेई घर पोई[4]। कँवल न बैठि बैठ हहु कोई[5]।[6]
जानहि भँवर जो तेहि पँथ लूटे। जीउ दीन्ह औ[7] दिएँ न छूटे।
कठिन आहि सिंघल कर राजू। पाइअ नाहिं राज[8] के[8] साजू।
ओहिं पँथ जाइ जो[9] होइ दासी। जोगी जती तपा[10] संन्यासी[11]।
भोग[12] जोरि पाइत वह[13] भोगू[13]। तजि सो भोग कोइ[15] करत न जोगू[14]।
तुम्ह राजा चाहहु सुख पावा। जोगहि भोगहि कत बनि आवा[16]।

साधन्ह सिद्धि न पाइअ जौ लहि साध न तप्प[17]।
सोई[18] जानहिं बापुरे जो सिर[19] करहिं कलप्प[17]॥

[१२४]

का भा जोग कहानी कथें। निकसै न घिउ बाजु[1] दधि[2] मथें।
जौं लहि आपु हेराइ न कोई। तौ लहि हेरत पाव न सोई[3]।

---

४. तृ० ३ जेहि घर होई। ५. प्र० १, पं० १ कँवल न बैठहु बैठहु कोई, द्वि० ५ कँवल न भेंटहु भेंटहु कोई, द्वि० ६ कँवल न वैठि बैठ है कोई, तृ० १ कँवल न बैठ बैठ जो कोई, द्वि० १ कँवल न बैठ नेह कि कोई, द्वि० २ कँवल न बैठि बैठ तहँ कोई, तृ० ३ कौन बैठ बैठे तहँ कोई, द्वि० ४ कँवल न भेंटहु भेंटहु हो कोई, तृ० २ कँवल न बैठि वैठि कै कोई, द्वि० ३ कँवल न बैठि बैठ नहिं कोई। ६. प्र० २ जौ चाहहु सिंघल कै राजू चलहु बेगि तुम करहु समाजू। ७. प्र० १ पै। ८. द्वि० ४. ५ जूझ। ९. तृ० ३ सो। १०. प्र० १ तपी। ११. द्वि० १ औ ओहि पंथ जाइ सो कोई, जोगी जती सन्यासी होई। १२. द्वि० ६, ३ जोग। १३. प्र० १, २ भैसे रूप न पाइअ वह, तृ० ३ भोग जोरि वह पाइत, द्वि० ३ भोग जोरि वह पावत, च० १ भोग फिरैं वह पावत। १४. तृ० ३ भोगी, होइ न जोगी। १५. प्र० १ तजि सो रूप कोइ, प्र० २ तजि सो भोग चाह। १६. तृ० ३ जोगहि भोगहि न्याव न आवा, द्वि० ४, ५ जोगहि भोग करत नहिं भावा। १७. प्र० १ कोइ, डालहि खोइ। १८. प्र० १, द्वि० ५ सो पै, द्वि० ३, च० १ ते पै। १९. प्र० १, २, द्वि० १, २, ३, ४, ६, तृ० १, २, पं० १ सीस जो।

[१२४] १. प्र० १, २, द्वि० ४, ५ निकसै घीउ न बिनु, द्वि० ६ निकसै घिउ न छाछ। २. द्वि० २, ३, ७ दूध। ३ द्वि० २ कोई।

पेम पहार कठिन विधि गढ़ा। सो पै चढ़ै[4] सीस सौं चढ़ा[5]।
पंथ सूरिन्ह[6] कर[7] उठा अंकूरू। चोर चढ़ै कि चढ़ै मंसूरू[8]।
तू राजा का पहिरसि कंथा। तोरें घटहि[9] माँह दस पंथा।
काम क्रोध तिस्ना मद[10] माया। पाँचौ चोर न छाड़हिं काया।
नव सेंधै[11] ओहि घर मँझिआरा[12]। घर मूसहिं निसि कै उजिआरा[13]।

अबहूँ[14] जागु अयाने होत आय निसु[15] भोर।
पुनि किछु हाथ न लागिहि मूसि जाहिं जव[16] चोर॥

[१२५]

सुनि सो बात राजा मन जागा। पलक न मार[1] पेम चित[2] लागा।
नैनन्ह[3] ढरहिं मोति औ मूँगा। जस गुर खाइ रहा होइ गूँगा।
हिएँ की जोति दीप वह सूझा। यह जो दीप अँधिअर भा बूझा[4]।
उलटि दिस्टि माया सौं रूठी। पलटि न फिरी आनि कै[5] मूठी।
जौ पै नाहीं अस्थिर दसा। जग उजार का कीजै बसा।

---

४. प्र० १ पाव, द्वि० ४, ५ जाइ। ५. तृ० २ जौलहि मथै न बाँह दै चितू। मूधी अँगुरी न निकस न घीऊ। ६. प्र० १ चौनिन्ह, द्वि० ६, ३, च० १ सूर। ७. प्र० २ केर, तृ० ३ की, द्वि० ४ कै, तृ० १ सों। ८. तृ० २ स्वाँस हेड़ मन मथनी गाढ़ी, हिए जोति तें फूटइ साढ़ी। (तुलना० १५२. ४) ९. प्र० १, २, तृ० ३ घटहि माँझ, द्वि० १, ६ घरहि माँह, द्वि० २ कंठ पाँच। १०. द्वि० २, तृ० ३ औ, द्वि० ४. ५, तृ० १, २, ३, च० १ पं० १ मन। ११. प्र० २ नवनिधि। १२. प्र० १, द्वि० २ निन्हकै, प्र० २ तहाँ विआ, तृ० ३ निन्हके, द्वि० ४, च० १, पं० १ उन्हकै, द्वि० ३ जेहि घर। १३. प्र० १, द्वि० २ डिठिआरा, उँजिआरा, प्र० २ दिठिआरी, ऊजिआरी, तृ० २, ३ मँधिआरा, अँधिआरा, द्वि० १ अधिआरा, उजिआरा। १४. प्र० २, द्वि० २ अजहूँ। १५. प्र० १, द्वि० ३, ४, ५, तृ० १, च० १, प्र० २, तृ० ३ निसि। १६. द्वि० १ मूसि जाहि ज्यौं, द्वि० २ औ (हिंदी मूल) मूसहि घर, तृ० १ मूसि जाहि घर।

[१२५] १. प्र० २ लागै। २. प्र० १, द्वि० ४, ५, ३ टकटका। ३. द्वि० १ सोनन्हि, द्वि० ३ नैनन्हि। ४. प्र० १, २ अँधिआरइ बूझा, द्वि० २ अँधियर होइ बूझा, तृ० ३ अधियर भा बुझा, द्वि ३, तृ० १ अँधियर कै बूझा। ५. प्र० २ पलटी आनि फिरी, द्वि० २, तृ० २ पलटि न फिरी।

गुरू बिरह चिनगी पै मेला। जो सुलगाइ लेइ सो चेला।
अब कै फनिग[7] भृंगि कै करा[8]। भँवर होउँ[9] जेहि कारन जरा।

फूल फूल फिरि पूछौं जौं पहुँचौं ओहि केत[10]।
तन नेवछावर कै मिलौं ज्यौं मधुकर[11] जिउ देत[10] ॥*

[१२६]

तजा राज राजा भा जोगी। औ किंगरी[1] कर गहें बियोगी।
तन बिसँभर मन[2] बाउर रटा[3]। अरुझा पेम परी सिर जटा।
चंद बदन औ चंदन[4] देहा। भसम चढ़ाइ कीन्ह तन खेहा।
मेखल सिंगी चक्र धँधारी[6]। जोगौटा रुद्राख[7] अधारी[6]।
कंथा पहिरि डंड कर गहा। सिद्ध होइ कहँ[8] गोरख कहा।
मुंद्रा स्रवन कंठ जपमाला[9]। कर[10] उदपान[11] काँध बघछाला[12]।
पाँवरि पाँव[13] लीन्ह[14] सिर छाता। खप्पर[15] लीन्ह भेस कै राता।

चला भुगुति माँगै कहँ साजि[16] कया तप जोग।
सिद्ध होउँ पदुमावति पाएँ[17] हिरदै जेहि क[18] बियोग ॥

---

७. द्वि० १ अब कै पतंग, द्वि० ६ अब हौं भएउँ। ८. प्र० १ अब मैं
भृंग फनिग कै करा, द्वि० २, ४ अबकै पतँग भृंग कै करा। ९. द्वि० १,
तृ० १ होइ। १०. प्र० २ केउ, देउ, द्वि० ३ केट, भेंट। ११. प्र० १
अनैन वनो, प्र० २ जीव गँवावौं, द्वि० १, ३ जीव कै रा ओहि, तृ० २
ज्यौं रे भँवर।

*इसके अनंतर द्वि० ४, ५ में एक अतिरिक्त छंद है। (देखिए परिशिष्ट)

[१२६] १. प्र० २ सींगी। २. द्वि० १ कहियहि, प्र० २ दिसँभारन। ३. प्र० १
द्वि० ३, ४, ५, तृ० ३. पं० १ लटा। ४. तृ० ३ चंद्रउ। ५. द्वि० ३
पुहुमि। ६. प्र०१ अधारी, धँधारी, प्र० २ अधारी, सँवारी, द्वि० ४
धँधारी, सँभारी। ७. द्वि० १ जोगौटा, रावराक, तृ० ३ औ गौटा रुद्राख
द्वि० ४, ५ लीन्ह हाथ तिरसूल, द्वि० ३, च० १ जोगतार रुद्राख।
८. प्र० १ होन कहँ। ९. प्र० २ बनमाला। १०. प्र० १ कटि, च० १
गर। ११. प्र० १, द्वि० २, तृ० १, ३ उदयान, द्वि० १, ४,५ ,च० १ वध्यान
प्र० २ उडिआनी। १२. प्र० बघंबर छाला, प्र० २ काँध मृगछाला,
द्वि० १ लीन्ह बघछाला, द्वि० ४, ५, काँध सिंघ छाला। १३. प्र० १
पहिरि। १४. द्वि० ३, ६, तृ० १ कीन्ह। १५. प्र० १, २ कापर।
१६. प्र० १, २, द्वि० १, ६, तृ० ३, च० १ साधि। १७. प्र० १, २ पदुमा-
वति, द्वि० १ पदुमावति पहँ। १८. तृ० २ काम।

[१२७]

गनक कहहिं करु[1] गवन[2] आजू। दिन लै चलहि[3] फरै सिधि[4] काजू।
पेम पंथ[5] दिन घरी न देखा। तब देखै जब होइ सरेखा।
जेहि तन पेम कहाँ तेहि[7] माँसू। कया न रकत न नयनन्हि[8] आँसू।
पँडित भुलान[9] न जानै चालू। जीउ लेत दिन पूँछ न कालू।
सती कि बौरी[11] पूँछै पाँडे। औ घर पैठि समेटै[12] भाँड़े।
मरि[13] जो चलै गाँग[14] गति लेई। तेहि दिन घरी कहाँ[15] को देई।
मैं घर बार कहाँ कर पावा। घर काया पुनि[16] अंत परावा।

हौं रे पँखेरू[17] पंखी[18] जेहि वन मोर निवाहु।
खेलि चला तेहि वन कहँ तुम्ह आपन[19] घर जाहु॥

[१२८]

चहुँ दिसि आन साँटिअन्ह फेरी[1]। भै कटकाई[2] राजा केरी।
जाँवत अहै सकल[3] ओरगाना। साँवर लेहु दूरि है जाना।
सिंघल दीप जाइ सब[4] चाहा[5]। मोल न पाउब जहाँ बेसाहा।

---

[१२७] १. तृ० २, ३ गनक कहहिं गनि, च० १ गुनी कहहिं गुनि। २. प्र० १, २ गवनहु। ३. प्र० २ गिरै। ४. द्वि० २ फरै सब, द्वि० ३, ४, ५, ६ तृ० ३, च० १, पं० १ होइ सिध, तृ० १ भरै सिधि। ५. प्र० २ साजू। ६. द्वि० ५ लुबुध। ७ तृ० १ मन हाँसु, च० १ तिन मासू। ८. प्र० २, द्वि० ४, च० १ नैन नहिं। ९. प्र० १, २ भूलि, द्वि० ४, ३ भूला, तृ० ३ भुलु। १०. प्र० २ न चालहिं, द्वि० १ जानु नहिं। ११. प्र० २ बैरा। १२. प्र० १ पैठि कै सैंतै, प्र० २ पैसि न सैतै, द्वि० १, ३, ४, ५, तृ० १ पैठि न सैतै। १३. द्वि० ३, ४, च० १ मरइ। १४. प्र० २ गगन। १५. प्र० २ काल घरी। १६. प्र० १ काया जिउ, प्र० २ का आपन, द्वि० १ काया तन, द्वि० ४ काया औ। १७. प्र० २ परेवू, द्वि० ४ पखेरी। १८. प्र० १ पंखि भा। १९. द्वि० ४, ५ च० १ अपने।

[१२८] १. प्र० १ साँटिआ फेरी, द्वि० १ सिनेही घेरी, तृ० ३ साँटियन्ह फेरी। २. प्र० १ भई कटक जो, द्वि० १ भई निवानी। ३. तृ० १ सिवल। ४. द्वि० १ नगर सब, तृ० ३ जाइ जा। ५. प्र० २ दूरि है जाना।

सब निबहिहिं[6] तहँ[7] आपनि साँठी[8]। साँठी बिना[10] रहब मुख माँटी[9]।
राजा चला साजि कै[11] जोगू। साजहु बेगि चलै सब लोगू।
गरब जो चढ़े तुरै की[12] पीठी। अब सो तजहु[13] सरग सौं डीठी।
मंत्रा लेहु होहु[14] सँग लागू। गुदरि[15] जाइ सब होइहि आगू।

का निचिंत रे मनुसे[16] आपनि[17] चिंता[18] आछु।
लेहि सजग होइ अगुमन[19] फिरि पछिताहि[20] न पाछु॥

[१२६]

बिनवै रतनसेनि कै माया। माँथें छत्र पाट निति पाया[1]।
बेरसहु नव लख[2] लच्छि[3] पिआरी। राज छाँड़ि जनि[4] होहु भिखारी।
निति चंदन लागै जेहि देहा। सो तन देखु[5] भरब अब[6] खेहा।
सब दिन[7] रहेउ करत तुम्ह भोगू। सो कैसे साधब तप जोगू।
कैसें धूप सहब बिनु छाहाँ। कैसें नींद परिहि भुइँ माहाँ।
कैसें ओढ़ब काँथरि कंथा। कैसें पाउँ चलब तुम्ह पंथा।
कैसें सहब खिनहि खिन भूखा। कैसें खाएब कुरकुटा रूखा।

---

६. द्वि० १ सबहिं निबाह, द्वि० ४ सब पै पथ। ७. प्र० २ तब, तृ० ३ जे, द्वि० ४ पै, द्व० ५ पुनि, द्वि० ७ जो। ८. प्र०७, द्वि० २, ७ तृ० ३ च० १ साठे, मँठि, द्वि० ७ साँठी, माँठी। १०. प्र० १ बिना जो साँठि, प्र० २ साँठि बिना, तृ० ३ साँवर बिना। ११. प्र० १ सब। १२. प्र० २ दै। १३ प्र० १, द्वि० ३, ५, ७, तृ० १ मुइँ चलहु। १४. द्वि० ४ मोहि। १५. प्र० २ सुदर। १६. प्र० १, द्वि० ६, ७ बौरे, प्र० २ मानुष, द्वि० ५ मनई। १७. तृ० ३ अपनी। १८. द्वि० ७ चिंत न। १९. प्र० २ अगुमन होहु सम्य तुम्ह। २०. प्र० १ पुनि पछितैहहु, प्र० १ पुनि पछितावा, द्वि० ४, तृ० ३ फिरि पछितासि, द्वि० ३, ५, तृ० १ पुनि पछिताव न, च० १ फिरि पछिताव न।

[१२९] १. प्र० १, द्वि० ७ छाया। २. द्वि० ५ निधि। ३ प्र० १, २, द्वि० ७ नवन जो लछिमि। ४. प्र० १ कस, द्वि० ७ का। ५. तृ० ३ तुम्ह देह। ६. द्वि० १ भए अब, तृ० १ भरब नित। ७. प्र० १, २ द्वि० ३, ७, तृ० २, च० १ निसि दिन। ८. प्र० १ करेहु काम रस भोगू, प्र० २ करत रहेहु यह भोगू, द्वि० ३ रहो करत रस भोगू। ९. तृ० ३ दिनहु दिन।

राज पाट दर[10] परिगह सब तुम्ह सौं उजिआर।
बैठि भोग रस मानहु कै न चलहु अँधिआर[11] ॥

[१३०]

मोहिं यह लोभ सुनाउ न[1] माया। काकर सुख काकर यह काया[2]।
जौं निआन तन[3] होइहि छारा। माँटी पोखि मरै[4] को भारा[5]।
का भूलहु एहि चंदन चोवाँ। बैरी जहाँ आँग के[6] रोवाँ।
हाथ पाउ सरवन औ आँखी। ये सब ही भरिहैं पुनि[7] साखी।
सोत सोत बोलिहिं[8] तन दोखू। कहु कैसें होइह गति[9] मोखू।
जौं भल होत राज औ[10] भोगू। गोपिचंद कस[12] साधत जोगू[13]।
ओनहूँ सिस्टि जौं[14] देख परेवा। तजा राज कजरी बन[15] सेवा।

देखु अंत अस होइहि गुरू दीन्ह उपदेस।
सिंघल दीप जाब मैं माता मोर अदेस[16] ॥

[१३१]

रोवै नागमती रनिवासू। केइँ तुम्ह कंत दीन्ह बन बासू।

---

१०. द्वि० ७ धन। ११. प्र० २, पं० १ सब छार।

[१३०] १. प्र० २ सुनावहु। २. प्र० १ वाकर घर वाकर मठ माया, द्वि० १ वाकर घर वाकर यह माया। ३. प्र० २, तृ० ३ पुनि, तृ० १ पै। ४. प्र० २, तृ० ३ भरै। ५. द्वि० ६ छारा। ६. प्र० १, २ जहाँ आँग वा, तृ० ३ जहाँ लहि आँग क। ७. प्र० १ ये पुनि तहाँ भरहिं जो, प्र० २ एई पुनि करिहहिं सब, द्वि० १ ये सब भरहिं आइ, तृ० ३ पै मव भरिहैं हो पुनि, द्वि० ५ ये सब भरइ आइ पुनि, द्वि० ३ आपुन आपुन बोलहिं, पं० १ एई फिरिहोइ हैं सब। ८. द्वि० १ पोखिहि। ९. प्र० १ सो। १०. प्र० १ तन। ११. प्र० १ सुख। १२. प्र० १ गोपिचंद नहिं। १३. प्र० २ हम कहँ सिख देवै जनि माता, हम अब चलब सिंघल के रता। १४. प्र० २, द्वि० ७ वोहूँ दिसि तौ, द्वि० १, ३, ६, तृ० १ दुहूँ सिस्टि जौ, द्वि० २ वहाँ सिस्टि जौ, तृ० ३ एहु सिस्टि जौ। १५. प्र० १, २ आपन गुर। १६. द्वि० ४, ५ माता तुम सो अदेस, तृ० २ तहाँ मोर आदेस।

अब को हमहि करिहि[1] भोगिनी। हमहूँ[2] साथ होइब[3] जोगिनी।
कै हम लावहु अपने[4] साथाँ। कै अब[5] मारि चलहु सै हाथाँ[6]।
तुम्ह अस बिछुरे पीउ पिरीता। जहवाँ राम तहाँ सँग सीता।
जौ लहि जिउ सँग[7] छाड़ न काया। करिहौं सेव पखरिहौं पाया।
भलेहिं पदुमिनी रूप अनूपा। हमतें कोइ न आगरि रूपा।
भवै भलेहिं पुरुषन्ह कै डीठी। जिन्ह जाना तिन्ह दीन्हि न पीठी[8]।

देहि असीस सबै मिलि तुम्ह माथें निति[9] छात।
राज करहु गढ़ चितउर राखहु पिय अहिवात॥*

[१३२]

तुम्ह तिरिआ मति हीन तुम्हारी। मूरुख सो जो मतै घर[1] नारी।
राघौ जौं सीता सँग लाई। रावन हरी कवन सिधि पाई।
यहु संसार सपन कर लेखा[2]। बिछुरि गए जानहु नहिं देखा[3]।
राजा भरथरि सुनि रे[4] अयानी। जेहि के घर सोरह सै रानी।
कुचन्ह लिहें तरवा सहराई। भा जोगी कोइ साथ न लाई।
जोगिन्ह काह भोग सौं काजू। चहै न मेहरी चहै न राजू[5]।

---

[१३१] १. प्र० १, २ करिहि काम रस। २. द्वि० २ हम तुम्ह। ३. प्र० १ सँग होब तुम्ह, प्र० २ साथ पिअ होब, तृ० ३ साथ होब अब, द्वि० ४, ५, तृ० १ साथ होइहहिं, द्वि० ३ साथ होहिं, द्वि० ७ सँग होइब। ४. द्वि० ५, च० १ आपन। ५. प्र० २, द्वि० २ हम। ६. प्र० २ निज हाथ, द्वि० १ तेहि हाथा, तृ० ३ सँ माथा। ७. द्वि० ३ तन। ८. द्वि० ७, तृ० १ दीन्हीं पीठी द्वि० ३ दीन्हि बईठी। ९. प्र० १ मनि, द्वि० ७ सिर।

*यह छंद तृ० २ में नहीं है, किंतु प्रसंग में अनिवार्य है, यह छंद १३२ में प्रकट है।

[१३२] १. तृ० १ सँग। २. द्वि० २, ३ जस मेरा, द्वि० ४, ५ जस हेरा। ३. द्वि० २, ४, ५, तृ० ३ अंत न आपन को केहि केरा। ४. प्र० १, तृ० ३ राजा भर्थहरि सुनहिं, प्र० २, द्वि० १, २, च० १, प० १ राजा भरथ नहिं सुने, द्वि० ४, ५ राजा भरथरिहिं नहिं सुने, द्वि० ३ राजा भरथहि सुनेन। ५. प्र० १, २ घर घरनी औ राज, द्वि० ३ तिरिआ चहै न राज।

जूड़ कुरकुटा पै भखु[६] चाहा। जोगिहि तात भात दहुँ[७] काहा।

कहा न मानै राजा तजी सवाईं[८] भीर।
चला छाड़ि सब[९] रोवत फिरि कै देइ न धीर॥

[१३३]

रोवै माता[१] न बहुरै[२] बारा। रतन चला जग भा[३] अँधिआरा।
बार[४] मोर रजियाउर रता[५]। सो लै चला सुवा परवता।
रोवहिं रानी तजहिं पराना। फोरहिं बलय करहिं खरिहाना।
चूरहिं गिव[६] अभरन औ[७] हारू। अब काकहँ हम करब सिंगारू।
जाकहँ कहहिं रहसि कै पीऊ। सोइ चला काकर यहु[८] जीऊ।
मरै चहहिं पै मरै न पावहिं। उठै आग सब लोग बुझावहिं।
घरी एक सुठि भएउ[९] अँदोरा। पुनि पाछें बीता[१०] होइ रोरा[११]।

टूट मनै नव मोती फूट मनै दस काँच।
लीन्ह समेटि ओबरिन[१२] होइगा दुख[१३] कर नाँच॥*

---

६. प्र० १, द्वि० ७ जोगी मुगुति कुरकुटा, प्र० २ होइ कुरकुटा जो पै, तृ० १ जूड़ भात नित। ७. द्वि० ३, ४, ५, तृ० ३, च० १ मैं। ८. प्र० १ समइ भइ। ९. प्र० १, २, ६, तृ० २ छाड़ि कै।

[१३३] १. प्र० १, तृ० ३ मातु, द्वि० ४, ५, च० १ माना, प्र० २ माए, तृ० २ मता। २. तृ० ३ नहिं पलटै, द्वि० ४, ५, च० १ फिरै नहिं। ३. प्र० २ घर भा, द्वि० ६, ७ कै जग। ४. द्वि० २ बाउर, द्वि० ६ रान। ५. प्र० १ राजा बौराना, तृ० ३ राना बाउर, च० १, पं० १ रन बाउर। ६. द्वि० ७ उर। ७. प्र० २, तृ० २, पं० १ जो अभरन, द्वि० २, तृ० ३ अभरन उर। ८. प्र० २ अब, द्वि० ७ हौं। ९. प्र० १ भै उठा, प्र० २ सब भएउ। १०. द्वि० ७ बूभी निबरा। ११. प्र० १ भारोरा, प्र० २ भए भोरा। १२. तृ० ३ लीन्ह समेटि बैरनु, प्र० २ लीन्ह समेटि ओआरन, द्वि० ३ लीन्ह समेटि बेरिनि, द्वि० ७ लीन्ह समेटि बोहरन, द्वि० ४, ५ लीन्ह समेटि सब अभरन, तृ० १ लीन्ह समेटि सब बैरन, च० १ लेहु समेटहु अभरन। १३. प्र० १ भै गो दुख, प्र० २ होए गादुर।

* प्र० १, द्वि० ४, ५, (तृ० १) में इसके अनंतर एक छंद और है—मैं पहि करब पहितन्ह बूभा—आदि। (देखिए परिशिष्ट)

[१३४]

निकसा राजा सिंगी पूरी। छाड़ि नगर[1] मेला होइ दूरी।
राय राने सब[2] भए बियोगी। सोरह सहस कुँवर भए जोगी।
माया मोह हरी सैं हाथाँ। देखेन्हि बूझि[3] निआन न साथाँ।
छाड़ेन्हि लोग कुटुँब घर सोऊ[4]। भे निनार दुख सुख तजि दोऊ[5]।
सँवरै राजा सोइ अकेला। जेहि रे पंथ खेलै[6] होइ चेला।
नगर नगर[7] औ गावँहि गाऊँ। चला छाड़ि सब ठावँहि ठाऊँ।
काकर घर काकर मढ़[8] माया। ताकर सब जाकर जिउ काया।

चला कटक जोगिन्ह कर कै गेरुआ[9] सब भेषु[10]।
कोस बीस चारिहुँ दिसि जानहुँ फूला टेसु[10]॥

[१३५]

आगें सगुन सगुनिआँ ताका। दहिउ मच्छ रूपे कर टाका[1]।
भरें कलस तरुनी[2] चलि[3] आई। दहिउ लेहु ग्वालिनि[4] गोहराई।
मालिनि आउ मौर लै[5] गाँथें। खंजन बैठ नाग के माँथें।
दहिनें मिरिग आइ गौ[6] धाई। प्रतीहार बोला खर बाई।
बिरिं[7] सँवरिआ दाहिन बोला। बाएँ दिसि गादुर नहिं[8] डोला[9]।

---

[१३४] १. द्वि० ७ तज। २. प्र० १ राजा राय जो, द्वि० ४, ५, ६, तृ० १, २, ३ राय राक सब, द्वि० ७, तृ० २ राय राजा सब, द्वि० १, प० १ राय रसै। ३. प्र० २ निअर, द्वि० २ नहिं भान। ४. प्र० १, २, द्वि० १, ६, ७, तृ० २ सब कोऊ। ५. द्वि० ७ भए निनारे दुख सुख, तृ० २ भए निरारे दुख सुख तजि। ६. तृ० २ चलौ। ७. प्र० १ देस कोस। ८. प्र० १, २ मठ, च० १ यह। ९. द्वि० ७ भाग सबन्ह। १०. च० १ कर भेषु, केम।

१३५] १. प्र० १, २, तृ० १ टका, द्वि० ३ थाका। २. तृ० १, च० १ तिरियां। ३. प्र० १ लै, प्र० २, द्वि० ४, ७ तृ० १ जल। ४. प्र० १ मालिनि। ५. प्र० २ सिर। ६. प्र० २ आइ बहु। ७. द्वि० ५, ३, ६, च० १ उम्प। ७. तृ० १, च० १ गादुर तहँ, तृ० २ जंबुक नहिं। ९. प्र० २ धोबिनि आइ माँड दिठि बोला।

बाएँ[१०] अकासी[११] धोबिनि आई[१२]। लोवा दरसन आइ[१३] देखाई।[१४]
बाएँ कुरारी दाहिन कूचा[१५]। पहुँचै भुगुति जैस मन रूचा।

जाकहँ होहिं सगुन अस औ गवनै जेहि आस[१६]।
अस्टौ महासिद्धि तेहि[१७] जस[१८] कवि कहा बिआस॥

[१३६]

भएउ पयान चला पुनि[१] राजा। सिंघनाद जोगिन्ह कर बाजा।
कहेन्हि[२] आजु कछु[३] थोर पयाना। काल्हि पयान दूरि है जाना।
ओहिं मेलान[४] जब[५] पहुँचिहि कोई। तब[५] हम कहब पुरुष भल सोई।
एहि आगे परबत की पाटी[६]। बिषम पहार अगम सुठि[७] घाटी।
बिच बिच खोह नदी औ नारा। ठाँवहिं ठाँव उठहिं[८] बटपारा[९]।
हनिवँत केर सुनब पुनि[१०] हाँका। दहुँ को पार होइ को थाका।
अस मन जानि सँभारहु आगू। अगुआ केर होहु पछलागू[११]।

करहिं पयान भोर उठि[१२] नितहि[१३] कोस दस जाहिं।
पंथी पंथाँ[१४] जे चलहिं ते का रहन ओनाहिं[१५]॥

---

१०. प्र० १, २ बाम। ११. तृ० ३ अकासिनि। १२. द्वि० ४, ५ धवहिनि आई, तृ० २, च० १ बोल सुहाई, प० १ दाहिनि आई। १३. द्वि० २, तृ० २ दीन्ह। १४. प्र० २ लिहे सुगंध गंधी बहु आए, देखि सभा बहुत सुख पाए। १५. प्र० १ दहिने खर बाम कुचकुचा, प्र० २ बाएँ खर बाएँ कुचकुचा, तृ० ३ बाएँ कुरारी औ पुनि कूचा, द्वि० ७, च० १ दहिन कुरारी बाएँ कूचा। १६. द्वि० ३ पाम। १७. द्वि० ४, ५ सिधि पँथ, द्वि० ७ निधि ताकहँ। १८. द्वि० ७ अस।

[१३६] १. प्र० २ उठा चलि, द्वि० १, २ चला उठि, तृ० ३ चलावा, द्वि० ४, ५, च० १ चला नव। २. द्वि ७ कीन्ह। ३. तृ० २ है। ४. तृ० ३ एहि मेलान। प्र० १ ओहि पयान। ५. द्वि० ३, ४, ५ जौ, नव, च० १ जौ, तौ। (हिंदामूल) ६. द्वि० २, ४, ५, ७, तृ० १ बाटी। ७ प्र० १ अति, प्र० २ है। ८. द्वि० ५ बैठ, तृ० २ रहहिं, च० १ अहहिं। ९. द्वि० ३ पटहारा। १०. प्र० १ तहँ, द्वि० ४ निन। ११. प्र० १ मँग लागू। १२. द्वि० ४ भोरा नहिं। १३. प्र० २ तबहिं, द्वि० १, २, ३ पँथ। १४. प्र० १ पथी, प्र० २ पथ न, तृ० ३ पँथ, द्वि० ७ पथहि। १५. प्र० १ ताकहँ रहन जो नाहिं, प्र० २ तेहि कै रहना नाहिं, द्वि० ५ तेरा रहे ओयाहिं, द्वि० ६ तेरा रहै ओनाहिं, द्वि० ७ तेहिका रहन होर नाहिं, तृ० ३ तहि कर रहनी नाहिं।

[१३७]

करहु दिस्टि थिर[1] होहु चटाऊ। आगू देखि धरहु भुइँ[2] पाऊ।
जौं रे उघट[3] होइ[4] परे भुलाने। गए मारे पँथ चले न जाने।
पावन्ह पहिरि लेहु सब पँवरी। काँट न चुभै न गड़ै अँकरवरी।
परे आइ अब[5] बनखँड[6] माहाँ। डंडक आरन[7] बीझ बनाहाँ[8]।
सघन[9] ढाँख बन चहुँ दिसि फूला। बहु दुख मिलिहि ईहाँ कर[10] भूला।
झाँखर जहाँ सो छाड़हु पंथा। हिलगि मकोइ न फारहु[11] कंथा।
दहिने बिदर चँदेरी बाएँ। दहुँ[12] कहँ[13] होब बाट दुहुँ[14] ठाएँ।

एक बाट गौ सिंघल दोसर लंक समीप।
हहिं आगे पँथ दोऊ दहुं गवनब केहि दीप॥

[१३८]

ततखन बोला सुआ नरेसा। अगुआ मोइ[1] पंथ जेइं देखा।
सो का उड़ै न जेहि तन पाँखू। लै सो परासहिं[2] बूड़ै साखू।
जस अंधा अंधे कर संगी। पंथ न पाव[3] होइ सहलंगी।
सुनु[4] मति काज[5] चहसि[6] जौं साजा। बीजानगर बिजैगिरि[7] राजा।
पूँछु न[8] जहाँ कुंड औ गोला[9]। तजु बाएँ अँधियार खटोला।

---

[१३७] १. द्वि० १, २ थिर, प्र० १ निह्रु। २. प्र० १ दुइ। ३. प्र० २ चाट, तृ० २ अन। ४. द्वि० १, २ तृ० १ भुइँ। ५. द्वि० १ सब, द्वि० ६, च० १ तेहि। ६. प्र० १, २, द्वि० ३, ७ परबत। ७. प्र० १ डंडाकार। ८. द्वि० ६ बन तरा तृ० २ बन माहाँ। ९. प्र० १ साख, प्र० २ संख। १०. प्र० २ हँकारत। ११. प्र० २ फीरैन्ह। १२. प्र० २ बहु। १३. तृ० २ पँहि। १४. प्र० १ दहुँ केहि बाट होब एक ठाएँ, प्र० २ दहुँ कहँ होब बाट एक ठाएँ, द्वि० ६ दहुँ कहँ होब बाट केहि ठाएँ। १५. प्र० २ द्वि० ७ पाप।

[१३८] १. द्वि० ७ सुआ। २. द्वि० ३ पुनि सब। ३. प्र० १ सुनाह। ४. च० १ नम। ५. पृ० ३ को। ६. द्वि० ७ चाहि। ७. द्वि० ७ बिजै पुर। ८. प्र० १, द्वि० ३ पूँछहु, द्वि० ४, ५ पूँछा। ९. प्र० १ घोर औ घोला, प्र० २, द्वि० ३, तृ० ३ गाढ़ औ कोला।

दक्खिन दहिने रहै तिलंगा। उत्तर[10] माँझ[11] गढ़ा गटंगा।
माँझ रतनपुर[12] सौंह[13] दुआरा। मारखंड दै बाएँ पहारा।

आगें पाउँ[14] ओड़ैसा बाएँ देहु सो बाट।
दहिनावर्त लाइकै[15] उतरु समुंद्र के घाट॥

[१३९]

होत पयान जाइ[1] दिन केरा। मिरगारन[2] महँ भएउ बसेरा।
कुस साँथरि भै सौंर[3] सुपेती। करवट आइ बनी[4] भुइँ सेंती।
कया मलै[5] तेहिं[6] भसम[7] मलीजा। चलि दस कोस ओस निति[8] भीजा।
ठाँवहिं ठाँव सोवहिं सब चेला। राजा[9] जागै आपु[10] अकेला।
जेहि कें हिएँ पेम रँग जामा। का तेहि भूख नींद बिसरामा।
बन अँधिआर रैनि अँधियारी। भादौं बिरह भएउ[11]अति भारी[12]।
किंगरी हाथ गहें बैरागी। पाँच तंतु[13] धुनि उठै लागी[14]।

नैन लागु तेहि मारग पदुमावति जेहि दीप।
जैस सेवाती सेवहिं[15] बन चातक जल सीप॥

१°. द्वि० २ औतन। ११. प्र० १, २, द्वि० ७ बांचहु, द्वि० ८ पच्छूँ, द्वि० ६ सो जाइ सो, द्वि० ३ बाँचि चलु। १२. द्वि० ७ रतन कर। १३. तृ० ३, सिंह, द्वि० ६ समुद्र। १४. प्र० १ अहै, द्वि० ४, ५, तृ० ३, च० १ बाउँ, तृ० २ आव, द्वि० ३ पथ। १५. द्वि० १, ३, तृ० १, २, दहिनावर्त देरकै, पं० १ दहिना मारग देइकै।

[१३९] १. प्र० १ रात, प्र० २ पाए। २. तृ० ३ मिरगा बन, द्वि० ३ रतबन खड। ३. द्वि० १, ३, ६, तृ० ३ सेज। ४. प्र० २ परी। ५. प्र० २ तृ० ३ मिली, द्वि० ३ मैल। ६. द्वि० ४, तृ० ३ जस, द्वि० २ अस, तृ० १ तन, द्वि० १, ६ तस। ७. द्वि० १ पुहुमि। ८. प्र० १, २, द्वि० १, ६ तन। ९. तृ० ३ लागा। १०. तृ० १ रैन। ११. प्र० १, २ भई। १२. प्र० १ अतिकारी, द्वि० ४ निसिकारी, द्वि० ६, तृ० १ दुख भारी। १३. प० १ मरतिहुँ बार। १४. प्र० १, द्वि० ५, च० १, पं० १ मोही लागी, प्र० २ उठै एक रागी, तृ० ३ ऐसें जागी, द्वि० ४ एकहि रागी, द्वि० ६ उठै एक लागी, द्वि० ३ यह एक लागी। १५. प्र० १ सीप सेवाती, द्वि० १ बुंद सेवाती बिनु, द्वि० ७ सेवहिं बुंद कहँ, द्वि० २, तृ० १, सेवाती बूँद कहँ, पं० १ सेवाती सेवरहि।

[१४०]

मासेक लाग चलत तेहि बाटाँ। उतरे जाइ समुँद[1] के घाटाँ।
रतनसेनि भा जोगी जती। सुनि भेंटै आएउ गजपती।
जोगी आपु कटक सब[2] चेला। कौन दीप कहँ चाहिअ खेला।
पहिलेहिं[3] आए माया कीजै[4]। हम पहुनई[5] कहँ आएसु दीजै।
सुनहु गजपती उतरु हमारा[6]। हम तुम्ह एकै भाव[7] निरारा[8]।
सो तिन्ह कहँ जिन्ह महँ[9] बहु भाऊ[10]। जो निरभाव न लाव नसाऊ।
यहै बहुत जो बोहित पावौं। तुम्हतें सिंघल दीप सिधावौं।

जहाँ मोहि निजु जाना होहुँ कटक लै पार।
जौं रे जिऔं लै बहुरौ[11] मरौं तो ओहि के बार[12]॥

[१४१]

गजपति कहा सीस बरु[1] माँगा। एतने बोल[2] न होइहि खाँगा।
ये सब[3] देहु आनि नै[4] गढ़े। फूल सोइ जो महेसहिं[5] चढ़े।
पै गोसाइँ सों एक बिनाती। मारग कठिन जाब केहि भाँती।
सात समुंद असूझ अपारा। मारहिं मगर मच्छ घरियारा।

---

[१४०] १. द्वि० ३ सिधा। २. प्र० १ सँग। ३. प्र० २ कहहिं, प्र० १, द्वि० ३, ४, ५ भलेहि। ४. प्र० १ मया करीजै। ५. प्र० १, २, द्वि० १, ३, ४, ५, ६, ७, तृ० १, २ पहुनाई। ६. प्र० २ बान हमारी, निनारी। ७. तृ० ३ हैं न। ८. द्वि० ५ यहु, द्वि० ७ सी। ९. प्र० १, २ सो तुम्ह बरहु जो हमहुँ न भाऊ (प्र० २ भावा), द्वि० ३ नेमहु तेहि जेहि महँ बहु भाऊ। १०. प्र० १, द्वि० ५, ६ जो निराम तेहि लाव नसाऊ, प्र० २ जो निरभौ तेहि त पावा. द्वि० २ जो नर भावहिं लावहिं स्याउ, द्वि० ४, तृ० ३ जो निरभौ तो तार नसाऊ। द्वि० ३, तृ० १ जो निरभव भा लाव नसाऊ। ११. द्वि० २ लै फिरौ, द्वि० ४ लै बाहुरी, प्र० २, द्वि० ६ तौ बाहुरी, द्वि० ७ जिऔं जोरी लै बहुरौं, च० १ जौरे जिऔं तौ लै फिरौं। १२ प्र० १ धार।

[१४१] १. तृ० १, २, द्वि० १, ३, ७, तृ० ३, च० १ पर। २. प्र० १, २ बोहित नार। ३. द्वि० २ बोहित, तृ० २ जे हैं। ४. द्वि० १ वै, द्वि० ५ पै। ५. द्वि० ४, ५, ६, च० १ महेसुर।

उठै लहरि नहिं जाइ सँभारी । भागहिं कोइ निबहै बैपारी
तुम्ह सुखिया अपने घर राजा । एन जो दुक्ख सहहु केहि काजा[६]
सिंघल दीप जाइ सो कोई । हाथ लिहें जिउ आपन होई

खार खीर दधि उदधि सुरा जल पुनि किलकिला[७] अकूत[८] ।
को चढ़ि नाँघहि समुँद ये सातौं है काकर[९] अस बूत[१०] ।

[१४२]

गजपति यह मन सकती[१] सीऊ । पै जेहि पेम कहाँ तेहि[२] जीऊ ।
जौं पहिलें सिर दै पगु[३] धरई[४] । मुए केर मीचुहि का करई[५] ।
सुख सँकलपि[५] दुख साँबर लीन्हेउ । तौ पयान सिंघल कहँ[८] कीन्हेउँ ।
भँवर जान पै कँवल पिरीती । जेहि महँ बिथा[७] पेम कै बीती ।
औ जेइँ समुँद पेम कर देखा । तेइँ यह समुँद बुंद बरु[८] लेखा ।
सात समुँद सत कीन्ह सँभारू[९] । जौं धरती का गरुव पहारू[९] ।
जेइँ[१०] पै जिय बाँधा सतु बेरा । बरु[११]जिय जाइ फिरै[१२] नहिं फेरा ।

---

६ प्र० २ अनि मा दुख नउँप कहि पाना, द्वि० ६ तृ० २ अत नोरहि सो पवने पना, द्वि० ७ एत जो नीउ सहौ कहि काजा, द्वि० २ एत जो 'कठिन महहु कहि पाना, तृ० १ एतव नोख मौ कहि काजा, द्वि० ३ एत दुख महहु कहहु कहि पाना, च० १ एत जो महहु पहहु केहि पाना, प० १ एत नो सम दुक्ख कहि पाना । ७. प्र० १ सुरा किलकिला, तृ० ३ सुर पाना किलकिला (उर्दू मूल), द्वि० ६ सुर पुनि किलकिला । ८ द्वि० ४, ३, च० १ अकून, अभूत द्वि० ७ अबूत, अवधूत, तृ० २ कूत, अस बूट । ९ प्र० १ समुँद ई काकर, प्र० २ समुँद एह सातौ, द्वि ७ समुँद सातौ है ।

[१४२] १ तृ० १ मुनि कै । २. प्र० १ नो । ३ प्र० २ ऊपर सिर । ४ द्वि० २, तृ० ३ देई, धरेई । ५ प्र० १, २ त्यागा । ६ द्वि० २ मुख सिपत । ७ तृ० १ यथा । ८ प्र० २, द्वि० १ कर, द्वि० २, ६, ३, तृ० १, च० १ पर । ९. द्वि० २ सात समुँद सत कीन्ह सँभारू, जौं धरती का गरुव पहारू । प्र० १ सात समुँद सत लीन्ह सँभारू । जौं सत हिएँ जिएँ का भारू । प० १ सात समुँद सत लीन्ह सँभारू, औं धरती का गरुव पहारू । १० प्र० १ मैं । ११ द्वि० ४, ३ पर । १२ द्वि० ७ जाइ ।

रंगनाथ हौं जाकर[13] हाथ ओही के नाँथ[14]।
गहें नाँथ सो खाँचै फेरे फिरै न माँथ॥

[१४३]

पेम समुंद अैस[1] अवगाहा। जहाँ न[2] वार पार नहिं थाहा।
जौं वह[3] समुँद काह[4] एहि[5] परे। जौं[6] अवगाह हंस होइ[7] तिरे।
हौं पदुमावति कर भिखमँगा। दिस्टि न आव समुंद औ गँगा।
जेहि कारन गियँ काँथरि कंथा। जहाँ सो मिलै जाउँ तेहि पंथा।
अब एहि समुँद परौं होइ मरा। पेम मोर पानी कै[8] करा[9]।
मर होइ बहा[10] कतहुँ[11] लै जाऊ। ओहि के पंथ कोइ लै[12] खाऊ।
अस मन जानि समुँद महँ परऊँ[13]। जौं कोइ खाइ[14] बेगि निस्तरऊँ[15]।

सरग सीस धर धरती हिया सो पेम समुंद।
नैन कौड़िया[16] होइ रहे[17] लै लै उठहिं सो बुंद[18]॥

[१४४]

कठिन वियोग जोग दुख डाहू। जरम जरत[1] होइ ओर निबाहू।
डर लज्या तहँ दुवौ गँवानी। देखै कछु न आगि औ पानी[2]।

---

१३. द्वि० ४, ६ हौं चेला जाकर, तृ० १ हौं जोगी। १४. द्वि० ७ अहौं ताहि के माथ।

[१४३] १. द्वि० जो अति। २. प्र० १ जहाँ मो, तृ० ३ जहँवा। ३. तृ० १ जेहि। ४. प्र० २ अवगाह, द्वि० १, २, ७, च० १ गाह। ५. च० १, द्वि० ४, ६, महँ। ६. प्र० १, तृ० २ अनि। ७. द्वि० २, ३, तृ० ३ हंस हिय तरे द्वि० ७ हंसिहि औनरे। ८. प्र० २ कनिन। ९. द्वि० ४, ६ मुए केर पानी का करा। १०. प्र० २ मर मा उहै, तृ० ३ मर मा बहौं, द्वि० ४ मर मा कोउ, द्वि० ६ मर मा मरहि, द्वि० ७ मरना जहाँ, तृ० १ मरेहि भाव, च० १ मर मा जवहि। ११. प्र० १ बही कहुँ कोई १२. प्र० २, द्वि० ३, ६, धरि, च० १ जबहि। १३. प्र० १ जो आपनै जीव घट राखा। १४. द्वि० ७ जाइ। १५. प्र० १ मा काहे का बिरह तन राखा। १६. द्वि० ७ कौड़िना। १७. प्र० १ होइ धसौं, तृ० २ होई। १८. द्वि० ५ उड़हि बुंद।

[१४४] १. द्वि० २ जोति। २. प्र० ७ औ पै पीर जानै गति सोई, जेहि तिर जागी अब मानी सोई।

आगि देखि ओहि आगिअ भावा[3]। पानी देखि कै मौंहँ धावा[4]।
जस बाउर न बुझाए बूझा। जौनिहिं भाँति जाइ का[5]सूझा।
मगर मच्छ डर हिएँ न लेखा। आपुहिं जान पार भा[6] देखा।
औ न खाहिं ओहि सिंघ सदूरा। काठहु चाहि अधिक सो भूरा[7]।
काया[8] माया संग न आथी[9]। जेहि जिय सौंपा सोई साथी[9]।

जो कछु दरब अहा सँग[10] दान दीन्ह संसार।
का[11] जानी केहि के सत[12] दैय उतारै पार॥

[१४५]

धनि जीवन औ ताकर जिया[1]। ऊँच जगत महँ जाकर दिया।
दिया सो सब जप तप[2] उपराहीं। दिया बराबर जग किछु नाहीं।
एक दिया तेइँ दस गुन लाहा। दिया देखि धरमी[3] मुख चाहा।
दिया सो काज दुहूँ जग आवा। इहाँ जो दिया उहाँ सो[4] पावा।
दिया करै आगें उजिआरा। जहाँ न दिया तहाँ अँधियारा।
दिया मंदिल निसि करै अँजोरा। दिया नाहिं घर मूसहिं चोरा।
हातिम[5] करन दिया[6] जौ[7] सिखा। दिया अहा धरमन्हि[8] महँ लिखा[9]।

---

३. द्वि० ३, ४, आगे धावा। ४. प्र० १ मौंह धँमावा, प्र० २ मौंह नमावा, द्वि० १ तहाँ मा धँमावा। ५. प्र० १, २, तृ० ३, प० १ जेहि पँथ जाइ म्रोह पँथ, द्वि० ४ कौन भाँति जाइगा। ६. प्र० १, २, द्वि० २ जहाँ परै तहाँ आपुहि, द्वि० १, ४ आपहि चहाँ पार भा, द्वि० ६ जन्हुँ पार तम अपुहि, प० १ जौन पार तस बैठहि। ७. प्र० २ दारि चाहि अधिकारू। ८. प्र० २ माया। ९. प्र० १ सर्था, आर्था, द्वि० १ सार्था, मार्था। १०. प्र० १ हाथ हा। ११. प्र० १ ना। १२. प्र० २, द्वि० ७, २ मन सो।

[१४५] १. प्र० २, द्वि० २, च० १ हिया। २. तृ० ६ जगत। ३. प्र० १, २ द्वि० ४ सब जग, द्वि० ? सबही, द्वि० ५, ६ सब कोउ। ४. प्र० १, द्वि० ६ सब। ५. प्र० २, द्वि० ३, ४, ५, ६, तृ० ३, च० १ हेतिम। ६. प्र० १, २, तृ० ३ करनि दिया, द्वि० १, २ दान देइ, द्वि० ४ दान दीन्ह, तृ० १ आइ दिया। ७. प्र० १ महँ। ८. प्र० २ धरती। ९. तृ० २ दिया जगत महँ कै बरम्हा, दिया देखि मुख स्वाम बढ़ारा।

निरमल पंथ कीन्ह तिन्ह जिन्ह रे दिया कछु हाथ।
किछु न कोइ लै जाइहि[10] दिया जाइ पै साथ॥

[१४६]

सत न डोल[1] देखा गजपती। राजा सत्त[2] सत्त दुहुँ सती[3]।
आपन नाहिं कया[4] पै[5] कंथा। जीउ दीन्ह अगुमन तेहि पंथा।
निस्चै चला भरम डर[6] खोई। साहस[7] जहाँ सिद्धि तहँ होई।
निस्चै चला छाड़ि कै राजू। बोहित दीन्ह दीन्ह नै[8] साजू।
चढ़े वेगि औ[9] बोहित पेले। धनि ओइ पुरुष पेम पँथ[10] खेले।
तिन्ह पावा उत्तिम कविलासू। जहाँ न मीचु सदा सुख बासू।
पेम पंथ जौं पहुँचै पारा। बहुरि न आइ मिलै एहि[11] छारा[12]।

एहि जीवन कै आस का जस सपना[13] तिल आधु।
मुहमद जिअतहि जे मरहिं[14] तेइ पुरुष कहु[15] साधु॥*

[१४७]

जस रथ रेंगि[1] चलै गज[2] ठाटी[3]। बोहित चले समुंद गा पाटी।

---

[10]. प्र० २ आइहि।

[१४६] [1]. प्र० २ छोड़। [2]. प्र० २ सत्य। [3]. द्वि० ७ सतां। [4]. द्वि० ३ गया। [5]. प्र० २ आपन नाहि कया है, प्र० २ आपुहि नीक आपु एक, द्वि० ४, ६ आपन नाहिं कया औ। [6]. प्र० २ जिय। [7]. च० १ धावसि। [8]. प्र० १, २, द्वि० २, ३, ५, ६, तृ० १ सत। [9]. प्र० १ कै। [10]. तृ० ३ जेर। [11]. प्र० १, द्वि० ६ आइ मिले तेहि, तृ० ३ आई महि वह, च० १ आइ मिलै पहँ। [12]. प्र० १, तृ० ३ झारा। [13]. द्वि० ७ अञ्जुनि। [14]. प्र० १, ७, तृ० १, च० १ जो मरहिं, द्वि० ७, ५, तृ० ३ जो मुवे, द्वि० ३, तृ० २ जे मुवे। [15]. प्र० १ तेहि पुरुषन्ह कहु, तृ० ३ ते पूरुष गनु, द्वि० ४ तेइ पुरुष सदा, द्वि० ५ तेइ पूरुष सिधि, द्वि० ६, तृ० २ ते पूरुष रहि, च० १ तेइ पुरुष कै।

*इसके अनंतर प्र० १ में एक छंद अतिरिक्त है, जो कुछ अन्य प्रतियों में छंद १५६ के बाद आता है। (देखिए परिशिष्ट १५६ अ)

[१४७] [1]. प० २, द्वि० ३, तृ० ३ रथ रैनि, द्वि० ५ दिन रैन, द्वि० १ रथ टपन, तृ० १ रथ रतन। [2]. द्वि० ६, ७, तृ० २ जग। [3]. द्वि० ४, ५, तृ० १ भाँतिः।

धावहिं बोहित मन उपराहीं। सहस कोस एक पल[४] महँ जाहीं।
समुँद अपार सरग जनु लागा[५]। सरग न घालि गनै[६] बैरागा।
ततखन चाल्हा एक देखावा। जनु धौलागिरि परबत आवा।
उठी हिलोर जो चाल्ह नराजी[७]। लहरि अकास लागि[८] भुइँ बाजी।
राजा सेंति[९] कुँवर[१०] सब[११] कहहीं। अस अस[१२] मच्छ समुँद महँ रहहीं।
तेहि रे पंथ हम चाहहिं गवना। होहु सँजूत[१३] बहुरि नहिं अवना।

गुरु हमार तुम्ह राजा हम चेला औ[१४] नाथ।
जहाँ पाँव गुरु राखै चेला राखै[१५] माँथ॥

[१४८]

केवट हँसे सो सुनत गवेंजा[१]। समुँद न जान कुँआ कर मेंजा।
यह तौ चाल्ह न लागै[२] कोहू। काह कही जौ देखहु[३] रोहू।
अबहीं तौ तुम्ह देखे नाहीं। जेहि मुख ऐसे सहस[४] समाहीं[५]।
राज पंखि तिन्ह पर[६] मँडराहीं। सहस कोस जिन्ह की परिछाहीं।
ते ओइ मच्छ ठोर गहि लेहीं। सावक मुख चारा लै देहीं।
गरजै गँगन पंखि जौ बोलहिं। डोलै समुँद डहन[७] जौ खोलहिं[८]।
तहाँ न चाँद न सुरुज असूझा। चढ़ै सो जो अस अगुमनवू[९]झा।

४. प्र० २, द्वि० २ निल एक। ५. द्वि० ७ संक तनु जागा। ६. प्र० २ गगन। ७. द्वि० २, ४ बिराजी। ८. द्वि० ४ लेल, द्वि० ७ बाजि। ९. द्वि० २ हुतें, द्वि० ६, पं० १ सों। १०. च० १ पुरुप। ११. प्र० १, तृ० २ अस। १२. द्वि० ६, च० १ बट। १३. प्र० १ होइ मजुगनि, द्वि० १ होहु मजुग, द्वि० ६ होहु मबेत, द्वि० ३, तृ० २ होहु संजूग। १४. प्र० १, द्वि० १, २, ४, ५, ७, तृ० २, तुम्ह, प्र० २ तुम्ह। १५. प्र० २, तृ० ३ राख तहँ।

[१४८] १. तृ० ३ कवेजा (उर्दू मूल)। २. प्र० २ आवनए, तृ० ३ तुम्ह लागे ३. प्र० १, २, द्वि० ३, ४ का कहिहौ जो देखिहौ, द्वि० ७ का कहबे जौं देखबे। ४. द्वि० ७ कोटि। ५. द्वि० १ अमाहीं। ६. प्र० १ एक तहँ प्र० २, च० १ धम तहँ। ७. तृ० ३ सहस। ८. द्वि० ७ डोलहि उठहि समुँद मन डोला, गरजै गगन जाइ तस भोला। ९. प्र० १, २, द्वि० ४ सोइ जो अगमन, तृ० ३ सो ऐस अगम जो, च० १ सो अगमन अगु-मन।

दस महँ एक जाइ कोइ[10] करम धरम सत नेम।
बोहित पार होइ जौं तौ कूसल औ खेम॥*

[१४९]

राजैं कहा कीन्ह सो[1] पेमा। जेहिं रे कहाँ कर[2] कूसल खेमा।
तुम्ह खेवहु[3] खेवै जौं पारहु[4]। जैसें आपु तरहु मोहिं तारहु।
मोहिं कूसल कर सोच न ओता। कूसल होत जौं जनम न होता।
धरती सरग जाँत पर[5] दोऊ। जो तेहि बिच[6] जिय राख न[7] कोऊ।
हौं अब कुसल एक पै माँगौं। पेम पंथ सत बाँधि न खाँगौं।
जौं सत हिएँ तो नैनन्ह दिया। समुँद न डरै पैठि[8] मरजिया।
तहँ लगि हेरौं समुँद ढँढोरी[9]। जहँ लगि[10] रतन पदारथ जोरी।
सत्त पतार खोजि जस[12] काढ़े[13] बेद गरंथ।
सात सरग चढ़ि धावौं पदुमावति जेहि पंथ॥

[१५०]

सायर तिरै हिएँ सत पूरा। जौं जियँ सत[1] कायर पुनि[2] सूरा।
तेहिं सत बोहित पूरि चलाए। जेहिं सत[3] पवन पंख जनु[4] लाए।

---

१०. प्र० २ पुनि, द्वि० ४, तृ०३ मो।

*इसके अनंतर द्वि० ४, ५ में दो छंद अतिरिक्त हैं, जो द्वि० १, ६ में छंद १४८ के अनंतर अतिरिक्त हैं। (देखिए परिशिष्ट)।

[१४९] १. प्र० १ जेहँ, द्वि० ४, ६ मैं। २. प्र० १ जाकहँ कहा, द्वि० २, ४, च० २ जहाँ पेम न्यां, द्वि० ७ जेहि सो कहा। ३. तृ० २ खेवक। ४. प्र० २ मैं तोहार अब चरन मनावहुँ। ५. प्र० २ परि, द्वि० ७, तृ० ३ पिर, द्वि० ४ पै, द्वि० ३, तृ० १ बर। ६. प्र० १ तेहि बीच, द्वि० १ तन मीचु, तृ० २ दुहुँ बिच। ७. प्र० १ न राखै, द्वि० २, ३ जिअ बाँचन। ८. द्वि० ४ देखि। ९. द्वि० ४ ढढोरी, जोरी। १०. प्र० १ पावउँ। ११. द्वि० ७ में यह पंक्ति नहीं है। १२. द्वि० ७ जग, द्वि० ६ पै। १३. प्र० २, द्वि० ४, ५, ७, तृ० १, च० १, प० १ काढ़ी।

[१५०] १. प्र० १, २ जौ मन सँग, तृ० २ जौ सत हियें तृ० ३ जेहि [illegible]। २. द्वि० ७ लै, तृ० २ तो। ३. प्र० १ नहमा। ४. प्र० १ [illegible] प्र० २ नहीं, तृ० ३ पर, द्वि० ४ जस, च० १ जिमि।

मत माथी[5] सत कर सहिवाँरू[6]। सत्त गेह[7] ले लावै पारू।
मतै ताक सब आगू पाछू। जहँ जहँ मगर[8] मच्छ औ काछू।
उठै लहरि नहिं जाइ सँभारा[9]। चढ़ै सरग औ परै पतारा।
डोलहिं बोहित लहरैं खाहीं। खिन तर खिनहिं होहिं उपराहीं[10]।[11]
राजैं सो सतु हिरदैं बाँधा। जेहि सत टेकि[12] करै गिरि[13] काँधा।

खार समुँद सो[14] नाँघा आए समुँद जहँ[15] खीर।
मिले समुँद वै[16] सातौं बेहर बेहर[17] नीर॥

[१५१]

खीर समुंद का बरनौं नीरू। सेत[1] सरूप पियत जस खीरू।
उलथहिं मोती मानिक हीरा। दरब देखि मन धरै[2] न धीरा[3]।
मनुवाँ[4] चहै दरब औ भोगू। पंथ भुलाइ[5] बिनासै[6] जोगू।

---

५. तृ० ३ माथ, द्वि० ७ साहस। ६. प्र० १ सत करम हियारू, द्वि० १ सत करै सँभारू, तृ० २ सतगुरु महिवारू, द्वि० ४ सतगुरु सँभारू, द्वि० ५ मतगुरु हम दारू, द्वि० ६, पं० १ सतगुरू बहारू, तृ० १ सत को सहिवारू, द्वि० ३ सतगुर सतभारू, च० १ सत खेव सँभारू। ७. द्वि० ४ गहे। ८. प्र० १ जैहि रोहि मारग। ९. प्र० १ मनु परै पहारा, प्र० २. द्वि० १, ४, ६ जनु उठै पहारा। १०. प्र० १ खिन तर होइ खिन ऊपर जाहीं, प्र० २ खिनहिं तरे खिनऊ पर जाहीं, द्वि० ७ खिन तर जाइ होहि उपराहीं, द्वि० २ खिन तर खिनहिं होहिं उपराहीं, तृ० १ खिन तर होहि खिनहि उपराहीं, द्वि० ३, च० १ खिनतर खिन खिन होइ उपराहीं। ११. द्वि० ४, ५ सहस कोस एक पल महँ जाहीं, (तुलना० १४७.२)। १२. तृ० ३ तुरैं, द्वि० ७ गहो, तृ० २ देइ, १३. प्र० २, द्वि० ४, ५, च० १ गुर, द्वि० २ कै, द्वि० १, ७, तृ० ३ कर। १४. प० १ सब। १५. तृ० ३ जेहि। १६. प्र० २ एह, तृ० ३ इहि १७. प्र० १, प० १ बेगर बेगर, द्वि० २ पहर पहर सन, द्वि० ७ बाहर बेगर, तृ० १ फेर फेर सन।

[१५१] १. तृ० ३ सोत। २. प्र० १ रहै, द्वि० १, ६, ३ होइ। ३. प्र० २ धीरा। ४. प्र० १ मानुष, तृ० ३ मनवाँ, तृ० १ पंथिहि। ५. तृ० १ पथी हिए। ६. द्वि० ३ न पावै।

जोगी मनहिं ओहिं[7] रिस[8] मारहिं। दरब हाथ कै समुँद पवारहिं।
दरब लेइ सो अस्थिर राजा। जो जोगी तेहि के केहि[9] काजा।
पंथहि पंथ दरब रिपु होई। ठग[10] बटवार चोर सँग सोई।
पंथिक[11] सो जो दरब सौं रूसै[12]। दरब समेटि बहुत[13] अस[14] मूसै।

खीर समुँद सो[15] नाँघा आए समुँद दधि माँह।
जो हहिं[16] नेह[17] के बाउर ना तिन्ह[18] धूप न छाँह॥

[१५२]

दधि समुँद्र देखत मन[1] डहा। पेम क लुबुध दगध पै[2] सहा।
पेम सौं दाधा धनि वह जीऊ। दही माहिं मथि काढ़ै घीऊ।
दधि एक बूँद जाम सब खीरू। काँजी बुंद[3] बिनसि[4] होइ नीरू।
स्वाँस दहेंड़ि(?)[5] मन मँथनी गाढ़ी। हिएँ चोट[6] बिनु फूट[7] न साढ़ी।
जेहि जियँ पेम चँदन तेहि आगी। पेम बिहून फिरहिं डरि भागी[8]।
पेम कि आगि जरै जौं कोई। ताकर दुख न अँबिरथा होई।
जो जानै सत आपुहि जारै। निसत हिएँ सत करै न पारै[9]।

---

७. द्वि० ३ हाँसि। ८. प्र० १ इहै आनि मन। ९. प्र० १, २ का। १०. प्र० २ जग। ११. प्र० २ जोगी। १२. प्र० २ अरूझै, मूझै। १३. पं० १ थोर। १४. प्र० १ भर, प्र० २ नहि। १५. प्र० १ सब, द्वि० २ पुनि, द्वि० ४, ५ जो। १६. द्वि० १ इह। १७. द्वि० ४, ५ पथ, तृ० १, २, च० १ पेम। १८. प्र० १ तिनही।

[१५२] १. प्र० १, द्वि० १, २, ४, तृ० १, २, च० १, प० १ देखत तस, द्वि० ७ पुनि देखत। २. द्वि० २, ३ दमि। ३. प्र० १ दूध। ४. तृ० २ बिना रहि सीरू, प्र० १, तृ० ३ बिनामइ नीरू, द्वि० ४ हँस होइ नीरू, च० १ बिनसि गा नीरू। ५. प्र० १, द्वि० २, तृ० १ बेध, प्र० २ बोठ, तृ० ३ बैट, द्वि० ७ बोरठा, द्वि० ४ दूध, द्वि० ६ दहि, द्वि० १, ३ दधि, च० १ दबाहि, तृ० २, प० १ दौद। ६. प्र० २, द्वि० १, ४, ५ आनि। ७. द्वि० ३ होउ। ८. प्र० १ पेम बिहून फिरहिं बैरागा, द्वि० २ पेम बिहूने फिरहिं अभागी, तृ० ३ पेम भुअंग डरहि ते भागी, द्वि० ४, ५, च० १ पेम बिहून फिरहिं डरि लागा, तृ० १ पेम न होइ फिरहिं डरि भागी, द्वि० ३, प० १ पेम बिहून मरम डर भागी ९. द्वि० ४ निआरै।

दधि समुँद्र पुनि पार भे पेमहिं कहाँ सँभार।
भावै पानी सिर परै भावै परै अँगार॥

[१५३]

आए उदधि समुंद अपारा[1]। धरती सरग जरै तेहि झारा॥
आगि जो उपनी[3] ओहि समुंदा। लंका जरी ओहि एक बुंदा॥
बिरह जो उपना वह हुत गाढ़ा[5]। खिन न बुझाइ जगत तस बाढ़ा॥
जेहिं सो बिरह तेहिं आगि न डीठी। सौंह जरै फिरि देइ न पीठी॥
जग महँ कठिन खरग कै धारा। तेहिं तें अधिक बिरह कै झारा॥
अगम पंथ जौं ऐस न होई। साध किएँ पावत सब कोई॥
तेहि समुंद महँ राजा परा। चहै जरै पै रोवँ न जरा॥

तलफै तेल कराह जिमि इमि तलफै तेहि नीर।
वह जो मलैगिरि पेम का बुंद समुंद समीर॥

[१५४]

सुरा समुँद पुनि राजा आवा। महुआ मद छाता[1] देखरावा॥
जो तेहि पिऐ सो भाँवरि लेई। सीस फिरै[2] पँथ पैगु न देई॥
पेम सुरा जेहि के जिय[3] माहाँ। कत बैठै महुआ की छाहाँ॥
गुरु के पास दाख रस रसा। बैरि बबूर मारि मन कसा[4]॥
बिरहैं दगध कीन्ह तन भाठी। हाड़ जराइ दीन्ह जस[6] काठी॥

---

[१५३] १. प्र० २ के पारा। २. द्वि० ७ सहित। ३. प्र० १, २, द्वि० ४, ६, ७, तृ० १, च० १ बिरहजो उपना। ४. प्र० १, २, द्वि० ४, ६, तृ० १, च० १ आगि जो उपनी। ५. प्र० १, २, द्वि० ४, ६, तृ० १, च० १ हुति गाढ़ी, बाढ़ी, द्वि० ५, ३ होऍ गाढा, बाढ़ा, द्वि० १ जलगाढ़ा, बाढ़ा, तृ० ३ भै काढ़ा, बाढा। ६. प्र० १ प्रीति। ७. प्र० १, तृ० १ आगि तमि प्र० २ जगत महँ, तृ० ३ जानु तान, द्वि० ५ जाइ तन। ८. द्वि० २ पैन। ९. प्र० २ जग महँ। १०. द्वि० ३ बंध। ११. प्र० १, तृ० १ न परन सरीर, द्वि० १, ४ समुँद सरीर, द्वि० ७ समीर मर्मीर।

[१५४] १. द्वि० १ जहाँ तहाँ। २. प्र० २ पीठि, द्वि० ७ कैर। ३. प्र० १, २ मन, तृ० ३ हिय। ४. प्र० २ भाया। ५. च० १ काम कलान गुरमन तोरा, रन मद महँ भा मानुस अहारा। ६. प्र० २, द्वि० २ जनु, तृ० ३ जग।

नैन नीर सो पोती किया[७]। तस मद चुआ बरै जनु[८] दिया।
बिरह सरागन्हि भूँजै माँसू। गिरि गिरि परहिं रकत कै[९] आँसू।

मुहमद मद जो परेम का किएँ[११] दीप तेहि[१२] राख।
सीस न देइ पतंग होइ[१३] तब लगि जाइ न चाखि[१४]॥

[१५५]

पुनि किलकिला समुँद महँ आए। किलकिल उठा देखि डरु खाए[१]।
गा धीरज वह देखि हिलोरा[२]। जनु अकास टूटै चहुँ ओरा।
उठै लहरि परबत की नाईं। होइ फिरै[३] जोजन लख ताईं।
धरती लेत सरग लहि बाढ़ा। सकल समुँद[४] जानहुँ भा ठाढ़ा।
नीर होइ तर ऊपर सोई। महनारंभ[५] समुँद जस होई।
फिरत समुँद जोजन लख ताका। जैसें फिरै कुम्हार क चाका।
भा परलौ निअराएन्हि[६] जबहीं[७]। मरै सो ताकर परलौ तबहीं[७]।

गै अवसान सबहिं कै देखि समुँद कै बाढ़ि।
निअर होत जनु लीलै[८] रहा नैन अस काढ़ि॥

[१५६]

हीरामनि राजा सौं बोला। एही समुँद आइ सत डोला।

---

७. प्र० १, २ पोता दिया। ८. द्वि० ४, ५ जस, द्वि० ६, च० १ सोहि, द्वि० ३ जो, तृ० १ होइ, तृ० ३ जेहि। ९. द्वि० ३ चुइ चुइ। १०. तृ० ३ औ। ११. प्र० ३, द्वि० ७ गए, द्वि० ८, ५ दिए, तृ० १ होए, द्वि० २, तृ० २ च० १ लेनु। १२. प्र० १ दीप तें, द्वि० ७ देव-तहि। १३. प्र० १ पतंग जिमि, प्र० २ परत तब, तृ० ३ दीप तईं, द्वि० ४ ज्यों। १४. प्र० २ छाति।

[१५५] १. प्र० १, द्वि० २, ३, ४, ६, तृ० ३ गा धीरज देखत। २. प्र० १, द्वि० ३, ३, ४, ६, तृ० २ गा किलकिल अस उठा। ३. प्र० २ बहुरै। ४. च० १ तुमैक। ५. प्र० १ मथन अरंभ, द्वि० २, ३, ४, ५, तृ० १ महा अरंभ, तृ० २ महा अरंभ, द्वि० ६, च० १, पं० १ महनारंभ, द्वि० १ महनार नीह। ६. द्वि० ४, ५ च० १ निअराना। ७. द्वि० ४, ५, च० १ जौहीं तौहीं (हिंदी मूल)। ८. द्वि० ३ तर ऊपर।

एहि ठाउँ कहँ गुरु सँग कीजै। गुरु सँग होइ पार तौ लीजै।[१]
सिंघल दीप जो नाहिं निबाहू। एही ठावँ साँकर सब काहू।
यह किलकिला समुंद गँभीरू। जेहि गुन होइ सो पावै तीरू।
एही समुँद पंथ मझधारा[२]। खाँडे कै असि धार[३] निनारा।
तीस सहस्र कोस कै पाटा। अस साँकर चलि सकै न चाँटा।[१]
खाँडे चाहि पैनि[४] पैनाई[५]। बार चाहि पातरि पतराई[६]।[१]

मरन जिअन एही पँथ एही आस निरास।
परा सो गया पतारहि तिरा सो गा कबिलास॥*

[१५७]

कोइ बोहित जस पवन उड़ाहीं। कोई चमकि बीजु बर जाहीं[१]।
कोई भल[२] जस धाव तुखारा[३]। कोई जैस बैल गरिआरा[४]।
कोई हरुव जनहुँ रथ हाँका। कोई गरुव भार तें थाका।
कोई रेंगहिं जानहुँ चाँटी। कोई टूटि[५] होहिं सिर[६] माँटी[७]।

---

[१५६] १. द्वि० २, ४, तृ० २, च० १, प० १ में ७ के स्थान पर है—एही पंथ सब कहँ है जाना, होइ दूसरे बिस्वास निदाना।
प्र० १, २ में यह पाठांतर ६ के स्थान पर है।
द्वि० ६ में यही ७ के स्थान पर है।
तृ० १ में यही पाठांतर एक अतिरिक्त पंक्ति के रूप में है—अर्थात् छंद में ७ के स्थान पर कुल ८ पंक्तियाँ चौपाई का है।
और द्वि० ७ में ६ के स्थान पर प्र० १, २ की भाँति है,
ओही पंथ जाना सब काहू। ओ ही पंथ महँ होइ निबाहू।
२. प्र० १ माँझ पँथधारू। ३. प्र० १, २, द्वि० १, ४ रेख। ४. द्वि० १ पातरि। ५. प्र० १ मोनई, पनरई, प्र० २ बहुताई, पतराई, द्वि० १, २, ५, ७, तृ० १, ३, च० १ दाहँनाई, पनराई।
* प्र० १, द्वि० १, २, ३, ४, ५, ६, तृ० १, २, ३, पं० १ में इसके अनन्तर एक अतिरिक्त छंद है। (देखिए परिशिष्ट)

[१५७] १. द्वि० २, तृ० १ परछाहीं, तृ० ३ अग जाहीं। २. तृ० ३ बोहित। ३. तृ० ३ धाउ तेखारा, द्वि० ७ धावहिं घोरू। ४. द्वि० ७ बर जोरू। ५. द्वि० ७ बूड़ि। ६. प्र० १ घर। ७. प्र० २ में नहीं है।

कोई खाहिं पवन कर झोला। कोईं करहिं[८] पात जेउँ[९] दोला।
कोई परहिं भँवर जल माहाँ। फिरत रहहिं[१०] कोइ देहिं न थाहाँ।
राजा कर अगुमन भा खेवा। खेवक आगें सुवा परेवा।

कोइ दिन मिला सबेरे कोइ आवा पछिराति[११]।
जाकर साज जैस हुत[१२] सो उतरा[१३] तेहि भाँति॥

[१५८]

सतएँ समुँद मानसर[१] आए। सत जो कीन्ह साहस[२] सिधि पाए।
देखि मानसर रूप सोहावा। हियँ हुलास[३] पुरइनि होइ छावा।
गा अँधियार रैनि मसि छूटी। भा भिनुसार किरिन रबि फूटी।
अस्तु अस्तु साथी सब बोले। अंध जो अहे नैन बिधि खोले।
कँवल बिगस तहँ बिहँसी[४] देही। भवर दसन[५] होइ होइ रस लेहीं[६]।
हँसहिं हंस औ करहिं किरीरा। चुनहिं[७] रतन मुकताहल[८] हीरा।
जौं अस साधि आव[९] तप जोगू। पूजै आस मान रस भोगू।

भँवर जो मनसा[१०] मानसर लीन्ह कँवल रस[११] आइ।
घुन जो हियाव न कै सका झूर काठ तम[१२] खाइ[१३]॥*

---

८. प्र० १ करर, प्र० ? करैं, द्वि० ७ करर, द्वि० ४ गिरहिं, च० १ फिरहिं। ९. प्र० २ पानर पर दोला, द्वि० ?, ६, च० १ पान पर दोला, द्वि० ३, पं० १ पान बर डोला। १०. द्वि० ७ कीरा करहिं। ११. द्वि० ७ अधिराति। १२. प्र० २ जस हुत सावँज. प्र० २ जस हो संजुति, द्वि० ४, ५ जस हुत साजू, तृ० १ जस हुत साहस, द्वि० ३ हुत साजु जस। १३. तृ० २ आवा।

१५८] १. द्वि० १ महँ राजा। २. द्वि० ४ सरस। ३. तृ० ३ हुलसा। ४. प्र० १ बिकासन बिगसी, प्र० २, द्वि० १ बिगस तहँ बिगसी, द्वि० ६, तृ० २ बिहसि तहँ बिहसी, द्वि० ७ बिकस तस बिकसी, द्वि० ४ ५ बिकस तस बिहसी। ५. द्वि० २, तृ० २, च० १ बास, द्वि० ४ दरस। ६. तृ० २ भँवर बास रस सँग मो लेहीं। ७. द्वि० १ जनहुँ। ८. प्र० ? पदारथ। ९. द्वि० ३ होइ, तृ० ३ आवत। १०. द्वि० २, प० १ हँसा। ११. प्र० १ बास लीन्ह ओहिं। १२. तृ० ३ कहिं। १३. प्र० १ मरा काठ चबाइ।

*द्वि० ३ में इनके अनंतर एक अतिरिक्त छंद है। (देखिए परिशिष्ट)

[१७९]

पूँछा राजैं कहु गुरु सुवा। न जनौं आजु कहाँ दिन[1] उवा।
पवन बास[2] सीतल लै आवा। कया डहत जनु चंदन लावा[3]।
कबहुँ[4] न ऐस जुड़ान[5] सरीरू। परा अगिनि महँ मलै समीरू[6]।
निकसत आव किरिन रबि[7] रेखा। तिमिर गए[8] जग निरमर देखा।
उठे मेघ अस जानहुँ आगें। चमकै बीजु गँगन पर लागें।
तेहि ऊपर जस[9] ससि परगासू। औ सो कचपचिन्ह भएउ[10] गरासू।
और नखत चहुँ दिसि उजिआरे। ठाँवहि ठाँव दीप अस बारे[11]।[12]

औरु दखिन दिसि निअरैं कंचन मेरु देखाव।
जस[13] बसंत रितु आवै तैस बास[14] जग पाव[15]॥

[१८०]

तूँ राजा जस बिक्रम आदी[1]। तूँ हरिचंद बैन[2] सत बादी।
गोपिचंद तूँ जीता जोगाँ[3]। औ भरथरी न पूज[4] बियोगाँ[3]।
गोरख सिद्धि दीन्हि तोहि हाथू। तारे[5] गुरू मछिंदर नाथू।

---

[१७९] १. तृ० ३, प० १ दहुँ। २. द्वि० ७ बाव। ३ प्र० २ पावा।
४. द्वि० १, ४, ५, कोहुँ (हिंदी मूल)। ५. प्र० २, च० १ तिमिर गएउ, द्वि० ३ तिमिर गहा। ६. द्वि० ४ जानहुँ मीरू, द्वि० ३ मलै सुमेरू।
७. द्वि० ७ जस, द्वि०१ अस। ८. प्र० १ गए तिमिर, प्र० २, च० १ तिमिर गएउ, तृ० ३ तिमिर गहा, प० १ तिमिर करै। ९. द्वि० ७ तेहि पर पूनिवँ। १०. प्र० १, २, द्वि० २, ६, तृ० २, पं १ चंद कचपचिन्ह।
११. द्वि० ७ उजियारा, टाँ जनु तारा। १२. द्वि० ३ में यह पंक्ति हाशिए में दी है; मूल में हैं· सात समुँद जस पथ बखाने, सातौ नाँधि दीप निअराने।
१३. प्र० २, द्वि० २ जनु, तृ० ३ औं। १४. प्र० १, २, द्वि० १, ३, तृ० १ तस दरसन, तृ० २ तैस होन। १५. प्र० २ जग जाव, प्र० १, द्वि० ३, ४, ६, तृ० १, २ जग आव।

[१८०] १. प्र० १ बिक्रम सतबादी। २. प्र० २, द्वि० ७ बेनु। ३. प्र० २ जनी तै जोगू, बियोगू, तृ० ३ जीता जोगी, बियोगी, द्वि० ४ जीव जोगू, बियोगू।
४. प्र० १, २ और अपंची। ५. तृ० ३ तोगे, द्वि० ४ दिपै, द्वि० १ तारर, तृ० १ मारे, तृ० २ तवै।

जीता प्रेम तूँ पुहुमि अकासू। दिस्टि परा सिंघल कबिलासू।
चै जो मेघ गढ़ लाग अकासाँ। बिजुरी कनै[6] कोट चहुँ पासाँ।
तेहि पर ससि जो[7]कचपचिन्ह भरा। राजमँदिर सोनै नग जरा।
औरु जो नखत कहसि चहुँ पासाँ। सब रानिन्ह[8] के आहिं अवासाँ।

गँगन सरोवर[9] ससि[10] कँवल कुमुद तराइँ पास।
तूँ रवि उवा[11] जो भँवर होइ पवन मिला लै[12] बास[13]॥

[२६१]

सो गढ़ देखु गँगनु तें ऊँचा। नैन देख कर नाहिं[1] पहूँचा।
बिजुरी चक्र[2] फिरै चहुँ फेरी। औ जमकात[3] फिरै जम केरी।
धाइ जो बाजा[4] कै मन साधा। मारा चक्र भएउ[5] दुइ आधा।
चंद सुरुज औ नखत तराईं। तेहि डर अँतरिख फिरैं सबाईं।
पवन जाइ तहँ पहुँचै चहा। मारा तैस[6] टूटि भुइँ वहा[7]।
अगिनि उठी जरि बुझी निआना[8]। धुआँ उठा उठि बीच बिलाना[8]।[9]
पानि उठा उठि जाइ[10] न छुवा। बहुरा[11] रोइ आइ भुइँ चुवा।

रावन चहा सौंहँ होइ हेरा[12] उतरि गए दस[13] माँथ।
संकर धरा लिलाट भुइँ औरु को जोगी नाथ।

---

६. प्र० २, द्वि० २ लवै, द्वि० ४, ५ कटै, तृ० १ घटै। ७. प्र० १ मिम प्क। ८. प्र० २ रानी, द्वि० ७, तृ० ३ राजन्ह, द्वि० ४ रावन। ९. प्र० २ तरावन। १०. द्वि० ५ तहस। ११. प्र० १, पं० १ आव, द्वि० ६ उठा। १२. प्र० १, द्वि० ६ न पावै, प्र० २, तृ० २, ३ मिलावै, द्वि० ३ मिलाई। १३. द्वि० ७ पास।

[२६१] १. तृ० ३ काल, द्वि० ५ स्याल, द्वि० ७ गगन, तृ० १ कहीँ। २. प्र० २, द्वि० ७ चमकि। ३. द्वि० ७, तृ० १ जमकाति, द्वि० ३ चमकात। ४. प्र० ३ दाचा। ५. प्र० १ कियो। ६. प्र० १ चक्र। ७. प्र० १ भुइँ परा, द्वि० ४, ५, ६, च० १ भुइँ रहा, द्वि० ७ भुइँ माँहा। ८. प्र० २ बीजु मसाना, द्वि० ७ बीच भुलाना। ९. प्र० २ जैसे उठै मेघ असमाना। १०. प्र० १ जाइ नहिं, द्वि० ३ नेहि जाइ न। ११. तृ० ३ फिरा, द्वि० ७ पहुँचा। १२. प्र० १, २, द्वि० ७ सौंह होइ, द्वि० ३, ५, तृ० ३, च० १ सौंह कै हेरा। १३. द्वि० ५, ६, तृ० १ दसौ गए।

[१६२]

तहाँ देखु पदुमावति रामा[1]। भँवर न जाइ न पंखी नामा।
अब सिधि[2] एक देउँ तोहि जोगू। पहिलें दरस होइ तब[3] भोगू।
कंचन मेरु देखावसि जहाँ। महादेव कर मंडप[4] तहाँ।
ओहिक खंड[5] जस परबत मेरू। मेरुहि लागि होइ अति[6] फेरू।
माघ[7] मास पाछिल पख लागें। सिरी[8] पंचिमी होइहि आगें।
उघरिहि महादेव कर बारू। पूजिहि जाइ[9] सकल संसारू।
पदुमावति पुनि पूजै आवा। होइहि एहि मिसु[10] दिस्टि[11] मेरावा।

तुम्ह गवनहु मंडप ओहि हौं पदुमावति पास।
पूजै आइ बसंत जौं पूजै मन कै आस[13]॥

[१६३]

राजैं कहा दरस जौं[1] पावौं। परबत काह[2] गँगन कहँ[3] धावौं।
जेहि परबत पर दरसन लहना। सिर सौं चढ़ौं पाय का कहना।
मोहि भाव ऊँचै सो[4] ठाऊँ। ऊँचे लेउँ प्रीतम के नाऊँ।
पुरुषहि चाहिअ ऊँच हिआऊ। दिन दिन ऊँचे राखे पाऊ।
सदा ऊँच सेइअ पै बारू[5]। ऊँचे सौं कीजै बेवहारू[5]।
ऊँचे चढ़े ऊँच खँड सूझा। ऊँचे पास ऊँचि बुधि[6] बूझा।

---

[१६२] १. द्वि० २ बारां, द्वि० ? नामा। २. प्र० २ सुधि, द्वि० ४, ७ इधि, तृ० १ सुन्द। ३. च० १ तौ। (हिंदी मूल) ४. द्वि० ७ परवत। ५ द्वि० औ खँड खँड, पं० १ औ जो खिखिंद, द्वि० २, च० १ औ खिखिंद। ६. प्र० १, २, द्वि० ५, ७ वह खिखिंद परबत जस, द्वि० ४ औ खँड खँड परवत जस। ७. प्र० २ मर, द्वि० २ तब, द्वि० ५ तस, द्वि० ७ सत, द्वि० १ तन, तृ० १ नित। ८ प्र० २ फागुन, द्वि० ६ माह। ९ द्वि० ३ सबै। १०. प्र० १, द्वि० ७, च० १ आइ। ११. द्वि० ५ वहि दिन। १२. प्र० १ दरस, द्वि० ७ दीन। १३. च० १ तौ पूजै मन आस।

[१६३] द्वि० २, ३ जो दरसन। २. द्वि० २, तृ० १, २ छाड़ि। ३. प्र० ?, द्वि० ६, तृ० १ चढ़ि। ४. प्र० १, तृ० १ मोहूँ भाव ऊँचे सा, द्वि० ५, च० १ मोहि मो भावै उँचै, द्वि० ७ मोहि मन भा। चना सा। ५ प्र० १ दरबारा, बेवहारा। ६. प्र० २, द्वि० २, ३, ४, तृ० ३ मति।

ऊँचे संग संग[७] निति कीजै। ऊँचे काज[८] जीव बलि[९] दीजै।

दिन दिन ऊँच होइ सो जेहि ऊँचे पर चाउ।
ऊँचे चढ़त परिअ जौ[१०] ऊँच न छाड़िअ काउ॥

[१६४]

हीरामनि दै बचा कहानी। चला जहाँ *पदुमावति रानी।
राजा चला सँवारि सो लता[१]। परबत कहँ जो चला परबता।
का परबत चढ़ि देखै राजा। ऊँच मँडप सोनै सब साजा।
अंम्रित फर सब लाग[३] अपूरी। औ तहँ[४] लागि सजीवनि मूरी।
चौमुख[५] मंडप चहूँ[६] केवारा। बैठे देवता चहूँ दुआरा[७]।
भीतर मँडप चारि खँभ लागे। जिन्ह वै छुए पाप तिन्ह[८] भागे।
संख घंट घन[९] बाजहिं सोई। औ बहु होम जाप तहँ होई।

महादेव कर मंडप जगत जातरा[१०] आउ।
जो हिछा[११] मन[१२] जेहि कें सो तैसो फल पाउ॥

[१६५]

राजा बाउर बिरह बियोगी। चेला सहस बीस[१] सँग जोगी।

---

७. द्वि० ७ केर। ८. द्वि० ४, ५ लागि। ९. प्र० १, २, द्वि० १, ३, ७, तृ० ३ पुनि, द्वि० ६ तहि, तृ० १ नित। १०. प्र० २, द्वि० २, ३, ४, ५, ७, च० १ जो खसि परै।

* प्र० १, २, द्वि० ३, ५, ७ में इसके अनंतर एक अतिरिक्त छंद है। (देखिए परिशिष्ट)

[१६४] १. प्र० १, २ मता। २. प्र० १, २ परबत कहा, द्वि० २, तृ० ३ परबत कहँ सो, द्वि० ७ कै परबोध। ३. प्र० १ अमीं सदा फर फरे, प्र० २ सदा अंम्रित फल फले, द्वि० १ अंम्रित हर फर लाग, द्वि० २ अंम्रित फर फर लाग, तृ० ३ अंम्रित भरि फर लाग, द्वि० ४ अंम्रित फर पुनि फरं। ४. द्वि० ७, तृ० ३ बहु। ५. प्र० १, २ चहुँ दिसि। ६. द्वि० ७ चारि। ७. द्वि० ७ चारिउ बारा। ८. तृ० ३ मन। ९. द्वि० ५ निन। १०. प्र० २ मनसि। ११. द्वि० १, ६ प० १ इछा। १२. तृ० ३ होइ।

[१६५] १. द्वि० १ पर, द्वि० ४, तृ० १ नांस।

पदुमावति के दरसन आसा। दँडवत कीन्ह मँडप चहुँ पासा।
पुरुब बार होइ कै सिर नावा। नावत सीस देव पहँ आवा।
नमो नमो नमो नारायन देवा। का मोहि[2] जोग सकौं क र सेवा।
तूँ दयाल सब के उपराहीं। सेवा केरि आस तोहि नाहीं।
ना मोहि गुन न जीभ[4] रस बाता। तूँ दयाल गुन निरगुन दाता।
पुरवौ मोरि ,दास[5] कै आसा। हौं मारग जोवौं हरि स्वाँमा[6]।

तेहि विधि बिनै[7] न जानौं जेहि विधि अस्तुति तोरि।
करु सुदिस्टि औ किरिपा[8] हिछा[9] पुजै[10] मोरि॥

[१६६]

कै अस्तुति जौं[1] बहुत मनावा। सबद अकूट[2] मँडप महँ[3] आवा।
मानुस पेम भएउ[4] बैकुंठी। नाहिं त काह छार एक मूँठी।
पेमहि माहँ[5] बिरह औ[6] रसा। मैन[7] के घर मधु अंब्रित बसा।
निसत धाइ जौं मरै तो काहा। सत जौं करै बैसेइ होइ लाहा[8]।
एक बार जौं मनु कै सेवा। सेवहि फल परसन होइ देवा।
सुनि कै सबद मँडप झनकारा। बैठा आइ[9] पुरुब कै बारा।
पिंड चढ़ाइ छार जेत आँटी। माँटी होइ अंत जौं[11] माँटी।

---

२. द्वि० ६ तोहि। ३. द्वि० ७ करौं का। ४. प्र० २ जीभ न गुन।
५. प्र० १ जगत। ६. द्वि० ७ तू देनिहार निरासन्हि आसा, पुरवनि, हार मोर तुम्ह बाता। ७. प्र० १, द्वि० १, च० १ करौं। ८. प्र० २ मोहि पिउ पर। ९. द्वि० १, ६, तृ० २, प० १ इछा। १०. प्र० १ पुरवहु।

[१६६] १. प्र० २ सिव। २. प्र० १, २, द्वि० २, ५, ६, तृ० ३ अकूत, द्वि० २ अनूप। ३. द्वि० २ मां, द्वि० ७ तैं। ४. प्र० १ पेमहि भा। ५. द्वि० १ महँ पै। ६. प्र० १, द्वि० ४, ६ रस, प्र० २ बोह। ७. द्वि० १ पेम, तृ० ३ मीन, द्वि० ४ मै। ८. प्र० १ सत सौं रहै बैठि सो लाहा, प्र० २ सत जो मरै बैठ होए लाहा, द्वि० २, ५, ३, तृ० १ सत जो करै बैठेह होइ लाहा, द्वि० ४, ६ सत जो करै होए तेहि लाहा। ९. प्र० १ बैठा जाइ, तृ० २ अन्त आइ। १०. द्वि० १ पुरब बार होइ आसन मारा, द्वि० २ पूरब होइहि जोग तुम्हारा। ११. प्र० २ पुर।

माँटी मोल न किछु लहै औ माँटी सब[12] मोल।
दिस्टि जो माँटी सौं करै माँटी होइ अमोल॥

[१६७]

बैठ सिंघ छाला होइ तपा। पदुमावति पदुमावति जपा।
दिस्टि समाधि ओहि सौं[1] लागी। जेहि दरसन कारन बैरागी।
किंगरी गहे बजावै झूरे। भोर साँझ सिंगी[2] निति पूरे।
कंथा जरै आगि जनु लाई। बिरह धँधार जरत न बुझाई।
नैन रात निसि मारग जागे। चकित चकोर जानु ससि लागे।
कुंडल गहें सीस भुइँ लावा। पाँवरि होउँ जहाँ ओहि पावा।
जटा छोरि कै बार बोहारौं। जेहि पँथ होइ सीस तहँ वारौं।

चारिहुँ चक्र फिरै मन खोजत डँड[4] न रहै थिर मार।
होइ के भसम पवन सँग धावौं[5] जहाँ सो प्रान अधार॥

[१६८]

पदुमावति तेहि[1] जोग सँजोगाँ[2]। परी पेम[3] बस गहें बियोगाँ।
नींद न परै रैनि जौं आवा। सेज केवाँछ[4] जानु कोइ लावा[5]।
दहै चाँद[6] औ चंदन चीरू। दगध करै तन बिरह गँभीरू।
कलप[7] समान रैनि हठि बाढ़ी[8]। तिल तिल मरि[9] जुग जुग बर[10] गाढ़ी।

---

12. प्र० १ बहु।

[१६७] 1. प्र० २ दिसि। 2. प्र० २ नाना। 3. तृ० ३ जुग। 4. द्वि० २ दिनहि, च० १ दिन। 5. प्र० १ होउँ सँग भसम पौन होइ जहाँ सो पेम [illegible]।
प्र० २ होए भसम मिलि धावै जहवाँ प्रान [illegible]।
द्वि० ४ होइ बरि भस्म पौन सँग धावौं [illegible] प्रान [illegible]।
पं० १ होइ के भसम पौन मिलि धावौं जहाँ सो प्रान अधार।

[१६८] द्वि० १ जहाँ। 2. प्र० २ जहाँ सँग [illegible], द्वि० ४ जहाँ [illegible] सँजोगा, द्वि० ७ जहाँ बैस सँजोगा। 3. द्वि० ७ प्रेम पीर। 4. द्वि० ४, - [illegible] [illegible]। 5. च० १ [illegible] [illegible]। 6. प्र० २ चाता, तृ० ३ [illegible]। 7. प्र० १ काल। 8. द्वि० १, [illegible], द्वि० [illegible], प० १ [illegible], तृ० १ बढ़ी। 9. तृ० ३ [illegible]। 10. प्र० २ [illegible], तृ० [illegible], द्वि० ३ [illegible]। 11. द्वि० २, ३, ३, [illegible], तृ० १ [illegible]।

पदुमावति के दरसन आसा। दंडवत कीन्ह मँडप चहुँ पासा।
पुरुब बार होइ कै सिर नावा। नावत सीस देव पहँ आवा।
नमो नमो नमो नारायन देवा। का मोहिं[2] जोग सकौं कर सेवा।
तूँ दयाल सब के उपराहीं। सेवा केरि आस तोहि नाहीं।
ना मोहि गुन न जीभ[4] रस बाता। तूँ दयाल गुन निरगुन दाता।
पुरवौ मोरि दास[5] कै आसा। हौं मारग जोवौं हरि स्वाँसा[6]।

तेहि विधि बिनै[7] न जानौं जेहि विधि अस्तुति तोरि।
करु सुदिस्टि औ किरिपा[8] हिछा[9] पूजै[10] मोरि॥

[१६६]

कै अस्तुति जौं[1] बहुत मनावा। सबद अकूट[2] मँडप महँ[3] आवा।
मानुस पेम भएउ[4] बैकुंठी। नाहिं त काह छार एक मूँठी।
पेमहि माहँ[5] बिरह औ[6] रसा। मैन[7] के घर मधु अंब्रित बसा।
निसत धाइ जौं मरै तो काहा। सत जौं करै बैसेइ होइ लाहा[8]।
एक बार जौं मनु कै सेवा। सेवहि फल परसन होइ देवा।
सुनि कै सबद मँडप झनकारा। बैठा आइ[9] पुरुब के बारा।
पिंड चढ़ाइ छार जेत आँटी। माँटी होइ अंत जौं[11] माँटी।

---

२. द्वि० ६ मोहि। ३. द्वि० ७ करौं का। ४. प्र० २ जीभ न गुन। ५. प्र० १ जगत। ६. द्वि० ७ तू देनिहार निरामन्हि आसा, पुरवनि, हार मोर सुनवासा। ७. प्र० १, द्वि० १, च० १ बरौं। ८. प्र० २ मोहि निउ पर। ९. द्वि० १, ६, तृ० २, प० १ इछा। १०. प्र० १ पुरवहु।

[१६६] १. प्र० २ सिव। २. प्र० १, २, द्वि० २, ४, ६, तृ० ३ अकूत, द्वि० ३ अकूप। ३. द्वि० २ मां, द्वि० ७ तें। ४. प्र० १ पेमहि भा। ५. द्वि० १ कहँ पै। ६. प्र० १, द्वि० ४, ६ रस, प्र० २ बोह। ७. द्वि० १ पेम, तृ० ३ मीन, द्वि० ४ मैं। ८. प्र० १ मन सौं रहै बैठि को लाहा, प्र० २ सत जो मरै बैठ होए छाहा, द्वि० २, ५, ३, तृ० १ मन जो मरै बैठेइ होइ लाहा, द्वि० ४, ६ सत जो मरै होए तेहि लाहा। ९. प्र० १ बैठा जाइ, तृ० २ भएउ आइ। १०. द्वि० १ पुरब बार होइ आसन मारा, द्वि० ३ पूरन होइहि जोग तुम्हारा। ११. प्र० २ पुर।

माँटी मोल न किछु लहै औ माँटी मब[12] मोल।
द्रिस्टि जो माँटी सों करै माँटी होइ अमोल॥

[१६७]

बैठ सिंघ छाला होइ तपा। पदुमावति पदुमावति जपा।
दिस्टि समाधि ओहि सौं[1] लागी। जेहि दरसन कारन बैरागी।
किंगरी गहे बजावै झूरै। भोर साँझ सिंगी[2] निति पूरै।
कंथा जरै आगि जनु लाई। बिरह धँधार जरत न बुझाई।
नैन रात निसि मारग जागैं। चकित चकोर जानु ससि लागैं।
कुंडल गहें सीस भुइँ लावा। पाँवरि होउँ जहाँ ओहि पावा।
जटा छोरि कै बार बोहारौं। जेहि पँथ होइ सीस तहँ वारौं।

चारिहुँ चक्र[3] फिरै मन खोजत डँड[4] न रहै थिर मार।
होइ कै भसम पवन सँग धावौं[5] जहाँ सो प्रान अधार॥

[१६८]

पदुमावति तेहि[1] जोग सँजोगाँ[2]। परी पेम[3] बस गहें वियोगाँ।
नींद न परै रैनि जौं आवा। सेज केवाँछ[4] जानु कोइ लावा[5]।
दहै चाँद[6] औ चंदन चीरू। दगध करै तन बिरह गँभीरू।
कलप[7] समान रैनि हठि[8] बाढ़ी[9]। तिल तिल मरि[10] जुग जुग बर[11] गाढ़ी।

---

१२. प्र० १ बहु।

[१६७] १. प्र० १ दिसि। २. प्र० २ गोती। ३. तृ० ३ जुग। ४. द्वि० १ दिनहि, च० १ दिन। ५. प्र० १ होउँ सँग भस्म पौन होइ जहाँ सो पेम पिआर।
प्र० २ होए भसम मिलि धावै जहवाँ प्रान पिआर।
द्वि० ४ होइ करि भसम पौन सँग धावौं सो प्रान अधार।
पं० १ होइ कै भसम पौन मिसि धावौं जहाँ सो प्रान अधार।

[१६८] द्वि० १ तहाँ। २. प्र० २ जहाँ सँग जोगू, द्वि० ४ तहाँ जोग सँजोगा, द्वि० ७ जहाँ पैम सँजोगा। ३. द्वि० ७ प्रेम पीर। ४. द्वि० ४, ५ कौंछ। ५. च० १ सेजनाग होइ हहि हहि खाना। ६. प्र० २ चाँदनी, तृ० २ अंग। ७. प्र० १ काल। ८. द्वि० १, ५ हिएँ, द्वि० २, पं० १ द्रुति, तृ० १ जहँ। ९. तृ० ३ भारी। १०. प्र० १ घर, तृ० ३ भरि, द्वि० ३ जौं। ११. द्वि० १, २, ३, ५, तृ० १ दर।

गहै बीन[12] मकु[13] रैनि बिहाई[14]। ससि बाहन तब[15] रहै ओनाई[16]।
पुनि धनि[17] सिंघ उरेहै लागै। ऐसी बिथा[18] रैनि सब[19] जागै।
कहाँ सो भँवर कँवल रस लेवा। आइ परहु होइ घिरिनि परेवा।

से धनि बिरह पतंग होइ जरा चाह तेहि दीप।
कंत न आवहु भृंगि होइ को चंदन तन लीप॥

[१६६]

परी बिरह बन[1] जानहुँ घेरी। अगम असूझ जहाँ लगि हेरी।
चतुर दिसा चितवै जनु भूली[2]। सो बन कवन जो मालति फूली[2]।
कँवल[3] भँवर ओही बन पावै। को मिलाइ तन तपनि बुझावै।
अंग अनल अस कँवल[4] सरीरा। हिय भा पियर पेम की पीरा।
चहै दरस रवि कीन्ह बिगासू। भँवर दिस्टि महँ कै सो अकासू[5]।
पूँछै धाइ बारि[6] कहु बाता। तूँ जस कँवल करी रँग राता।
केसरि बरन हिया भा तोरा। मानहुँ मनहिं भएउ कछु फोरा[7]।

पवनु न पावै संचरै भँवर न[8] तहाँ पईठ।
भूलि कुरंगिनि कसि भई[9] मनहुँ[10] सिंघ तुइ[11] डीठ॥

१२. तृ० ३ बेनु। १३. तृ० १ बुल। १४. प्र० १ सिराई, द्वि० ७ गँवाई।
१५. द्वि० ४ सब, द्वि० ५, च० १ नित, द्वि० ७ तौ (हिंदी मूल)।
१६. च० १ रहहिं लुभाई। १७. तृ० १ जनु। १८. द्वि० ३ भाँति।
१९ प्र० २ रही, द्वि० ४ सबै।

* तृ० ३ में इसके अनंतर एक अतिरिक्त छंद है। (देखिए परिशिष्ट)।

[१६९] १. प्र० २, तृ० १, च० १ तनु, द्वि० ७ बस। २. द्वि० २ भूला, फूला।
३. द्वि० ७ कवही। ४. प्र० १ अनल भा कँवल, प्र० २ अनग अस करै, तृ० ३ अगिनि अस करै, द्वि० ४ अनँग अस कँवल, द्वि० ७ अगिनि अस कँवल, तृ० १, च० १, पं० १ अंग अस कँवल, द्वि० ३ अनल अस कँवल।
५. द्वि० २ कीन्ह निवासू, द्वि० ७ आव अकासै, द्वि० ३ कँवन प्रकासू, च० १ कँवन विकासू। ६. प्र० १ नारि। ७. प्र० १ मयन किया कछु जोरा, द्वि० १ मनहि भयो कछु थोरा, तृ० १ मनहि और कछु भोरा, तृ० २, पं० १ मनहि भयो कछु भोरा। ८. तृ० ३ नतन। ९. तृ० ३ तसि।
१०. द्वि० ७ कहाँ। ११. द्वि० १ कान्हि।

[१७०]

धाइ सिंघ बरु[1] खातेउ मारी। कै तसि रहति[2] अही जसि बारी।
जोवन सुनेउँ कि नवल बसंतू। तेहि बन[3] परेउ[4] हस्ति मैमंतू।
अब जोवन बारी[5] को राखा[6]। कुंजर बिरह बिधौंसै साखा[6]।
मैं जाना जोवन रस भोगू[7]। जोवन कठिन सँताप बियोगू।
जोवन गरुअ[8] अपेल[9] पहारू। सहि न जाइ जोवन कर भारू।
जोवन अस मैमंत न कोई। नवै हस्ति जौं आँकुस होई।
जोवन भर भादौं जस गंगा। लहरैं देइ समाइ[10] न अंगा[11]।

परी[12] अथाह धाइ हौं[13] जोवन उदधि[14] गँभीर।
तेहिं[15] चितवौं चारिउँ दिसि को गहि लावै तीर॥

[१७१]

पदुमावति तूँ सुबुधि[1] सयानी। तोहि सरि समुँद[2] न पूजै रानी।
नदी समाहिं समुँद महँ आई। समुँद डोलि कहु कहाँ समाई।
अबहीं कँवल करी हिय तोरा। आइहि भँवर जो तो कहँ जोरा।
जोवन तुरै हाथ गहि लीजै[3]। जहाँ जाइ तहँ जाइ न दीजै।
जोबन जो रे मतँग गज[4] अहै। गहु गिआन जिमि आँकुस गहै[5]।
अबहि बारि तूँ पेम न खेला। का जानसि कस होइ दुहेला।

---

[१७०] १. द्वि० ५ पर। २. द्वि० ७ कम नहिं हतउँ। ३. द्वि० ५ पर। ४. प्र० १, द्वि० ७ विरह। ५. द्वि० २, तृ० ३ पारै। ६ तृ० ३ राखी, साखी। ७ द्वि० जो अर सुख भोगू। ८ प्र० २ चारिअ। ९ द्वि० ४ पैल बडु, द्वि० ४ सुमेरु। १०. प्र० २ सहि जाए। ११. तृ० ३ गगा। १२ तृ० ३ परी। १३ तृ० १ पुनि। १४ द्वि० ४ सलिल। १५. प्र० १ चहि, प्र० २, द्वि० २, ३, ४, ५, तृ० १, च० १ तहँ।

[१७१] १. प्र० १, द्वि० २, ४, ५, ७, तृ० १, च० १ समुँद, तृ० २ सुमति। २. प्र० २ बुधि। ३ प्र० २ चए लाजै, प्र० १, द्वि० ७, तृ० ३ देखि कीजे, द्वि० १ महँ कीजै, तृ० १ वहि कीजे। ४. प्र० २ जस मतग गज, द्वि० २ जोर मस्त गज, द्वि० ६, ३ जोर मात गज, द्वि० ७ जोर मैमँत गज।

गँगन दिस्टि करु जाइ[5] तराहीं। सुरुज देखि कर आवै नाहीं[6]।

जब लगि पीउ मिलै तोहिं[8] साधु पेम कै पीर।
जैसें सीप सेवाति कहँ तपै समुँद[9] मँझ नीर[10] ॥

[१७२]

दहै धाइ[1] जोबन औ जीऊ। होइ न बिरह[2] अगिनि महँ घीऊ।
करवत सहौं होत दुइ आधा। सही न जाइ बिरह[3] कै दाधा।
बिरहा सुभर समुँद असँभारा[4]। भँवर मेलि जिउ लहरन्हि मारा[5]।
बिरह नाग होइ सिर चढ़ि डसा। औ होइ अगिनि चँदन[6] महँ बसा[7]।
जोबन पंखी बिरह बिआधू। केहरि भयो कुरंगिनि खाधू।
कनक पान[8] जोबन कत कीन्हा। औ तन कठिन[9] बिरह दुख[10] दीन्हा।
जोबन जलहिं बिरह मसि छुवा[11]। फूलहिं[12] भवर फरहिं भा सुवा।

---

५. प्र० १ आवै, द्वि० १, २, ६, तृ० २, प १ रहै। ६. द्वि० ४ पार। ७. द्वि० ७ जोबन सभौ दहै दुख पाई, भए ठाइ पुनि जिउ पछताई। ८. प्र० १ तोकहँ पिउ मिलै। ९. द्वि० २ सदा। १०. तृ० ३ मँझार।

[१७२] १. प्र० १, द्वि० ४, त० ३, च० १, प० १ रहै न धाइ, प्र० २ दहै धरै, द्वि० २ गहै धाइ, द्वि० ७ रहै धाइ। २. प्र० २, द्वि० ७ होइ न परै, तृ० ३ होइ परै द्वि० ४ जानहु परहिं, द्वि० ५ जानहुँ परा, तृ० १ होइ जनु परेउ, द्वि० ३ होइ सी परै, च० १ होइ तेहि बिरह। ३. प्र० १ जीवन। ४. प्र० १ समुँद आहि है भरा, प्र० २, द्वि० ५ समुँद बिसहर असँभारा, द्वि० २, तृ० १ सुभर समुँद बिसँभारा, द्वि० ४ सुभर समुँद आपारा, द्वि० ७ सुभर समुँद रस भरा, तृ० ३ सुभर समुँद अस भरा। ५. द्वि० २, तृ० ३ भरा। ६. प्र० १, द्वि० २, च० १ चंद महँ, द्वि० ३ चंदमुख। ७. द्वि० १ परगमा। ८. प्र० १, तृ० १, ३, च० १ कनक पानि, प्र० २ कंचन दान। ९. प्र० २ औनत बिरह, तृ० ३ औटन घटन, द्वि० ७ औघट घटन, च० १ जोबन कठिन। १०. प्र० २ कठिन सिर, द्वि० ४ बिरह दहु, द्वि० ६ बिरह जिउ, च० १ बिरह तन। ११. प्र० १, द्वि० ४, ५ जलहि बिरह मसि छुवा, द्वि० २ चल ह बिरह मस लवा, द्वि० ३ लग अंचल लाग,छुवा च० १ जलहि बिरह मिस छुवा, द्वि० ७ जब बिरह मसि छुवा। १२. तृ० १ भोगहि।

जोबन चाँद उवा जस बिरह भएउ सँग राहु[13]।
घटतहि घटत खीन भा कहै[14] न पारौं काहु[15]॥

[१७३]

नन[1] जो[2] चक्र[3] फिरै[4] चहुँ ओराँ। चरचै[5] धाइ समाइ[6] न कोराँ।
कहेसि पेम जौं उपना[7] बारी। बाँधु सत्त मन डोल न भारी[8]।
जेहि जिय महँ सत होइ पहारू[9]। परै पहार न बाँकै बारू।
सती जो जरै[10] पेम पिय[11] लागी। जौं सत हिएँ तौ सीतल आगी।
जोबन[12] चाँद जो चौदसि करा[13]। बिरह कि चिनगि चाँद[14] पुनि जरा।
पवन बंध होइ जोगी जती। काम बंध होइ[15] कामिनि[16] सती।
आउ बसंत फूल फुलवारी। देव बार सब जैहहिं[17] बारी।

पुनि तुम्ह जाहु[18] बसंत लै पूजि मनावहु देव।
जिउ पाइअ[19] जग जनमे[20] पिउ[21] पाइअ कै सेव॥

[१७४]

जब[1] लगि[2] अवधि[3] चाह सो आई[4]। दिन जुग बर[5] बिरहिनि कहँ जाई।

---

१३. तृ० ३ भयो जम, द्वि० ४ संग भाविन, तृ० १ संगभा। १४. द्वि० ५ नति। १५. प्र० १, २, द्वि० ७ पारै काहु, तृ० ३ पारौं ताहु।

[१७३] १. द्वि० २ सुनि। २. द्वि० ५ ज्यौं। ३. तृ० ३ चाक। ४. प्र० २, द्वि० २, ३, ४, ५, तृ० १, च० १ फिरहिं, द्वि० ७ भए। ५. प्र० २ बरजै। ६. तृ० १ समान। ७. प्र० २ कस उपना जोबन। ८. प्र० १ सँनि सँभारि बाँधु तै बारी, द्वि० ५, च० १ बाँधु सत्त मन बोझ बिचारी। ९. प्र० १ अपारू, प्र० २ सँभारू। १०. द्वि० ७ जपै, तृ० ३ मरै। ११. द्वि० ६ पँथ। १२. प्र० २ जेहि बर्न। १३. तृ० १, ३ चौंदसि, च० १ चौदह। १४. प्र० १, द्वि० ४, ५, ६, ७, प० १ सोउ। १५. प्र० १ सो। १६. पं० १ तिरिआ। १७. प्र० २ जो जरहसि। १८. प्र० १ चलहु। १९. तृ० ३ दीा उपार। २०. द्वि० १, ६, तृ० १ जनमि कै, द्वि० ७ जनम लै। २१. प्र० १ सो।

[१७४] १. द्वि० १ जौ (हिंदी मूल)। २. तृ० ३ लहि। ३. द्वि० ७ आवन। ४. द्वि० ३, ४, ५ आइ निअराई। ५. द्वि० ४, ५ जुग, द्वि० ३, तृ० १, च० १ पर।

नींद भूख अह[६] निसि गै दोऊ। हिएँ मास्त[७] जस कलपै कोऊ[८]।
रोवँहि रोवँ लागे जनु चाँटे। सोतहि सोत बेधे विस[९] काँटे।
दगध कराह जरै सब जीऊ[१०]। वेगि न आउ मलैगिरि पीऊ।
कवन देव कहँ जाइ परासौं। जेहि सुमेरु[११] हिय लाइ गरासौं।
गुपुत जो फल साँसहि[१२] परगटे। अब[१३]होइ सुभर चहहिं पुनि घटे[१४]।
भए[१५] सँजोग जौं रे अस[१६] मरना। भोगी भएँ[१७] भोग[१८] का करना।

जोवन चंचल ढीठ[१९] है करै निकाजहिं काज।
धनि कुलवंति जो कुल धरै करि जोबन[२०] महँ[२१]लाज॥

[१७५]

तेहि वियोग हीरामनि आवा। पदुमावति जानहुँ जिउ पावा।
कंठ लागि[१] सो हीरामन[२] रोई। अधिक मोह जो मिलै बिछोई।
आगि[३]बुझी[४]दुख हियँ जो [५]गँभीरू। नैनन्ह आइ चुवा होइ नीरू।

---

६. द्वि० २ वह, द्वि० ३, ५ दिन। ७. प्र० १, २, द्वि० ७ हिएँ भासु जस कलपै कोऊ, द्वि० १, ५, तृ० २, ३ मैन कँवाह्व लाव जनु मोउ (तुलना० १६८.२)। ८.प्र० २ ही, तृ० ३ तनु, द्वि० ८, तृ० १, पं० १ जनु, द्वि० ५ दुख। ९. प्र० १ वरै तस जीऊ, प्र० २, द्वि० ५, तृ० ३ जरै जस धीऊ, द्वि० २ वरै निन जीऊ, द्वि० ३ जरै सब वोऊ। १०. द्वि० १ सुमिरन। ११. प्र० १ परमौं जिउ लाइ गरामी, प्र० २, द्वि० ७ समीर, निय लागि गरामी, द्वि० २ पमाध हिम लाइ गरामी, तृ० ३ सुमिरी हिय लाइ तरामौं, द्वि० ६ ममार होइ लाइ गरासी। १२. प्र० १, २, द्वि० ७ चाहहिं, द्वि० ३, तृ० १, च० १ मासनहिं। १३. द्वि० ५ आप। १४. प्र० १ सुभर चाह होइ रते, द्वि० १ सबहि चाह परगसे, तृ० ३ चहै तन घटे, द्वि० ४ सुभर चहहिं हमगटे, तृ० १ सब जेहि तन महँ घटे। १५. द्वि० २ यह रे। १६. प्र० २ अनि। १७. द्वि० २, ४, ६ भूलइँ गए। १८. द्वि० २ भोगन। १९. द्वि० ४ दीन्ह। २०. द्वि० २ धीरज। २१. द्वि० १, २, ३, ४, ५, ६, तृ० १, प० १ मन।

[१७५] १. द्वि० १ हिएँ लाइ। २. प्र० १ सुआ घर, प्र० २ तेहि औसर, द्वि० १ सो होइ सुर, तृ० ३ अनि गहवरि, द्वि० ४, ५ सुवा सो, द्वि० ६ कै रहि रहि, द्वि० ७ सदो सुर, तृ० २ सुआ सोइ, द्वि० ३ सुवा सँव, च० १ कै बहुत जो। ३. प्र० १ अगिनि। ४. द्वि० ४, तृ० १ उठी। ५. द्वि० २, तृ० २, ३ अहा।

रही रोइ जब पदुमिनि[६] रानी। हँसि पूँछहिं सब सखी सयानी।
मिले रहस चाहिअ भा दूना। कत रोइअ जौं मिलै बिछूना।
तेहि क उतर पदुमावति कहा। बिछुरन दुक्ख हिएँ भरि रहा।
मिला जो[८] आइ हिएँ सुख भरा[९]। वह[१०] दुख नैन नीर[११] होइ ढरा[१२]।

बिछुरंता जब भेंटिऐ सो जानै जेहि नेहु[१३]।
सुक्ख सुहेला उग्गवइ दुक्ख झरै जेउँ मेहु॥

[१७६]

पुनि रानी हँसि कूसल[१] पूँछा। कत गवनेहु पिंजर कै छूँछा।
रानी तुम्ह जुग जुग सुख[२] पाटू। छाज न पंखिहि पिंजर ठाटू।
जौं भा पंख कहाँ थिर रहना। चाहै उड़ा पंखि जौं डहना[३]।
पिंजर महँ जो[४] परेवा[५] घेरा। आइ मँजारि कीन्ह तहँ फेरा।
दिवसेक आइ हाथ पै[६] मेला। तेहि डर[७] बनोबास कहँ खेला[८]।
तहाँ बिआध जाइ[९] नर[१०] साँधा। छूट न पाव[११] मीचु[१२] कर बाँधा।
ओइँ धरि बेचा बाँभन हाथाँ। जंबू दीप गएउँ तेहि[१३] साथाँ[१४]।

तहाँ चित्रगढ़ चितउर[१५] चित्रसेनि कर राज।
टीका दीन्ह[१६] पुत्र कहँ आपु लीन्ह[१७] सिव साज॥

---

६. प्र० १, तृ० १ पदुमावति, द्वि० ७ कै पदुसिनि, द्वि० ३, च० १ जो पदुमिनि। ७. प्र० १ मंग, तृ० १ तब। ८. प्र० १ मिलन जो, प्र० २, तृ० ३ मिला, द्वि० १, २, ३, ६, तृ० २ मिलनहि, द्वि० ४ मिला जो द्वि० ७ मिलत जो, द्वि० ५,६, च० १ मिला तो। ९. प्र० १ हिएँ अहादुस भरा। १०. प्र० १ सो। ११. द्वि० ७ हिएँ। १२. द्वि० २ भरा। १३. प्र० १ यह, प्र० २ से।

[१७६] १. प्र० १, द्वि० ३ कुशल जो, द्वि० १ सुकासो। २. द्वि० ७ मिर। ३. प्र० १ ताकै उड़े रहै नहिं नहना। ४. प्र० १ पिंजरा रहा, द्वि० २ तृ० ३ पिंजर महँ सो। ५. प्र० २ रेव रेव। ६. तृ० ३ तहँ, द्वि० ७ सो। ७. द्वि० १ तृ० ३ दुख हो। ८. द्वि० २ हेरा। ९. प्र० १, द्वि० ५, ७, तृ० १ तहाँ बिआध आइ, प्र० २ तब बिआधा आए, तृ० ३ तहँ बहु ब्याध जाइ। १०. प्र० २, द्वि० १ सर। ११. प्र० २ प्रान। १२. द्वि० २, ७, ३ रिन। १३. प्र० १ हम। १४. प्र० २ सुमिरि ले गा राजा के हाथा। १५. प्र० १ आहि गढ़ चितउर, द्वि० १, ४, ५ चित्र चितउर गढ़। १६. प्र० १ दीन्हेउ। १७. प्र० २, द्वि० ६ आपु कीन्ह, च० १ और कीन्ह। १८. द्वि० १ राज।

[१७७]

बैठ जो राज पिता के ठाऊँ। राजा रतनसेनि ओहि नाऊँ।
का बरनौं धनि देस दियारा[1]। जहँ अस नग उपना उजियारा।
धनि माता धनि[2] पिता बखाना। जेहि कें बंस अंस अस[3] आना[4]।
लखन बतीसौ कुल[5] निरमरा[6]। बरनि न जाइ रूप औ करा।
ओइँ हौं लीन्ह अहा अस भागू। चाहै[7] सोनहि[8] मिला सोहागू।
सो नग देखि हँछा भै मोरी। है यह रतन पदारथ जोरी।
है ससि जोग इहै पै भानू[9]। तहाँ तुम्हार[10] मैं कीन्ह बखानू।

कहाँ[11] रतन रतनाकर[12] कंचन कहाँ[13] सुमेरु।
दैय जौं जोरी दुहुँ[14] लिखी मिलै सो कवनेहु फेर॥

[१७८]

सुनि कै बिरह चिनगि ओहि[1] परी। रतन पाव जौं[2] कंचन करी।
कठिन पेम बिरहा दुख[3] भारी। राज छाड़ि भा जोगि[4] भिखारी।
मालति[5] लागि भँवर जस होई। होइ बाउर निसरा बुधि खोई।
कहेसि पतंग होइ धँसि लेऊँ। सिंघल दीप जाइ जिउ[6] देऊँ।
पुनि ओहि कोउ न छाड़ अकेला। सोरह सहस कुँवर भए चेला।
और गनै को संग सहाई। महादेव मढ़ मेला जाई।
सूरुज[7] परस दरस की ताईं। चितवै चाँद चकोर कि नाईं।

---

[१७७] १. द्वि० १ अपारा, द्वि० ५ दुआरा, च० १ दिपारा। २. प्र० १ राजा औ, द्वि० ६ माता औ। ३. प्र० २ अस जन्मे सयाना, तृ० ३ अस भया सयाना द्वि० ७ हुआ सयाना। ४. यह प का द्वि० ३ में नहीं है। ५. प्र० २, प० १ लाग ६. द्वि० १ सूर निकलक औ। ७. द्वि० २ जनहुँ। ८. द्वि० ७ तेहि अस। ९. द्वि० १ जोग सँजोग जनौ ससि भानू। १०. प्र० १, द्वि० ७ कँवल। ११. द्वि० १ तहाँ। १२. द्वि० ४. ५. तृ० २ रतनागढ, प्र० २, द्वि०७, तृ० ३, च० १ रतनागिरि। १३. प्र० १ मेरु। १४. द्वि० ३ यह।

[१७८] प्र० २ अस, द्वि० ७ एक। २. द्वि० १ जनु, तृ० ३ ज्यों, द्वि० ६ मो। ३. प्र० १ उपना हिय। ४. प्र० १ भा बिरह, च० १ जनु होइ। ५. प्र० २ केतुकि। ६. द्वि० ४, ५ पग। ७. द्वि० ७, अस हुआ सयाना।

जो निति चलै सँवारै पाँखा। आजु जो रहा कालि्ह को राखा।[4]
न जनौं आजु[5] कहाँ[6] दिन[7] ऊवा। आएहु मिलै चलेहु मिलि सुवा।
मिलि कै बिछुरन मरन की आना[8]। कत आएहु जौं चलेहु निदाना[9]।
अनु रानी हौं रहतेउ राँधा। कैसें रहौं बचा कर बाँधा।
ताकरि दिस्टि ऐस[10] तुम्ह[11] सेवा। जैस[12] कूँज मन[13] सहज[14] परेवा।

बसै मीन जल धरती अंबा बिरिख[15] अकास।
जौं रे पिरीति दुहुन महँ अंत होहिं एक पास॥

[१८२]

आवा सुवा बैठ जहँ जोगी। मारग नैन बियोग बियोगी।
आइ पेम रस कहा[1] सँदेसू। गोरख मिला मिला उपदेसू[2]।
तुम्ह कहँ गुरू मया बहु कीन्हा। लीन्ह अदेस आदि कहँ दीन्हा।
सबद एक होइ कहा अकेला। गुरु जस भृंगि फनिग[3] जस चेला।
भृंगि ओहि पंखिहि[4] पै[5] लेई। एकहिं बार छुएँ जिउ देई।

---

४. तृ० ३ (यथा. २) सुनै जो अस धनि जारै वाया, पाग पान नयो सुख राया। ५. द्वि० १, तृ० ३ इहाँ, प्र० २ आहि, तृ० १ अहा, द्वि० ३ मानु। ६. तृ० ३ कहा। ७. प्र० २, ३, द्वि० ३, ६, ७, तृ० १, २, ३, पं० १ दहुँ, द्वि० १ तूँ। ८. प्र० १ बिछूरे चले कि आना, प्र० २ बिछुरन मरन कि आना, द्वि० १ बिछुरन मरन कि आना, द्वि० २ बिछुरन मरन समाना। ९. प्र० २ परामा। १०. प्र० १ वलु व। ११. प्र० १ पथ, प्र० २ तब, तृ० ३ तूँ, तृ० १ कर। १२. प्र० १ रहइँ। १३. प्र० २ बन। १४. प्र० १ हस, प्र० २ रहरं, द्वि० ४, ५ सेज, द्वि० ३ सीम। १५. प्र० २ भमिन मिन्ट, तृ० १ चंदा पुरुष, प्र० १, द्वि० ५, ६ अंबा बसै।

१६. तृ० ३ चलीं पवनि सब गोहने फूल डाल लै हाथ।
बिस्वनाथ की पूजा पदुमावति कै साथ॥

८२] १. द्वि० २, ३, तृ० ३ परेवै कहा, प्र० १ कहा तेहि तहाँ, तृ० १ सुवैं रन कहा। २. द्वि० ७ अदेसा, मिरा अँदेसा। ३. द्वि० १, २, ४, ५, ६ पतँग, पं० १ पंखि। ४. प्र० १ भृंगी आहि फनिग, द्वि० ५ भृंगी ओहि पतंग, द्वि० ७ भृंग है ओहि फनिग, तृ० २ भ[illegible]हि पखि। ५. द्वि० ७, तृ० २ गहि द्वि० ३ जो। ६. [illegible] द्वि० २ चढ़ै, द्वि० ४, ५ चढ़ै, तृ० १, ३ गहै।

आगि बुझाइ ढोइ जल काढ़ै[4]। यह न बुझाइ आगि असि[5] बाढ़ै।
बिरह कि आगि सूर नहिं टिका[6]। राति हुँ दिवस जरा औ चिका[8]।
खिनहिं सरग खिन जाइ पतारा। थिर न रहै तेहि आगि अगारा।[9]
धनि सो जीव दगध इमि सहा[10]। तैस जरै[11] नहिं दोसर कहा[12]।
सुलुगि सुलुगि भीतर होइ स्यामा। परगट होइ न कहा दुख नामा[13]।

काह[14] कहौं मैं ओहि कहँ[15] जेइ दुख कीन्ह अमेंट[16]।
तेहि दिन आगि करौं यह बाहर[17] होइ जेही दिन भेंट[18]॥*

[१८१]

हीरामनि जौं कही रस[1] बाता। पाएउ पान भएउ मुख राता[2]
चला सुआ रानी तब कहा। भा जो परावा सो कैसें रहा

---

४. प्र० २ धाइ जल काढ़ै, द्वि० ?, तृ० १ दुहूँ जल काढ़ै, द्वि० ५, ३ दुहुँ जग गाढ़ै, द्वि० ४ धोइ जल गाढ़ै, तृ० ३ धोइ जल काढ़ै। ५. प्र० १, द्वि० ४, ५, ३ अति, तृ० ३ अति। ६. द्वि० १ रहै, द्वि० पंथ। ७. पं० १ जुड़ाई, जरै अधिकाई। ८. प्र० १ फिरै रस बिका प्र० २ जरै अधिका। ९. तृ० २ में यह पंक्तियाँ नहीं हैं। प्रति पहिले खंडित हो गई थी, बाद को ठीक की गई, किंतु नए पृष्ठ का प्रारम्भ अगले छंद की तीसरी पंक्ति से किया गया। मूल प्रति की अगली पंक्ति 'बिरह कि आगि' थी, यह निचले हाशिए पर लिखे हुए इन शब्दों से प्रकट है। १०. प्र० २ सहई। ११. द्वि० २ अवसर जरै, द्वि० ४, ५ अैस जरै। १२. प्र० २ दोसर होय समाई, द्वि० २ नहिं दोसर चहा, च० १ जरि जाइ न कहा। १३ प्र० २ स्यामा, न काहु दुख नामा, द्वि० २ स्यामा, न देखा दुख नामा, द्वि० ४, ५, ३ स्यामा, न काढ़ै नामा, द्वि० ७ बासा, न कहै दुख नासा। १४. द्वि० २, तृ० १ कहै। १५ प्र० १ बाढ़ि दई सौं, द्वि० ? मौं पहिलौं, द्वि० ६ जो हा हर ठाउँ। १६. प्र० २, द्वि० १, ४, ५, ७, पं० १ निमेंट, द्वि० २ सो भेंट, द्वि० ३ निचेत, तृ० १ सचेत। १७. प्र० १ होइ उर बाहर, द्वि० २ निकस यह बाहर, च० १ करौं घर बाहर। १८. प्र० १ जब प्रीतम सौं भेंट, प्र०२, द्वि० ४, ५, ७ जेहि दिन होइ सो भेंट, तृ० ३ होइ प्रीतम सो भेंट, तृ० १, च० १ होइहि जेहि दिन भेंट।

* प्र० १, २, द्वि० १, २, ३, ४, ५, ६, ७, तृ० २, च० १, पं० १ में यहाँ एक अतिरिक्त छंद है। (देखिए परिशिष्ट)

[१८१] १. प्र० २ सुनी रस, तृ० ३ कही या। २. तृ० १ पंथिनी कहँ मोहर मेराऊ, देहु पान जे तरवाँ आऊँ। ३. तृ० २ में छंद १८० की पंक्तियों की भाँति यह पंक्तियाँ भी नहीं हैं।

ाो निति चलै सँवारै पाँखा। आजु जो रहा कालिह को राखा।[४]
ने जनौं आजु[५] कहाँ[६] दिन[७] उवा। आएहु मिलै चलेहु मिलि सुवा।
'मिलि कै बिछुरन मरन की आना[८]। कत आएहु जौं चलेहु निदाना[९]।
'अनु रानी हौं रहतेउ राँधा। कैसें रहौं बचा कर बाँधा।
ताकरि दिस्टि ऐस[१०] तुम्ह[११] सेवा। जैस[१२] कूँज मन[१३] सहज[१४] परेवा।

बसै मीन जल धरती अंबा बिरिख[१५] अकास।
जौं रे पिरीति दुहुन महँ अंत होहिं एक पास॥

[१८२]

आवा सुवा बैठ जहँ जोगी। मारग नैन बियोग बियोगी।
आइ पेम रस कहा[१] सँदेसू। गोरख मिला मिला उपदेसू[२]।
तुम्ह कहँ गुरू मया बहु कीन्हा। लीन्ह अदेस आदि कहँ दीन्हा।
सबद एक होइ कहा अकेला। गुरु जस भृंगि फनिग[३] जस चेला।
भृंगि ओहि पंखिहि[४] पै[५] लेई। एकहिं बार छुएँ जिउ देई।

---

४. तृ० ३ (पथा. २) सुनै जो अस धनि जारै पाया, पाग पान भयो सुख राया। ५. द्वि० १, तृ० ३ इहाँ, प्र० २ आहि, तृ० १ अहा, द्वि० ३ भानु। ६. तृ० ३ कहा। ७. प्र० २, २, द्वि० ३, ६, ७, तृ० १, २, ३, पं० १ दहुँ, द्वि० १ तुं। ८. प्र० १ बिछुरे चले कि आना, प्र० २ बिछुरन मरन कि आसा, द्वि० १ बिछुरन मरन कि जाना, द्वि० २ बिछुरन मरन समाना। ९. प्र० २ परासा। १०. प्र० १ वछु क। ११. प्र० १ पंथ, प्र० २ तव, तृ० ३ तूँ, तृ० १ कर। १२. प्र० १ कहइँ। १३. प्र० २ बन। १४. प्र० १ हंस, प्र० २ रहई, द्वि० ४, ५ सेज, द्वि० ३ सीम। १५. प्र० २ अंमित सिष्ट, तृ० २ चंदा पुरुष, प्र० १, द्वि० ५, ६ अंबा बसे।

१६. तृ० ३ चली पवनि सब गोदने फूल डाल लै हाथ।
बिस्वनाथ की पुजा पदुमावनि के साथ॥

[१८२] १. द्वि० २, ३, तृ० ३ परेवै कहा, प्र० १ कहा तेहि तहाँ, तृ० १ सुवैं रस कहा। २. द्वि० ७ अदेसा, मिटा अँदेसा। ३. द्वि० १, २, ४, ५, ६ पतँग, पं० १ पंखि। ४. प्र० २ भृंगी आहि फनिग, द्वि० ५ भृंगी ओहि पतंग, द्वि० ७ भृंग वै ओहि फनिग, तृ० १ भृंगी ओहि पंखि। ५. द्वि० ७, तृ० १ गहि द्वि० ३ जौ। ६. द्वि० १ जानु, द्वि० २ चहै, द्वि० ४, ५ चहै, तृ० १, ३ गहै।

[१७७]

बैठ जो राज पिता के ठाऊँ। राजा रतनसेनि ओहि नाऊँ।
का बरनौं धनि देस दियारा[1]। जहँ अस नग उपना उजियारा।
धनि माता धनि[2] पिता बखाना। जेहि कें बंस अंस अस[3] आना[4]।
लखन बतीसौ कुल[5] निरमरा[6]। बरनि न जाइ रूप औ करा।
ओइँ हौं लीन्ह अहा अस भागू। चाहैं[7] सोनहिं[8] मिला सोहागू।
सो नग देखि इछा भै मोरी। है यह रतन पदारथ जोरी।
है ससि जोग इहै पै भानू[9]। तहाँ तुम्हार[10] मैं कीन्ह बखानू।

कहाँ[11] रतन रतनाकर[12] कंचन कहाँ[13] सुमेरु।
दैय जौं जोरी दुहुँ[14] लिखी मिलै सो कवनेहु फेर॥

[१७८]

सुनि कै बिरह चिनगि ओहि[1] परी। रतन पाव जौं[2] कंचन करी।
कठिन पेम बिरहा दुख[3] भारी। राज छाड़ि भा जोगि[4] भिखारी।
मालति[5] लागि भँवर जस होई। होइ बाउर निसरा बुधि खोई।
कहेसि पतंग होइ धँसि लेऊँ। सिंघल दीप जाइ जिउ[6] देऊँ।
पुनि ओहि कोउ न छाड़ अकेला। सोरह सहस कुँवर भए चेला।
और गनै को संग सहाई। महादेव मढ मेला जाई।
सूरुज[7] परस दरस की ताईं। चितवै चाँद चकोर कि नाईं।

---

[१७७] १. द्वि० १ अपारा, द्वि० ५ दुमारा, च० १ दिपारा। २. प्र० १ राजा औ, द्वि० ६ माता औ। ३. प्र० २ मन जन्मे समाना, तृ० २ अस रूपा सयाना द्वि० ७ हुआ सयाना। ४. यह पद्क द्वि० २ में नहीं है। ५ प्र० २, पं० १ जग ६ द्वि० १ सुर निरमल औ। ७. द्वि० २ जानहुँ। ८ द्वि० ७ तहि अस। ९ द्वि० १ जोग सँजोग जनौं ससि भानू। १०. प्र० १, द्वि० ७ कँवल। ११ द्वि० १ तहाँ। १२. द्वि० ४ ५ तृ० २ रतनागढ, प्र० २, द्वि० ७, तृ० ३, च० १ रतनागिरि। १३. प्र० १ मेरु। १४ द्वि० ३ यह।

[१७८] प्र० २ अस, द्वि० ७ पव। २. द्वि० १ जनु, तृ० ३ ज्यों, द्वि० ६ सा। ३. प्र० १ उपना हिय। ४. प्र० १ भा बिरह, च० १ जनु होइ। ५. प्र० २ केतुकि। ६. द्वि० ४, ५ पग। ७. द्वि० ७, अस हुआ सयाना।

तुम्ह बारीं रस जोग जेहि[8] कँवलहि जस अरघानि[9]।
तस[10] सूरुज परगासि कै भँवर मिलाएउँ आनि ॥

[१७९]

हीरामनि जौं कही रस[1] बाता। सुनि कै रतन[2] पदारथ राता।
जस सूरुज देखत होइ ओपा। तस भा बिरह[3] काम दल कोपा।
पै सुनि जोगी केर बखानू। पदुमावति, मन भा अभिमानू[4]।
कंचन जौं कसिऔ कै ताता। तब जानिअ दहुँ पीत कि राता[5]।
कंचन करी न काँचहि लोभा। जौं नग होइ पाव तब[6] सोभा।
नग कर मरम सो जरिया जाना। जरै[7] जो[8] अस नग हीर पखाना[9]।
को अस हाथ[10] सिंघ मुख घाला[11]। को यह बात पिता सौं चाला।

सरग इंद्र डरि काँपै बासुकि डरै पतार।
कहाँ अैस बर[12] प्रिथिमी मोहि[13] जोग[14] संसार ॥

[१८०]

तूँ रानी ससि कंचन करा। वह नग रतन सूर[1] निरमरा।
बिरह बजागि बीच का[2] कोई। आगि जो छुवै जाइ जरि[3] सोई।

---

8. प्र० १ रस भोग जेहि, द्वि० ३ रस भोग चइ, प्र० २ सजोग चइ, तृ० १ अस जोग जेहि। 9. प्र० १, द्वि० ७ अघरानि। 10. प्र० २ कै।

[१७९] 1. प्र० २ एक, द्वि० ४, ५, ७ यह। 2. द्वि० ७ रग। 3. प्र० १ ओप, च० १ त्रिरम। 4. प्र० १ भण्ड गियानू। 5. प्र० २ में यह पंक्ति नहीं है। 6. द्वि० ४, ५ जुरै होइ तब, तृ० ३ होइ तौ पावै (हिंदी मूल), द्वि० ७ पाव तबहि पै। 7. तृ० ३ जुरै। 8. प्र० २ जरिअ। 9. प्र० २ देखि बखाना, प्र० १, द्वि० २, ३, ४, ५, ७, तृ० १, च० १ हेरि बखाना। 10. द्वि० २ नाथ। 11. प्र० १ को अस सिद्ध देउँ जैमाला। 12. द्वि० २ पर। 13. तृ० ३ जो मोहि। 14. तृ० १ जो गत।

[१८०] 1. प्र० १ रतनजोति, द्वि० ३, ७ रतनसेनि। 2. प्र० १, २ वचा का, द्वि० २ सीज का, द्वि० ४, ५ बीति गा, द्वि० ३, च० १ बीज का। 3. द्वि० ७ मरि।

आगि बुझाइ ढोइ जल काढ़ै[४]। यह न बुझाइ आगि असि बाढ़ै।
बिरह कि आगि सूर नहिं टिका[५]। राति हुँ दिवस जरा औ धिका[८]।[९]
खिनहिं सरग खिन जाइ पतारा। थिर न रहै तेहि आगि अपारा।[९]
धनि सो जीव दगध इमि सहा[१०]। तैस जरै[११] नहिं दोसर कहा[१२]।[९]
सुलुगि सुलुगि भीतर होइ स्यामा। परगट होइ न कहा दुख नामा[१३]।[९]

काह[१४] कहौं मैं ओहि कहँ[१५] जेइ दुख कीन्ह अमेंट[१६]।[९]
तेहि दिन आगि करौं यह बाहर[१७] होइ जेही दिन भेंट[१८]।।[९]*

[१८१]

हीरामनि जौं कही रस[१] बाता। पाएउ पान भएउ मुख राता[२]।[३]
चला सुआ रानी तब कहा। भा जो परावा सो कैसें रहा।[३]

---

४. प्र० २ घाइ जल काढ़ै, द्वि० ?, तृ० १ दुहूँ जल काढ़ै, द्वि० ५, ३ दुहूँ जग गाढ़ै, द्वि० ४ धोइ जल गाढ़ै, तृ० ३ धोइ जल काढ़ै। ५. प्र० १, द्वि० ४, ५, ३ अति, तृ० ३ अनि। ६. द्वि० १ तहँ, द्वि० ३ पंथ। ७. पं० १ जुड़ाई, जरै अधिकाई। ८. प्र० १ फिरै तस धिका, प्र० २ जरै अधिका। ९. तृ० २ में यह पंक्तियाँ नहीं हैं। प्रति पहिले खंडित हो गई थी, बाद को ठीक की गई, किंतु नए पृष्ठ का प्रारम्भ अगले छंद की तीसरी पंक्ति से किया गया। मूल प्रति की अगली पंक्ति 'बिरह कि आगि' थी, यह निचले हाशिए पर लिखे हुए इन शब्दों से प्रकट है। १०. प्र० २ सहई। ११. द्वि० २ अवसर जरै, द्वि० ४, ५ अैस जरै। १२. प्र० २ दोसर होए समाई, द्वि० २ नहिं दोसर चहा, च० १ करि जाइ न कहा। १३ प्र० २ स्यामा, न काहु दुख नामा, द्वि० २ स्यामा, न देखा दुख नामा, द्वि० ४, ५, ३ स्यामा, न काढ़ै नामा, द्वि० ७ बासा, न कहँ दुख नासा। १४. द्वि० २, तृ० १ कहँ। १५. प्र० १ वाहि दई सौं, द्वि० २ भी एहिमों, द्वि० ६ जो हा हर ठाऊँ। १६. प्र० २, द्वि० १, ४, ५, ७, पं० १ निमेंट, द्वि० २ सो मेंट, द्वि० ३ निचेत, तृ० १ सुचेत। १७. प्र० १ होइ उर बाहर, द्वि० २ निकस यह बाहर, च० १ करौं घर बाहर। १८. प्र० १ जब प्रीतम सौं भेंट, प्र० ?, द्वि० ४, ५, ७ जेहि दिन होइ सो भेंट, तृ० ३ होइ प्रीतम सो भेंट, तृ० १, च० १ होइहि जेहि दिन भेंट।

* प्र० १, २, द्वि० ?, २, ३, ४, ५, ६, ७, तृ० १, च० १, पं० १ में यहाँ एक अतिरिक्त छंद है। (देखिए परिशिष्ट)

[१८१] १. प्र० २ सुनी एक, तृ० ३ कही यह। २. तृ० ३ पंक्तियाँ कहँ नोहर भेराऊ, देहु पान मैं तहवाँ जाऊँ। ३. तृ० २ में छंद १८० की पंक्तियों की भाँति यह पंक्तियाँ भी नहीं हैं।

जो निति चलै सँवारै पाँखा। आजु जो रहा काल्हि को राखा।[४]
न जनौं आजु[५] कहाँ[६] दिन[७] उवा। आएहु मिलै चलेहु मिलि सुवा।
मिलि कै बिछुरन मरन की आना[८]। कत आएहु जौं चलेहु निदाना[९]।
अनु रानी हौं रहतेउ राँधा। कैसें रहौं बचा कर बाँधा।
ताकरि दिस्टि अैस[१०] तुम्ह[११] सेवा। जैस[१२] कूँज मन[१३] सहज[१४] परेवा।

वसै मीन जल धरती अंबा बिरिख[१५] अकास।
जौं रे पिरीति दुहुन महँ अंत होहिं एक पास॥

[१८२]

आवा सुवा बैठ जहँ जोगी। मारग नैन बियोग बियोगी।
आइ पेम रस कहा[१] सँदेसू। गोरख मिला मिला उपदेसू[२]।
तुम्ह कहँ गुरू मया बहु कीन्हा। लीन्ह अदेस आदि कहँ दीन्हा।
सबद एक होइ कहा अकेला। गुरु जस भृंगि फनिग[३] जस चेला।
भृंगि ओहि पंखिहि[४] पै[५] लेई। एकहिं बार छुएँ जिउ देई।

---

४. तृ० ३ (यथा. २) सुनै जो अस धनि जारै बाचा, पावा पान भयो सुख राया। ५. द्वि० १, तृ० ३ इहाँ, प्र० २ आहि, तृ० १ अहा, द्वि० ३ भानु। ६. तृ० ३ कहा। ७. प्र० २, ३, द्वि० ३, ६, ७, तृ० १, २, ३, पं० १ दहुँ, द्वि० १ तू॑। ८. प्र० १ बिछूरे चले कि आना, प्र० २ बिछुरन मरन कि आसा, द्वि० १ बिछुरन मरन कि जाना, द्वि० २ बिछुरन मरन समाना। ९. प्र० २ परामा। १०. प्र० १ वछुन। ११. प्र० १ पथ, प्र० २ तब, तृ० ३ तूँ, तृ० १ कर। १२. प्र० १ कहहूँ। १३. प्र० २ मन। १४. प्र० १ हंस, प्र० २ रहई, द्वि० ४, ५ सेज, द्वि० ३ सीम। १५. प्र० २ भमिन मिच्छ, तृ० १ चंदा पुरुष, प्र० १, द्वि० ५, ६ अंबा बसै।

१६. तृ० ३ चली पदमिनि सब गोहने फूल डाल लै हाथ।
बिस्वनाथ की पूजा पदुमावति के साथ॥

[१८२] १. द्वि० २, ३, तृ० ३ परेवै कहा, प्र० १ कहा तेहि तहाँ, तृ० १ सुवैं रस कहा। २. द्वि० ७ अदेसा, मिरा अँदेसा। ३. द्वि० १, २, ४, ५, ६ पतँग, पं० १ पंखि। ४. प्र० १ भृंगी आहि फनिग, द्वि० ५ भृंगी ओहि पतंग, द्वि० ७ भृंग बै ओहि फनिग, तृ० १ भृंगी ओहि पंखि। ५. द्वि० ७, तृ० १ गहि द्वि० ३ औ। ६. द्वि० १ जानु, द्वि० २ चहै, द्वि० ४, ५ चहै, तृ० १, ३ गहे।

ताकहँ गुरू[७] करै असि माया[८]। नव अवतार देइ नै काया[९]।
होइ अमर अस मरि कै जिया[१०]। भँवर कँवल मिलि कै मधु[११] पिया।

आवै रितु बसंत जब तब मधुकर तब बासु[१२]।
जोगी जोग जो इमि[१३] करहिं[१४] सिद्धि समापति तासु॥

[१८३]

दैय दैय कै सिसिर[१] गँवाई। सिरी पंचिमी पूजी[२] आई।
भएउ हुलास नवल रितु माँहाँ। खिनु न सोहाइ धूप औ छाहाँ।
पदुमावति सब सखी हँकारीं[३]। जावँत सिंघल दीप की बारीं[३]।
आजु बसंत नवल रितुराजा[४]। पंचिमि होइ[५] जगत सब साजा।
नवल सिंगार बनाफति[६] कीन्हा। सीस परासन्ह[७] सेंदुर दीन्हा[८]।
बिगसि फूल फूले[९] बहु[१०] बासाँ। भँवर आइ लुबुधे चहुँ पासाँ।[११]
पियर पात दुख झरे निपाते[१२]। सुख पालौ[१३] उपने[१४] होइ राते।

अवधि आइ सो पूजी[१५] जो इंछा मन कीन्ह।
चलहु देव मढ़ गोहने चहौं सो पूजा दीन्ह[१६]॥

---

७. प्र० १, २, च० १ जाकहँ, द्वि० ३ तोकहँ। ८. द्वि० ५ मया भल कीन्हा। ९. द्वि० ५ कया नव दीन्हा। १०. तृ० १ हुवा हुवा अस को मरजिआ। ११. प्र० १ रस। १२. द्वि० २ पूजे मन आस, तृ० २ मधु कर बनवास। १३. प्र० २ सोर, तृ० १ अमर। १४. द्वि० ४, ५, ६ सहहिं।

[१८३] १. द्वि० १, २, ३, ६, ७, तृ० ३, च० १ मो रितु, द्वि० ४, ५, पं० १ सुरितु। २. प्र० १ पहुँची। ३. द्वि० ५ बोलाईं, की सब आईं। ४. प्र० २ मित्र बर्त आदि सब के राजा। ५. तृ० ३ पंचन सोर। ६. प्र० १ बनस्पति, प्र० २ सबन्हि तहाँ, द्वि० १ बना सब। ७. द्वि० ५ भरा सब, द्वि० ३ बना अस। ८. प्र० २ सब मिलि चलीं पदुमावति पाहाँ। ९. द्वि० ४ कँवल फूल। १०. प्र० २, द्वि० ७, तृ० ३ चहुँ। ११. प्र० २ में यह पंक्ति छूट गई है। १२. द्वि० ७ में नौ पाते। १३. द्वि० ४ पल्हपा, च० १ पलुहा। १४. प्र० १ निसरे। १५. प्र० १ पहुँची। १६. प्र० १, २, द्वि० १, तृ० ३ कीन्ह।

[१८४]

फिरी आन रितु[1] बाजन बाजे। औ सिंगार सब बारिन्ह साजे।
कँवल करी पदुमावति रानी। होइ मालति जानहुँ बिगसानी[2]।
सारा मँदर पहिर भल चोला[4]। पहिरे ससि[5]जस[6] नखत अमोला।
सखी कमोद[7] सहस दस संगा। सबै सुगंध चढ़ाए अंगा।
सब राजा रायन्ह कै बारीं। बरन बरन पहिरें सब[8] सारीं।
सबै सुरूप पदुमिनी जाती। पान फूल सेंदुर सब[9] राती।
करहिं कुरेरैं[10] सुरँग[11] रँगीलीं। औ चोवा चंदन सब गीलीं[12]।[13]

चहुँ दिसि रही[14] बासना फुलवारी असि फूलि।
वह बसंत सौं भूली[15] गा बसंत ओहिं भूलि[16]॥

[१८५]

भै अहान[1] पदुमावति चली। छतीस कुरी भैं[2] गोहने भली।
भैं कोरी सँग[3] पहिरि पटोरा। बाँभनि ठाउँ[4] सहस अँग मोरा।
अगरवारिनि गज गवन करेई। बैसिनि पाव हंस गति देई।

---

[१८४] [1] द्वि० ३ मत्र। [2]. प्र० १, च० १ बिहसानी। [3]. द्वि० ३ नार अमोन। [4]. प्र० १, २ पहिरे चोना, अमोला, तृ० ३ पहिरि भलि चोली, अमोली। [5]. प्र० १, २, द्वि० ४, ५, ३ मरे सीम। [6]. द्वि० १ सव। [7]. द्वि० १ कोटि, तृ० १ कतोर। [8]. प्र० १, २, द्वि० १ तन। [9]. प्र० १ रँग। [10]. प्र० १ करहिं जो करीं, च० १ करहीं घली, प्र० २ द्वि० ३, ७, तृ० २ करहीं वेलि, द्वि० ४ करहिं किलोल, द्वि० ५ करहिं कुल्लेल, तृ० १ खेडैं परैं। [12]. प्र० १ मिली, प्र० २, द्वि० ५ मीली, द्वि० ४ सोली, द्वि० ७ सियला। [13]. प्र० २ में इसके स्थान पर (यथा . ७) पदुमावति महादेव पूजै चली, करहिं केलि सुरंग रँगीली। और (यथा . ८) ओवा चोवा चंदन सब मोला, सखिन्ह हाथ पिचुकारी भली। [14]. प्र० १, द्वि० ६, ७, प० १ रही बसान, द्वि० ५ चहुँ दिसि रही बसाइ।

[१८५] प्र० १ भै नहान, प्र० २ भै आहनी, तृ० ३ भै पयान, द्वि० ३, ४, तृ० २ भै आहाँ, द्वि० ७ चढ़ि बेवान। [2]. प्र० १ मत्र, प्र० २ भत्र, तृ० ३ सो। [3]. प्र० १ चली कुँवारिनि, प्र० २ भा गौरी, तृ० ३ भै गवने, द्वि० ४, ५ भै गौरी, द्वि० ६, ७, च० १, प० १ भै कुँवारि, द्वि० ३ भै गौरिनि। [4]. द्वि० ४ आइ।

चंदेलिनि ठवँकन्ह[5] पगु ढारा। चली चौहानी होइ झनकारा।
चली सोनारि सोहाग सोहाती[6]। औ कलवारि पेम मधु माँती।
बानिनि भल[7] सेंदुर दै माँगा। कैथिनि चली समाइ न आँगा[8]।
पटुइनि पहिरि सुरँग[9] तन चोला। औ बरइनि मुख सुरस[10] तँबोला[11]।

चलीं पवनि सब गोहने फूल डालि लै हाथ।
बिस्वनाथ[12] की पूजा पदुमावति के साथ ॥*

[१८६]

कँवल सहाय[1] चलीं फुलवारीं। फर फूलन्ह कै[2] इछा बारीं।
आपु आपु महँ करहिं जोहारू। यह बसंत सब कर तेवहारू।
चहीं मनोरा[3] झूमक[4] होईं। फर औ फूल लेइ[3] सब कोई।
फागु खेलि पुनि दाहब होली। सैंतब खेह उड़ाउब झोली।
आजु साज[5] पुनि देवस न दूजा। खेलि बसंत लेहु दै[6] पूजा।
भा आएसु पदुमावति केरा। बहुरि न आइ करब हम फेरा।
तस हम कहँ होइहि रखवारी। पुनि हम कहाँ कहाँ यह बारी।

पुनि रे चलब घर आपुन पूजि बिसेसर देउ।
जेहिका होइ हो खेलना आजु खेलि हँसि[7] लेउ॥

---

[5]. प्र० १, तृ० १, च० १ ठवकन्ह। [6]. तृ० ३ सो राती। [7]. प्र० १, द्वि० ४, च० १, पं० १ बानिनि चनि, प्र० २ मालिनि चलीं, द्वि० १ बानिनि फूलु। [8]. प्र० २ चलीं बरइनी मोरत अंगा। [9]. प्र० २ चली गंध, पं० १ न चली सुरंग। [10]. प्र० १, द्वि० २, ७ सुरँग, द्वि० ४, ५, तृ० २, ३ स्नान, द्वि० ३, च० १ रान, द्वि० ६ राइ। [11]. प्र० २ कैथिनि चली सुरस भरे तँबोला। [12]. द्वि० २ बेहा नहिं।

* इसके अनंतर प्र० १, २ द्वि० १, २, ४, ५, ६, तृ० ३ में एक अतिरिक्त छंद है। (देखिए परिशिष्ट)।

[१८६] [1]. प्र० १ गवन सुहाय, तृ० ३ कँवल सुभाव, द्वि० ४ कँवल सुभाय। [2]. च० १ लै। [3]. प्र० १ करहिं मनोहर, प्र० २ करि मंडल। [4]. प्र० २ झमकावहु। [5]. प्र० १ खेल, द्वि० ४, ५ छोड़ि। [6]. प्र० १ चनहु कै, प्र० २ लेहु कै। [7]. प्र० १, तृ० २, च० १, पं० १ भो।

[१८७]

काहूँ गही आँब कै डारा। काहूँ बिरह जाँबु अति[1] भारा।
कोइ नारँग कोइ झार चिरौंजी[2]। कोइ कटहर बड़हर कोइ न्यौंजी[3]।
कोइ दारिउँ कोइ दाख सो[4] खीरी[5]। कोइ सदाफर तुरँज जँभीरी।
कोइ जैफर औ लौंग[6] सुपारी। कोइ कमरख कोइ गुवा[7] छुहारी[8]।
कोइ बिजौर[9] कोइ नरियर जोरी[10]। कोइ अँबिलि कोइ महुव खजूरी[11]।
कोइ हरफा रेउरी[11] कसौंदा। कोइ अँवरा[12] कोइ बेर[13] करौंदा।
काहूँ गही केरा की घौरी। काहूँ हाथ परी निबकौरी।

काहूँ पाई[14] निअरैं काहूँ कहँ गए दूरि[15]।
काहूँ खेल भएउ बिख काहूँ अंम्रित मूरि[16]।

[१८८]

पुनि बीनहि सब फूल सहेली। जो जेहि आस पास रहु[1] बेली।
कोइ केवरा कोइ चंप नेवारी। कोइ केतुकि मालति फुलवारी।
कोइ सदबरग कुंद औ[2] करनाँ। कोइ चँबेलि नागेसरि बरनाँ[3]।
कोइ सो गुलाल सुदरसन कूजा। कोइ सोनजरद पाव भलि पूजा[4]।
कोइ बोलसिरि[5] पुहुप बकौरी। कोइ रुपमाँजरि कोइ गुनगौरी[6]।
कोइ सिंगारहार तिन्ह पाहाँ[7]। कोइ सेवती[8] कदम की छाहाँ।

---

[१८७] १. प्र० १ बरदा ना मुन. प्र० २ जाँबु अस, द्वि० १ फरी चाँप, तृ० ३ जाँबु अरु, द्वि० २, ३, ४, ६, तृ० १, च० १ चाँर अति। २. प्र० २ रंग जँभीरी। ३. प्र० २ खोरी। ४. प्र० १ जो। ५. द्वि० ४ खरीरी, च० १ कोर सीरी। ६. प्र० १ गुत्रा। ७. प्र० १ लौंग। ९. द्वि० २ बज को, प्र० २ गुआ। १०. प्र० २ तुरै, खजूरै। ११. प्र० १ हर बहेरा, द्वि० ४, ५ कोइ चूर, द्वि० ६ कोई राय। १२. प्र० २ द्वि० ५, ६, प० १ अनार। १३. प्र० १ पियर। १४. प्र० १ पावा। १५. प्र० १ काहू गइ बड़ि दूरि, प्र० २ काहू पाई दूरि, द्वि० ६ काहूँ कहँ भा दूरि। १६. प्र० १ सजीवन मूरि।

[१८८] १. प्र० १, २, तृ० २ तेहि, द्वि० १ तहाँ, द्वि० ४ सब। २. प्र० १, २ कोर। ३. द्वि० ५, च० १ कोइ केसरि। ४. प्र० १, २ भल। ५. प्र० १ धौल सिरी कोइ। ६. प्र० १, २, द्वि० ६, तृ० ३ हरपाखेरी, द्वि० १ नहिं सो गौरी, द्वि० २, ५ कोइ दिन गौरी, द्वि० ४ औ गौरी, तृ० १ गुन मद पूरी। ७. प्र० १, २ माहाँ। ८. तृ० ३ कोई बाट।

कोइ चंदन फूलन्ह जनु फूली। कोइ अजान बीरौ तर भूली[९]।

कोई फूल पाव कोइ पाती हाथ जेहि क जहँ[१०] आँट।
कोइ सिउँ हार[११] चीर अरुमानी जहाँ छुवै[१२] तहँ काँट॥

[१८६]

फर फूलन्ह सब[१] डारि ओनाई[२]। झुंड बाँधि कै पंचमि गाई।
बाजे ढोल डंड औ भेरी[३]। मंदिर[४] तूर झाँझ चहुँ फेरी[५]।
संख सींग डफ संगम[६] बाजे। बंसकारि[७] महुवर सुर साजे।
औरु कहा जेत[८] बाजन भले। भाँति भाँति सब बाजत चले।
रथन्ह चढ़ीं सब रूप[९] सोहाईं[१०]। लै बसंत मढ़[११] मँडप सिधाईं[१२]।
नवल बसंत नवल वै बारीं। सेंदुर बुक्का होइ[१३] धमारी।
खिनहिं चलहिं खिन चाँचरि होई। नाँच कोड भूला सब कोई।

सेंदुर खेह उठा तस गगन भएउ सब रात।
राति सकल महि धरती[१४] रात बिरिख बन[१५] पात[१६]॥

[१९०]

एहि बिधि खेलत सिंघल रानी। महादेव मढ़[१] जाइ[२] तुलानी।
सकल देवता देखैं लागे। दिस्टि पाप सब तिन्हके भागे।

---

९. द्वि० ५, बिरिख तर भूली, द्वि० ३ तरवर तर भूली। १०. तृ० १ जस। ११. प्र० २, तृ० १ जस, द्वि० ?, ३ ?, तृ० ३ से। १२. तृ० ३ देखै।

[१८९] १. प्र० २ कै। २. द्वि० १, २, ५, तृ० १, ३, ओढाईं, द्वि० ४,६, भराईं। ३. प्र० २ दुंदुभी बाजी। ४. प्र० १, तृ० १, ३ मौंदर, प्र० २ झाँझर। ५. प्र० २ चहु बाजी, द्वि० ३ मंजीरी। ६. प्र० १, द्वि० ७, तृ० ३ बाजन, प्र० २ पंचन, द्वि० ३ टै कम। ७. प्र० १ मानस करी। ८. द्वि० ३ गहगहे। ९. द्वि० ३ भाव। १०. प्र० १ सोहं। ११. तृ० ३ मरद (उर्दू मूल)। १२. प्र० ?, तृ० ३ भारे। १३. प्र० २ करहिं। १४. तृ० २ मंडल। १५. द्वि० ३ पुनि। १६. तृ० १, ३ बात।

[१९०] १. तृ० ३ मरद (उर्दू मूल)। २. प्र० १, २, तृ० ३ अद।

ये कविलास सुनी[3] अछरीं। कहँ हुत आईं[4] परमेसरीं[4]।
कोई कहै पदुमिनीं आईं। कोइ कहै ससि नखत तराईं।
कोई कहै फूल फुलवारी[5]। भूले सबै देखि[6] सब वारीं[7]।
एक सुरूप औ सेंदुर सारे। जानहुँ दिया सकल महि वारे।
मुर्छि परे जाँवत जे[8] जोहै। जानहुँ मिरिग[9] देवारी[10] मोहै।

कोई परा भँवर होइ बास लन्ह जनु चाँप।
कोइ पतग भा दीपक होइ अधजर तन[11] काँप॥

[१६१]

पद्मावति गै देव दुआरू। भीतर मँडप कीन्ह[1] पैसारू।
देवहि संसौ भा जिय केरा। भागौं केहि दिसि[2] मँडप घेरा[3]।
एक जोहार कीन्ह औ[4] दूजा। तिसरें आइ चढ़ाएन्हि पूजा।
फर फूलन्ह सब मँडप भरावा[5]। चंदन अगर देव नहवावा।
भरि सेंदुर आगें होइ खरी। परसि देव औ[6] पाएन्ह परी।
औरु सहेलीं सबै बियाहीं। मो कहँ देव कतहुँ बर नाहीं।
हौं निरगुनि जेइँ कीन्ह[7] न सेवा। गुनि निरगुनि[8] दाता तुम्ह देवा।

---

3. प्र० १ कोइ कहै कविलास, प्र० २ एक कविलास सुनी, तृ० ३ जेहि कविलास सुनी द्वि० ३ ये कविलास सबै। 4. प्र० १ आई कला परमेसरी, प्र० ? आइ परीं परमेसरी, द्वि० २, ४, ५ आइ टूटि भुइँ परीं, तृ० २ आइ नखत (टूटि ?) भुइँ परीं। 5. प्र० १, २, द्वि० ४, ६ कोइ कहै फूल कोइ फुलवारी। 6. प्र० १ भूले सबै देव, प्र० २ फूले अस देखिअ। 7. प्र० १ देखि बारी, द्वि० २ वै बारी, तृ० ३ तेहि बारी, द्वि० ७ वर नारी, तृ० १ सब नारी, तृ० २, पं० १ कै बारी। 8. द्वि० ५ मुख। 9. प्र० १, २, द्वि० ४, च० १ मिरग, तृ० ३ भ्रम। 10. द्वि० १ दिया लहु, द्वि० ६, प० १ दियारिन्ह। 11. प्र० १ अस अधजर तन, प्र० २ कोइ अधजर जस, द्वि० १ अधजर होइ अग, द्वि० ३ आधजरत तन।

[१९१] 1. तृ० ३ किएहु। 2. प्र० २, तृ० १ कौनै मंडप, द्वि० ४ केहि बिधि मडप, द्वि० २ केहि मंडपहि, द्वि० १ कहाँ मडप। 3. प्र० ?, द्वि० २, ३, ७, तृ० ३ गरेरा। 4. प्र० १, च० १ पुनि। 5. प्र० १, ? छावा, द्वि० १ छपावा। 6. प्र० १ पुनि। 7. प्र० ? न जानेउँ, तृ० ३ न कीन्हेउँ। 8. प्र० २ निरगुन कै।

बर सजोग मोहि मेरवहु कलस जाति हौं मानि।
जेहि दिन इंछा पूजै[१] बेगि चढ़ावौं आनि ॥

[१९२]

इंछि इंछि[१] बिनई जसि[२] जानी। पुनि[३] कर जोरि ठाढ़ि भै रानी।
उतर को देइ देव मरि गएऊ। सबद अकूट[४] मँडप महँ भएऊ।
काटि पबारा जैस परेवा। मर[५] भा ईस औरु[६] को देवा।
भए बिनु जिउ नावत औ[७]ओझा। बिख भइ[८] पूरि काल भा गोझा।
जो देखैं जनु[९] बिसहर डँसा। देखि चरित पदुमावति हँसा।
भल हम आइ मनावा देवा। गा जनु[१०] सोइ को मानै सेवा[११]।
को इंछा पुरवै दुख धोवा। जेहि मनि आए सो तनि तनि सोवा[१२]।

जेहि धरि सखी[१३]उठावहिं सीस बिकल तेहि[१४]डोल।
धर कोइ[१५] जीव न जानै मुख रे बकत[१६] कुबोल ॥

[१९३]

ततखन आइ[१] सखी बिहसानी। कौतुक एक न देखहु रानी।
पुरुब[२] वार कोइ[३] जोगी छाए। न जनौं कौन देस सौं आए।

---

१. प्र० २ पूजै मोरी।

[१९२] प्र० २ कछु दिखा। २. प्र० १ अपने मन, प्र० २ बीनै जग, द्वि० २, ४, ५, तृ० १ बिनती जमि, च० १ बिनवै जाम। ३. तृ० २ तब। ४. प्र० १, २, द्वि० २, ६, तृ० १, ३ ककूत, च० १ अकूब। ५. तृ० ३ मरन। ६. द्वि० १, ५ उतर। ७. प्र० १ भए बिनु जीव मनावत, प्र० २, द्वि० ४ भए जीव बिनु नावत, द्वि० ३ भए बिनु जिव सब नाएक, च० १ भए बाउर सब नावत। ८. प्र० १, २, तृ० ३ भी, द्वि० ४ भई। ९. प्र० १ सो। १०. प्र० १ सो। ११. द्वि० २ उतर को देवा। १२. प्र० १ आव तानि कै सोवा, प्र० २ आए दुख धोवा, पं० १ आए सो तनि रोवा। १३. प्र० १ चहुँ दिसि सखी, तृ० जेहि घर सोस। १४. द्वि० १, ३, ५, ३ मरन। १५. च० १ धर हुत। १६. प्र० १ मुख रे बचन, तृ० ३ रे बकतन।

[१९३] १. प्र० १, तृ० २, द्वि० ३ एक। २. प्र० २ देव। ३. द्वि० ३, तृ० ३ मठ।

जनु उन्ह[4] जोग तंत अब[5] खेला। सिद्ध होइ निसरे सब चेला।
उन्ह महँ एक जो गुरू कहावा। जनु गुर दे काहूँ बौरावा।
कुँवर बतीसौ लक्खन[6] राता। दसएँ लखन कहै एक[7] बाता।
जानहुँ आहि गोपिचंद जोगी। कै सो भरथरि आहि बियोगी।
वै[8] पिंगला गए[9] कजरी[10] आरन। यह सिंघल दहुँ सो[11]केहि कारन।

यह मूरति यह मुंद्रा[12] हम न देखा औधूत[13]।
जानहुँ होहिं न जोगी केहु राजा के पूत[15]॥

[१६४]

सुनि सो बात रानी सिउँ[1] चढ़ी[2]। कहाँ सो जोगी[3] देखौं मढ़ी।
लै सँग सखी कीन्ह तहँ फेरा। जोगिहि[3] आइ जनु अछरिन्ह[4]घेरा।
नैन[5] कचोर[6] पेम मद भरे। भइ सुदिस्टि[7] जोगी सौं ढरे[8]।
जोगीं दिस्टि[9] दिस्टि सो लीन्हा[10]। नैन रूप नैनन्ह जिउ दीन्हा।
जो मधु[11]चहत[12] परा तेहि[13]पाले। सुधि न रही ओहि एक पियालें।
परा माँति गोरख का[14] चेला। जिउ तन छाँड़ि सरग कहँ खेला।
किंगरी गहे जु[15] हुत बैरागी। मरतिहुँ बार उहै धुनि लागी।

---

४. तृ० ३ एन्ह। ५. प्र० १ मर। ६. तृ० ३ लखन ना। ७. तृ० १ कछु। ८. प्र० १ जस। ९. प्र० १ द्वि० १, ६, पं० १ कहँ, द्वि० ४, तृ० १, ३ की, द्वि० ७ लगि, द्वि० ३ औ, द्वि० २, तृ० २, च० १ सो। १०. प्र० १ कंदलि। ११. प्र० १ आण्हु, तृ० ३ दहुँ भा। १२. च० १ मदिर मँह। १३. द्वि० ६ अरा धूत। १४. तृ० ३ आहि, पं० १ होइ। १५. प० १ कर।

[१९४] १. प्र० १, द्वि० ५, ६ रथ, प० २ रिसि, द्वि० १, तृ० ३, चित, द्वि० ३ मन। २. प्र० २, द्वि० ४ चर्ही, मर्ही (उर्दू मूल)। ३. पं० १ जोगि जो। ४. प्र० १ अपछरिन्ह। ५. द्वि० ७ यानक। ६. प्र० २ चकोर। ७. तृ० ३ दुर दिस्टि। ८. द्वि० २ पुनि। ९. तृ० ३ आइ। १०. द्वि० १, ६, कीन्हा। ११. द्वि० १, तृ० ३ मद। १२. प्र० १ चाह, प्र० २, द्वि० ७ घात, द्वि० ५ छकत। १३. प्र० १ सो। १४. द्वि० ४ को, च० १ का। १५. प्र० १, तृ० ३ गहाथहे, प्र० २ गहे होत, द्वि० १ गहे जु हाथ।

जेहि धंधा जाकर मन लागै[16] सपनेहु सूझ सो धंध।
तेहि कारन तपसी तप साधहिं[17] करहिं पेम[18]मन[19]बंध ॥

[१९५]

पदुमावति जस सुना बखानू। सहसहुँ[1] करौं देखा तस भानू।
मेलेसि[2] चंदन मकु खिनु[3]जागा[4]। अधिकौ सूत[5] सिअर[6] तन लागा।
तब चंदन आखर हियँ लिखे। भीख लेइ तुइँ जोगि न सिखे।
बार आइ तब गा तैं सोई। कैसें भुगुति परापति होई।
अब जौं सूर अहै[7] ससि राता। आइहि चढ़ि सो गँगन पुनि साता[9]।
लिखि कै बात सखी सौं कही। इहै ठाउँ हौं[10] बारति[11] अही।
परगट होइ तौ होइ अस भंगू[12]। जगत दिया[13] कर[14] होइ पतंगू।

जासौं हौं चख हेरौं[15] सोइ ठाउँ जिउ देइ।
एहि दुख कबहुँ[16] न निसरौं[17] को[18] हत्या असि लेइ ॥

[१९६]

कीन्ह पयान सभन्ह[1] रथ हाँका। परबत[2] छाड़ि सिंघल गढ़ ताका।
भए बलि[3] सबै देवता बली। हत्यारिनि हत्या लै[4] चली।

---

१६. प्र० १ जाकर मन, द्वि० ४, ६, च० १ जेहि मन बस। १७. प्र० २ तपसी तन, तृ० ३ तप साधहि, द्वि० ७ वरहीं तप। १८. द्वि० ७ तपसी कर।

[१९५] १. द्वि० ४ सहस करा देखिसि तस, द्वि० ३ करा सहस देखा तस। २. द्वि० २ धसि। ३. द्वि० १ तबहुँ न, तृ० ३ सुख बिन्दु, द्वि० ५, तृ० १ मसु सिनु, द्वि० ७ सूरज बिनु। ४. तृ० ३ न जाना। ५. द्वि० ७ अधिक सीतल, द्वि० ३ सीतल अधिक। ६. प्र० १, २, द्वि० १ सीतल। ७. प्र० १ होइ, प्र० २, द्वि० ४, ५ आहै। ८. द्वि० ७ तारा। ९. द्वि० ७ लाँघि समुद अपारा। १०. प्र० १ मैं। ११. द्वि० ५ बाँचति। १२. प्र० २ सँजोगू, द्वि० १ रस भंगू। १३. प्र० १ दीपक। १६. द्वि० १ कहू। १७. प्र० १ निकसौं। १८. तृ० ३ कोइ।

[१९६] १. प्र० १, २ सखिन्ह। २. प्र० २ मंडप। ३. प्र० २ चलीं भौ। ४. तृ० ३ दै।

को अस हितू मुए[5] गह बाहीं। जौं पै जिउ अपने तन[6] नाहीं।
जौं लगि जिउ आपन सब कोई। बिनु जिउ सबै निरापन[7] होई[8]।
भाइ बंधु औ लोग पियारा। बिनु जिय घरी न[9] राखै पारा।
बिनु जिय पिंड छार कर कूरा। छार मिलाव सोइ हितु पूरा[10]।
तेहि जिय बिनु अब मर भा राजा। को उठि बैठि[11] गरब सौं गाजा।

परी कया भुइँ रोवै[12] कहाँ रे जिय बलि[13] भीवँ।
को उठाइ बैसारै बाजु पियारे जीवँ[14]॥

[१९७]

पदुमावति सो मँदिर पईठी। हँसत सिंघासन जाइ[1] बईठी।
निसि सूती सुनि कथा बिहारी[2]। भा बिहान औ[3] सखी हँकारी।
देव पूजि जब[4] आइउँ काली। सपन एक निसि देखिउँ आली।
जनु ससि उदौ पुरुब दिसि कीन्हा। औ रबि उदौ पछिवँ दिसि लीन्हा।
पुनि चलि सुरुज[5] चाँद पहँ आवा। चाँद सुरुज दुहुँ भएउ मेरावा।
दिन औ राति जानु भए एका। राम आइ रावन गढ़ छेंका।
तस किछु कहा न जाइ निखेधा[7]। अरजुन बान राहु गा बेधा।

---

५. द्वि० ३, ५ जोरि, च० १ मरै। ६. प्र० १, २, द्वि० २ घट। ७. द्वि० १ परावा, द्वि० २ न आपन, तृ० ३ निरापद, तृ० १ बराबर। ८. द्वि० ४ सोई। ९. प्र० १, च० १ को। १०. (१) देखौ आज नयन सौं कूरा। ११. प्र० २, द्वि०, ४, तृ० १, ३ अब उठै। १२. द्वि० १ लोटै। १३. प्र० १ सो बल कौ भीवँ, द्वि० ६ रे गल कौ भीवँ। १४. प्र० २ पियारे पीउ, द्वि० १, ३ पिरीतम जीव, तृ० ३ मीतम यह जीव।

[१९७] १. तृ० ३ आइ, द्वि० ३ आनु। २. प्र० १ पहारी, प्र० २ पसारी, द्वि० ७ बिभारी। ३. प्र० १, तृ० २ सब। ४. प्र० २ अस, द्वि० १, २, ५, तृ० १, २, पं, १ जस, द्वि० ४ हो, द्वि० ६ जो (हिंदी मूल)। ५. तृ० ३ पुरब। ६. द्वि० ४ चाँद सुरुज। ७. प्र० १ बदा न जाइ जो तेहि निसि बेधा, प्र० २ कहा न जाइ बूझि कस बोधा, तृ० ३ तस बुध कहा न जाइ बिमिंगा।

जनहुँ लंक सब लूसी[8] हनूँ[9] बिधँसी बारि[10]।
जागि उठिउँ अस[11] देखत सखि सो कहहु[12] बिचारि ॥

[१६८]

सखी सो[1] बोली सपन बिचारू। कालिह जो गइहु देव के बारू।
पूजि मनाइहु बहुत बिनाती[2]। परसन आइ[3] भएउ तुम्ह राती।
सूरुज पुरुख चाँद तुम्ह रानी। अस बर दैव मिलावा आनी।
पछिवँ खंड कर राजा कोई। सो आवै बर तुम्ह कहँ होई।
पुनि कछु जूझि लागि[4] तुम्ह[5] रामा। रावन सौं होइहि[6] संग्रामा।
चाँद सुरुज सिउँ[7] होइ बिआहू। बारि[8] बिधँसब बेधब राहू।
जस ऊखा कहँ अनिरुध मिला। मेंटि न जाइ लिखा पुरुबिला[9]।

सुख सोहाग है तुम्ह कहँ[10] पान फूल रस भोग।
आजु कालिह भा चाहिअ अस सपने क[11] सँजोग ॥

[१६९]

कै[1] बसंत पदुमावति गई[2]। राजहिं तब बसंत सुधि भई।
जौं जागा न बसंत न बारी। ना सो खेल न खेलनिहारी।
ना ओहि की वै[3] रूप सहाईं। गै हेराइ पुनि दिस्टि न आईं।
फूल झरे[4] सूखीं फुलबारीं। दिस्टि परीं उकठीं सब झारीं[5]।

---

८. प्र० २ हुलसा, द्वि० १, २, तृ० १ लूगी, तृ० ३ लान्हेउ, द्वि० ७ लुहसा।
९. प्र० २, तृ० ३ हनिवँत। १०. द्वि० ४ बाग। ११. प्र० २ सब।
१२. द्वि० १, २, ५, तृ० ३ सखि बहु सपन, तृ० २ सखि सो कहहु, द्वि० ४ बो मसि सपन।

[१६८] १. प्र० २, द्वि० १ जो, तृ० ३ सत। २. द्वि० २ बहु मन मौनी।
३. प्र० १ दैव। ४. प्र० २ होइ। ५. प्र० २ बहु।
६. द्वि० ५ सखी होइ। ७. द्वि० २, ३, ४, ५, तृ० १, ३, च० १ कुँ, द्वि० ६ सौं। ८. द्वि० २, ३, ५ लंक। ९. द्वि० २ परमला, द्वि० ३ पुरबुला। १०. प्र० १ तुम्ह होइहि। ११. प्र० १ बहु सपन।

[१६९] १. प्र० २ गै। २. प्र० १ खेलि बसंत कुँवरि जब गई। ३. प्र० २ ओहि कै बोइ न। ४. प्र० १ गए। ५. प्र० १, द्वि० ३ सब बारी, प्र० २ फुलवारी, तृ० ३ मो बारी।

केइँ यह बसत बसंत उजारा। गा सो चाँद अँथवा लै तारा।
अब तेहि बिन जग भा अँधकूपा। वह सुख छाँह जरौं हौं धूपा[६]।
बिरह दवा अस को रे बुझावा। को प्रीतम सें करै मेरावा।

हिआ देखि सो चंदन घेवरा[७] मिलि कै लिखा बिछोव।
हाथ मींजि सिर धुनै सो रोवै जो निचिंत अस सोव॥

[२००]

जस बिछोव जल मीन दुहेला। जल हुति काढ़ि अगिनि महँ मेला।
चंदन आँक[१] दाग होइ[२] परे। बुझहिं[३] न ते आखर परजरे[४]।
जनहुँ सरागिनि[५] होइ होइ लागे[६]। सब बन[७] दागि सिंघ बन[८] दागे।
जरे मिरिग बनखँड तेहि ज्वाला। औ ते जरे[९] बैठ तहँ[१०] छाला।
कत ते अंक लिखा जेहिं सोवा। मकु आँकत नहिं[११] करत बिछोवा[१२]।
जस दुखंत कहँ साकुंतला[१३]। माधौनलहि काम- कंदला[१४]।
भए अंक नल जैस दमावति। नैना मूँदि[१५] छपी[१६] पदुमावति।

आइ बसंता छपि रहा[१७] होइ फूलन्ह के भेस।
केहि बिधि पावौं भँवर[१८] होइ कौनु सो गुरु[१९] उपदेस॥

---

६. प्र० १ हौं बिनु छाँह मरौं तेहि धूपा। ७. प्र० १, द्वि० ५, तृ० ३, च० १ खेवरा, द्वि० ४ धौरा।

[२००] १. तृ० ३ आँग (उर्दू मूल), च० १ आगि। २. प्र० २ हिअ। ३. द्वि० ५ तजहिं। ४. प्र० १ नाहिं ते आखर जरे। ५. द्वि० ७, तृ० ३ सरागैं। ६. प्र० २ जानहु सर होइ कै ये लागे। ७. द्वि० ४, तृ० ३ तन। ८. च० १ सब। ९. तृ० ३ सो जरा। १०. तृ० ३ जहिं। ११. प्र० १ सोइ अग जे, द्वि० २ आँकत तेहि, तृ० ३ अकन्ह तें, द्वि० ३ अरला कहँ। १२. तृ० १ करदन छोवा। १३. प्र० १, द्वि० ७ अर जो बिछोह गहि ससि मंदला। १४. प्र० १ जस बदला। १५. द्वि० ७ माँद। १६. द्वि० १ चढ़ीं। १७. द्वि० २ फिरि गया। १८. तृ० १ राखौं पीन। १९. प्र० १, द्वि० २, ३, ७, केहि गुर के, द्वि० १ सो मुद्रि, पं० १ सारै गुरु।

२०. प्र० २ कामकंदला बिछुरता माधव बिकल सरीर।
तेहि बिधि राजा रोअन का इकहत एह पीर॥

[२०१]

रोवै रतन माल जनु चूरा। जहँ होइ ठाढ़ होइ तहँ कूरा।
कहाँ बसंत सो कोकिल[1] बैना। कहाँ कुसुम अलि बेधै[2] नैना।
कहाँ सो मूरति परी जो डीठी। काढ़ि लीन्ह[3] जिउ हिएँ पईठी[4]।[5]
कहाँ सो दरस परस जेहि[6] लाहा। जौं सो बसंत करीलहि[7] काहा।
पात बिछोव[8] रूख जौं फूला। सो महुवा रोवै अस भूला[9]।
टपकै महुव आँसु तस परई। होइ महुवा बसंत जेउँ[11] झरई[12]।
मोर बसंत सो पदुमिनि बारी। जेहि बिनु भएउ[13] बसंत उजारी।

पावा नवल[14] बसंत बन[15] बहु आरति बहु चोप।
ऐस न जाना अंत होइ पात झरहिं होइ[16] कोंप[17]।[18]॥

[२०२]

अरे मलिछ[1] बिसवासी देवा। कत मैं आइ कीन्हि तोरि सेवा।
आपनि नाउ चढ़ै जो देई[2]। सो तौ पार उतारै सेई।
सुफल लागि[3] पग टेकेउँ तोरा[4]। सुवा क सेंवर तूँ भा मोरा।
पाहन चढ़ि जो चहै भा पारा। सो ऐसैं[5] बूड़ मँझधारा।

---

[२०१] १. तृ० ३ सारँग। २. तृ० ३ बेध जो। ३. च० १ गहेसि। ४. प्र० १, द्वि० ७ चित्र होइ सो चितहि पईठी। ५. द्वि० १ कहाँ बसंत कहाँ वै बारी, कहाँ सो फूल कहाँ फुलवारी। ६. प्र० १ अस। ७. प्र० करी लै, द्वि० ५ गरी कृहि, द्वि० ७ क.रै..कह (उर्दू मूल)। ८. प्र० १ अस बिनु छाँह। ९. द्वि० ७ बहुरि बसंत कि होइ बसंता, नाहीं तौ जरि होइ भसमंता। १०. द्वि० ७ भमरंग तार। ११. द्वि० २, च० १ रितु। १२. द्वि० ७ निपाना। १३. प्र० १, द्वि० ६, च० १ सबै। १४. द्वि० ७ पावनै सदा। १५. द्वि० १ पुनि। १६. द्वि० ५ कै, द्वि० ७ बिनु।

१७. प्र० १ मिलि जो प्रीतम बिछुरहीं सो जानहि एह भेव।
प्रान रहै घट भीतर कोइ अंत न पावै भेव॥

[२०२] १. द्वि २, ३ निलज। २. प्र० १ चढ़ाइ जो लेई। ३. द्वि ४ जानि। प्र० १, २, द्वि० ४, ७ सेएउँ पग। ५. प्र० २ अवसर।

पाहन सेवाँ काह[६] पसीजा। जरम न पलुहै जौं निति[७] भीजा।
बाउर सोइ जो पाहन पूजा। सकति को[८] भार लेइ सिर[९] दूजा।
काहे न[१०] पूजिअ सोइ निरासा। मुएँ जिअत मन[११] जाकरि आसा।

सिंघ तरेंडा जिन्ह गहा पार भए तेहि साथ।
ते परि बूड़े बार ही[१२] भेंड़ पोंछि जिन्ह हाथ॥

[२०३]

देव कहा सुनु बौरे राजा। देवहिं अगुमन मारा गाजा।
जौं पहिलें[१] अपुने सिर परई[२]। सो का काहु कै धरहरि करई[३]।[४]
पदुमावति राजा कै बारी। आइ सखिन्ह सौं मँडप उघारी।
जैसें चाद गोहने सब तारा। परेउँ भुलाइ देखि उँजियारा।
चमकै दसन[५] बीज की नाईं। नैन चक्र जमकात[६] भवाईं।
हौं तेहि दीप पतँग[७] होइ परा। जिउ जम गहा[८] सरग लै धरा।
बहुरि न जानौं दहुँ का भई। दहुँ कबिलास कि कहँ उपसई[९]।

अब हौं मरौं निसाँसी[१०] हिएँ[११] न आवै[१२] साँस।
रोगिआ की को चालै[१३] बैदहि[१४] जहाँ उपास॥

---

६. प्र० १, प० १ कहा। ७. प्र० १ जग, द्वि० १, २, ५, ६, ७, तृ० १ जल। ८. प्र० १, २, द्वि० ३, ७, तृ० २, ३ कि, द्वि० ४, ५ के, च० १ का। ९. प्र० २, द्वि० ५, च० १ कौ। १०. द्वि० ६ बोहन। ११. द्वि० ६ महँ। १२. प्र० १, द्वि० २, ३, ७, तृ० १, २, ते बूड़ै अनगाह महँ, प्र० २ ते पै भुरवै पार भए, द्वि० ५, ६, च० १ ते बूड़े मँझधार मँह [द्वि० ६--हीं]

[२०३] १. प्र० १ जहाँ आगि, प्र० २, तृ० १ जबही आग, द्वि० ७ रोहि आगी। २. प्र० २ जबहीं आगि अपुने सिर लागा। ३. प्र० १, द्वि० ७ औरहि वहाँ बुझावै जरई, प्र० २ आनि बुझावै कहाँ को जागा। ४. तृ० १ में मूल में ही ऊपर के मूल पाठ की पंक्ति, तथा पादटिप्पणी २, ३ में प्र० २ के पाठांतर की पंक्ति है, और इस प्रकार कुल सात के स्थान पर आठ पंक्तियाँ चौपाई की हैं। ५. द्वि० १ अधर। ६. द्वि० ३, ५, तृ० १, च० १ चमकात। ७. प्र० १, तृ० ३ पतिंग। ८. प्र० १, द्वि० १, ५, च० १ काढ़ि, द्वि० ४, तृ० २ लीन्ह। ९. तृ० १ कब आदरि कबिलासहि गई। १०. द्वि० ७ नहीं चेतन। ११. प्र० २ होए न। १२. तृ० १ पावौं। १३. तृ० ३ को चलावै, द्वि० ३ औ आनै १४. प्र० २ बैस को।

[२०४]

अनु हौं दोस देउँ का काहू। संगी कया[2] मया नहिं ताहू।
हतेउ[3] पियारा मीत[4] बिछोई। साथ न लागि आपु गै सोई।
का मैं कीन्ह जो काया पोषी। दूखन[5] मोहि आपु निरदोषी।
फागु बसंत खेलि गै गोरी। मोहि तन[6] लाइ आग दै[7] होरी।
अब अस काह[8] छार सिर मेलौं। छारे होइ फागु तस खेलौं[9]।
कत तप कीन्ह[10] छाड़ि कै राजू। आहर[11] गएउ[12] न भा सिध काजू।
पाएउँ नहिं होइ जोगी जती। अब सर चढ़ौं[13] जरौं[14] जसि सती।

आइ जो प्रीतम फिरि गएउ मिला न आइ बसंत।
अब तन[15] होरी घालि कै[16] जारि[17] करौं भसमंत॥

[२०५]

ककनूँ[1] पंखि जैस सर साजा। सर चढ़ि तबहिं[2] जरा चह राजा।
सकल देवता आइ तुलाने। दहुँ कस होइ देव अस्थाने।
बिरह आगि बजागि असूझा। जरै सूर[3] न बुझाए बूझा।

---

[२०४] १. द्वि० ४ सुनि कै। २. प्र० २ दिआ। ३. द्वि० ७ हते। ४. प्र० १ प्यार वा मती, द्वि० ७ पिआर ते मीत। ५. प्र० २, द्वि० ७, तृ० ३ दोष न मोहि, प० १ दोस बिमोहि। ६. तृ० ३ निम्र। ७. प्र० २ बिरह कै, द्वि० ४ आगि बहु। ८. प्र० १ अस जानि, द्वि० १ का करौं। ९. प्र० २ छार सिर मेलौं। १०. तृ० ३ लीन्ह। ११. द्वि० ७ आह, द्वि० ४ उहर, द्वि० ३ उहर। १२. प्र० २, तृ० १ मरउ १३. प्र० १ जिय चढ़ौं प्र० २ चिता चढ़ी, द्वि० ७, तृ० २ सर साजि, द्वि० ७ चुरिचुरी, च० १ तस मरौं, तृ० ३ सर चढ़ी (उर्दू मूल)। १४. प्र० २ रचौं। १५. प्र० १ तेहि। १६. प्र० १ घालि तन, प्र० २ जारि कै, द्वि० ५, च० १ लाइ कै। १७. प्र० २ घालि।
१८. द्वि० १ कै सो दर्सन उजारि कै रज होली दै आगि।
कै सो बुझावै तब बुझै कै रे जरौ बढ़ि लागि॥

[२०५] १. द्वि० ३, तृ० ३ गगन। २. प्र० १, द्वि० २, ३, तृ० १ तस सर साज, प्र० २ तस चिता चढ़ि, तृ० ३ तस सर बैठि, च० १, प० १ नसँ चढ़ि बैठि ३. प्र० १ जरते रहै, प्र० २ जरै सोई।

तेहि के जरत उठै वज्रागी। तीनौ लोक जरहिं तेहि आगी[४]।
अबहुँ की घरी चिनगि तेहिं छूटहिं। जरि[५] पहार पाहन सब फूटहिं[६]।
देवता सबै भसम भए जाहीं। छार समेटे[७] पाउब नाहीं।
धरती सरग होइ सब[८] ताता। है कोई एहिं राख बिधाता।

मुहमद चिनगी अनँग[९] की सुनि महि गँगन डेराइ।
धनि बिरही औ धनि हिया जेहिं सब[१०] आगि समाइ॥

[२०६]

हनिवँत बीर[१] लंक जेइँ जारी। परबत ओहि रहा रखवारी।
बैठ तहाँ भा लंका ताका। छठएँ मास देइ उठि हाँका।
तेहि की आगि उहौ पुनि जरा। लंका छाड़ि[२] पलंका परा।
जाइ तहाँ यह कहा सँदेसू। पारबती औ जहाँ महेसू।
जोगी आहि बियोगी कोई। तुम्हरे मँडप आगि तेहिं बोई।
जरे लँगूर सो राते उहाँ। निकसि जो भागे भए[३] करमुँहाँ।
तेहि बज्रागि जरै हौं लागा। बज्जर अंग[४] जरत उठि भागा[५]।

रावन लंका मैं डही ओइँ हम डाहन[६] आइ।
कनै[७] पहार होत हैं रावट[८] को राखै गहि पाइ॥

---

४. प्र० २ जोहि की आगि बुझाए सो आगा, अबहि कि आगि चिनगि छुटि लागी। ५. द्वि० ३ चढ़ि। ६. प्र० २ जरि पहार पाहन सब छूटहिं, जैसे बीजु बान घन फूटहिं। ७. प्र० १ समेटन। ८. प्र० १, द्वि० ७ होत है। ९. प्र० १, द्वि० १, २, ३, ४, ५, ७, तृ० १, २, ३ प्रेम। १०. प्र० १, द्वि० ५ हिय, पं० १ यह।

[२०६] १. प्र० १ कम हनवंत। २. प्र० २ उलथा जाइ। ३. द्वि० २ ६, च० १ भागे ते, द्वि० ५ भाग सो। ४. द्वि० ३ वज्जर आगि। ५. प्र० २ जरि उडत लागा, द्वि० २, पं० १ जरि उठा तो भागा, द्वि० ३ जरै न भागा। ६. प्र० १ दहा जो, प्र० २, द्वि० ६ दाहए, द्वि २ दाढ़े, तृ० ३ डहान, द्वि० ४ [मोरा] दहै, द्वि० ५, तृ० २ डाढ़ा, तृ० १ डाढा, द्वि० ३ दाढ़। ७. प्र० १, २ कनक, द्वि० २ फन्दै, द्वि० ४ गगन, द्वि० ५ गिरि, द्वि० ३ भए, च० १ फर। ८. प्र० १ होइ जरि रावट, द्वि० २ होइ रावट, तृ० ३ जरत है, तृ० १ होत है, द्वि० ३ अरावट।

[२०७]

ततखन पहुँचा[1] आइ महेसू। वाहन बैल कुस्टि कर भेसू।
काँथरि[2] कया हड़ावरि बाँधे[3]। रुंडमाल[4] औ[5] हत्या काँधे[3]।
सेस नाग[6] औ[7] कंठै माला[8]। तन बिभूति हस्ती कर[9] छाला।
पहुँची[10] रुद्र कँवल के गटा। ससि माथें औ सुरसरि जटा।
चँवर घट औ डँवरू हाथा। गौरा पारवती धनि साथा।
औ हनिवंत बीर सँग आवा। धरे वेष जनु[11] बंदर छावा[12]।
औतहिं कहेन्हि न लावहु आगी। ताकरि सपथ जरहु जेहि लागी।

कै तप करै न पारेहु[13] कै रे[14] नसाएहु जोग।
जियन जीय कस काढ़हु कहहु सो मोहिं[15] नियोग॥

[२०८]

कहेसि को मोहिं[1]बातन्ह बेलवावा[2]। हत्या केर न तोहिं[3] डर आवा।
जरै देहु दुख जरौं[3] अपारा। निस्तरि परौं[4] जरौं[5] एक बारा।
जस भर्तहरि लागि पिंगला। मो कहँ पदुमावति सिंघला।
मैं पुनि तजा राज औ भोगू। सुनि सो नाउ लीन्हा तप जोगू।
यह मढ़[6] सेएउँ आइ निरासा। गै सो पूजि मन पूजि न आसा।
तेइँ यह जिउ दाधे पर दाधा। आधा निकसि रहा घट आधा।
जो अधजरत सो बेलँव न लावा। करत बेलव बहुत दुख पावा।

---

[२०७] १. प्र० २, द्वि० २ पहुँचे। २ प्र० १, २ कथरी। ३. प्र० २ काँधे, गरे मैं बाँधे। ४ प्र० २ मुंड माल। ५. प्र० १ दुइ, द्वि० ७ पुनि। ६. द्वि ७ ईंपमाल। ७. पं० १ सो। ८ प्र० १ कंठै जप माला, द्वि ७ कठे कँठमाला। ९. प्र० १, २ बाघबर। १०. प्र० २, द्वि० ७ हाथ, तृ० ३ पहुँचे (उर्दू मूल)। ११ तृ० ३ औ। १२. प्र० १ कपि के रूप सो अधिक सोहावा। १३ प्र० १ न जानहु। १४. प्र० २, पं० १ निसरि। १५. द्वि० १, २, ३, ६, तृ० २, पं० १ दुक्ख।

[२०८] १ प्र० १ कि को। २. तृ० ३ बल वाला। ३. प्र० १ मोहि। ४. द्वि० २ निसरइ प्रान, तृ० ३ निस्तरि जाउँ। ५. द्वि० ६, पं० १ जाइ। ६. तृ० ३ मरइ (उर्दू मूल)।

एतना बोल कहत मुख उठी बिरह की आगि।
जौं महेस नहिं आइ बुझावत[7] सकल जगत हुति[8] लागि[9] ॥

[२०६]

पारबती मन उपना चाऊ। देखौं कुँवर केर सत भाऊ।
दहुँ यह बीच[1] कि पेमहि पूजा। तन मन एक कि मारग दूजा।
भै, सुरूप जानहुँ अपछरा। बिहँसि कुँवर कर आँचर[2] धरा।
सुनहु कुँवर मोसौं एक[3] बाता। जस रँग मोर न औरहि राता।
औ बिधि रूप दीन्ह है तोकाँ[4]। उठा सो सबद[5] जाइ सिव लोकाँ।
तब[6] हौं तो कहँ इंद्र पठाई। गै पदुमिनि तैं आछरि पाई।
अब तजु जरन मरन[7] तप जोगू। मो सौं मानु जनम भरि भोगू।

हौं आछरि कबिलास की जेहि सरि पूजि न कोइ।
मोहि तजि सँवरि[8] जो ओहि सरसि[9] कौन लाभु तोहि होइ ॥

[२१०]

भलेहिं रंग तोहि आछरि राता। मोहि दोसरें सौं भाव न बाता[1]।
मोहि ओहि सँवरि मुएँ अस लाहा[2]। नैन सो देखसि पूँछसि काहा[3]।
अबहीं तेहि जिउ देइ न पावा। तोहि असि आछरि ठाढ़ मनावा[4]।
जौं जिउ देहुँ ओहि कि आसाँ। न जनौं काह होइ कबिलासाँ।

---

[7]. प्र० १ नाँहि आवन, द्वि० १, २, ३, ६, ७, न बुझावन, तृ० ३ नहिं अमिअ बुझावन। [8]. तृ० २ हित, द्वि० ६ महँ। [9]. प्र० २ तौ जगती होती लागि, द्वि० ७ तौ उठ'त बजागि।

[२०९] [1]. प्र० २ बीच, द्वि० ५ बीज। [2]. तृ० २ अँचला धरा, तृ० १ अप्सर धरा। [3]. प्र० १, द्वि० ७ सन। [4]. प्र० १, द्वि० ७ मोका। [5]. प्र० १ सुने सो चाँद, प्र० २, द्वि० २, ४, ६, च० १ सुना सो सबद, द्वि० ७ सुनै जो सबन। [6]. प्र० १, द्वि० ७ अब। [7]. प्र० १ मरन जिअन, प्र० २ जुरा मरन। [8]. द्वि० ५ मोहि सँवरि। [9]. द्वि० ७ ओहि सँवरसि।

[२१०] [1]. प्र० १ मोहि ओहि सँवरि मुरा न बाता, तृ० ३ मोहि दोसरे सौं भाव बाता। [2]. प्र० १ हैं लाहा, प्र० २ सन लाहा, पं० १ अपनावा। [3]. पं० १ तोहि अस आछरि ठाढ़ मनावा। [4]. पं० १ नैन सो देखसि पूँछसि काहा।

हौं पै बिलास काह लै करऊँ। सोइ कबिलास लागि ओहि मरऊँ[5]।
ओहि के बार जीवनहिं वारौं[6]। सिर उतारि नेवछावरि डारौं[7]।
ताकरि चाह कहै जो[8] आई। दुओ जगत तेहि देउँ बड़ाई[9]।

ओहि न मोरि कछु आसा[10] हौं ओहि आस करेउँ।
तेहि निरास प्रीतम कहँ जिउ न देउँ[11] का देउँ॥

[२११]

गौरैं हँसि महेस सौं कहा। निस्चै यहु बिरहानल[1] दहा।
निस्चै यह ओहि कारन तपा। परिमल पेम न आछै[2] छपा।
निस्चै पेम पीर यह जागा। कसत कसौटी कंचन लागा।
बदन पियर जल डभकहिं[3] नैनाँ। परगट दुऔ पेम के बैनाँ।
यह ओहि लागि जरम एहि[4] सीझा। चहै न औरहि ओहीं रीझा।
महादेव देवन्ह के पिता। तुम्हरी सरन[5] राम रन जिता।
एहू कहँ तसि[6] मया करेहू। पुरवहु आस कि हत्या लेहू।

हत्या दुइ जो[7] चढ़ाएहु काँधे[8] अबहुँ न गै[9] अपराध।
तीसरि लेहु एहु कै माँथे[10] जौं रे लेइ कै[11] साध॥

---

[5] प० १ आस गहे मरऊँ, द्वि० २, ३, ४ च० १ लागि जेहि मरऊँ, तृ० ३ लागि ओहि मरऊँ। [6]. प्र० १ जाव बलि दान्हा, प्र० २ जावनहि वारौं, द्वि० ४, ५ जीव निरवारौं। [7]. प्र० १ नेवछावरि कीन्हा, प्र० २ नेवछावरि करौं, द्वि० ४, ५ नेवछावरि सारौं। [8] प्र० १ कोइ। [9]. तृ० ३ कथाई। [10]. प्र० १ आस है। [11]. तृ० ३ देउँ।

[२११] [1]. प्र० १ बिरहै नल। [2]. प्र० १ रहै तेहि, प्र० २ छपाए। [3]. त० १ बहकै, द्वि० ३ टपकहिं। [4]. प्र० १, द्वि० ५ कै, द्वि० २, ३, ४ वउ, तृ० १ पुनि, तृ० ३ तौ, प० १ तस। [5]. तृ० ३ सन। [6]. द्वि० २ अस, तृ० १ भव, तृ० ३ सिव। [7]. च० १ दो एक। [8]. द्वि० २ चढ़ाएहु। द्वि० ३, तृ० २ चढ़ाएहु माथे। [9]. प्र० १ कबहुँ न गै, प्र० २, च० १ तबहुँ न गै, द्वि० १, २ गैहि न गए, द्वि० ४ औ तिन के। [10]. प्र० १ एहु लेहु तुम्ह, प्र० २ इहै लेहु गै, द्वि० २ एहु लेहु अब, तृ० ३ लेहु कै माथे, द्वि० ६ इही लेहु बँ। [11]. प्र० १, २गे रे लेवै कै, द्वि० ३ कै पुरवहु एहु।

[२१२]

सुनि कै महादेव कै भाखा[1]। सिद्ध पुरुष राजैं मन लखा[1]।
सिद्ध अंग नहिं बैठै माखी। सिद्ध पलक नहिं लागै आँखी।
सिद्धहि संग[2] होइ नहिं[3] छाया। सिद्धहि होइ न भूख औ माया।
जौं जग सिद्धि गोसाईं कीन्हा। परगट गुपुत रहै को[4] चीन्हा।
बैल चढ़ा[5] कुस्टी के भेसू। गिरिजापति सत[6] आहि महेसू।
चीन्है सोइ रहै तेहि[7] खोगा। जस बिक्रम औ राजा भोगा[8]।
कै जियँ तंत मंत सो हेरा। गएउ हेराइ जबहि भा मेरा[9]।[10]

बिनु गुरु पंथ न पाइअ भूलै सोइ जो मेंट।
जोगी[11] सिद्ध होइ तब जब गोरख[12] सौं भेंट ॥[13]

[२१३]

ततखन रतनसेनि गहबरा। छाड़ि डफार[1] पाउ लै परा।
माता पितैं जनमि कत पाला। जौं पै फाँद पेम गियँ[2] घाला।
धरती सरग मिले हुत[3] दोऊ। कत[4] निरार कै दीन्ह[5] बिछोऊ।

---

[२१२] १. प्र० २, तृ० २ भाष, लासा, तृ० ३ भाषा, रासा। २. प्र० १, द्वि० ४ सिद्ध के अग। ३. प्र० १ न होखे (भोजपुरी प्रभाव)। ४. प्र० १, द्वि० १ नहिं। ५. प्र० १ बसह चढ़े। ६. प्र० २ गिरिजासुत सो, द्वि० २ गिरिजासुत तप, तृ० ३ गिरिजापति सो, द्वि० ४, ५ कहा राजै सत, द्वि० ६ को जानै यह, द्वि० ७ कायर सुत पति, द्वि० ३ कह राजा सत, च० १ गिरिजासुत पितु। ७. प्र० १, द्वि० ७ करै अस, द्वि० ६ रहैं जो। ८. प्र० २ पर काया परवेस सँजोगू। ९. द्वि० १ जो मिलै न हेरा। तृ० १ को छोड़कर सभी पनियों में 'जबहि' के स्थान पर 'सोहि' है (हिंदी मूल)। १०. प्र० १, द्वि० ७ जौं भरि होति लछिमी नारी, तजि महेस कत होत भिखारी। ११. द्वि० १, ६, तृ० ३, च० १ चेला। १२. तृ० ३ गुरू। १३. प्र० १, द्वि० ७ जो जो सुनै सो रोवै ढुरहिं रकत कै आँसु। रोम रोम तन रोवै सोत सोत भर माँसु ॥

[२१३] १. प्र० २ रोएव छाडि। २. तृ० ३ कै। ३. प्र० १, तृ० २ तहँ, प्र० २ हुए। ४. द्वि० ६ कत। ५. प्र० १ कीन्ह।

हौं कबिलास काह लै करऊँ। सोइ कबिलास लागि ओहि मरऊँ[5]।
ओहि के बार जीवनहिं वारौं[6]। सिर उतारि नेवछावरि डारौं[7]।
ताकरि चाह कहै जो[8] आई। दुऔ जगत तेहि देउँ बड़ाई[9]।

ओहि न मोरि कछु आसा[10] हौं ओहि आस करेउँ।
तेहि निरास प्रीतम कहँ जिउ न देउँ[11] का देउँ ॥

[२१२]

गौरैं हँसि महेस सौं कहा। निस्चै यह बिरहानल[1] दहा।
निस्चैं यह ओहि कारन तपा। परिमल पेम न आछै[2] छपा।
निस्चै पेम पीर यह जागा। कसत कसौटी कंचन लागा।
बदन पियर जल डभकहिं[3] नैनाँ। परगट दुऔ पेम के बैनाँ।
यह ओहि लागि जरम एहि[4] सीझा। चहै न औरहि ओहीं रीझा।
महादेव देवन्ह के पिता। तुम्हरी सरन[5] राम रन जिता।
एहू कहँ तसि[6] मया करेहू। पुरवहु आस कि हत्या लेहू।

हत्या दुइ जो[7] चढ़ाएहु काँधे[8] अबहुँ न गे[9] अपराध।
तीसरि लेहु एहु कै माँथे[10] जौं रे लेइ कै[11] साध ॥

---

५. पं० १ आम गहे मरऊँ, द्वि० २, ३,४ च० १ लागि जेहि मरऊँ, तृ० ३ लागि ओहि मरऊँ। ६. प्र० १ जीव बलि दीन्हा, प्र० २ जीवनहि वारौं, द्वि० ४, ५ जीव निरबारौं। ७. प्र० १ नेवछावरि कीन्हा, प्र० २ नेवछावरि करौं, द्वि० ४, ५ नेवछावरि सारौं। ८. प्र० १ कोइ। ९. तृ० ३ बधाई। १०. प्र० १ आस है। ११. तृ० ३ देउँ।

[२११] १. प्र० १ बिरहै नल। २. प्र० १ रहै तेहि, प्र० २ छपाए। ३. तृ० १ दहकै, द्वि० ३ टपकहि। ४. प्र० १, द्वि० ५ कै, द्वि० २, ३, ४ दह, तृ० १ पुनि, तृ० ३ तौ, पं० १ तस। ५. तृ० ३ सन। ६. द्वि० २ अस, तृ० १ अब, तृ० ३ मिव। ७. च० १ दो एक। ८. द्वि० २ चढ़ाएहु। द्वि० ३, तृ० २ चढ़ाएहु माथे। ९. प्र० १ अजहुँन गे, प्र० २, च० १ मबहुँ न गे, द्वि० १,३ तेहि न गए, द्वि० ४ औ तिन के। १०. प्र० १ एहु लेहु तुम्ह, प्र० २ इहै लेहु गे, द्वि० २ एहु लेहु अब, तृ० ३ लेहु कै माथें, द्वि० ६ इहौ लेहु कै। ११. प्र० १, जौ रे लेवे कै, द्वि० ३ कै पुरवहु एहु।

[२१२]

सुनि कै महादेव कै भाखा[1]। सिद्ध पुरुष राजैं मन लखा[1]।
सिद्ध अंग नहिं बैठै माखी। सिद्ध पलक नहिं लागै आँखी।
सिद्धहि संग[2] होइ नहिं[3] छाया। सिद्धहि होइ न भूख औ माया।
जौं जग सिद्धि गोसाईं कीन्हा। परगट गुपुत रहै को[4] चीन्हा।
बैल चढ़ा[5] कुस्टी कै भेसू। गिरिजापति सत[6] आहि महेसू।
चीन्है सोइ रहै तेहि[7] खोजा। जस बिक्रम औ राजा भोजा[8]।
कै जियँ तंत मंत सो हेरा। गएउ हेराइ जबहि भा मेरा[9]।[10]

बिनु गुरु पंथ न पाइअ भूलै सोइ जो मेंट।
जोगी[11] सिद्ध होइ तब जब गोरख[12] सौं भेंट ॥[13]

[२१३]

ततखन रतनसेनि गहबरा। छाड़ि डफार[1] पाउ लै परा।
माता पितैं जनमि कत पाला। जौं पै फाँद पेम गियँ[2] घाला।
धरती सरग मिले हुत[3] दोऊ। कत[4] निरार कै दीन्ह[5] बिछोऊ।

---

[२१२] १. प्र० २, तृ० २ माषा, लाखा, तृ० ३ भाषा, राखा। २. प्र० १, द्वि० ४ सिद्ध के अंग। ३. प्र० १ न होखे (भोजपुरी प्रभाव)। ४. प्र० १, द्वि० १ नहिं। ५. प्र० १ बसह चढ़े। ६. प्र० २ गिरिजासुत सो, द्वि० २ गिरिजासुत तप, तृ० ३ गिरिजापनि सो, द्वि० ४, ५ काहा राजै सत, द्वि० ६ को जानै यह, द्वि० ७ काकर सुत पति, द्वि० ३ कह राजा सत, च० १ गिरिजासुत पितु। ७. प्र० १, द्वि० ७ करै अस, द्वि० ६ रहै जो। ८. प्र० १ पर काया परदेस सँजोगू। ९. द्वि० १ जो सिलै न हेरा। तृ० १ को छोड़कर सभी प्रतियों में 'जबहि' के स्थान पर 'जोहि' है (हिंदी मूल)। १०. प्र० १, द्वि० ७ जौं भलि होति लछिमी नारी, तजि महेस कल होत भिखारी। ११. द्वि० १, ६, तृ० ३, च० १ चेला। १२. तृ० ३ गुरू। १३. प्र० १, द्वि० ७ जो जो सुनै सो रोवै दुरहिं रकत के आँसु।
रोम रोम तन रोवै सोत सोत भर माँसु॥

[२१३] १. प्र० २ रोपव छाडि। २. तृ० ३ के। ३. प्र० १, तृ० २ तहँ, प्र० २ हुए। ४. द्वि० ८ कत। ५. प्र० १ कीन्ह।

पदिक पदारथ कर हुँति खोवा। टूटहिं रतन[6] रतन तस रोवा।
गँगन मेघ जस बरिसहिं भले। पुहुमि[7] अपूरि सलिल होइ[8] चले।
सायर उपटि[9] सिखर गा पाटी। जरै पानि[10] पाहन हिय फाटी।
पवन पानि होइ होइ सब गिरई। पेम के फाँद कोउ जनि परई।[12]

तस रोवै जस जरै जिउ[13] गरै रकत औ माँसु।
रोवँ रोवँ सब रोवहिं सोत सोत भरि आँसु॥[14]

[२१४]

रोवत बूड़ि उठा संसारू। महादेव तब भएउ मयारू।
कहेसि न रोव बहुत तैं रोवा। अब ईसर भा दारिद खोवा[1]।
जो दुख सहै होइ सुख[2] ओकाँ। दुख बिनु सुख न जाइ[3] सिवलोकाँ।
अब तूँ सिद्ध भया सिधि[4] पाई। दरपन कया छूटि गै[5] काई।
कहौं बात अब होइ[6] उपदेसी[7]। लागु पंथ भूले परदेसी[8]।
जौं लहि चोर सेंध नहिं देई। राजा केर न मूँसै पेई[9]।
चढ़ै तौ जाइ बार वह खूँदी[10]। परै तौ सेंधि सीस सौं[11] मूँदी[10]।

कहौं तोहि सिंघल गढ़ है खँड सात चढ़ाउ।
फिरा न कोई जिअत जिउ सरग पंथ दै[12] पाउ॥

---

६. प्र० १ मोति। ७. द्वि० ४ धरती। ८. प्र० १ नव। ९. प्र० १ उँमहि। १०. प्र० २, द्वि० ६ जरै पहार, द्वि० २, ४ चढ़े पानि। ११. प्र० २ जरै पहार नीर ते आँटी, द्वि० ७ परै पहार पानी महँ ठाढ़े, प्र० २ जरे पहार पाहन हिअ फाटे। १२. प्र० १, द्वि० ७ जरै नीर तस मरै विहूना, परवत जरै होइ जरि चूना। १३. प्र० २ जिअ रोवै। १४. प्र० १, द्वि० ७ में यहाँ वह दोहा है, जो ऊपर स्वीकृत पाठ में छंद २१२ में है।

[२१४] १. प्र० १ भा प्रसन्य दारिद दुख खोवा। २. प्र० २ सिव। ३. प्र० १ होइ। ४. तृ० ३ सुधि (उर्दू मूल)। ५. प्र० १, २ गौ। ६. प्र० १ अब सुनु, प्र० २ एक सुनु, द्वि० १ अब हौं, द्वि० ७ तोहि, तृ० २ सुनु हो। ७. प्र० १ परदेसी। ८. प्र० १ सहदेसी। ९. प्र० २ कै धन मूस न घोई, च० १ केर न मूमि पै लेई। १०. प्र० २ होए खुंदा, मुंदा। ११. प्र० १, द्वि० ६ दै, प्र० २ पै। १२. प्र० २ लै, द्वि० ५ दुइ, तृ० १, ३ धरि।

[२१५]

गढ़ तस बाँक जैसि तोरि काया । परखि[1] देखु तैं[2] ओहि की[3] छाया[4] ।
पाइअ नाहिं जूझि हठि[5] कीन्हे । जेइँ पावा तेइँ आपुहि चीन्हे ।
नौ पौरी तेहि गढ़ मँझिआरा[6] । औ तहँ फिरहिं[7] पाँच कोटवारा ।
दसव दुआर गुपुत एक नाँकी[8] । अगम चढ़ाव बाट सुठि बाँकी[8] ।
भेदी कोइ जाइ ओहि घाटी । जौं लै[9] भेद चढ़ै होइ[10] चाँटी ।
गढ़ तर सुरँग कुंड अवगाहा[11] । तेहि महँ पंथ कहौं तोहिं पाहाँ[12] ।
चोर पैठि जस सेंधि सँवारी । जुआ पैंत जेउँ लाव जुआरी ।

जस मरजिया समुँद धँसि मारै[13] हाथ आव[14] तब[15] सीप ।
ढूँढ़ि[16] लेहि ओहि सरग दुवारी[17] औ चढु[18] सिंघल दीप ॥

[२१६]

दसवँ दुवार तारु का लेखा । उलटि दिस्टि जो लाव सो देखा ।
जाइ सो जाइ साँस[1] मन बंदी[2] । जस धसि लीन्ह कान्ह कालिंदी[3] ।[3]
तूँ मन[4] नाँधु मारि कै स्वाँसा । जौं पै मरहि आपुहि करु[5] नाँसा ।
परगट लोकचार कहु[6] बाता । गुपुत लाउ जासौं[7] मन[8] राता ।

---

[२१५] १. प्र० २ निरखि, द्वि० ४, ५ पुरुख । २. द्वि० ३ यह । ३. प्र० १, २ दहुँ काकरि । ४. द्वि० ७ माँझा । ५. द्वि० ४ लड़, द्वि० २, ३ कै । ६. प्र० १ कहँ लाग देवारा, द्वि० ७ पर दशन केवारा । ७. तृ० १ देव तहँ फिरहिं, च० १ हठि तेहिं पंथ, पं० १ हुन तहँ बैठ । ८ प्र० २, द्वि० ७, तृ० ३ नाँकी, बाँकी । ९. प्र० १ करि । १०. प्र० १ लै, द्वि० ७ हुर । ११. प्र० १, २, द्वि० ४, ६, ७ कुंड सुरँग तेहि माँहा, तृ० ३ एक कुंड अवगाहा । १२. प्र० १, द्वि० ७ अगम अवगाहा । १३. द्वि० २ लेई । १४. प्र० १ समुँद महँ ढूँढ़ि उठै लै, द्वि० ७ समुँद महँ ढूँढ़ि फिरै एक । १५. तृ० ३ तस । १६. प्र० १, द्वि० ७ खोजि । १७. प्र० १ सों । १८. द्वि० २, ४, तृ० २, च० १ चढ़ै मो ।

[२१६] प्र० १ सो तहाँ साँस, द्वि० २ सोइ जो अस । २. प्र० १ साँधी, मन बाँधी, प्र० २ दाँधी, सर काँधी, द्वि० २ बंधी, कालिंदी । ३. तृ० २ उलटा पंथ पेम के बारा, चढ़ै सरग सो परै पतारा । (तुलना० २२०. ६) ४. प्र० १ पुनि, तृ० ३ परु । ५. प्र० १ करसि आपु कहँ । ६. प्र० १ कर । ७. द्वि० ५ भाव बहि सों । ८. द्वि० ६ रँग ।

हौं हौं कहत[९] मंत सब कोई। जौं तूँ नाहिं आहि सब सोई।
जियतहिं जौ रे मरै[१०] एक बारा। पुनि कब मीचु को मारै पारा[१२]।
आपुहि गुरु सो आपुहि चेला। आपुहि सब सो[१३] आपु अकेला।[१४]

आपुहि मीचु जियन पुनि[१५] आपुहि तन मन[१६] सोइ।
आपुहि आपु करै जो चाहै कहाँ क दोसर कोइ[१७]॥

[२१७]

सिद्धि गोटिका राजैं पावा। औ भै[१] सिद्धि गनेस मनावा।
जब संकर सिधि दीन्ह गोटेका[२]। परी हूल जोगिन्ह गढ़ छेंका।
सबै पदुमिनीं देखहिं चढ़ीं। सिंघल घेरि[३] गई[४] उठि[५] मढ़ीं[६]।
जस खरभरा[७] चोर मति कीन्ही। तेहि विधि सेंधि चाह[८]गढ़ दीन्ही।
गुपुत जो रहै चोर सो साँचा। परगट होइ जीव नहिं बाँचा।
पँवरि पँवरि गढ़ लाग केवारा। औ[९] राजा सौं भई पुकारा।
जोगी आइ छेंकि गढ़ मेले। न जनौं[१०] कौन देस सौं[११] खेले।

भई[१२] रजाएसु देखहु को भिखारि अस ढीठ।
जाइ[१३]बरजि तिन्ह आवहु[१४] जन दुइ[१५] जाइ[१६] बसीठ॥

---

९. तृ० ३ कहर। १०. च० १ मनि। ११. प्र० २ मुआ, द्वि० १, प० १ मुण्ड, तृ० ३ मुए। १२ प्र० १, द्वि० ६ मरै को पारा, द्वि० ४, न० २, ३ मरै कोमारा। १३. द्वि० २ सरबनु। १४ प्र० १, द्वि० ७ (५धा. ३) गो पतार कारी पुनि नाधा, अपुन्ब कँवल आव तब हाथा। १५. द्वि० २ मन आपुहि। – १६. द्वि० २, ३ तृ० १, होइ। १७. द्वि० ६ क ाँ क दोसर होइ।

[२१७] १. प्र० १, द्वि० ७, ६ भा, प्र० २ भव। २. प्र० १ दन्ही टेका, द्वि० १, ७, ३, ५, तृ० १, २ दान्ह वो टेका। ३. प्र० १ सब गढ छेंकि, प्र० २ न्धिल छेंकि। ४. द्वि० २, ३, तृ० १ कीन्ह। ५. तृ० १ वै। ६. प्र० १ सब गढ़ छेंकि गई तजि मढ़ी। ७. तृ० ३ खरफरा, द्वि० १ घर फिरा, च० ७ खरपरा। ८. प्र० २ कार्ई, द्वि० १ जाइ। ९. द्वि० २ वै, द्वि० ६, तृ० २ जाइ। १०. प्र० १, २, द्वि० ४, ५, च० १ कै न जनौं। ११. द्वि० १ देस कहँ, द्वि० २, ६, च० १ कहाँ कहँ, द्वि० ४ कहाँ हुत। १२. प्र० २, द्वि० ५, तृ० ७, च० १ भएउ। १३. प्र० २, द्वि० ४, ६, तृ० ७ बेगि। १४. प्र० २ पठवहु। १५. प्र० १ पठौ। १६. तृ० ३ होइ, प० १ चारि।

[२१८]

उतरि बसिठ दुइ आइ जोहारे। कै तुम्ह जोगी कै बनिजारे।
भई[1] रजाएसु आगे खेलहु। यह गढ़[2] छाड़ि अनत[3] होइ मेलहु।
अस लागेहु केहि के सिख दीन्हे। आएहु मरै हथि जिउ लीन्हे।
इहाँ इंद्र अस राजा तपा। जबहिं[4] रिसाइ सूर डरि छपा।
हहु बनिजार तौ बनिज बेसाहहु। भरि बैपार[5] लेहु जो[6] चाहहु।
जोगी हहु तौ जुगुति सौं माँगहु। भुगुति लेहु[7] लै मारग लागहु।
इहाँ देवता अस गए हारी। तुम्ह पतिंग को आहि[8] भिखारी।

तुम्ह जोगी बैरागी कहत[9] न मानहु[10] कोहु[11]।
माँगि लेहु कछु भिखया खेलि अनत कहुँ होहु[12]॥

[२१९]

अनु हौं भीख जो आएउँ लेई। कस न लेउँ जौं राजा देई।
पदुमावति राजा कै[1] बारी। हौं जोगी तेहि लागि भिखारी।
खप्पर लिए बार भा माँगौं। भुगुति देइ लै मारग लागौं।
सोई भुगुति परापति पूजा। कहाँ जाउँ अस बार[2] न दूजा।
अब धर इहाँ जीउ ओहि ठाऊँ। भसम होउँ पै[3] तजौं न नाऊँ।[4]
जस बिनु प्रान पिंड है छूँछा। धरम लागि कहिअहु जौं पूँछा।
तुम्ह बसीठ राजा की ओरा। साखि होहु एहि भीखि निहोरा।

---

[२१८] १. तृ० ३ भए (उर्दू मूल)। २. प्र० २, द्वि० २,३,४,६, तृ० १ गढ़नर। ३. प्र० २, द्वि० ४, ६ दूरि। ४. द्वि० १ जोवहि, द्वि० २, ३, ५, ६, तृ० १, २, च० १ जोहि (हिंदी मूल)। ५. द्वि० ५, ७ बेसाह। ६. प्र० १ जन। ७. तृ० ३ देहि। ८. प्र० १,२, च० १ कोहि महि, द्वि० २ कोहि जोग। ९. प्र० २ सुनत। १०. प्र० १, द्वि० ७ लागहु। ११. प्र० २ कोहु जाहु, तृ० १ तोहि, होहि।

[२१९] १. द्वि० ३ धर। २. द्वि० १, तृ० ३ आहि। ३. प्र० १ अरु ४. प्र० २, तृ० २ अब निउ उहाँ धरा एहि बारा, तजौं न नाँव मिलौं जो छारा।

जोगी बार आव सो जेहि भिख्या[5] कै आस[6]।
जौं निरास[7] दिढ़[8] आसन[9] कत गवनै केहु पास ॥[10]

[२२०]

सुनि बसिठन्ह मन उपनी रीसा। जौं पीसत घुन जाइहि पीसा।
जोगी अैस कहै नहिं कोई। सो कहु बात जोग[1] तोहि होई।
यह बड़ राज इंद्र कर पाटा। धरती परें सरग को[2] चाँटा।
जौं यह बात होइ तहँ चली। छूटहिं हस्ति अबहिं सिंघली।
औ छूटहिं तहँ बज्र के गोटा। बिसरै भुगुति होहु तुम्ह रोटा[3]।
जहँ लगि दिस्टि न जाइ पसारी। तहाँ पसारसि हाथ भिखारी।
आगू देखि पाव धरु[4] नांथा। तहाँ न हेरु टूट जहँ माँथा।

वह रानी जेहि जोग है तेहि क[5] राज औ पाट[6]।
सुंदरि जाइ[7] राज घर[8] जोगिहि बंदर काट ॥

[२२१]

जौं जोगिहि सुठि बंदर काटा। एकै जोग न दोसरि बाटा।
और साधना आवै साधें। जोग साधना आपुहिं दाधें।
सरि पहुँचाइ जोग करु साथा। दिस्टि चाहि होइ अगुमन हाथा।[1]

---

[5]. तृ० ३ भिखिश्रा (उर्दू मूल)। [6]. तृ० २ कतु छाला नित चाव। [7]. द्वि० ३ निराग। [8]. तृ० ३ दिरढ़ (उर्दू मूल)। [9]. तृ० १ एहि नगरी। [10]. प्र० ७ आवै बेंढ़, पं० १ काहू के। [11]. द्वि० ७ जोगी बार आव तव जव रे भुगुति तन जाग।
नाहीं तौ बैठि रहै थिर आपन वत इन्द्री बैराग ॥

[२२०] [1]. प्र० २ होय। [2]. प्र० १, तृ० ३ चाहँ। [3]. प्र० १ जोग वडहि रोटा, प्र० २, द्वि० ३, ५, तृ० २, च० १, पं० १ सव रोटा, द्वि० ४ होर सत खोटा, तृ० १ होहु तुम्ह लोटा। [4]. प्र० १ दुर। [5]. प्र० १ ताहि, द्वि० २ तहाँ, द्वि० ३, ४ तेही। [6]. द्वि० २ बैठ सुख पाट, तृ० २ राज सुख पाट। [7]. प्र० १ सुंदर बरहि, प्र० २ सुंदरि गई। [8]. द्वि० १ घर बैठी।

[२२१] [1]. प्र० १ करकत हिए जो पार्थहि बारू, तहि उठाइ कै करै पहारू।

तुम्हरे जौं हैं सिंघली हाथी। मोरें हस्ति गुरू बड़[२] साथी।[३]
हस्ति[४] नास्ति जेहि करत न बारा। परबत करै पाव कै छारा।
गढ़ कै गरब खेह मिलि गए। मंदिर उठहिं ढहहिं भै नए।[५]
अंत जो चलना कोऊ न चीन्हा। जो आवै सो आपुन[६] कीन्हा।[७]

जोगिहि कोह न चाहिअ तब न[८]मोहिं रिसि[९] लागि।
जोग तंत जेउं[१०] पानी[११] काह करै तेहि आगि[१२]॥

[२२२]

बसिठन्ह जाइ कही असि[१] बाता। राजा सुनत कोह भा राता[२]।
ठाँवहि ठाँव कुँवर सब माँखे[३]। केइँ अब लहि जोगी जिउ[४]राखे।
अबहुँ[५] बेगि कै करहु सँजोऊ। तस मारहु हत्या किन होऊ।
मंत्रिन्ह कहा रहहु मन बूझे। पति[६] न होइ जोगी सौं जूझे।
ओईं मारै[७] तौ काह भिखारी। लाज होइ जौं मानिअ हारी।
ना भल मुएँ न मारे मोखू। दुहूँ बात लागै तुम्ह[८] दोखू।
रहै देहु जौं गढ़ तर मेले। जोगी कत आछहिं बिन[९] खेले।

---

२. द्वि० ३, तृ० १ है, तृ० ३ कै। ३. प्र० १ राजा तोर हस्ति घर साईं, मारे जीव वह एक गुसाईं। ४. प्र० १ अस्ति। ५. द्वि० ४, ५, ६, तृ० ३ जो गरुए गढ़ जौंवन भए, जो गढ़ गरब करहिं ते गए। ६. द्वि० २, च० १, पं० १ तेइ आपुहिं, तृ० ३ आपुन चह। ७. प्र० १ राज करत तेहि भीख मँगावै, भीख माँग तेहि राज दिवावै। ८. द्वि० ४ तब तो, तृ०३ तबन। ९. प्र०१ मया मोह। १०. द्वि० ३, तृ० १, ३ पेम पंथ जहँ। ११ द्वि० २, ३, तृ० १ पानि है, द्वि० ४ पानी का।

२२२] १. प्र० १ यह, द्वि० १ असि, द्वि० ६, पं० १ सब। २. प्र० २ में यह अर्द्धाली नहीं है। ३. द्वि० ३ आवे। ४. प्र० १ कहँ, द्वि० ४, च० १ लै। ५. प्र० १ अबहू। ६. द्वि० २ तप, तृ० ३ मति। ७. द्वि० २ दारे। ८. प्र० १ हम आवै, द्वि० ६ आवै तुम्ह। ९. द्वि० २ आइ सो भैसेहिं, द्वि० ४ कत आछहिं पुनि, प्र० १, द्वि० ६ जो आए सो, द्वि० २ आइ सो भैसेहिं, तृ० २ कत आए सो, द्वि० ३ कत अचकन्ह बिनु, तृ० २ कत आईं सो, च० १ कत आए ते।

रहै देहु जौं गढ़ तर[10] जनि चालहु यह[10] बात।
नितिहिं[12] जो पाहन भख करहिं[13] अस केहिके मुख दाँत॥

[२२३]

गए बसीठ पुनि बहुरि न आए। राजैं कहा बहुत दिन लाए॥
न जनौं सरग बात दहुँ काहा[1]। काहु न आइ कही फिरि चाहा॥
पाँख[2] न कया पवन नहिं पाया[3]। केहि बिधि मिलौं होउँ केहि[4] छाया[5]॥
सँवरि रकत[6] नैनन्ह भरि चुवा। रोइ हँकारा माँझी[7] सुवा॥[8]
परे सो आँसु रकत के टूटी। अबहुँ सो राती बीर बहूटी॥
ओहि रकत लिखि दीन्ही[9] पाती। सुवा जो लीन्ह चोंच भै राती॥
बाँधा कंठ परा जरि[10] काँठा। बिरह क जरा जाइ कहँ नाँठा॥

मसि नैना लिखनी बरुनि रोइ रोइ लिखा अकथ्थ[11]।
आखर दहै न केहुँ गहै[12] सो दीन्ह सुवा के[13] हथ्थ[11]॥

[२२४]

औ मुख बचन सो कहेसु परेवा। पहिले मोरि बहुत कै सेवा॥
पुनि सँवराइ कहेसु अस दूजी। जौं बलि दीन्ह देवतन्ह पूजी॥

---

१०. प्र० २ रहै देहु आर मास दुइ, द्वि० ५ आछै देहु जो गढ़ तर मेले। ११. प्र० १ बछु। १२. द्वि० ५ निनहि, च० १ बैठि। १३. प्र० १, २, तृ० २, च० १ पाथर खाहहि, द्वि० ६ पाहन खाइहि, तृ० ३ भीति कर।

[२२३] १. प्र० २ कस बात भा ताहा। २. प्र० २ पाप। ३. प्र० १ माया। ४. प्र० १ तेहि। ५. द्वि० ३ पाँख न मोको देहु गोसाईं, पंखी होउ जाहुँ वहि ठाईं। ६. द्वि० ४ याद सँवरि। ७. प्र० ३, द्वि० ३ पाँढी। ८. प्र० २ रोवहु कहा कह मंत्री सुवा। ९. प्र० २ लिखी सो। १०. प्र० १, २, द्वि० ४ परा जस, द्वि० १ जरा जनु, च० १ परा तब। ११. प्र० २ अरथ सुवा के हाथ, द्वि० १ आँक पवन के हाँक। १२. प्र० १ आखर जरै न छुइ सकहिं, प्र० २ आग जर न छुइ सरहिं, द्वि० ६, तृ० २ आखर जरै न कोइ छुवै। १३. प्र० १, द्वि० ३, ४, ५ परेवा, प्र० २ पवन पथ, तृ० ३ पराए, द्वि० ७ कीर के।

सो अबहीं तपसी[1] बलि लागा। कब लगि कया सून मढ़[2] जागा।
भलेहिं अैस हौं तुम्ह बलि दीन्हा। जहँ तुहुँ तहँ भावै[3] बलि कीन्हा।
जौं तुम्ह मया कीन्ह पगु धारा[4]। दिस्टि देखाइ बान बिख मारा।
जो अस जाकर आसामुखी। दुख महँ अैस न मारै दुखी।
नैन भिखारि न मानै[5] सीखा। अगुमन दौरि[6] लेहिं पै भीखा।

नैनहिं नैन जो बेधिगै[7] नहिं निकसहिं वै बान।
हिएँ जो आखर तुम्ह लिखे ते सुठि घटहिं[8] परान॥

[२२५]

ते बिष बान लिखौं कहँ ताईं। रकत जो चुवा भीजि दुनियाईं।
जानु सो गारै[1] रकत पसेऊ। सुखी न जान दुखी कर भेऊ।
जेहि न पीर तेहि काकरि चिंता। प्रीतम निठुर होइ अस निंता[2]।
कासौं कहौं बिरह कै भाखा। जासौं कहौं होइ जरि राखा[3]।
बिरह अगिनि तन जरि बन जरे[4]। नैन नीर साएर सब भरे[5]।[6]
पाती लिखी सँवरि[7] तुम्ह नामाँ। रकत लिखे[8] आखर[9] भे स्यामाँ।
अच्छर जरे न काहूँ छुवा। तब[10] दुख देखि चला लै सुवा।

अब सुठि[11] मरौं छूँछि गै पाती पेम पियारे हाथ।
भेंट होत दुख रोइ सुनावत जीउ जात जौं[12] साथ॥

---

[२२४] १. प्र० १ सुना अवहि तेई, तृ० ३ अब ताई सोई। २. तृ० ३ मरह (उर्दू मूल)। ३. प्र० १, २, द्वि० ४ तहाँ भाउ, ४. तृ० ३ ठाग (उर्दू मूल)। ५. द्वि० २, तृ० २ न मानहिं। ६. तृ०३ दवरि (उर्दू मूल)। ७. तृ० ३ कै (उर्दू मूल)। ८. प्र० १ लीन्ह, द्वि० १ सजौं, द्वि० ६ दहै, तृ० २ जर.ई।

[२२५] १. प्र० १ तन जो वार। २. प्र० १ अनचिंता। ३. प्र० १ दुख ताता। ४. प्र० २ बन जरि, तृ० ३ जर तन तृ० १ जरिई, द्वि० ५ जरि मन, च० १ जरि पर। ५. तृ० ३ जरई, भरई। (उर्दू मूल) ६. प्र० में इसके स्थान पर (यथा. ५): दामों कहौं दुकख वो नामा, जासों होइ दुहूँ जग धामा। ७. प्र० २ लिखि सँवरी, तृ० २ लिखि सँवरा। ८. प्र० १ के अंध, तृ० ३ लिखा। ९. प्र० १ लिखे। १०. प्र० १, २ अति। ११. तृ० ३ तौ। १२. प्र० १ जेहि, द्वि० २ सो, द्वि० १ चलु।

[२२६]

कंचन तार बाँधि गियँ पाती। लै गा सुवा जहाँ धनि राती।
जैसें कँवल सुरुज कै आसा। नीर कंठ लहि मरै पियासा।
बिसरा भोग सेज सुख बासू। जहाँ भँवर सब तहाँ[1] हुलासू[2]।
तब लगि धीर सुना नहिं[3] पीऊ। सुनतहिं घरी रहै नहिं जीऊ।
तब लगि सुख हियँ पेम न जामा। जहाँ पेम का सुख बिसरामा[4]।
अगर चंदन सुठि दहै सरीरू। औ भा अगिनि कया कर चीरू।
कथा कहानी सुनि सुठि जरा। जानहुँ घीउ बैसंदर परा[5]।
बिरह न आपु सँभारै मैल चीर सिर रूख।
पिउ पिउ करत रात[6] दिन पपिहा भइ मुख सूख॥

[२२७]

ततखन गा[1] हीरामनि आई[2]। मरत पियास छाँह जनु पाई[2]।
भल तुम्ह सुवा कीन्ह है फेरा। गाढ़[3] न जाइ[4] पिरीतम केरा।
बातन्ह जानहु[5] बिखम पहारू। हिरदै मिला न[6] होइ निनारू।
मरम पानि कर[7] जान पियासा। जो जल महँ ताकहँ का आसा[8]।
का रानी पूँछहु यह[9] बाता। जनि कोइ होइ प्रेम कर राता[10]।
तुम्हरे दरसन लागि बियोगी। अहा जो महादेव मढ़[11] जोगी।
तुम्ह बसंत लै तहाँ सिधाईं। देव पूजि पुनि ओपहँ आईं।
दिस्टि बान तस[12] मारेहु धाइ[13] रहा तेहि ठाउ।
दोसरी बार[14] न बोला लै पदुमावति नाउँ॥

---

[२२६] प्र० १, २ रूप तहाँ, द्वि० ६ रस तहाँ। २. प्र० १, २ निवासू, द्वि० ६ विलासू। ३. तृ० २ सुनावहिं। ४. द्वि० २ में यह पंक्ति नहीं है। ५. तृ० ३ बरा। ६. प० १ रैनि।

[२२७] १. प्र० २ पहुँच। २. प्र० १ आवा, आम जल पावा, च० १ आई, जनु जल पाई। ३. तृ० ३ गा़ह (उर्दू मूल)। ४. प्र० १ छमिहहु, प्र० २ छूटा। ५. प्र० १ बात न जानहु, प्र० २ बाट न जाहु, द्वि० २ दिस्टि दीब जनु। ६. प्र० १ मिलन कै। ७. प्र० १ को। ८. तृ० ३ त्रासा। ९. च० १ जिअ। १०. तृ० ३, च० १ राता। ११. तृ० ३ मन्द (उर्दू मूल ?)। १२. प्र० २ तेहि, तृ० ३ सर। १३. तृ० ३ घाव। १४. प्र० १ दोसरि बोल न बोला, द्वि० २ दूजी बार जो मारा, द्वि० ३ दोसरि बार जो बोला।

[२२८]

रोवँहिं रोवँ बान वै[1] फूटे। सोतहि सोत रुहिर मकु[2] छूटे।
नैनन्हि चली रकत कै धारा। कंथा भीजि भएउ रतनारा।
सूरुज बूड़ि उठा परभाता[3]। औ मँजीठ टेसू बन राता।
पुहुमि जो भीजि[4]भएउ[5]सब गेरू। औ तहँ[6]अहा सो[7] रात पखेरू।
भएउ बसंत राती बनफती। औ राते[8] सब जोगी जती।
राती सती[9]अगिनि सब[10]काया[11]। गगन मेघ राते तेहि[12] छाया।
ईंगुर भा पहार[10] तस[11] भीजा। पै तुम्हार नहिं रोवँ पसीजा।

तहाँ[12] चकोर कोकिला तिन्ह हिय मया पईठि[13]।
नैन रकत भरि आए[14] तुम्ह फिरि कीन्हि न डीठि ॥

[२२९]

ऐस बसंत तुम्हहिं पै खेलहु। रकत पराएँ सेंदुर मेलहु।
तुम्ह तौ खेलि मँदिर कहँ आईं। ओहिक मरम[1]जस[2]जान गोसाईं।
कहेसि मरै को बारहिं बारा। एकहिं बार होउँ जरि छारा।
सर रचि रहा[3] आगि जौं लाई। महादेव गौरैं सुधि पाई।
आइ बुझाइ दीन्ह पँथ तहाँ। मरन[4] खेल कर[5] आगम जहाँ।
उलटा पंथ पेम के बारा। चढ़ै सरग जौं[6] परै पतारा।
अब धंसि लीन्ह चहै[7]तेहि[8]आसा। पावौ साँस[9] कि मरै निसाँसा[10]।

---

[२१८] १. तृ० ३ जनु। २. प्र० १ बिस, प्र० २ तेहि, द्वि० १, २, ३, ४, ५, तृ० १, च० १, पं० १ मुख। ३. प्र० २ भए राता। ४. तृ० २ जरी, तृ० ३ पुजि। ५. च० १ पं० १ रकत। ६. प्र० १ २ और तहाँ जो रात, द्वि० २, तृ० २ औ तेहि बन सब, द्वि० ४ औ राते तहँ पंखि, तृ० ३ और तहां सो। ७. द्वि० ५ जितने। ८. तृ० १ कया। ९. प्र० १ जलि, द्वि० २ तेहि, तृ० ३ सहि। १०. द्वि० ४ पाहन। ११. प्र० १ सब, तृ० ३ जहँ। १२. तृ० १, २ जहाँ। १३. द्वि० ५ न बैठ। १४. तृ० ३ रोम, द्वि० ४ भाहि।

[२२९] १. तृ० ३ मरम। २. प्र० १ तौ, तृ० ३ पै। ३. द्वि० १, ६ चहा। ४. तृ० १, च० १ मरन। ५. प्र० २ गम, तृ० ३ गढ। ६. प्र० १, च० १ औ, द्वि० ३ सो। ७. प्र० १ चाह, तृ० ३ चढ़ै। ८. च० १ तोहि। ९. प्र० १ द्वि० १, ३, तृ० १ आस, द्वि० ५ पानि। १०. प्र० १, २, द्वि० १, १ निरासा, द्वि० ५, तृ० १ पियासा।

पाती लिखि सो पठाई लिखा[११] सबै दुख रोइ।
दहुँ जिउ रहै कि निसरै काह रजाएसु होइ॥

[२३०]

कहि कै सुआँ[१] छोड़ि दई[२] पाती। जानहु दिव्य[३] छुअत तसि[४] ताती[५]।
गीवँ जो बाँधे कंचन तागे। राते स्याम कंठ जरि लागे।
अगिनि स्वाँस सँग[६] निकसै ताती[७]। तरिवर जरहिं तहाँ का पाती[७]।
जरि जरि हाड़ भए सब[८] चूना। तहाँ माँसु[९] का रकत निहूना।
रोइ रोइ सुआँ कही सब[१०] बाता। रकत के आँसुन्ह भा मुख राता।
देखु कंठ जरि लाग सो गेरा। सो कस[११] जरै बिरह अस[१२] घेरा।
ओईं तोहि लागि कया असि जारी। तपत मीन जल देउ न पारी[१३]।

तोहि कारन वह जोगी भसम कीन्ह तन[१४] डाहि।
तूँ अस निठुर निछोही बात न पूँछी[१५] ताहि॥

[२३१]

कहेसि सुआ मोसौं सुनु बाता। चहौं तौ आजु मिलौं जस राता।
पै सो मरमु न जानै मोरा[१]। जानै प्रीति[२] जो मरि कै जोरा।

---

११ प्र० १ अभै।

[२३०] १. कहा सँदेस। २. द्वि० ४ दिय। ३. प्र० २, [illegible] ८, ७ दीप, द्वि० १ दरब, द्वि० ५ दुख। ४ द्वि० १ धुटि स्न, तृ० [illegible] छोडि तस। ५. प्र० १ नसि दाती। ६ तृ० ३ तस, द्वि० ४, ६ मुख, च० १ तन। ७. द्वि० २ राती, पाती, तृ० ३ पाता, दाती। ८. प्र० १, २ बिरह हाड भा, द्वि० ४ हाड भए ते, च० १ हाड भए जो। ९ तृ० ३ मानुस। १०. प्र० १ यह, तृ० ३ मुख, द्वि० ४, ५ सो। ११. प्र० १ वन। १२, तृ० ३ कै। १३ प्र० १ देइ पियारी, प्र० २ देइ निकारी, द्वि० ४ रहै पनारी, द्वि० २, ३, तृ० २ रहै न पारी, द्वि० ६ सखी बारी, च० १ रहै बतारी। १४. प्र० १ अँग। १५, द्वि० ६, तृ० २, च० १, पं० १ भुगुति न दीन्ही।

[२३१] १. तृ० ३ मोला। २. प्र० १, द्वि० ४, तृ० २ सोइ, प्र० २, द्वि० ५ मरम।

हौं जानति हौं अबहूँ काँचा। न जनहु[3] प्रीति रँग थिर राचा।
न जनहु[3] भएउ मलैगिरि बासा। न जनहु[3] रबि होइ चढा अकासा।[4]
न जनहु[3] होइ भँवर कर रंगू। न जनहु[3] दीपक होइ पतंगू।
न जनहु[3] करा भृंगि कै होई। न जनहु[3] अबहि[5] जिओ मरि सोई।
न जनहु[3] पेम औटि[6] एक[7] भएऊ। न जनहु[3] हिये महँ कै डर[8] गएऊ[9]।

तेहि का कहिअ रहन[10] खिन[11] जो है प्रीतम लागि।
जहँ वह सुनै[12] लेइ धँसि का पानी का आगि॥*

[२३२]

पुनि धनि कनक पानि मसि[1] माँगी। उत्तर लिखत भीजि तन[2] आँगी।
तेहि कंचन कहँ चहिअ[3] सोहागा। जो निरमल नग होइ सो[4] लागा।
हौं जो गई मढ़[5] मंडप भोरी[6]। तहवाँ तूँ न गाँठि गहि जोरी[6]।
भा बिसँभार देखि कै[7] नैना। सखिन्ह लाज का बोलौं[8] बैना।
खेल मिसुइँ[9] मैं चंदन घाला। मकु जागसि तौ[10] देउँ जैमाला।
तबहुँ न जागा गा तैं सोई। जागें भेंट न सोएँ होई[11]।

---

3. द्वि० ६, तृ० ३ नाजहु, द्वि० ३ नाचहु, द्वि० ४, ५ ना जनहु। 4. तृ० २ में (यथा. ७) ना जेहि अस्थिर भा रँग राता, ना जेहि हम जिय भा वह काता। 5. द्वि० ४ आप। 6. प्र० १ उवत। 7. च० १ रँग। 8. द्वि० ४, ५, तृ० १ हिए माँहि। 9. द्वि० २ में ऊपर पाद टिप्पणी ४ में दी हुई अर्द्धाली अतिरिक्त है, कुल आठ हैं। 10. प्र० रहब। 11. तृ० १ कहँ। 12. द्वि० १ पिय तहाँ, द्वि० ३ सुनै तहँ, च० १ जानइ तहँ, पं० १ तहँ आपुहि।

* तृ० ३ में इसके अनतर, द्वि० ३, ६, में अगले छंद के अनतर और द्वि० ५ में उसके भी अगले दोहे के अनंतर एक अतिरिक्त छंद है।

[२३२] 1. द्वि० ४ पुनि धनि कनक बान मसि, द्वि० ५ पुनि धनि कनक पानि हँसि, द्वि० ६ पुनि सो नैन कनक मसि। 2. प्र० १ गो। 3. प्र० १ लागि। 4. प्र० १, २ तौ। 5. प्र० १, २ सिव, तृ० ३ मरह (उर्दू मूल)। 6. भोरी, प्र० १ तहवाँ कह न गाँठि तै जोरी, द्वि० २, ४, ५, ६, च० १ भोरी, तहवाँ बस न गाँठि तै जोरी, तृ० १ तोरी, तहवाँ तूँ न गाँठि गहि जोरी। 7. प्र० १ सो देखत। 8. प्र० १ मुख आव न। 9. प्र० १ खेल कै मिसु प्र० २, तृ० १, ३ खेलन मिसु। 10. प्र० १ मकु खिन जाग। 11. द्वि० ३ कैसे भुगुति परापति होई।

अब जौं सूर[१२] होइ चढ़ै[१३] अकासा। जौं जिउ देइ तौ[१४] आवै पासा।

तब लगि[१५] भुगुति न लै[१६] सका रावन सिय[१७] एक साथ।
अब कौन भरोसें किछु[१८] कहौं[१९] जीउ पराएँ हाथ॥

[२३२]

अब जौं सूर गगन चढ़ि धावहु[१]। राहु होहु तौ ससि कहँ पावहु[१]।
बहुतन्ह ऐस जीउ पर खेला। तूँ जोगी[२] केहि माहँ[३] अकेला।
बिक्रम धँसा पेम के बारा। सपनावति[४] कहँ गएउ पतारा।
सुदेवच्छ[५] मुगुधावति[६] लागी। कँकन पूरि[७] होइ गा बैरागी।
राजकुँवर कंचनपुर गएऊ। मिरगावति कहँ[८] जोगी भएऊ।
साधा कुँवर[९] मनोहर[१०] जोगू। मधुमालति कहँ कीन्ह[११] बियोगू।
पेमावति[१२] कहँ सरसुर[१३] साधा। उखा लागि[१४] अनिरुध बर[१५] बाँधा।

हौं रानी पदुमावति सात सरग पर बास।
हाथ चढ़ौं सो[१६] तेहि कें प्रथम जो आपुहिं नास[१७]॥

---

१२. प्र० १, २ रवि, द्वि० १, २, ३, ४, ६, तृ० १, २, ३ ससि, । १३. तृ० ३ चरही (उर्दू मूल)। १४. प्र० २, द्वि० २, ४, तृ० ३, च० १ सो। १५. तृ० १ तैं। १६. च० १ कै। १७. प्र० २ रावन ससि, द्वि० २ राम सीय, द्वि० ३ आपउ सब, तृ० ३ राम गयि। १८. प्र० १ नैन भरोसे किछ, तृ० ३ कौन भरोसा अब।

[२३२] १. प्र० २, द्वि० १ आवहुँ, पावहु, द्वि० ४, ६ आवसि, पावसि। २. प्र० १ भिखारि। ३. द्वि० ६ को अहसि, द्वि० ३, च० १, द्वि० ५ को आहि। ४. द्वि० ३, च० १ चंपावति। ५. प्र० २ सुदेप बच्छ, द्वि० २ सदा वच्छ, द्वि० ४ सुदेपच्छ, द्वि० ५ सिरीभरज, द्वि० ७ छुद्र पछ, द्वि० ३, तृ० १, सुदैपच्छ, प० १ सुधापच्छ। ६. द्वि० ५ खहावन। ७. तृ० १ कनक पूर। ८. प्र० १ लगि। ९. तृ० १ कुँआर। १०. प्र० १ कुसुमावति, द्वि० ४ खटावनि, तृ० ३ कटावति, द्वि० ५, ६ कँधलावति, द्वि० ३ गधावति। ११. प्र० १ भएउ, च० १ दीन्ह। १२. च० १ पदमावति। १३. प्र० २ सुरसरि, तृ० ३ सीधर, द्वि० २, ३, ५, तृ० १, २ सरहर। १४. च० १ वहँ। १५. प्र० १, २, तृ० ३ गा, द्वि० ५ पर। १६. प्र० १ मैं, प्र० २ हौं। १७. प्र० १, २, तृ० १ प्रथम करै जिउ नाम, द्वि० २, तृ० ३ प्रथम करै अपुनाम, च० १ आपुहि कर जिउ नास।

[२३४]

हौं पुनि अहौं ऐसि तोहि[1] राती। आधी भेंट पीतम कै पाती।[2]
तोहि[3] जौं प्रीति निबाहै[4] आँटा। भँवर न देखु केतु महँ काँटा।
होहु पतंग अधर गहु[5] दिया। लेहु समुंद[6] धँसि होइ[7] मरजिया।
राति रंग जिमि दीपक बाती। नैन लाउ होइ सीप सेवाती।
चात्रिक होहु पुकारु पिआसा। पिउ न पानि रहु स्वाति की आसा।
सारस कै बिछुरी जिमि जोरी। रैनि होहु जस[8] चक्क[9] चकोरी।
होहु चकोर दिस्टि ससि पाहाँ। औ रवि होहु कँवल दधि[10] माहाँ।

हहुँ ऐसि हौं तो सौं[11] सकसि तौ प्रीति[12] निबाहु[13]।
राहु बेधि होइ अरजुन जीति द्रौपदी ब्याहु[13]॥

[२३५]

राजा इहाँ तैस तपि भूरा। भा जरि बिरह छार कर कूरा[1]।
मौन गँवाए गएउ[2] बिमोही। भा निरजिउ जिउ दीन्हेसि[3] ओही।
गही[4] पिंगला सुखमन[5] नारी। सुन्नि समाधि लागि गौ वारी।

---

[२३४] १. प्र० १ ऐसी तोसौं, तृ० ३ अहौं ऐसि तुम्ह। २. प्र० १, २ में यह पंक्ति ७ है। ३. द्वि० ६ अहहूँ। ४. तृ० ३ निबाहे (उर्दू मूल)। ५. द्वि० १ आवहु गहि, च० १ औ घर धरु। ६. च० १ आइ, पं० १ पानि। ७. द्वि० १ होहु, तृ० ३ जस। ८. द्वि० १, ६, तृ० ३ जल। ९. प्र० १, २ चंद, द्वि० २, ३, ४, ५ चकइ। १०. प्र० २ दह, द्वि० ६, तृ० २, ३, जल, द्वि० २, ३, ५ ओहि। ११. प्र० १, द्वि० ३ महूँ अहा अस तोसौं, प्र० २ महू ऐसि हौं तोहि सैं, द्वि० १, ४, तृ० २ होहुँ ऐस तोहि राती, तृ० ३ अहौं ऐसे जौं राते (उर्दू मूल), द्वि० ५ रहू ऐसि हौं तोहि कहँ, तृ० १ महूँ ऐसि तोहि राती। १२. प्र० २, द्वि० १, २, ६ ओर। १३. द्वि० ३ उतर लिखा अस आहि, ब्याहि।

[२३५] १. तृ० २ जहँ होइ टाकु तहाँ होइ कूरा। २. प्र० २ मौन लाए न गए, द्वि० २ हा अमनै गया, तृ० ३ जवन लवाए गएउ, द्वि० ४, ६ जीव गँवाइ सो गएउ, द्वि० ५ हा तेहिं देखत गएउ, तृ० २ मदन कुँवर मैं, च० १ यह तो जीव पुनि गएउ। ३. प्र० १, २ दीन्हि जिउ, तृ० ३ जीउ दिसि। ४. द्वि० ५ रही, पं० १ इंगला। ५. तृ० २ सुखना।

सुंदहि समुँद जैस होइ मेरा। गा हेराइ तस[6] मिलै न हेरा।
रंगहि पानि मिला जस होई। आपुहि खोइ रहा होइ सोई।
सुवा आइ देखा भा नामू। नैन रकत भरि आए आँसू।
सदा जो प्रीतम गाढ़[7] करेई। वह न भूल[8] भूला जिउ देई।

मूरि सजीवनि आनि कै औ मुख मेला[9] नीर।
गरुर पंख जस झारै[10] अंब्रित बरसा[11] कीर[12]।

[२३६]

सुवा जियहि अस ग्रास जो पावा[1]। बहुरी[2] साँस[3] पेट जिउ आवा।
देखेसि जाग सुआँ सिर नावा। पाती दै मुख बचन सुनावा[4]।
गुरु कर बचन[5] स्रवन दुहुँ मेला। कीन्ह सुदिस्टि वेगि चलु चेला।[6]
तोहिं अलि कीन्ह आपु भइ केवा। हौं पठवा कै बीच परेवा[7]।
पवन[8] स्वाँस तोसौं मन लाए। जोवै[9] मारग दिस्टि बिछाए[10]।
जस तुम्ह कया कीन्ह अगिडाहू। सो सब गुरु कहँ भएउ अगाहू।
तब उड़ंत[11] छाला लिखि[12] दीन्हा। वेगि आउ चाहौं[13] सिध कीन्हा।

---

६. प्र० १ पुनि। ७. प्र० २ प्रीति सो। ८. द्वि० ३ फूल।
९. द्वि० ५ छिरका। १०. द्वि० ३ झारि कै। ११. द्वि० १ परसा।
१२. द्वि० २, ३ बरसा खीर, तृ० १ परा सरीर।

[२३६] १. प्र० १, ३, तृ० १ सुरछित आस वाम जो पावा, तृ० २ सुवा अहा जेहि आस सो पावा, द्वि० ६ बोले रतन माँस जो पावा, द्वि० ७ सुवा निमि आन पाम मन लावा, प० १ सुरभि आस पाम तहँ पावा। २. प्र० १, च० १ फिरी, द्वि० १, २, ५ लीन्हेसि, तृ० ३ फिरि कै। ३. च० १ आँसु। ४. द्वि० १, ३, ५, तृ० ३ देखिसि जाग सुवा है ठाढ़ा, गुरु कर बचन सुनइ मुँह काढ़ा। ५. द्वि० २, ६, प० १ सबद। ६. द्वि० १, ३, तृ० १, ३ सबद बोनि कै स्रवन उघेला, गुरू बोलाव वेगि चलु चेला। द्वि० ५ सबद सुनाइ अमी मुख मेला, गुरु बोलाव वेगि चलु चेला। ७. द्वि० १, ३, ५, तृ० ३ (यथा. ७)) औ अस कहे हो नैन पसारे, दरसन चहौ रूप तुम्हारे। द्वि० २ मैं यह पंक्ति (यथा. ४) अतिरिक्त अर्द्धाली के रूप में है। ८. द्वि० १ बैन। ९. तृ० २ चितवै। १०. द्वि० २ भिराएँ, तृ० ३ बुझाएँ (उर्दू मूल)। ११. द्वि० ४ तपावंत। १२. द्वि० १ मुख। १३. द्वि० १, ३ वहँ चलि आउ चहौं, द्वि० ४ वेगि चलि आउ चहाँ, तृ० १ वेगि जो आउ चहाँ, द्वि० २, ६, तृ० २, च० १ पल महँ आउ कहाँ, तृ० ३ पगु चलि आउ चहाँ।

आवहु स्वामि सुलच्छने[१४] जीव बसै तुम्ह नाउँ।
नैनन्ह भीतर पंथ है हिरदै भीतर ठाउँ॥

[२३७]

सुनि पदुमावति कै असि[१] मया। भा बसंत उपनी[२] नै कया।
सुवा क बोल पवन होइ लागा। उठा सोइ हनिवँत[३] अस[४] जागा।
चाँद मिलन कहँ दीन्हेउ आसा। सहसौं करौं सूर परगासा।
पाती[५] लीन्ह लै सीस चढ़ावा[६]। दिस्टि चकोर चाँद जनु पावा[७]।
आस पिआसा जो जेहि केरा। जौं झिकझार[८] ताहि सौं[९] हेरा।
अब यह कवन पवन[१०] मैं पिया[११]। भा तन[१२] पंख पंखि मरि[१३] जिया[१४]।
उठा फूलि हिरदै न समाना[१४]। कंथा टूक टूक बेहराना।

जहाँ पिरीतम वै बसहिं यह जिउ बलि तेहि बाट[१५]।
जौं सो बोलावहि पाउ सौं हम तहँ चलहिं[१६] लिलाट॥

[२३८]

जो[१] पँथ मिला महेसहि सेई। गएउ समुँद ओही धँसि लेई।
जहँ[२] वह कुंड बिषम अवगाहा। जाइ परा जनु[३] पाई[४] थाहा।
बाउर अंध प्रीति[५] कर लागू। सौहँ धँसै कछु सूझ न आगू।

---

१४. द्वि० ४ औ अस कहेहु वेगि चलि आवहु।

[२३७] १. द्वि० ३, तृ० ३ सुनि कै असि पदुमावति। २. द्वि० ७, तृ० १ पलुही। ३. प्र० १ सिघ। ४. द्वि० १, ३, ५, ७, होइ। ५. द्वि० १, ३, ५, तृ० ३ पत्र, द्वि० ७ पत्री। ६. प्र० १ सीस लै लावा, च० १ लै सीस चढ़ाई। ७. द्वि० २, ३, तृ० १, २ लावा, च० १ लाई। ८. द्वि० १ जौ जूझफेर, द्वि० ३, तृ० १ जौं जेहि यार। ९. प्र० १ दिसि। १०. द्वि० २, ५ पवन पानि, द्वि० ७ गौन पाव (उर्दू मूल)। ११. प्र० १ सुनतहि कवन पौन सुख किया, प्र० २ सुनतहि गवन (उर्दू मूल) पौन सुख किया। १२. द्वि० २ बहुरे। १३. द्वि० १ टेकि मरि, तृ० ३ पनग मरि, द्वि० ४, ५ पतँग मरि। १४. ये दोनों चरण प्र० २ में नहीं हैं। १५. द्वि० ७ हाट। १६. द्वि० ४ हम तहाँ चलैं, द्वि० ५ हौं तहँ चलौं, द्वि० ६ हौं तहँ जाउँ, च० १, पं० १ तहँ हम जाहिं।

[२३८] १. द्वि० ४ जहँ। २. प्र० १ है, द्वि० १ जनु। ३. प्र० १, तृ० २ तहँ। ४. द्वि० २ पाइन, तृ० १ पावन। ५. तृ० ३ प्रेम।

लीन्हेसि धँसि[६] सुवाँस मन मारे। गुरू मछिंदरनाथ सँभारे।
चेला परे न छाड़हि पाछू[७]। चेला मंछ[८] गुरू जस[९] काछू[९]।
जनु धँसि लीन्ह समुँद मर जिया। उघरे नैन बरे जनु दिया।
खोजि[१०] लीन्हि सो सरग दुवारी। बज्र जो मुँदे[११] जाइ उघारी।

बाँक[१२] चढाउ सुरंग गढ़[१३] चढ़त गएउ होइ[१४] भोर।
भइ पुकार गढ़ ऊपर[१५] चढ़े सेंधि दै चोर॥*

[२३६]

राजैं सुना जोगि गढ़ चढ़े। पूँछे पास[१] पँडित[२] जो पढ़े।
जोगी जो गढ़ सेंधि दै आवहिं। कहहु सो सबद[३]सिद्धि जेहिं पावहिं[४]।
कहहिं वेद पढि पंडित वेदी। जोगी भँवर जस मालति भेदी।
जैसें चोर सेंधि सिर मेलहिं। तस ये दुवौ जीव पर खेलहिं।
पंथ न चलहिं वेद जस लिखे। सरग जाइ[५] सूरी चढि[६] सिखे।
चोरहि होइ सूरी पर मोखू। देइ जो सूरी तेहि नहिं दोखू।
चोर पुकारि भेद[७] गढ[८] मूँसा। खोलै राज भँडार मँजूसा।

---

६. तृ० ३ धपस। (उर्दू मूल) ७. द्वि० ४ पाछुडा, काछुडा। ८. द्वि० ३ पाँछ। ९. तृ० ३ भा। १०. तृ० ३ सोनि। ११. प्र० १ केवार सो, द्वि० २ सरग गढ़, द्वि० ३ सरग अस। १२. प्र० १ आँक, द्वि० ३ चाक। १३. द्वि० ४, ६ सो गढ वर। १४. प्र० १ रैनि भा। १५. प्र० २ गढ भीतर, तृ० ३ राउ सौ, द्वि० ६, तृ० १ राजा सौं।

* प्र० १, द्वि० ५ में इसके अनंतर दो अतिरिक्त छंद हैं। (देखिए परिशिष्ट)

[२३९] १. प्र० २ राए, द्वि० ३, ६, बात। २. तृ० ३ पत्री। ३. प्र० १, २ बरनी कौन सो, द्वि० ४, ६, च० १, प० १ बोलहु मरद। ४. प्र० २ सेंधि दै आवहि, च० १, पं० १ सिधि जस पावहिं। ५. द्वि० १, ३, ५, तृ० ३ चढ़ै। ६. प्र०, १, द्वि० ५ पर। ७. प्र० २ पकरि बेधइ, तृ० ३ पुकारि वेद, द्वि० ४, ५ पुकारि बेधि, तृ० २ पुकारि सेंधि, द्वि० ३ पुकारि भेव। ८. तृ० ? घर। ९. द्वि० २, ४, ६, पं० १ जस ये राज मँदिर कइ।

जस भँडार ये मूसहिं[10] चढहिं रैनि दै[10] सेंधि।
तस चाही पुनि एन्द कहँ[11] मारहु सूरी बेधि[12] ॥

[२४०]

राँध जो[1] मंत्री बोले सोई। ऐस जो चोर सिद्ध पै[2] कोई[3]।
सिद्ध निसंक रैनि पै[4] भवँहीं। ताकहिं[5] जहाँ तहाँ उपसवहीं।
सिद्ध डरहिं नहिं अपने[6] जीवाँ। खरग देखि कै नावहिं गीवाँ।
सिद्ध जाहिं पै[7] जिय बध[8] जहाँ। औरहि मरन पंख अस कहाँ।
चढ़हिं जो कोपि गगन उपराहीं। थोरे साज मरहिं ते नाहीं।
जंबुक[9] कह[10] जौं चढ़िअै राजा[11]। सिंघ साज कै चढ़िअ तौ छाजा[12]।
सिद्ध अमर काया जस पारा[13]। छरहिं[14] मरहि बर जाइ न मारा।

छरहिं काज किरसुन कर छाजा[15] राजा छरहिं रिसाइ[16]।
सिद्ध गिद्ध जस[18] दिस्टि गँगन महँ[19] बिनु छर किछु न बसाइ ॥[17]

---

१०. प्र० २ देहिं रैनि गई, तृ० ३ चढ़हिं है रैनि दिन, ४, ६, च० १, पं० १ देहि रैनि होइ। ११. प्र० १, २, द्वि० ४ तस इन्द मोल होइ तब, द्वि० ७, च० १ तस इन्द कहँ अब मोल है। १२. प्र० १ जब सूरी सौं बेधि, प्र० २ जब मारहु सूरी बेधि, द्वि० ५ मरन सो सूरी बेधि।

[२४०] १. प्र० २ राजा सैं, द्वि० ४ अहै जो। २. द्वि० ६ सेंध दै। ३. तृ० ३ होई। ४. प्र० १ भैसे जो, द्वि० ४, ६ रैनिदिन। ५. द्वि० २ मन ताकहि। ६. द्वि० ५ एकहिं, तृ० १, ३ अइसे। ७. पं० १ जाइ जो जीव। ८. प्र० १, २ ताबहि मन, द्वि० ६ तेहि बध, द्वि० ३ है बध, पं० १ सिध बुधि। ९. द्वि० २ चंपक, द्वि० ५, पं० १ जबू, द्वि० ३, तृ० १, छेनक। १०. द्वि० ५ जुक, तृ० २ पर। ११. प्र० १, २ गाँत - गयन्द धरिअ तौ राजा, च० १ आगम छेकि हरै जो राजा, प० १ राबू छेकि धरै जो राजा। १२. प्र० १ सिध धरै तौ बढ़ै राजा। १३. तृ० ३ जरा। १४. प्र० २ जरहिं मरहिं, द्वि० ३ जरइ न जारे। १५. द्वि० ४, ७ साजा। १६. द्वि० ४ साजा चढ़हिं रिसाइ, तृ० ३ राजा छरहद नसाइ, द्वि० ६ राजा छरहिं डराइ, च० १ राजा छरहिं बजाइ।
१७. प्र० १ छलहि छला बलि दावन मेगा बाँधि पतार।
छलहि छला लिया बनेसर छलन न लागी बार।
पं० १ सरग छाइ गा छत्रन्ह सूरज भयउ अलोप।
पं० दिनहि रात अस देखिअ चढ़ा इन्द्र होइ कोप।
१८. द्वि० ४ जोहि। १९. द्वि० २, तृ० २ पर।

[२४१]

आयहु फरहु गुदर मिस साजू। चढ़हु बजाइ जहाँ लगि राजू।
होहु सँजोइल[1] कुँवर जो भोगी[2]। सब दर छेंकि धरहु अब[3] जोगी।
चौबिस लाख छत्रपति साजे। छप्पन कोटि दर बाजन[4] बाजे।
बाइस सहस सिंघली चाले[5]। गिरि[6] पहार पब्बै सब[7] हाले[8]।
जगत बराबर दै सब चाँपा। डरा इंद्र बासुकि हिय[9] काँपा।
पदुम कोटि रथ साजे[10] आवहिं। गिरि[11] होइ खेह गँगन कहँ[11] धावहिं।
जनु भुइँचाल जगत महँ[12] परा। कुरुम[13] पीठि टूटिहि[14] हियँ डरा[15]।

छत्रन्ह सरग[16] छाइ गा सूरुज गएउ अलोपि।
दिनहिं राति अस देखिअ चढ़ा इंद्र अस[17] कोपि[18]॥

[२४२]

देखि कटक औ मैमंत हाथी। बोले रतनसेनि के साथी।
होत आव दर बहुत असूझा। अस जानत हैं होइहि जूझा।
राजा तूँ जोगी होइ खेला। एही दिवस कह हम भए चेला।
जहाँ गाढ़[1] ठाकुर कह होई। संग न छाडैं सेवक[2] सोई।
जो हम मरन देवस मन[3] ताका। आजु आइ पूजी वह साका।

---

[२४१] १. प्र० १ भए सँजोव। २. प्र० १, पं० १ सब भोगी, प्र० २ रस भोगू, द्वि० २ जे भोगी, द्वि० ४ स भोगी, द्वि० ३ सो भोगी। ३. प्र० १ पै, प्र० २ सब। ४. प्र० १ कटक दर। ५. प्र० १, २ चले, हले, द्वि० १ चाले, हाले। ६. प्र० १, २ सबल। ७. प्र० १, २ महि महि, द्वि० १ मेरै उठि, द्वि० २, ३, तृ० २ परबत सब, द्वि० ४, ५ पब्बै सब, तृ० ३ पुवै (उर्दू मूल) सब, च० १ पहौ सब। ८. द्वि० २ भय, तृ० ३ डरि। ९. प्र० १ हाँके। १०. च० १ गढ। ११. प्र० १ लहि। १२. प्र० १ चलत महि, प्र० २ चलत भुइँ, तृ० ३ चलत। १३. समस्त प्रतियों में 'कुरुंभ' (हिंदी मूल)। १४. प्र० १, २ टूटी कमठ पीठि १५. प्र० १ हिय हला, द्वि० ३ अस डरा, तृ० ६ हियें धरा। १६. प्र० १ गगन। १७. द्वि० ३, ४ होइ। १८. प० २ में दोहा छंद २४२ का है।

[२४२] १. तृ० ३ गारुड़ (उर्दू मूल)। २. प्र० १ सेवक मन। ३. प्र० १ नित, प्र० २ जिउ, द्वि० ६ महँ, तृ० २ जियँ।

बरु जिउ जाइ जाइ जनि बोला। राजा मत सुमेरु न डोला।
गुरु केर जौं आएसु पावहिं। हमहुँ सौहँ होइ[4] चक्र चलावहिं।

आजु करहिं रन भारथ सत[5] बचा ले राखि[6]।
सत्त[7] करैं[8] सर्ब[9] कौतुक सत्त[5] भरे पुनि[10] साखि॥

[२४३]

गुरू कहा चेला सिध होहू। पेम बार होइ[1] करिअ न[2] कोहू।
जा कह सीस नाइ कै दीजै। रंग न[3] होइ ऊभ[4] जौं कीजै[5]।
जेहि जियँ पेम पानि भा सोई। जेहि रँग मिलै तेहि[6] रंग होई।
जौं पै जाइ पेम सिउँ[7] जूझा[8]। कत तपि मरहिं सिद्ध जिन्ह बूझा[9]।
यह सत बहुत जो जूझि न करिऔ। खरग देखि पानी होइ ढरिऔ।
पानिहि काह खरग कै धारा। लौटि[10] पानि सोई जो[11] मारा।[12]
पानी सेंति[13] आगि का करई। जाइ बुझाइ पानि जौं परई।

सीस दीन्ह मैं अगुमन पेम पाय[14] सिर मेलि।
अब सो प्रीति निबाहैं चलौं सिद्ध होइ खेलि॥

[२४४]

राजैं छेंकि धरे सब[1] जोगी। दुख ऊपर दुखु सहे बियोगी।

---

४. द्वि० १ सौंह होहिं औ, तृ० ३ सौंह होइ कै, तृ० १ हमहूँ सौंहे।
५. तृ० ३ सत्य। ६. प्र० १, २ बीच लै राखि, तृ० ३ बचा दै साखि, तृ० १ बचा जिय राखि। ७. प्र० १, २ देख। ८. द्वि० ६ सत।
९. द्वि० १ सब। १०. पं० १ में दोहा छंद २४० का है।

[२४३] १. प्र० १ चढ़ि। २. तृ० ३ जो चह। ३. प्र० २ रगर, तृ० १ नीक। ४. द्वि० ४ उभर, द्वि० ३, ५ जूम। ५. द्वि० ४ लीजै। ६. प्र० १ सोइ, तृ० २ वही। ७. तृ० २ पथ। ८. तृ० ३ सूझा। ९. प्र० २, च० १ सिद्ध जिन्ह पूजा, तृ० ३ पेम जेइँ बूझा। १०. द्वि० २ टूटि। ११. प्र० १ खरगहि पुनि तृ० २, च० १ तैसै जौ। १२. प्र० २ में यह पंक्ति नहीं है। १३. द्वि० १, ६, पं० १ सों, तृ० २ केर, द्वि० ३ हुतें। १४. प्र० १, २, द्वि० ५ पानि, द्वि० २ पंथ, द्वि० ४, च० १ बार।

[२४४] १. द्वि० १ पुनि।

ना जियँ धरक[2] धरत[3] है कोई। ना जियँ[4] मरन जियन कस होई।
नाग फाँस उन्ह मेली गीवाँ। हरख न विसमौ एकौ[5] जीवाँ।
जेइँ जिउ दीन्ह सो लेइ[6] निरासा। बिसरै नहिं जौं लहि तन स्वाँसा।
कर किंगरी तिन्ह तंत[7] बजावा। नेहु[8] गीत बैरागी[9] गावा।
भलेहिं आनि गियँ मेली फाँसी। हिएँ न सोच रोस[10] रिसि नासी।
मैं गियँ फाँद ओही[11] दिन मेला। जेहि दिन पेम पंथ होइ खेला।

परगट गुपुत सकल महि मंडल[12] पूरि रहा सब ठाउँ[13]।
जहँ देखौं[14] ओहि देखौं दोसर नहिं कहँ[15] जाउँ॥

[२४५]

जब लगि गुरु मैं अहा न चीन्हा। कोटि अँतरपट बिच हुत दीन्हा[1]।
जौं चीन्हा तौ और न कोई। तन मन जिउ जोबन सब सोई।
हौं हौं कहत[2] धोख अँतराहीं[3]। जौं भा सिद्ध कहाँ परिछाहीं।
मारै गुरू कि गुरू जियावा। और को मार मरै सब आवा।
सूरी मेलु हस्ति[4] कर[5] चूरू। हौं नहिं जानौं जानै गूरू[5]।
गुरू हस्ति पर चढ़ा सो पेखा[6]। जगत जो नास्ति नास्ति सब देखा।

---

२. प्र० १, २ हर जिय कै, द्वि० ४ जिय हर कि, द्वि० ६ हिय धरक, तृ० १ जिय हरत, द्वि० ३ जिय दुख कि। ३. द्वि० ५ करत। ४. प्र० १ नाहीं, प्र० २ नहिं मन, द्वि० २, तृ० १, ३ ना जानौं। ५. प्र० २ मनै कावल भा, द्वि० ३ बिस हो एको। ६. च० १ लीन्ह। ७. तृ० ३ सब तेइँ। ८. द्वि० ५ यहै। ९. तृ० ३, ४ बैरागिन्ह। १०. प्र० १ २, पं० १ जियैं न सोच हिए रिसि नासी द्वि० २, ५, तृ० २ तजौं न नाँव करहिं जो नासी, तृ० १ हिएँ न सोच जेइँ रिमि नासी, च० १ जोउ न सूझ सूझ पै हाँसी। ११. तृ० ३ ताहि। १२. प्र० १, २, द्वि० ४, ५, पं० १ महि, द्वि० २, तृ० २, च० १ महँ। १३. द्वि० १, ३, तृ० ३ सो (हिंदी मूल) ठाउँ, शेष प्रतियों में सो (हिंदी मूल) नाउँ। १४. प्र० १ जहाँ जाउँ, तृ० ३ जहँ तावी। १५. प्र० १ ठाउँ न।

[२४५] १. प्र० १ तासैा चीन्हा, तृ० २ तब लगि दीन्हा। २. द्वि० २ सो कहत, द्वि० ४ हौं कहत। ३. तृ० २ तन पाहीं। ४. प्र० १ साइ मोर अस्नि। ५. द्वि० २, तृ० २ गुरु चरू, गुरू, द्वि० ४ गुन पूरू, गूरू, द्वि० ५ गुरु पुरवा, गुरवा। ६. द्वि० २, च० १ बिसेखा।

अंध मीन जस जल महँ धावा। जल जीवन जल[7] दिस्टि न आवा।

गुरु मोर मोरें हित[8] दीन्हें तुरँगहि[9] ठाठ[10]।
भीतर करै[11] डोलावै बाहर नाची[12] काठ॥

[२४६]

सो पदुमावति गुरु हौं चेला। जोग तंत जेहि कारन खेला[1]।
तजि ओहि बार[2] न जानौं दूजा। जेहि दिन मिले जातरा पूजा।
जीउ काढ़ि[3] भुइँ धरौं लिलाटू[4]। ओहि[5] कह देहुँ हिए महँ पाटू[6]।
को मोहि लै सो छुवावै पाया। को[6] अवतार देइ नइ काया।
जीउ चाहि सो अधिक पियारी। माँगै जीउ[7] देउँ बलिहारी।
माँगै सीस देउँ सिउँ गीवा। अधिक नवौं[8] जौं मारै जीवा।
अपने जिय कर लोभ न मोही। पेम बार होइ माँगौं ओही।

दरसन ओहि क दिया जस हौं रे [9]भिखारि पतंग।
जौं करवत सिर सारै[10] मरत न मोरौं अंग॥

[२४७]

पदुमावति कँवला ससि[1] जोती। हँसै फूल[2] रोवै तब मोती।
बरजा पितैं हँसी औ रोजू। लाई दूति[3] होई निति खोजू।

---

७. द्वि० २ जग, तृ० ३ पुनि। ८. प्र० १, २, द्वि० २ हिएँ, द्वि० ३, ४, ५, ६, च० १, प० १ सिर। ९ प्र० १, २ दिए तुरगम, द्वि० २ दिहे जस तुर गहि। १०. प्र० १, द्वि० २, ३, ४, ५, ६, तृ० १, च० १ ढाठ। ११. प्र० १, २ कल सो। १२. द्वि० २, ३, तृ० ३ करै डोलावै बाहर नाचहिं, द्वि० ५ करै डोलावहिं बाहर नाचहिं, च० १ करै डोलावहिं बाहर नाचै।

[२४६] १. च० १ मोंहि चोन्हु कै सिद्ध नवेला। २ द्वि० ३, ५, तृ० ३ नाउँ। ३. द्वि० २ सीस काटि। ४ प्र० १, २ लिलाटा, बाटा। ५. तृ० ३ बैठक। ६ प्र० १, द्वि० २, ३, ४, ५, ६, च० १, प० १ नव। ७. प्र० १, द्वि० ४ सीग। ८ प्र० २ बोहि, द्वि० २ सौ, द्वि० ५ सौ, द्वि० ४, तृ० ३ सै, च० १ सै। ९, द्वि० ५ तरौ। १०. प्र० १ नासै।

[२४७] प्र० २ असि। २. द्वि० ५ साप। ३. प्र० २, तृ० ३ लाए दूत (उर्दू मूल)।

जयहिं[4] सुरुज कहँ लागेउ राहू। तयहिं[5] कँवल मन[6] भएउ अगाहू[7]।
बिरह अगस्ती[7] बिसमी भएऊ[8]। सरवर हरख[9] सूखि सब[10] गएऊ।
परगट ढारि सकै नहिं आँसू। घटि घटि[11] माँसु गुपुत होइ नासू।
जस दिन माँझ रैनि होइ आई। बिगसत कँवल[12] गएउ कुँभिलाई[13]।
राता बरन गएउ होइ सेता। भँवति भँवर[14] रहि गई[15] अचेता।

चितहि जो चित्र कीन्ह[16] धनि रोवँ रोवँ रंग समेंटि[17]।
सहस साल दुख आहि भरि मुरुछि परी गा मेंटि॥

[२४८]

पदुमावति सँग सखी सयानी। गुनि कै नखत पीर ससि जानी।
जानहिं मरम[1] कँवल कर कोई। देखि बिथा बिरहिनि की रोई।
बिरहा कठिन काल कै[2] कला। बिरह न सहिअ काल बरु भला।
काल काढ़ि[4] जिउ लेइ सिधारा[5]। बिरह काल मारे पर मारा[5]।[6]
बिरह आगि पर मेलै आगी। बिरह घाउ पर घाउ[7] बजागी[8]।

---

४. द्वि० ३, ४, ५, ६, तृ० २, च० १, पं० १ जौहि, तौहि (हिंदी मूल), द्वि० २ चौहि, तौहि (हिंदी मूल)। ५. प्र० १ कहँ। ६. प्र० २ (यथा. ७) जस दीपक पतंग पर परई। तस जिव देखि देखि हिअ डरई। ७. प्र० १ अगस्ति हिय, द्वि० १ अगिनि सर, द्वि० २ आगि तन। ८. तृ० १ (यथा. दूसरा चरण) बिगसत कँवल छार मिलि गएऊ। ९. प्र० १ हिया। १०. प्र० १, पं० १ हिय। ११. द्वि० १ परगट, द्वि० ६, ३ घटि घटि। १२. च० १ नलिनि। १३. प्र० १, २ लागु कुँभिलाई, द्वि० २ गएउ मुरझाई, द्वि० ३ लागु मुरझाई। १४. तृ० ३ भँवत। १५. प्र० २ गए (उर्दू मूल)। १६. प्र० १ चित्र जो कीन्ह बिचित्र, प्र० २ चित्र जो चित्र कीन्ह, तृ० १ चितहि जो चैन कीन्ह, द्वि० ३ छिनहि जो चित्त। १७. प्र० १ गा मेंटि, द्वि० २, ३, ४, ५, ६, च० १, पं० १ अंग समेटि, तृ० ३ रंग मेटि। १८. प्र० १ सीस साल दुख आहि भरि, प्र० २ सीत साल दुख अति भई, द्वि० २ सहस साल दुख उभरे, तृ० ३ सहस मास दुख हिय भरि।

[२४८] १. द्वि० २, तृ० २ बिथा। २. द्वि० ३ काम। ३. द्वि० २, ४, तृ० २, च० १ पर। ४. तृ० ३ बिरह काल। ५. प्र० २ सिधावा, लावा। ६. द्वि० १ बिरह घाव पर घाव अँगारा। ७. तृ० ३ बिरह। ८. प्र० २ जो लागी।

बिरह थान पर थान[९] पसारा[१०]। बिरह रोग पर रोग सँचारा।
बिरह साल पर साल[११] नवेला। बिरह काल पर काल दुहेला।

तन रावन होइ सिर चढ़ा[१२] बिरह भएउ हनिवंत।
जारे ऊपर जारै[१३] तजै न कै[१४] भसमंत॥

[२४९]

कोइ कमोद परसहिं कर[१] पाया। कोइ मलयागिरि छिरकहिं[२] काया।
कोइ मुख सीतल नीर चुवावा। कोइ अंचल सौं[३] पौनु डोलावा।
कोइ मुख अंम्रित आनि[४] निचोवा। जनु विख दीन्ह अधिक धनि सोवा।
जोवहिं स्वाँस खिनहिं खिन सखी। कब जिउ फिरै पवन औ पँखी।
बिरह काल होइ हिए पईठा[५]। जीउ काढ़ि लै हाथ बईठा[६]।
खिन एक[७] मूँठि[८] बाँध खिन[९] खोला[१०]। गही[११] जीभ मुख जाइ न बोला।
खिनहिं बेझ[१२] कै बानन्हि मारा। कपि कँपि नारि मरै बिकरारा।

कँसेहुँ बिरह न छाड़ै[१३] भा ससि गहन गरास।
नखत चहूँ दिसि रोवहिं अँधियर धरति[१४] अकास॥

---

९. तृ० ३ बिरह। १०. प्र० १, २, तृ० १, ३ बिसारा। १२. द्वि० २, ४, ६ जरि धुम्का। १३. प्र० २ जारै चित, द्वि० २, तृ० १, च० १ ऊपर जारि कै, तृ० ३ जारे पर जारै।

[२४९] १. प्र० १ लै परसहिं, प्र० २ परसहिं पर, द्वि० २ कोइ परसहिं, तृ० ३ परसहिं गै (उर्दू मूल), द्वि० ४ कर परसहिं। २. प्र० १ सींचहिं काया, प्र० २ आनि चढ़ाया। ३. द्वि० २ हुत। ४. प्र० १ अंम्रित धरि नीर। ५. प्र० १ अधिक परि, प्र० २ बिआधी। ६. तृ० ३ पईठी, बईठी। ७. द्वि० १ गा खिन। ८. प्र० १, तृ० १ मौनहिं, द्वि० २ दसन, द्वि० ४, ६ मौन। ९. प्र० १ चख। १०. प्र० २ खिन कहि (उर्दू मूल) मुठी काढ़ि कै खोला। ११. प्र० १, द्वि० ४, ५, ६, तृ० १ कहेसि, द्वि० २ कहइन, च० १ रही, द्वि० ३ खिनहि। १२. प्र० १ बेध, २, द्वि० ३ बजर, द्वि० ४, ५ बेझ। १३. तृ० १ न जागी। १४. प्र० १, २, द्वि० ७ रोवँधे धरनि, तृ० १ भा अँधियार, तृ० ३ रोवहिं धरति।

[२५०]

घरी घारि[1] इमि गहन गरासी। पुनि बिधि जोति हिएँ[2] परगासी।
निसँसि ऊभि भरि[3] लीन्हेसि स्वाँसा। भई अधार जियन कै आसा।
बिनवहिं सखी छूट ससि राहू। तुम्हरी जोति जोति सब काहू।
तूँ ससि बदन जगत उजियारी। केइ हरि लीन्हि[4] कीन्हि अँधियारी।
तूँ गजगामिनि गरब गहीली[5]। अब कस आस छाँड़ि[6] सत[7] ढीली।
तूँ हरि[8] लंक हराए[9] केहरि। अब कस[10] हारें करसि हहे हरि[11]।
तूँ कोकिल बैनी जग मोहा। केइँ ब्याधा होइ गही निछोहा[12]।

कँवल करी तूँ पदुमिनि गै[13] निसि भएउ बिहान।
अबहुँ[14] न संपुट खोलहि जौं रे उठा[15] जग भान॥

[२५१]

भान नाउँ सुनि कँवल बिगासा। फिरि कै भंवर[1] लीन्ह मधु बासा।
सरद चंद मुरा जानु[2] उघेली। खंजन नैन उठे कै केली।
बिरह न बोल[3] आव मुख ताई। मरि मरि बोल जीव[4] बरियाई।
दवँ[5] बिरह दारुन हिय काँपा। खोलि[6] न जाइ बिरह दुख झाँपा।

---

[२५०] १. तृ० २ एक। २. प्र० १ जोति कीन्ह, प्र० २ जोति आनि, च० १ छूट हिएँ। ३. प्र० २, तृ० ३ भरि। ४. द्वि० २ कंठ। ५. प्र० १ बहुत गहीली। ६. प्र० १ कस सत छाड़इ, द्वि० २, ५, तृ० १ कस अस छाड़इ, द्वि० ३ कैसे छाँडइ, द्वि० ४ कस अस सत। ७. प्र० १ होइ, प्र० २, पं० १ अस, द्वि० १, २ सत्त, तृ० ३ तस। ८. च० ? तूँ हरि। ९. प्र० १ हरि गा। १०. प्र० १, २, द्वि० २ रकत, तृ० ३ केहूँ। ११. प्र० १, द्वि० ४ हारि करसि हा है हरि, द्वि० २ हानि परी जी है हरि, तृ० ३ हारे कहाँ ससि है हरी, पं० २ हारे करति जो है हरि। १२. द्वि० २, ३, तृ० १ कीन्ह बिछोह, द्वि० ५, च० १ दीन्ह बिछोह। १३. तृ० ३ वै (उर्दू मूल)। १४. तृ० ३ अजहुँ। १५. प्र० १, ३, द्वि० २ उवा।

[२५१] १. द्वि० ३ कँवल। २. प्र० २ जदहि। ३. तृ० २ बिरह बोल आवा, च० २ बिरहा सूर आव। ४. तृ० ३ मरि जिभै बोला, द्वि० ३ पिउ गै बोल, तृ० १ मरि मरि नारि ज्यिै। ५. द्वि० ५ डोल। ६. प्र० १, द्वि० ३ बोलि।

उदधि समुद जस तरग देखावा। चखु कोटिन्ह[7] मुरा एक न[8]आवा।
यह सुठि लहरि लहरि पर धावा[9]। भँवर परा जिउ थाह न पावा[10]।[11]
सखी आनि बिप देहु तौ मरऊं[12]। जिउ नहिं पेट ताहि डर डरऊं[13]।

खिनहिं उठै खिन बूड़ै अस हिय कँवल सकेत।
हीरामनिहि बोलावहु[14] सखी गहन जिउ लेत॥

[२५२]

पुरइनि धाइ[1] सुनत खिन[2] धाई[3]। हीरामनिहि बेगि लै आई[4]।
जनहुँ बैद ओखद लै आवा। रोगिऐ रोग मरत[5] जिउ पावा।
सुनत असीस नैन धनि खोले। बिरह बैन कोकिल जिमि बोले।
कँवलहि बिरह बिथा जसि बाढ़ी। केसरि बरन पियर हिय[6]गाढ़ी[7]।
कत कँवलहि भा पेम अँकूरू। जौं पै गहन लीन्ह दिन सूरू।
पुरइनि[8] छाँह कँवल कै[9] करी। सकल बिथा सो अस तुम्ह हरी[10]।
पुरुप गँभीर न बोलहिं काऊ। जौं बोलहिं तौ और निबाहू।

---

७. प्र० १ ३, तृ० १, च० १ चखु खोटिन्ह (उर्दू मूल), द्वि० ४, ५, तृ० २ चखु घूमहिं, तृ० ३ चखु छूटहिं, द्वि० ४ हिय कोटिन्ह, द्वि० ३ हिये कोटि। ८. द्वि० २ बकत न, द्वि० ५ बात न। ९. प्र० १ आवा। १०. तृ० १ थाह न थावा, तृ० ३ हाथ परावा। ११. तृ० १ यह सुठि लहर लहर पर धारा, भँवर मेलि जिउ लहर न मारा। १२. द्वि० १ जो मरत सराऊँ, द्वि० ३ तबहिं डर डरऊँ, द्वि० ५, प० १ तौहि डर डरऊँ (हिंदी मूल)। १३. प्र० १ हियँ डर डरऊँ, द्वि० ४, ६ मरन का डरऊँ, द्वि० २ खाऊँ। १४. प्र० १ बेगि लै आवहु।

२५२] १. द्वि० १ परबत दाह। २. प्र० १ पुरइनि सखी सुनत उठि, प्र० २ सुनतहि बचन धाइ खिन, द्वि० २, ४, ५ चेरिनि धाइ सुनत खिन, द्वि० ६ सखी धाइ पुनि सहन क, तृ० १ सखी सबै जो उठि कै, प० १ तरुनी धाइ सुनत खिन। ३. तृ० २ आई। ४. प्र० १, २, द्वि० १, ५, तृ० २ लै आइ बोलाई, द्वि० ४ बुला लै आई, च० १, पं० १ बोलाइ लै आई। ५. च० १ पं० १ मरत मरत। ६. प्र० २ तन। ७. प्र० १ काढ़ी (उर्दू मूल)। ८. तृ० १, द्वि० १, ३, तृ० ३, प० १ करी, सकल बिभाम आस तुम्ह हरी, द्वि० २ करी, सकल बिथा बिरहिनि की लही, द्वि० ४, ५, तृ० २ करी, सकल बिथा सुनि जस तुम्ह हरी। ९. प्र० २ गी (उर्दू मूल)। १०. प्र० १, २,

एतना बोल कहत मुख पुनि होइ गई[11] अचेत।
पुनि जौं चेत सँभारे[12] बकत उहै[13] मुख लेत[14]।

[२५३]

औ़रु दगध का कहौं अपारा। सुनै[1] सो जरै कठिन असि झारा[2]।
होइ हनिवंत बैठ है कोई। लंका डाह लाग तन होई[3]।
लंका बुझी आगि जौं लागी। यह न बुझै तसि उपजि बजागी[4]।
जनहुँ अगिन[5] के उठहिं पहारा। वै सब लागहिं अंग अँगारा।
कटि कटि[6] माँसु सराग पिरोवा। रकत के आँसु माँसु[7] सब रोवा[8]।
खिनु एक मारि माँसु अस भूँजा। खिनहिं जिआइ[9]सिंघ अस गूँजा।
एहि रे दगध हुँत[10]उत्तिम मरीजै[11]। दगध न सहिअ जीउ बरु दीजै[11]।

जहँ लगि चंदन मलैगिरि औ साएर सब नीर।
सब मिलि आइ बुझावहिं बुझै न आगि सरीर॥

[२५४]

हीरामनि जौं देखी नारी। प्रीति बेलि उपनी हियँ[1] भारी[2]।
कहेसि कस न तुम्ह होहु दुहेली[3]। अरुझी पेम प्रीति की[4] बेली।

---

११. द्वि० ३, च० १, पं० १ होइ गइ नारि। १२. प्र०१, २ चेत सँभारि जौं पुनि उठी, तृ० ३ पुनि जो चेत सँभारि चित। १३. द्वि० १ रहै बकत, तृ० ३ बकतावै, द्वि० ३ उठी बकत, च० १ भए बिकट। १४. द्वि० ४ मुख पेत, तृ० ३ जो लेत।

[२५३] १. द्वि० ४ सती। २. च० १ धरती सरग जरै तेहि झारा। ३. द्वि० २, ३ लंका डाह बरै तन माहीं, तृ० ३ लंका डाहि लाइ तन सोई। ४. प्र० १, २ आगि तसि जागी, तृ० ३ उपन बजागी, द्वि० ५ तस आँच बजागी। ५. च० १ रवन, प० १ लंक। ६. द्वि० ७, तृ० १ काँपि काँपि। ७. पं० १ गिरहिं जो आँसु माँसु। ८. प्र० १, २, तृ० ३, पं० १ धोवा। ९. द्वि० २ जगाइ। १०. प्र० १, २ मरना, दगध के सहे जीउ का करना। ११. प्र० १, द्वि० ७ तें, प्र० २ सौं, तृ० ३ बरु।

[२५४] १. द्वि० ५ तन, तृ० १ जियँ। २. द्वि० ४, ५, तृ० ३ बारी। ३. तृ० ३ दुहेली। ४. प्र० १, २ अरुझा पेम बिरोउम।

प्रीति बेलि जनि अरुझै कोई। अरुझें मुएँ[5] न छूटै सोई।
प्रीति बेलि ऐसैं तनु डाढ़ा। पलुहत[6] सुख बाढ़त दुख बाढ़ा[7]।
प्रीति बेलि सँग विरह अपारा। सरग पतार जरै तेहि मारा।
प्रीति बेलि फेइँ अम्मर बोई। दिन दिन बाढ़ै खीन न[8] होई।
प्रीति अकेलि बेलि चढ़ि छावा[9]। दोसरि बेलि न पसरै[10] पावा।

प्रीति बेलि अरुझाइ जौं तब सो छाँह[11]सुख साख।
मिलै जो प्रीतम आइ कै दाख बेलि रस चाख॥

[२५५]

पदुमावति उठि टेकै पाया[1]। तुम्ह हुँत होइ[2] प्रीतम कै छाया।
कहत लाज औ रहै न जीऊ। एक दिसि आगि दोसर दिसि सीऊ[3]।
सूर उदैगिरि चढ़त भुलाना। गहनै गहा[4] चाँद[5] कुँभिलाना।
ओहटें होइ मरिउँ नहिं[6] झूरी। यह सुठि मरौं जो निअरैं दूरी।
घट महँ निकट बिकट भा मेरू। मिलेहुँ न मिलै[7] परा तस फेरू।
दसइँ अवस्था असि मोहि भारी। दसएँ लखन होहु उपकारी।[8]
दमनहिं[9] नल जस हंस मेरावा। तुम्ह[10] हीरामनि नाउँ कहावा।[11]

---

5. द्वि० २ जरम। 6. द्वि० १ उपनत। 7. द्वि० २ सुख सूखे पलुहे दुख बाढ़ा। 8. द्वि० २ छीन नहिं, तृ० ३ खिन खिन। 9. प्र० २, तृ० ३ धावा। 10. प्र० १, २, द्वि० २, च० १ सँचरै, द्वि० ५, तृ० ३, पं० १ सरवरि। 11. तृ० ३ पावै सुख, द्वि० ४ सो जानै, तृ० १ सो जेहि न।

[२५५] 1. द्वि० २, ४ काया। 2. प्र० १ हुते हौं, प्र० २ होतेहु, द्वि० ४, ५ हुँत देखौं, तृ० ३ ते हो। 3. द्वि० २, तृ० १, २ पीऊ। 4. प्र० १, २ द्वि० २ लीन्ह। 5. च० १ कँवल। 6. प्र० १ तसि, प्र० २ तब, द्वि० ३, तृ० १ तहँ। 7. प्र० १ मिला न जाइ। 8. द्वि० २, ४, ५, तृ० ३ तुम्ह सो मोर खेवक गुरु देवा, उतरौं पार तेहि बिधि खेवा। 9. प्र० १, २, द्वि० ३ दमावती नल, द्वि० १ दमावति कहँ नल, द्वि० २ दामन नलहि जो, द्वि० ४, च० १ दमनहि नल जो, द्वि० ५ दामहि नलहि जो, द्वि० ३ दमावती नल। 10. द्वि० ५, तृ० ३, च० १ तब। 11. द्वि० ६ में इस पंक्ति के स्थान पर वह है जो ऊपर पाद-टिप्पणी ८ में है।

मूरि सजीवनि दूरि इमि[१२] साले सकती[१३] बान।
प्रान मुकुत अब होत हैं[१४] बेगि देखावहु भान[१५]॥

[२५६]

हीरामनि भुइँ धरा लिलाट्ठ। तुम्ह रानी जुग जुग सुख पाट्ठ।
जेहि के हाथ जरी औ मूरी। सो जोगी नाहीं अब दूरी।
पिता तुम्हार राज कर[१] भोगी। पूजे बिप्र[२] मरावै जोगी।
पौंरि पंथ कोटवार बईठा। पेम क लुबुधा सुरँग पईठा।
चढ़त रैनि गढ़ होइगा भोरू। आवत बार धरा कै चोरू।
अब लै देइ गए ओहि सूरी। तेहि[३]सो अगाह बिथा[४]तुम्ह पूरी।
अब तुम्ह जीव कया वह जोगी। कया क रोग जीव पै रोगी[५]।

रूप तुम्हार जीव कै आपन[६] पिंड कमावा फेरि।
आपु हेराइ[७] रहा तेहि खँड होइ[८] काल न पावै हेरि॥

[२५७]

हीरामनि जौं बात यह कही। सुरुज के गहन[१] चाँद गै गही।
सुरुज के दुख जौं ससि होइ दुखी। सो कत दुख मानै[३] करमुखी।

---

१२. प्र० १, द्वि० १, च० १ आनि कै, प्र० २ आनु गै (उर्दू मूल)। १३. तृ० ३ सरनि हिय। १४. प्र० १ प्रान रहहिं घट जात अब, प्र० २ परा मुकुति अब होत हैं। १५. प्र० १ होइ न पाव्उ मान, तृ० ३ बेगि देखावहु आनि।

[२५६] १. च० १ गढ़। २. तृ० ३ बैद, तृ० १ प्रास, च० २ बेर। ३. तृ० ३ तोहि। ४. प्र० १ ओहि की बिथा सोक तुम्ह। ५. तृ० ३ कया क मरम जान पै रोगी, द्वि० ४, ५, ३ कया के रोग जान पै रोगी। ६. द्वि० ५ तुम्हारा जोगी आपन, तृ० १ तुम्हारा जीव बनि, पं० १ तुम्हारा जोगी। ७. प्र० २ लुकाइ। ८ द्वि० १ रहा तेहि भीतर, द्वि० ५, तृ० २, ३ रहा तेहि बन होइ, तृ० १ रहा बन महँ, पं० १ रहा तेहि खँड।

[२५७] तृ० ३ गहें (उर्दू मूल)। २. प्र० १, २ तरनी भइ, द्वि० १ चाँद होइ। ३. प्र० १ कत सुख मानै, तृ० ३ बस दुख जानै, प० १ कत दुख मानै।

अब जौं जोगि मरै[४] मोहि नेहा। ओहि मोहि साथ[५]धरति गँगनेहा।
रहै तौ करौं जरम भरि सेवा। चलै तौ यह जिउ साथ परेवा।
कौनु सो करनी[६] कहु[७]गुरु[८] सोई। पर काया परवेस जो होई।
पलटि सो पंथ कौन विधि खेला। चेला गुरू गुरू भा चेला।
कौन खंड अस रहा लुकाई। आवै काल हेरि फिरि[९] जाई।

चेला सिद्धि सौ पावै गुरू सों करै अछेद[१०]।
गुरू करै जौं किरिपा[११] कहै सो चेलहि भेद॥

[२५८]

अनु रानी तुम्ह गुरु वहु चेला। मोहि पूँछहु[१] कै सिद्ध नवेला।
तुम्ह चेला कहँ परसन भई। दरसन देइ मँडप चलि गई[२]।
रूप गुरू कर चेलैं[३] डीठा। चित समाइ होइ चित्र पईठा।
जीउ काढ़ि लै तुम्ह उपसई। वह भा[४] कया जीव[५] तुम्ह भई।
कया जो लाग धूप औ सीऊ। कया न जान जान पै जीऊ।
भोग तुम्हार मिला ओहि जाई। जो ओहि बिथा[६]सो तुम्ह कहँ आई।
तुम्ह ओहि घट वह तुम्ह घट माहाँ। काल कहाँ पावै ओहि छाहाँ[७]।

अस वह जोगी अमर भा[८] पर काया परवेस।
आव काल तुम्हहिं तहँ देखै[९] बहुरै कै[१०] आदेस[११]॥

---

४. च० १ जरै। ५. प्र० १ सान। ६. द्वि० १ कारन, द्वि० ४ काल। ७. द्वि० ४ घर गुर, तृ० १ कर कह, च० १ कीन्ह गुर। ८. प्र० १ गुन, प्र० २ विधि। ९. द्वि० १ हेरि कै, द्वि० २, ६, तृ० २ ढूँढि फिरि। १०. तृ० ३ उछेद। ११. प्र० १, २ माया।

[२५८] १. प्र० २ पूजहि मडप, द्वि० २ मया मोह, द्वि० ५, तृ० ३ औ बूझहु, च० १ मोहि बूझहु। २. द्वि० १ जीव लै गई। ३. प्र० १ तुम्हार जो चेलैं, प्र० २ गुर जो चेलैं, द्वि० २, ६, तृ० १ तुम्हार तहाँ ओईं, द्वि० ३ गुरू सो चेलैं। ४. प्र० १ वहि की। ५. च० १ जीव कया। ६. तृ० ३ माया। ७. प्र० १ काल न जानै आछै कहाँ, द्वि० २ काल न जानै पावै छाहाँ। ८. प्र० १, २ अस वह खंड लुकाना चेला। ९. प्र० १, २, द्वि० ४ गुरू तहँ, द्वि० १ तेहि हेरै, द्वि० २ गुरू कहँ, च० १ जाइ फिरि। १०. प्र० १ फिरै किए, द्वि० २, तृ० ३ फिरि फेर करै, द्वि० ४ फिरि सो करै, तृ० १, २ बहुरि करै द्वि० ६, च० १ फिरि फेर देइ। ११. तृ० १ उपदेस।

[२५६]

सुनि जोगी कै अम्मर करनी[1]। नेवरी बिरह बिथा कै मरनी[2]।
कँवल करी होइ बिगसा जीऊ। जनु रवि देखि छूटिगा सीऊ।
जो अस सिद्ध[3] को मारै पारा। नेंबू रस नहिं जेइ होइ छारा[4]।
कहहु जाइ अब मोर सँदेसू। तजहु जोग अब भएउ[5] नरेसू।
जनि जानहु हौं तुम्ह सौं दूरी। नयनन्हि माँझ गड़ी वह सूरी।
तुम्ह पर सबद[6] घटइ[7] घट केरा। मोहि घट[8] जाउ घटत नहिं[9] बेरा।
तुम्ह कहँ पाट हिएँ महँ[10] साजा। अब तुम्ह मोर दुहूँ जग राजा।

जौं रे जिअहिं मिलि केलि करहिं[11] मरहिं तौ एकहिं[12] दोउ।
तुम्ह पै जियँ जिनि होऊँ कछु[13] मोहि जियँ होउ सो होउ॥

[२६०]

बाँधि तपा आने जहँ सूरी। जुरे आइ[1] सब सिंघलपूरी।
पहिलें गुरू देइ कहँ आना। देखि रूप सब कोउ पछिताना।
लोग कहहि यह होइ न जोगी। राजकुँवर कोइ अहै बियोगी[2]।
काहू लागि भएउ है तपा। हिएँ सो[3] माल करै मुख जपा।
जोगी केर करहु[4] पै खोजू। मकु यह होइ न राजा भोजू।

---

[२५९] १. प्र० १, द्वि० १ कहानी। २. प्र० १, द्वि० १ बानी, प्र० २ करना। ३. तृ० ३ भा सिद्ध, प० १ अस गुरू। ४. प्र० १ लेइ सिधि दीन्ह मोर रखवारा, प्र० २ नीठुर सत्त जिऔ होइ छारा, तृ० १, च० १ नेंबू रस ते निय होइ छारा, द्वि० ६ सो अस लौं जरि होइ छारा, प० १ नीबू रस तइ होइ छारा। ५ प्र० १, द्वि० ६ होहु नरेसू, प्र० २ भए सँदेसू। ६. प्र० १ परगट, प्र० २ परदेस, द्वि० १ परसो मोहि, द्वि० २ परहरत, तृ० ३ परसेन, द्वि० ५ परसेपन, तृ० १ परगट, च० १ सिद्ध। ७. च० १ घटहिं। ८. तृ० ३ गुपुत। ९. च० १ न होइहि। १० प्र० १, २, द्वि० १, ४, ६ तुम्ह कहँ राज पाट मैं साजा, तृ० १ मोहि लागि तुम्ह जोग जो साजा। ११. प्र० १, २ मिलि सुख करहिं, द्वि० ४ मिलि गल रहहिं, द्वि० ३, ५, प० १ मिलि कल रहहिं, द्वि० ६ तौ मिलि रही, तृ० १ कल मिलि रहहिं। १२. तृ० १ एक सँग। १३. प्र० १ तुम्ह जिय जनि कछु होइ।

[२६०] १. प्र० १ तहाँ। २. प्र० १, द्वि० १, ४, तृ० १, प० १ आहि कोइ भोगी, प्र० २ आहि रस भोगी। ३. प्र० १, प० १ जो। ४. द्वि० ३ लेहु।

जस[5] मारइ कहँ बाजा तूरू। सूरी देखि हँसा मंसूरू।
चमके दसन भएउ उजियारा। जो जहँ तहाँ[6] बीजु अस मारा।

सब पूँछहिं कहु जोगी जाति जनम औ नावँ।
जहाँ ठाँव रोवै कर हँसा सो कौने[7] भावँ॥*

[२६१]

का पूँछहु अब जाति हमारी। हम जोगी औ तपा भिखारी।
जोगिहिं जाति कौन हो राजा। गारि न कोह मार[1] नहिं लाजा।
निलज भिखारि लाज जेहिं खोई। तेहि के खोज परहु जनि[2] कोई।
जाकर जीव मरै पर बसा। सूरी देखि सो कस नहिं[3] हँसा।
आजु नेह सौं[4] होइ[5] निबेरा। आजु पुहुमि तजि गँगन बसेरा।
आजु कया पिंजर बँध टूटा। आजु परान परेवा छूटा।
आजु नेह[6] सौं होइ[7] निरारा। आजु पेम सँग चला पियारा।

आजु अवधि[8] सिर पहुँची[9] कै सो चलेउँ[10] मुख रात।
बेगि होहु मोहिं मारहु का पूँछहु अब बात[11]॥

---

५. तृ० १ जब। ६. तृ० १ अहा। ७. तृ० २, ३ यहु केहि।

*द्वि० ७ में यह छंद नहीं है, किंतु प्रसंग में इसकी अनिवार्यता प्रकट है, क्योंकि रत्नसेन को शूली देने के लिए ले जाने का उल्लेख इसी छंद में हुआ है।

[२६१] १. प्र० १, २ गारी कोह न मार, द्वि० ७ गारी कैर हम पर नहिं। २. प्र० १ परहु मति, प्र० २ परै का, द्वि० ७ करै का। ३. प्र० १ काहे न। ४. द्वि० १ नेह मैं, द्वि० २, ३, ७, प० १ पेम सौं, द्वि० ६ नेह कर। ५. प्र० १ करी। ६. द्वि० १ नेम। ७. प्र० १ होउँ। ८. तृ० १ आद। ९. प्र० १ पहुँचाइ सिर, प्र० २ सिर बीती, द्वि० ७ पहुँचाइ कै, च० १ फिरि पहुँचो, द्वि० ३, तृ० २ सो पूजा। १०. प्र० १, द्वि० १ कै मो चलो, प्र० २, तृ० १ कै सो जाउँ, द्वि० ४ कै सो गएउँ, द्वि० ५, ७ कै मो चला, द्वि० ६ किए जाउँ, प० १ किहे जाउँ। ११. प्र० १ का पूँछहु नाम, द्वि० १ का पूँछहु किछु बात, द्वि० २, तृ० ३, प० १ जनि चाल्हु यह बात, द्वि० ५ का पूँछन इहु बात, द्वि० ७ का पूँछहु मोरी बात, तृ० २, द्वि० ३ का पूँछहु यह बात।

[२६२]

कहेन्हि सँवरु जेहि चाहसि सँवरा । हम तोहिं करहिं[1] केत[2] कर भँवरा ।
कहेसि ओहि सँवरौं[3] हर फेरा[4] । मुएँ जिअत आहौं जेहि केरा ।
औ सँवरौं[5] पदुमावति रामा[6] । यह जिउ निवछावरि जेहि[7] नामा[8] ।
रकत के बूँद कया जत अहहीं । पदुमावति पदुमावति कहहीं ।
रहहिं त बुंद बुंद महँ ठाऊँ । परहिं तौ सोई लै लै[9] नाऊँ ।
रोवँ रोवँ तन तासौं ओधा । सोतहि सोत बेधि जिउ सोधा[10][11] ।
हाड़ हाड़ मह सबद सो होई । नस नस माँहि उठै धुनि सोई ।

खाइ बिरह गा ताकर गूद माँस[12] की खान[13] ।
हौं होइ साँचा[14] धरि रहा[15] यह होइ[16] रूप समान ॥*

[२६३]

राजा[1] रहा दिस्टि किए ओंधी । सहि न सका तब भाँट दसौंधी ।[2]

---

[२६२] १. द्वि० ३ धारन । २. प्र० १ करब केत, प्र० २ करहिं केतुकि, द्वि० ४ करहिं तोहिं केत । ३. प्र० १, द्वि० ७ सँवरौं मोह नाम । ४. प्र० २ मौ । ५. प्र० १, द्वि० ३, ५, ७, पं० २ सुनी । ६. तृ० १ नामा । ७. प्र० १, द्वि० ५, ६, ७, ३ तोहि । ८. द्वि० ६, तृ० २ में इसके अनंतर इस छंद की पंक्तियाँ भिन्न हैं । ९. प्र० १ उठहिं सोई लै, प्र० २ लै पदुमावति, द्वि० २ मोह लेत बह, द्वि० ४ सनी लै लै, द्वि० ७ उठहि लै लै । १०. प्र० १ सेधा, बेधा, प्र० २ बेधा, रोधा, द्वि० ७ बेधा, बेधा । ११. प्र० १ *रोवँ रोवँ तन तासौं ओधा, सोतहि सोत बेधि जिउ सोधा,* द्वि० ७ सोत सोत तन तासौं ओधा, घट घट रोम रोम बै मेधा । १२. द्वि० ७ माँस कया । १३. द्वि० ५, तृ० १, पं० १ खान । १४. द्वि० १ चांचा । १५. द्वि० ७ होइ माँच रहा अब, द्वि० ४, तृ० ३ पुनि माँचा होइ रहा । १६. द्वि० ४, तृ० ३ ओहि कै ।

*इसके अनंतर प्र० १, द्वि० ६, में एक, द्वि० ७, तृ० १, ३ में दो, और द्वि० ३, ४, ५ मे तीन अतिरिक्त छंद हैं । (देखिए परिशिष्ट)

[२६३] १. द्वि० २, तृ० १, २ पहिके । २. प्र० १ द्वि० ७ राजसेन बर भाँट दसौंधी, मरहि कहा रहै रिस ओंधी ।

कहेसि मेलि कै हाथ कटारी। पुरुष न[3] आछहिं बैठि पेटारी[4]।
कान्ह कोप कै मारा कंसू। गूँग कि फूँक न बाजइ बंसू[5]।[6]
गंध्रपसेनि जहाँ[7] रिस बाढ़ा[8]। जाइ भाँट आगें भा ठाढ़ा[8]।
ठाढ़ देखि सब राजा राऊ[9]। बाएँ हाथ दीन्ह[10] बरम्हाऊ।
गंध्रपसेनि तूँ राजा महा[11]। हौं महेस मूरति सुनु कहा[12]।
जोगी पानि आगि तुइँ राजा[13]। आगिहि पानि जूझ नहिं छाजा[13]।

अगिनि बुझाइ पानि सौं[14] तूँ राजा मन बूझु[15]।
तोरे[16]वार खपर है लीन्हे[17] भिख्या देहु न[18] जूझु ॥*

[२६४]

जोगि न आहि आहि सो भोजू। जानै भेद करै सो खोजू[1]।[2]

---

३. प्र० २ न छापहिं, द्वि० ४ औ आछहिं। ४. द्वि० ७ घाले हाथ खरग जो मूँठी, उठा बाँपि सूरन सौं दीठी। ५. प्र० १, २ तन जाना यह पुरुष न कंसू, प० १ परन के फूँक बनाई न सू, द्वि० ४, तृ० ३ गोहुन साम्ह बजाएउ बंसू। ६. द्वि० ७ (भाट) मूरति महेस पर कला, राजा सभ रासहिं अगला। ७. प्र० १ तहाँ। ८. द्वि० ७ भरा, गहे कटार जाइ भी खरा। ९. द्वि० ७ चाहे तहाँ आपु ही धाऊ। १०. प्र० १ राव, प्र० २ कीन्ह। ११. द्वि० २ सुनु राजा राजेसुर महा, द्वि० ४ चौना गध्रपसेन रिसाई। १२. प० १ सौंहि रिस पछु जाइ न कहा, द्वि० ३ कैस जोगि सम भाट कमाई, द्वि० ७ आनी छंद जोगि अस कहा। १३. द्वि० २ जनि जानहु यह जोगि भिखारी, महाराज जगभान मुरारी। द्वि० ७ जोगा पानि आगि तूँ अम्भा, अगिनि बाढ पानी सौं बूझा। १४. द्वि० २ रिस मोर मन अनर है। १५. द्वि० २ बूझहु राजा मन बूझि, द्वि० ४, ५, प० १ जूझु न राजा बूझु। १६. प्र० १ जोगी। १७. तृ० १ लिए सागै। १८. प्र० १ सन।

*द्वि० ६, तृ० ३ में यह छंद नहीं है, किंतु इस छंद को. ६ आगे छंद २२८ के अनंतर आने वाले प्रक्षिप्त छंदों में आई हुई है। तृ० ३ में इनके अनन्तर तीन छंद प्रक्षिप्त हैं। (देखिए परिशिष्ट)।

[२६४] १. प्र० १, द्वि० ७ जोगि न होइ सो आहि नरेसू, औ परमन नहि सिद्ध महेसू।
प्र० २ जोगि न होइ आहि सो भोजू, जानै भेद जो मरि कै खोजू।
द्वि० ४ जोगि न होइ आहि सो भोजू, जोगी भण्ड भेज कै खोजू।
२. द्वि० ७ (यथा. १) सुर नर गन गध्रब सार, जल थल आहे चचइ विचारे। द्वि० ३, ६, तृ० १, ३ भाट भेस है सुर जस भाषा, हनिवन धीर रहै नहिं राखा।

भारथ होइ जूझ जौं ओघा[3]। होहिं सहाइ आइ सब जोधा।[*]
महादेव रन घंट बजावा। सुनि कै[4]सबद ब्रह्मा चलि आवा।
चढ़े अग्र[5] लै किस्न[6] मुरारी। इंद्रलोक सब लाग गोहारी।
फनपति[8] फन पतार सौं काढ़ा। अस्टौ कुरी नाग भा ठाढ़ा।
तैंतिस कोटि देवता साजा। औ छयानवे[9] मेघ दर गाजा।
छप्पन कोटि बैसंदर बरा। सवा लाख परवत फरहरा।

नवौ नाथ चलि[10] आवहिं औ चौरासी सिद्ध।
आजु महा रन भारथ चले[11]गँगन[12]गरुड़ औ गिद्ध॥

[२६५]

मै अग्यौं को भाँट अभाऊ। बाएँ हाथ देइ[1] बरम्हाऊ।[2]
को जोगी अस नगरी मोरी। जो दै सेंधि चढ़ै[3] गढ़ चोरी[4]।
इंद्र डरै निति[5] नावै माथा। किस्न डरै सेस[6] जेइँ नाथा।
बरम्हा डरै चतुर मुख[7] जासू। औ पातार डरै बलि बासू[8]।

---

३. द्वि० ३ मैाथा। ४. द्वि० २ (यथा.२) देव लाग स्थान सुठि बाए, ६।इ सबै बोगम्मन आए। द्वि० ३, ६, तृ० १, ३ लीन्ह चूरि वै ततखन सूरी। धरि सुग्र मेलेसि जानहु मूरी। ५. द्वि० ७ सौंगी। ६. द्वि० २ चक्र। ७. प्र० १, द्वि० २, ३, ७, तृ० १, ३, पं० १ बिन्तु, प्र० २ देव। ८. द्वि०३, ५, ६ बासुकि। ९. प्र० १ छप्पन कोटि। १०. द्वि० ७ नवौ नाथ जोगी चलि। ११. प्र० २ अदुठ बज्र धरती चढ़ा, द्वि० ७ अहुठ बज्र सु धरती, द्वि० ३, तृ० १, पं० १ अदुठ बज्र जुर धरती। १२. प्र० १, द्वि० तृ० ३ चलै गरुड़ औ गिद्ध, प्र० २ गरुर जटाईं गिद्ध।
* इसके अनंतर द्वि० १ में पाँच, द्वि० २ में दो तथा द्वि० ३ अतिरिक्त छंद मैं। (देखिए परिशिष्ट)

[२६५] १. प्र० १ राव, प्र० २ कीन्ह, तृ० १ दीन्ह। २. द्वि० ३, ६, तृ०३ अनरा होइ रे भाँट भिखारी, का तू मोहिं देखि असि गारी। द्वि० २ बोला गंध्रपसेन रिसाई, बेई जोगी को भाँट अभाई। ३. द्वि० ५, ३ आव, पं० १ आइ। ४. द्वि० २ को मोहि सौंह होइ संसारा, जासौं हेरौं होइ जरि छारा। द्वि० ६, तृ० ३ को मोहि जोग होइ उप पारा, जासों हेरौं सो जाइ पतारा। ५. द्वि० ३, पं० १ मोहि। ६. प्र० १, २ धारी। ७. प्र० १, द्वि० ७ भुज। ८. प्र० १, द्वि० ७ बलिनास।

धरति डरै औ मंदर[९] मेरू[१०]। चंद्र सूर औ गँगन कुवेरू।
मेघ डरहिं बिजुरी जहँ डीठी। कुरुम[११] डरै धरनी जेहि पीठी।
चहौं तो सब माँगौं धरि[१२] केसा। और को कीट पतंग नरेसा[१३]।[१४]
बोला भाँट नरेस सुनु[१५] गरब न छाजा[१६] जीवँ।
कुंभकरन की खोपरी बूड़त बाँचे[१७] भीवँ॥[१८]

[२६६]

रावन गरब बिरोधा रामू। औ ओहिं गरब भएउ संग्रामू।[१]
तेहि रावन अस को बरिबंडा। जेहि दस सीस बीस भुअडंडा[२]।
सूरज जेहि कै तपै[३] रसोई। बैसंदर निति धोती धोई।
सूक सोंटिया[४]ससि[५]मसिआरा[६]। पवन करै निति बार बुहारा।
मीचु लाइ कै पाटी बाँधा। रहा न दोसर ओहि[७]सौं काँधा[८]।

---

९. प्र० १, द्वि० २, ७, मदल (मद्दल) द्वि० ४, ५ मंडप। १०. प्र० २ महि हालहि औ चालहि मेरू। ११. प्र० २ कमठ, रूप समस्त प्रतियों में 'कुरुँभ' (हिंदी मूल)। १२. प्र० २, द्वि० २, ७ गहि। १३. द्वि० ४ और गौर (घोर ?) दरित अनेक। १४. तृ० २ सुर नर मुनि गन गंध्रप देवा, तिन्ह का गनै कराहिं निति सेवा। द्वि० ३ सबै देवता करहिं अदेसू, और गनै को पतँग नरेसू। १५. द्वि० १ न रोस करु, द्वि० ७ करहु सत। १६. प्र० १, २ गरब न कीजै, द्वि० ७ रोस न लागै। १७. पं० १ बूड़न लागे।
१८. द्वि० ६, तृ० ३, तो सों को सरिवरि करै अरे अरे झूठे भाट।
छार होसि जौ चालौं गज हस्तिन्ह के ठाट॥
द्वि० २ सुरनर रिषिगन गंध्रप असुर सनागर देव।
परगट गुपुत सिरिस्टि करहिं सबै मिलि सेव॥
द्वि० २ में इसके अनंतर सात अतिरिक्त अर्द्धालियाँ आती हैं, तब उपर्युक्त २६५ छंद का मूल का दोहा आता है। तृ० १ में द्वि० ७ वाला दोहा नहीं है, सात अतिरिक्त अर्द्धालियाँ आती हैं और तब उपर्युक्त छंद २६५ का मूल का दोहा आता है।

[२६६] १. द्वि० ६, तृ० ३ बोलहि भाँट फुरहि हम झूठे, जौ यह गरब देवनोहि रूठे। द्वि० २ में यह एक अतिरिक्त पंक्ति के रूप में है, मूल अर्द्धालियाँ आई हैं। २. प्र० २ भुजदंडा, द्वि० ४ भुजबंडा। ३. प्र० १, द्वि० ७ जेहि सूरज तप। ४. प्र० २ सुरज जो मंथी। ५. तृ० ३ माह, द्वि० ४ मन। ६. प्र० २ बरिआरा। ७. द्वि० ४ सपनेहु। ८. प्र० २ बाँधा, बैर बिरोध राम सौं काँधा। द्वि० २ बाँधी, रहा न गरब न छाजा काँधी। पं० १ बाँधा, रहा और मिउँ दोसरहि काँधा।

जो अस वजर टरै नहिं टारा। सोउ मुआ तपसी[9] कर मारा।
नाती पूत कोटि दस[10] अहा। रोवन हार न एकौ[11] रहा॥

ओछ जानि कै काहू जनि कोइ गरब करेइ[12]।
ओछे पारइ[13] दैय है[14] जीत पत्र जो[15] देइ[16]॥

[२६७]

औ[1] जो भाँट[2] उहाँ हुत[3] आगें[4]। बिनै उठा[5] राजहि रिसि लागें[6]॥[7]
भाँट आहि ईसुर[8] कै कला। राजा सब राखहिं अरगला[9]॥[10]
भाँट मीचु आपुनि पै[11] दीसा। तासौं कौन करै[12] रस रीसा॥[13]
भएउ रजाएसु[14] गंध्रपसेनी। काह मीचु कै चढ़ा[15] निसेनी॥[16]
काह अवनि पाएँ[17] अस मरसी। करसि निटंछ भरम नहिं करसी[18]॥[19]

---

९. प्र० २ दीन्ह। १०. द्वि० ७ कोटिन्ह। ११ प्र० १, तृ० २ कोई। १२ द्वि० ३ माथ। १३ द्वि० ७ गरब जो काहू कान्ह दीन्ह। १४. प्र० १ दई नि दिस्टि नहिं देखइ। १५. द्वि० १ जय। १६ प्र० १ दहुँ का कहँ जय देइ।

[२६७] १. प० १ आइ। २ ग भाँट बदन। ३ द्वि० ५, ३ राजा कौं। ५ प्र० २ बिनै करै, द्वि० १ उट्ठै पुनि, ग सुनत वचन। ६. लागों। ७ प्र० १, द्वि० ७ सुनिकै भाँट भाग जन जानो, राजा कहँ उठि कीन्ह बिनानी। ग मैं अतिरिक्त पंक्ति—सभा लोग बालहिं नृप सुनहु, मन हमार अस मन महँ गुनहू। ८ प्र० २ संसर, तृ० १ भीचु। ९. ग मानत बहि भला। १०. प्र० १ (यथा. ६) सत न चढ़े कगवौं माथा, कहाँ परा जो का ह क माथा। ११ प्र० १, द्वि० ७, २ जी आपुन, द्वि० ४ अपुनै पै। १२ प्र० १, द्वि० ७ का कान्ह। १३ ग भाँट मीत कहँ कबहुँ न डरई, तापर कवन क्रोध को करई। १३ ग बहुत भाँग मों। १५. प्र० १, द्वि० ७ चढ़ा अस मीचु। १६ प्र० २ इहदसों रिसि न क जिऔ राजा, करहिं बिटंप कान दे वाना। १७. प्र० १, द्वि० ५, प० १ काह अनि कानो, द्वि० १ कहा आपुन रिस, द्वि० २, ४ काह अवनि बाएँ, ग अस कानी कहि का तोर, द्वि० ३ कहा अती कानी, द्वि० ७ कएउ बान कानी। १८ प्र० १ करई, करी निटंछ भाँट अस मरई। द्वि० १ मरई, काह बिटछ भाँट अस करई। द्वि० ४ मरसो, करसिन बुद्धि भरन नो करसा। द्वि० ७ करहु, करै बिटंछ भरत न परहू। १९ प्र० २ छिमा करिअ इन्ह सौ बस रामा, छिमहि पूत छिन बाप असामी।

जाति करा कत[20] औगुन लावसि। बाएँ हाथ राज[21] वरम्हावसि।
भाँट नाउँ का[22] मारौं जीवाँ। अबहूँ बोल[23] नाइ कै गीवाँ[24]।

तुइँ रे भाँट यह जोगी तोहि एहि कहाँ क संग।
कहाँ छरै[25] अस पावा काह भएउ चित[26] भंग॥

[२६८]

जो सत पूँछहु गंध्रप राजा[1]। सत पै कहौं परै किन गाजा[2]।[3]
भाँटहि काह मीचु सौं डरना। हाथ कटारि पेट हनि मरना[4]।[3]
जंबू दीप औ चितउर[5] देसू। चित्रसेनि बड़ तहाँ[6] नरेसू।[3]
रतनसेनि यहु ताकर बेटा। कुल चौहान जाइ नहिं मेंटा।[3]
खाँड़ै अचल सुमेरु पहारू। टरै न जौ लागै संसारू।[7]
दान[8] सुमेरु देत नहिं[9] खाँगा। जो ओहि माँग न औरहि माँगा[10]।[11]

---

२०. प्र० १ जाति कौ राव, द्वि० ७ जाति क राजा, द्वि० ५ जाति भाँट, तृ० २ जाति यौन वन, ग जाति कौ भाँट। २१. प्र० २ राव। २२. प्र० १ भाँटहि का अब। २३. प्र० १, द्वि० ७ पूँछहु कहै नाएकै। २४. द्वि० २ भाट ठाढ मुख अंमित बानी, कौन कपट रस कथा कहानी। द्वि० ७ सत नै कहै तौ काटौं हाथा, पूँछहु कहै नाए कै माथा। २५. द्वि० ४, प० १ चढ़ै, द्वि० १ छपा। २६. द्वि० १ सत।

* तृ० ३, द्वि० ६ में यह छंद नहीं है, किन्तु प्रसंग में आवश्यक ज्ञात होता है।

[२६८] १. द्वि० ४, ५ राजा, नहिं काजा; ग राई, सीस वरु जाई। २. प्र० १, द्वि० ७ जो राजा तुम्ह पूँछहु भंतू। सतहि कहौं जोहि पर जंतू। ३. द्वि० २ औ सुनु बिनति करौं एक दाता। निस्चै कहौं सच कै बाता।
जंबू दीप भरथ खँड भारी। तहँ चितउर गढ कोट करारी।
चित्र सेन राजा सर साजा। जिहि लगि राज पाट पुनि साजा।
तेहि कुल दीपक रतन मुरारी। रतन सेन सब संतति सारी।
४. प्र० १, द्वि० ७ भाँट कहा मरनै जिउ डरई। मींचु नाउँ सुनि अगुमन मरई। ५. प्र० १, द्वि० १, ७ सो चितउर, प्र० २ चितउर एक, द्वि० ४, ५ चितउर, द्वि० ३ जो चितउर। ६. प्र० २ सूर। ७. प्र० १, द्वि० ७ (यथा.६) तेहि क भाँट हौं बोलौं बाना, नाँउ महा पातर औरु आना। ८. प्र० २ दान समुँद, द्वि० १, ५, ३ समुँद सुमेरु, ग धन कर समुँद। ९. प्र० २ न कोऊ, ग न कोइ, प० १ देत को। १०. द्वि० ४ खाँगा। ११. द्वि० ५ माग। पं० १ पूजा, दान समुँद और को पूजा। ग खाँगा, तेहि क भाँ हौ मैं भिखमंगा। १२. तृ० ३ खाँगा, दहिने हाथ ओहि मैं माँगा। द्वि० ३ खाँगा, तेहि न भाँट हौ ओहीं

-दाहिन हाथ उठाएउँ ताही। और को अस बरम्हावउँ[12] जाही[13]।

नाउँ महापातर मोहि[14] तेहिक भिखारी ढीठ।
जौं खरि[15] बात कहँ रिस लागै खरि पै[16] कहै बसीठ॥

[२६६]

-सोइ बिनती सिउँ[1] करौं[2] बसीठी। पहिलें करुइ अंत होइ मीठी।
तूँ गंध्रप राजा जग पूजा। गुन चौदह सिख देइ को[3] दूजा।
हीरामनि जो तुम्हार परेवा। गा चितउर[4] औ कीन्हेसि सेवा[5]।
तेहि बोलाइ पूँछहु वह[6] देसू। दहुँ जोगी का तहँ क नरेसू[7]।
हमरें कहत रहै नहिं मानू। जो वह कहै सोइ परवानू[8]।
जहाँ बारि तहँ आव बरोका। करै बियाह धरम सुठि तोका[9][10]।
जौं पहिलें मन[11] मान[12] त काँधिअ[13]। पर सिअ रतन गाँठ तब बाँधिअ[13]।

---

१२. द्वि० १, ३ ऐस उठावउँ। १३. प्र० १, द्वि० ७ दहिने हाथ ओहि बरम्हावौं, दुसरे कहँ नहि जनम उठावौं। १४. प्र० १ द्वि० ७ ओहि छुटि और न मांगौं। १५. तृ० ३ कहि। १६. द्वि० ७ जरम।

*द्वि० ६, तृ० ३ में यह छंद भी नहीं है, किंतु प्रसंग में आवश्यक ज्ञात होता है। इसके अनंतर द्वि० ३ में चार, तृ० १ में तीन तथा द्वि० २, ५, ७, तृ० ३ और ग में पांच अतिरिक्त छंद हैं। (देखिए परिशिष्ट)

[२६९] १. प्र० १ सुनि बिनता सिउँ, प्र० २ औ गुन बिनती, द्वि० २, ३, ४, ५, तृ० १, ३ तब महेस उठि, द्वि० ६ औ महेस उठि, पं० १ अवसि बिनति अब, ग महादेव पुनि। २. द्वि० २, ४, तृ० १, ४, ग कीन्ह, द्वि० ७ कहै। ३. ग सरि और न। ४. द्वि० ६, तृ० ३ गयो तहाँ, द्वि० १ गा सो तहाँ ५. प्र० १ कंठ जो फूट करत तुम्ह सेवा, ग गयो तहां आयो करि मेवा, द्वि० ७ सो बोलाइ पूछहु किन देवा। ६. प्र० १, द्वि० ७ जानत है ताकर, द्वि० १ हँकारि के पूँछहु। ७. प्र० १, द्वि० ७ औ आनेसि जोगी के भेस, द्वि० १, ५, ग औ पूँछहु जोगी कि नरेस, द्वि० ३ औ पूँछहु जोगी जस भेसू। ८. प्र० १ द्वि० ७ आनत जो न घालि के कंथा, राजा आइ न छाँडइ पंथा। ग हमरे महे न एकहु मानहु, जो वह कहै सत करि जानहु। ९. प्र० १, द्वि० ७ बराका, वह ओका, प्र० २ बरोखा सत लेखा। १०. द्वि० ३ तू राजा बड औ अति ग्यानी, खरचहि न तेही मन मैं जानी। ११ द्वि० २ जो तुम्हार मन, तृ० १ जो लहि मोर मन। १२. तृ० १ पनारै ग महीं -तोहि। १३. द्वि० २ बाँधहु, बाँधहु।

रतन छिपाएँ ना छिपै पारखि होइ सो परीख।
घालि कसौटी[१५] दीजिए[१६] कनक कचोरी[१७] भीख॥

[२७०]

हीरामनि जौं राजैं सुना। रोस बुझान हिएँ महँ[१] गुना।
अग्याँ भई बुलावहु[२] सोई[३]। पंडित हुँतें[४] धोख[५] नहिं होई[३]।
एक कहत सहसक दस[६] धाए। हीरामनिहि बेगि लै आए[७]।
खोला आगे आनि[८] मँजूसा। मिला निकसि बहु दिन कर रूसा।
अस्तुति करत मिला बहु[९] भाँती। राजैं सुना भई हियँ साँती[१०]।
जानहुँ जरत अगिनि जल परा। होइ फुलवारि[११] रहस हिय भरा[१२]।
राजैं मिलि[१३] पूँछी हँसि बाता। कस तन पीत[१४] भयउ मुख राता[१५]।

चतुर बेद[१६] तुम्ह पंडित[१७] पढ़े सास्तर बेद।
कहाँ चढ़े जोगी गढ़[१८] आनि कीन्ह[१९] गढ़ भेद॥

---

१४. प्र० १, द्वि० ७ राज रूप कुल सो नग काठी, रतन देखि को बाँध न गाँठी। द्वि० ३ हीरामनि तस करै बखानू, रतनसेनि राजा जस भानू। १५. प्र० १, द्वि० ७ बाँधि गाँठि सो। १६. द्वि० २, ४, पं० १ क सिर। १७. द्वि० १ कटोरी।

[२७०] १. तृ० ३ नहिं। २. प्र० १, द्वि० ७ हम सो रूसि गवा हुत। ३. ग सुवा, हुवा। ४. ग हिए। ५. प्र० १, द्वि० ५, ६, तृ० १ दोखा। ६. द्वि० १ धावत एक जहाँ सौ, द्वि० ३, ५, तृ० ३, पं० १, ग भइ अग्य जन सहसक। ७. प्र० १, द्वि० ७ अग्याँ भई बुलावहु बेगी, एक कहँ धाये दस बेगी। ८. प्र० १, द्वि० ७ आनि सो खोला बेगि। ९. पं० १, ग तेहि। १०. प्र० १, द्वि० ७, तृ० १ (यथा.२) हीरामनि है पंडित परेवा, कीन्हेसि पदुमावति कै सेवा (तुलना २६८.३)। ११. द्वि० १ आँसू टपन (?), ग फूला कमल। १२. द्वि० १ सो रोवै खरा। १३. प्र० १, द्वि० ७ कंठ लाइ, द्वि० १ तौ राजैं। १४. प्र० १, द्वि० ४ पियर, तृ० ३ पेन (उर्दू मूल)। १५. द्वि० ६ में इस पंक्ति के स्थान पर पाद-टिप्पणी २० की पंक्ति है। १६. प्र० २ सुमति। १७. ग गीता ग्यान समान हिय। १८. प्र० १, द्वि० ७ परे जोगिन्ह सँग, प्र० २, द्वि० ५ चढाए जोगिन्ह, द्वि० २ चढ़े अस जोगी, ग चढ़े जोगिन्ह लै। १९. प्र० १ कीन्ह जाइ, द्वि० ५ कहाँ कीन्ह।

[२७१]

हीरामनि रसना रस गोला[1]। दई असीस औ अस्तुति बोला[1]।
इंद्र राज राजेसुर[2] महा। सौंहैं[3] रिसि किछु जाइ न कहा।
पै जेहि बात होइ भल[4] आगें। सेवक निडर कहै[5] रिस लागें।
सुवा सुफल अंब्रित पै खोजा। होइ न बिक्रम राजा[6] भोजा।
हौं सेवक तुम्ह आदि गोसाईं। सेवा करौं जियौं जब ताईं।
जेइँ जिउ दीन्ह देखावा देसू। सो पै जिय महँ[7] बसै नरेसू।[8]
जो ओहि[9] सँवरै एकै तुँ ही[10]। सांई पंखि जगत रतमुहीं[11]।

नैन बैन औ सरवन[12] बुद्धी सबै तोर परसाद।
सेवा मोर इहै निति[13] बोलौं आसिरबाद॥

[२७२]

जो अस सेवक चह पति दसा[1]। तेहिकि जीभ[2] अंब्रित पै बसा[3]।
तेहि सेवक के करमहि[4] दोसू। सेव करत ठाकुर होइ[5] रोसू।

---

[२७१] १. द्वि० ७ कर अंजुलि दीन्हा, कीन्हा। २. प्र० १ रजाएसु। ३. द्वि० ४ सुनि हिए। ४. प्र० १ भलि बात होइ जेहि। ५. प्र० ? कहै सरै का आ, तृ० ३ कहै न्हहै कामा। ६. प्र० १, २ होहु न बिक्रम, द्वि० २ पै तुम्ह होहु बिक्रम, द्वि० ६ होहु न तुम्ह सो राजा, तृ० २ पै तुम्ह होहु पराजा। ७. प्र० १ तादि जीउ घट। ८. ग में यहाँ अतिरिक्त—जेहि जउ दीन्ह सो लेइ निरासा, मुएँ जियत मन जाव रि आसा। ९. द्वि० २, ३, ५, तृ० ३ मन। १०. प्र० १, द्वि० ७ तूँ सब कछू औ सार पर तुही। ११. प्र० १, द्वि० ७ हौ दछु नाहि पखि रतमुही, तृ० १ तेही कंठ औ सूरनि नहीं। १२. द्वि० १, ४, ५, तृ० १, पं० २ औ सरवन। १३. प्र० १ द्वि० ७ यहाँ जीभ अस पावौं, प्र० २, द्वि० ५, तृ० १ बाद जानि कै आपन, द्वि० ३ सेवा मोर है दिन प्रति।

[२७२] १. द्वि० २, ५, तृ० १, २, ३, प० १ जो पखी रसना रस। २. प्र० २ जीव, तृ० १ जियँ, द्वि० १, ५, पं० १, ग मुख। ३. प्र० १, द्वि० ७ हौ अस सेवक तुम्ह पति आसा। ४. ग नाहीं। ५. प्र० १, पं० १ रोइ पति, द्वि० २ घरै सब (उद्‌मूल), द्वि० ५, ७, तृ० १ करै पति, द्वि०, १ ग करै पति।

औ जेहि दोख निदोखहि लागा[६]। सेवक डरहि[७] जीव लै भागा।
जौं पंखी कहंवाँ[८] थिर रहना। ताकै जहाँ जाइ[९] जौं डहना[१०]।[११]
सपंत दीप देखेउँ फिरि[१२] राजा। जंबू दीप जाइ पुनि बाजा।[१३]
तहँ चितउर गढ़ देखेउँ ऊंचा[१४]। ऊँच राज सरि तोहि पहूँचा[१५]।
रतनसेनि यहु तहाँ[१६] नरेसू। श्राएउँ लै जोगी कर भेसू।[१७]

सुवा सुफल[१८] पै आनै[१९] है तेहि गुन[२०] मुख रात।
कया पीत[२१] अस तातें[२२] सँवरौ विक्रम[२३] बात॥

[२७३]

पहिलें भएउ भाँट सत भाखी। पुनि बोला हीरामनि साखी।
राजहि भा निस्चौ मन[१] माना। बाँधा रतन छोरि कै आना।
कुल पूँछा चौहान कुलीना। रतन न बाँधे होइ मलीना।
हीरा दसन पान रँग[२] पाके[३]। बिहँसत सबन्ह[४] बीज बर ताके[५]।

---

६. प्र० १, द्वि० ७ देखेउँ दोष जो दोसरि लागा, ग औ बिनु दोष दोष जेहि लागा। ७. प्र० १ तोहि डर डरौं. द्वि० १ तहा सो उड़ेउँ, द्वि० ५, पं० १ तहा सो डरेउँ, ग तब मैं डरा। ८. द्वि० २ जो आ प खि वहाँ, द्वि० ६, तृ० १ हौं पंखी कहँवाँ। ९. द्वि० ३ ताकै उड़ा पाँख। १०. प्र० १, द्वि० ७ पंखिहि का रहना थिर काजू, सपत दीप फिरि देखेउँ राजू। ११. यहाँ पर ग मे अतिरिक्त-देखेउँ धन बन संपति जेता, मेरु फेरु तन जीवन तेता। १२. द्वि० १ चलि। १३. द्वि० १ चलि। १३. प्र० १, द्वि० ७ जब हौं जंबू दीप पहूँचा, देखेउँ राज जगत पर ऊँचा। १४. प्र० १, द्वि० ७ तहवाँ मैं चितउर गढ़ देखा। १५. प्र० १, द्वि० ७ कहा राज नहि जाइ बिसेखा, द्वि० १ ऊँच राज [गढ तेहि नहिं दूजा। १६. प्र० २ बड भानु, तृ० १ बड सुना। १७. प्र० १, द्वि० ७ रतनसेनि तहवाँ बड राजा, देखेउँ परसि राज बर छाजा। १८. ग अमी सुरँग। १९. प्र० १ पै आना, प्र० २ फर आनै, द्वि० २ लै सोजै, द्वि० ७ सो आनै, द्वि० ४ कै आनै, तृ० १ लै आनी, ग फल आना। २०. प्र० २ ताकें, पं० १ तातें। २१. द्वि० ३ पेन (उर्दू मूल)। २२. प्र० १ तेहि डरऊँ, प्र० २ सो तेहि डर, द्वि० ७ सौ बिकरग। २३. द्वि० ७ मन बीचारी।

[२७३] १. द्वि० ४ बस। २. द्वि० २ रस। ३. ग पागे। ४. प्र० २, द्वि० ३ दसन। ५. ग लागे।

सुंदर सवन मैन सो[6] चाँपे। राजबैन[7] उघरे सब काँपे।
आना काटर एक[8] तुखारू। कहा सो फेरै भा[9] असवारू।
फेरेउ तुरै छतीसौ कुरी। सबहिं[10] सराहा सिंघलपुरी।

कुँअर बतीसौं लच्छन सहस करौं जस भान[11]।
काह[12] कसौटी कसिए कंचन बारह बानि[13]॥

[२७४]

देखि सुरुज घर कँवल सँजोगू। अस्तु अस्तु[1] बोला सब लोगू।
मिला सुबंस अंस[2] उजियारा। भा बरोक औ तिलक सँवारा।
अनिरुध कहँ जो लिखी जैमारा[3]। को मेटै[4] बानासुर छारा।
आजु मिले[5] अनिरुध को ऊखा। देव अनंद दैतन्ह[6] सिर दूखा[7]।
सरग सूर भुइँ[8] सरवर केवा। बन खँड भँवर होइ[9] रस लेवा।[10]
पछिवँ क बार[11] पुरुब की बारी। लिखी जो जोरी[12] होइ न न्यारी[13]।
मानुस साज[14] लाख मन[15] साजा। साजा बिधि सोई पै बाजा[16]।[17]

---

६. प्र० १ मैन बे, द्वि० ७ नगन सो। ७. ग बरन। ८. प्र० १ खनर जो, प्र० २ खरै (जो)। ९. द्वि० ४ सो फिरि भया, ग तुरंत होइ। १०. द्वि० ३, तृ० १ भर भान। ११. प्र० १ जस बान, प्र० २ ससि भान। १२. द्वि० २, ३, तृ० १ घालि, द्व० ७ जैमें। १३. द्वि० ७ चढ़े अधिक तेहि बान।

* इसके अनंतर द्वि० ७ में दो अतिरिक्त छंद हैं।

[२७४] १. ग सत्य सत्य। २. द्वि० ४ बंस, द्वि० ५, ग अरस। ३. ग अस्ति धरि दुख दारा। ४. प्र० २ चोपै देव, ग भा बिधि लिखन। ५. प्र० १, २, द्वि० २, ६, ७, पं० १ बैर। ६. ग दनुन। ७. द्वि० ४ देवई देइ दीन्ह सिर दूखा, द्वि० ७ देवन्ह भौ सुख दैतन्ह दूखा। ८. ग भौ। ९. ग आइ। १०. ग पुरब कि नारि पछूँ कर बेटा, सरग सूर जल कँवलहि भेंटा। ११. प्र० १, २, द्वि० ७ पछिम क बर। १२. तृ० ३ दरस। १३. प्र० १, द्वि० ७ निनारी, द्वि० ४, तृ० १ निरारी। १४. प्र० १ बाज। १५. तृ० २ दस। १६. प्र० १, २, द्वि० ४, ७, तृ० २ सोई होइ जो बिधि उपराजा। १७. ग मानुस साज करै बहु कोई, साजै बिधि बाजै पै सोई। इसके अतिरिक्त ग में यहाँ है—
देखि उदए सब सुत्र सन जोगी, जो तप करै होइ सो भोगी।

गए जो बाजन[१८] बाजते जिन्हहि[१९] मारन[२०] रन माहँ ।
फिरि बाजन तेइ[२१] बाजे[२२] मंगलचार ओनाहँ ॥*

[२७५]

लगन धरी[१] औ रचा बिआहू । सिंघल नेवत फिरा सब काहू ।
बाजन बाजे[२] कोटि पचासा । भा अनंद सगरौ कबिलासा ।
जेहि[३] दिन कहँ निति[४] देव[५] मनावा । सोइ देवस पदुमावति पावा ।
चाँद सुरुज[६] मनि माथें भागू । औ गावहिं[७] सब नखत सोहागू[८] ।
रचि रचि मानिक माड़ौ छावहिं[९] । औ भुइँ[१०] रात निछाउ[११] बिछावहिं ।
चंदन खाँभ रचे चहुँ पाँती[१२] । मानिक दिया बरहिं दिन राती[१३] ।
घर घर बंदन रचे दुआरा[१४] । जाँवत नगर[१५] गीत झनकारा ।

---

१८. द्वि० १ आएउँ बाजन बाजत । १९. प्र० १, द्वि० ४ जिय, द्वि० १ जहाँ । २०. द्वि० १ मरत रतन । २१. द्वि० १ लागे उतरन । २२. ग बिधि बस बाजे उलटि कै । २३. प्र० २, द्वि० ७, तृ० २, ग उछाह ।

* द्वि० २ में यह छंद नहीं है । विवाह का निश्चय इसी छंद में है, इसलिए यह प्रसंग में अनिवार्य है । किंतु यहाँ उसमें दो छंद अतिरिक्त हैं । द्वि० ४ में भी दो छंद अतिरिक्त हैं । प्र० ३, ५, ७, तृ० ३ तथा ग में भी एक छंद अतिरिक्त है, जो द्वि० २, ४ में भी सामान्य है । (देखिए परिशिष्ट) । द्वि० ४ का दूसरा अतिरिक्त छंद वह है जो पुन द्वि० ४ में तथा द्वि० ५ में समाप्ति पर आता है— मैं पहि अरथ पंडितन्ह पूछा आदि ।

[२७५] १. प्र० ७, द्वि० ७, तृ० ३, ग धरा । २. द्वि० २ बाजहि । ३. प्र० १, तृ० ३ जा । ४. प्र० १ हों, तृ० २ मैं । ५. प्र० १, तृ० ३ देवस । ६. प्र० १ सूर । ७. प्र० २ आवै । ८. तृ० ३ सोहावा, द्वि० ७ सभागू । ९. प्र० १, द्वि० ३ छावा, बिछावा । १०. द्वि० ३ भल । ११. प्र० १, द्वि० ७ बिछौन, द्वि० ७ दसौन । १२. प्र० २, ख बहु भाँती, द्वि० ७, तृ० २ बहु पाँती । १३. तृ० २, ग बहु भाँती । १४. प्र० १, २, द्वि० २, ४, ५, ६, ७, तृ० १, प० १ मंदिल रचे दुआरा, द्वि० २ रचे सो बंदनवारा, तृ० ३ मंगल रचे दुआरा, तृ० २, ख मंदिर रचे किवारा, ग मंगलचार दुआरा । १५. तृ० ३ दीप, पं० १ होर ।

हाट बाट सिंघल सब[16] जहँ देखिअ तहँ रात[17]।
धनि रानी[18] पदुमावति जा करि अैसि बरात[19] ॥

[२७६]

रतनसेनि कहँ कापर आए। हीरा मोंति[1] पदारथ लाए[2]।[3]
कुअँर सहस सँग[4] आइ सभागे। बिनौ[5] करहिं राजा सौं लागे।
जेहि लगि[6] तुम्ह साधा तप जोगू। लेहु राज मानहु सुख[7] भोगू।[8]
मंजन[9] करहु भभूति उतारहु। कै अस्नान[10] चतुरसम[11] सारहु[12]।
काढ़हु मुंद्रा फटिक अभाऊ[13]। पहिरहु कुंडल कनक[14] जराऊ।
छोरहु जटा फुलाएल लेहू। झारहु केस[15] मकुट सिर देहू।
काढ़हु कंथा चिरकुट[16] लावा। पहिरहु राता दगल[17] सोहावा।

पाँवरि तजहु देहु पग पैरीं[18] आवा[19] बाँक तोखार।
बाँधहु मौर[20] छत्र[21] सिर तानहु[22] बेगि होहु असवार ॥

---

१६. प्र० १ गढ़, तृ० ३ जहँ। १७. द्वि० ७, तृ० ३ दहु दिसि अनइ रात, द्वि० ३ जहँ दीसै तहँ रात। १८. द्वि० २, ५, तृ० १ सो रानि। १९. प्र० १ रात सकल महि धरती रात बिरिछ बन पाँति।

[७७२] १. द्वि० ३, तृ० १ रतन। २. द्वि० ७ जोग उतारि भीन पहिराए, द्वि० २, तृ० २ स निहँ जो आद आइ सिर नाए। ३. द्वि० २ में यहाँ अतिरिक्त—पाट पम्बर सुरंग सुहाए, हीरा रतन पदारथ लाए। ४ प्र० १, २ द्वि० ७ दस। ५. तृ० १ बिनति। ६. द्वि० ४, स अब लगि, द्वि० १ जेहि निन। ७. प्र० २, द्वि० २, ४, तृ० २ अब, द्वि० ३ रस। ८. प्र० १, द्वि० ७ लीजै राज साज तुम्ह जोगू. अब सो सँवरि उतारहु जोगू। ९. तृ० ३ मुडन करहु, द्वि० ६ अंजन करहु, ग चंदन लाइ। १०. प्र० १, प० १ करहु नदान। ११. द्वि० ४ चित्र सम, ग छत्र सिर। १२. प्र० २ साजहु। १३. प्र० २ कनक जराऊ। १४. प्र० २ रतन जराऊ। १५. प्र० २ भारहु जटा, द्वि० ७ केस बनाइ। १६. द्वि० ३ परग?। १७. प्र० २ उत्तिम बसन सोहावा, द्वि० ७ राता सब पहिरावा। १८ प्र० २ पग पाँवरि, प्र० २ पग, द्वि० १ पग दान धरि, द्वि० ७, तृ० १ पग पैंवरी। १९. द्वि० २ आना। २०. प्र० २ बाँधहु अत्र, ग बाँधहु कंचन। २१. द्वि० १ बगि। २२. प्र० १, द्वि० ७, तृ० २, प० १ सिर सारहु, द्वि० ४, स छत्र सिर, ग मौर सिर।

[२७७]

साजा राजा[1] बाजन बाजे[2]। मदन सहाय दुहूँ दिसि गाजे।
औ राता रथ सोने क साजा। भए बरात गोहन सब राजा।
बाजत गाजत[3] भा असवारू। सब सिंघल नै[4] करहिं जोहारू।
चहुँ ओर मसियर[5] नखत तराईं। सूरुज चढ़ा चाँद की छाईं।
सब दिन तपा जैस हिय माहाँ। तैस रात पाई[6] सुख छाहाँ।[7]
ऊपर रात छत्र तस[8] छावा। इंद्रलोक सब सेवाँ[9] आवा।
आजु इंद्र आछरि सौं मिला। सब कबिलास होइ सोहिला।

धरती सरग चहूँ दिसि पूरि रहे मसियार[10]।
बाजत आवै राज मँदिर कहँ[11] होइ[12] मंगलाचार॥

[२७८]

पदुमावति धौराहर चढ़ी। दहुँ कस[1] रवि जाकहँ ससि गढ़ी।
देखि बरात सखिन्ह सौं कहा। इन्ह महँ कौनु सो जोगी अहा।
केइ[2] सो जोग[3] लै ओर निबाहा। भएउ[4] सूर चढ़ि चाँद बियाहा।
कौनु सिद्ध सो ऐस अकेला। जेइँ सिर[5] लाइ पेम सौं खेला।[6]
कासौं पितै बचा असि हारी। उतर न दीन्ह दीन्हि तेहि[7] बारी।

---

[२७७] १. साजि बरात सो। २. प्र० १, द्वि० ७ लिए साज बाजन अस बाजे। ३. प्र० १, २ बाजन बाजा। ४. द्वि० २ लै, द्वि० ५, ६ के। ५. प्र० १, द्वि० १, ४, ६, ७, तृ० २ चहुँ दिसि मसिअर। ६. द्वि० ६ पावा राज मदा। ७. प्र० १, द्वि० ७ (यथा .१) भोग चढ़ाउ उतारहु जोगू, जो तप करै सो मानै भोगू। ८. प्र० १ गगन लहि, प्र० २, तृ० १ दरब अस। ९. द्वि० २ कौतुक, तृ० १ देखै। १०. द्वि० २ संसार। ११. प्र० १ आवै राजा, द्वि० १ गाजन आवा, तृ० ३ आव जो मंदिर कहँ, तृ० २ राजमंदिर महँ। १२. प्र० १ होइ सो, द्वि० १ भएउ सो, तृ० ३ मँदिल हो।

[२७८] १. तृ० १ कहँ अस। २. तृ० ३ को। ३. द्वि० ७, तृ० ३ सँजोग। ४. द्वि० २ भँवर। ५. द्वि० ३ मउ। ६. प्र० २ (यथा.७) धन्य समाज देखि मन हरषा, राज छोर पाछे फूल बरषा। ७. तृ० २ है।

काकहँ दैय ओमि जो दीन्हा। जेइँ जैमार[8] जीति रन लीन्हा[9]।
धन्नि पुरुख[10] अस नवै न नाएँ। औ सुपुरुष होइ देस पराएँ।

को बरिवंड[11] बीर अस[12] मोहि देखै कर चाउ।
पुनि जाइहि जनवासे सखी रे बेगि[13] देखाउ॥

[२७९]

सखी देखावहिं चमकहिं[1] बाहू। तूँ जस चाँद सुरुज तोर[2] नाहू।
छपा न रहै सुरुज परगासू। देखि कँवल मन भएउ हुलासू[3]।
वह उजियार जगत उपराहीं। जग उजियार सो तेहि परछाहीं।
जस रवि दीख उठै[4] परभाता। उठा छत्र देखिअ तस राता।
आव माँझ भा दूलह सोई। औरु बराति संग सब कोई।
सहसौं कराँ रूप[5] बिधि गढ़ा। सोने के रथ आवै चढ़ा।
मनि माथे दरसन उजियारा। सौंह निरखि नहिं जाइ निहारा।

रूपवंत जैस दरपन[6] धनि तूँ जाकर कंत[7]।
चाहिअ जैस मनोहर मिला सो मन भावंत[8]॥

---

8. प्र० १ जै हार, द्वि०, ४, तृ० २ जिउ मार। 9. प्र० २ महादेव आनहँ बर कीन्हा। 10. तृ० १ को पूरुष। 11. द्वि० ७ धनी खड। 12. द्वि०७ अस आई। 13. प्र० १ रे मोहि, प्र० २ सो मोहि, तृ० ३ मोहि बेगि।

*द्वि० १ में इस छंद के .२—.७ तथा दोहे के प्रथम दो चरण अगले दोहे के हैं। और दोहे के दूसरे दो चरण इस प्रकार हैं : पुनि जाइहि जनवासे सखि देखाव तोर कंत।

[२७९] 1. प्र० १, २, द्वि० ७, तृ० ३ भमकहि। 2. द्वि० ६, ७, पं० १ बिगासू। 3. प्र० २ तुम्ह, द्वि० ७, तृ० ३ जस। 4. प्र० १ छूट। 5. प्र० १ सर, तृ० ३ गेस। 6. प्र० १ दरस देख जस दरसन, प्र० २ दरसवंत जस दरसन, द्वि० १ दरपवंत मनि माथें, तृ० ३ दरपवंत जस दरपन। 7. प्र० २ पूत। 8. प्र० २ धन सजूत।

*द्वि० १ में इस छंद के .२-.७ तथा दोहे के प्रथम दो चरण पिछले दोहे के हैं, और दोहे के दूसरे दो चरण इस प्रकार हैं : जैसा चाहिअ मनोहर मिला सो मन अस भाव।

[२८०]

देखा चाँद सुरज जस[1] साजा। अस्टौ[2] भाव मदन तन गाजा।
हुलसे नैन दरस मद माँते। हुलसे अधर रंग रस राते।
हुलसा बदन ओप रबि आई[3]। हुलसि हिया[4] कंचुकि न समाई।
हुलसे कुच कसनी[5] चँद टूटे। हुलसी भुजा वलय कर[6] फूटे।
हुलसी[7] लंक कि[8] रावन राजू। राम लखन दर साजहिं साजू।
आजु कटक जोरा हठि कामू[9]। आजु बिरह सो[10] होइ संगामू।
आजु चाँद घर आवै सूरू। आजु सिंगार होइ सब चूरू।

अंग अंग सब हुलसे केउ कतहूँ न समाइ[11]।
ठाँवहिं ठाँव बिमोहा[12] गइ[13] मुरुछा गति आइ॥

[२८१]

सखी सँभारि पियावहिं पानी। राजकुँवरि[1] काहे कुँभिलानी[1]।
हम तो तोहि देखावा पीऊ। तूँ मुरझानि कैस भा जीऊ।
सुनहु सखी सब कहहिं बियाहू। मो कहँ जैस चाँद कहँ राहू।
तुम्ह जानहु आवै पिय साजा। यह धम धम सब मो कहँ बाजा[2]।
जेत बराती औ असवारा। आए मोर सब चालनिहारा[3]।
सोइ आगम देखत हौं[4] झाँखी। आपन रहन न देखौं सखी।
होइ बियाह पुनि होइहि[5] गवना। गौनब तह बहुरि नहिं अवना।

---

[२८०] १. प्र० १ सुर कर। २. द्वि० ४, ५, पं० १ मदसहु। ३. प्र० २ ओपान बिहाई, द्वि० २, ३, ६, तृ० १ रूप रबि आए, तृ० ३ जो परे बिहसाए। ४. द्वि० १ हुलसे कुच। ५. द्वि० २ कंचुकि। ६. द्वि० ३ भुज रग्दा गए। ७. प्र० १ हुलसा। ८. तृ० २ जो। ९. द्वि० ३, तृ० २, ३ हठि रामू, द्वि० ५ हिय कामू। १०. द्वि० २, ३ कर, तृ० १ गढ़। ११. तृ० ३ ममान। १२. प्र० २ बिमोहि गा। १३. प्र० २ जी, तृ० ३ तर।

[२८१] १. प्र० १, २ मुरझानी। २. प्र० १, द्वि० ७ यह सब बाजन मोपर बाजा, प्र० २ यह सब धम धम हम सिर बाजा, द्वि० ३ यह सब धम धम मोपर बाजा। ३. प्र० १ ये सब आए मोर लेनिहारा, प्र० २ आए मोर सब चालन हारा, द्वि० ७ ये सब मोर बोलावनिहारा, तृ० २ आए मोरे चालनिहारा। ४. प्र० १, तृ० १ मैं। ५. प्र० १ चनब पुनि।

अथ सो[6] मिलन कत सखो सहेलिनि[7] परा बिछोवा टूटि।
तैसि[8] गाँठि पिय जोरब जरम न होइहि छूटि॥

[२८२]

आइ बजावत पैठि[1] बराता। पान फूल सेंदुर सब[2] राता।
जहँ सोने के चित्तरसारी[3]। बैठि बरात जानु फुलवारी[4]।
माँझ सिंघासन पाट सँवारा। दूलह आनि तहाँ बैसारा[5]।
कनक खंभ लागे चहुँ पाँनी। मानिक दिया बरहिं दिन राती[6]।
भएउ अचल धुव जोगि पँखेरू[7]। फूलि बैठ थिर जैस सुमेरू[8]।
आजु दैयँ हौं कीन्ह सभागा। जत[9] दुख कीन्ह[10] नीक[11] सब लागा।
आजु सूर ससिअर घर आवा[12]। चाँद सुरुज[13] दुहुँ[14] होइ[15] मेरावा।

आजु इंद्र होइ आएउँ[16] से[17] बरात कबिलास।
आजु मिले मोहि आछरि पूजे मन के आस॥

[२८३]

होइ लाग जेंवनार सुसारा[1]। कनक पत्र पसरे[2] पनवारा।
सोन थार मनि मानिक जरे। राए रंक सब[3] आगें धरे।

---

६. द्वि० २ पुनि रे। ७. प्र० १, ?, द्वि० ४, ६, ३ कत ह नति, तृ० ३ यहाँ सखि, द्वि० ५, तृ० १, पं० १ कत सखी, द्वि० ७ कत होइहि। ८. प्र० १ तीन।

[२८२] १. प्र० १, द्वि० २, ३, तृ० १, २ बैठि। २. प्र० १ रँग। ३. प्र० १ सोने केर आहि चित्रसारी, प्र० २ रची राखी सोने चित्रसारा, तृ० ३ जहं सोने कै चित्र सँवारा। ४. प्र० १, २, द्वि० ४, तृ० १, २ आनि बरात तहाँ बैसारी, द्वि० ७ बैठि बरात तहाँ सब भारी। ५. तृ० ३ बैठारा। ६. प्र० २. तृ० ३ बहु भाँती। ७. द्वि० २ जोगि भिखारी, तृ० ३ जैस सुमेरू। ८. तृ० १ जस भूल सुमेरू, तृ० ३ जस बैठ पँखेरू। ९. द्वि० ?, ३, तृ० २ जस। १०. तृ० ३ सो, प० १ दीख। ११. प्र० २, द्वि० ४ नेग। १२. प्र० २ आजु सुरदि जनु होए मेरावा। १३. प्र० १ सूर। १४. प्र० १ सों। १५. तृ० १, द्वि० ३ भएउ। १६. प्र० १ होइ सो, प्र० २ अस आयेउँ, द्वि० १ मैं पैठेउँ। १७. द्वि० १ सब रत्न, तृ० ३ सो बरात, द्वि० ५, पं० १ रथू (सिउँ) बरात।

[२८३] १. द्वि० ४ पसारा। २. प्र० ? माजे, तृ० ३ परसे। ३. प्र० १ वे।

रतन जराऊ[४] खोरा खोरी। जन जन आगें सौ सौ[५] जोरी।
गडुअन्ह हीर पदारथ लागे। देखि बिमोहे पुरुष[६] सभागे।
जानहु नखत करहिं उजियारा। छपि गा दीपक[७] औ मसियारा[८]।
मैं[९] मिलि चाँद सुरुज कै[१०] करा। भा उदोत तैसै निरमरा।[११]
जेहि मानुस कहँ जोति न होती[१२]। तेहि मैं जोति देखि वह जोती।

पाँति पाँति सब बैठे भाँति भाँति जेंवनार।
कनक पत्र तर धोती[१३] कनक पत्र पनवार॥[१४]

[२८४]

पहिलें भात परोसै आने[१]। जनहु कपूर[१] सुवास बसाने[२]।
झालर माँड[३] आए[४] घिउ पोए। ऊजर देखि पाप गए धोए।
लुचुई पूरि[५] सोहारीं परीं[६]। एक ताती औ सुठि कोंवरीं[७]।
पुनि बावन[८] परकार जो आए[९]। ना अस देखे न कबहूँ[१०] खाए।
खँडरा खांडि खँडोई[११] खंडी। परी एकोतर सै कठहंडी[१२]।[१३]

---

४. प्र० २ जरित सर, द्वि० ? जरे सब, द्वि० ६, तृ० १, ?, पं० १ पदारथ। ५. प्र० २ दम दम, तृ० १ मै मै। ६. तृ० ३ मुर्र। ७. प्र० २ भूले दीपक। ८. प्र० १ छपि गा चाँद सूर औ तारा। ९. प्र० १ द्वि० ७ जनु। १०. द्वि० ३ एक। ११. प्र० २, तृ० १ ना अस सूर न ससि निरमला, भा उदोत अस औरै करा। १२. प्र० १ ओनी। १३. द्वि० ४ तर दीने, द्वि० ५, दर दीने, तृ० १ तर धरिवै।
१४. प्र० १, द्वि० ७ मँडये केर सरहना छत्तिस कुरी सब जानि।
धनि राजा सिंघल कर जाकरि अँसि बरानि॥
प्र० २ करहिं रहस मंडप सब एकतीस कुरीं सब जाति।
धनि रानी सिंघल महँ जाकर असि बरिआनि॥

[२८४] १. द्वि० १ भान। २. तृ० ३ आनी, बसानीं (उर्दू मूल)। ३. प्र० १, द्वि० ४ माँडा, तृ० ३ माट। ४. तृ० २ अैस। ५. तृ० ३ पोरि (उर्दू मूल)। ६. प्र० २ परा सोहारि साथ तेहि बरी। ७. प्र० १ कोमल रस भरी, प्र० २ मम रस बरी, द्वि० ३ औ अनि कोंवरी। ८. तृ० ३ छप्पन। ९. द्वि० २ जेंवाए। १०. प्र० १ ना अस। ११. प्र० १ जो दुइ खंड। १२. प्र० १ दरा इकोतरसै कइ हंडी, द्वि० ४ परी अकोतरसो कंट मंडी। १३. प्र० २ मासु केर छप्पन जेवनारा, मृग मद बोरि धोउ महँ तरा।

पुनि मँधान आए बहु साँधे। दूध दही के मोरँडा[14] बाँधे।
पुनि जाउरि पछियाउरि आई[15]। दूध दही[16] का कहौं मिठाई।

जेँवन अधिक सुवासिक[17] मुख महँ परत बिलाइ।
सहस सवाद सो पावै[18] एक कवर[19] जौं खाइ॥

[२८५]

भै जेंवनार फिरा खँडवानी। फिरा[1] अरगजा कुंकुहँ बानी[2]।[3]
फिरे पान[4] बहुरा[5] सब कोई। लाग बियाहचार सब होई।
माँडौ सोने क गँगन[6] सँवारा। बंदनवार[7] लाग सब तारा[8]।
साजा पाट छत्र[9] कै छाहाँ। रतन, चौक पूरा तेहि माँहाँ।
कंचन[10] कलस नीर भरि धरा। इंद्र पास आनी[11] अपछरा।
गाँठि दुलह दुलहिनि कै जोरी। दुऔ जगत जो[12] जाइ न छोरी।
बेद भनहिं पंडित तेहि ठाँऊँ। कन्या तुला रासि लै नाऊँ[13]।

चाँद सुरुज दुइ निरमल दुवौ सँजोग अनूप।
सरुज चाँद सौं भूला चाँद सुरुज के रूप॥[14]

---

१४. प्र० २ मोहटा। १५. प्र० २ बहुरिह भीत खीर सँग आई। १६. प्र० १ दही छाँछ, प्र० २, द्वि० ४ घिरित खाट। १७. प्र० १ सुवा सरसु, द्वि० ७, तृ० ३ सुवासना। १८. प्र० २ पावै जवँन। १९. प्र० १ गराम।

*प्र० १, द्वि० २, ४, ५, ६, तृ० ३ में इसके अनंतर तीन अतिरिक्त छंद हैं। (देखिये परिशिष्ट)

[२८५] १. प्र० १ चला, प्र० २ द्वि० ७, तृ० १, भरा। २. प्र० २ पानी, द्वि० ७ सानी। ३. द्वि० १ जानहु भरा सुवासिक पानी। ४. द्वि० ३ फिर बुलान। ५. द्वि० १ पलटा। ६. द्वि० १ सोन क कनक, द्वि० ७ सौं मोने कै। ७. तृ० ३ बंदनेवार। ८. द्वि० ४, ५, तृ० २, पं० १ बारा। ९. तृ० ३ छात। १०. प० १ कनक जो। ११. द्वि० ३ आई। १२. प्र० १ सौं, प्र० २ महँ, तृ० ३ दिन्ह। १३. प्र० १ गोत उचार भए बहु भाऊ। १४. द्वि० ७ वोह वोही सौं भूली रहे एकि वोहि के रूप।

[२८६]

दुहूँ नाउँ[1] होइ गोत उचारा[2]। करहिं पदुमिनी मंगलचारा[3]।
चाँद के हाथ दीन्हि जैमाला। चाँद आनि सूरुज गियँ[4] घाला[5]।
सूरुज लीन्हि चाँद पहिराई[6]। हार नखत तरइन्ह सिउँ[7] पाई[8]।
पुनि धनि भरि अंजुलि जल लीन्हा। जोबन जरम कंत कहँ दीन्हा।
कंत लीन्ह दीन्हा धनि हाथाँ। जोरी गाँठि दुहूँ एक साथाँ।
चाँद सुरुज दुहुँ भाँवरि लेहीं[9]। नखत मोंति नेवछावरि देहीं[9]।
फिरहिं दुवौ सत फेर को टेकै। सातौ फेर गाँठि सो[10] एकै।

भै भाँवरि नेवछावरि राजचार[11] सब कीन्ह।
दाइज कहौं कहाँ लगि लिखि न जाइ तत[12] दीन्ह।

[२८७]

रतनसेनि जौं दाइज पावा। गंध्रपसेनि आइ कँठ लावा[1]।
मानुस चित आन कछु चिंता[2]। करै गोसाइँ न मन महँ चिंता[3]।
अब तुम्ह सिंघलदीप गोसाईं। हम सेवक आहहिं[4] सेवकाईं।
जस तुम्हार चितउर गढ़ देसू। तस तुम्ह इहाँ हमार नरेसू।

---

[२८६] १. प्र० १ नात, द्वि० १ लाग। २. प्र० २ सेंदुर लीन्ह कुँअरि सिर सारा, द्वि० ४, ६, पं० १ दुहू नाँउ लै गावहि नारा, द्वि० ३ दुहूँ नाउँ लै गावहिं नारी। ३. द्वि० ३ मंगलचारी। ४. तृ० ३ कें। ५. प्र० २ सूरुज लीन्ह चाँद सिर डाला। ६. तृ० ३ पहिराए,पाए (उर्दू मूल)। ७. प्र० १, २. द्वि० १, २, ३, ४, ५, ६, ७, तृ० २, ३ सौं। ८. प्र० २ सेंदुर चीर सोभा अति भाई। ९. प्र० १, २ लीन्हा,कीन्हा द्वि० १, ७ दीन्हा, कीन्हा। १०. प्र० १ पुनि, द्वि० १ तो। ११. प्र० १, द्वि० २ काज। १२. प्र० १ जन, द्वि० २, ३ अन।

[२८७] १. प्र० २ सिर नावा। २. प्र० १ चित आन कछु चिंता, प्र० २, द्वि० ६ चितै आन चित कोई, द्वि० ३ चित आन कछु कीना, द्वि० ५, तृ० २ चित आन कछु कोई। ३. प्र० १ आपन चिंता, द्वि० १, ३, तृ० ३ जो मन महँ चिंता, पं० १ न मन कर चिंता, प्र० २, द्वि० ५, ६, तृ० २ सोइ पै होई। ४. प्र० १, द्वि० १, ६, तृ० ३ कारनै, प्र० २ चाहिहा, द्वि० २ जोइहिं, द्वि० ४ आपुन, द्वि० ५ जो करहि, द्वि० ७ करहीं, तृ० १ जो रहहिं द्वि० ३, तृ० २, रहिहहिं।

जंबूदीप दूरि का काजू। सिंघलदीप करहु नित राजू।
रतनसेनि बिनवा कर जोरी। अस्तुति जोग जीभि नहिं मोरी।
तुम्ह गोसाइँ जेइँ[5] छार छड़ाई। कै मानुस[6] असि[7] दीन्हि बड़ाई।

जौं तुम्ह दीन्ह तौ[8] पावा जियन जरम[9] सुख भोग।
नाहिं तौ खेह पाय की हौं[10] न जानौं केहि जोग[11]॥

[२८८]

धौराहर पर दीन्हेउ बासू। सत खँड जहँवा[1] कबिलासू।
सखी सहस दुइ[2] सेवाँ आईं। जनहुँ चाँद सँग नखत तराईं।
होइ[3] मंडर ससि की चहुँ पासाँ। ससि सूरहि लै चढ़ी अकासाँ।
मिलीं जाइ ससि[4] की चहुँ पाहाँ[5]। सूर न चापै पावै छाँहाँ[5]।
चलहि सूर दिन अथवै जहाँ। ससि निरमल तैं[6] पावसि तहाँ।
गंध्रपसेनि धौराहर कीन्हा। दीन्ह न राजहि जोगिहि दीन्हा।
अब जोगी गुर[6] पाए सोई। उतरा जोग भसम गा धोई।

सात खंड धौराहर सातहुँ रँग नग लागु।
देखत गा कबिलासहि[7] दिस्टि पाप सब[8] भागु॥*

---

५. द्वि० १ मैं दयाल। ६. तृ० ३ अनि, द्वि० ६, पं १ अस। ७. द्वि० १ सो। ८. द्वि० ७ मरन। ९. प्र० १ नाहिं तौ खेह औ पाय कै, प्र० २ नाहिं तौ खेह पाइ कै टेनेउँ। १०. प्र० २ हैा दुखिया केहि जोग, प० २ हौं निजोग केहि जोग, द्वि० ४ हौं जोगी केहि जोग, द्वि० ३, ५ हैं न अहा तुम्ह जोग, द्वि० ७ हैां निरजोग केहि जोग।

* द्वि० ७ में इसके अनंतर एक अतिरिक्त छंद है। (देखिए परिशिष्ट)

[२८८] १. प्र० १, द्वि० ५, प० १ सातहु। २. प्र० २, द्वि० १, द्वि० ५, ६, प० १ मनो सहस दस, द्वि० ७ चेरीं सहसक। ३. प्र० १ भा, द्वि० १ भए। ४. प० २ सखिन्ह। ५. प्र० २ सखी चहुँ पाहाँ, छाहाँ, तृ० ३ मसि की चहुँ पाहीं, छाहीं। ६. द्वि० ३ पुर। ७. प्र० १ देखि जोगि कबिलास मईं, द्वि० १ देखत गो धौराहर। ८. द्वि० २ कै।

* द्वि० ३, ५, ६, तृ० ३ में इसके अनंतर दो अतिरिक्त छंद हैं, और द्वि० २ में उन्हीं में से एक है। (देखिए परिशिष्ट)

[२८९]

सात, खंड सातौ कविलासा। का बरनौं जस उत्तिम बासा[1]।
हीरा ईंटि कपूर गिलावा। मलयागिरि चंदन सब लावा[2]।
बिसुकर्में सैं हाथ[3] सँवारी। सात खंड सातौ चौपारी[4]।
चूना कीन्ह अवटि गज[5] मोंती। मोंतिहु चाहि अधिक सो[6] जोती।
अति निरमर नहिं जाइ बिसेखा। जस दरपन महँ दरसन[7] देखा।
भुँइ गच जानहु समुँद हिलोरा।[*]कनक खंभ जनु[8] रचेउ हिंडोरा।
रतन पदारथ होइ उजियारा। भूले दीपक औ मसियारा।

तहँ आछरि पदुमावति रतनसेनि के पास।
सातौ सरग हाथ जनु आए[9] औ सातौ कबिलास॥

[२९०]

पुनि तहँ[1] रतनसेनि पगु धारा। जहँ नव रतन सेज सोवनारा।
पुतरीं गढ़ि गढ़ि[2] खंभन्ह काढ़ीं। जनु सजीव सेवाँ सब ठाढ़ीं।[3]
काहू हाथ चंदन कै खोरी। कोइ सेंदुर की गहै[4] सिधोरी।
कोइ केसरि कुंकुहँ लै रही[5]। लावै अँग रहसि जनु चही[6]।
कोई गहैं कुंकुमा चोवा। दरसन आस[7] ठाढ़ि मुख जोवा।

---

[२८९] १. प्र० २ जग ऊपर अरावा। २. तृ० ३ औ नग लाइ मरग लै आवा। ३. प्र० १ आप। ४. प्र० १ तिन्हहि साथ चहुँ दिसि चौपारी, प्र० २ तेहि पर खंड खंड चौपारी। ५. प्र० १, २ कै। ६. तृ० १ तेहि, द्वि० २ बहि। ७. प्र० १ दरपन महँ, प्र० २, तृ० २, च० १, पं० १ दरसन मन, द्वि० ७ दरपन लै। ८. प्र० १, द्वि० १ सर, द्वि० ६ जुरि।

* प्र० १ में इसके अनंतर एक अतिरिक्त छंद है, द्वि० ३ में भी इसी प्रकार एक अतिरिक्त छंद है, किंतु वह प्र० १ वाले छंद से भिन्न है। (देखिए परिशिष्ट)

[२९०] १. द्वि० २ तहवाँ। २. तृ० ३ सब। ३. प्र० १ में इसके अनंतर की छंद की सभी पंक्तियाँ बाद वाले छंद की हैं। ४. द्वि० ३ लीन्हि। ५. प्र० २, द्वि० ७ रहीं। ६. प्र० २, द्वि० ७ लावै अगर हँसी जनु रहीं। ७. प्र० २, द्वि० २ दहुँ कब चाह, द्वि० ६, ७, कत धनि माँग, तृ० १ दरसन आइ।

कोइ बीरा कोइ लीन्हे बीरी। कोइ परिमल अति सुगँध समीरी।
काहू हाथ कस्तुरी मेदू। भाँतिन्ह भाँति[8] लाग तस[9] भेदू।

पाँतिन्ह पाँति चहूँ दिसि पूरी[10] सब सोंधे कर हाट।
माँझ रचा[11] इंद्रासन[12] पदुमावति कहँ पाट॥

[२९१]

सात खंड ऊपर[1] कबिलासू। तहँ सोवनारि[2] सेज सुखबासू।[3]
चारि खंभ[4] चारिहुँ दिसि धरे[5]। हीरा रतन पदारथ जरे[6]।[7]
मानिक दिया बरै औ[8] मोती। होइ अँजोर रैनि[9] तेहि जोती।[10]
ऊपर रात चँदोवा छावा[11]। औ भुइँ सुरँग बिछाउ बिछावा[11]।
तेहि महँ पलँग सेज सो डासी[12]। का कहँ अैसि रची सुखबासी[12]।
दुहुँ दिसि[13] गेंडुआ औ गलसुई। काँचे पाट भरी धुनि रूई।
फूलन्ह भरी अैस केहि जोगू[14]। को तेहि पौढ़ि मान सुख[15] भोगू।

---

८. प्र० २ कोइ सिंधु लिए। ९. द्वि० ६, पं० १ सब। १०. प्र० २, द्वि० १, २, ३, ५, पं० १ चहूँ दिसि, द्वि० ७ रही सम चहुँ दिसि। ११. द्वि० ३ धरा। १२. प्र० २ सिंघासन। १३. प्र० २, द्वि० ६ ७ केर।

[२९१] द्वि० ५ साजा, पं० १ सातौ। २. द्वि० ४, ६ तहँवाँ नारि। ३. प्र० २ (यथा. ४) नग झूलहिं सब भाँति अमोला, लहरैं उठहिं पवन जब डोला। ४. द्वि० १ खंड। ५. द्वि० १ खंड लागा। ६. लागा। ७. इस छंद की .१ तथा .२ के स्थान पर प्र० १ में पूर्व के छंद की १, .२ हैं, और द्वि० ७ में है . चारि खंभ साजे चौपारा, का बरनौं उत्तिम सोवनारा। खाँभन लगे पदारथ सोई, बरहिं दीप उजिआरा होई। ८. प्र० २ जरावा, द्वि० ४, तृ० २ जो औ। ९. प्र० २, द्वि० ६ रहा। १०. प्र० १, द्वि० ७ मसिअर दीप जोति कहँ ओती। जनहुँ बुझाइ देखि वह जोती। ११. प्र० २ ताना, भाव हाव नहिं जाइ बखाना। द्वि० ७ ताना, औ भुवपतो चोह सुरँग बिछाना। तृ० २ ताना, औ भुइँ रात बिछाउ बिछाना। १२. प्र० २ दासी, कीन्ह दसाव फूल बहु बासी। द्वि० २ सँवारी, काकर अैसि रची सुख बारी। १३. प्र० १ तापर, द्वि० ७ ऊपर। १४. प्र० २ बिधि अस जोग रचा जेहि जोगू। १५. द्वि० २ रस।

अति सुकुमारि सेज सो साजी[16] छुवै न पावै कोइ।
देखत नवै खिनुहि खिन पाँव धरत कस होइ॥

[२९२]

सूरुज[1] तपत सेज[2] सो पाई। गाँठि छोरि ससि[3] सखी छपाई।
अहै कुँवर हमरे अस चारू। आजु कुँवरि कर करब सिंगारू।
हरदि उतारि चढ़ाएब रंगू। तब निसि चाँद सुरुज[4] सौं[5] संगू।
जनु चात्रिक मुख दुति गौ[6] स्वाती[7]। राजहि चकचौंहट तेहि भाँती।
जोगि छरा जनु अछरिन्ह साथा। जोग हाथ दुति भएउ बेहाथा[8]।
वै चतुरा गुरु[10] लै उपसई। मंत्र अमोल[11] छीनि[12] लै गईं।
बैठेउ खोइ जरी औ बूटी। लाभ[13] न आव मूर भौ टूटी।

खाइ रहा ठग लाडू[14] तंत मंत बुधि[15] खोइ।
भा धौराहर वनखँड[16] ना हँसि आव न रोइ॥

[२९३]

अस तप करत गएउ दिन भारी[1]। चारि पहर बीते जुग चारी।

---

१६. प्र० १ सेज सो, प्र० ५, द्वि० ४, ६, द्वि० ७, ३, ५, तृ० २ सेज सो डासी, पं० १ सेज तहँ डासी।

[२९२] १. प्र० १, २, द्वि० ४ राजै। २. प्र० १, द्वि० ६ सेज जो, प्र० २ सेज जब, द्वि० १ चाँद तस। ३. प्र० १, २, द्वि० ४ छवि। ४. प्र० १ सूर। ५. तृ० १ दुहुँ। ६. प्र० २ पावै, द्वि० स्वाति गै, द्वि० ५, च० १ बूँद, द्वि० ३ हुत कर। ७. द्वि० २, प० १ साती। ८. प्र० १ मो, प्र० २, तृ० २ फेर, द्वि० २, ४, ५, च० १ फरि, तृ० १ अब। ९. द्वि० ७, ३, तृ० १, निहाथा। १०. प्र० १, द्वि० ७, पं० १ बै जानागुर, प्र० २ देइ चित्र गढ़, द्वि० ३ दै चित्र कर (उर्दू मूल)। ११. प्र० १ मूलमंत्र, प्र० २ मात्रामूल, द्वि० १ मातरमूल, तृ० ३ मंत्रामूल, द्वि० ४ मंत्रमूल, द्वि० ६ मंत्र अबोल। १२. प्र० २ सीध।। १३. प्र० १, २, द्वि० १, ५, ७, ३, तृ० १, च० १ मोल। १४. तृ० ३ ठक लादू (उर्दू मूल)। १५. प्र० २ बुधि सब। १६. द्वि० ७ अधवन।

[२९३] १. च० १ चारी।

परी साँझ पुनि सखी सो[२] आई। चाँद सो रहै न उई तराई[३]।[४]
पूछेन्हि[५] गुरू कहाँ[६] रे चेला। बिनु ससियर कस सूर अकेला।
धातु कमाइ सिखे तैं जोगी। अब कस जस निरधातु बियोगी।
कहाँ सो खोए बीरौ लोना। जेहि तें होइ रूप औ सोना।
कस हरतार पार नहिं पावा[७]। गंधक कहाँ[८] कुरकुटा खावा[९]।
कहाँ छपाए चाँद हमारा[१०]। जेहि बिनु जगत रैनि अंधिआरा।[११]

नैन कौड़िया हिय समुँद गुरू सो तेहि महँ[१२] जोति।
मन मरजिया न होइ परै[१३] हाथ न आवै मोंति ॥*

[२६४]

का बसाइ जौं गुरु अस बूझा। चकाबूह अभिमनु[१] जो जूझा[२]।
बिख जो देहि अंम्रित देखराई। तेहि रे निछोहिहिं को पति आई।
मरै सो जान होइ तन सूना[३]। पीर न जानै पीर बिहूना।
पार न पाव जो गंधक पिया। सो हरतार[४] कहौ किमि[५] जिया।

---

२. प्र० १ जो। ३. चाँद संग जो रही तराईं, द्वि० २ चाँद सो उवा और उईं तराईं, तृ० ३ चाद न उई सो रहीं तराईं, द्वि० ४ चाँद रहा उपनी जो तराईं, द्वि० ७ चाद सो रही तारा सब जाईं, द्वि० ५, तृ० १ चाँद सूर होइ उईं तराईं, द्वि० ३ चाँद सूर सँग उईं तराईं, तृ०, प० १ चाँद सो रहै न उईं तराईं, च० १ चाँद सुरुज होइ उईं तराईं। ४. प्र० २ (यथा. ७) काहे ठग मूरी अस खाए. खोए जानु घरा किछु पाए। ५. प्र० २ बिन बोइ। ६. प्र० १ आइ। ७. द्वि० १ मारा। ८. प्र० १, द्वि० ३ कया, प्र० २ भा, द्वि० २ बाजा, च० १ कैर। ९. तृ० ३ पावा, द्वि० ३ खारा। १०. द्वि० २ अस उजियारा। ११. द्वि० २ निसन कै सरीक भा डोलसि, सीस तराही बात न बोलसि। १२. प्र० १, २ तेहि। १३. द्वि० २ धँसै।

*द्वि० ४, ६, ख में इसके अनन्तर एक अतिरिक्त छंद है। (देखिये परिशिष्ट)

[२६४] १. द्वि० १, तृ० ३ अहिबर्न। २. प्र० २ ऊतर देइ जो कोई पूँछा, बोल अरथ बिनु जानहु छूँछा। ३. प्र० २ चूना। ४. प्र० २ हरियार। ५. प्र० २ कैव।

सिद्धि गोटिका जापहँ नाहीं[६]। कौनु धातु[७] पूँछहु तेहि पाहीं[८]।
अब तेहि बाजु राँग[९] भा डोलौं[१०]। होइ सार तब[११] बर[१२] कै बोलौं[१०]।
अभरक कै तन ऍगुर[१३] कीन्हा। सो तुम्ह फेरि अगिनि महँ[१४] दीन्हा।

मिलि जौं पिरीतम बिछुरै[१५] काया अगिनि जराइ।
कै सौं मिलै तन तपति[१६] बुझै कै मोहि[१७] मुएँ बुझाइ॥

[२६५]

सुनि कै बात सखीं सब हँसीं। जनहुँ रैनि तरईं[१] परगसीं।
अब सो चाँद गँगन महँ छपा। लालि[२] किहँ कत[३] पावसि तपा।
हमहुँ न जानहिं दहुँ सो कहाँ। करब खोज औ बिनउब तहाँ।
औ अस कहब आहि परदेसी। करु माया हत्या जनि लेसी।
पीर तुम्हार सुनत भा छोहू। देय मनाव होउ अब[४] ओहू।
तूँ जोगी तप करु मन[५] जथा। जोगिहि कवनि राज कै कथा[६]।
वह रानी जहवाँ सुख राजू। बारह अभरन करै सो साजू।

जोगी दिढ़ आसन करु अस्थिर धरु मन[७] ठाउँ।
जौं न सुनै तौ अब सुनु[८] बारह अभरन नाउँ॥

---

६. प्र० १, द्वि० ७, लीन्हेउ छोरी, तृ० ३ लीन्ह अजोरी, द्वि० १, ३, ५, ६ तृ० २, च० १ जानहिं नाहीं। ७. प्र० २ साधु। ८. प्र० १, द्वि० ७ तृ० २ अस पूँछहु मोरी। ९. प्र० १, द्वि० ७ निरँग। १०. द्वि० १ नारंग नवेला, लोला। ११. तृ० २ को अतिरिक्त सभी में तौ (हिंदी मूल)। १२. द्वि० ३ घर। १३. प्र० १, २ सो तुम्ह ईंगुर, तृ० ३ कै ते नेगुर (उर्दू मूल) १४. प्र० १, २, द्वि० २ मुख। १५. द्वि० ४ बिछुरि छपै। १६. प्र० १ द्वि० ३ तन तव, तृ० ३ अब तन, तृ० १, द्वि० ३, च० १ अस तव। १७. द्वि० २ एहि।

[२९५] १. प्र० १ जानहु निसि तरईं, तृ० ३ जानहु रैनि तारे, द्वि० ५ जनु घन महँ दामिनि। २. द्वि० ६, तृ० १ लागि, द्वि० ४, ७ लालों। ३. प्र० १ कहँ, तृ० ३ कस। ४. प्र० १ होउ जस, प्र० २ होउ अस, द्वि० १ अस करौ। ५. प्र० २ कौ मन। ६. प्र० २ तूँ जोगी फिरि करु तप जोगा, तुम कहँ कौन राज सुख भोगा। ७. प्र० १, २ कौ मन अस्थिर। ८. प्र० १, द्वि० ७ हम तोहि कहहिं आप सुनु, प्र० २ सुनै न कबहूँ सो सुनहु।

[२९६]

प्रथमहि मंजन होइ[1] सरीरू। पुनि पहिरै तन[2] चंदन चोरू।
साजि[3] माँग पुनि सेंदुर सारा। पुनि लिलाट रचि तिलक सँवारा।
पुनि अंजन दुँहु नैन करेई। पुनि कानन्ह कुंडल पहिरेई।
पुनि नासिक भल फूल अमोला। पुनि राता मुख खाइ तँमोला।
गियँ अभरन पहिरै जहँ ताईं। औ पहिरै कर कँगन कलाईं।
कटि छुद्रावलि अभरन[4] पूरा[5]। औ पायल पायन्ह भल चूरा।
बारह अभरन एइ बखाने। ते पहिरै बरही असथाने।

पुनि सोरह सिंगार जस[6] चारिहुँ जोग[7] कुलीन[8]।
दीरघ चारि चारि लघु चारि सुभर चहुँ खीन[9]॥

[२९७]

पदुमावति जो सँवरै[1] लीन्ही। पूनिव राति देयँ असि[2] कीन्ही।[3]
कै मंजन तब[4] किएहु अन्हानू। पहिरे चीर गएउ छपि भानू।
रचि पत्रावलि[5] माँग सेंदूरा[6]। भरि मौतिन्ह औ मानिक पूरा[6]।
चंदन चित्र भए बहु[7] भाँती। मेघ घटा जानहुँ बग पाँती।
सिरै जो[8] रतन माँग बैसारा। जानहुँ गँगन टूट लै[9] तारा।

---

[२९६] १. प्र० १, द्वि० १ धरै। २. प्र० १ औ पहिरै तन, तृ० ३ नव पहिरै पुनि। ३. प्र० २ सखी। ४. प्र० १. द्वि० ६ मवद होइ। ५. प्र० २ पहिरै लाक छुद घंटिका रे पूरा। ६. द्वि० १ सोरह सिंगार बनी धनि। ७. प्र०२ चौक (उर्दू मूल), तृ० ३ जुग (उर्दू मूल)। ८. द्वि० १ औ चारिउ जुग लीन्ह। ९. द्वि० १ जो कीन्ह।

[२९७] १. प्र० १ सेरै। २. प्र० १, २ सो, द्वि० २, ४, च० १ ससि। ३. द्वि० १ पुनि पदुमावनि कीन्ह सिगारा, पनिव रानि कीन्ह अवतारा। ४. प्र० १, २, द्वि० ४, च० १ तन, द्वि० १ तिय, द्वि० ६ मन। ५. द्वि० २ बनै कोद (औ ?), तृ० ३ रचि पुत्रावलि (उर्दू मूल)। ६. प्र० २ माँग सँवारी, पूरी, द्वि० २ माँग सेंदुरी, परी। ७. प्र० १, २, द्वि० ३ चीर भए बहु, द्वि० २ चीर भए दुहूँ, तृ० ३ चीर भए तेहि, द्वि० ४, ५, ६ चीर पहिरि बहु, च० १ चीर पहिरि भनि। ८. प्र० २ ससि, द्वि० ६ रचि द्वि० ७ सरि। ९. प्र० १, २, द्वि० ३, ४, ७, तृ० ?, च० १ टूट निसि, द्वि० १ छूट निसि।

तिलक लिलाट धरा तस डीठा। जनहुँ दुइज पर नखत[10] बईठा।[11]
मनि कुंडल खुँटिला[12] औ खूँटी। जानहुँ परी कचपची टूटी[13]।[14]

पहिरि जराऊ ठाढ़ि भौ बरनि न आवै[15] भाउ।
माँग क दरपन गँगन भा[16] तौ ससि तार[17]देखाउ[18]॥

[२६८]

चाँक नैन औ अंजन रेखा। खञ्जन जनहुँ सरद रितु देखा।
जब जब[1] हेरु फेरु[2] चखु मोरी। लुरै सरद[3] महँ[4] खंजन जोरी।
भौंहैं धनुक धनुक पै हारे। नैनन्ह साधि बान जनु[5] मारे।[6]
कनक फूल[7] नासिकं अति सोभा। ससि मुख आइ सूक[8] जनु लोभा।
सुरँग अधर औ लीन्ह[10] तँबोरा। सोहै पान फूल कर जोरा।
कुसुम गेंद अस सुरँग कपोला। तेहि पर अलक भुअंगिनि डोला।
तिल कपोल अलि पदुम बईठा। बेधा सोइ जो वह तिल डीठा।

---

१०. द्वि० १ सूक। ११. प्र० २ अवर मुख पनवीरी सोहहि। तैसे घन दामिनी मोहहि। १२. द्वि० २, ३, तृ० १ खौर खूँट, तृ० ३ लाग्र, द्वि० ५ खूँट औ। १३. प्र० १ सोपी। १४. प्र० २ मनि कुंडल पहिराए लोने, बीधीँ लवहि रहे दुहुँ कोने, द्वि० २, ७ रचि पत्रावलि पाटी पारी, औ रचि चीर बिचित्र सँवारी। १५. प्र० १ द्वि० ४ कहि न जाइ तस, द्वि० ७ सुंदर बरन मोहि के। १६ प्र० १, द्वि० ७ दरपन भयो गगन तस निमि, प्र० २ ताकि क दरपन गगन भा, द्वि० ४, ६ मानहु दरपन गगन भा। १७. प्र० १, द्वि० ७ नखत। १८. द्वि० ३ सीस तार दिखराव।

[२६८] १. द्वि० ४, च० १ जो जो (हिंदी मूल) २. प्र० २ निरखि हेर चखु, द्वि० १ चीर पहिरि करि। ३. प्र० २, तृ० १ चद। ४. प्र० १, द्वि० १ रितु, तृ० १ मुख। ५. प्र० २, द्वि० २ बान बिख, द्वि० ४ जानु चाहैं, च० १ बान जम। ६. द्वि० १ भौंहैं धनुक धना तो हारू, लोचन फेरि बान जस मारू ७. प्र० १, २, द्वि० ३, ४, ५, ६, ७, तृ० १, २, च० १ पं० १ करन फूल। ८. प्र० १, द्वि० ७ मदन। ९. तृ० ३, च० १, पं० १ सुआ। १०. प्र० २ भीनु।

देखि सिंगार अनूप बिधि[11] बिरह चला तब भागि।
कालकूट एइ ओनए[12] सब मोरें जिय लागि॥

[२९९]

का बरनौं अभरन उर[1] हारा[2]। ससि पहिरें नखतन्ह कै[3] मारा[4]।
चीर चारु औ चंदन चोला। हीर हार नग लाग अमोला[4]।
तिन्ह[5] झाँपी रोमावलि कारी। नागिनि रूप डसै हत्यारी।
कुच कंचुकी सिरीफल उभै[6]। हुलसहिं चहहिं कंत हिय चुभै[6]।
बाँहन्ह बाँहू टाड सलोनी। डोलत बाँह भाउ गति[7] लोनी।
नीवी[8] कँवल करी जनु बाँधी। बिसा लक जानहु दुइ आधी।
छुद्रघटि कटि कंचन तागा[9]। चले तौ उठै छतीसौ रागा।
चूरा पायल अनवट[10] बिछिया पायन्ह परे[11] बियोग[12]।
हिए लाइ टुक हम कहँ[13] समदहु तुम्ह जानहु अउ[14] भोगु[15]॥

[३००]

अस बारह सोरह धनि साजे। छाज न औरहि ओहि पै छाजे।

---

११. प्र० १ धनि, द्वि० १ सो, द्वि० २ सब। १२. प्र० १ काल कुष्ट मइ ओनइ रहे, द्वि० २ याल कष्ट वोह ओनवा, द्वि० १ वाल कष्ट अम ओनए, द्वि० २, ५, ६, वाल कष्ट बहु ओनवा, द्वि० ४ काल कष्ट सब ओनवा, द्वि० ७ वाल केश सब ओनइ रहे, तृ० २, च० १ काल कष्ट पइ ओनवा, द्वि० ३ काल कष्ट बहु औ तब।

[२९९] १. प्र० १, २, द्वि० ३, ४, ७, तृ० १, च० १, पं० १ औ। २. द्वि० १ हारू, चारू, तृ० ३ हारू, मारू। ३. तृ० ३ कर। ४. प्र० १ पहिरें सब सब नखत अमोला, द्वि० १ चीर हार सुठि नखत अमोला। ५. प्र० २, द्वि० २ तेहि, द्वि० ४ तेहीं। ६. प्र० १, तृ० ३ उभी, चुभी, द्वि० १ उभा, चुभा। ७. प्र० १, द्वि० ७ अनि। ८. प्र० १, द्वि० १, ५, ७, च० १, प० १ तरुनी, द्वि० ३, तृ० २ बिनवै, तृ० ३ करनी, द्वि० ४ तरिवन, तृ० १ तरईं, द्वि० ३ बरनी। ९. प्र० १, द्वि० ७ लागा। १०. तृ० २ अनवट। ११. प्र० १ परा, तृ० ३ परी (उर्दू मूल)। १२. तृ० २ बिरोग। १३. प्र० १ लारकै, प्र० २ लाइ मकुहम कहँ, द्वि० १ लाइ चहै हम कहँ, द्वि० २ लाइ हम कहँ, द्वि० ७ लाइ हम। १४. प्र० २ पइ, द्वि० ४, च० १ अब, द्वि० ५ अम। १५. द्वि० ४ तुम्ह जानहु भोग।

बिनवहि सखीं गहरु नहिं कीजै[1]। जेइँ जिउ दीन्ह ताहि जिउ दीजै।
सँवरि सेज धनि मन भौ संका। ठाढ़ि तिवानि टेकि कै लंका।
अनचिन्ह पिउ[2] काँपै मन माहाँ[3]। का मैं कहब गहब जब[4] बाँहाँ।[5]
बारि बएस[6] गौ प्रीति न जानी। तरुनी भइ मैमंत भुलानी[7]।
जोबन गरब कछु मैं नहिं चेता। नेहु न जानिउँ स्याम कि सेता[8]।
अब जौं कंत पूँछिहि सेइ[9] बाता। कस मुँह होइहि पीत[10] कि राता।

हौं सो बारि औ दुलहिनि पिउ सो तरुन औ तेज।
नहिं जानौं कस होइहि चढ़त कंत की सेज॥

[३०१]

सुनि धनि डर हिरदै तब ताईं। जौ लगि रहसि मिला नहिं गोसाईं।
कवन सो करी जो भँवर न राई[1]। डारि न टूटै फर[2] गरुआई।
माता पिता बियाही सोई। जरम नियाह पियहि[3] सो[4] होई।
भरि जमवार चहै जहँ रहा[5]। जाइ न मेंटा ताकर कहा।
ताकहँ बिलँबु न कीजै बारी। जो पिय आएसु सोइ[6] पियारी।
चलहु बेगि आएसु भा जैसें। कंत बोलावै रहिए कैसें।

---

[३००] १. द्वि० २ गरब नहिं कीजै, द्वि० ५, ६ न गहरु करीजै, पं० १ न कोइ करीजै।
२. द्वि० २ अरु जहँ, पिउ, तृ० ३ आँचरह पिउ (उर्दू मूल), च० १ अजहूँ बियोग। ३. द्वि० ३ नाउँ सुनत हौं दहुँ कम नाहाँ। ४. प्र० २ गहिहि जब, तृ० ४ गहिहि जौं, द्वि० ६ जो पकरिहि, च० १ गहब जौ। ५. द्वि० २ जबहि कंत हँसि पूँछिहि लेखा, स्रवन न सुना नैन नहिं देखा। ६. द्वि० २ बारह बरिस। ७. प्र० २ बौरानी। ८. प्र० २ औ नहिं जान्यो काकर सेवा, द्वि० ६ अबहूँ जान्यो स्याम कि सेता, च० १ तहाँ न जान्यों स्याम किसेता। ९. प्र० २, द्वि० ३ हँसि, तृ० ३ सब, द्वि० ५ मति। १०. तृ० ३ पेत (उर्दू मूल)।

[३०१] १. प्र० २ भँवर न बसाई, द्वि० १ भँवर पराई। २. द्वि० ४ टूट पुहुप। ३. प्र० १, द्वि० ५, ६, कंत, च० १ पै पिय। ४. द्वि० २, तृ० २ सँग। ५. प्र० २ चाहिअ अस रहा, तृ० ३ चहै सो चाहा, च० १ रहै जहँ चहा। ६. प्र० १ पीय।

मान न करु थोरा[7] करु लाहू[8]। मान करत रिस[9] मानै चाहू।
साजन लेइ पठाइया आएसु जेहि क अमेंट[10]।
तन मन जोबन साजि सब देइ[11] चलिअ[12] लै[13] भेंट[14]॥

[३०२]

पदुमिनि गवँन हंस गौ दूरी[1]। हस्ती[2] लाजि मेल सिर[3] धूरी।
बदन देखि घटि[4] चंद छपाना। दसन देखि छबि[5] बीजु लजाना[6]।
खंजन छपा देखि कै नैना। कोकिल छपा सुनत[7] मधु[8] बैना।
गीवँ देखि कै छपा मँजूरू। लंक देखि कै छपा सदूरू।
भौंह धनुक जो छपा अकारों[9]। बेनी बासुकि छपा पतारों[10]।
खरग छपा नासिका बिसेखी[11]। अंम्रित छपा अधर रस पेखी[11]।
भुजन[12] छपानि कँवल[13] पौनारी। जंघ[14] छपा केदली होइ बारी[15]।
आछरि रूप छपानीं जबहिं चली धनि साजि।
जावँत गरब गहीलि हुतिं[16] सबै छपीं मन लाजि॥

[३०३]

मिलीं तराईं सखी सयानीं। लिए सो चाँद सुरुज पहँ आनीं।[1]

---

[7]. प्र० १ मन करु थार दिय, प्र० २ मान न कर थारा, द्वि० २, ३, तृ० ३, च० १, पं० १ मान न वह धारा, द्वि० २ मान छाडि थोरा। [8]. प्र० २ लोहँ, लाहँ। [9]. तृ० ३ रस। [10]. प्र० २ रोहि कह भेट, *द्वि० १, २ जाए न भेट, तृ० १ जाइ अभेट।* [11]. *प्र० २ लेइ।* [12]. प्र० १ चली देन। [13]. द्वि० ३, ५ पिय। [14]. च० १ पुनि हम मिलहिं कि ना मिलहिं लेहु सहेलिहु भेंटि।

[३०२] [1]. द्वि० २ चोरी। [2]. प्र० २ कुंजर। [3]. द्वि० २ चढ़ावै। [4]. प्र० २ छबि, द्वि० २, तृ० २ घन, तृ० ३ घट (उर्दू मूल)। [5]. प्र० २ छटा, द्वि० २, तृ० २ छपि, द्वि० ३, ४, ५, ६, तृ० ३, च० १, पं० १ कै। [6]. प्र० १, द्वि० ७ लुकाना, पं० १ बिलाना। [7]. प्र० २, द्वि० ७ देखि। [8]. प्र० २, च० १, पं० १ वह, प्र० २, द्वि० ७ सुर। [9]. द्वि० ५ देखि जो धनुक छपाना, बासुकि छपा लजाना। [10]. प्र० १ छपाना नासिक देखी। [11]. तृ० ३ बिसेखे, पेखे, प्र० २ बिसेखी, देखी (उर्दू मूल)। [12]. द्वि० ४, ५ पहुँचन्ह। [13]. तृ० २ पावन। [14]. प्र० २ खंजन। [15]. प्र० १ केदलि छपा जघ देखि बारी। [16]. प्र० १, द्वि० १, च० १ गहीली, द्वि० ४, पं० १ गहीलि जग।

[३०३] [1]. प्र० १, द्वि० ७ लै जो चलीं सखि नखत तराईं, लिये सो चाँद सुरुज पहँ आईं; प्र० २, द्वि० ६ मिलि सो गौनी सखी तराईं, लिए चाँद सूर पहँ आईं:

पारस रूप चाँद देखराई[२]। देखत सुरुज गएउ मुरुझाई।
सोरह करा दिस्टि ससि कीन्ही। सहसौ करा सुरुज कै लीन्ही।
भा रवि अस्त तराइन हँसें। सुरुज न रहा चाँद परगसे[३]।
जोगी आहि न भोगी होई[४]। खाइ कुरकुटा गा परि[५] सोई।
पदुमावति निरमलि जसि गंगा। तोहि[६] जो कित[७] जोगी भिखमंगा।
अबहुँ[८] जगावहिं चेला जागू। आवा गुरू पाय उठि लागू[९]।

बोलहिं सबद सहेलीं कान लागि गहि माँथ।
गोरख आइ ठाढ़ भा उठु रे चेला नाथ[१०]॥

[३०४]

गोरख सबद सुद्ध[१] भा राजा। रामा सुनि[२] रावन होइ गाजा।[३]
गही[४] बाँह धनि सेजवाँ[५] आनी। आँचर ओट रही छपि रानी।
सकुचै डरै मुरै मन नारी[६]। गहु न बाँह रे जोगि भिखारी।
ओहट होहि जोगि तोरि चेरी[७]। आवै बास कुरुकुटा केरी।
देखि भभूति छूति मोहि लागा। काँपै चाँद राहु सौं भागा।
जोगी तोरि तपसी कै काया। लागी चहै अंग मोहि छाया।
बार भिखारि न माँगसि भीखा। माँगै आइ सरग चढ़ि सीखा।

च० १ आई दरसन कै सखी मयानी, लिए सो चाँद सुरुज पहँ आनी। २. प्र० १, २ जो आईं। ३. प्र० १, २, द्वि० २, ४, ६, ७, च० १ के गसे, द्वि० १ जब गसे। ४. द्वि० ७, च० १ वोई। ५. प्र० २ जरि। ६. प्र १, द्वि० २, ४ नाहिं, प्र० २, द्वि० ३, तृ० १ नाहीं, द्वि० ५ तेहिं। ७. प्र० १, तृ० ३ जोग, द्वि० १ लायक। ८. प्र० १ अजहुँ, द्वि० १ आइ। ९. प्र० १, च० १ जागइ, लागइ, द्वि० ४ जागहि, लागहि। १०. प्र० १ उठहु न चेला नाथ, प्र० २ उठहु चेला नाथ, तृ० ३ उठु रे जोगी नाथ, द्वि० ७ उतर दे चेला नाथ।

[३०४] १. तृ० ३ सिध। २. प्र० १, द्वि० ७ राम सुना। ३. प्र० २ पुनि अस सबद अमिअ भ्रम लागा, निद्रा छुटी सनि भ्रम जागा ४. तृ० २ गहिकै। ५. प्र० १ सेजहि, प्र० २ सेज्या, द्वि० १, ७ सेज सो, द्वि० २, ३ सेजियाँ, तृ० ३ सेज औ, तृ० २ सेज धनि, च० १, पं० १ सेज पर। ६. द्वि० २ सकुचति डरइ मुरइ, द्वि० ७ सकुची रही मारि। ७. प्र० १ गहि बाँह न मोरी। ८. प्र० १ होइ सो।

जोगि भिखारी कोई[८] मँदिर न पैसै[९] पार[१०]।
माँगि लेहि किछु भिख्या जाइ ठाढ़ होहि बार ॥

[३०५]

अनु तुम्ह कारन पेम पियारी। राज छाँड़ि कै भएउँ[१] भिखारी।[२]
नेह तुम्हार जो हिए समाना। चितउर सौं न सुमिरेउँ आना।
जस मालति कह भँवर वियोगी। चढ़ा वियोग[३] चलेउँ होइ जोगी।
भएउँ भिखारि नारि तुम्ह[४] लागी। दीप पतँग होइ अँगएउँ आगी।
भँवर खोजि जस पावै केवा[५]। तुम्ह कारन[६] मैं जिव पर छेवा[६]।
एक बार मरि मिलै जौं आई। दोसरि बार मरै कत जाई।
कत तेहि मीचु जो मरि कै जिया। भा अम्मर[७] मिलि कै[८] मधु पिया।

भँवर जो पावै कँवल कहँ बहु आरति बहु आस।
भँवर होइ नेवछावरि कँवल देइ हँसि बास ॥

[३०६]

अपने मुँह न बड़ाई छाजा। जोगी कतहुँ होहिं नहि[१] राजा।
हौं रानी[२] तूँ जोगि भिखारी। जोगिहि भोगिहि कौन[३] चिन्हारी।
जोगी सबै छंद अस[४] खेला। तूँ भिखारि[५] केहि माहँ अकेला।
पवन बाँधि उपसवहिं अकासाँ। मनसहिं जहाँ जाहिं तेहि पासाँ।
तैं तेहि भाँति सिस्टि यह[६] छरी। एहि भेस रावन सिय हरी।

प्र० १, ३, द्वि० ७, पं १ पैठ। १०. तृ० २, ३, च० १, प० १ द्वार।

[३०५] १. प्र० १ भा बिरह, प्र० २, द्वि० ६ भा जोगि। २. द्वि० १ अनु मैं तोहि निन पेम सो खेला, राज छाँड़ि कै धरि गियँ मेला। ३. द्वि० ३ तस तोहि लागि। ४. प्र० २ तुम्हहि धनि। ५. द्वि० ४ कारन। ६. प्र० १ जीव परेवा, प्र० २ जीव पछेवा। ७. द्वि० २ भँवर वगन्त। ८. प्र० १ अमिन, द्वि० ६ सो अमर।

[३०६] १. प्र० १ होत हहिं। २. तृ० ३ राना। ३. द्वि० -, तृ० ३ कैसि। ४. प्र० १ पै। ५. तृ० १ रे जोगि। ६. प्र० १ एव।

भँवरहि मींचु नियर जब[7] आवा। चंपा[8] बास लेइ कहँ धावा।
दीपक जोति देखि उजियारी। आइ पतँग[9] होइ परा भिखारी।

रैनि जो देखिअ चंद मुख[10] ससि[11] तन होइ अनूप[12]।
तहूँ जोगि तस भूला मैं[13] राजा के रूप[14]॥

[३०७]

अनु धनि तूँ ससिअर निसि माहाँ। हौं दिनअर तेहि की तूँ छाहाँ।
चाँदहि कहाँ जोति औ करा। सुरुज कि जोति चाँद निरमरा।
भँवर बास चंपा नहिं लेई। मालति जहां तहाँ[1] जिउ देई।
तुम्ह निति भएउँ पतँग[2] कै करा। सिंघल दीप आइ उड़ि परा।
सेएउँ महादेव कर बारू। तजा अन्न भा पवन अधारू।
तुम्ह सौं प्रीति गाँठि हौं जोरी। कटै न काटे छुटै न छोरी।
सीय भीख रावन कहँ दीन्ही[3]। तूँ असि निठुर[4] अँतरपट कीन्ही।

रंग तुम्हारे रातेउँ चढ़ेउँ गँगन होइ सूर।
जहँ ससि सीतल कहँ तपनि[5] मन इंछा धनि[6] पूर॥

[३०८]

जोगि भिखारि करसि बहु बाता। कहेसि रंग देखौं नहिं राता।
कापर रँगे रंग नहिं होई। हिएँ औटि उपनै रंग सोई[1]।
चाँद के रंग सुरुज जौं राता। देखिअ जगत साँझ परभाता।
दगध बिरह निति[2] होइ अँगारू। ओहि की आँच धिकै संसारू।

---

७. प्र० १ के अतिरिक्त सभी में 'जौ' (हिंदी मूल)। ८. द्वि० २, ३, ४, ५, ६ केतकि। ९. प्र० १, द्वि० ७, तृ० ३ फनिग। १०. प्र० २ दिनहि जो देखिअ सूर मुख। ११. द्वि० १ ६ सिसु। १२. द्वि० १ अलोप, के ओप। १३. च० २, पं० १ होइ।

[३०७] १. प्र० १ अब। २. प्र० १, तृ० ३ पनिग। ३. प्र० २ नल बिवोग दामावति कीन्हा। ४. प्र० १ तुम्ह का जानि, प्र० २ तुम्ह धनि कहा, द्वि० १ तेहि निन आनि। ५. प्र० १, च० १ कहँ तपइ, द्वि० १ पाछे, द्वि० ४ कहँ तपौं। ६. तृ० १ अनि।

[३०८] तृ० १, २ उपनै औटि रंग पुनि सोई। २. प्र० २ तस।

जौं मँजीठ औटै औ पचा[3]। सो रँग जरम न डोलै रँचा[3]।
जरै बिरह जेउँ दीपक बाती। भीतर जरै उपर[4] होइ राती[5]।
जर परास[6] कोइला कै भेसू। तब फूलै राता होइ टेसू।

पान सुपारी खैर दुहुँ[7] मेरै[8] करै चक चून।
तब[9] लगि रँग न राचै जब[10] लगि होइ न चून॥

[३०६]

धनिश्रा का[1] सुरग का चूना। जेहि तन नेह[2] दगध तेहि दूना।
हौं तुम्ह नेहँ पियर भा पानू। पेंड़ी हुत[3] सुनि रासि बखानू।
सुनि तुम्हार ससार बड़ौना। जोग लीन्ह तन कीन्ह गड़ौना।
करमँज किंगरी लै बैरागी। नेवती भएउँ[4] बिरह की आगी।
फेरि फेरि तन कीन्ह भुँजौना। औटि रकत रँग हिरदै औना।
सूखि सुपारी भा[5] मन मारा। सिर सरौत जनु करवत सारा।
हाड़ चून भै बिरह जो डहा। सो पै जान दगध इमि सहा।

कै जानै सो बापुरा[6] जेहि दुख औस सरीर[7]।
रकत पियासे जे हहिं[8] का जानहिं पर पीर॥

[३१०]

जोगिन्ह बहुतै छंद[1] ओराहीं[2]। बूँद सेवातिहि जैस पराहीं[3]।

---

३. द्वि० ४ बहु आँच, राता, च० १ बहु आँचा, रचा। ४. तृ० ३ ऊपर जरइ भितर होइ। ५. द्वि० १ साँती। ६. द्वि० १ जौं पहार, तृ० १ चारि बरिसँ। ७. द्वि० ३ तेहिं ८. द्वि० ७, तृ० १ फोरि। ९. तृ० ३, च० १ रातै, द्वि० ७ रात तेहि। १०. प्र० १, द्वि० ४, ५, तृ० १ तौ, जौ (हिंदी मूल)।

[३०९] १. प्र० १ का धनि पान, द्वि० ६ पै धनि का, तृ० २ सुनु धनि का, पं० १ अनु धनि का। २. प्र० २ देह, तृ० ३ होइ। ३. प्र० १, २ पेंड़ि हुते। ४. प्र० १ नौ तन होइ, तृ० ३ ज्योति न होइ, तृ० १ नेवती होहिं। ५. च० १ धार। ६. प्र० १, २, पं० १ पीर यह, द्वि० २ मो पीरा, द्वि० ४ भो पीरा। ७. द्वि० १ मो जानै वह पिउरा जेहि कहि परी सरीर। ८. तृ० १ कतहूँ।

[३१०] १. द्वि० ६ फंद। २. द्वि० ४ सो छल छंद भोराहीं, द्वि० ५, च० १ भनै छंद औरे आहीं।

परै समुंद्र खार जल ओहीं। परै सीप मुँह मोंती होहीं।
परै पुहमी पर होइ कचूरू। परै केदली महँ होइ कपूरू।
परै मेरु पर अंब्रित होई। परै नाग मुख बिस होइ सोई।
जोगी भँवर न थिर ये दोऊ। केहिं आपन भए कहै सो कोऊ।
एक ठाँउ वै थिर न रहाहीं। भखु[४] लै खेलि अनत कहँ जाहीं।
होइ गिरिही पुनि होहिं उदासी। अंत काल दुनहूँ बिसवासी।

तासौं नेह जो दिढ़ करै[५] थिर[६] आछहिं[७] सहदेस[८]।
जोगी भँवर भिखारी इन्ह तें दूरि अदेस[९]॥

[३११]

थल थल नग न होइ जेहि जोती[१]। जल जल सीप न उपनै मोंती।
बन बन बिरिख चँदन नहिं होई। तन तन बिरह न उपजै सोई।
जेहि उपना सो औंटि मरि[२] गएऊ। जरम निनार न कबहूँ[३] भएऊ।
जल अंबुज रबि रहै[४] अकासा। प्रीति तो जानहुँ[५] एकहि पासा[६]।
जोगी भँवर जो थिर न रहाहीं। जेहि खोजहिं तेहि पावहिं नाहीं[७]।
मैं तुइ पाए[८] आपन जीऊ। छाँड़ि सेवानिहिं[९] जाइ न पीऊ।
भँवर मालती मिलै जौं आई। सो तजि आन फूल कत जाई।

---

३. तृ० २ हो वाहीं। ४. प्र० २, द्वि० ४, ५, ६, च० १, पं० १ रस। ५. द्वि० २ जो थिर रहैं। ६. द्वि० २ श्री। ७. प्र० १ जो आछहिं, प्र० २ रहहिं जो एक। ८. प्र० २ एक देस। ९. तृ० ३ रहहिं ते देस अदेस, द्वि० ४ दुरि रहहिं आदेस, द्वि० ६ दुरि आहि आदेस, द्वि० ५ दूरहि रहहिं अदेस, द्वि० ३ दुरहिं ते अदेस।

[३११] १. प्र० १ न कहँ होहिं नहिं जोगी, प्र० २ नगर होहिं तिन्ह जोगी। २. प्र० १, द्वि० ६ मिलि। ३. प्र० २ रकत बहु, द्वि० ४, ५ न कौहू। ४. द्वि० १ तपै, च० १ उवै। ५. द्वि० १ जौ पिय प्रीति तौ। ६. प्र० १, द्वि० ६ जौं पिरीति जानहु एक पासा। ७. प्र० १ जहाँ सो खोजिअ पाइअ नाहीं। ८. प्र० १ जो पावा, द्वि० ७, तृ० ३ तुम्ह पाइ जो। ९. प्र० १ आनन, प्र० २ आपन।

चंपा प्रीति जो बेलि दि[10] दिन दिन आगरि बास।
गरि गुरि आपु हेराइ जौं गुपहु[11] न छाँड़ै पास॥

[३१२]

ऐसें राजकुँवर नहिं मानौं। खेलु सारि पाँसा तौ जानौं।
कच्चे बारह बार फिरासी। पक्के तौ फिरि[1] थिर न रहासी।
रहैं न आठ अठारह भाखा। सोरह[2] सतरह रहैं सो[3] राखा।
सतएँ ढरैं[4] सो खेलनिहारा[5]। ढारु इग्यारह[6] जासि[7] न मारा।
तूँ लीन्हें मन आछसि[8] दुवा। औ जुग सारि[9]चहसि पुनि छुवा।
हौं नव[10] नेह रचौं[11] तोहि पाहाँ। दसौं दाँव तोरे हिय माहाँ।
पुनि[12] चौपर[13] खेलौं कै हिया। जो तिरहेल रहै सो तिया।

जेहि मिलि बिछुरन औ[14] तपनि अंत तंत तेहि नित्त[15]।
तेहि मिलि बिछुरन[16] को सहै बरु बिनु मिलें निचिंत॥

[३१३]

बोलौं[1] बचन नारि सुनु साँचा। पुरुख क बोल सपत औ बाचा।
यह मन तोहि अस लावा नारी। दिन तोहि पास और निसि सारी[2]।

---

१०. प्र० २ बरन जो तेहि लहै, द्वि० १ बास जो लेत है, द्वि० ४, च० १ प्रीति जो तेल है। ११. प्र० १ तउब, द्वि० १ अरम, द्वि० ७, तृ० ३ तुम्ह पाइ जो।

[३१२] १. प्र० १ पो पावी फिर, प्र० २, च० १, पं० १ पके पैंत पर, द्वि० २, ३, ७, तृ० ३ पाके पर पै, तृ० १ पके तीन पर, द्वि० १ पक्के पौ परि। २. च० १ सर। ३. प्र० २ न। ४. प्र० १ रहै। ५. द्वि० २ खेल सो हारौं। ६. च० १ अठारह। ७. प्र० २ मरै। ८. प्र० १ खेलसि। ९. प्र० १, २ चारि। १०. द्वि० २, ५, ६, च० १ तौ। ११. द्वि० १ चहौं। १२. द्वि० १ तौ, द्वि० ४ सव। १३. तृ० ३ चौसर (उर्दू मूल)। १४. च० १ मिलि। १५. प्र० १ अंत ताहि ते नित, प्र० २ औ तउ पनी होये नित, द्वि० २, ३, ५, तृ० १, २, पं० १ अंत तंत तेहि संत, च० १ अंत तंत तेहि मिंत। १६. प्र० १, द्वि० २, ३, ५, तृ० १, च० १ गंजन।

[३१३] १. प्र० १, तृ० ३ बोलै। २. प्र० १ रैनि औ सारी।

पौ[3] परि बारह बार मनावौं। सिर सौं खेलि पैंत जिउ लावौं।
मारि[4]सारि सहि[5]हौं[6]अस राँचा[7]। तेहि विच कोठा बोल न[8]बाँचा।[9]
पाकि गहे पै[10] आस करीता[11]। हौं जीतेहुँ[12] हारा तुम्ह जीता।
मिलि कै जुग नहि होउँ[13]निनारा। कहाँ बीच दुतिया देनिहारा।
अब जिउ जरम जरम तोहि पासा। किएउँ[14]जोग आएउँ कबिलासा।

जाकर जीउ बसै जेहि सेतें तेहि पुनि ताकरि टेक।
कनक सोहाग न बिछुरै अवटि मिलैं जौं एक॥[15]

[३१४]

बिहँसी धनि सुनि कै सत[1] बाता। निस्चौं तूँ मोरे रँग राता।
निस्चै भँवर कँवल रस रसा। जो जेहि मन[2]सो तेहि मन[2]बसा।
जब हीरामनि भएउ सदेसी[3]। तोहि निति[4]मँडप गइउँ परदेसी।
तोर रूप देखेउँ सुठि लोना। जनु जोगी तूँ मेलेसि टोना।
सिद्ध गोटिका दिस्टि कमाई। पारैं मेलि रूप बैसाई।
भुगुति[5] देइ कहँ मैं तुहिं डीठा। कवल नयन होइ भँवर बईठा[6]।
नैन पुहुप तूँ अलि भा सोभी। रहा बेधि उड़ि सकेसि[7]न लोभी।[8]

---

3 द्वि० २, तृ० १ पै, तृ० ३ पाँ। ४. द्वि० ५ परि। ५. च० १ तुहिं। ६. प्र० १ चाहौं। ७. द्वि० ७ सांचा। ८. च० १ तुहिं हौं। ९. प्र० २ हौं अब चौक पंजरी बाँची, तुम्ह बिच काठे अबहि सो काँची, द्वि० ४, ६ भल भाँती मै रचनी राँचे, मारेसि तुहि सबै करि काँचे। १०. तृ० ३ गहउ पिय (उर्दू मूल), द्वि० ४ उठाएउँ, तृ० २, च० १, पं० १ कहँ पैं, द्वि० ६ उठातूँ। ११. द्वि० ४, ६ असि करि मीना। १२. द्वि० ६ आछेउँ। १३. प्र० १ होइ। १४. प्र० १, द्वि० ४, ६ चढ़ेउँ। १५. प्र० २ में यह दोहा नहीं है।

[३१४] १. प्र० १ रस, द्वि० ५. तृ० २ सत्र। २. प्र० १ मइँ। 3. प्र० १ भएउ असदेसी, तृ० ३ भै सदेसी, द्वि० ७ भौ संदेसो। ४. प्र० १ लगि, द्वि० १ मन। ५. द्वि० २ भीख। ६. तृ० २ चित समाइ होइ चित्र पईठा। ७. प्र० १, तृ० २ तस उठेसि, द्वि० ३, ४, ७, तृ० १, च० १, प० १ तस उडेसि। ८. प्र० २ में पिछले छंद के दोहे के साथ ही इस छद की भी प्रथम ७ पंक्तियाँ नहीं हैं, किंतु इनके बिना यह नहीं ज्ञात होता कि रतनसेन की बात का पद्मावती ने किसप्रकार स्वागत किया, इसलिए इन पंक्तियों की अनिवार्यता प्रसंग में प्रकट है।

जाकरि आस होइ असि जा कहँ[9] तेहि पुनि ताकरि आस[10] ।
भँवर जो दादा कँवल कहँ कस न पाव रस बास ।।

[३१५]

कवनि मोहनी दहुँ हुति तोहीं । जो तोहि बिथा सो उपनी मोहीं ।
बिनु जल मीन तपी[1] तस जीऊ । चात्रिक भइउ[2] कहत पिउ[3] पिऊ ।
जरिउँ बिरह जस दीपक बाती । पँथ जोवत भइउँ सीप सेवाती ।
डारि डारि जेउँ कोइल भई । भइउँ चकोरि नींद निसि[4] गई ।
मोरें पेम पेम तोहि भएऊ । राता हेम अगिनि जो[5] तएऊ ।
हीरा दिपै जौं सुरुज उदं.ती । नाहिं तें कित पाहन कहँ[6] जोती ।
रवि परगासें कँवल बिगासा । नाहिं त कित मधुकर कित बासा ।

तासौं कवन अँतरपट[7] जो अस प्रीतम पीउ ।
नेवछावरि गइ[8] आप हौं[9] तन मन जोबन जीउ ।।

[३१६]

कहि सत[1] भाउ भएउ[2] कँठलागू । जनु कंचन मों मिला सोहागू ।[3]
चौरासी आसन बर[4] जोगी । खट[5]रस बिंदुक[6] चतुर सो[7] भोगी ।

---

९. प्र० १ आस होइ जेहि सेंती, प्र० २ जीव बसै जहाँ, तृ० ३ आस होइ अस।
१०. द्वि० ६ पिउ निउ चातक जेउँ रही मरो छनी तेहि आस ।

[३१५] १. तृ० ३ भएउ । २. द्वि० २ भूल । ३. प्र० १ पुकारत । ४. द्वि० २ तस । ५. प्र० २, द्वि० ४ जेउँ, द्वि० २ जनु । ६. द्वि० ६, पं० १ नित । ७. द्वि० २ तासों अँतर पट चाहे । ८. प्र० १ होइ, द्वि० २, ३, ५, तृ० २, ३, पं० १ कै (उर्दू मूल), द्वि० ६, तृ० १ करि । ९. प्र० २, तृ० ३ आपौं (उर्दू मूल), द्वि० १ भई हौं, द्वि० ५ भइऊँ ।

*द्वि० २, ४, ५, ६, तृ० ३ में इसके अनंतर तीन छंद अतिरिक्त हैं । (देखिए परिशिष्ट) ।

[३१६] १. द्वि० १. ५ सब । २. द्वि० ७ उभै । ३. प्र० २, च० १ रतनसेन सो पंन सुजानू, षटरस बिंदक सो रति भानू । (यह पंक्ति द्वि० ४, ५, ६ में आये हुए उपर्युक्त अतिरिक्त छंद में भी है) ।

कुसुम माल असि मालति पाई। जनु चंपा गहि डार ओनाई।
करी बेधि[6] जनु भँवर भुलाना[7]। हना राहु अर्जुन के बाना।
कंचन करी चढ़ी[10] नग जोती। बरमा सौं बेधा जनु[11] मोती।
नारँग जानु कीर नख[12] देई। अधर आँबु[13] रस जानहुँ लेई।
कौतुक[14] केलि करहिं[15] दुख नंसा। कुंदहि[16] कुरुलहिं जनु सर[17] हंसा[18]।

रही बसाइ[19] बासना चोवा चंदन मेद।
जो असि[20] पदुमिनि रावै[21] सो जानै यह भेद॥

[३१७]

चतुर नारि चित अधिक चिहूटै[1]। जहाँ पेम बाँधै किमि छूटै[1]।
किरिरा[3] काम केलि मनुहारी। किरिरा[3] जेहिं नहिं सो न सुनारी[4]।
किरिरा[3] होइ कंत कर तोखू[5]। किरिरा[3] किहें पाव धनि मोखू।
जेहिं किरिरा[3] सो सोहाग सोहागी। चंदन जैस स्यामि[6] कँठ लागी।

---

४. प्र० १, द्वि० ४, ७, च० १ आसन पर, तृ० ३ पर आसन, द्वि० ३, पं० १ बर आसन। ५. च० १ सबै। ६. द्वि० २ बिंद, द्वि० ५, च० १ रसिक, तृ० २ भोग। ७. द्वि० २, ५ चतुर रस, तृ० ३ रत रस। ८. प्र० १ तस बेधा, द्वि० ७ भी बेध। ९. द्वि० ३, ७, तृ० १, पं० १ लोभाना। १०. च० १ रँग। ११. प्र० १ गज। १२. द्वि० २ रस, द्वि० ३ सुख। १३. तृ० ३ अंबु (उर्दू मूल), द्वि० ७ अधर। १४. प्र० १, द्वि० २, ४, ७ कौतर, द्वि० ५ कुँवरहिं, द्वि० ३ कौवल, पं० १ केला। १५. प्र० १ काम। १६. द्वि० ७ काँदहिं। १७. प्र० १ जानहु। १८. द्वि० १ मनुहारी, बैठ भँवर कुच नारँग बारी। १९. प्र० १ मधु मंडप जो, प्र० २ मद मंडप जो, द्वि० ७ भइ जो बसाइ। २०. प्र० १ ऐसी। २१. प्र० १ रवै।

*द्वि० ४, ५ में इसके अनंतर एक छंद अतिरिक्त है, द्वि० ६ में वही इस छंद के पूर्व है।

[३१७] १. तृ० ३ चिहूटी, छूटी (उर्दू मूल)। २. तृ० २ बाढ़ै, पं० १ फादै। ३. प्र० २, तृ० ३ किलिला, द्वि० १, २, ३, ४, ५, ६, तृ० १, २, च० १, पं० १ किरिला (या कुरला) द्वि० ७ क्रीड़ा। ४. प्र० १ जहाँ न सोवनहारी, द्वि० ५, तृ० ३, पं० १ नाहिं सुनि सोवनारी, द्वि० ७ जेहि नै हुने सुनारी, च० १ जहँ तहँ सो न सुनारी। ५. द्वि० ३, च० १ पोखू। ६. प्र० १ कंठ।

गोदि गेंद कै[7] जानहुँ लई। गेंदहुँ चाहि धनि कोंवरि[8] भई।
दारिउँ दाख येल रस चाखा[9]। पिउ के खेल धनि जीवन राखा।
भैन सोहावनि कोकिल बोली। भएउ बसंत करी मुख खोली।

पिउ पिउ करत जीभ धनि सूखी बोली चात्रिक भाँति।
परी सो बूँद सीप जनु मोंती हिएँ परी[10] सुख[11] सांति ॥

[३१८]

कहौं[1] जूझि जस रावन रामा। सेज बिधंसि[2] बिरह[3] संग्रामा।
लीन्ह लंक कंचन गढ़ टूटा। कीन्ह सिंगार अहा सब लूटा।
औ जोबन मैमंत बिधंसा। बिचला बिरह जीव लै नंसा।
लूटे अंग अंग[4] सब भेसा। छूटी मंग[5] भंग भे[6] केसा।
कंचुकि चूर चूर भै ताने। टूटे हार मोंति छहराने[7]।
बारी[8] टाड सलोनी टूटीं। बाँहू कँगन कलाई[9] फूटीं।
चंदन अंग छूट तस भेंटी। बेसरि टूटि तिलक गा मेंटी।

पुहुप सिंगार सँवारि जौं[10] जोबन नवल बसंत।
अरगज जेउँ[11] हिय लाइ कै मरगज[12] कीन्हेंं कंत ॥*

[३१९]

बिनति करै पदुमावति बाला। सो धनि सुराही[1] पीउ पियाला।

---

७. च० १ पिय। ८. द्वि० ३ कुंडल। ९. तृ० ३ फरा अनचाखा।
१०. प्र० १ सो बुंद सीर सुख मोंती भए, द्वि० २ सेवाति बूँद जस सीपी हिए भई, द्वि० ४ सो बुंद सीप मोंती भएँ परी। ११. प्र० २ तसि।

३१८] १. प्र० १, द्वि० ४, ७, तृ० ३ भएउ, द्वि० २ किएउ। २. द्वि० २ बिधांसी। ३. प्र० १ कीन्ह, तृ० ३ भएउ। ४. प्र० १, २, द्वि० ७, तृ० २ रंग। ५. तृ० २, च० १ मटक। ६. प्र० १ बिधरि गा, द्वि० ३, च० १ कटक भे। ७. प्र० १, द्वि० ७ छितराने द्वि० १ तृ० ३ छिरिआने। ८. प्र० १ बाहू, द्वि० १ बाजू, द्वि० ७, तृ० १ मोरँ, तृ० ३ मारीं पं० १ बाँह। ९. द्वि० ५ बलयपुनि। १०. प्र० १ सब, च० १ जेउँ। ११. प्र० १, द्वि० ७ उर कुच सौं। १२. द्वि० ७ सर गाज।
* तृ० ३ मे इसके अनंतर दो अतिरिक्त छंद हैं।

[३१९] १. द्वि० १ सोधि सुरा पिउ।

पिउ आएसु माँथे पर लेऊँ। जौं मागै नै नै सिर[2] देऊँ।
पै पिय बचन एक सुनु मोरा[3]। चाखि पियहु मधु[4] थोरइ[5] थोरा[3]।
पेम सुरा सोई पै पिया। लखै न कोइ कि काहूँ दिया।
चुवा[6] दाख मधु[7] सो एक बारा। दोसरि बार होहु बिसँभारा।
एक बार जो पी[8] कै रहा। सुख जेंवन[9] सुख भोजन कहा[10]।
पान फूल रस रंग करीजै। अधर अधर सौं चाखन कीजै[11]।

जो तुम्ह चाहहु सो करहु नहिं[12] जानहुँ भल मंद।
जो भावै सो होइ मोहि तुम्हहि पै[13] चहौं अनंद ॥

[३२०]

सुनु धनि पेम सुरा के पिएँ। मरन जियन डर रहै[1] न हिएँ।
जहँ मद तहाँ कहाँ संभारा[2]। कै सो खुमरिहा[3] कै मतवारा।
सो पै[4] जान पियै जो कोई। पी[5] न अघाइ जाइ परि[6] सोई।
जा कहँ होइ बार एक लाहा। रहै न ओहि बिनु ओही[7] चाहा।
अरथ[8] दरब सब देइ बहाई[9]। कह सब जाउ न जाउ[10] पियाई।

---

२. प्र० १ जब जब माँगै तब तब, तृ० ३ जो माँगौ नै नन्ह जिउ, द्वि० ७ जो माँगै तौ तौ सिर। ३. तृ० ३ थोरी, थोरी। ४. तृ० २ मद। ५. तृ० ३ थोरी (उर्दू मूल)। ६. तृ० ३ चोवा (उर्दू मूल)। ७. द्वि० २, तृ० १, २, ३ मद। ८. तृ० ३ लै (उर्दू मूल)। ९. तृ० ३ जीवन (उर्दू मूल)। १०. द्वि० २ लहा, द्वि० ३ अहा। ११ प्र० १ चखने लीजै, द्वि० २ काहे न लीजै, तृ० ३ रसना कीजै, द्वि० ४ चखना कीजै, तृ० १ चखना कीजै। १२. द्वि० २ नून। १३. द्वि० २ तुम्ह पिउ, द्वि० २, पं० १ तुम्ह जिउ, द्वि० ५ तुम्ह जिय, द्वि० ६ तुम्ह पुनि।

[३२०] १. प्र० २ रहै। २. द्वि० ७, तृ० ३, च० १ कहाँ संसारा, द्वि० ४ कहाँ निस्तारा, प० १ अघाइ संभारा। ३. प्र० १ खुमारी, द्वि० १ खुमारा द्वि० ४ घमरहा। ४. तृ० ३ सोई। ५. प्र० २, द्वि० २, ३, ७, तृ० ३, पं० १ लै। ६. द्वि० ७ वह। ७. प्र० १ ओहि कै, द्वि० १ तेहि पै, द्वि० ७ जो ओहि, च० १ सो पै। ८. द्वि० ४, ५ अरघ। ९. द्वि० २ भुलाई। १०. प्र० १, द्वि० ७ नहिं जाउ, द्वि० २ पै होइ, तृ० ३ है जाउ।

रातिहुँ देवस रहै रस[11] भीजा। लाभ न देख[12] न देखै[13] छीजा।
भोर होत सम्र[14] पलुह सरीरू। पाव खुमरिहा सीतल नीरू।

एक बार भरि देहु पियाला बार बार को माँग।
मुहमद किमि[15] न पुकारै श्रैस दाँउ जेहि[16] माँग॥

[३२१]

भएउ बिहान उठा रवि साईं। ससि पहँ आईं नखत[1] तराईं।
सब[2] निसि सेज मिले[3] ससि सूरू। हार चीर[4] वलया भे चूरू।
सो धनि पान चून भै[5] चोली। रंग रँगीलि निरँग भौ भोली[6]।
जागत रैनि भएउ भिनुसारा। हिय न सँभार[7] सोवति[8] बेकरारा[9]।
अलक भुअंगिनि[10] हिरदै परी। नारँग ज्यों[11] नागिनि[12] बिख भरी[13]।
लरैं मुरैं हिय हार[14] लपेटी। सुरसरि जनु कालिंदी भेंटी।
जनु[15] पयाग अरइल बिच[16] मिली[17]। बेनी भइ सो रोमावली[18]।

---

११. प्र० १ अस। १२. तृ० २ ना श्रोहि लाभ, च० १ चहै न श्रीरहि। १३. प्र० १ मूल पै छीजा, तृ० ३ देग पै छीजा, द्वि० ४ देखि कै छीजा, तृ० २ न खोहदि छीजा, च० १ ओछी रीमा। १४. प्र० १ पुनि। १५. द्वि० ७ जाग। १६. द्वि० ७, ३, ६, तृ० ३ क्यों।

[३२१] १. द्वि० ७, ३, ८, तृ० २, प० १ नखा। २. द्वि० २ वह। ३. द्वि० १ मिला जो, द्वि० २, ३, ५, तृ० ३, प० १ मिला ससि। ४ तृ० ३ चीर, पं० १ छीर। ५. प्र० १ फूल रहि, द्वि० ५ फूल भे। ६. प्र० १ रंग रँगीलो निरंग होइ बोली, द्वि० ७, ३, ४, ६, तृ० २, च० १ रंग रँगीली निरंग भी बोली, तृ० ३ रंग निरंग निरंग भै भोली, तृ० ७ रंग रँगीली निरंग भै बोली, प० १ रंग रँगीली निरंग होइ बोली। ७. द्वि० ७ हिय बेकरार, द्वि० ४ भइ बे सँभार, च० १ पै बेसँभार, पं० १ धनि बेसँभार। ८. द्वि० १ होइ, तृ० ३ सुनी, द्वि० ६ रोवति, तृ० २ सोवै। ९. द्वि० १ बे सँभारा। १०. प्र० १, द्वि० ६, ७ सुर गिनि। ११. प्र० १, द्वि० ४, ७, च० १ छुवै। १२. द्वि० ७ नारँग। १३. द्वि० ७ मुख भरी। १४. प्र० १ लुरि मुरि हियरैं हार, द्वि० २, ६ सो लट हार ओगीयँ। १५. द्वि० ६ मिलि। १६. द्वि० १ कहँ। १७. द्वि० ६ चली। १८. तृ० ३ सो रोम रोमीवा, द्वि० ७ सो रूप रोमावली।

नाभी लाभी पुन्य की[19] कासी कुंड कहाउ।
देवता मरहिं कलपि सिर आपुहि[20] दोख न लावहिं काउ॥

[३२२]

बिहँसि जगावहिं[1] सखी सयानी। सूर उठा[2] उठु पदुमिनि रानी।
सुनत सूर जनु[3] कँवल बिगासा। मधुकर आइ लीन्ह मधुबासा[4]।
जनहुँ माँति बसियानी बसी। अति बिसँभार फूलि जनु अरसी[5]।
नैन कँवल जानहुँ धनि[6] फूले[7]। चितवनि मिरिग सोवत जनु[8] भूले[9]।
मैं ससि खीनि गहन असि गही[1]। बिथुरे नखत सेज भरि रही[2]।
तन न[10] सँभार केस[11] औ चोली। चित[12] अचेत मन बाउर[13] भोली।
कँवल माँझ जनु केसरि डीठी। जोबन हुत[14] सो गँवाइ[15] बईठी।

बेलि जो राखी इंद्र कहँ पवनहुँ बास न दीन्ह।
लागेउ आइ भँवर तहँ करी बेधि रस लीन्ह॥

[३२३]

हँसि हँसि[1] पूछहिं सखी सरेखी। जानहुँ कुमुद चंद मुख देखी।
रानी तुम्ह असी सुकुमारा[4]। फूल बास[2] तनु[3] जीउ तुम्हारा[4]।

---

१९. द्वि० २, ४ ते गए, द्वि० ३ भँवर जनु। २०. द्वि० ७ सुनि यह, तृ० १ सौ तहि।

[३२२] १. द्वि० ३, ५, तृ० १, ३, प० १ जगाई। २. च० १ भोर भयो। ३. प्र० १ भानु नाम सुनि। ४. द्वि० ६ पिरि, च० १ रस। ५. प्र० १ द्वि० ७, ७, तृ० १ फूलि आरसी, तृ० ३ भूलि उर सभा, च० १ फूली रमी। ६. प्र० १, द्वि० ७ दह। ७. द्वि० २, तृ० ३, च० १ खोले, भोले। ८. द्वि० १ सेवाती, च० १ चहुँ जनु, द्वि० २ चहूँ दिसि, प० १ भोवन बन। ९. तृ० ३ गहे, रहे (उर्दू मूल)। १०. द्वि० ६ सिर। ११. प्र० १ चीर। १२. प्र० १ भइ। १३. द्वि० ४ बाली। १४. तृ० ३ हितु (उर्दू मूल)। १५. तृ० ३ सो गवँन।

[३२३] १. प्र० १ हँसि कै। २. तृ० १ पानँ फूल। ३. द्वि० १ अस, तृ० ३ जनु, च० १ मह। ४. द्वि० ७, तृ० ३ सुकुमारी, फूल बास तन जीउ तुम्हारी, द्वि० ३ सुकुमारी, पान फूल के रहहु अधारी।

सहि न सकहु हिरदे पर हारू। कैसे सहिहु कंत कर भारू।
मुख कवँल[5] बिगसत दिन राती। सो कुँभिलान सहिहु[6] केहि भाँती।
अधर जो कोंवल[7] सहत न पानू। कैसें सहा लागि[8] मुख भानू।
लंक जो पैग देत मुरि जाई। कैसें रही[9] जो रावन राई।
चंदन चोंप[10] पवन अस पीउ। भइउ चित्र सम[11] कस भा जीऊ।

सब[12] अरगज भा मरगज लोचन पीत[13] सरोज[14]।
सत्य कहहु पदुमावति सखीं परीं सब खोज॥

[३२४]

कहौं सखी आपन सति भाऊ। हौं[1] जो कहति कस रावन राऊ।
जहाँ पुहुप अलि[2] देखत सँगू। जिउ डेराइ काँपत सब[3] अगू।[4]
आजु मरम मैं[5] पावा सोई। जस पियार पिउ और न कोई।
तब लगि डर हा[6] मिला न पीऊ। भान कि दिस्टि छूटि गा[7] सीऊ।
जत[8] रवन भान कीन्ह[9] परगासू। कँवल करी मन कीन्ह[9] बिगासू।
हिएँ छोह उपना औ सीऊ[10]। पिउ न रिसाइ लेउ[11] बरु[12] जीऊ[10]।
हुत जो अपार बिरह दुख दोखा। जनहुँ अगस्ति उदधि[13] जल सोखा।

---

५. प्र० १, द्वि० ७ मुख कँवला, तृ० ३ पहुप कँवल, द्वि० ५ मुखार कँवन। ६. द्वि० ६, च० १ कहहु। ७. प्र० १ कँवल मुख, तृ० १, २ जो कँवन। ८. च० १ तेहि कैसे राखिहु। ९. प्र० १ सहिहु, तृ० ३ सहीं, प० १ सनै। १०. द्वि० २ जो तपवन, द्वि० ६ तन जोबन, तृ० २ चीर पवन। १२. द्वि० २, तृ० १, २, च० १, पं० १ सब। १३. प्र० १, २, द्वि० ७ पलक, द्वि० ५ बिब, तृ० ३ तपन, द्वि० २, तृ० २ पियर, च० १ सेन। १४. द्वि० १ बरोज (उरोज)।

[३२४] १. प्र० १ दिन। २. द्वि० १ तहाँ, तृ० १ अन। ३. तृ० ३, च० १ मन, तृ० २ औ। ४. द्वि० ४, ६ काँपी भँवर पुहुम पर देखें, जनु ससि गहन तेस मोहि लेखें। ५. द्वि० ७ पै। ६. प्र० १ हँसि, द्वि० १ जब, द्वि० ३, ४, तृ० १, २, ३ रहा, द्वि० ५ अहा। ७. तृ० ३ का (उर्दू मूल)। ८. प्र० १, तृ० १ तन। ९. द्वि० ४, ६, ३ लीन्ह मन लीन्ह, द्वि० १ लीन्ह, भै जीवै। १०. द्वि० ५ सेवा, जीवा। ११. प्र० १, द्वि० ७ जाइ। १२. द्वि० ५ पर। १३. तृ० ३ समुँद, द्वि० ५, तृ० २, प० १ अवधि।

हहूँ रंग बहु जानति[14] लहरैं जेति[15] समुंद।
पै पिय की चतुराई[16] सकिउँ[17] न एको बुंद॥

[३२५]

कै[1] सिंगार तापहँ कहँ[2] जाऊँ। ओहि कहँ[3] देखौं ठाँवहि[4] ठाऊँ।
जौं[5] जिउ महँ तौ उहै पियारा। तन महँ सोइ[6] न होइ निरारा।
नैनन्ह माँह तौ उहै समाना। देखउँ जहाँ न देखउँ[7] आना।
आपुन रस[8] आपुहि पै लेई। अधर सहँ[9] लागें रस देई।
हिया थार कुच कंचन लाड़ू। अगुमन भेंट[10] दीन्ह होइ[11] चाड़ू।
हुलसी लंक लंक सौं[12] लसी[13]। रावन रहसि[14] कसौटी कसी।
जोवन सबै मिला ओहि जाई। हौं रे बीच हुति गई हेराई[15]।

जस किछु दीजै[16] धरै कहँ आपन लीजै[16] सँभारि।
तस सिंगार सब[17] लीन्हेसि मोहि कीन्हेसि ठठियारि॥

[३२६]

अनु री छबीली तोहि छबि लागी। नेत्र[1] गुलाल कंत सग जागी।

---

१४. द्वि० ६ मानति, पं० १ जानति अही। १५. प्र० १, २ लहर जो जोति, द्वि० १ लहर जौ बुंद, द्वि० ६ लहरैं जेह। १६. द्वि० ७ कै चतुरापने। १७. द्वि० १ फाबु।

[३२५] १. प्र० १, द्वि० ७, तृ० ३, पं० १ लै। २. प्र० १ हौं, तृ० ३ कै। ३. प्र० १ ताहि सौं, द्वि० २, तृ० २ ओहि कौं, द्वि० ४, ५, ओही, तृ० १ वोहिक। ४. च० १ देउँ हिए महँ। ५. द्वि० २ जिउ। ६. प्र० १ द्वि० २, ७ मन सौं, द्वि० ४ मन सोइ। ७. प्र० १, द्वि० ७ देखउँ जहाँ तहाँ नहिं, द्वि० १ जौं बूझेउँ तौ और न। ८. तृ० ३ आपुहि रहस। ९. प्र० १ अधर अधर, प्र० २, द्वि० ७ अधर रसहि, द्वि० ४, ६ अधर सहस, द्वि० ५, च० १ अधर सबैं, द्वि० ३ अधरन सैं। १०. द्वि० २ अगुमन पंथ, द्वि० ६ लै कै भेंट, तृ० २ अंकन भेंट। ११. प० १, द्वि० १ दीन्ह करि, द्वि० ४ दीन्ह कै, च० १ दीन्ह हिय। १२. प्र० १ लंक लंका महँ, द्वि० २ अंक अंक सो, च० १ लंक लंक जनु। १३. प्र० १ द्वि० ३, ७, तृ० १, २, पं० १ बसी। १४. प्र० १ रहा। १५. तृ० २ बिलाई। १६. प्र० १, द्वि० १, ६, ७ दीन्ह, लीन्ह। १७. तृ० ३ रस। १८. प्र० १ मतिआरि, द्वि० ६ बिसँभार, तृ० १ हतहार।

[३२६] १. प्र० १, २ नैन।

चंप सुदरसन भा तोहि सोई। सोन जरद जसि केसरि होई।
पैठ भँवर कुज नारंग बारी। लागे नग्ग उछरे रँग ढारी।
अधर अधर सों भीज तबोरी[2]। अलकाउरि मुरि मुरि गौ मोरी।
रायमुनी तूँ औ रतमुँही। अलि मुख लागि भई फुलचुही।
जैस सिंगार हार सो मिली। मालति ऐसि सदा रहि खिली।
पुनि[3]सिंगार करि अरसि[4]नेवारी[5]। कदम[6] सेवती पियहि पियारी[7]।

कुंद[8] करी जहँवा लगि[9] बिगसै रितु बसंत औ फागु।
फूलहु फरहु सदा सखि[10] औ सुख सुफल[11] सोहाग॥

[३२७]

कहि यह बात सखीं सब[1] धाईं। चंपावति कहँ जाइ सुनाईं[2]।
आजु निरंग पदुमावति बारी। जीउ न[3] जानहुँ पवन अधारी।
तरकि तरकि गौ चंदन चोला[4]। धरकि धरकि डर[5] लठै न[6]बोला[4]।
अही जो करी[7] करा रस[8] पूरी। चूर चूर होइ गई सो चूरी।
देखहु जाइ जैसि कुँभिलानी। सुनि सोहाग रानी बिहसानी।
लै संग सबै पदुमिनी[9] नारी। आइ जहाँ पदुमावति बारी।[10]
आइ रूप सबहीं सो[11] देखा। सोन बरन होइ रही सो रेखा।

---

२. द्वि० २ पतोरी। ३. च० १ पदुम। ४. द्वि० ४, ५, तृ० ३ रस करा, तृ० १ कर अरसि, तृ० २ वै अरमि। ५. द्वि० १ रंग करी रँगीनी, द्वि० २ कर अरसि तारी। ६. द्वि० ६ कदइ। ७. द्वि० १ चंप चँबेली, द्वि० २ पैठि पसारी। ८. द्वि० ४, च० १ गोंद, प० १ लोंद। ९. द्वि० २, ३, ४, ५, तृ० १, च० १, प० १ मव, द्वि० १ जमि, तृ० २ होइ। १०. प्र० २ सभ, द्वि० ४, तृ० १ सुख, द्वि० ८, तृ० २ बहुरि। ११. द्वि० १ सुख सफल, द्वि० ७ निन सदा, प० १ बहु सुफल।

[३२७] १. द्वि० ४, ५, तृ० १, २ उठि, च० १, पं० १ औ। २. च० १ जनाई। ३. च० १ जीवन न। ४. तृ० ३ चोली, बोली। ५. प्र० १, च० १ जिउ, तृ० ३ घर। ६. द्वि० ३ आवन। ७. तृ० १ गरब। ८. द्वि० ४ करी कँचन रस, द्वि० ७, द्वि० ३ फहरा करी भम, च० १ प्रीति करा रस। ९. तृ० ३ सखीं चंपावति, पं० १ चलीं पदुमिनीं। १०. द्वि० १ मर मिलि आईं सखीसयानीं, आईं जहाँ पदुमावति रानी। ११. द्वि० ६ मुखि-इ मो, तृ० २ सबहि जो।

कुसुम[12] फूल जस मरदिश्र[13] निरंग[14] दीसु सब श्रंग।
चंपावति भै वारनै[15] चूँबि केस[16] श्रौ मंग ॥

[३२८]

सब रनिवास बैठ चहुँ पासा। ससि मंडर[1] जनु बैठ अकासा।
बोला[2] सबहि[3] बारि[4] कुँभिलानी। करहु सँभार देहु[5] खँडवानी।
कौंवलि करी कँवल[6] रँग भीनी। अति सुकमारि लंक कै[7] खीनी।
चाँद जैस धनि[8] बैठि तरासी[9]। सहस करा होइ सुरुज[10] गरासी[11]।
तेहि की झार गहन श्रस गही। भै निरंग मुख जोति न रही।
दरब उबारहु अरघ करेहू[12]। श्रौ लै वारि सन्यासिहि[13] देहू।
भरि कै थार नखत[14] गज मोंती। वारनै[15] कीन्ह चाँद कै जोती।

कीन्ह श्ररगजा मरदन[16] श्रौ सखि[17] दीन्ह अन्हान[18]।
पुनि भै चाँद जो चौदसि[19] रूप[20] गएउ छपि भान ॥

---

१२. द्वि० ६ केसु। १३. द्वि० ४, ५, तृ० २ जस मेरी, द्वि० ७ जस मन सो हिरदै, द्वि० ३ जस हिरदै। १४. तृ० २ रँग। १५. प्र० १ गए वारने, च० १ भए श्रोरनै। १६. द्वि० ७ लीन्ह।

[३२८] १. द्वि० १, ६ मंडल। २. द्वि० १ बोली। ३. प्र० १, द्वि० ७ बोलीं सखिन्ह, तृ० ३ बोला सबहु। ४. प्र० १ करी, द्वि० ६ नारि। ५. द्वि० ४ ५ सिंगार देखि। ६. प्र० १, द्वि० ४, ७, तृ० १ कँवल करी कँवला भीनी, द्वि० २ कँवल करी जो भै रँग भीनी, द्वि० ६ रावन राई जोनि भद खीनी, तृ० २ कँवल करी जो नवला भीनी। ७. प्र० १ लंक ले, द्वि० २ अंब कै। ८. द्वि० २ रवि। ९. प्र० १ बैठ करासी, द्वि० १ राहु गरासा, द्वि० २,३,४,७, तृ० १, २, च० १, प० १ बैठ चलसी, द्वि० ५ डुन परगासी। १०. द्वि० १ रूप। ११. द्वि० ४, ५ बिगासी, द्वि० २, ७ प्रगासा। १२. प्र० १, द्वि० ४, ६, ७ वारि कछु पुनि करेहू, तृ० १ जो वारहु अरघ करेहू, द्वि० १ वारि कन्या सब देहू, तृ० ३ वारहु लै अरघ करेहू, तृ० २ वारि कन्या रुठि देहू, प० १ वारि कै अरघ करेहू, द्वि० २, तृ० ३ वारि सन्यासिहि देहू, तृ० २, द्वि० ३ वारि गनक तेहि देहू। १३. प्र० १ वारि भिखारिहि। १४. तृ० ३ रतन। १५. द्वि० ४, च० १ बरती। १६. प्र० १ अबटन। १७. द्वि० ४, ५ सुख। १८. प्र० १, द्वि० ७ नहान, तृ० ३ श्र स्नान। १९. प्र० १, चतुरदसी। २०. प्र० १ देखि द्वि० ६ जो रे।

[३२६]

पटुवन्ह[1] चीर आनि सब छोरे। सारी[2] कंचुकी[3] लहरि पटोरे।
फुँदिया और कसनिया[4] राती। छायल पंडु आए[5] गुजराती।
चदनौटा[6] खीरोदक[7] फारी[8]। बाँस पोर झिलमिल की सारी[9]।
चिकवा[9] चीर मेघौना[10] लोने। मोंति लाग औ छापे सोने।
सुरग चीर भल सिंघल दीपी। कीन्ह छाप जो धनि वै[11] छीपी।
पेमचा डोरिया औ[12] बीदरी[13]। स्याम सेत पियरी औ हरी।
सातहुँ रंग सो चित्र चितेरी[14]। भरि कै[15] डीठि जाहिं नहिं हेरी[15]।

पुनि अभरन बहु काढ़ा अनवन[16] भाँति जराउ।
फेरि फेरि निति[17] पहिरहिं जैस जैस[18] मन भाउ॥

[३३०]

रतनसेनि गौ अपनी सभा[1]। बैठे पाट जहाँ अठखंभा[2]।

---

[३२९] १. तृ० १ पतारन्ह, च० १ पतरन्ह। २. प्र० १, २, द्वि० ६ तारा। ३. प्र० १, २, तृ० १ कुंजर। ४. प्र० १ डोरिया औ कन सिनिआ, द्वि० २, ४, तृ० १ मँडिआ और कनिआ, द्वि० ३ पँदिआ और कनसनिआ, द्वि० ७ मँडिआ औ कनीसिया, तृ० ३ परिआ और कुसमिया, च० १ मडिआ औ कसिना बहु। ५. प्र० १ छैल पटोर आप, द्वि० १, ३ छायल पडुवा औ, च० १ छायल बह आने। ६. प्र० १, २, द्वि० ७ चट नौटा। ७. च० १ चोखरोदक। ८. प्र० १ सारी, भारी, प्र० २ सारी, फारा, द्वि० २, च० १ भारी, सारी, तृ० २ थारी, सारी। ९. द्वि० १ चंदन, तृ० ३ जगवा (उर्दू मूल)। १०. द्वि० १ वहा का, तृ० ३ वल्हौना, द्वि० ५ हलौना। ११. तृ० ३ धनः ती। १२. प्र० १ पेमचा जोरनी, तृ० २ पेम चहोरि औ, द्वि० १ पेम चँद परिया औ। १३. प्र० १, द्वि० ७, तृ० २ बदरी, प्र० २ बेदरी (उर्दू मूल) तृ० ३ बीडुरी (उर्दू मूल)। १४. तृ० ३ चितरै, हेरै (उर्दू मूल)। १५. तृ० ३ फिरि गै (उर्दू मूल)। १६. प्र० १ द्वि० २, ४, ५, ६, प० १, तृ० २, पं० १ मन अनवन (हिंदी मूल मलना, ५४३. २)। १७. द्वि० १, ४, च० १ सब। १८. द्वि० ७ पदुमावति।

[३३०] १. द्वि० २ अपने साथी। २. प्र० १ पाट ओठंधि कै खँभा, द्वि० २ पाट जहाँ औ खाँभा, तृ० ३ जाइ जहाँ कर खँभा, द्वि० ७, ३ पाट छाँह अठखंभा।

आइ मिले चितउर के साथा। सबहीं बिहँसि आइ दिए[3] हाथा।
राजा कर भल मानहिं भाई। जेइ हम कहँ यह भुम्मि[4] देखाई।
जौं हम कहँ आनत न नरेसू। तब हम कहाँ कहाँ यह देसू।
धनि राजा तोर राज बिसेखा। जेहि की रजाउरि सब किछु[5] देखा।
भोग बेलास सबै किछु[6] पावा। कहाँ जीभ तसि[7] अस्तुति आवा[8]।
तहँ तुम्ह आइ अंतरपट साजा। दरसन कहँ न तपावहु[9] राजा।

नैन सिराने भूख गइ देखि तोर मुख आजु[10]।
नौ औतार भए सब काहूँ[11] औ नौ भा सब साजु॥

[३३१]

हँसि कै राज रजाएसु[1] दीन्हा। मैं दरसन कारन अस[2] कीन्हा।
अपने जोग लागि हौं खेला। भा गुरु आपु कीन्ह तुम्ह चेला।
यहिक[3] मोर पुरुषारथ देखेहु। गुरू चीन्ह कै जोग[4] बिसेखेहु।
जौं तुम्ह तप साधा मोहि लागी। अब जनि हिएँ होहु बैरागी।
जो जेहि लागि सहै तप जोगू। सो तेहि के सँग मानै[5] भोगू।
सोरह सहस पदुमिनीं माँगीं। सबहीं दीन्ह न काहुँ खाँगीं।
सब क धौरहर सोने साजा[6]। सब अपने अपने[7] घर राजा।

---

३. प्र० १, २ दीन्ह कै, द्वि० ० दीन्ह मैं, द्वि० ४, ५, च० १ कै दान्ही, द्वि० ७ आइ मग, तृ० २ दीन्ह,तेहि। ४. द्वि० १, २, ३, ६, तृ० २, ३ पुहुमि।
५ प्र० १, २ जेहि कै राज जगत सब, द्वि० १ जेहि के राज हम सब कुछ, द्वि० २, ४, ५, तृ० २, ३ जेहि की रजाएसु सब कुछ। ६. प्र० १ सुख।
७. तृ० ३ तैं, द्वि० ५, तृ० २ अस, तृ० १ टीहि। ८. द्वि० ५ गावा।
९. द्वि० १ कहँ आवहिं सर, द्वि० ७ कस न देखावहु, द्वि० ३ कतहुँ न पावहिं।
१०. च० १ सुखराज। ११. द्वि० ६, च० १ नौ औतार आज भए, तृ० १ नो औतार भए अब। १२. द्वि० ४, ३ पाजु।

[३३१] १. द्वि० १ आएसु। २. प्र० १, २, द्वि० १, ७ अन, द्वि० ४ तप।
३. प्र० १, द्वि० २, ७ यहिकैं, प्र० २ ऐह वों, तृ० ३ इहँक, द्वि० ४, च० १ अहक, तृ० २ अवहि, द्वि० ३ तेहिक। ४. प्र० १ राज, द्वि० १ रूप।
५. तृ० २ तेहि सँग मानै रस। ६. प्र० १, २, द्वि० ६, ७, च० १ मन्त्र घर मँदिर सोने कर साजा। ७. द्वि० ३ भा।

हस्ति घोर औ कापर सबहि दीन्ह नौ[८] साजु।
भै गिरहस्त लखपती घर घर मानहिं राजु॥

[३३२]

पदुमावति सब सखीं बोलाईं। चीर पटोर हार[१] पहिराईं।
सीस सबन्हि के सेंदुर पूरा। सीस पूरि सब अंग[२] सेंदूरा।
चंदन अगर चतुरसम[३] भरीं। नएं चार[४] जानहुँ अवतरीं।
जनहु कँवल सँग फूलीं कुईं। कै सो चाँद सँग तरईं उईं।
धनि पदुमावति धनि तोर नाहूँ। जेहि पहिरत[५] पहिरा सब काहूँ।
बारह अभरन सोरह[६] सिंगारा। तोहि सोहइ यह ससि संसारा[७]।
ससि सो कलंकी राहुहि पूजा। तोहि निकलंक न होइ सरि[८]दूजा।

काहूँ बीन गहा[९] कर काहूँ नाद म्रिदंग।
सब दिन अनँद गँवावा[१०] रहस कोड एक[११]संग॥

[३३३]

भै निसि धनि जसि ससि परगसी। राजैं देखि पुहुमि फिरि बसी।
भै कातिकी[१] सरद ससि[२] उवा[३]। बहुरि[४] गँगन रवि चाहै छुवा[३]।

---

८. द्वि० ५ बड़।

[३३२] १. प्र० १ द्वि० ७ आनि। २. द्वि० १ मोंग, द्वि० ७ आस, च० १ लाग। ३. द्वि० २ चित्र सन, तृ० ३ चित्र मव। ४. प्र० १ नई चाँद, द्वि० २ तीस चार। ५. द्वि० ४, ५, च० २ अभरन। ६. द्वि० ७ पहिरे। ७. द्वि० ४, ५, च० १ तोहि सहीं पै ससि मसियारा, द्वि० २ तोहि सँभार सीस संमारा, तृ० २ तोहि सोह ऐ ससि उजियारा। ८. प्र० १ द्वि० ३, च० १ घोर सरि द्वि० ७ तोहि सम। ९. प्र० १ बंसि गहा, प्र० २ बैन बंस (उर्दू मूल), द्वि० ७ बीना बंसि। १०. प्र० १, द्वि० ५ बधावरा, द्वि० २ उठावा, द्वि० ७ नाउकर। ११. द्वि० १ सुख।
* प्र० १, २, द्वि० ३, ४, ५, ७, में इसके अनंतर एक अतिरिक्त छंद है।

[३३३] १. प्र० २, तृ० ३ भै कातिक, च० १ बहुते बटक। २. प्र० १ रितु। ३. द्वि० ४, ५ आवा, छावा, द्वि० ७ हुआ, छुआ। ४. द्वि० ६ पलटि।

पुनि[५] धनि धनुक भौंहैं कर फेरी[६]। काम कटाख टँकोर सो हेरी[७]।[८]
जानहुँ नहिं कि[९] पैज पिय साँची। पिता सपथ हौं आजु न बाँची।
काल्हि न होइ रहे सह[१०] रामा। आजु करौ रावन[११] संग्रामा।
सेन सिंगार महूँ[१२] है सजा। गज गति चाल अँचर गति धुजा।
नैन समुंद्र खरग नासिका। सरवरि जूझि को मो सौं टिका[१३]।

हौं रानी पदुमावति मैं जीता सुख भोग।
तूँ सरवरि करु तासौं जस[१४] जोगी जेहि[१५] जोग॥

[३३४]

हौं अस जोगि जान सब कोऊ। वीर सिंगार जिते मैं[१] दोऊ।
उहाँ त समुँह रिपुन दर[२] माहाँ। इहाँ त काम कटक तुव पाहाँ।
उहाँ त कोपि बैरिदर[३] मडौं। इहाँ त अधर अमिअ रस खंडौं।
उहाँ त खरग[४] नरिंदन्ह मारौं। इहाँ त बिरह तुम्हार सँघारौं।
उहाँ त गज पेलौं होइ केहरि[५]। इहाँ त कामिनि करसि हृदै हरि[६]।
उहाँ त लूसौं[७] कटक खँधारू[८]। इहाँ त जितौं तुम्हार सिंगारू।

---

[५]. द्वि० ४, तृ० १, २, ३, पं० १ सुनि। [६]. प्र० १, द्वि० ७ धनुक नैन सर फेरी, प्र० २, तृ० १, पं० १ धनुक भौंह पुन फेरा, द्वि० ३ धनुक भौंह खन फेरी, च० १ धनुक भौंह कमि फेरा, द्वि० ६ भौंहन्ह धनुक चढ़ावा। [७]. प्र० १ मा रात अहेरा, द्वि० ३ कुँवर सो हेरा। [८]. द्वि० २ धनि धानुक भौंहैं कस वाना, काम कटाच्छ टकोर सो ताना। [९]. प्र० १ जानहु नैन, प्र० २ न जनहु नैन, तृ० ३ जानहु नाँकि। [१०]. प्र० १, २ सो, द्वि० २ सरि, तृ० ३ सनि, द्वि० ४ साथ, द्वि० ५ सुख, द्वि० ३ सठ। [११]. द्वि० १ बिरह क होइ, तृ० ३ करै रावन। [१२]. द्वि० ७ समुह, च० १ सबै। [१३]. द्वि० २, तृ० १ सजा, द्वि० ४, ५ जिता। [१४]. प्र० २, द्वि० ७ रे, द्वि० २ जैम। [१५]. प्र० १, द्वि० ४, ३ तोहि।

[३३४] [१]. द्वि० २, ३ जेहँ। [२]. प्र० १ समूह राय दल, प्र० २ सहूह रैनि दल, द्वि० १ सौंहँ आनि रन, द्वि० २, तृ० १, च० १ समुह रयनि दिन, तृ० ३ सौंहँ रयनि दल, द्वि० ५, ७ समुह रयनि दल, द्वि० ३ समुह बार दल, द्वि० ४, ६ हन बीर घट। [३]. द्वि० ४, ६ तो हय चढि के मांह। [४]. द्वि० ६ कोपि। [५]. द्वि० ६ उहाँ त कबहुँ होउ वो केहरि। [६]. द्वि० १, ५, च० १ गज गामिनि कर है हरि। [७]. प्र० १ लूटौं, प्र० २ खूटौं, द्वि० २ लुहसौं, द्वि० ५ तोसौं, तृ० १ कोमौं, तृ० २ रमौं। [८]. द्वि० ६ दरब भँडारू

दहाँ त कुंभस्थल गज नावौं। दहाँ त कुच[9] कलमन्द कर लावौं[10]।[11]

परा बीचु धरहरिया[12] पेम राज कै टेक।
मानहिं भोग छहूँ रितु मिलि दूनौं होइ एक॥

[३३५]

प्रथम बसंत नवल रितु आई। सुरितु[1] चैत बैसाख सोहाई[2]।
चंदन चीर पहिरि धनि अंगा। सेंदुर दीन्ह बिहँसि भरि मंगा।
कुसुम हार औ परिमल बासू। मलयागिरि छिरिका[3] कबिलासू[4]।
सौर सुपेती फूलन्ह डासी। धनि औ कंत[5] मिले सुखवासी।
पिउ[6] सँजोग धनि जोबन बारी। भँवर पुहुप सँग[7] करहिं धमारी।
होइ फागु भलि चाँचरि जोरी। बिरह जराइ दीन्ह[8] जसि होरी।
धनि ससि सियरि तपै पिउ[9] सूरू। नखत सिंगार होहिं सब चूरू।

जेहि घर कंता रितु भली आउ बसंता[10] निस्तु।
सुख बहरावहि[11] देवहरैं[12] दुक्ख न जानहिं किस्तु॥

[३३६]

रितु ग्रीखम कै[1] तपनि न वहाँ। जेठ[2] असाढ़ कंत घर जहाँ।
पहिरें सुरँग चीर धनि झीना। परिमल मेद रहै तन भीना।

---

९. द्वि० ४ गज। १०. प्र० १ कलसन्ह हथ लावौ, द्वि० १ करते मैं लावौं, द्वि० ७ (मैं) हाथ लगावौ। ११. द्वि० ६ (यथा.२) दोहूँ भाँति भाज कै साजा, दहौं कटक मों चिन्हौ राजा। १२. द्वि० ३ करै बीच को धरहरि।

[३३५] १. तृ० ३ सो रितु। २. च० १ जनाई। ३. तृ० ३ पोता। ४. प्र० १, २ चहुँ पासू। ५. प्र० १, २ पुरुष। ६. द्वि० २ बर। ७. प्र० १ रस, प्र० २ सरि, च० १ मिलि। ८. तृ० ३ जरै होरी (भोजपुरी प्रभाव)। ९. प्र० १ सियर तपा भो, द्वि० २ भैस परिउ जस, द्वि० ६ पुरुष दिन सरू, द्वि० ७ मियर तपै तन, पं० १ भई तपै पिउ। १०. प्र० १ जौ दरसन तेहि। ११. द्वि० २ झुलावहि। १२. प्र० १ सुख पहिरावहि दिवस निसि, च० १ बेगि फरहि सुखदेव हरे।

[३३६] १. तृ० ३ गै (उर्दू गुल)। २. पं० १ बैठ।

पदुमावति तन सियर[3] सुबासा। नैंहर राज कंत कर[4] पासा।
अधर[5] तबोर कपूर भिवँसेना। चंदन चरचि लाव नित[6] बेना[7]।
ओवरि[8] जूड़ि तहाँ सोवनारा[9]। अगर पोति सुख नेति ओधारा[10]।
सेत बिछावन सौर[11] सुपेती। भोग करहिं निसि[12] दिन सुख सेंती।
मा अनंद सिंघल सब कहूँ[13]। भागिवंत सुखिया रितु छहूँ[14]।

दारिवँ दाख लेहिं[15] रस बेरसहि[16] आँब सहार[17]।
हरियर तन[18] सुवटा कर[19] जो अस चाखनहार[20]॥

[३३७]

रितु पावस बिरसै पिउ पावा[1]। सावन भादौं अधिक सोहावा[2]।[3]
कोकिल[4] बैन पाँति बग[5] छूटी। धनि निसरी[6] जेउँ बीर बहूटी।
चमकै बिज्जु बरिस जग[7] सोना। दादुर मोर सबद सुठि[8] लोना।
रँग राती[9] पिय सँग निसि[10] जागै। गरजै चमकि चौंकि[11] कँठ लागै।[12]

---

३. प्र० २ सिर, पं० १ चौर। ४. प्र० १, द्वि० ३,४,५, ७, तृ० १, पं० १ कंत घर, द्वि० २ तृ० कंत पुनि, च० १ करहिं सुख। ५. तृ० ३ अगर। ६. द्वि० ४, च० १ रचि रचि लाव। ७. प्र० १ तन भीना, प्र० २, द्वि० २, ३ तन बेना। ८. प्र० १ ओपरि। ९. द्वि० ५ सुबास सुहाई। १०. प्र० १, २ सैन सँवारा, तृ० ३ तेन ओहरा, द्वि० ६ नेन सँवारा, द्वि० ४ निन अधारा, द्वि० ७ नीत देहारा, पं० १ नेत अहारा। ११. तृ० ३ सेज। १२. प्र० १, द्वि० २, ३, च० १ भोग करहिं दिन दिन, द्वि० ५ भोग बेरास करहिं। १३. प्र० १, द्वि० ७ सिंघल सब काहू, द्वि० १ सिगरे जग माहीं। १४. द्वि१ सुखिया सब छाँहीं, प्र० १, द्वि० ७ सुख रात उछाहू, तृ० २ सुखिया सब नाहूँ। १५. पं० १ कीन्ह। १६. द्वि० ३ परसहिं। १७. द्वि० ४, ५ बेरसहि आँब छोहार, द्वि० ७ बेरस हिया उर हार, च० १ बेरसहि आँब सोहार। १८. द्वि० ७ सो। १९. प्र० २ सुख ताकर। २०. प्र० २ बेरसनहार।

[३३७] १. प्र० १, २ बिरसै सो पावा, द्वि० १, तृ० ३, च० १ परसै पिउ पावा, द्वि० ३ परसै सुख पावा, द्वि० ६ बरसै धन नीरू। २. द्वि० ६ गहिर गँभीरू। ३. इसके अनंतर द्वि० ४ में निम्नलिखित अतिरिक्त पंक्ति है: पदुमावति चाहत रितु पाई, गँगन सुहावा भुम्मि सुहाई। ४. द्वि० २, ६ चातक। ५. द्वि० ७ गौ। ६. द्वि० २ रानी। ७. प्र० १ जस, द्वि० ४ जल, द्वि० ५ जनु। ८. प्र० १ अति। ९. द्वि० १ रकत। १०. प्र० १, २, द्वि० २,३, तृ० २, पं० १ नित। ११. द्वि० १ चाहैं। १२. द्वि० ६ में इस पंक्ति के स्थान पर पादटिप्पणी ३ वाली पंक्ति है।

सीतल बुंद ऊँच चौपारा[१३]। हरियर सब देखिअ[१४] संसारा।
मलै समीर बास[१५] सुख बासी। बेइलि फूल[१६] सेज सुख डासी[१७]।[१८]
हरियर भुम्मि[१९] कुसुंभी[२०] चोला। औ पिय संगम[२१] रचा हिंडोला।

पौन झकोरे[२२]हिय हरख[२३]लागै सियरि[२४] बतास[२५]।
धनि जानै यह पौनु है पौनु सो अपनी[२६]आस[२७]॥

[३३८]

आइ सरद रितु अधिक पियारी[१]। नौ[२] कुवार कातिक उजियारी।
पदुमावति भै पूनिउँ कला। चौदह चाँद उए[३] सिंघला।
सोरह करा सिंगार बनावा। नखतन्ह भरे सुरुज ससि पावा[४]।
भा निरमर सब[५] धरति[६]अकासू। सेज सँवारि कीन्ह फुल[७] डासू।
सेत बिछावन औ उजियारी। हँसि हँसि मिलहिं पुरुख औ नारी[८]।[९]
सोने फूल पिरिथिमी फूली। पिउ धनि सौं धनि पिउ सौं भूली।
चखु अंजन दै खंजन देखावा। होइ सारस[१०] जोरी पिउ[११]पावा[१२]।

एहि रितु कंता पास जेहि सुख तिन्हके[१३]हिय मांह[१४]।
धनि हँसि लागै पिय गले[१५]धनि गल[१५] पिय कै बाँह[१६]॥

---

१४. तृ० ३ देखी (उर्दू मूल)। १५. तृ० ३ बास। १६. द्वि० २ बेल फुलेल, द्वि० ३ बेल के फूल, च० १ बेना फूल। १७. प्र० १ भरि राखी, द्वि० ७, तृ० २ भरि डासी। १८. तृ० २ बेइलि चमेलि फूल भरि डासी। १९. द्वि० ६ लिन नौ पहिर। २०. प्र० २, च० २ कुसुंभि तन। २१. द्वि० ४ धनि पिय संग, च० १ पिय संग पुनि। २२. प्र० १ झुरकि, द्वि० ४ झकोरै। २३. प्र० १ हरष भो, द्वि० २, ३ हिय हरखै, द्वि० ५, तृ० ३ हिय हिरकै, तृ० १ हिय हरकि, च० १ हिय हरक सुख। २४. प्र० २ सिसिर। २५. प्र० २ सिसिर बतास, द्वि० ६, च० १ सीतल बास। २६. प्र० १ पौनहि आपनि। २७. द्वि० २ बास, तृ० २ पास।

[३३८] १. तृ० ३ पियारा, उजियारा। २. द्वि० १, ७ भरे, द्वि० ४ नाव, द्वि० २, च० १ सो, तृ० १ सी। ३, तृ० ३ उआ, द्वि० ५ उई। ४. द्वि० ६, ७ राखा। ५. द्वि० ७ ससि। ६. द्वि० २ पुहुमि। ७. प्र० २ मन। ८. द्वि० २ हँसि हँसि कँठ लागहिं पिउ प्यारी। ९. प्र० २ सेज सुपेती कीन्ह बिछावन, एहम कोइ आने मन भावन। १०. द्वि० १ सारद। ११. द्वि० ४, ५ रस। १२. प्र० १ आवा, प० ३, ७ रावा। १३. द्वि० २, तृ० १ सहीं। १४. प्र० २ आह। १५. प्र० १ गरें, गर। १६. प्र० १ पिय लागै धनि बाँह।

[३३९]

आइ सिसिर[1] रितु तहाँ न सीऊ। अगहन पूस जहाँ घर पीऊ।
धनि औ पिउ महँ सीउ[2] सोहागा। दुहूँक अंग एक मिलि[3] लागा।
मन सौं मन तन सौं तन गहा। हिय सौं हिय बिच हार[4] न रहा।
जानहुँ चंदन लागेउ अंगा[5]। चंदन रहै न पावै संगा[6]।
भोग करहिं सुख राजा रानी। उन्ह लेखें सब सिस्टि जुड़ानी।
जूझै दुहुँ जोबन सौं लागा। बिच हुत सीउ जीउ लै भागा।
दुइ घट मिलि एकै होइ जाहीं। औस मिलहिं तबहूँ[7] न अघाहीं।

हंसा केलि[8] करहिं जेउँ सरवर[9] कुंदहिं कुरलहिं[10] दोउ।
सीउ पुकारै ठाढ़[10] भा जस चकई क बिछोउ[11]॥

[३४०]

रितु हेवंत[1] संग पीउ न पाला[2]। माघ[3] फागुन सुख[4] सीउ सियाला[2]।

---

[३३९] १. प्र० १, २, द्वि० ७ हेम, द्वि० १ साउ, तृ० २ सार। यद्यपि मार्गशीर्ष-पौष मास हेमंत के ही माने गए हैं, किंतु 'हेम' पाठ केवल प्र० १, २, द्वि० ७ में मिलता है, और केवल इन प्रतियों में प्राप्त पाठांतर सर्वत्र अप्रामाणिक ठहरता है, इसलिए यहाँ भी वह अग्राह्य होगा। कवि से भूल होना भी असम्भव नहीं माना जा सकता है। २. प्र० १ धनि औ पिउ बिच सीउ, द्वि० ६ धनि कंचन जनु पीव। ३. प्र० १, द्वि० ७ होइ, प्र० २ मे। ४. प्र० २ कछु। ५. प्र० १ स्या,। अंगा। ६. प्र० १, द्वि० ७ औंलि मिलहिं पै मिलि, द्वि० ७ औ होर एक मिलहिं। ७. तृ० २ कोकिल। ८. द्वि० १, २, ३, ५, ६, तृ० १, २, ३, च० १, पं० १ जेउँ। ९. द्वि० ५ कुरल करहिं, द्वि० ७ काँपहिं कुरलहिं। १०. प्र० २ पार)। ११. द्वि० २ चकई जैस बिछोव।

[३४०] १. प्र० १, २, द्वि० ७ सिसिर। माघ फाल्गुन मास शिशिर के ही माने गए हैं, किंतु 'सिसिर' पाठ केवल प्र० १, २, द्वि० ७ में मिलता है, और केवल इन प्रतियों में प्राप्त पाठांतर सर्वत्र अप्रामाणिक ठहरते हैं, इसलिए यहाँ पर भी वह अग्राह्य होगा। कवि से भूल होना भी असम्भव नहीं माना जा सकता है। २. द्वि० ३, पं० १ संग पिउ प्याला, सियाला, च० १ संग पिउ प्यारा, सियारा। ३. द्वि० ४, ५, प १ मानहु। ४. द्वि० ७ सुनि।

सीर सुपेती महँ दिन राती। दगल[५] चीर पहिरहिं बहु भाँती।
घर घर सिंघल होइ सुख भोगू[६]। रहा न कतहूँ दुख कर रोजू[६]।
जहँ धनि पुरुष सीउ नहिं लागा। जानहुँ काग देखि सर[७] भागा।
जाइ इंद्र सौं कीन्ह[८] पुकारा। हौं पदुमावति देस निकारा।
एहि रितु सदा सँग[९] मैं सोवा[१०]। अब दरसन हुत[११] मारि बिछोवा[१२]।[१२]
अब हँसि कै ससि सूरहि भेंटा। अहा जो सीउ बीच हुत मेंटा[१३]।

भएउ इंद्र कर आएसु[१४] प्रस्थावा यह सोइ[१५]।
कबहुँ[१६] काहु कै प्रभुता[१७] कबहुँ काहु कै होइ॥

[३४१]

नागमती चितउर पँथ हेरा। पिउ जो गए फिरि[१]कीन्ह न फेरा।
नागरि नारि काहुँ[२] बस परा। तेइँ बिमोहि मोसौं चितु हरा।
सुवा काल होइ लै गा पीऊ। पिउ नहिं लेत लेत[३] बरु जीऊ।
भएउ नरायन बावन करा। राज करत बलि[४] राजा छरा।
करन बान लीन्हेउ करि छंदू। भरथरि[५]भएउ छल मिला अनंदू[६]।[७]

---

५. द्वि० २ सुरंग, च० १, पं० १ सकल। ६. तृ० ३ भोगू, औ सोगू, द्वि० ७ भोगू, कर रोजू, च० १ रोज़ू, कर खोजू। ७. द्वि० ७ सीर। ८. द्वि० १ भया, तृ० ३ भई। ९. प्र० २ रंग। १०. द्वि० १ खेला, कीन्ह दुहेला। ११. प्र० १ सौं। १२. द्वि० १ जहँ सुरज नहिं कहा पसारू, कौन जिअै पावै महि मारू। १३. तृ० २ बिच हुत हौं मो नारि कै मेटा। १४. द्वि० २ परभा (प्रभुता ?)। १५. द्वि० २ आव पहुँच सब कोई। १६. द्वि० ४, ७, च० १ कौहु। १७. प्र० १ बारी, द्वि० १ भई, तृ० ३ पार भा, द्वि० २, ४, पं १ परभा (प्रभुता ?), द्वि० ५ परिभा, च० १ पर बहु, द्वि० ७ बार होर।

[३४१] १. तृ० १ जोगी होर। २. प्र० १ चतुर नारि काहूँ। ३. प्र० १, द्वि० ३, ४, ५, तृ० १,२ पिउ नहिं जरत जात। ४. द्वि० ५ नल। ५. प्र० १, २, द्वि० १ भारथ, द्वि० २, ३, तृ० १ भरथ, द्वि० ४, ६, ७ भरथहि, च० १ परथहि। ६. प्र० २, तृ० ३ भलमला नंदू, द्वि० १ छनमिला नंदू, द्वि० २, ४, ५ भनमिला अनंदू, तृ० १ भिनमिला आनंदू, च० १, पं० १ छल मिलि अनंदू। ७. द्वि० ६ (यथा - ४) में सो भव यद बैरै राजा, सेर पालि मो फल कैर साखा।

मानत भोग गोपीचँद भोगी। लै उपसवा जलंधर जोगी।
लै कान्हहि भा[8] अकरुर[9] अलोपी। कठिन बिछोउ जिऐ किमि गोपी[10]।

सारस जोरी किमि हरी मारि गएउ किन खग्गि[11]।
झुरि झुरि पाँजरि[12] धनि भई बिरह कै लागी अग्गि[13]॥

[३४२]

पिउ बियोग अस बाउर जीऊ। पपिहा तस[1] बोलै पिउ पीऊ।
अधिक काम दगधै सो[2] रामा[3]। हरि जिउ लै सो[4] गएउ पिय नामा।
बिरह बान तस लाग न डोली। रकत पसीज भीजि तन[5] चोली।
सखि हिय हेरि हार मैन मारी[6]। हहरि परान[7] तजै अब नारी[8]।
खिन एक आव पेट महँ स्वाँसा। खिनहि जाइ सब होइ निरासा।
पौनु डोलावहिं सींचहिं चोला। पहरक[9] समुझि नारि मुख बोला[10]।

---

८. द्वि० ४ लै गा कंतहि, द्वि० २ लै पेहि भागा, द्वि० ५ लै कै कंतहि, तृ० २, प० १ लै कंतहि भा, च० १ लै बलनहि भा, द्वि० ३ लै कन्हूँ गा। ९. प्र० १ अक्रूर, प्र० २, द्वि० १, २, ३, ४, ५, ७, तृ० १, ३, च० १, प० १ गहर। १०. च० १ जोगी। ११. प्र० १, द्वि० ३, तृ० २ बिन लाग, तृ० ३ गुन दाग, द्वि० ७ नहिं लाग, तृ० १ नहिं खग्गि। १२. प्र० १, द्वि० १, ७, तृ० १, २, च० १, पं० १ माजरि। १३. प्र० १ कै लाइं आग, द्वि० २ क लगाइं आग, तृ० ३ के लागे काग।

[३४२] १. प्र० १, द्वि० २, ३, ७, तृ० १, ३, च० १ निसि, प्र० २ भै, द्वि० ४ जस। २. प्र० १, २ दहकि तन दगधै, द्वि० ३ याम दुख दहै सा। ३. प्र० १, द्वि० ३, ४, ५, ७, तृ० १, २, ३, प० १ कामा। ४. द्वि० ४, ५, च० १ लै सुआ। ५. द्वि० ७ सब।
६. प्र० १, द्वि० २, ३, ६, तृ० १ सखि हिय हेरि हार हिएँ मारी, प्र० २ सखी हेरि हारि हियँ मारी, द्वि० ४ सिय हिय हेरि हार हियँ मारी, द्वि० ५ सँग हिय हारि रही हो बारी, द्वि० ७ सखी हेरि हारी ग्रीव मारी, तृ० २ सखि नारि होइ रही सो नारी, तृ० ३ सखि हिय हेरि हार हरि मारी, च० १ सखिहि हारि रही होइ बारा।
७. द्वि० १ पिउ बिन प्रान, द्वि० ५ हरियर प्रान, द्वि० ७ परिहरि प्रान। ८. प्र० १ तजै हनिआरी, द्वि० ७ जाइ तौ तारी। ९. द्वि० ५, तृ० २ फरकै। १०. प्र० १, २ नारि चख खोला, द्वि० ७ रही चित डोला।

प्रान पयान होत केइँ राखा। को मिलाव[11] चात्रिक कै भाखा[12]।

आह जो मारी बिरह की आगि उठी तेहि हाँक।
हंस जो रहा सरीर महँ पाँख जरे तन थाक[13] ॥[14]

[३४३]

पाट महादेइ[1] हिएँ न हारू। समुझि जीउ[2] चित चेतु सँभारू।
भँवर कँवल सँग होइ न परावा[3]। सँवरि नेह मालति पहँ आवा।
पीउ[4] सेवाति सौं जैस पिरीती। टेकु पियास बाँधु जिय[5] थीती[6]।[7]
धरती जैस गँगन के[8] नेहा। पलटि भरै[9] बरखा रितु मेहा।
पुनि बसंत रितु आव नवेली। सो रस सो मधुकर सो बेली।
जनि अस जीउ करसि तूँ नारी[10]। दहि तरिवर पुनि उठहिं सँभारी[11]।
दिन दस जल सूखा का[12] नंसा[13]। पुनि सोइ सरवर[14] सोई हंसा[15]।

मिलहिं जो बिछुरै[15] साजना गहि गहि[16] भेंट गहंत[17]।
तपनि मिरगिसिरा[18] जे सहहिं[19] अद्रा ते पलुहंत[20] ॥

---

११. द्वि० ५ को पल आव। १२. द्वि० ४ कोइलि और चातक मुख भाषा, च० १ कोइलि और चातक कै भाषा। १३. द्वि० १ तन पाक, द्वि० ४ जद भाग, द्वि० ६ तव थाक, द्वि० ७ सव थाक, द्वि० २, तृ० १, २ तव भाग। १४. तृ० १ में इस छंद की २—९ पंक्तियाँ छूटी हुई हैं।

[३४३] १. प्र० १ बोलहिं सखी, द्वि० ६ पाट महादेव, द्वि० ३ पाट न भा देइ। ३. द्वि० ४, ५, ६, तृ० २ मेरावा, द्वि० ३ परावा। ४. प्र० २, द्वि० ४, ५ पपिहा, प० १ टेकु। ५. प्र० २ मन। ६. द्वि० ४, ५ सीनी। ७. च० १ में यह पंक्ति नहीं है। ८. तृ० ३ की (उर्दू मूल), द्वि० ७ सै। ९. प्र० १, २ द्वि० ४, ७ [illegible]। १०. प्र० [illegible] बारी। ११. द्वि० २, ३, ५, तृ० १ [illegible] १२. प्र० १ [illegible], द्वि० ७ जल सूखि गा।

[३४४]

चढ़ा असाढ़ गँगन घन गाजा। साजा बिरह दुंद दल बाजा।
धूम स्याम धौरे घन धाए[1]। सेत धुजा बगु पाँति देखाए[1]।
खरग बीज चमकै चहुँ ओरा। बुंद बान बरिसै घन घोरा।
अद्रा लाग बीज भुइँ[2] लेई। मोहि पिय बिनु को आदर देई।
ओनै घटा आई चहुँ फेरी[3]। कंत उबारु मदन हौं घेरी[3]।
दादुर मोर कोकिला पीऊ। करहिं बेझ घट रहै न जीऊ।
पुख नछत्र सिर ऊपर आवा। हौं बिनु नाँह मँदिर को छावा।

जिन्ह घर कंता ते सुखी तिन्ह गारौ तिन्ह[4] गर्ब।
कंत पियारा बाहिरैं हम सुख भूला सर्ब॥

[३४५]

सावन बरिस मेह अति पानी[1]। भरनि भरइ[2] हौं बिरह झुरानी।
लागु पुनर्बसु पीउ न देखा। भै बाउरि कहँ कंत सरेखा।
रकत क आँसु परे भुइँ टूटी। रेंगि चली जनु बीर बहूटी।
सखिन्ह रचा पिउ संग हिंडोला। हरियर भुइँ कुसुंभि तन चोला।
हिय हिँडोल जस डोलै मोरा। बिरह झुलावै देइ झँकोरा।
बाट असूझ अथाह गँभीरा। जिउ बाउर भा भवै भँभीरा।
जग जल बूड़ि जहाँ लगि ताकी। मोर नाव खेवक बिनु थाकी।

परबत समुँद अगम बिच बन[3] बेहड़ घन ढंख।
किमि करि भेटौं कंत तोहि ना मोहि पाँव न पंख॥

[३४६]

भर भादौं दूभर अति भारी। कैसें भरौं[1] रैनि[2] अँधियारी।

---

[३४४] १. द्वि० ३, ७ धाई, दिखाई (उर्दू मूल)। २. तृ० ३ धन। ३. द्वि० ७, तृ० ३ फेरे, घेरे (उर्दू मूल)। ४. प्र० १, तृ० २ औ।

[३४५] १. द्वि० २, ४ बानी। २. प्र० १, २ द्वि० ७ भरनि परहि, तृ० ३ भर जोबन। ३. प्र० १ अगम भुइँ बन, द्वि० ७ अगम बन जल थल।

[३४६] १. द्वि० ५ करौं, तृ० २ फरिउँ। २. प्र० २ कस भइ रैनि अधिक।

प्रान पयान होत केइँ राखा। को मिलाव[11] चात्रिक कै भाखा[12]।

आह जो मारी बिरह की आगि उठी तेहि हाँक।
हंस जो रहा सरीर महँ पाँख जरे तन थाक[13]॥[14]

[३४३]

पाट महादेइ[1] हिएं न हारू। समुझि जीउ[2] चित चेतु सँभारू।
भँवर कँवल सँग होइ न परावा[3]। सँवरि नेह मालति पहँ आवा।
पीउ[4] सेवाति सौं जैस पिरीती। टेकु पियास बाँधु जिय[5] थीती[6]।[7]
धरती जैस गँगन कै[8] नेहा। पलटि भरै[9] बरसा रितु मेहा।
पुनि बसंत रितु आव नवेली। सो रस सो मधुकर सो बेली।
जनि अस जीउ करसि तूँ नारी[10]। दहि तरिवर पुनि उठहि सँभारी[11]।
दिन दस जल सूखा का[12] नंसा[13]। पुनि सोइ सरवर[14] सोई हंसा[13]

मिलहिं जो बिछुरै[15] साजना गहि गहि[16] भेंट गहंत[17]।
तपनि मिरगिसिरा[18] जे सहहिं[19] अद्रा ते पलुहंत[20]॥

---

११. द्वि० ५ को पब आव। १२. द्वि० ४ कोइलि और चातक मुख भाषा च० १ कोइलि और चातक कै भाषा। १३. द्वि० १ तन पाक, द्वि० २ जब माग, द्वि० ६ तब थाक, द्वि० ७ सर थाक, द्वि० २, तृ० १, २ तन माग। १४. तृ० १ में इस छंद की २—९ प क्यों छूटी हुई है।

[३४३] १. प्र० १ बोलहिं सखी, द्वि० ६ पाट महादेइ, द्वि० ३ पाट न मा देइ। ३. द्वि० ४, ५, ६, तृ० २ मेरावा, द्वि० ३ परावा। ४. प्र० २, द्वि० ४, ५ पपिहा, प० १ टेकु। ५. प्र० २ मन। ६. द्वि० ४, ५ सीती। ७. च० १ में यह पंक्ति नहीं है। ८. तृ० २ का (उर्दू मूल), द्वि० ७ सै। ९. प्र० १, २ द्वि० ४, ७, ३ फिरै। १०. प्र० २ तै बारी। ११. द्वि० २, ३, ५, तृ० १ सँवारी। १२. प्र० १ सर सूखा जल, द्वि० ७ जल सूखि गा। १३. द्वि० ३ गान्हाना, धान्हा, च० १ काँसा, हसा। १४. द्वि० ५ तरिवर। १५. द्वि० २ नाह जो बिछुरे, द्वि० ४, तृ० १, २, ३, च० १ मिलि जो बिछुरे। १६. प्र० १, द्वि० ७, तृ० २, प० १ कै कै, द्वि० २ केइ केइ, द्वि० ४ केइँ, तृ० १ कै है। १७. द्वि० २, ३ भेटै कंत, तृ० १ भेंट बहंत। १८. द्वि० २ मरन करन। १९. द्वि० ७ कीडा जिनि। २०. प्र० २, तृ० १ भद्रा जिनि पलुहंत, द्वि० ७ मरै अरुधा हलवंत।

[३४४]

चढ़ा असाढ़ गँगन घन गाजा। साजा बिरह दुंद दल बाजा।
धूम स्याम धौरे घन धाए[1]। सेत धुजा बगु पाँति देखाए[1]।
खरग बीज चमकै चहुँ ओरा। बुंद बान बरिसै घन घोरा।
अद्रा लाग बीज भुइँ[2] लेई। मोहि पिय बिनु को आदर देई।
ओनै घटा आई चहुँ फेरी[3]। कंत उबारु मदन हौं घेरी[3]।
दादुर मोर कोकिला पीऊ। करहिं बेझ घट रहै न जीऊ।
पुख नछत्र सिर ऊपर आवा। हौं बिनु नाँह मँदिर को छावा।

जिन्ह घर कंता ते सुखी तिन्ह गारौ तिन्ह[4] गर्ब।
कंत पियारा बाहिरें हम सुख भूला सर्ब॥

[३४५]

सावन बरिस मेह अति पानी[1]। भरनि भरइ[2] हौं बिरह झुरानी।
लागु पुनर्बसु पीउ न देखा। भै बाउरि कहँ कंत सरेखा।
रकत क आँसु परे भुइँ टूटी। रेंगि चली जनु बीर बहूटी।
सखिन्ह रचा पिउ संग हिंडोला। हरियर भुइँ कुसुंभि तन चोला।
हिय हिंडोल जस डोलै मोरा। बिरह झुलावै देइ झँकोरा।
बाट असूझ अथाह गँभीरा। जिउ बाउर भा भवै भँभीरा।
जग जल बूड़ि जहाँ लगि ताकी। मोर नाव खेवक बिनु थाकी।

परबत समुँद अगम बिच बन[3] बेहड़ घन ढंख।
किमि करि भेटौं कंत तोहि ना मोहि पाँव न पंख॥

[३४६]

भर भादौं दूभर अति भारी। कैसें भरौं[1] रैनि[2] अँधियारी।

---

[३४४] १. द्वि० ३, ७ धाई, दिखाई (उर्दू मूल)। २. तृ० ३ धन। ३. द्वि० ७, तृ० ३ फेरे, घेरे (उर्दू मूल)। ४. प्र० १, तृ० २ औ।

[३४५] १. द्वि० २, ४ बानी। २. प्र० १, २ द्वि० ७ भरनि परहि, तृ० ३ भर जोवन। ३. प्र० १ अगम मुइँ बन, द्वि० ७ अगम बन जल थल।

[३४६] १. द्वि० ५ करौं, तृ० २ परिउँ। २. प्र० २ कस भइ रैनि अधिक।

मँदिल सून पिय अनतै बसा। सेज नाग भै धै धै[3] डसा।
रहौं अकेलि गहें एक पाटी। नैन पसारि मरौं हिय फाटी।
चमकि बीज घन गरजि तरासा। बिरह काल होइ जीउ[4] गरासा।
बरिसै मघा झँकोरि झँकोरी। मोर दुइ नैन चुवहिं जसि[5] ओरी।
पुरबा लाग पुहुमि जल[6] पूरी। आक जवास[7] भई हौं[8] झूरी।
धनि सूखी भर भादौं माहाँ। अबहूँ आइ न सींचसि नाहाँ।

जल थल भरे अपूरि सब गँगन धरति मिलि एक।
धनि जोबन औगाह महँ दे बूड़त[9] पिय टेक॥

[३४७]

लाग कुआर नीर[1] जग[2] घटा। अबहुँ[3] आउ पिउ[4] परभुमि[5] लटा।
तोहि देखे पिउ[6] पलुहै काया। उतरा चित्त फेरि[7] करु माया।
उए[8] अगस्ति हस्ति घन गाजा। तुरै पलानि चढ़े रन[9] राजा।
चित्रा[10] मिंत मीन घर[11] आवा। कोकिल[12] पीउ पुकारत पावा।
स्वाति बुंद चातिक मुख परे। सीप समुंद्र मोति लै[13] भरे।
सरवर सँवरि हंस चलि[14] आए। सारस कुरलहिं खँजन देखाए।
भए अवगास[15] कास बन फूले। कंत न फिरे बिदेसहि भूले।

---

३. प्र० १ होइ धै धै, द्वि० २ भै धै मोहि, तृ० १ भै दहि दहि, तृ० २ मोहि सिर चढ़ि, द्वि० ३ भै चाहै। ४. द्वि० ७ राहु। ५. तृ० २ जग। ६. तृ० ३ पिउ, तृ० १ जनु। ७. द्वि० ७ पलास। ८. प्र० १,२ औंमि भै, द्वि० ६ भई धनि। ९. प्र० १ वै बूड़हु।

[३४७] १. प्र० १ पुहुमि, प्र० २ जगत। २. प्र० १, २, द्वि० १, २,३ तृ० ३ जल। ३. प्र० १ अजहुँ। ४. द्वि० १, ६, ७ रे। ५. द्वि० ३, ४, ५ प्रीतम। ६. द्वि० २ फिर। ७. द्वि० ४, ६, ७, तृ० २, च० १ बहुरि। ८. तृ० ३ उई (उदूँ मूल)। ९. प्र० १, २ चढ़े सब, तृ० ३ चले रन। १०. द्वि० १ जियन। ११. प्र० १, २, द्वि० ४, ७, तृ० १ च० २, पं० १ कर। १२. तृ० २ चातिक। १३. द्वि० ४, ५, ६, तृ० १ बहु, द्वि० २, तृ० ३ तेहि, च० १, प० १ सइ, प्र० २ होइ। १४. तृ० ३ जल। १५. प्र० १, २ अस्विन मास, द्वि० १, २, ६ भए अकास, तृ० ३ भए बिकास, द्वि० ४, ५ भए निराम, द्वि० ३, ७ भएउ प्रगास, तृ० ३ भए पगास।

विरह हस्ति तन सालै खाइ, करै तन[16] चूर।
वेगि आइ पिय बाजहु गाजहु[17] होइ[18] सदूर॥

[३४८]

कातिक सरद चंद[1] उजियारी[2]। जग सीतल हौं विरहैं[3] जारी[2]।
चौदह[4] करा कीन्ह[5] परगासू। जनहुँ जरै सब धरति अकासू।
तन मन सेज करै अगिडाहू। सब कहँ चाँद मोहिं होइ[6] राहू।
चहूँ खंड[7] लागै अँधियारा। जौं घर नाहिंन कंत पियारा।
अबहूँ[8] निठुर आव एहि[9] वारा। परब देवारी होइ[10] संसारा[11]।
सखि झूमक गावहिं अँग मोरी। हौं झूरौं बिछुरी जेहि जोरी।
जेहि घर पिउ सो[12]मुनिवरा[13]पूजा। मो कहँ विरह सवति दुख दूजा।

सखि मानहिं तेवहार सब गाइ[14] देवारी खेलि।
हौं का खेलौं कंत विनु तेहिं रही[15]छार सिर मेलि॥

[३४९]

अगहन देवस घटा निसि बाढ़ी। दूभर दुख सो जाइ किमि काढ़ी।
अब धनि देवस विरह भा राती। जरै विरह ज्यो दीपक बाती।
काँपा हिया[1] जनावा सीऊ। तौ पै जाइ होइ सँग[2] पीऊ।

---

१६. प्र० १, २ सन, द्वि० ४, ६, ७, च० १ निन। १७. द्वि० ३ गाजहु विरहा। १८. द्वि० ७ सिंह, पं० १ होए के सिंघ।

[३४८]१. द्वि० १ मास रैनि, द्वि० ७ सरद राति। २. द्वि० १, ३, ६, तृ० २, ३ उजियारा, जारा। ३. प्र० १, च० १ हौ विरहैं, द्वि० ४, ६ मों बिरहिनि। ४. प्र० २, द्वि० २, ३, तृ० १, २ सोरह। ५. द्वि० १, ४, ६ चंद्र। ६. द्वि० २, ३, ५, ६, पं० १ भएउ मोहि, प्र० २, तृ० १ सो मो कहँ, द्वि० ४ भएउ मोर। ७ तृ० २ दसौ दिसा। ८. प्र० १, २ रे पिउ। ९. प्र० १, द्वि० २, ४, ७, तृ० १, २, ३ एहिं, तृ० १, द्वि० ३ तेहिं। १०. प्र० २ करहि। ११. द्वि० ३ उजियारा। १२. च० १ कंत। १३. प्र० १ जिनवरा, प्र० २ जवरा, द्वि० ३ मनोरथ। १४. तृ० २ गाईं। १५. प्र० १, २, द्वि० २, ४, ६, ७, तृ० १, २, च० १, प० १ रही, तृ० ३ तेहिं।

[३४९]१. तृ० ३ अंग। २. प्र० १ घर, प० १ जनु।

घर घर चीर रचा सब काहूँ। मोर रूप रँग[3] लै गा नाहूँ।
पलटि न बहुरा गा जो बिछोई। अबहूँ फिरै फिरै[4] रँग सोई।
सियरि अगिनि बिरहिनि हिय जारा[5]। सुलगि सुलगि दगधै भै छारा[6]।
यह दुख दगध न जानै कंतू। जोबन जरम[7] करै[8] भसमंतू।

पिय सौं कहेहु सँदेसरा ऐ भँवरा ऐ काग।
सो धनि बिरहें जरि गई[9] तेहिक धुआँ हम लाग[10]॥

[३५०]

पूस जाड़[1] थरथर तन[2] काँपा। सुरुज जड़ाइ[3] लंक दिसि तापा।
बिरह बाढ़ि भा दारुन सीऊ। कँपि कँपि मरौं लेहि हरि जीऊ[4]।
कंत कहाँ हौं लागौं हियरें[5]। पंथ अपार सूझ नहिं नियरें।
सौंर सुपेती आवै[6] जूड़ी। जानहुँ सेज हिवंचल[7] बूड़ी।
चकई निसि बिछुरै दिन मिला। हौं निसि बासर[8] बिरह[9] कोकिला।
रैनि अकेलि साथ नहिं सखी। कैसें जिऔं बिछोही पँखी[10]।
बिरह सैचान भँवै[11] तन चाँड़ा। जीयत खाइ मुएँ नहिं छाँड़ा।

रकत ढरा माँसू गरा[12] हाड़ भए सब संख[13]।
धनि सारस होइ ररि[14] मुई आइ समेटहु पंख[13]॥

---

३. द्वि० ३, ४, ५, च० १, प० १ मत्र। ४. तृ० १ मरै मरै। ५. प्र० १, २. द्वि० ३ प्रेम अगिनि विरहा तन जारा, तृ० ३ मिय अंग बिरहै हिय जारा, द्वि० १ हिय बजरागि विरह तेहँ जारा, द्वि० ६ प्रेम अगिनि विरहिनि तन जारा, द्वि० ७ प्रेम अगिनि जो बिरहा जारा, तृ० १ मियर अगिनि बिरहैं तन जारा, तृ० २ सियर आग बिरहा भइ चारा। ६. द्वि० १ सो जोगी भइ जरै अँगारा। ७. प्र० १ जारि, द्वि० १ जरै। ८. प्र० १, द्वि० ५ करौ। ९. प्र० १, तृ० १, ३ मुई, द्वि० ६ मुई। १०. तृ० १ हमहि धुवाँ अस।

[३५०] १. द्वि० १ मास। २. तृ० ३ थरहर तन। ३. प्र० १ जाइ। ४. प्र० १, २ न पावौं पीऊ। ५. तृ० ३ हौं लखै हिअरे, द्वि० ७ है लागी निअरै ६. प्र० १, द्वि० १ लागै। ७. द्वि० १ मवा चल। ८. प्र० १, द्वि० १, ६ दिन रात। ९. द्वि० १ भई। १०. द्वि० २ कैसे पिय बिन जीवै पँखी। ११. प्र० १, २ द्वि० ४, च० १ भएउ। १२. प्र० १ का मासु कर। १३. द्वि० ६, तृ० ३ साँख, पाँख। १४. द्वि० ७ रटि।

[३५१]

लागेउ माँह परै अब[1] पाला। बिरहा काल भएउ जड़काला।
पहल पहल तन रुई[2] जो झाँपै। हहलि हहलि अधिकौ हिय[3] काँपै।
आइ सूर होइ तपु रे नाहाँ[4]। तेहि बिनु जाड़ न छूटै माहाँ[4]।
एहि मास उपजै रस मूलू। तूँ सो भँवर मोर जोबन फूलू।
नैन चुवहिं जस माँहुट[5] नीरू। तेहि जल[6] अंग[7] लाग सर चीरू।
टूटहिं बुंद[8] परहिं जस ओला। बिरह पवन होइ मारै झोला।
केहिक सिंगार को पहिर पटोरा। गियँ नहिं हार[9] रही होइ डोरा।

तुम्ह बिनु कंता धनि हरुई[10] तन तिनुवर भा[11] डोल।
तेहि पर बिरह जराइ कै[12] चहै उड़ावा झोल॥

[३५२]

फागुन पवन झँकोरै बहा[1]। चौगुन सीउ जाइ किमि[2] सहा।
तन जस पियर पात भा मोरा। बिरह न रहै पवन होइ[3] झोरा[4]।
तरिवर झरै झरै बन[5] ढाँखा। भइ अनपत्त फूल फर[6] साखा।
करिन्ह बनाफति कीन्ह हुलासू। मो कहँ भा जग दून उदासू।
फाग करहिं[7] सब[8] चाँचरि जोरी। मोहिं जिय[9] लाइ दीन्हि जसि होरी।
जौं पै पियहि जरत अस भावा। जरत मरत मोहि रोस न आवा।

---

[३५१] [1]. द्वि० ५ हहलि हिया, द्वि० ७ हलहलार। [2]. प्र० २ रूद (हिंदी मूल) [3]. द्वि० ५, ६ तन। [4]. द्वि० १ नाहूँ, काहूँ, द्वि० ७ नाहा, चाहा। [5]. प्र० २ मानहु ठरि। [6]. द्वि० १ झल। [7]. द्वि० ४ तोहि बिन आगि, द्वि० ५, पं० १ तोहिजल आगि। [8]. द्वि० २, ६, तृ० २ टुटि टुटि बुंद, द्वि० ३, ४, ५ टप टप बुंद, द्वि० ७ टुटि टुटि लोर। [9]. तृ० ३ गीय कहार। [10]. प्र० २ तूल भै। [11]. प्र० १ तन सो तिरिनु भा, द्वि० ३, २, ४ तृ० १, च० १ तन तन बिरहा। [12]. द्वि० ७ थारि है।

[३५२] [1]. द्वि० २, ४, ५, पं० १ महा। [2]. द्वि० ७ नहिं। [3]. द्वि० ७ के। [4]. द्वि० ४, ५ तेहि पर बिरह देइ झकझोरा। [5]. द्वि० ७, तृ० २ जरै औ बन, तृ० ३ दिनहि नित। [6]. द्वि० १, तृ० ३, च० २ उनंत पिरम कै, तृ० २ उनपत्ति प्रेम कै, प्र० २, पं० १ अनंत फूल फर, द्वि० ५ उतंत फूल फर, द्वि० ३ अपत फूल फर। [7]. द्वि० ४ फागुन रही, द्वि० ७ तृ० २ फाग न करहिं। [8]. प्र० १ मल। [9]. द्वि० १ कहँ, द्वि० ६ तन।

रातिहु देवस इहै मन मोरें। लागौं कंत छार[10] जेउँ[11] तोरें।

यह तन जारौं छार[12] कै[13] कहौं कि पवन उड़ाउ।
मकु तेहि मारग होइ[14] परौं कंत धरै जहँ पाउ॥

[३५३]

चैत बसंता होइ धमारी। मोहि लेखें संसार उजारी।
पंचम बिरह पंच सर मारै। रकत रोइ सगरौ बन ढारै।
बूड़ि उठे सब तरिवर पाता। भीज मंजीठ टेसू बन राता।
मौरें आँब फरें अब लागे। अबहुँ सँवरि घर आउ सभागे।
सहस भाव[1] फूली बनफवी। मधुकर फिरै सँवरि मालती।
मो कहँ फूल भए जस काँटे। दिस्टि परत तन लागहिं चाँटे।
भर[2] जोबन एहु[3] नारँग साखा। सोवा[4] बिरह अब जाइ न राखा।

घिरिनि परेवा आव जस आइ परहु पिय टूटि[5]।
नारि पराएँ हाथ है तुम्ह बिनु पाव न छूटि॥

[३५४]

भा बैसाख तपनि अति[1] लागी। चोला[2] चीर चँदन भौ आगी।
सूरुज जरत हिवंचल ताका। बिरह बजागि[3] सौहँ[4] रथ हाँका।
जरत बजागिनि[5] होउ पिय छाँहाँ। आइ बुझाउ अँगारन्ह माहाँ।

---

१०. पं० १ ठार, शेष प्रतियों में 'थार' (हिंदी मूल)। ११. द्वि० ६ जो, तृ० २, च० १ जब। १२. प्र० २ खेह, तृ० १ भसम। १३. प्र० १ चहौं कि यह तन खेह कै। १४. प्र० १, २ उहि।

[३५३] १. प्र० १, २, द्वि० ७, तृ० ३ भार। २. तृ० ३ बहु, द्वि० २, ३ फर। ३. द्वि० २, तृ० ३ बहु, तृ० १ तेहि, तृ० २ औ। ४. द्वि० ७, तृ० ३ सुआ (उर्दू मूल), द्वि० १ मो मद। ५. प्र० १ तुम आवहु पिय टूटि, तृ० २, च० १ बेगि आइ परु टूटि।

[३५४] १. च० २ मद। २. द्वि० ६ जोला, द्वि० ७ चोवा। ३. तृ० १ बीरह जागि। ४. द्वि० ७ मोरि। ५. प्र० १ आइ सूर होइ तपु, द्वि० १ जरत बजागिनि धूप औ, द्वि० २, ३, ४, ५, ६, तृ० २, ३, च० १, पं० १ जरत बजागिनि होउ पिय।

तोहि दरसन होइ सीतल नारी। आइ आगि सों करु फुलवारी।
लागिउँ जरैं[6] जरैं जस भारू। बहुरि जो भूँजसि तजौं न बारू[7]।
सरवर हिया घटत निति[8] जाई। टूक टूक होइ होइ[9] बिहराई।
बिहरत[10] हिया करहु पिय टेका। दिस्टि दवँगरा[11] मेरवहु एका।
कँवल जो बिगसा मानसर छारहि मिलै सुखाई[12]।
अबहुँ बेलि फिरि पलुहै जौं पिय[13] सींचहु आइ॥

[२५५]

जेठ जरै जग बहै[1] लुवारा[2]। उठै बवंडर धिकै पहारा[2]।
बिरह गाजि हनिवंत होइ जागा[3]। लंका डाह करै तन लागा।
चारिहुँ[4] पवन झँकोरै आगी। लंका डाहि पलंका लागी।
दहि[5] भइ स्याम नदी कालिंदी। बिरह कि आगि कठिन असि[6] मंदी।
उठै[7] आगि औ आवै आँधी। नैंन न सूझ मरौं[8] दुख बाँधी[9]।
अधजर[10] भई माँसु तन सूखा। लागेउ बिरह काग[11] होइ भूखा।
माँसु खाइ अब हाड़न्ह लागा[12]। अबहूँ आउ आवत सुनि[13] भागा[12]।

---

६. तृ० २ हियरा तपै। ७. द्वि० ३ फिरा भूंजिसि तजौं ना बारू। ८. प्र० १, २, द्वि० ३, ५, ७, तृ० १, पं० १ अब। ९. प्र० १ टूक टूक होइ हिय, प्र० २ टूक टूक होइ गा, द्वि० ६ तर कै हिया जाइ, तृ० ३ तरकि तरकि होइ होइ। १०. तृ० १ फेरहु। ११. प्र० १, २, द्वि० ७ दूरि करि, द्वि० २, ३, ४, ५, ६, तृ० १, ३ भपाकर, तृ० २ तद धरा, च० १ दाव कै, पं० १ दून कै। १२. प्र० १ जल सुखान कुंभिलाइ, प्र० २ जन मूखे कुंभिलाइ तृ० ३ छार भयो कुंभिलाइ, द्वि० ४, ५ बिनु जल गइउ सुखान। १३. प्र० १ कंत जो।

[२५५] १. पं० १ भवहिं। २. प्र० १, द्वि० ७ लुआरी, धिकै पहाड़ी, द्वि० ४, तृ० २ लुआरा, परहिं अँगारा। ३. तृ० ३ गाजा। ४. प्र० २ लागै, द्वि० ७ जोरै। ५. द्वि० ३, ५, तृ० १, २ दह। ६. प्र० १ सुठि, द्वि० २ तन, द्वि० ७ अति। ७. तृ० २ जरै। ८. प्र० १, द्वि० ५, ७ जरौं। ९. द्वि० ७ दाधी। १०. तृ० २ न चर। ११. द्वि० १, ४, ७, तृ० २ काल। १२. द्वि० १, २, ६, ७, तृ० ३, पं० १ लागे। १३. प्र० १ उठि मागि सभागा, द्वि० २, ७, तृ० ३ घर आउ सभागे, द्वि० १, ६, पं० १ आवन औ भागे, तृ० २ आवन सुनि भागा, द्वि० ५, ३, च० १ आवत उठि भागे।

परबत समुँद मेघ[14] ससि दिनअर[15] सहि न सकहिं यह आगि[16]।
मुहमद सती सराहिऐ जरै जो अस पिय लागि॥

[३५६]

तपै लाग अब[1] जेठ असाढ़ी[2]। भै मोकहँ यह[3] छाजनि गाढ़ी[3]।
तन तिनुवर भा[4] झूरौं खरी। भै बिरहा आगरि[5] सिर परी।
साँठि नाहिं लगि बात को पूँछा[6]। बिनु जिय भएउ मूँज तन छूँछा[7]।
बंध नाहिं औ कंध न कोई। बाक न आव कहौं केहि रोई।
ररि दूबरि भई[8] टेक बिहूनी। थंभ नाहिं उठि सकै न थूनी।
बरिसहिं नैन चुअहिं घर माहाँ। तुम्ह बिनु कंत न छाजन छाँहाँ[9]।
को रे कहाँ ठाट नव साजा। तुम्ह बिनु कंत न छाजन छाजा।

अबहूँ दिस्टि मया करु छान्हिन तजु घर आउ।
मंदिल उजार होत है नव कै आनि बसाउ॥

[३५७]

रोइ गँवाएउ बारह मासा। सहस सहस दुख एक एक साँसा।
तिल तिल बरिस बरिस बरु जाई। पहर पहर जुग जुग न सिराई।
सो न[1] आउ पिउ रूप मुरारी। जासौं पाव सोहाग सो नारी।
साँझ[2] भए झुरि झुरि[3] पँथ हेरा[4]। कौनु सो घरी करै पिउ फेरा[4]।

---

१४. द्वि० ४ मेल। १५. प्र० १ ससि, तृ० ३ ससि मेदिनी। १६. द्वि० ७ जरहिं सो निकसै आगि।

[३५६] १. तृ० १ मुठि, द्वि० ३ यह। २. तृ० ३ असार_ढां, गार_ढी (उर्दू मूल)। ३. प्र० १, द्वि० ६, तृ० २ भै ,पिय बिन मोहि छाजनि, द्वि० २ भई बिरहि-निहि छाजनि, च० १, ५० १ बिरहिनि कहँ भई। ४. प्र० १, २, द्वि० ७ कंत नाहिं घर, द्वि० २ तिनु बर भा लिन, तृ० २ तन बिनु भा नित। ५. प्र० २ अगार। ६. प्र० १, २, द्वि० ७ साँठि न गाँठि कहौं लगि बोलौं। ७. प्र० १ छूँछ मूँछ जस त्रिन तन डोला, प्र० २ छूँछि मूँज तन तिनु जसि डोलै, द्वि० ७ छूछि भई तन त्रिन ज्यों डोलौं। ८. प्र० १ हरि भइ बाउरि, द्वि० १ श्री दूबरि भइ, द्वि० ४, ६ भई दुहेली तृ० १ भरी दूबरि भइ। ९. द्वि० ६ नाहाँ।

[३५७] १. द्वि० ६ अबहुँ न, तृ० १ सौंह, द्वि० ३ मँवरि। २. द्वि० ३ साँच (उर्दू मूल)। ३. तृ० ३ झूठ झूठ। ४. द्वि० २, तृ० २, ३ हेरी- फेरी।

दहि[5] कोइल भै कंत सनेहा। तोला माँस रहा नहिं देहा।
रकत न रहा बिरह[6] तन गरा। रती रती होइ नैनन्हि[7] ढरा।
पाव लागि चेरी धनि हाहा[8]। चूरा नेहु जोरु रे नाहा।
बरिस देवस धनि रोइ कै हारि परी चित झाँखि।
मानुस घर घर पूँछि कै पूँछै निसरी पाँखि॥

[३५८]

भई पुकारि लीन्ह बनबासू। बैरिनि सवति दीन्ह चिल्हवाँसू।
कै[1] खर बान कसै[2] पिय लागा। जौं घर आवै अबहूँ कागा।
हारिल भई पंथ मैं सेवा। अब तहँ पठवौं कौनु परेवा।
धौरी पंडुक कहु पिय ठाऊँ। जौं चित रोख न दोसर नाऊँ[3]।
जाहि बया गहि[4] पिय कँठ लवा। करे मेराउ सोइ गौरवा।
कोइलि भई पुकारत रही। महरि[5] पुकारि लेहु रे[6] दही।
पियरि तिलोरि[7] आव जलहंसा। बिरहा पैठि[8] हिएँ कत[9] नंसा।
जेहि पंखी कहँ अढ़वौं[10] कहि सो बिरह कै बात।
सोई पंखि जाइ डहि[11] तरिवर होइ निपात॥

[३५९]

कुहुकि कुहुकि[1] जसि कोइलि रोई। रकत आँसु घुँघुची बन बोई।
पै[2] करमुखी नैन तन[3] राती। को सिराव बिरहा दुख ताती।

---

5. तृ० १ वइ। 6. द्वि० ७ माँहु। 7. प्र० १ लोहू। 8. प्र० १, २, पाहाँ, नाहाँ, द्वि० ७ ताहाँ, नाहाँ, तृ० १ हाथाँ, साथाँ।

[३५८] 1. प० १, २, द्वि० ७ ठा[ए], द्वि० ६ होइ, तृ० १ गहि। 2. द्वि० ४, ६ बिरह, तृ० १ कैस। 3. प्र० २, तृ० २ न दूसर ठाऊँ, द्वि० ७ न दर भिर पाऊँ। 4. प्र० १, २ बाज होइ, द्वि० ४, ७ बया होइ, द्वि० ३, ५ तृ० १, ३, च० १ पिया गाह, द्वि० ७ बया होइ। 5. तृ० २ होर। 6. प्र० १ द्वि० ७, च० १, प० १ पिउ। 7. द्वि० २ सरत और जल हंसा, द्वि० ५ दटेर तिलोरी हंसा, तृ० २ न सरत नवा अन हंसा। 8. द्वि० ५, तृ० १ पथ। 9. प्र० १, २ डुक, द्वि० ७ बतन, तृ० ३ कटक, द्वि० ४ लग, तृ० २ कव। 10. प्र० २, द्वि० ७ कहँ बोर होइ (उर्दू मूल), तृ० ३ कइँ अरहवौ (उर्दू मूल), तृ० १ कइँ ओरहौ, द्वि० ५ के नियर होइ। 11. प्र० १, २ जरि।

[३५९] 1. प्र० १, २ उठो। 2. द्वि० ३ पै। 3. प्र० १, २ पुनि, द्वि० ७ मुख।

जहँ जहँ ठाढ़ि होइ बनबासी । तहँ तहँ होइ घुँघुचिन्ह कै रासी ।
बुंद बुंद महँ जानहुँ जीऊ । गुंजा गुंजि[4] करहिं पिउ पिऊ ।
तेहि दुख भए[5] परास निपाते । लोहू बूड़ि उठे परभाते[6] ।
राते बिंब[7] भए तेहि लोहू । परवर पाक फाट हिय गोहूँ[8] ।
देखिअ जहाँ सोइ होइ[9] राता । जहाँ सो रतन कहै को[10] बाता ।

ना पावस[11] ओहि देसरें ना हेवंत बसंत ।
ना कोकिल न पपीहरा केहि सुनि आवहि कंत ॥

[३६०]

फिरि फिरि रोई न कोई डोला । आधी राति बिहंगम बोला ।
तैं फिरि फिरि दाधे सब पाँखी । केहि दुख[1] रैनि न लावसि आँखी ।
नागमती कारन कै[2] रोई । का सोवै । जौं कंत बिछोई ।
मन चित हुतें न बिसरै[3] भोरें । नैन कजल चखु रहै[4] न मोरें ।
कहिसि जाति[5] हौं[6] सिंघल दीपा । तेहि सेवाति कहँ नैना[7] सीपा[8] ।
जोगी होइ निसरा सो नाहू । तब हुत[9] कहा सँदेस न काहू ।
निति पूछौं सब[10] जोगी जंगम । कोइ निजु बात न कहै बिहंगम ।

चारिउ चक्र[11] उजारि भे सकसि सँदेसा टेकु[12] ।
कहौं बिरह दुख आपन[13] बैठि सुनहि डँड एकु ॥

[३६१]

तासौं दुख कहिए हो बीरा । जेहि सुनि कै लागै पर पीरा ।

---

४. प्र० २, द्वि० ३, ४, तृ० ३, च० १ गुंजागुंज, द्वि० २, ५, तृ० १ कूँचाकूँच, द्वि० ७ जुग जुग भजेहु । ५. प्र० १ लेत, प्र० २ देखि । ६. प्र० १, द्वि० ७ होइ राते । ७. द्वि० १ पेम, तृ० ३ बूड़ि । ८. तृ० ३ कोहूँ (उर्दू मूल) । ९. प्र० २ भोर । १०. तृ० १ कहौं केहि । ११. द्वि० ७ पावक ।

[३६०] १. द्वि० ५ गुना । २. प्र० १, २, द्वि० ४, ७, करुना कै, द्वि० ४, केहि कारन । ३. तृ० ३ बिसरै । ४. तृ० ३ अहा । ५. तृ० १, पं० १ वहि न जानि, च० १ कोइ न जाइ । ६. च० १ तेहि । ७. तृ० १ आपुन । ८. प्र० २ सेवती ताहि कौन भो मीपा । ९. द्वि० ५ दुख । १०. द्वि० १ मैं, तृ० २ उठि । ११. प्र० १, २ दिसा । १२. द्वि० ७ तुम्ह बिनु मोरे भेस । १३. द्वि० ७ आपन जो ।

को होइ भीवँ अँगवै[1] परग हा[2]। को सिंघल पहुँचावै चाहा।
जहाँ सो कंत गए होइ जोगी। हौं किंगरी भै झुरौं बियोगी।
ओहुँ सिंगी पूरे गुरु भेंटा। हौं भै भसम न आइ समेटा।
कथा जो कहै आइ पिय केरी। पाँवरि[3] होउँ जनम भरि चेरी।
ओहि के गुन सँवरत भै माला। अबहुँ न बहुरा उड़िगा छाला।
बिरह गुरुइ[4] खप्पर[5] कै[6] हिया। पवन अधार रहा होइ[7] जिया[8]।

हाड़ भए[9] झुरि किंगरी नसैं भईं सब ताँति।
रोवँ रोवँ तन धुनि उठै[10] कहेसु[11] बिथा एहि भाँति ॥*

[३६२]

रतनसेनि कै माइ सुरसती। गोपीचंद जसि मैनावती।
आँधरि बूढ़ि सुतहि[1] दुख रोवा। जोबन रतन कहाँ भुँइ टोवा[2]।
जोबन अहा लीन्ह सो[3] काढ़ी। मैं बिनु टेक करै को ठाढ़ी।
बिनु जोबन भौ आस पराई। कहाँ सपूत[4] खाँभ होइ आई[5]।
नैनन्ह दिस्टि[6] त[7] दिया बराहीं। घर अँधियार पूत[8] जौं नाहीं।

---

[३६१] १. प्र० १, २ दंगि, द्वि० २ नगवै, द्वि० ३, ४, ६, तृ० १, ३, पं० १ दंगवै। २. द्वि० ४ रहा। ३. द्वि० ७ बावरि। ४. द्वि० ४ गरदी, द्वि० ३ गुरोइ, तृ० ३ करोइ (उर्दू मूल), द्वि० ७, च० १ करो। ५. द्वि० ७ पांर करोइ जाप। ६. प्र० १ को। ७. प्र० १, द्वि० ६ सोइ, तृ० १ सो। ८. द्वि० १ पिया। ९. तृ० ३ रोईं (उर्दू मूल)। १०. प्र० १ रोवँ सो धुनि उठै, द्वि० २ उठै प्रेम धुनि रोम सब, द्वि० ७ रोवँ रोवँ धुनि उठि कहै। ११. द्वि० २ बिरह।

* इसके अनंतर प्र० १, २, द्वि० १, ३, ४, ५, ६, ७, तृ० १, २, ३ में एक अतिरिक्त छंद है।

[३६२] १. प्र० १ रोइ, प्र० २, द्वि० ७ करै, द्वि० १ बहुत, द्वि० ४, च० १, पं० १ सुठि, द्वि० ५ झुठइ, तृ० २ सो तोहि, द्वि० ३ भई। २. प्र० १, द्वि० ६ च० १ अहा मैं खोवा, द्वि० ४ कहां होइ खोवा, तृ० १ कहां भुइँ खोवा। ३. प्र० १ सब। ४. प्र० १, २, द्वि० ४, ६, पं० १ सो पूत, द्वि० ७ सोकंत। ५. द्वि० ५ गएहु यहराई। ६. द्वि० १ माँझ। ७. प्र० १ तहँ, प्र० २, द्वि० ७ तहाँ, द्वि० २, ४, ५, तृ० १, २, च० १ न, तृ० २ तो। द्वि० ३ कर, पं० १ तेहि। ८. प्र० २ कंत, द्वि० ७ रूप।

को रे चलाय[9] सरवन के ठाँऊ। टेक देहि ओहि[10] टेकों पाऊँ।
तुम्ह सरवन होइ काँवरि सजी[11]। डारि लाइ सो काहे[12] तजी[11]।
सरवन सरवन कै ररि मुई[13] सो काँवरि डारहि[14] लागि।
तुम्ह बिनु पानि न पावै[15] दसरथ लावै[16] आगि॥

[३६३]

लै सो[1] सँदेस बिहंगम चला। उठी[2] आगि बिनसा[3] सिंघला।
बिरह बजागि बीच को ठेघा[4]। धूम जो[5] उठे स्याम भए मेघा।
भरि गा गँगन लूकि तसि छूटी[6]। होइ सब नखत गिरहिं भुइँ टूटी।[7]
जहँ जहँ पुहुमी[8] जरी भा रेहू। बिरह के दगध होइ जनि केहू[9]।
राहु केतु जरि लंका जरी। औ उड़ि चिनगि चाँद महँ परी।
जाइ बिहंगम समुँद डफारा। जरे माँछ पानी भा खारा।
दाधे बन[10] तरिवर[11] जल सीपा। जाइ नियर भा सिंघल दीपा[12]।
समुँद तीर एक तरिवर जाइ बैठ तेहि रूख।
जब लगि कह न सँदेसरा[13] ना ओहि[14] प्यास न भूख॥

---

९. द्वि० ४, च० १ चला। १०. प्र० १, २ मोहि, द्वि० ४,६ जो। ११. द्वि० ७ बाँधू, बाँधू। १२. प्र० १ डार लाइ काहे मोहि, तृ० २ कौने डार लाइ सो। १३. प्र० २ अंधरे (उर्दू मूल), द्वि० २ आप ररि। १४. प्र० १ गई जो काँवरि, प्र० २, द्वि० २ मुई सो काँवरि, तृ० ३ तरिवर काँवरि, द्वि० ४, ५, च० १ माता काँवरि, द्वि० ६, ७ सो अब काँवरि, तृ० २ सोई काँवरि, द्वि० ३ बिन ररकाँवरि। १५. च० १ को मोहि पानि पियावै, पं० १ तुम्ह बिनु पानि पिये नहिं। १६. प्र० १, २, द्वि० ३, प० १ लाई।

[३६३] १. प्र० १, २, द्वि० ७ जो। २. प्र० १ लाइ। ३. प्र० २ सब, द्वि० ४, ५ सगरै, द्वि० ७ मन मों, च० १ सिगरी, शेष सभी प्रतियों में 'मनसा'। ४. द्वि० २, ३, ६, तृ० ३ थेघा। ५. तृ० ३ सो। ६. तृ० ३ छूटे, टूटे (उर्दू मूल)। ७. प्र० १ होइ निसरी जनु बीर बहूटी। ८. प्र० १, २, द्वि० ४, ७, तृ० २, च० १ भुम्मि। ९. प्र० १, २ भएउ जरि खेह, द्वि० ४ भई जनु खेहू, द्वि० ३ होइ जनु खेहू। १०. द्वि० २ बँधि। ११. द्वि० ४, ५ दाहद, प्र० १ औखद, द्वि० २, ३, ६, तृ० २, च० १, प० २ बीरिख। १२. द्वि० १ औ दाभे सब पखी हंसा, जाइ नियर भा सिंघल देसा। १३. द्वि० २, ४, ५ सँदेसा। १४. द्वि० १, ४ तब लगि।

[३६४]

रतनसेनि बन करत अहेरा। कीन्ह ओहि तरुवर तर फेरा।
सीतल बिरिछ समुँद के तीरा। अति उतंग औ छाँह गँभीरा।
तुरै बाँधि कै बैठु अकेला। औरु जो साथ करैं सब खेला।[2]
देखेसि फरी जो तरुवर साखा। बैठि सुनहिं पँखिन्ह कै भाखा।
उन्ह महँ ओहि बिहंगम अहा। नागमती जासौं दुख कहा।
पूँछहिं सबै बिहगम नामा। अहो मींत काहे तुम्ह[3] स्यामा।
कहेसि मींत मासक दुइ भए। जंबू दीप तहाँ[4] हम गए।

नगर एक हम देखा गढ़ चितउर ओहि नाउँ।
सो दुख कहौं कहाँ लगि हम दाधे तेहि गाउँ[5]॥

[३६५]

जोगी होइ निसरा जो राजा। सून नगर जानहुँ धुँध बाजा।
नागमती है ताकरि रानी। जरि बिरहैं भै कोइलि बानी।
अब लगि जरि होइहि भै छारा[1]। कहि न जाइ बिरहा कै झारा[1]।
हिया फाट वह जबहिं[2] कूकी। परे आँसु होइ होइ सब[3] लूकी।
चहुँ खंड[4] छिटकि परी[5] वह आगी। धरती जरत गँगन कहँ लागी।
बिरह दवा अस को रे[6] बुझावा[7]। चहै लागि जरि हियरें[8] धावा।
हौं पुनि तहाँ उहा दव[9] लागा[10]। तन भा स्याम जीव लै भागा।

---

[३६४] १. प्र० १, २ साथी और अहेरा, द्वि० १, च० १, पं० १ साथी और करहिं बन, द्वि० ४ साथी और करहिं सब। २. तृ० १ बैठेउ आइ उतरि तेहि छाहाँ, भा बिसराम हरख हिय माहाँ। ३. प्र० १ भै। ४. प्र० १, २ तृ० २ देस। ५. प्र० १. २ गाउँ।

[३६५] १. प्र० १, २, द्वि० २, ३, ७, तृ० ३ राखा, भाखा। २. द्वि० २, च० १ जौहि (हिंदी मूल)। ३. द्वि० भै भै, तृ० ३ होर तहँ। ४. प्र० २, तृ० ३ दिसि। ५. प्र० १, २, द्वि० ६, पं० १ छिटकि जरी, द्वि० ४, ५, ७, तृ० १ छिटकी। ६. प्र० १ को जरत। ७. तृ० २ सेरावा। ८. द्वि० ३ सचरे। ९. द्वि० २, ५ दहा बन, च० १, पं० १ जरा दव। १०. प्र० १, २ मो कहँ धुधाँरही यह लागा, द्वि० ४ हौं पुनि तहाँ सो दाधै लागा।

का तुम्ह हँसहु गरब कै करहु समुँद महँ केलि।
मति[11] ओहि बिरहे बसि परहु दहै अगिनि जल[12] मेलि॥

[३६६]

सुनि चितउर[1] राजै मन गुना। बिधि सँदेस मैं कासौं[2] सुना।
को तरिवर अस[3] पंखी भेसा[4]। नागमती कर कहै संदेसा।
को तूँ मींत मन चित्त बसेरू। देव कि दानौ पौन पखेरू।
कह[5] ब्रह्म हरि[5] वाचा तोही। सो निजु अंत बात कहु[6] मोही।
कहाँ सो नागमती तुइँ देखी। कहेसु बिरह जस मरन बिसेखी।
हौं राजा सोई भा जोगी। जेहि कारन वह ऐसि बियोगी।
जस तूँ पंखि हौहुँ दिन भरऊँ। चाहौं[7] कबहुँ[8] जाइ उड़ि परऊँ।

पंखि आँखि[9] तेहि मारग लागी दुनहुँ रहाहिं[10]।
कोइ न सँदेसी आवहि[11] तेहि क सँदेस कहाहिं।

[३६७]

पूँछसि काह सँदेस बियोगू। जोगी भया न जानसि जोगू।
दहिने संख न[1] सिंगी पूरे। बाएँ पूरि बादि[2] दिन झूरे।
तेलि बैल जस बाएँ फिरै। परा भौंर महँ सौंह न तिरै।
तुरी औ नाव दाहिन रथ हाँका। बाए फिरै कौंहार क चाका।

---

11. प्र० १ मकु। 12. द्वि० २ सिर, द्वि० ३ महँ।

[३६६] 1. तृ० ३ चितउर (उर्दू मूल)। 2. प्र० १ कापहँ, द्वि० ५ कानन। 3. प्र० १, द्वि० ४, ५, च० १ तरिवर पर, प्र० २ तरिवर तर, द्वि० ६ अस आव। 4. द्वि० ५ बेसा। 5. तृ० २ के अतिरिक्त सभी में 'सब' है। 6. प्र० १, २ बात आइ कहु, द्वि० ७ बात कहु तै. तृ० १, ३ बात बान, द्वि० ३ च० पं १ अतिबात कहु। 7. प्र० १, २ चहौं कि। 8. प्र० १, २ अबहिं, शेष में 'कोहु' (हिंदी मूल)। 9. प्र० १ नैन लाग प्र० २ मोहि आँखि, द्वि० ५ पलक आँखि। 10. प्र० १ चितवत दुनहु रहाहिं, द्वि० ३ लागे दिनहिं (उर्दू मूल) रहाहिं, द्वि० ७ लागी उहै रहाहिं द्वि० ७ लागी दिन निसि दुओ रहाहिं। 11. द्वि० ७ सँदेसी नहि आव कोइ।

[३६७] 1. द्वि० १ तैं नहि, द्वि० २, तृ० २. ३ सिगन, द्वि० ५ संखन। 2. द्वि० ६ रैनि। 3. द्वि० २ महँ सो नहिं निसरै।

तोहि अस नाहीं[४] पंखि भुलाना। उड़ै[५] सो आदि[६] जगत महँ[७] जाना।
एक दीप का आवउँ[८] तोरे। सब संसार[९] पाव तर मोरे।
दहिनें फिरै सो अस उँजियारा। जस जग चाँद सुरुज औ तारा।

मुहमद बाईं दिसि तजी एक सरवन एक[१०] आँखि।
जब ते दाहिन होइ मिला बोलु पपीहा पाँखि॥

[३६८]

हौं धुव अचल सो दाहिन लावा। फिरि सुमेरु चितउर[१] गढ़ आवा।
देखेउँ तोरे मँदिल घमोई[२]। माता तोरि आँधरि भै रोई।
जस सरवन बिनु अंधी अंधा। तस ररि मुई तोहि चित बंधा।
कहेसि मरौं अब काँवरि रेंई[३]। सरवन नाहिं पानि को देई।
गई पियास लागि तेहि सार्थां[४]। पानि दिहैं दसरथ के हार्थां[४]।
पानि न पियै आगि पै चाहा। तोहि अस पूत जरम अस लाहा[५]।
भागीरथी होइ करु फेरा। जाइ सँवारु मरन कै बेरा।

तूँ सपूत मनि ताकरि अस परदेस न लेहि।
अब ताईं मुई[६] होइहि मुएहुँ जाइ गति देहि॥

[३६६]

नागमती दुख बिरह[१] अपारा। धरती सरग जरै तेहि झारा।
नगर कोट घर बाहिर सूना। नौजि होइ घर पुरुख[२] बिहूना।

---

४. द्वि० ४, ५, तृ० ३ नाहिं जो। ५. प्र० १ उडि। ६. च० १ आव। ७. तृ० ३ पो, द्वि० ६ कहँ, प्र० १, द्वि० २, तृ० १ के। ८. च० १ आएउँ। ९. प्र० १ सातौं दीप। १०. प्र० १ सवन बायँ औ, द्वि० १, ६ एक सरवन औ।

३६८] १. द्वि० २ चितुर (उर्दू मूल तुलना० ५८७.१)। २. तृ० ३ तोर मँदिर घर मोरई, द्वि० ७ तोर मँदिल घर सोई। ३. प्र० १, द्वि० ४, ५ काँवरि को लेई, प्र० २, द्वि० ७, पं० १ अब काँवरि लेई, द्वि० २, तृ० २, च० १ अब काँवरि सेई। ४. प्र० १ साथा। ५. प्र० १ कै लाहा, द्वि० ७ जग माँहा। ६. प्र० १ जरि।

[३६९] १. तृ० ३ दगध, द्वि० ५, च० १, पं० १ तपइ। २. प्र० १ नौजि होइ घर कंत, द्वि० ६ जो घर नाहीं कंत।

तूँ साँवरू परा बस सोना। भूला जोग छरा जनु[3] टोना।
ओहि तोहि कारन मरि भै बारा[4]। रही नाग होइ पवन अधारा।
कह चीन्हन्ह पिय पहँ लै खाहू[5]। माँसु न कया जो[6] रूचै काहू[7]।
बिरह मँजूर नाग वह नारी। तूँ मँजार करु बेगि गोहारी।
माँसु गरा पाँजर[8] होइ परी। जोगी अबहुँ पहुँचु लै जरी।

देखि बिरह[9] दुख ताकर मैं सो तजा बनवास।
आएँउ भागि[10] समुँद तट[11] तबहुँ[12] न छाँड़ै[13] पास॥*

[३५०]

अस[1] परजरा[2] बिरह कर कठा[3]। मेघ स्याम भै धुआँ जो उठा।
दाधे राहु केतु गा[4] दाधा। सूरज जरा चाँद जरि[5] आधा।
औ सब नखत तराईं[6] जरहीं। टूटहिं लूक धरनि महँ परहीं।
जरी सो धरती ठाँवहि ठाँवाँ। ढंक परास जरे तेहि ठावाँ।
[7]बिरह साँस[8] तस[9] निकसै[10] झारा। धिकि धिकि[11] परबत होहिं[12] अँगारा।

---

3. प्र० १, तृ० २, च० १ छरा तोहि, प्र० २, द्वि० ५ छरा तस, द्वि० ४ छरा तुहि, तृ० १, द्वि० ३ छरा जस, पं० १ छारा तोहि। ४. प्र० १, द्वि० ४, ५, ६, तृ० १ मर भै मारा, प्र० २ मर भै मरा, द्वि० ७ भरि कै मरा, च० १ मर भल मारा। ५. द्वि० १ पहँ लै जाहू, द्वि० ४, ५, च० १ लै मो कहँ खाहू, द्वि० ७ लै करि जाहू, तृ० १ मोहि लै खाहू। ६. पं० १ होर तो। ७. तृ० २ जहँवाँ पिय देखै तुम्ह खाहू। ८. प्र० १, ०, द्वि० १, ०, ५, ७, तृ० १, २, ३, च० १ पं० १ माँजरि, द्वि० ४ माँजहि। ९. तृ० ३ दगध। १०. द्वि० २, तृ० ३ छाँहि। ११. प्र० १, २, द्वि० ४, ५, ७, पं० १ महँ, द्वि० २ लहि। १२. प्र० २, द्वि० ३, ४, ५, तृ० २ च० १, पं० १ टठम। १३. द्वि० ३ पहुँचावै।

पृ० [३५०] १. प्र० १, २ सुनि। २. द्वि० ८ पुनि जरा, द्वि० ७ मर जरा। ३. प्र० १, २ कै कथा, द्वि० ४, ५, पं० १ कर गठा, द्वि० २ कर खटा, द्वि० ७ कर काठा। ४. प्र० १ बन, प्र० २ पुनि, द्वि० ७, तृ० ३ का (उर्दू मूल)। ५. प्र० १, तृ० १ भा, पं० १ पुनि। ६. तृ० २ काँच। ७. प्र० १ सँग, च० १ तन। ८. द्वि० २ निसि निति कै। ९. प्र० १, २ धिकहिं, द्वि० ४, ५ पं० १ दहि दहि, द्वि० २ दग दकि, च० १ जो जरि। १०. द्वि० ७ परै।

भँवर पतंग जरे औ नागा। कोइलि भुँजइल औ सब[11] कागा।
बन पंछी सब जिउ लै उड़े। जल पंछी जरि[12] जल महँ बुड़े।
हँहूँ जरत तहँ निकसा[13] समुँद बुझाएउँ आइ।
समुँदौ जरा खार भा पानी[14] धूम रहा जग[15] छाइ॥

[३७१]

राजैं कहा रे सरग सँदेसी। उतरि आउ मोहि मिलु सहदेसी[1]।
पावँ टेकि[2] तोहि[3] लावौं हियरे। प्रेम सँदेस कहौ होइ नियरे।
कहा बिहंगम जो बनबासी। कित गिरिही तैं होइ उदासी।
जेहि तरिवर तर तुम अस कोऊ। कोकिल काग बराबरि दोऊ।
धरती महँ बिस चारा पारा। हारिल जानि पुहुमि[4] परिहरा[5]।
फिरौं बियोगी डारहि डारा। करौं चलै कहँ पंख सँवारा।
जियन की घरी घटत निति जाहीं। साँसहि[6] जिउ है देवसन्ह[7] नाहीं[8]।
जौं लहि फेरि[9] मुकुति है परौं न पिंजर माहँ।
जाउँ बेगि थरि आपनि है जहाँ बिंझ[10] बनाँह॥

[३७२]

कहि सो[1] सँदेस बिहंगम चला। आगि लाइ सगरिउ सिंघला।

---

११. प्र० १ होमन, प्र० २ औ होम। १२. प्र० १, २, द्वि० ३, ४, तृ० १, २ दुख, तृ० ३ रात, द्वि० ५ जन्हि। १३. द्वि० ७ प्रबत तहाँ हारि कै। १४. प्र० १, द्वि० ६, च० १ खार भा, द्वि० ५, तृ० २ पानि भा खारा। १५. प्र० १ जल।

* द्वि० १ में यह छंद नहीं है।

[३७१] १. प्र० १, द्वि० ४, ५, ७ परदेसी, तृ० ३ सुभदेसी। २, द्वि० २ आव पंखि, द्वि० ७ पाव जोरि। ३. प्र० १ कै। ४. प्र० १, द्वि० ४, ७, तृ० १ भुम्मि, प्र० २ भूजि। ५. द्वि० १ हारिल भए जानि भुइँहरा, द्वि० ५, च० १, पं० १ हारिल हिए जानि भुइ हरा, द्वि० ६ सो दुख जानि हारिल भुइँ धरा। ६. द्वि० ४, ६, तृ० २, ३, च० १ साँझहि। ७. प्र० १, २ उसाँसहि, द्वि० २ दिवस है। ८. द्वि० ३ साँस जीव घट पलटि समाई। ९. प्र० १, द्वि० २, तृ० २, च० १ फिरौं, तृ० ३ फेरु, द्वि० ४ फिरइ, द्वि० ५ फेरइ। १०. द्वि० ३, ४, तृ० १, च० १, पं० १ जेहि बीच, तृ० २ जेहि पंथ।

[३७२] १. द्वि० २ कहि सँदेस सो, द्वि० ४, ५ कहि सँदेस, तृ० ३ कहेसि सँदेस, च० १ पं० १ कहि जो सँदेस।

घरी एक राजैं गोहरावा। भा अलोप पुनि दिस्टि न आवा।
पंखी नाउँ न देखौं पाँखी। राजा रोइ फिरा कै साँखी।
जस हेरत यह पंखि हेराना। दिनेक हमहुँ अस करब पयाना[२]।
जौं लगि प्रान पिंड एक ठाऊँ। एक बेर चितउर गढ़ जाऊँ।
आवा भँवर मँदिल जहँ केवा[३]। जीउ साथ लै गएउ परेवा[४]।
तन सिंघल मन चितउर बसा। जिउ बिसँभर जनु नागिनि डसा[५]।

जेति नारि हँसि पूँछे[५] अमिअ वचन जिमि नित।
रस उतरा सो[६] चढ़ा बिरस ना[७] ओहि चित न मित॥[८]

[३७३]

बरिस एक तेहि सिंघल रहे। भोग बेरास कीन्ह जस[१] चहे[२]।
भा उदास जिउ सुना सँदेसू। संवरि चला मन चितउर[३] देसू[४]।
कँवल उदासी देखा[५] भंवरा। थिर न रहै मालति मन[६] सँवरा।
जोगी औ मन पौन परावा। कत ये रहे जौं चित्त उँचावा।
जौं जिय काढ़ि देइ इन्द कोई। जोगी भँवर न आपन होई।
तजा[७] कँवल मालति हियँ[८] घाली। अब कत थिर[९] आछै अलि आली।
गंध्रपसेनि आए सुनि बारा। कस जिउ भएउ उदास तुम्हारा।[१०]

---

२. प्र० १, २ दिन दस गएँ हमार पयाना। ३. प्र० १, २ आवा मँदिर जहाँ रह केवा। ४. द्वि० १ में इन दो पंक्तियों के स्थान पर ३७०.२, ३७०.३ दी हुई हैं। ५. प्र० १, २, द्वि० ४ बात कइ, द्वि० १ बोलै। ६. प्र० १, २ जो। ७. द्वि० २ रस उत्तर कछु भावै, तृ० २ रस उतरा रस चढ़ा। ८. द्वि० १ में छंद के इस दोहे के दूसरे, तीसरे, चौथे चरणों के स्थान पर अगले दोहे के वे ही चरण हैं।

[३७३] १. प्र० १, २ जत, द्वि० ७ सन। २. पं० १ वहे। ३. द्वि० २ सँवरि चला चितउर गढ़, तृ० ३ सँवरि चला चितउर कर, द्वि० ३, ५, तृ० २ चला सँवरि कै चितउर, च० १, पं० १ चला सँवरि कै आपन। ४. द्वि० ७ भेसू। ५. प्र० १, द्वि० ७ उदास जो देखा, प्र० २ उदास देखु जौं। ६. प्र० १, २, द्वि० ७ अब। ७. द्वि० ४, ५ चला। ८. प्र० १ गियँ। ९. प्र० १, २ अकथ कथा, द्वि० ७ सकती थिर। १०. तृ० २ गंध्रपसेनि आइ सिर नावा, अब कस जीव उदास जनावा।

मैं तुम्हहीं जिउ लावा दै नैनन्ह महँ[11] वास।
जौं तुम्ह होहु उदासी[12] तौ यह काकर[13] कबिलास ॥

[३७४]

रतनसेनि बिनवा कर जोरी। अस्तुति जोग जीभ कहँ[1] मोरी।
सहस जीभ जौं होइ गोसाईं। कहि न जाइ अस्तुति जहँ ताईं।
काँचु करा तुम्ह कंचन कीन्हा। तब भा रतन जोति तुम्ह दीन्हा।
गाँग जो निरमल[2] नीर[3] कुलीना। नार मिलें जल होइ[4] न मलीना।
तस हौं अहा मलीनी करा। मिलेउँ आइ तुम्ह भा निरमरा।
मान[5] समुंद मिला होइ सोती[6]। पाप हरा निरमल भै जोती।
तुम्ह मनि आएउँ सिंघल पुरी। तुम्हतें चढ़ेउँ राज औ कुरी।

सात समुँद तुम्ह राजा सरि न पाव कोइ घाट।
सबै आइ सिर नावहिं जहाँ तुम्हारइ[7] पाट ॥

[३७५]

अबसि[1] बिनति एक करौं गोसाईं। तब लगि कया जिऔं[2] जब ताईं।[3]
आवा आजु हमार परेवा। पाती आनि दीन्ह पति देवा।

---

११. प्र० २ दै दै नैनन्ह। १२. प्र० २, द्वि० ७ उदास अब, तृ० १ सतावहु। १३. प्र० १ तौ कावर, प्र० २, द्वि० २, ३, ४, ५, ६, ७, तृ० २, च० १ यह कावर।

[३७४] १. प्र० १, २, द्वि० २, ४, ५, तृ० २, च० १ नहिं, द्वि० ७ का। २. प्र० २ निराली। ३. प्र० १, २ तैस, द्वि० ७ गंग। ४. प्र० १ नारा मिले न होइ मलीना, तृ० ३ निरमल जल नहि होइ मलीना, द्वि० ५, तृ० १, २ नार मिले मत होइ मलीना। ५. प्र० १, २ द्वि० ७ वान, द्वि० २, ४, ५, तृ० २, प० १ पानि। ६. तृ० ३ मोती। ७. द्वि० २, ४, ६, तृ० १, प० १ तुम्हारा, तृ० ३ तुम्हारेउ, द्वि० ७ तोहार अस, तृ० २ तोहारा।

[३७५] १. प्र० १, द्वि० ३ औ, प्र० २, द्वि० ७ औसि, द्वि० २, ४, ५, च० १, प० १ औ सो। २. प्र० १, २, द्वि० २, ३, ४, ७, तृ० २, च० १, प० १ जीव। ३. द्वि० १ असि कै बिनती कीन्हि बसीठी, पहिलें करुई पाछें मीठी। (२६९.१)

राज काज औ भुइँ उपराहीं। सतुरु[४]भाइ अस कोइ हित[५]नाहीं।
आपनि आपनि करहिं सो लीका। एकहिं मारि एक चह टीका।
भएउ अमावस नखतन्ह राजू। हम कै चाँद चलावहु आजू।
राज हमार जहाँ चलि आवा। लिखि पठएन्हि अब[६] होइ परावा।
उहाँ नियर ढीली सुलितानू। होइहि भोर उठिहि जौं भानू।

तुम्ह चिरंजिवहु जौं लहि महि गँगन औ जौं लहि हम आउ[७]।
सीस हमार तहाँ निति जहाँ तुम्हारइ[८] पाउ॥

[३७६]

राजसभा सब[१] उठी[२] सँवारी[३]। अनु बिनती राखिअ पति भारी।
भाइन्ह माहँ होइ जनि फूटी। घर के भेद लंक असि[४] टूटी।
बीरौ लाइ न सूखै दीजै। पावै पानि दिस्टि सो कीजै।
अनु राखा[५] तुम्ह दीपक लेसी। पै न रहै पाहुन परदेसी।
जाकर राज जहाँ चलि आवा। उहै देस पै[६] ताकहँ भावा[७]।
हम दुहुँ नैन घालि कै राखहिं। ऐसि भाख[८]यहि जीभ न[९]भाखहिं[१०]।
देहु देवस सैं कुसल सिधावहिं। दीरघ आउ होइ[११]पुनि[१२] आवहिं।

---

४. प्र० १ नियर, तृ० १ सत्त। ५. प्र० २ दूजो, द्वि० २, ५, ६, ३, च० १ पं० १ कोऊ, द्वि० ४, तृ० १ कोई, द्वि० ७, तृ० २ कोई जग। ६. प्र० २ अन्द। ७. प्र० १, २ तुम्ह चिरंजिवहु तौलहि जौ लहि गगन महि आउ, तृ० १, २, च० १, पं० २ तुम्ह चिर जीवहि महि गगन औ हम जौ लहि आउ, द्वि० १ तुम्ह चिर जियहु तौ लगि औ मैं जब तैं आउ, द्वि० ६ तुम्ह चिरजीवहु लहि गगन औ जौ लहि हम आउ, द्वि० ७, तृ० २ तुम्ह चिर जीवहु जौ लहि मही औ हम जौ लहि आउ, द्वि० ३ तुम्ह चिर जो लहि महि गगन औ हम जौ लहि आउ। ८. द्वि० १ ठाकुर कर, द्वि० ७ तोहार दुर।

[३७६] १. द्वि० ४, तृ० २, पं० १ पुनि। २. द्वि० २ बानैन, तृ० २ बान। ३. तृ० ३ सँभारी। ४. प्र० १ सो। ५. द्वि० ७ राजा। ६. प्र० १ द्वि० ७ पुनि। ७. द्वि० १ अंत दसा पुनि होइ परावा। ८. प्र० १ ऐसी भाषा, द्वि० २ वह न रहै, तृ० ३ ऐसन जानि, द्वि० ५, ६, तृ० २, च० १, पं० १ ऐसि बोलि। ९. द्वि० २ बिनती बहु। १०. द्वि० ७ राखहिं। ११. प्र० २ दीरघ होइ होउ पुनि, च० १ दीरघ होइ बहुरि। १२. प्र० १ तौ, द्वि० ३ फिरि।

सबहिं बिचार परा अस भा गवनै कर साज।
सिद्ध गनेस मनावहु बिधि पुरवै सब[13]काज॥

[३७७]

बिनौ[1] करै पदुमावति नारी[2]। हौं पिय कँवल सो कुंद नेवारी[3]।
मोहि असि कहाँ[4]सो मालति बेली। कदम सेवती चाँप[5] चँबेली।
औ सिंगार हार जस ताका[6]। पुहुप करी अस[7] हिरदै लागा।
हौं सो[8] बसंत करौं[9] निति पूजा। कुसुम गुलाल सुदरसन कूजा।
बकचुन बिनवौं[10]अवसि बिमोही[11]। सुनि बिकाउ[12]तजि[13]जाही जूही।
नागेसरि जौं है मन[14] तोरें। पूजि न सकै बोल सरि[15] मोरें।
होइ सतबरग लीन्ह मैं सरना। आगें कंत करहु जो करना।
केत नारि समुझावै[16] भँवर न काँटे बेध।
कहै मरौं पै[17] चितउर[18] करौं जगि[19]असुमेध॥

[३७८]

गवनचार पदुमावति सुना। उठा धक्कि[1] जिय[2] औ सिर धुना।

---

१३. प्र० १, द्वि० ५, ६, तृ० २ मन। १४. प्र० २ मन।

[३७७] १. प्र० १ विनति, प्र० २ विनै। २. प्र० १, २, ३, ४, तृ० ३ वारी। ३. प्र० १, २ सुगंध सँवारी, द्वि० ४, ५, ३, च० १, पं० १ सुगंध नेवारी। ४. प्र० १ नाहिं। ५ प्र० १, २, पं० १ कुंद। ६. तृ० ३ माँगा। ७. प्र० १ सब। ८. प्र० १ होइ, प्र० २ हुऐ, तृ० ३ बिकौ, द्वि० ३ हौं जो, पं० १ होउँ। ९. तृ० २ करौं। १०. तृ० ३ बिनवै। ११. तृ० २ बकचुन बिनवौं सुनु रे बिमोही, च० १ बकचुन होउँ आव अस मोही। १२. प्र० २ सो ककउर, तृ० २ सो सिंगार। १३. प्र० १, २ जो। १४. प्र० १ चित्त। १५. तृ० ३ मोलसरि। १६. प्र० १ हँसि बात कह। १७. तृ० २, च० १ जाउँ। १८. प्र० १ गढ चितउर, प्र० २ चितउर नगर। १९. प्र० १, २, जार, तृ० ३ जाय।

*द्वि० १ में यह छंद नहीं है, केवल इसके दोहे के दूसरे, तीसरे तथा चौथे चरण छंद ३७२ के दोहे के दूसरे, तीसरे, चौथे चरणों के रूप में आए हैं। तृ० ३ में भी यह छंद यहाँ न आकर छंद ३७२ के बाद आता है।

[३७८] १. प्र० १, द्वि० ५, ७, ३, च० १, पं० १ धमकि, द्वि० २, तृ० १, ३ धरकि। २. द्वि० ६ मन।

गदगर नैन आए भरि आँसू। छाँड़ब यह सिंघल कबिलासू।
छाँड़िउँ[3] नैहर चलिउँ बिछोई। एहि रे दिवस मैं होतहि रोई।
छाँड़िउँ[3] आपन सखी सहेली। दूरि गवन तजि चलिउँ[3] अकेली।
जहाँ न रहन भएउ निज चालू। होतहि कस न भएउ तहँ[4] कालू।
नैहर आएँ का सुख देखा। जनु होइ गा सपने कर लेखा।
राखत बारि न पिता निछोहा। कत बियाहि कै[5] दीन्ह बिछोहा।

हिएँ आइ दुख[6] बाजा जिउ जानहु गा छेंकि।
मन तिवानि कै[7] रोवै हरि भँडार कर टेकि॥

[३७६]

पुनि पदुमावति[1] सखीं बोलाईं। सुनि कै गवन मिलै सब आईं।
मिलहु सखी हम तहँवाँ जाहीं। जहाँ जाइ फिरि आवन नाहीं।
सात समुंद्र पार वह देसू। कत रे मिलन कत आव[2] सँदेसू।
अगम पंथ परदेस सिधारी। न जनहु[3] कुसल[4] कि बिथा हमारी।
पितैं निछोह किएउ[5] हिय माहाँ। तहाँ को हमहिं राख गहि बाहाँ।
हम तुम्ह एक मिले[6] सँग खेला। अंत[7] बिछोउ आनि केइँ[8] मेला[9]।
तुम्ह असि हितू[10] सँघाति पियारी। जियत जीय नहिं करौं[11] निनारी।

कंत चलाई[12] का करौं आएसु जाइ न मेंटि[13]।
पुनि हम मिलहिं कि ना मिलहिं लेहु सहेलिहु भेंटि॥[14]

---

3. प्र० १, २, द्वि० १ छाँडब, चलब। 4. द्वि० ७ लहिबै। 5. प्र० १ जियाइ कै दीन्ह, प्र० २, द्वि० ७ जीयन अस दीन्ह, तृ० २ बियाहि दुख दीन्ह। 6. द्वि० ७ अस। 7. प्र० २ करि।

३७६] 1. तृ० ३ सुनि पदुमावति, तृ० २ पदुमावति सब। 2. प्र० १ को कहै, प्र० २ कंत कहै, द्वि० ६ दस आव, द्वि० ७ घर आव। 3. तृ० ३ न जानहु द्वि० ७ न जानी, पं० १ न जनी। 4. प्र० २ सरग, द्वि० ५ केलि। 5. द्वि० १, ६ कीन्ह। 6. प्र० २ मते। 7. द्वि० १ अलक। 8. प्र० १, २, द्वि० २ कैम केहँ, द्वि० ७ कंत के। 9. द्वि० ४, ६ केइँ रे बिछोव आनि बिच मेला। 10. प्र० १, २, द्वि० ४, ७ हती। 11. प्र० २ करनि। 12. तृ० ३ चला कैं, द्वि० ७ चला जो। 13. प्र० १, द्वि० ७ जेहि अमेट। 14. द्वि० १ में दोहा अगले छंद का है।

[३८०]

धनि रोवत सब रोवहिं सखीं। हम तुम्ह देखि आपु कहँ झखीं।
तुम्ह ऐसी जहँ रहै न पाईं। पुनि हम काह[1] जो आहिं पराईं।
आदि पिता जो अहा हमारा। ओह नहिं यह दिन हिएँ[2] विचारा।
छोह न कीन्ह निछोहैं ओहूँ। गा हम बेंचि लागि एक गोहूँ।
मकु गोहूँ कर हिय बेहराना[3]। पै सो पिता नहिं हिएँ छोहाना।
औ हम देखी सखी सरेखी। एहि नैहर पाहुन के लेखी।
तब तेइँ नैहर नाहिं पै चाहा। जेहिं ससुरारि अधिक होइ[4] लाहा।

चलने[5] कहँ हम औतरीं औ[6] चलन सिखा हम[7] आइ।
अब सो चलन चलावै को राखै गहि पाइ॥[8]

[३८१]

तुम्ह वारी[1] पिय चहुँ चक राजा[2]। गरब किरोध ओहि सब छाजा।
सब फर फूल ओहि कै[3] साखा। चहै सो चूरै[4] चहै सो राखा[5]।
आएसु लिहें रहेहु निति[6] हाथा। सेवा करेहु लाइ भुइँ माँथा।
बर पीपर सिर ऊभ जो कीन्हा। पाकरि तेहि ते खीन फर दीन्हा।
बँवरि जो पौंढ़ि सीस भुइँ लावा। बड़ फर सुभर[7] ओहि पै पावा।
आँब जो फरि कै नवै तराहीं। तब अंम्रित भा सब [8]उपराहीं।
सोइ पियारी पियहि पिरीती। रहै जो सेवा[8] आएसु जीती[9]।

---

[३८०] [1]. प्र० १, २ कहाँ, द्वि० ७ को। [2]. प्र० १ कीन्ह। [3]. प्र० २ चरराना। [4]. प्र० १ सुख, प्र० २ भी, तृ० २ सुद्ध। [5]. द्वि० ६ जानें। [6]. द्वि० ५ औतरीं। [7]. प्र० १, द्वि० ४ तहँ, तृ० १ जो' तृ० २ जग, तृ० ३ जहँ। [8]. द्वि०१ में दोहा ३८४ छंद का है।

[३८१] [1]. च० १ रानी। [2]. प्र० २ जान सरेखा, द्वि० २ है जग राजा, द्वि० १ ४, ५, ६, ७, तृ० ३, पं० १ भो जग राजा, द्वि० ३, तृ० १ यह जग राजा, तृ० २ निह जग राजा, च० १ निह चक राजा। [3]. प्र० १ पै। [4]. प्र० १ २, द्वि० ४, ७ तोरै। [5]. द्वि० १ सबहि फूल ते सबहिं पिआरी, औ सब फूल मौंह उजियारी। [6]. प्र० २ तुम्ह। [7]. द्वि० ४, तृ० ३ सुकर, द्वि० ५ जगत। [8]. तृ० १, ३ पिय के। [9]. द्वि० १ सोइ सोहागिनि पीय पियारी, सोइ सुहागिनि पिय पतवारी।

पोथा काढ़ि गवन दिन देखहु कवन देवस दहुँ[10] चाल।
दिसासूर[11] औ चक्र जोगिनी सौहँ न चलिऔ काल ॥

[३८२]

आदित सूक पछिउँ दिसि[1] राहू। बिहफै दखिन लंक दिसि डाहू।
सोम सनीचर पुरुब न चालू। मंगर बुद्ध उतर दिसि कालू।
अवसि चला चाहै जौं कोई। ओखद कहौं रोग कहँ सोई[2]।
मंगर चलत मेलु मुख धना। चलिअ सोम देखिअ दरपना।
सूकहि चलत मेलु मुख राई। बिहफै दखिन चलत गुर खाई।
आदित हीं तँबोर[3] मुख मंडिअ। बावभिरंग[4] सनीचर खंडिअ।
बुद्धहिं दधि कै चलिअ भोजना। ओखद यहै और नहिं खोजना।[5]

अब सुनु चक्र जोगिनी ते पुनि[6] थिर न रहाहिं[7]।
तीसौ देवस चंद्रमा[8] आठौ दिसा फिराहिं[9]॥

[३८३]

बारह ओनइस चारि सताइस। जोगिनि पच्छिउँ दिसा गनाइस।
नव सोरह चौबिस औ एका। पुरुब दखिन गौनै कै टेका।
तीन एगारह छबिस अठारह। जोगिनि दक्खिन दिसा बिचारह।
दुइ पचीस सत्रह औ दसा। दक्खिन पछिउँ कोन बिच बसा।
तेइस तीस आठ पंद्रहा। जोगिनि होइ पुरब[1] सामुँहा।[2]

---

१०. प्र० १, २ है, द्वि० ५ कहँ। ११. द्वि० ३ दिसासून।

[३८२] १. प्र० २, द्वि० २, तृ० १, च० १ प० १ ससि, तृ० ३ सुक, द्वि० ६ बस। २. द्वि० २ गति सोई, तृ० ३ गहि (उर्दू मूल) सोई, द्वि० ४, ५ नहिं होई। ३. प्र० १, द्वि० ५ आदित वहँ तँबोर, प्र० २, द्वि० ७ आदित तँबोर, द्वि० १ आदित चलिअ तँबोर, तृ० ३ आदि तँबोर आनि, द्वि० ४, ६, तृ० १, च० १, पं० १ आदित तँबोर मेलि, द्वि० ३ आदित तँबोर लेहि। ४. तृ० ३ मँगरा दीन। ५. तृ० ३ बुद्धहि दधि भोजन कै जाई, ओषधि इहै कहौं गनिआई। ६. द्वि० ४ मुइँ। ७. प्र० १, २ आठहु दिसा फिराहिं, द्वि० २ बिपला भर न रहाहिं। ८. प्र० १ तीन देवस पुनि चंद्रमा। ९. प्र० १, २ सो पुनि थिर न रहाहिं।

[३८३] १. द्वि० ६ उत्तर। २. तृ० ३ तेइस तीस पंद्रह औ आठ, जोगिनि उत्तर दिसा कहँ जात। (तुलना० ३८३ ७)

बीस अठारह तेरह[3] पाँचा। उत्तर पछिउँ[4] कोन तेहि बाँचा।
चौदह बाइस ओनतिस सात। जोगिनि उतर[5] दिसा कहँ[6] जात।

एकइस औ छ चौदह जोगिनि[7] उत्तर पुरुब[8] के कोन।
यह गनि चक्र जोगिनी बाँचहु[9] जौं चाहौ सिधि होन॥

[३८४]

चलहु चलहु भा पिय कर चालू। घरी न देख लेत जिय कालू।
समदि लोग धनि चढ़ी बेवाना। जो दिन डरी सो आइ तुलाना।
रोवहिं मातु पिता औ भाई। कोइ न टेक जौं कंत चलाई।
रोवै सब नैहर सिंघला। लै बजाइ कै राजा चला।
तजा राज रावन का कोऊ। छाँड़ी लंक भभीखन[1] लेऊ[2]।[3]
फिरी सखी भेंटत तजि भीरा[4]। अंत कंत सो भएउ गिरीरा।
कोउ काहूँ कर नाहिं नियाना। मया मोह बाँधा अरुझाना।

कंचन कया सो नारि की रहा न तोला माँसु।
कत कसौटी घालि कै चूरा गढ़ै कि हाँसु॥[5]

[३८५]

जौं पहुँचाइ फिरा[1] सब कोऊ। चले साथ गुन औगुन दोऊ।

---

3. प्र० २ चाँद तेरह औ। 4. प्र० १ दखिन। 5. द्वि० ४, ६ पुरुब। 6. प्र० २, द्वि० ६, प० १ बिच, च० १ निजु। 7. प्र० १, द्वि० ४ जोगिनि, प्र० २, द्वि० ७ चाँद अठाइस, तृ० १, प० १ चार जोगिनी, च० २ चाँद जोगिनी। 8. द्वि० ७ पछिउँ। 9. प्र० १, द्वि० ६ जोगिनी, तृ० १ जोगिनी बारह।

*इसके अनन्तर प्र० १, २, द्वि० २, ६, ७ में तीन तथा द्वि० ४, ५ में चार अतिरिक्त छंद हैं। (देखिए परिशिष्ट)

[३८४] 1. प्र० १ कोर अब। 2. द्वि० २, तृ० १ देऊ। 3. द्वि० ६ में यह पंक्ति छूट गई है, च० १, पं० १ तजा राज नैहर का काजू, छाडी लंक भभीखन राजू। 4. प्र० १, २ चली सो सखी अंत तजि भीरा, द्वि० २ बहुरी सखी सहेली भीरा, तृ० ३ फिरि सखि भेंटि तजी मै भीरा, द्वि० ७ बहुरीं सबै आइ जत भीर। 5. द्वि० १ में दोहा छंद ३७९ का है।

[३८५] 1. प्र० १, २, तृ० २, द्वि० ३ चला, द्वि० २ जो।

औ सँग चला गवन जेत[2] साजा। एहै देइ पारै अस राजा।
डाँड़ी सहस चलीं सँग चेरीं। सबै पदुमिनी सिंघल केरीं।
भल[3] पटवन्ह रारवार[4] सँवारे। लाख चारि एक भरे पेटारे।
रतन पदारथ मानिक मोंती। काढ़ि भँडार दीन्ह रथ जोती।
परखि सो रतन पारखिन्ह कहा। एक एक नग सिस्टिहि वर लहा।
सहस पाँति तुरियन्ह कै चली। औ सै पाँति हस्ति सिंघली।

लिखै लाग जो लेखा[5] कहै न पारहि जोरि।
अरबुद खरबुद नील सँख औ खाँद[6] पदुम[7] करोरि॥

[३८६]

देखि गवन[1] राजा गरवाना। दिस्टि माहँ कोइ औरु न आना[2]।
जौं मैं होव समुँद के पारा। को मोरि जोरि जगत संसारा[3]।
दरब त गरब लोभ विख मूरी। दत्त[4] न रहै सत्त होइ दूरी।
दत्त सत्त एइ दूनौ भाई। दत्त न रहै सत्त पुनि जाई।

---

२. प्र० १ चर, द्वि० ४, ५ सच, द्वि० ६, तृ० २, पं० १ जस। ३. द्वि० २ फल, तृ० २ भा, च० १ भरि। ४. द्वि० २ खरवाट। ५. प्र० १, २, द्वि० ३ जो लाखन्ह लेखा, तृ० ३ पार जो लेखा, द्वि० ४, ५ लाग जो लेखा, द्वि० ७ लाख जौ लेखक। ६. प्र० १, च० १ औ बहु, द्वि० २ लाख सो, द्वि० २ सौकँद, तृ० ३ चंदो, द्वि० ४ औ बहु, द्वि० ६ औ पुनि, द्वि० ७ औ जो, तृ० २ तहँ उठि, द्वि० ३ सौगँद, तृ० १ औ खंदहि, पं० १ औ गंदो। ७. द्वि० १ कोटिन्ह।

* द्वि० ३, तृ० २, च० १ में इसके अनंतर एक अतिरिक्त छंद है। (देखिए परिशिष्ट)।

[३८६] १. द्वि० ४, ५ दरब। २. प्र० २, द्वि० ७ अन धन गोहन देम मव साजा। राजा देखि गरब मन गाजा, (तेनी गोन गोहन धनि साजा—प्र० २) द्वि० २ देखि गवन अस गोहन साजा, भएउ गरब मन बोला राजा। द्वि० ६ एत गवन गोहन धन साजा, राजा देखि गरब मन गाजा। च० १ देखि तेन गोहन धन साजा, राजा देखि गरब मन गाजा। पं० १ देखि गवन गोहन धन साजा, राजा देखि गरब मन गाजा। ३. प्र० २, द्वि० २, तृ० १, पं० १ को मोरे जोगित ससारा, तृ० ३ को मोरी जोरी जुगुति (उर्दू मूल) संसारा, द्वि० ४ को है मोहि जगत संसारा, तृ० २, च० १ को है मोरे जगत संसारा। ४. तृ० ३ दरब।

जहाँ लोभ तहँ पाप सँघाती। संचि कै मरै आन कै थाती।
सिद्धन्ह दरब आगि कै थापा। कोई जरा जारि कोइ तापा।
काहू चाँद काहू भा राहू। काहू अँमित बिख भा काहू।

नस फूला मन राजा लोभ पाप अँध कूप।
आइ समुँद्र ठाढ़ भा होइ दानी के रूप॥*

[३८७]

बोहित भरे[1] चला लै रानी। दान माँगि सत देखै दानी।
लोभ न कीजै दीजै[2] दानू। दानहि पुन्य होइ कल्यानू।
दरबहि दान देइ बिधि कहा। दान मोख होइ दोख न रहा।
दान आहि सब दरब कचूरू। दान लाभ होइ बाँचै मूरू।
दान करै रछ्या मँझ नीराँ। दान खेइ लै लावै तीराँ।
दान करन दै दुइ जग तरा। रावन संचि अगिनि महँ जरा।
दान मेरु[3] बढ़ि[4] लाग अकाराँ। सैंति कुबेर बूड़[5] तेहि भाराँ[6]।[7]

चालिस अंस दरब जह एक अस तहँ मोर।
नाहिं तो जरै कि बूड़ै कै निसि मूसहिं चोर॥

[३८८]

सुनि सो दान राजै[1] रिस मानी। केइँ बौराएसु बौरे दानी।
सोई पुरुष दरब जेहि सैंती। दरबहि तें सुनु बातैं[5] एती।
दरब त[1] धरम करम औ राजा[2]। दरब त[1] सुद्धि बुद्धि बल[3] गाजा।[4]
दरब त[1] गरबि करै जो[5] चाहा। दरब त[1] धरती सरग बेसाहा।

---

* प्र० १ में यह छंद नहीं है।

३८७] १. प्र० १, २, द्वि० ७ भरा, तृ० ३ बोझि। २. प्र० १ करहु देहु कछु प्र० २, द्वि० ७ करहु देहु हम। ३. द्वि० १ मेव। ४. प्र० १, द्वि० ७ चढ़ि, द्वि० २, ४, ५ बढ़, तृ० ३ बिध। ५. प्र० १, २, द्वि० ७ मुआ। ६. च० १ मझधारों। ७. द्वि० ६ (यथा-३) सोई पुरुष दरब जेइ सेंती। दरब भएँ पुनि बातै एती। (३८८-२)

३८८] १. तृ० १ दरब थै, तृ० २ दरब तो। २ च० १ सन छाजा। ३. द्वि० १ दल। ४ द्वि० ६ में यह पंक्ति नहीं है। ५. च० १ जन।

दरब तेँ[6] हाथ आव कबिलासू। दरब तेँ[7] आछरि[8] छाँड़ न पासू।
दरब तेँ निरगुन होइ गुनवंता। दरब तेँ कुबुज होइ रुपवंता।
दरब रहै भुइँ दिपै लिलारा। अस मनि दरब देइ को पारा।

कहा समुँद रे लोभी बैरी दरब न झाँपु।
भएउ न काहू आपन मूँदि[8] पेटारे साँपु॥*

[३८६]

आधे[1] समुँद आए सो नाहीं। उठी बाउ आँधी उपराहीं[2]।
लहरैं[3] उठीं समुँद उलथाना। भूला पंथ सरग नियराना।
अदिन आइ जौं पहुँची काऊ। पाहन उड़ाइ बहै सो बाऊ।[4]
बोहित बहे[5] लंक दिसि[6] ताके[7]। मारग छाँड़ि कुमारग हाँके[7]।[8]
जौं लै भार निबाहि न पारा। सो का गरब करै कनहारा[9]।
दरब भार सँग काहु न उठा। जेइ सैंता तेहि सौं[10]पुनि रूठा।
गहि पखान लै पंखि न उड़ा। मोर मोर जेइँ कीन्ह सो बुड़ा।

दरब जो जानहिं आपन भूलहिं गरब मनाहिं[11]।
जौं[12] रे उठाइ न लै सकं[13] थोरि चले[14] जल माहँ॥

---

६. च० १ सुंदरि। ७. तृ० २ दरब तें। ८. प्र० २, द्वि० १, तृ० ३, च० १ पालि, द्वि० ७ घालि।

* प्र० १, २ में इसके अनंतर छः अतिरिक्त छंद हैं। (देखिए परिशिष्ट)

[३८९] १. द्वि० ७ मध। २. द्वि० २, ३, तृ० १, ३ आँधी उतराही, तृ० २ बोहित उलटाहीं। ३. प्र० २ ऐसी। ४. द्वि० १ अदिन आइ एक पूजा आई, पाहन उड़ै बहु कहि नहिं जाई। ५. प्र० १ उड़े। ६. प्र० १, २ द्वि० ७ मग। ७. तृ० २ चले रले। ८. द्वि० ६ बोहित बहे लंक दिसि दिसि जाहीं, जब बहोरि नहिं बहुरहिं नाहीं। ९. प्र० २, द्वि० २, तृ० १ गरब करै के हारा; द्वि० ७. तृ० ३ गरब करै का हारा; द्वि० ४, ५ गरब करै कन धारा; तृ० २ गरब करै जो हारा; च० १, पं० २ लेइ गरब करि हारा। १०. प्र० १, २, द्वि० ७ च० १ ताही सौं। ११. प्र० १ भूलि गरब मन माहँ; प्र० २ भूलहिं गरब मन माँह; द्वि० २ बोलहिं गरब मनाँह, द्वि० ४ भूलहिं गरब न माँह। १२. प्र० १सो। १३. प्र० २ सकहिं। १४. प्र० २ चलहिं।

[३९०]

केवट एक भभीखन केरा। आवा मंछ कर करत अहेरा।
लंका कर राकस अति कारा। आवै चला मेघ अँधियारा।
पाँच मुंड दस बाहैं ताही। डहि भौ स्याम लंक जब डाही।
धुवाँ उठै मुख स्वाँस सँघाता। निकसै आगि कहै जव[1] बाता।
फेकरे मुंड चँवर जनु लाए। निकसि[2] दाँत मुँह बाहिर आए।
देह रीछ कै रीछ डेराई। देखत दिस्टि धाइ जनु खाई।
राते नैन निडेरें[3] आवा। देखि भयावनु सब डर खावा।

धरती पाय सरग सिर जानहुँ सहसराबाहु।
चाँद सुरुज नखतन्ह मह[4] अस दीखा जस राहु॥

[३९१]

बोहित वहे न मानहिं खेवा[1]। राकस देखि हँसा जस देवा।
बहुते दिनन्ह[2] बार भै दूजी। अजगर केरि आइ भख पूजी।
इहै पदुमिनी भभीखन पावा। जानहुँ आजु अजोध्या छावा[3]।
जानहुँ रावन पाई सीता। लंका बसी रमाएन बीता[4]।
मंछ देखि जैसें बग आवा। टोइ टोइ भुइँ पाउ उठावा।
आइ नियर भै कीन्ह जोहारू। पूँछा खेम कुसल बेवहारू।
जो बिस्वास घातिका देवा। बड़ बिस्वास करै कै सेवा।

कहाँ मीत तुम्ह भूलेहु औ जावेहु केहि घाट[5]।
हौं तुम्हार अस सेवक[6] लाइ देउँ तेहि बाट[7]॥

---

[३९०] १. द्वि० २, ३, ४, ५, ६, ७, तृ० १, ३, च० १ जो (हिंदी मूल), तृ० २ मुख। २. प्र० १ निसरि। ३. द्वि० २, ३ निडेरत, द्वि० ७ जो टेरें। ४. प्र० १, २, द्वि० ७, तृ० २, च० १, पं० १ औ नखतन्ह, द्वि० २, ३, ५, तृ० १ औ नखत महँ।

[३९१] १. प्र० १, २, द्वि० ७ खेऊ यह भेऊ। २. प्र० २ देवस। ३. प्र० २ आवा। ४. प्र० १, द्वि० ४, ५ ७, च० १ जीता। ५. प्र० १ आइ परेहु केहि बाट, प्र० २ आए जो बहि केहि घाट, द्वि० १ औ भूलि परेहु एहि बाट। ६. प्र० १ जन सेवक, प्र० २ जस सेवक, द्वि० ७ सेवक जस, द्वि० १, तृ० ३ अस खेवक। ७. तृ० ३ घाट।

[३९२]

गाढ़[1] परें जिउ बाउर होई। जो भलि बात कहै भल सोई।
राजें राकस नियर बोलावा। आगें कीन्ह पंथ जनु पावा।
बहु पसाउ राकस कहँ बोला। बेगि टेकु[2] पुहुमी सब डोला।
तूँ सेवक सेवकन्ह उपराहीं। बोहित[3] तीर लाउ गहि बाँहीं[4]।
तोहि तें तीर[5] घाट जौं पावौं। नवगिरिहीं टोडर[6] पहिरावौं।
कुंडल स्रवन देउँ नग लाई। महरा कै सौंपौं महराई।
तस राकस तोरि पुरवौं आसा। रकमाइँधि कै रहै[7] न बासा।

राजें बोरा दीन्हेउ[8] जानैं नाहिं बिसवास।
बगु अपने भख कारन भएउ[9] मंछ कर दास॥

[३९३]

राकस कहा गोसाइँ निनाती। भल सेवक राकस कै जाती।
जहिया लंक दही स्री रामा। सेव न छाँड़ि भएउँ उहि स्यामा।
अबहूँ सेव करहिं सँग लागे। मानुस भूलि होहिं तिन्ह आगे।
सेत बंध जहँ राघौ बाँधा। तहँ लै चढ़ौं भारु मैं काँधा।
पै जब तुरित दान कछु पावौं।[1] तुरित खेइ ओहि[2] बाँध चढ़ावौं[3]।
तुरित जो दान पान हँसि दिया[4]।[5] थोरा दान बहुत पुनि[6] किया[4]।
सेव कराइ जो दीजै दानू। दान नाहिं सेवा बर जानू[7]।

---

[३९२] १. प्र० २, तृ० ३ गाढ़इ (उर्दू मूल) २. च० १, प० १ बोहित फिरै। ३. च० १ तुरत। ४. प्र० १, २, द्वि० ७ टेकु बहे जनु जाहीं। ५. प्र० २ बीर। ६. प्र० २ नवगिरिहि टोडर तोहि, द्वि० १ नव गढ़ार, द्वि० २ दुहूँ बाँह टोडर, तृ० ३ नव गढ़ टोडर तोहि। ७. प्र० १, २ आव। ८. प्र० १, २, द्वि० ७ दीन्ह हँसि। ९. द्वि० १, ३, ४, ५, तृ० ३ होर।

[३९३] १. पं० १ तुरित जो दान पान हँसि पावौं (तुलना० ३९३.६)। २. प्र० १ बोहित खेइ ओहि, प्र० २ बोहित खेइ लै। ३. च० १ लै पार लगावौं। ४. प्र० १ द्वि० २, ४, ५, तृ० २, च० १ प० १ दीजै. कीजै, प्र० २ दीन्हा, कीन्हा, द्वि० ७ दीन्हा, कीन्हा, द्वि० ३, ६ तृ० १, ३ दीजा, कीजा। ५. पं० १ पै अब तुरित दान कछु दीजै। (तुलना० ३९३.५)। ६. प्र० १, २ मान सौं। ७. प्र० १ दानहिं सेवा सो बड़ जानू, च० १ दान न होई सेवा परवानू।

दिया बुझा[८] सतु ना[९] रहा हुत निरमल जेहि रूप।
बहुँ आँधी उड़ि आइ कै[१०] मारि किया[११] अँध कूप।

[३६४]

जहाँ समुँद मँझधार भँडारू। फिरै पानि पातार दुवारू।
फिरि फिरि पानि ओहि ठाँ भरई। बहुरि न निकसै जो तहँ परई।
ओहि ठाँव महिरावन पुरी। हलका तर जमकातरि[१] जुरी[२]।
ओहि ठाँव महिरावन मारा। परे[३] हाड़ जनु परे पहारा।
परी रीरि[४] जहँ ताकरि पीठी[५]। सेतबंध अस आवै[६] डीठी[७]।
राकस आनि तहाँ कै छरै। बोहित भँवर चक्र महँ परै।
फिरै लाग बोहित अस आई[८]। जनु कुम्हार धरि[९] चाक[१०] फिराई[८]।

राजै कहा रे राकस बौरे[११] जानि बूझि बौरासि।
सेतबंध जहँ देखिअ आगें[१२] कस न तहाँ लै जासि॥

[३६५]

सुनि बाउर राकस तब[१] हँसा। जानहुँ टूटि सरग भुइँ खसा।

---

८. द्वि० ४, ५ दै बाचा। ९. प्र० १, २, द्वि० ७ सत ना रहा। १०. प्र० १ आँधी उठी अदिष्ट की, प्र० २ बहु आँधी अदिष्ट की, द्वि० २ भा अथा औ पातकी, तृ० ३ बहु आँधी उड़ि पास गवि, द्वि० ६ बहु आँधी तेहि ताप की, द्वि० ७ बहु आँधी ब्योम कीआ, द्वि० ३, च० १ बहु आँधी उड़ि आई, पं० १ भै आँधी उड़ि पाप कों। ११. द्वि० ३ मारग भा।

[३९४] १. प्र० १, २ द्वि० ७ हाड़ ताकर जम कातर, च० १ कल कातर जम कातर। २. प्र० १ फिरी, प्र० २, द्वि० ४, ७ चुरी। ३. प्र० १, २ दीख। ४. द्वि० ६ देखी रीर, च० १ वहै रीर। ५. प्र० १, २, द्वि० २, ७, च० १ तहँ ताकरि पीठी, द्वि० ६, पं० १ परी जहँ पीठी। ६. प्र० १,२ लागी। ७. द्वि० ५ पीठी। ८. प्र० १ आवा, फिरावा, प० २ आवा, भँवावा, द्वि० ७ आई भँवाई। ९. प्र० १, २ द्वि० ३, ७, तृ० १, ३ जनहुँ घालि कै, द्वि० २ जनहुँ कुम्हार का। १०. द्वि० २ चक्र। ११. द्वि० १, ६ राकस। १२. प्र० १ वह आगे, प्र० २, द्वि० ४, ५, ७ यह देखिअ, द्वि० १ जहँ देखलाई, द्वि० २, ६ है आगें, च० १ अस देखिअ।

[३९५] १. प्र० १, २, द्वि० ७ सुनि बाउर मन राकस, तृ० २, च० १ सेतुबंध सुनि गरस।

को बाउर बुहुँ घाँरे देखा। सो बाउर भख लागि सरेखा[2]।
बाउर पंखि जो रह धरि माँटी[3]। जीभ चढ़ाइ भखै निति चाँटी[4]।
बाउर बुहुँ जो भखै कह आने। तबहुँ न समुझहु पंथ भुलाने।
महिरावन कै रीरि जो परी। कहाँ सो सेतबंध बुधि हरी।
यह सो आहि महिरावन पुरी। जहँवाँ सरग नियर[5] घर[6] दूरी।
अब पछिताहु दरब जस जोरा। करहु सरग चढ़ि हाथ मरोरा।

जबहिं जियत महिरावन लेत जगत कर भार।
जौं रे मुवा लेइ गया न हाड़ौ[8] अस होइ परा पहार॥

[३६६]

बोहित भँवै[1] भवै जस पानी। नाचो राकस आस[2] तुलानी[3]।
बूड़हिं हस्ति घोर मानवा। चहुँ दिस आइ जुरे मँसुखवा।
तेतखन राजपंखि एक आवा। सिखर टूट तस डहन डोलावा।
परा दिरिट वह राकस खोटा। ताकेसि जैस[4] हस्ति बड़[5] मोंटा।
आइ ओहि राकस पर टूटा। गहि लै उड़ा भँवर जल[6] छूटा[7]।
बोहित टूक टूक सब भए[8]। अस न जाने दहुँ कहँ गए[9]।

---

२. द्वि० ७ तस लागु विसेखा। ३. प्र० १, २, द्वि० ७ बाउर पंखि सोउ (प्र० २ सेठ) धर माँटी, द्वि० १, २, ३, ६, तृ० १,२ बाउर पखि वेहूँ मखु माँटी। ४. द्वि० ६, ७ भस कहँ जीभ चढ़ावै चाँटी। ५. द्वि० २, ६, तृ० १, २ में इस पंक्ति के दोनों चरण परस्पर स्थानान्तरित हैं। ६. द्वि० ७ मरन जियन। ७. प्र० १, २ भुइँ। ८. प्र० १, द्वि० ४ जौं रे मुवा लै गया नहिं, द्वि० १ मुवा हाड़ नहिं लै सका, द्वि० २, ३,५ जौ मुवा हाड न लै गा, द्वि० ७ वोह मुवा लै हाड नहीं, तृ० १, च० १, पं० १ जौ मुवा हाड न ले सका।

[३६६] १. द्वि० १ सबै। २. द्वि० १, तृ० १ आइ। ३. प्र० १ जौं जौं बोहित लहरैं खाहीं, नाचै राकस भा उपराहीं। प्र० २ जौं जौं बोहित भाँवरि खाहीं, नाचै राकस भा उपराहीं। द्वि० ६ बोहित भँवर परे तेहि आई, नाचै राकस भलि भख पाई। ४. प्र० १, २ जानेसि इहै, द्वि० ६ जानेसि वहै, पं० १ कहेसि कि आहि। ५. प्र० १ कर। ६. द्वि० ७ जनु। ७. प्र० १, २ फूटा। ८. प्र० १, २, द्वि० ६, ७, च० १ होइ गए। ९. प्र० १, २, द्वि० ७ दल महँ आपु आपु कहँ भए।

भए राजा रानी दुइ पाटा। दूनौं बहे भए दुइ बाटा।
काया जीउ मिलाइ कै कीन्हेसि अनँद उछाहुँ[10]।
लवटि बिछोउ दीन्ह तस[11] कोउ न जानै काहुँ[12] ॥[13]*

[३९७]

मुरुछि परी पदुमावति रानी। कहँ जिउ कहँ पिउ अैस न जानी[1]।
जानु चित्र मूरति गहि[2] लाई। पाटा परी बही तसि जाई।
जनम न पौन सहै सुकुमारा। तेहि सो परा दुख समुँद अपारा।
लखिमिनि मान[3] समुँद कै बेटी। ता कहँ लच्छि भई जेइँ भेंटी।
खेलत अही सहेलिन्ह सेंती। पाटा जाइ लगा तेहि रेती।
कहेसि सहेलिहु देखहु पाटा। मूरति एक लागि एहि[4] घाटा।
जौं देखेन्हि तिरिया[5] है साँसा। फूल मुएउ पै मुई न बासा।

रंग जो राती पेम[6] कै जानहुँ बीर बहूटि।
आइ बही दधि समुँद महँ[7] पै रंग गएउ न छूटि॥

---

१०. द्वि० २, ४, ५ ६, पं० १ मारि करे दुइ खंड। ११. प्र० १ बिछुरे आपु आपु कहँ पल महँ, प्र० २ बिछुरे आपु आपु कहँ, द्वि० २, ४, ५, ६, पं० १ तन रोवन धरती परा, द्वि० ७ बिछुरे आपु आपु कहँ दोऊ। १२. द्वि० २, ४, ५, ६, पं० १ जीव चला महांड, द्वि० ७ एक पलक एक डंड। १३. द्वि० ३ धनि औ पीउ मिले हुत जैसे पिंड परान।
एक पलक महँ बिछुरे कोउ न काहूँ जान॥

* च० १ में यह छंद नहीं है, किंतु जहाज का टूटना राजा और रानी के एक दूसरे से अलग होने के लिए प्रसंग में अनिवार्य है, इसलिए यह छंद भी अनिवार्य है।

[२९७] १. प्र० १ कहाँ जीउ कहँ पीउ सयानी, च० २ कहाँ जीउ कहँ स्वाँस न जानी। २. प्र० २ गहि (उर्दू मूल), द्वि० ७ लिहि, तृ० ३ लै। ३. प्र० १, २ आहि, द्वि० १, ७ नाँव। ४. प्र० १, २ एक लाग बहि, द्वि० ७ एक लागि है, द्वि० २, च० १ आइ लागि है, द्वि० ५ आइ लागि बहि। ५. प्र० १,२ तीवइँ, द्वि० २ तोरही। ६. द्वि० ७ बिरह की, द्वि० ३, तृ० १, च० १ पीय कें। ७. प्र० १ लीन भई दधि समुँद महँ, प्र० २, द्वि० ७ लीन भई दधि उदधि महँ, द्वि० १, ६ तृ० ३ गई बही दधि समुँद कहँ, तृ० १ कहै बही दधि समुँद महँ।

[३९८]

लछिमिनि लगन बतीसौं लखी। कहेसि न मरै सभाँरहु सखी।
कागर[1] पुतरी जैस सरीरा। पवन उड़ाइ परी माँझ नीरा।
उड़हिं झकोर लहरि जल भीजी। तयहु रूप रँग नाहीं छीजी।
आपु सीस लै बैठी कोरा। पवन डोलावहिं सखि चहुँ ओरा।
पदुरक समुझि परा तन जीऊ। माँगेसि पानि बोलि कै पीऊ।
पानि पियाइ सखी मुँह धोईं। पदुमिनि जानु कँवल सँग[2] कोईं।
तब लछिमिनि दुख पूँछ पिरोही[3]। तिरिया समुझि बात कहु मोही।

देखि रूप तोर आगर[4] लागि रहा चित[5] मोर।
केहि नगरी[6] कै नागरि[7] काह नाउँ धनि तोर॥

[३९९]

नैन पसारि चेत धनि[1] चेती। देखै काह समुँद कै रेती।
आपन कोउ न देखेसि तहाँ। पूँछेसि को हम को तुम कहाँ।
अही जो सखीं कँवल सँग कोईं। सो नाहीं मोहि[2] कहाँ बिछाईं।
कहाँ जगत मनि पीउ पियारा। जौं सुमेरु बिधि गरुअ सँवारा।
ताकरि गरुई प्रीति अपारा। चढ़ी हिएँ[3] जस चढ़ै पहारा।
रहै न गरुई प्रीति सो झाँपी[5]। कैसे जियौं भार दुख चाँपी[6]।
कँवल करी केइँ चूरी नाहाँ। दीन्ह बहाइ[7] उदधि जल माहाँ।

---

[३९८] १. द्वि० ४, ५ तृ० ३ कागद। २. प्र० २ वै। ३. पिरोही (पिरवही = पीडा ग्रस्ता) किंतु सभी प्रतियों में पाठ 'भरोही' है। ४. द्वि० २ तौ तोरा। ५. प्र० २ जिउ। ६. द्वि० १ कहु नागरि, द्वि० २ कौन नगरि। ७. प्र० १ कै कन्या, प्र० २, द्वि० १, ३, ६, तृ० १ तै काकरि, द्वि० २ पिय काकरि, प० १ कै धीय है।

[३९९] १. प्र० १, २, द्वि० १, ७ तृ० ३ प० १ कै, द्वि० ६ जौ। २. प्र० १, २ रही न सुधि सो, द्वि० ७ सो नहिं देखी। ३. तृ० ३ चढ़ी (उर्दू मूल) द्वि० ७ चढ़े होइ। ४. तृ० ३ जस परे, द्वि०७ ने चढे। ५. प्र० १,२ छपानी, द्वि० ७ समानी। ६. प्र० १, २, द्वि० ७ कैसे जिझे जियें बिनु जानी। ७. प्र० १ तोरी बाँह।

आवा पौन बिछोउ का पात[८] परा बेकरार।
तरिवर तजै[९] जो चूरि कै[१०] लागै[११] केहि की डार॥

[४००]

कहेन्हि न जानहिं हम तोर पीऊ। हम तोहि पावा अहा न[१] जीऊ।
पाटा परी आइ तूँ घही। ऐसि न जानहिं दहुँ का[२] अही।
तब सो सुधि पदुमावति भई। सूर बिछोह मुरछि मरि गई।
बिनु सिर रकत सुराही ढारी। जनहुँ चकत[३] सिर काटि पवारी।
खिनहिं चेत[४] खिन होइ बेकरारा। भा चंदन बंदन सब छारा।
बाउर होइ परी सो पाटा। देहु बहाइ कंत जेहि घाटा।
को मोहि आगि देइ रचि होरी। जियत जो बिछुरी सारस जोरी।

जेहि सर मारि बिछोहि गा देहि ओहि सर आगि।
लोग कहै यह सर चढ़ी[५] हौं सो चढ़ौं पिय लागि॥*

[४०१]

कया[१] उदधि चितवौं पिय पाहाँ। देखौं रतन सो हिरदै माहाँ।
जानु आहि दरपन मोर हिया। तेहि महँ दरस देखावै पिया।
नैन नियर पहुँचत सुठि दूरी। अब तेहि लागि मरौं सुठि झूरी[२]।
पिउ हिरदै महँ भेंट न होई। को रे मिलाव कहौं केहि रोई।
साँस पास नित आवै जाई। सो न सँदेस कहै मोहि आई।

---

[८]. द्वि० ७ काँपत। [९]. तृ० २ पात। [१०]. प्र० १ तरिवर पात जो झाडै, द्वि० ७ तरिवर परे जो चूरिकै। [११]. द्वि० १ कली सो।

[४००] [१]. प्र० १ आपन। २. द्वि० ७, च० १ कहाँ की। [३]. प्र० २, द्वि० ७ मतक, द्वि० ४, ५ रक्त, च० १ बिकट। [४]. द्वि० ७ खन बैठै। [५]. द्वि० ७ रची।

*द्वि० ४ में इस छंद को अंतिम पंक्ति नहीं है, केवल प्रारंभ की पंक्ति इस छंद की है और शेष सात पंक्तियाँ छंद ३९८ की दुहराई गई हैं।

[४०१] [१]. प्र० २, द्वि० ७ ध्यान। [२]. तृ० ३ दूरी।

नैन कौड़िया भे मँड़राहीं। थिरकि मारि लै आवहिं नाहीं[3]।
मन भँवरा ओहि कँवल बसेरी। होइ मराजिया न आनहि[4] हेरी।[5]

साथी आथि निआथि भेः[6] सकेसि न साथ[7] निबाहि।
जौं जिउ जारें पिउ मिलै फिटु रे जीय जरि जाहि॥

[४०२]

सती होइ कहँ सीस उघारी। घन महँ बिज्जु घाय[1] जस मारी।
सेंदुर जरै आगि जनु लाई[2]। सिर की आगि सँभारि[3] न जाई।
छूटि माँग सब[4] मोंति पुरोई[5]। बारहिं बार गरहिं जनु रोई[5]।
टूटहिं[7] मोंति बिछोहा भरे। सावन बुंद गरहिं[6] जनु ढरे।
भहर भहर[8] करि जोबन[9] करा[10]। जानहुँ कनक अगिनि महँ परा[10]।
अगिनि माँग पै देइ न कोई। पाहन[11] पवन पानि सुनि[12] होई[13]।
कनै लंक टूटी दुख[14] जरी। बिनु रावन केहि बार होइ खरी।

रोवत पंखि बिमोहे जनु कोकिला अरंभ।
जाकरि कनक लता यह बिछुरी[15] कहाँ सो प्रीतम[16] खंभ[17]॥*

---

३. द्वि० २ कै आपन माही, तृ० ३ गहि आनधि नाहीं (तृ० १) गहि आवहि जाही। ४. प्र० १ पावै। ५. द्वि० २ में यह पंक्ति नहीं है। ६. प्र० १, २, द्वि० २, तृ० १ निआथि तें, द्वि० ४, ५, तृ० २, च० १ निआथ जो, द्वि० ७ निअस्थिर। ७. तृ० ३ सकेसि न ओर, पं० १ संग न साथ।

[४०२] १. प्र० १ जाइ। २. तृ० ३ लागी। ३. प्र० १ बुझाइ। ४. द्वि० १ केस जनु, द्वि० ३ माँग तम। ५. प्र० २ पुरोई, गरै जब रोई, तृ० ३ पुरोए, करहिं जनु रोए (उर्दू मूल), द्वि० ७ पुरोई, जरै जनु सोई। ६. प्र० १, २ गरजि, तृ० ३ करहिं (उर्दू मूल), द्वि० ७ परहिं। ७. प्र० १, २, द्वि० ४, छूटहिं। ८. द्वि० ५ फेर फेर, च० १ पहर पहर। ९. प्र० १, २ अति सुरंग सब जोबन। १०. प्र० प्र० २, कारा, जारा, तृ० ३ बारा, जारा। ११. प्र० २ बाहन। १२. द्वि० १, तृ० १ कर, द्वि० ३ मों। १३. प्र० १, द्वि० ७ कर होई, द्वि० ६, पं० १ होइ रोई। १४. द्वि० ३ हरी। १५. प्र० २, (तृ० १) लता अस बिछुरी। १६. प्र० १ सो प्रीतम कस। १७. तृ० ३ खड।

* प्र० १, २ में इसके अनंतर एक अतिरिक्त छंद है। (देखिए परिशिष्ट)

[४०३]

लखिमिनि लागि बुझावै जीऊ। ना मरु भगिनि[1] जिऔ[2] तोर पीऊ।
पिउ पानी होइ पौन अधारी। जस हौं[3] तुहूँ समुंद्र कै बारी।
मैं तोहि लागि लेव खटवाटू। खोजब पितैं जहाँ लगि घाटू।
हौं जेहि मिलौं तासु बड़ भागू। राज पाट। औ होइ[4] सोहागू।
कै बुझाउ लै मँदिल सिधारी। भई सुसार[5] जेंवै[6] नाहिं नारी[7]।
जेहि रे कंत कर होइ बिछोवा। का तेहि भूख नींद का सोवा।
जिउ हमार पिउ लेवै[8] अहा। दरसन देउ लेउ जब चहा।

लखिमिनि जाइ समुँद पहँ बिनई[9] ते[10] सब बातैं चालि।
कहा समुंद्र अहै घट मोरें आनि मिलावौं[11] कालि॥

[४०४]

राजा जाइ तहाँ बहि लागा। जहाँ न कोइ सँदेसी कागा।
तहाँ एक परबत हा[1] डूँगा। जहवाँ सब कपूर औ[2] मूँगा।
तेहि चढ़ि हेरा कोइ न साथा। दरब सैंति कछु लाग न हाथा।
अहा जो रावन रैनि[3] बसेरा[4]। गा हेराइ कोइ मिलै न हेरा[4]।

---

[४०३] १. प्र० १ मरु न अभागिनि, द्वि० २ ना करु चेत, द्वि० ४, ७, तृ० २ ना मरु बहिनि, च० १, पं० १ ना मरु पदुमिनि। २. च० १, पं० १ मिलहि। ३. प्र० १, २ जस हौं तस तैं, द्वि० १ अब हौं जैसि। ४. प्र० १, द्वि० ४, ६, तृ० २, च० १, पं० १ देउँ, द्वि० १ नखत। ५. प्र० १, द्वि० ४ भइ जेवनार, प्र० २ यह संसार, द्वि० ७ जेहि अधार। ६. प्र० २ जीवन, द्वि० ७ जीऔ। ७. च० १ बारी। ८. द्वि० २ लै कै, तृ० २ के सँग, च० १, पं० १ लीन्हे। ९. द्वि० १ समुँद ते बिनवै, द्वि० २, तृ० १, ३ जाइ समुंद पहँ बिनती, द्वि० ४, ५, च० १ जाइ समुँद पहँ, पं० १ जाइ समुंद पहँ बिनवै। १०. द्वि० ४, ५ पै। ११. प्र० १ देव मैं।

[४०४] १. प्र० १ का, प्र० २ कर, तृ० ३ हो, द्वि० ७ हत। २. द्वि० ७ जहवाँ उपज कपूर औ मूँगा, पं० १ जहँ कपूर औ आछहिं मूँगा। ३. प्र० १ राव, द्वि० १, ७ नीर, द्वि० २, ६, तृ० २ रेर, द्वि० ३ रेरे (उर्दू मूल), द्वि० ३, ४, ५, च० १, पं० १ केर। ४. तृ० २ बिसारा, गा हेराइ तस देखत सारा।

धाह मेलि[5] कै राजा रोवा। केइँ चितउर कर राज बिछोवा।
कहाँ मोर सब दरब भँडारू। कहाँ मोर सब कटक खँधारू।
कहाँ मोर तुरग[6] बालका[7]बली। कहाँ मोर हस्ती[8] सिंघली।

कहँ रानी पदुमावति जीउ बसत तेहि पाँह।
मोर मोर कै खोएउँ[9] भूलेउँ गरब मनाँह[10] ॥*

[४०५]

चंपा भँवरा कर जो[1] मेरावा। माँगै राजा बेगि न पावा।
पदुमिनि धाह जहाँ सुनि पावौं। परौं आगि औ पानि[2] धसावौं।
ढूटौं परबत मेरु पहारा। चढ़ौं सरग औ परौं पतारा।
कहँ अस गुरु पावौं[3] उपदेसी[4]। अगम पंथ को होइ सँदेसी[5]।
परेउँ आइ तेहि समुँद अथाहा[6]। जहवाँ वार पार नहिं थाहा[7]।
सीता हरन राम संग्रामा। हनिवँत मिला मिलो[8] तब रामा।
मोहि न कोइ केहि बिनवौं रोई। को वर बाँधि गवेंसी होई।

भँवर जो पावा कँवल कहँ मन चिंता[9] बहु केलि[10]।
आइ परा कोइ हस्ति तहँ चूरि गएउ[11]सब[12]बेलि[13] ॥

---

५. द्वि० ४, ५ धाह मारि। ६. द्वि० १ मोर सम। ७. प्र० १, २ पदुका, द्वि० २, ४ बाँका, द्वि० १ बालक, तृ० १ बारका, तृ० २ बाँका औ। ८. तृ० १ मोर सब कटक तृ० ३ मोर हस्ती घोर,। ९. द्वि० ७ गरब सौं। १०. प्र० १, २, द्वि० २, ३, ४, ५, ६, ७, तृ० १, पं० १ अवगाह, तृ० ३ मन माँह।
*इसके अनंतर प्र० २ में एक छंद अतिरिक्त है। (देखिए परिशिष्ट)

४०५] १. प्र० १, २ कोरे, द्वि० ४ गुर जो, च० १ केर। २. प्र० १ अगिनि महँ सौंह धसावौं, प्र० २ अगिनि औ पानि धसावौं। ३. च० १ सो काह करौं। ४. प्र० १, २ उपदेसा। ५. प्र० १, २ कहै सँदेसा, द्वि० २ होइ उपदेसी, तृ० ३ होइ सहदेसी, च० १ होइ अगवेसी, पं० १ होइ गवेसी। ६. तृ० २ बिधि मोहि आनि समुँद महँ बारा, च० १ बिरह मोहि आनि समुँद तेहि बाहा, प० १ परेउँ समुद आइ अवगाहा। ७. प्र० १, २, द्वि० ३ अवगाहा, द्वि० २ नहिं छाँहाँ, द्वि० ७ जल माहाँ, तृ० १ को थाहाँ। ८. द्वि० ४, पं० १ मिला जीता, द्वि० ७ मीत मिला। ९. द्वि० ४ आरत। १०. द्वि० २ मन चिन्ता बहु खेलि, तृ० ३ मन चिन्त बहु मेलि, द्वि० १ बहु आरत बहु आस। ११. प्र० २ लिहेसि। १२. च० १ सो। १३. द्वि० १ भँवर होइ निबछावरि कँवल देइ हँसि बास।

[४०६]

कासौं पुकारौं का पहँ जाऊँ। गाढ़ें मीत होइ[1] एहि[2] ठाऊँ।
को यह समुँद मँथै बर बाढ़ा। को मथि रतन पदारथ काढ़ा।
कहाँ सो ब्रह्मा बिस्नु महेसू। कहाँ सो मेरु कहाँ सो सेसू।
को अस साज मेरावै आनी। बासुकि बँध[3] सुमेरु मथानी।
को दधि मथै समुँद[4] जस मँथा[5]। करनी[6] सार न कथनी कथा।
जौं लगि मथै न कोइ दै जीऊ। सूधी अँगुरी न निकरै घीऊ।
लै नग मोर समुँद भा बटा। गाढ़ परै तौ पै[7] परगटा।

लीलि रहा अब[8] ढील होइ पेट पदारथ मेलि।
को उजियार करै जग[9] झांपा चाँद उघेलि[10]॥

[४०७]

ऐ गोसाइँ[1] तू सिरजनहारू। तूँ सिरिजा यहु समुँद अपारू[2]।
तूँ जल ऊपर धरती राखे। जगत भार लै भार न भाखे।
तूँ यह गँगन अँतरिख थाँभा। जहाँ न टेक न थून्ही खाँभा।
चाँद सुरुज[3] औ नखतन्ह[4] पाँती। तोरे डर धावहिं दिन राती।
पानी पवन अगिनि औ माँटी। सब की पीठि तोरि है साँटी।
सो अमुरुख बाउर औ अधा। तोहि छाँड़ि औरहि चित बंधा।
घट घट[5] जगत तोरि है डीठी। मोहिं आपनि[6] कछु सूझ न[7] पीठी।

---

[४०६] १. द्वि० १ करै, द्वि० ३ न कोइ। २. द्वि० १ एक। ३. प्र० २ बैठ, द्वि० २, ४, ५, ६, तृ० १, २ डेढ़, द्वि० १ होइ दधि, तृ० ३ बेह, द्वि० ७ बोहथ, (हिंदी मूल)। ४. प्र० २ समुँद मथै। ५. द्वि० १ काह समुंद लाइ मन मथा। ६. तृ० ३ कथनी। ७. द्वि० ७ प्रेम। ८. प्र० १ नग। ९. प्र० १ एहि नगरी, प्र० २ एह सरजग, द्वि० ७ अब। १०. द्वि० ७ सब जग झाँपा केलि।

*च० १ में यहाँ से छंद ४२४ तक प्रति खंडित है।

[४०७] १. द्वि० १ ठाकुर। २. तृ० २, पं० १ सरग पतारू। ३. प्र० २ सूर। ४. तृ० १ नखत जो। ५. पं० १ खँड खँड। ६. तृ० १, २ हौं अधा। ७. प्र० २ सूझै नहिं, द्वि० २ जेहि सूझ न।

पौन हुतें भा पानी पानि हुतें भै आगि।
आगि हुतें भै माँटी गोरख धंधे लागि॥

[४०८]

तूँ जिउ तन मेरवसि दै[1] आऊ। तुँही बिछोवसि करसि मेराऊ।
चौदह भुवन सो तोरें हाथा। जहँ लगि बिछुरे औ एक साथा।
सब कर मरम भेद तोहि पाहाँ। रोम जमावसि टूटे[2] तहाँ[3]।
जानसि सबै अवस्था मोरी। जस बिछुरी सारस कै जोरी।
एक मुए सँग मरै सो दूजी[4]। रहा न जाइ आइ सब पूजी[5]।
झूरत तपत दगधि का मरऊँ। कलपौं सीस बेगि निस्तरऊँ।
मरौं सो लै पदुमावति नाँऊ। तूँ करतार करसि एक ठाँऊ।

दुख जो[6]पिरीतम भेंटि कै[6] सुख जो न सोवै[7] कोइ।
इहै ठाउँ मन[8] डरपै[9] मिलि न बिछोवा[10] होइ॥

[४०९]

कहि कै उठा समुँद महँ आवा। काढ़ि कटार गरै लै लावा।
कहा समुंद्र पाप अब घटा। बाँभन रूप आइ परगटा।
तिलक दुवादस मस्तक[1] दीन्है। हाथ कनक बैसाखी लीन्है।
मुंद्रा[2] कान[3] जनेऊ काँधे। कनक पत्र धोती तर[4] बाँधे।
पायन्ह कनक जराऊ पाऊँ। दीन्ह असीस आइ तेहि ठाऊँ।

---

[४०८] १. द्वि० १ जिउ दै कै कीन्हे, तृ० १ जीवन मेरवसि दै। २. द्वि० ६ आएउँ जावसि। ३. प्र० २ सब कर मग्म भेद तोहि पाहाँ, रोम जमावसि टूटे जहाँ। पं० १ सब कर मरम भेद तैं पावसि, टूटे रोम सो तहाँ जमावसि। ४. प्र० २ न दूजा, जो पूजा, द्वि० २ जो दूजा, सब पूजा, द्वि० ४ सो दूजी, सब पूजी। ५. पं० १ मो। ६. द्वि० १ बिछुरै। ७. द्वि० २ जन सो आव। ८. प्र० २ मोहि, तृ० ३ जिउ। ९. प्र० २ डर है, द्वि० १ मरौं जो। १०. प्र० २ मिलि न बिछुरन।

[४०९] १. प्र० १, २, तृ० १ माथें, तृ० २ सोहै। २. द्वि० २ कुंडल। ३. प्र० १, २, द्वि० १, ३, ७, तृ० १, २ कानक, द्वि० ६ स्रवन। ४. प्र० १, द्वि० ७ कटि।

कहु रे कुँवर मोसौं एक वाता। काहे लागि करसि अपघावा।
परिहँसि मरसि[5] कि कौनेहु[6] लाजा[7]। आपन जीउ देसि केहि काजा।

जनि कटार कँठ लावसि समुझि देखु जिउ आपु।
सकति हँकारि[8] जीव जो[9] काढ़ै महा दोस औ पापु॥

[४१०]

को तुम्ह उतर देइ हो[1] पाँड़े। सो वोलै[2] जाकर जिय भाँड़े।
जंबू दीप केर हौं[3] राजा। सो मैं कीन्ह जो करत न छाजा।
सिंघल दीप राज घर बारी। सो मैं जाइ बियाही नारी।
लाख वोहित तेइँ दाइज भरे। नग अमोल औ सब निरमरे।
रतन पदारथ मानिक मोंती[4]। हुती न काहु के संपति ओती[5]।
बहल[6] घोर हस्ती सिंघली[7]। औ सँग कुँवर लाख दुइ वली[7]।
तेहि गोहन सिंघल पदुमिनी। एक सों एक चाहि[8] रूपमनी।

पदुमावति संसार रूपमनि[9] कहँ लगि कहौं दुहेल[10]।
एत सब आइ समुँद महँ खोएउँ[11] हौं का जियौं अकेल॥

---

५. द्वि० २ हंस जीव, द्वि० ३ जरत मरनि। ६. प्र० २ सो कारने, द्वि० २ कहि काहें, तृ० ३ कौन केहि, द्वि० ३, ५, तृ० १ बडु कौन्हेु। ७. द्वि० ६ राजा। ८. प्र० १, २, द्वि० २, ३, ४, ५, ६, ७, तृ० २, ३, सकति, द्वि० १ जिभन। ९. प्र० १ कम।

[४१०] १. प्र० २ देइ सो, द्वि० ७, तृ० २ देहु हो। २. तृ० ३ जाने। ३. प्र० १ २, द्वि० १ मैं। ४. द्वि० १ औ गजमोती। ५. द्वि० १ होति न काहु के सरनेहु ओती, तृ० ३ का हति काहु के सरनेहु ओती, द्वि० ६, तृ० १ हति न काहु के सरनेहु ओतो। ६. प्र० १ औ बहु, द्वि० ७, ३ बहुत, पं० १ मत्त भन। ७. प्र० १ सिंघली, सोरह सहस कुँवर वड़ बली, प्र० २ सिंघली, औ सँग कुँवर लाख दस बली, तृ० ३ सिंघल, एकेक चाहि सो एक एक भरे, (उर्दू मूल) तृ० २ सिंघली, औ सँग कुँवर सहस दस बली। ८. द्वि० २ एक एके सौं अति। ९. प्र० १, २, द्वि० ३, तृ० २, पं० १ संसार मनि, द्वि० १ जग ऊपर, द्वि० ५ संसार रूप, द्वि० ७ संसार पर। १०. द्वि० ५ कहँ लगि कहौं अमेल, तृ० १ देट पदारथ मेघि।। ११. प्र० १, २, द्वि० ७, तृ० ३ आइ गवाएउँ समुँद महँ, द्वि० १, २, तृ० ३. आएउँ आइ गँवाएउ, द्वि० ६ आनि गवाँएउँ समुँद सब।

[४११]

हँसा समुँद होइ उठा[1] अँजोरा। जग जो बूड़[2] सब कहि कहि मोरा।
चोर होत सोहि परत न धेरा। बूझि विचारि तुँही केहि फेरा।
हाथ मरोरि धुनै सिर माँखो। पै तोहि हिएँ न उघरी आँखो।
बहुतन्ह अैस रोइ सिर मारा। हाथ न रहा झूठ संसारा।
जौं पै जगत होति थिर[3] माया। सैंतत सिद्ध न पावत राया।
बड़ेन्ह जौं न सँत औं[4] गाढ़ा। देगा भार पूँजि कै छाड़ा।
पानी कै पानी महँ[5] गई[6]। जौं तू बचा कुसल सब भई[7]।

जाकर दीन्ह कया जिउ[8] लीन्ह चाह जब भाव।
धन लछिमी सब ताकरि लेइ तौ का पछिताव॥

[४१२]

अनु पाँडे फुरि कही कहानी[1]। जौं पावौं पदुमावति रानी।
तपि कै[2] पाव उमरि कर[3] फूला[4]। पुनि तेहि खोइ सोइ पँथ भूला।
पुरुख न आपन नारि सराहा। मुएँ गएँ सँवरा पै चाहा।
कहँ असि नारि जगत महँ होई। कहँ अस जिवन मिलन सुख सोई।
कहँ अस रहस भोग अब[5] करना। अैसे जियन चाहि भल मरना।

---

[४११] १. प्र० १,२ तब भएउ। २. प्र० १, २, द्वि० ७ बूड़ा। ३. प्र० १, २, द्वि० ७, तृ० ३ फुरि, द्वि० २ भलि। ४. प्र० १, २, द्वि० ७ बड़ेन्ह जो सैंता नाहीं, द्वि० ४, ५, निद्धन्ह दरब न सैंता, पं० १ बड़ेन्ह जो दरब न सैंता। ५. तृ० ३ सब। ६. द्वि० १ बान की बान बान महँ, हई। ७. प्र० १, २ ३, द्वि० २,४,५,७, पं० १ तुइँ जो जिया कुसल सब भई, द्वि० १ तुम्ह जिय कुसल तबहि तप भई, द्वि० ५ जौ तू भया कुसल सब भई, तृ० २ तूँ बाँचा तो कुसल सब भई। ८. प्र० १, द्वि० ४ जीउ औ काया, द्वि० ७ रहा न जिउ काई, तृ० १ जो कया महँ।

[४१२] १. प्र० २, द्वि० ६ पुरखन्ह का हानी, द्वि० १ परखहु ना मानी। २. द्वि० १ कहन कै। ३. प्र० १ हुमरि कर, प्र० २, द्वि० १ मरि कै। ४. द्वि० १ मूल। ५. प्र० १, २, द्वि० ६, ७, पं० १ सुख, तृ० ३ भो (हिंदी उर्दू मल) द्वि० ३ मिलि।

जहँ अस बरै[६] समुँद नग दिया[७]। तहँ किमि जीव आछै मरजिया।[८]
जस एइँ समुँद दीन्ह दुख मोकाँ। दै हत्या झगरौं सिवलोकाँ।

का मैं एहिक नसावा का एइँ सँवरा दाउ।
जाइ सरग पर होइहि एकर मोर नियाउ॥

[४१३]

जौं तूँ मुवा कस रोवसि खरा[१]। न मुवा मरै न रोवै मरा।
जौं मर भया औ छाँड़ेसि माया[२]। बहुरि न करै मरन कै दाया[३]।
जौं मर भया न बूड़ै नीरा। बहुत जाइ लागै पै तीरा।
तहँ एक बाउर मैं भेंटा। जैस राम दसरथ कर बेटा।[४]
ओहू मेहरी कर परा[५] बिछोवा। एहि समुँद्र महँ फिरि फिरि रोवा।[६]
पुनि जौं राम खोइ भा मरा। तब एक अंत[७] भएउ[८] मिलि तरा[९]।
तस मर होहि मूँदु अब आँखी। लावौं तीर टेकु बैसाखी।

बाउर अंध पेम कर लुबुधा[१०] सुनत ओहि भा बाट।
निमिखि एक महँ लेइ गा पदुमावति जेहि घाट॥

[४१४]

पदुमावतिहि सोग तस बीता। जस असोग बीरौ तर सीता।
कनक लता दुइ नारँग फरी[१]। तेहि के भार उठि सकै न खरी[१]।

---

६. द्वि० ३, ७ परा, द्वि० २, ४, ५ परै। ७. द्वि० ७ होआ। ८. प्र० १, २ तहँ किमि जिओ अैस, द्वि० ७ तेहि क जोअ आछै, द्वि० ५, पं० १ तहँ किमि आछै। ९. द्वि० १ में यह पंक्ति नहीं है।

[४१३] १. प्र० २ खारा, मारा, द्वि० १ मारा, संसारा। २. प्र० २, द्वि० ७ काया। ३. प्र० १ माया। ४. द्वि० १ में यह तथा बाद की पंक्तियाँ नहीं है। ५. प्र० २ पुनि जो राम खोई भा मरा, तब एकंत भए मिलि अरा। ६. प्र० १, २, तृ० १ जोई कर परा, द्वि० ४ नारि न कर परा, द्वि० ५ नारि कर परा, द्वि० ३ पुनि परा जो नारि। ७. द्वि० ७ मंत्र। ८. प्र० १ पुनि सो मिले एक। ९. प्र० १ होइ तरा, पं० १ ओ तरा। १०. प्र० १ पेम कर।

[४१४] १. प्र० २, द्वि० ७ धरी, खरी।

तेहि चढ़ि अलक भुअंगिनि डसा[2]। सिर पर रहै हिएँ[3] परगसा[2]।
रही मिनाल टेकि दुख दाधी। आधा कँवल भई ससि आधी।
नलिनि खंड दुइ तस करिहाऊँ। रोमावलि बिछोउ कर भाऊ।
रहै टूटि जस कंचन तागू। कहँ पिउ मिलै जो देइ सोहागू।
पान न खंडै करै उपवासू। सूख फूल तन रहा सुबासू[4]।

गँगन धरति जल पूरि गएउ[5] बूड़त होइ निरासु।
पिउ पिउ चात्रिक ज्यों ररै मरै सेवाति पियासु[6]॥

[४१५]

लखमिनि चंचल नारि[1] परेवा। जेहि सत देखु छरै कै सेवा।
रतनसेनि आवा जेहि घाटा। अगुमन जाइ बैठ तेहि बाटा।
औ भै पदमावति के रूपा। कीन्हेसि छाँहि जरै जनि[2] धूपा।
देखि सो कँवल भँवर मन धावा[3]। साँस लीन्ह पै बास न पावा[4]।
निरखत आई[5] लखमिनी डीठी। रतनसेनि तब दीन्ही[6] पीठी।
जौं भलि होति लखमिनी नारी। तजि महेस कत होत भिखारी।
पुनि फिरि धनि आगे भै रोई। पुरुख पीठि कस देखि बिछोई।

हौं पदमावति रानी रतनसेनि तूँ पीउ।
आनि समुँद महँ छाँड़े अब रै देव मैं जीउ॥

---

२. प्र० १, २, प० १ बसा, कहँ हसा, द्वि० ७ टसा, परगसा द्वि० १ हसा, परगसी, द्वि० २, ३, तृ० १, ३, टसा, परबसा, द्वि० ६ हमा, महँदसा। ३. प्र० १, २, प० १ सास चढ़ी मानुस द्वि० ७ सिर परचढी हिए। ४. द्वि० ३, ४, ५, तृ० ३ तन रही न बासू, द्वि० २ तन रहा न माँसू, तृ० १ पै गई न बासू। ५. प्र० १, २, प० १ दूरि कै, द्वि० ४, ५ बूडि गै। ६. प्र० १, २, प० १ सेवा निहि आस।

[४१५] १. द्वि० ७ जानि। २. प्र० १ मरै नाहिं, प्र० २ मरै जेहि, द्वि० २, ४, ५, तृ० ३, पं० १ जरै जहँ, द्वि० ७ जरै जस, द्वि० ३ जरै नाहिं। ३. प्र० १ भँवर मन लावा, द्वि० ४, ५ भँवर होइ धावा, द्वि० ७ भँवर जो आव, तृ० २ भँवर पुनि आवा, तृ० ३ भँवर ज्यों धावा, प० १ रूप पुनि आवा। ४. द्वि० १, ४ आवा। ५. प्र० १, २ निरखि जो देखा। ६. प्र० १ २, द्वि० २, ७ फिरि दीन्ही, प० १ बैठा दै।

[४१६]

अनु हौं सोइ भँवर औ भोजू। लेत फिरौं मालति कर खोजू।
मालति नारि[१] भँवर अस पीऊ। कहु तोहि वास रहै थिर जीऊ।
तूँ को नारि करसि अस[२] रोई। फूल सोइ पै वास न होई।
हौं ओहि वास जीउ वलि देऊँ। और फूल के वास न लेऊँ।
भँवर जो सब फूलन्ह कर फेरा। वास न लेइ[३] मालतिहि हेरा।
जहाँ पाव मालति कर वासू[४]। वारने[५] जीउ देइ होइ दासू[६]।
कब वह वास पौन पहुँचावै। नव तन होइ पेट जिउ आवै।

भँवर मालतिहि पै चहै काँट न आवै डीठि।
सौंहे भाल खाय हिय[७] पै फिरि देइ न[८] पीठि॥

[४१७]

तव हँसि वोली राजा[१] आऊ[२]। देखेउँ पुरुख तोर सति भाऊ[३]।
निस्चै भँवर मालतिहि आसा[४]। लै गै पदुमावति के पासा।[५]
पीउ पानि[६] कँवला जसि तपा। निकसा सूर समँद महँ[७] छपा[८]।
मैं पावा सो समुँद के घाटा। राजकुँवर मनि दिपै लिलाटा।
दसन दिपहि जस हीरा जोती। नैन कचोर भरे जनु मोंती[९]।

---

[४१६] १. तृ० ३ नाम। २. प्र० १, २ सुनावसि, द्वि० १ करसि जिय, द्वि० ७ मरसि अस, द्वि० ३ कहसि अस। ३. प्र० १, २, तृ० २, पं० १ न पाव। ४. द्वि० ७ भेमू ५. द्वि० २ वर ले, द्वि० ४, ५ वरते, द्वि० ३, तृ० १, २, ३ वरने। ६. प्र० १ हौं तो जीव वलिदास। द्वि० ७ हौं दैउ उदेसा। ७. प्र० १ भाल धाय हिय ऊपर, प्र० २, द्वि० ३ भाल खाइ हिय, तृ० ३ भाल धाय हिय फाटै, द्वि० ७ भले जाइ हिय, पं० १ भाल खाइ जो। ८. प्र० १, पं० १ फिरि कै देइन, द्वि० ४ पै फेरै वर्दि, द्वि० ७ वहुरो देइन।

[४१७] १. द्वि० २ लखमी। २. प्र० १, २, द्वि० ४, ५, ७, तृ० १, २, पं० १ ठाऊँ। ३. प्र० १, २, द्वि० १, ४, ५, ७, तृ० १ जहँ मालति चलु तोहि लै जाऊँ। ४. द्वि० २ वासा। ५. प्र० १, २, द्वि० १, ४, ५, ६, ७, तृ० १ लै सो आइ पदुमावति पासा, पानि पिआव मरत तोहि आसा। ६. प्र० २ पिउ न पानि। ७. प्र० २ चाँद भुइँ, द्वि० १ कँवल महँ, द्वि० २, ६, समुँद जहँ। ८. प्र० १ चाँद भुइँ छपा, तृ० १ चंद महँ छपा। ९. द्वि० १ में यह पंक्ति नहीं है।

भुजा लंक[10] डर[11] केहरि जीवा। मूरति कान्ह देख[12] गोपीता।
जस नल तपत दामनहि[13] पूँछा। तस बिनु प्रान पिंड है छूँछा।

जस तूँ पदिक पदारथ[14] तैस रतन तोहि जोग।
मिला भँवर मालति कहँ[15] करहुँ दोउ रस भोग[16] ॥

[४१८]

पदिक पदारथ खीन जो होती। सुनतहि रतन चढ़ी[1] मुख जोती।
जानहुँ सुरुज कीन्ह[2] परगासू। दिन बहुरा[3] भा कँवल बिगासू।
कँवल बिहँसि[4] सुरुज मुख दरसा[5]। सुरुज कँवल दिस्टि सों[6] परसा[5]।
लोचन कँवल सिरीमुख[7] सूरू। भए अतियंत[8] दुनहुँ रसमूरू।
मालति देखि भँवर गा भूली। भँवर देखि मालति मन[9] फूली।
डीठा दरसन भए[10] एक पासा। वह ओहि के[11] वह ओहि के[12] आसा।
कंचन डाहि दीन्ह जनु जीऊ। उगवा सुरुज छूटि गा सीऊ।

---

१०. तृ० ३ कनक। ११. द्वि० ६ पर। १२. तृ० ३ छपी, पं० १ पूँछ। १३. प्र० १, २, द्वि० ७ तलपति दामावति, द्वि० १ न मालति पदमावति, द्वि० २, तृ० १ नल पुनि दामा नहि। १४. पं० १, २, द्वि० ७ जसरे पदारथ आहि तू। १५. पं० १ सिउँ। १६. प्र० २, द्वि० ७ करहु दोउ सुख भोग, तृ० ३ दैय दीन्ह सुख भोग, द्वि० ६ करहु दोउ मिलि भोग, पं० १ रहसि मान उठि भोग।

[४१८] १. प्र० १ रतन भई, प्र० २ हरन भई। २. प्र० १ किरन। ३. प्र० २ द्वि० ७ दिन बारह, पं० १ दिवस फिरा। ४. द्वि० ७ बिगास, द्वि० ३ बिगसि। ५. प्र० १ कँवल परस सूरज कहँ परसा, सूरज कवल आनि सिर धरसा। ६. द्वि० ६ हँसि। ७. प्र० १ सरद ससि, प्र० २ सरद मुख, द्वि० १ दसन मुख, द्वि० ७ सरग मुख। ८. प्र० १, २, द्वि० ७ अस्त, द्वि० १, ३, तृ० ३ अंत, द्वि० २, तृ० १, २, पं० १ अनंत। ९. द्वि० १ गइ, द्वि० ५, ७ दन, द्वि० ६ मई पं० १ हसि। १०. द्वि० ४, तृ० ३ देख दरस भए, द्वि० ७ देखि दरस पुनि को। ११. प्र० १ सो सो। १२. द्वि० १ जियन धरी पिउ धनि कहँ नैनन्ह सों रस भेंटि, द्वि० ७ आइ परी धनि नैनन्हि कै राजा सो भेंट।

पाय परी धनि पिय के नैनन्ह सौं रज मेंटि।[12]
अचरज भएउ सबहि कहँ[13] ससि कँवलहि[14] भै भेंट॥*

[४१९]

ओहि दिन[1] आइ रहे पहुनाई। पुनि भै बिदा समुद सें[2] जाई।
लखमिनि पदुमावति सौं भेंटी[3]। जो साखा उपनी सो मेंटी[3]।
समदन दीन्ह पान कर बीरा। भरि कै रतन पदारथ हीरा।
और पाँच नग दीन्ह बिसेखे। स्रवन[4] जो[5] सुने नैन नहिं देखे।
एक जो अंम्रित दोसर हंसू। औ सोनहा पंछी कर बंसू।
और दीन्ह सावक सादूरू। दीन्ह परस नग कंचन मूरू।
तरुन[6] तुरंगम दुऔ चढ़ाए। जल मानुस अगुवा सँग लाए।

भेंटि घाट समदन कै फिरे नाइ कै माथ।
जल मानुस तब बहुरे जब आए जगनाथ॥

[४२०]

जगरनाथ जौं देखेन्हि[1] आई। भोजन रींधा हाट बिकाई[2]।
राजैं पदुमावति सौं कहा। साँठ नाठि किछु गाँठि न रहा[3]।
साँठ होइ जासौं स बोला। निसँठा पुरुख पात पर[4] डोला।
साँठि राँक[5] चलै भौंराई[6]। निसँठ राउ सब कह बौराई।

---

१३. तृ० ३ के तृ० १, द्वि० ३ मन। १४. प्र० १, द्वि० ६, ७ सूरहि।
*द्वि० ६ के अतिरिक्त सभी प्रतियों में इस छंद के अनंतर एक अतिरिक्त छंद है। तृ० २ में उसके अनंतर भी पाँच और द्वि० ४, ५, में दो और अतिरिक्त छंद हैं।

[४१९] १. द्वि० ४, ५ दिन दस, द्वि० ३ दिन दुइ। २. प्र० १, द्वि० २, ३, ६, तृ० २ पहँ, प्र० २, द्वि० ७ सौं, द्वि० १, २, ५ सो, पं० १ स्यूँ। ३. प्र० १, २, च० १, प० १ कहँ भेंटा, मेटा, द्वि० ३ सैं भेंटी, मेटी। ४. द्वि० २ सुन। ५. प्र० १, २, द्वि० २ न। ६. प्र० १, २, द्वि० १, ३, ४, ५ तृ० १, २, पं० १ तुरत, द्वि० २ तरल, द्वि० ७ तीरन।

[४२०] १. प्र० १ जब पहुँचे, प्र० २ जौं पहुँचे, द्वि० ६ का देखै। २. प्र० १, २, द्वि० ३, ७, तृ० २, पं० १ भात बिकाई, द्वि० ४, ५ भात पकाई। ३. तृ० ३ अहा। ४. प्र० २, तृ० ३ बर, द्वि० ४, ५ ज्यों। ५. द्वि० २ परजा, तृ० २ नीच। ६. प्र० २ सो राई।

माँठें ओद[7] गरब तन फूला। निसँठें घोद[8] बुद्धि बल भूला।
साँठें जाग नींद निसि जाई। निसँठें दिन आवै[9] औंघाई[10]।[11]
साँठें दिस्टि जोति होइ नैना। निसँठें हियँ[12] न आव मुख[13] बैना।[11]

साँठें रहै, सुधीनता[14] निसठें आगरि[15] भूख।[11]
बिनु गथ पुरुख[16] पतंग ज्यौं ठाठ[17] ठाढ़ पै[18] सूख॥[11]*

[४२१]

पदुमावति बोली सुनु राजा। जीउ गएँ धन कवने काजा।
अहा दरब तब लीन्ह न गाँठी। पुनि फत मिले लच्छि जौं नाठी।
मुकुतें साँवर गाँठि जो करई। सँकरें परे सोइ[1] उपकरई।
जौं तन पंख जाइ जहँ ताका। पैग पहार होइ जौं थाका।
लखिमिनि अहा दीन्ह मोहि[2] बीरा। भरि कै[3] रतन पदारथ हीरा।
काढ़ि एक नग बेगि भँजावा[4]। बहुरी लच्छि फेरि दिनु पावा।

---

७. प्र० १, द्वि० ३, ६, तृ० १, प० १ आवा, द्वि० ४, ५ आव, प्र० २ राव, द्वि० ३ रोर। ८. प्र० १, २, द्वि० ७ पुरुष, द्वि० ४ ५, तृ० ३ बोल, द्वि० २, पं० १ बूड़हि। ९. प्र० १, २. द्वि० ४, ६, तृ० १, पं० १ खीन होइ, द्वि० २ छिनकि होइ, द्वि० ३, ५ कहाँ होइ। १०. प्र० २ औरारै। ११. द्वि० २ में यह पंक्तियाँ नहीं है। १२. तृ० २ घट। १३. प्र० १, प० १ निरठे मुक्ख न आवै बैना। १४. प्र० २, द्वि० २, ६, ७ सुद्ध तन, तृ० ३ सुनिध तन, द्वि० ४, ५, प० २ मधन तन, तृ० १ सुदय तन, तृ० २ साधना, द्वि० ३ सुद्ध भा। १५. प्र० १, द्वि० ७, प० १ लागै, प्र० २ लागन। १६. द्वि० ४ बिरिख। १७. द्वि० २ के अतिरिक्त सभी प्रतियों में 'ठाढ़', केवल प्र० २ में 'ठाठ'। १८. प्र० २ महल पै (पूर्वीय प्रभाव), द्वि० २ साथ पै, द्वि० ७ भी है।

*इस छंद की प्रथम तथा दूसरी अर्द्धालियों के बीच प्र० १, २, द्वि० ७ तथा द्वि० ३ में पूरे दो अतिरिक्त छंदों की पंक्तियाँ हैं। और द्वि० ४, ५ में इस छंदों में से एक छंद अतिरिक्त है। (देखिए परिशिष्ट)

[४२१] १. प्र० १ सँकरे मुकतें सोइ, प्र० २ द्वि० ३, सँकरी बेर होइ, द्वि० ६ सँकरे बार सोइ, द्वि० १, २, तृ० ३ सँकरे सोइ भलेहँ, द्वि० ४, ५, तृ० २ साँकर पर सोइ। २. प्र० १, २, द्वि० ७ मोहि दीन्ह जो। ३. प्र० १, २, द्वि० ७ भरा मो। ४. प्र० १, २, द्वि० ७ हाट पठावा, प० १ बेगि भुनावा।

दरब भरोस करै जनि कोई। दरब सोइ जो गाँठी होई।

जोरि कटक पुनि राजा[५] घर कहँ कीन्ह पयान।
देवसहि भान अलोपा बासुकि इंद्र सँकान॥*

[४२२]

चितउर आइ नियर भा राजा। बहुरा जीति इंद्र अस गाजा।[४]
बाजन बाजै होइ अँदोरा। आवहिं हस्ति बहल[१] औ घोरा।[४]
पदुमावति चंडोल बईठी। पुनि गै उलटि सरग सौं डीठी।[४]
यह मन अँठा[२] रहै न सूधा। बिपति न सँवरै सँपतिहि लुबुधा।[४]
सहस बरिख दुख जरै जो कोई। घरी एक[३] सुख बिसरै सोई।[४]
जोगिन्ह इहै जानि मन मारा। तउव[५] न मुवा यह मन औ पारा।
रहै न बाँधाँ बाँधा जेही। तेलिया मुवा डारु पुनि तेही।

मुहमद यह मन अमर[६] है कहु किमि मारा[७] जाइ।
ग्यान[७]सिला सौं जौं घँसै[८] घँसतहि घँसत[९] बिलाइ॥[१०]

[४२३]

नागमती कहँ अगम जनावा। गै[१] सो तपनि बरखा रितु आवा।
अही जो मुई नागिनि जसि तचा। जिउ पाएँ तन महँ मैं सचा।
सब दुख जनु कँचुली[२] गा छूटी। होइ[३] निसरी जनु बीर बहूटी।

---

५. तृ० ३ सब राजा, द्वि० ६, पं० १ तब राजा, तृ० २ दल अगनित।

* द्वि० १ में यह छंद नहीं है, किंतु प्रसंग में अनिवार्य है, क्योंकि ऊपर रत्नसेन को 'निसँठा' कहा गया है, और आगे कहा गया है : बाजन बाजै होइ अँदोरा, आवहिं हस्ति बहल औ घोरा' जो बिना पूँजी के असंभव था।

[४२२] १. प्र० १, बहु हस्ती, द्वि० ३, ७ बहुत हस्ति। २. प्र० १, २ ऐसा। ३. प्र० १, २ तिल भर, द्वि० ३, तृ० २ तिन एक। ४. द्वि० १ में यह पंक्तियाँ नहीं हैं। ५. प्र० १ पै। ६. द्वि० १ कठिन है। ७. प्र० २, द्वि० १, ७ कया, द्वि० ४ कहाँ। ८. द्वि० ४, ५ सदासिव आएउ, द्वि० २ मिना सौं पौन गहि, तृ० २ सिना सौं निमि घटै। ९. द्वि० २, ४, तृ० १, पं० १ घटमहि घटत। १०. प्र० १ में छंद का यह दोहा नहीं है।

[४२३] १. तृ० ३ गा, द्वि० ७ गी। २. प्र० २ केंचुक। ३. तृ० १ धनि।

जस भुइँ दहि असाढ़ पलुहाई[४] । परहिं बुंद औ सोंध बसाई ।
ओहि भाँति पलुही सुख बारी । उठे करिल नव कोंप सँवारी[५] ।
हुलसी गंग जस बाढ़ैं लेई । जोबन लाग तरंगैं देई ।
काम धनुक सर दै भै ठाढ़ी[६] । भागेउ बिरह रही जिसु डाढ़ी[६] ।

पूँछहिं सखी सहेली[७] हिरदै देखि अनंद ।
आजु बदन तुव निरमल कहाँ उवा है[८] चंद ॥

[४२४]

अब लगि सखी पवन हा ताता[१] । आजु लाग मोहि सीतल गाता[२] ।
महि हुलसै[३] जस पावस छाहाँ । तस हुलास उपना जिय माहाँ ।
दसौं दाउ कै गा जो दसहरा । पलटा सोइ नाँउ लै महरा ।
अब जोवन गंगा होइ बाढ़ा । औटन घटन मारि सब काढ़ा ।
हरियर सब देखौं संसारू । नए चार जानहुँ अवतारू ।
भागेउ बिरह करत जो डाहू । भा सुख[४] चंद छूटि गा राहू ।
लहकहि[५] नैनं बाँह हिय लिला[६] । को दहुँ[७] हितू आइ यह[८] मिला ।

कहतहिं बात सखिन्ह सौं तेतखन आवा भाँट ।
राजा आइ नियर भा मँदिल बिछावहु पाट ॥*

---

४. तृ० १ जनावाई । ५. तृ० ३ सँभारी । ६. प्र० १, २ ठाढा, अहा जेइँ ठाढा, द्वि० २ ठाढ़ी, अही जम गाढ़ी, द्वि० ३, तृ० १ ठाढ़ी, अही जेइँ डाढ़ी, तृ० ३ ठाढी, करत जो डाढ़ी, द्वि० ४, ५ ठाढ़ी, अही जो बाढ़ी, द्वि० ६ ठाढी, अहा जेइँ भाढ़ी, द्वि० ७ ठाढी, भा जो काढी । ७. प्र० २ सहेली सब । ८. प्र० २ सो तुम्ह वहँ ऊगवै ।

[४२५] १. प्र० २ हत ताना, द्वि० २ हो ताना, द्वि० ४, ५ आ ताता । २. प्र० १, २, द्वि० ३ सीतल बाता, तृ० ३, प० १ सीतल राना, द्वि० ७ मिस्रर बतासा । ३. तृ० ३ हुलसी (उर्दू मूल) । ४. प्र० १ सखि । ५. द्वि० ३ परवहि । ६. प्र० १ बाँह औ लिला, प्र० २ सो बाहँ आलिना, द्वि० ४, ५ हार हिय लिला, द्वि० ७ बाद औ हिया, तृ० १ भला वह खिला । ७. द्वि० ३, तृ० १ कौनिउ, द्वि० ४, ५ कै । ८. प्र० २, द्वि० ७ अस, द्वि० ४, ५ कै ।

* द्वि० १ में यह छंद नहीं है, किंतु प्रसंग में यह अनिवार्य है, क्योंकि इसके बिना पिछले तथा अगले छंदों की शृंखला टूट जाती है ।

[४२५]

सुनतहि खन राजा कर[1] नाऊँ। भा अनंद[2] सब ठावँहि ठाऊँ।
पलटा कै पुरुखारथ[3] राजा। जस असाढ़ आवै दर साजा।
देखि सो छत्र भई जग छाहाँ। हस्ति मेघ ओनए जग माहाँ।
सैन पूरि आए घन[4] घोरा। रहस चाउ बरिसै चहुँ ओरा।
धरति सरग अब होइ मेरावा। भरिआहिं पोखरि ताल तलावा।
लहकि[5] उठा सब भुमिया[6] नामा। ठाँवहि ठाँव दूब अस जामा।
दादुर मोर कोकिला बोले। हते अलोप जीभ सब[7] खोले।

मै असवार परथमै[8] मिलै चले[9] सब भाइ।
नदी अठारह गंडा[10] मिलीं समुँद कहँ जाइ।।*

[४२६]

बाजत गाजत राजा आवा। नगर चहूँ दिसि होइ[1] बधावा।
बिहँसि आइ माता कहँ मिला। जनु रामहि भेंटै[2] कौसिला।
साजे मंदिल बंदनवारा। औ बहु होइ मंगलाचारा[3]।
आवा पदुमावति क बेवानू। नागमती धिकि उठा सो भानू[4]।

---

[४२५] 1. प्र० १, २, द्वि० ७ सुनतहिं रतनसेनि कर, तृ० ३ सुनत हर्ष राजा कर। 2. द्वि० १ हुलास। 3. द्वि० १, ३, ४, ५, ७, तृ० १, २, ३, च० १, पं० १ जनु बरसा रितु, द्वि० २ जनु पुरसा रितु। 4. प्र० १, २, द्वि० ७ ओनए घन, द्वि० ६ बन रकसन। 5. द्वि० १, च० १ कुहुकि। 6. तृ० ३ सब भूमि, द्वि० ४, ५, तृ० १ सब भूमी, द्वि० ६ सब पुहुमी, द्वि० ७ भुमिया जेहिं। 7. प्र० २, द्वि० ७, तृ० १ तिन्ह, प्र० १ ने, द्वि० १ अस। 8. प्र० २ पिरथिमी (उर्दू मूल)। 9. तृ० ३ जाइ। 10. प्र० १, द्वि० ७ गंडा जस, द्वि० ४, ५, २ खडा, द्वि० १ अंगा।

* प्र० १, २ में इसके अनन्तर दो अतिरिक्त छंद हैं। (देखिए परिशिष्ट)।

[४२६] 1. द्वि० ५, तृ० ३, च० १, प० १ बाज, तृ० २ ओम्ह। 2. प्र० १, २ जनहु राम मिला। 3. प्र० २, द्वि० ५, तृ० ३ भो मंगल चारा, तृ० १ जो मगल चारा। 4. प्र० १ मन भएउ निवानू, प्र० २ दुग्र भएउ निवानू, तृ० २ जरि भा जस भानू, च० १ नरै जस भानू।

जनहुँ छाँह महँ धूप देखाई। तैस झार लागी जौं आई।
सहि नहिं जाइ सौति कै झारा। दोसरे मंदिल दीन्ह उतारा।
भै अहान[5] यहु खंड बखानी। रतनसेनि पदुमावति आनी।

पुहुप सुगंध[6] संसार मनि रूप बखानि न जाइ।
हेम सेत[7] औ गौर गाजना जगत बात फिरि[8] आइ॥*

[४२७]

सब दिन राजा दान दवाँवा[1]। भै निसि नागमती पहँ आवा।
नागमती मुख फेरि बईठी। सौंह न करै पुरुस[2] सौं डीठी।
ग्रीखम जरत छाँड़ि जो जाई। पावस आव कवन मुख लाई।[3]
जबहिं जरै परवत बन[4] लागे। औ तेहि झार पंखि उड़ि भागे।
अब साखा देखिअ औ[5] छाहाँ। कवने रहस पसारिअ बाहाँ[6]।
कोउ नहिं थिरकि[7] बैठ तेहि डारा। कोउ नहिं[8] करै केलि कुरआरा।
तूँ जोगी होइगा बैरागी। हौं जरि भई छार तोहि लागी।

काह हँससि तूँ मोसौं किए जो और सौं[9] नेहु।
तोहि मुख चमकै बीजुरी मोहि मुख बरसै मेंहु॥

---

५. प्र० १, २ आहन, द्वि० ५, प० १ आहाँ, द्वि० ७ आन। ६. द्वि० २, तृ० १, प० १ गंध, तृ० २, च० १ बास। ७. द्वि० १ भामसेन, तृ० ३ मेहसत, द्वि० ७ है समेन। ८. द्वि० ४ जगत पान फहरार, द्वि० ७ फिरि दोहाई, तृ० २ जगत बात चलि, च० १ जगत पाट चलि।

* प्र० १ में इसके अनंतर चार, प्र० २ में दो तथा द्वि० ४, ५, ६, ७ में एक अतिरिक्त छंद है।

[४२७] १. द्वि० ४, तृ० २ राजा दान दिवावा। २. द्वि० २ रतन। ३. प्र० १, २, द्वि० २, ४, ५, ७, तृ० १ सो मुख वचन देखावै आई। ४. प्र० १ प्रीनि (उदू मूल) बन, तृ० १ परबत तन। ५. प्र० १, २ कत साखा देखिअ। ६. तृ० ३ बिसारै नाहीं। ७. प्र० १, २ को नहिं रहसि, द्वि० ७, तृ० १ कौनेहि हरषि, द्वि० २ को तहँ थिरकि, द्वि० ४, ५ कौनिउ थिरकि। ८. द्वि० २, ६ को तहँ, द्वि० ४, ५ कौनिउ। ९. प्र० १, द्वि० ७, आन सौं द्वि० २ वो सौं।

[४२८]

नागमती तूँ पहिलि बियाही । कान्ह[1] पिरीति डही[2] जसि राही[3]।[4]
बहुते दिनन्ह आवै जौं पीऊ । धनि न मिलै धनि पाहन जीऊ[5]।
पाहन लोह पोढ़[6] जग[7] दोऊ । सोउ मिलहिं मन संवरि बिछोऊ।
भलेहि सेत गंगा जल डीठा । जउँन जो[8] स्याम नीर अति मीठा।
काह भएउ तन दिन दस डहा । जौं बरखा सिर ऊपर अहा।
कोउ केहि पास आस कै हेरा । धनि वह दरस निरास न फेरा।
कंठ लाइ कै नारि मनाई । जरी जो[9] बेलि सींचि पलुहाई।[10]

फरे[11] सहस साखा होइ[12] दारिवँ दाख जँभीर।
सबै पंखि मिलि आइ जोहारे[13] लौटि[14] उहै भै भीर ॥*

[४२९]

जौं भा मेरु भएउ[1] रँग राता । नागमती हँसि पूँछी बाता।
कहहु कंत जो बिदेस लोभाने[2] । कसि धनि मिली भोग कस माने।
जौं पदुमावति है[3] सुठि लोनी। मोरे रूप कि[4] सरवरि होनी।
जहाँ राधिका अछरिन्ह माहाँ। चंद्रावलि सरि पूज न छाहाँ[5]।
भँवर पुरुख अस रहै न राखा । तजै दाख महुआ रस चाखा।
तजि नागेसरि फूल सोहावा । कँवल बिसैंधे सौं मन लावा।

---

[४२८] १. द्वि० २, ३ कीन्द, द्वि० ४, ५ कठिन, तृ० १ कहेन्हि। २. प्र० १, २, द्वि० ७ दीन्ही, द्वि० २, ६, तृ० १, प० १ रही। ३. प्र० १ आही, द्वि० ४, ५ दाही। ४. तृ० २, च० १ पेम पिरीति लै ओर निबाही। ५. प्र० १ पिउ न मिलै धनि सो भर जीऊ। ६. प्र० २, तृ० ३ ५,२,६ (उर्दू मूल)। ७. प्र० १ है, द्वि० ४ जो। ८. प्र० १ जमुना, द्वि० १ जउँन न। ९. तृ० २ उकठी। १०. प्र० १, २ में इस अर्द्धाली के दोनों चरणों का क्रम परस्पर परिवर्तित है। ११. तृ० ३ भरी (उर्दू मूल)। १२. द्वि० ४, ५ सहस अठारह साखा। १३. प्र० १ मिलि आए। १४. प्र० १, २ बहुरि, द्वि० १ लपटि।

*च० १ यहाँ से ४५६. ५ तक खंडित है।

[४२९] १. तृ० २ भँवर। २. तृ० ३ परदेस भुलाने, तृ० २ परदेस लोभाने। ३. द्वि० १ हो। ४. प्र० १ न। ५. तृ० २ ताहाँ।

जौं नहवाइ भरिअ[६] अरगजा। तबहु गयंद धूरि नहिं तजा[७]।

काह कहौं हौं[८] तोसौं किछौ न तोरे[९] भाउ।
इहाँ बात सुख मोसौं उहाँ जीउ ओहि ठाँउ॥

[४३०]

कही[१] दुख कथा[२] रैनि बिहानी[३]। भोर भएउ[४] जहँ पदुमिनि रानी।
भान देख ससि बदन मलीनी[५]। कँवल नैन राते तन खीनी।
रैनि नखत गनि कीन्ह बिहानू। बिमल भई जस[६] देखे भानू।
सुरुज हँसा ससि रोई डफारा। टूटि आँसु नखतन्ह कै मारा।
रहै न राखे होइ निसाँसी। तहँवहि जाहि जहाँ निसि बासी।
हौं कै नेहु आनि कुँव[७] मेली[८]। सींचै लाग झुरानी[९] बेली।
भए वै[१०] नैन रहँट की घरी। भरीं ते ढारीं छूँछीं भरीं।

सुभर सरोवर हंस जल[११] घटतहि गएउ बिछोइ।
कँवल प्रीति नहिं परिहरै सूखि पंक बरु होइ॥

[४३१]

पदमावति तूँ जीव पराना[१]। जिय तें जगत पियार न आना।
तूँ जस कँवल बसी हिय माहाँ। हौं होइ अलि बेधा तोहि पाहाँ।

---

६. प्र० ? बरै। ७. द्वि० ४, ५, तृ० २ तबहुँ बिसाँयध देहु न तजा, तृ० ? तबहुँ बिसाँयध देहु नहिं तजा प० १ तोहि बहु गंध बसो नहिं तजा। ८. प्र० २, द्वि० ७, तृ० ३ दुख, द्वि० ? मैं। ९ प्र० ? तुम्हहि कछू नहिं।

[४३०] १. द्वि० ३, ४, ५, तृ० १, ३, प० २ कहि। २ द्वि० १ कष्ट, द्वि० २ कथा जो, द्वि० ३, ४, ५, तृ० १, ३, प० १ बस्था। ३ प्र० १, २, द्वि० ७ बहुत दुख सब रैनि सिरानी। ४. प्र० १ आइ द्वि० ३, ६, तृ० २, गएउ। ५. प्र० १ मलीना, खीना। ६ द्वि० ३, प० २ ससि। ७. प्र० १ कुप, द्वि० ७ कुह, तृ० २ गिर्वं। ८. द्वि० ५ हौं कै आनि इहाँ गियँ मेली। ९. तृ० ३ परानी, द्वि० ७ जरिकाना, द्वि० ३ पिरानी। १०. प्र० १, २, द्वि० ३, ४, ५, ६० , प० १ भै दुइ, द० २ भै जो। ११. प्र० २ चरि।

[४३१] १. द्वि० परान पियारी।

मालति करी भँवर जौं पावा। सो तजि आन फूल कित धावा[2]।
अनु हौं सिंघल कै पदुमिनी। सरि न पूज[3] जंबू नागिनी[4]।
हौं सुगंध निरमलि उजियारी। वह बिख भरी डरावनि कारी।
मोरें बास भँवर सँग लागहिं[5]। ओहि देखें मानुस डरि भागहिं।
हौं पुरुख[6] कै चितवौं डीठी। जेहिं के जियँ असि अहौं[7] पईठी[8]।

ऊँचे ठाँव जो बैठै करै न नीचेहुँ संग।
जहाँ सो नागिनि हिरगै काह कहिअ सो अंग[9]॥

[४३२]

पलुही[1] नागमती कै बारी। सोन फूल फूली फुलवारी।
जावँत पंखि अहे सब[2] डहे। ते बहुरे[3] बोलत गहगहे।
सारौ सुवा महरि कोकिला। रहसत आइ पपीहा मिला।
हारिल सबद[4] महोख सो आवा[5]। काग कोराहर करहिं सोहावा[6]।
भोग बेरास कीन्ह अब[7] फेरा। बासहिं रहसहिं[8] करहिं बसेरा।
नाचहिं पंडुक मोर परेवा। निफल न जाइ काहु कै सेवा।
होइ उँजियार बैठि जस तपी। खुसट[9] मुहँ न देखावहिं छपी।

---

२. द्वि० २ पाई, जाई, प्र० २, द्वि० ४, ५, प० १ पावा, भावा, द्वि० २, ३, तृ० १ पावा, धावा। ३. तृ० २ पाउ। ४. प्र० १ कोर रूपसती, प्र० २ देसी रूपमती, द्वि० १ जंबू रानी, द्वि० ६ चितउर नागिनी। ५. प्र० २ सब आवहिं, तृ० २ सब लागहिं। ६. द्वि० २ दरसा कै, तृ० १, ५, पुरखा कै। ७. तृ० ३ अहै, तृ० १ हद, तृ० २ रहा, प्र० २, पं० १ आहि। ८. प्र० १ हिए आइ अस मीठी। ९. प्र० १ करै ओहि अग, प्र० २ काह कहौ सो अंग, द्वि० ३ कारे करै सो अंग, द्वि० ४ का कहि करै सो अग, द्वि० ५ काल करै सो अग।

[४३२] १. द्वि० १ आई, पं० १ पनहा। २. प्र० १, २ बन, द्वि० २, ३, तृ० १ सँग। ३. द्वि० ४, ५ फिरे पखि, तृ० १, २ सब बहुरे। ४. प्र० १ सरस, प्र० २, द्वि० १, ६, तृ० ३ निदु, द्वि० २, तृ० २ मित, तृ० १ सद। ५. द्वि० ४, ५, ६, ३ सोहावा। ६ द्वि० १ चुगावा, द्वि० ५ सोभावा, तृ० २ सिरावा। ७. प्र० १, २ बहु, तृ० ३ अति, द्वि० ७ अन, तृ० १ गई। ८. प्र० १ बासन्ह रहतहि, तृ० ३ बाहिर रहसहिं। ९. द्वि० १, २, ६, तृ० १, २ खूसर, तृ० ३ खूसी, द्वि० ७ खोसरा, तृ० १ खुलिस।

नागमती सब साथ सहेलीं[१०] अपनी[११] बारी माहँ।
फूल चुनहिं फर चूरहिं रहस कोड सुख[१२]छाँहि॥[१३]

[४३३]

जाही जूही तेहिं फुलवारी। देखि रहस सहि[१] सकी न बारी[२]।
दूतिन्ह[३] बात न हिएँ समानी[४]। पदुमावति सौं[५] कहा सो आनी[६]।
नागमती फुलवारी बारी। भँवर मिला रस करी सँवारी।
सखी साथ सब रहसहिं कूदहिं। औ सिंगार हार जनु[७] गूँदहिं।
तहँ[८]जो बिकावरि तुम्ह सो लरना। बकुचुन कहौं लहौं[९] जस करना।
नागमती नागेसरि रानी। कँवल न आछै अपनी बानी[१०]।
जस सेवती गुलाल चँबेली। तैसि एक जनि उहाँ अकेली।

अति जो सुदरसन कूजा तब सत बरगहिं जोग।
मिला भँवर नागेसरि सेंती[११] देय[१२] दीन्ह सुख भोग॥*

[४३४]

सुनि[१] पदुमावति रिस न नेवारी[२]। सखी साथ आई तेहि बारी[२]।[३]
दुओ सवति मिलि पाट बईठीं। हियँ बिरोध मुख बातें मीठीं।

---

१०. द्वि० ७ सखी साथ जै। ११. प्र० २ गई जो। १२. तृ० १ जाहिं। १३. प्र० १ में दोहा अगले छंद का है।

[४३३] १. प्र० १, २, द्वि० ६, ७, पं० १ सब सखी, द्वि० १ सखीं संग, द्वि० ४ रहि सकी। २. प्र० १, २ सखी न पारी, द्वि० १ सहै न पारी, द्वि० ७, ०१ सखी पियारी। ३. प्र० १, २ एको। ४. द्वि० १ समाई। ५. प्र० १, २ नागमती सो, द्वि० १ पदुमावति पहँ। ६. द्वि० १ जाइ जनाई। ७. प्र० १ फल, द्वि० १ अस, द्वि० ४ सब। ८. प्र० २ निन्ह (उर्दू मूल)। ९. प्र० २ कहँ चाह। १०. प्र० २ रानी। ११. प्र० १ मालति कहँ, द्वि० नागेसरि। १२. द्वि० ६ हिरदैं।
* प्र० १ में दोहा पिछले छंद का है।

[४३४] १. तृ० १ पुनि। २. प्र० १, २, द्वि० ४, तृ० १ सँभारी, आई तेहि बारी, द्वि० १ मढ़ें आई, बारी तब आई। ३. द्वि० ६ बारी सुरूप दिरिट सब आई, पदुमावति हँस बान चलाई।

बारी दिस्टि सुरंग सुठि आई[४]। हँसि पदुमावति बात चलाई।
बारी सुफल आहि तुम्ह रानी। है लाई पै लाइ न जानी।
नागेसरि औ मालति जहाँ। सखदराउ न चाहिअ तहाँ।
अहा जो मधुकर कँवल पिरीती। लागेउ आइ करील[५] की रीती।
जो अँबिली बाँकी हिय माहाँ। तेहि न भाव नाँरग कै छाहाँ।

पहिलें फूल कि दहुँ[६] फर देखिअ हिएँ बिचारि।
आँब होइ जेहि ठाइँ[७] जाँबु[८] लागि रहि[९] आरि[१०]॥

[४३५]

अनु तुम्ह कही[१] नीकि यह सोभा। पै फुल[२] सोइ भँवर जेहि लोभा।
साँवरि जाँबु कस्तुरी चोवा। आँब जो ऊँच[३] तौ हिरदै रोवाँ।
तेहि गुन अस भै जाँबु पियारी। लाई आनि माँझ[४] कै बारी।
जल बाढ़ै ऊभै[५] जो[६] आई। हिय बाँकी अँबिली सिर नाई।
सो कस पराइ[७] बारी दूखी[८]। तजी[९] पानि धावहि[१०]मुँह सूखी।
उठै आगि दुइ डार[११] अभेरा। कौनु साथ तेहि[१२] बैरी केरा।
जो देखी नागेसरि बारी। लाग[१३] मरै सब सुग्गा सारी।

---

४. प्र० १, २, द्वि० ७, प० १ मन आई, द्वि० ४ मो आई, द्वि० ५ सो लाई, (हिंदी मूल ?), द्वि० २ तुम्ह लाई, तृ० ३ तनि आई, तृ० २ हब लाई। ५, तृ० ३ करीनि। ६, प्र० १, २, द्वि० ३, ७ होर। ७. प्र० १, २, द्वि० २, ४, ५ जेहि बारी, द्वि० ७ फर जहँवा। ८, द्वि० ३, ४ चाँप। ९. प्र० १, द्वि० ३, ४, ५, ७, तृ० २ तेहि। १०. द्वि० ४, ६ बारि।

[४३५] १. प्र० १, २ रहा। २. प्र० २, द्वि० २ भल, द्वि० ७ पर। ३. प्र० १ आँच, प्र० २, द्वि० ७ अंकुर, द्वि० १ ऊपर, द्वि० २ आँचहि, तृ० २ उपने, तृ० १ अवहीं। ४. प्र० २ आँव। ५. द्वि० १ जौं बढ़ि बाढ़ि ऊभै, प्र० २, द्वि० ४, ७ जल बाढ़ी ऊभी (उद्‌भून)। ६. प्र० १, २ होर, तृ० २, पं० १ सो। ७. प्र० १ पारी, प्र० २ पै जो, द्वि० २ रहै। ८. तृ० ३, पं० १ रूखी। ९. तृ० १ बहैं। १०. द्वि० ७ धावै, तृ० २ धावै। ११. प्र० १ दुहुँ आग। १२. प्र० १, द्वि० ६ ओहि, तृ० ३ म हि। १३. तृ० ३ लागि।

जेहि तरिवर[१४] जो थाईं रहै सो[१५] अपने ठाउँ।
तजि[१६] केसरि औ[१७] कुंदहि[१८] जाँउन[१९] पर अँवराउँ[२०]॥

[४३६]

तुम्ह[१] अँवराँउ[२] लीन्ह[३] का चूरी। काहे भई नींबि बिख मूरी।
भई बैरि[४] कत कुटिल[५] कटैली। तेंदू कैथ चाहि बिगसैली।
नारँग दाख न तुम्हरी बारी। देखि मरहिं जहँ[६] सुगा सारी।
औ न सदाफर तुरुँज जँभीरा[७]। कटहर बड़हर लौकी खीरा[७]।
कँवल के हिय रोंवा तौ केसरि। तेहिं[८] नहिं सरि पूजै नागेसरि।
जहँ केसरि नहिं[९] उबरै पूँछी। बर पाकरि[१०] का बोलहिं छूँछीं।
जो फर देखिअ सोइअ फीका। ताकर काह सराहिअ नीका[११]।

रहु अपनी तैं बारी मों सौं जूझु न बाँझ[१२]।
मालति उपम कि पूजै[१३] बन कर खूझा खाझ[१२]॥

---

१४. प्र० १, २, द्वि० ४, ६, ७, तृ० २, ३ सरवर। १५. प्र० १ न। १६. प्र० १ तेहि। १७. द्वि० ४ नागेसरि। १८. प्र० १, २ कुंद दोउ, द्वि० २, तृ० १ कुंदर, द्वि० ७ कुजल, द्वि० ३ कंजवन। १९. प्र० १ जाहुँ सोपर, प्र० २ जाहि सोपर, द्वि० ४ जाउँ न तेहि। २०. तृ० २ लखराउँ।

[४३६] १. प्र० १ तेहि। २. तृ० २ लखराउँ। ३. द्वि० २ कीन्ह। ४. तृ० ३ पिआरि। ५. द्वि० १, २, ६, तृ० २, द्वि० ३ काँट। ६. प्र० १, २, द्वि० ७, पं० १ मरहु का, द्वि० ४ मरहिं जो। ७. प्र० १, २ जँभीरा, लाउ न कटहर बड़हर खीरी, द्वि० ७ जँभीरी, कटहर बड़हर कहाँ गंभीरी, पं० १ जँभीरा, लागी कटहर बड़हर औ खीरा। ८. प्र० २ तबहुँ। ९. प्र० २, द्वि० ५ जहाँ केसरी, द्वि० ४ जहँ कटहर को। १०. द्वि० २, ४, ५ बर पीपर, तृ० ३ बर खाकर, द्वि० ७ बर जा करहिं। ११. प्र० १, २, द्वि० ७ फीका, गरब जो करसि जानि का नीका, द्वि० ६ फीके, ताकर काह सराहि अनीके, पं० १ फीके, करहु जो औगुन जानि का नीके। १२. द्वि० १ न छाज, बन कर झाँखर साजु, द्वि० २ न बाजु तेकर खरजा साजु, द्वि० ३ न लाव, बन कर खूमा खाझु। १३. प्र० १ ओपम किमि पावै, प्र० २, द्वि० ७ उपमा किमि पावै, द्वि० २ उपम कि दीजै, द्वि० ३, ४, ५, तृ० २, पं० १ उपम न पूजै।

[४३७]

कँवल सो कवन सुपारी रोठा। जेहि के हिएँ सहस दुइ कोठा।
रहै न झाँपे आपन गटा। सकति उघेलि चाह परगटा।
कँवल[1] पत्र दारिवँ तोरि चोली। देखसि सूर देसि हँसि[2] खोली।
ऊपर राता भीतर पियरा। जारौं वहै[3] हरदि अस हियरा।
इहाँ भँवर मुख बातन्ह लावसि। उहाँ सुरुज हँसि हँसि तेहि रावसि[4]।
सब निसि तपि तपि मरसि पियासी। भोर भएं पावसि पिय बासी।
सेजवाँ रोइ रोइ जल निसि[5] भरसी। तूँ मोसौं का सरबरि करसी।

सुरुज किरिन तेहि रावै सरवर[6] लहरि न पूज[7]।
करम बिहून[8] ए दूनौ[9] कोउ रे धोबि कोउ भूँज[10]॥*

[४३८]

अनु हौं कँवल सुरुज कै जोरी। जौं पिय आपन तौ का चोरी।
हौं ओहि आपन दरपन[1] लेखौं। करौं सिंगार भोर उठि[2] देखौं।
मोर[3] बिगास ओहिक परगासू। तूँ जरि मरसि निहारि अकासू।

---

[४३७] प्र० १, २ बेल। २. प्र० १, द्वि० ४, ५, ७ हिय। ३. प्र० १, २, द्वि० ६, ७ बिरहँ भएउ, द्वि० २ पारौं वट, तृ० २ जारौं तारे, पं० १ बारौं बहै। ४. तृ० ३ सुरुज किरिन हँसि हँसि तेहि रावसि, द्वि० ७ सरग सूर भुइँ हँसि हँसि रावसि, तृ० १ सरग सूर हँसि हँसि बहरावसि, तृ० २ उहाँ सुरुज कहँ हँसि हँसि रावसि, द्वि० ३ सुरजि किरिन हँसि हँसि बहरावसि, पं० १ उहाँ सुरुज पहँ हँसि हँसि रावसि। ५. द्वि० ६, ७ तस। ६. पं० १ सरवन। ७. द्वि०.३ सरोज। ८. प्र० १, द्वि० ७ गुन, बिहून, द्वि० १,२, पं० १ कर बिहून, द्वि० ६, तृ० १,२ कर बिहीन, द्वि० ३ करहिं बहोर, द्वि० ४, ५ भँवर इहाँ। ९. द्वि० २ आहे एह, द्वि० १ दूनौ कौं, द्वि० ४, ५ तोहिं पावै। १०. द्वि० १ अवधी बेगिउ भूँज, द्वि० ४, ५ धूप देह तोरि भूँज, द्वि० ३ कोइ रे धूप कोइ भूँज, पं० १ कोइ सो धूप कोइ भूँज।

* प्र० १ में यह छंद नहीं है किंतु अगले छंद की पाँचवीं पंक्ति में "कँवल के हिरदै महँ जो गटा, हरिहर हार कीन्ह का घटा।" में जो प्रत्युत्तर है, वह इस छंद की पहिली दो पंक्तियों के अभाव में असंगत हो जाता है।

[४३८] १. प्र० १ दरसन। २. प्र० १, २, द्वि० ४, ५, पं० १ भोर मुख, द्वि० २ कँवल मुख, द्वि० ७ भँवर मुख। ३. प्र० १ दूर।

हौं ओहि सौं वह मो सौं राता। तिमिर बिलाइ[4] होत परभाता।
कँवल के हिरदै महँ जौं गटा[5]। हरिहर हार कीन्ह का घटा।
जाकर देवस ताहि पै आवा। कारि रैनि कत देखै पावा।
तूं ऊँबरी जेहिं भीतर माँखा[6]। चाँटिहि उठे मरन कै पाँखा[6]।
धोबिनि धोवै[7] पिरा हरै[8] अंमित सौं सरि पाव[9]।
जेहि नागिनि डसु सो मरै लहरि सुरुज[10] के आव॥

[४३९]

जौं कटहर बड़हर तौ बड़ेरी[1]। तोहि अस नाहिं जो कोका बेरी।
स्यामि जानु[2] मोर तुरुँज जँभीरा। करुई नींबि तौ छाँह गँभीरा।
नरियर[3] दाख ओहि कहँ राखौं। गलि गलि जाउँ[4] नसौतहि भाखौं।
तोरे कहँ होइ मोर काहा। फर बिनु[5] बिरिख कोइ ढेल न वाहा।
नवै सदा फर सो नित फरई। दारिवँ देखि फाटि हिय मरई।
जैफर लौंग सुपारी छारा। मिरिचि[6] होइ जो सहै न पारा।
हौं सो पान रँग पूज न कोऊ। बिरह जो जरै चून जरि होऊ।
लाजन्ह बूढ़ि मरसि नहिं ऊभि उठावसि माँथ।
हौं रानी पिउ राजा तो कह जोगी नाथ॥

[४४०]

हौं पदुमिनी[1] मानसर[2] केवा। भँवर मराल[3] करहिं निति सेवा।

---

४. तृ० ३ तिमिर बिनास, द्वि० ६ तूँ मरि बिलामि, द्वि० ३ तूँ जरि जासि। ५. प्र० १ रोम औ घाँटा। ६. प्र० १, २, द्वि० ४, ५ मोखी, पाँखी, द्वि० २, ७ पाँखा, पाँसा, द्वि० ३ राखा, पाँखा। ७. द्वि० २, पं० १ धूप न होनी, द्वि० ५ धूप न देखा, तृ० १ देह न धोई, तृ० ३ धोबिनि धोइ। ८. तृ० २ के अतिरिक्त सभी में 'मरै'। ९. द्वि० ६ सिर सों पाँव, द्वि० ७ मों सदभाव। १०. प्र० १ सुरा कै, द्वि० ७ कूर कै।

[४३९] १. द्वि० ? द्वि० ३ न बड़ेरी, तृ० ३ तौ डेरी, द्वि० ४, ५ बड़ बैरी, द्वि० ७ तौ डेरी, तृ० १ तहि बडेरी। २. प्र० १, २, द्वि० ७ सामी जनु, द्वि० १ स्यामी मोर, तृ० ३ स्याम जाँनु, द्वि० २ स्यामि चाँप। ३. तृ० ३ नारँग। ४. प्र० १ कायलि जानि, प्र० २, द्वि० २, ३, ५, तृ० १ गलगल जानिउँ, द्वि० ४, ७, पं० १ गलगल जानि। ५. प्र० १, २, द्वि० ३, ४, ५, ७, तृ० १, २ परे। ६. द्वि० २, तृ० ३ सुरहि।

[४४०] १. तृ० १ तूँ। २. द्वि० २ आन मर। ३. प्र० १ गुजार, प्र० २ मलार।

पुजा जोग दैय हौं गढ़ी। मुनि[4] महेस के माँथें चढ़ी।
जानै जगत कँवल कै करी। तोहि असि नाहिं नागिन बिखभरी।
तूँ सब लेसि जगत के नागा। कोइलि भइसि न छाँड़सि कागा[5]।
तूँ भुजइलि[6] हौं हंसिनि गोरी[7]। मोहि तोहि मोंति[8] पोति कै जोरी[9]।
कंचन करी रतन नग बना[9]। जहाँ[10] पदारथ[11] सोह[12] न पना।
तूँ रे राहु हौं ससि उजियारी। दिनहि कि पूजै निसि अँधियारी।

ठादि होसि जेहि ठाईं[13] मसि लागै तेहि ठाउँ।
तेहि डर राँध न बैठौं[14] जनि[15] साँवरि होइ जाउँ॥

[४४१]

फूलु न[1] कवल भानु[2] के उएँ। मैल पानि होइहि जरि[3] छुएँ।
भँवर फिरहिं तोरे[4] नैनाहाँ। लुबुध[5] बिसाँइधि सब तोहि पाहाँ।
मंछ कच्छ दादुर तोहि पासा। बग पंखी निसि बासर बासा[6]।
जो जो पंखि पास तोहि गए। पानी महँ सो[7] बिसाँइधि भए।
सहस बार जौं धोवै कोई। तबहुँ बिसाँइधि जाइ न धोई।
जौं उजियार चाँद होइ उई। बदन कलंक डोवँ कै छुई।
औ मोहि तोहि निसि दिन कर बीचू। राहु के हाथ चाँद कै मीचू।

---

४. प्र० १, २, द्वि० ४, ७ मनि। ५. द्वि० १ मे यह पंक्ति नहीं है। ६. द्वि० १ जा जुग, द्वि० ७ भुजंग। ७. द्वि० १, २, ३, ४, ५, तृ० १, २, ३, पं० १ हंस की जोरी। ८. द्वि० ७ सौति। ९. प्र० १, द्वि० ७ बाना, पाना, द्वि० २ पना, पना, तृ० ३ बाना पना। १०. तृ० ३ जहाँ न। ११. द्वि० ७ दानरथ। १२. द्वि० ७ जो तुम्ह। १३. प्र० १, २ ठाहर। १४. द्वि० ७ बैठ काई। १५. प्र० १, द्वि० २, ३, तृ० २ मति, तृ० १ मकु।

[४४१] १. द्वि० ३ फूला, द्वि० ४, ५ फूलहि, तृ० २, द्वि० ३ फूलइ। २. द्वि० ६ भाव। ३. द्वि० १ होई पै, द्वि० २ होइहि जेहि, द्वि० ३ होइ जस तोहि। ४. प्र० १, २ भुलाहि मोरे, पं० १ फिरहिं मोरे। ५. प्र० १, २, द्वि० २, ४, ५, तृ० ३, पं० १ लीन, द्वि० ७ तेल, द्वि० ३ गंध। ६. प्र० १ बग कार पाँनि रह तुव पासा, प्र० २, द्वि० ३, ४, तृ० १ बग औ पंखि रहहिं निसि बासा, द्वि० २, पं० १ बग औ पंखि रहहिं तुव पासा। ७. प्र० १, २ पनिहा मेँ।

काह कहौं ओहि पिय कहँ मोहिं पर धरेसि[8] अँगार।
तेहि के खेल भरोसें[9] तुइँ जीता[10] मोरि हार॥

[४४२]

तोर अकेल[1] जीतेउँ का हारू। मैं जीता जग केर सिंगारू॥
बदन जीतेउँ जो ससि[2] उजियारी। बनी जीतेउँ भुअंगिनि कारी॥
लोयन[3] जीतेउँ मिरिग के नैना। कंठ जीतेउँ कोकिल[4] के बैना॥
भौंह जीतेउँ अर्जुन धनुधारी। गीवँ जीतेउँ तँवचूर पुछारी॥
नासिक जीतेउँ पुहुप तिल सूवा। सूक[6] जीतेउँ बेसरि होइ उवा॥[5]
दामिनि[7] जीतेउँ दसन चमकाहीं। अधर रंग रवि जीतेउँ सवाहीं[8]॥[5]
केहरि जीति लंक मैं लीन्हा। जीति मराल चाल ओइ दीन्हा॥[5]
पुहुप बास[9] मलयागिरि जीतेउँ[10] परिमल[11] अंग बसाइ॥[5]
तूँ नागिनि मोरि आसा[12] लुबुधी मरसि[13] कि हरकौं[14] जाइ॥[5]

[४४३]

का तोहि गरब सिंगार पराएँ। अबहीं लेहि लूसि[1] सब ठाएँ[2]॥

---

८. प्र० १ सिर धरेसि, तृ० ३ पर दरसि, द्वि० ४ धरसि। ९. तृ० ३ तरो से।
१०. प्र० १ तोरि जीता।

[४४२] १. द्वि० २ का तोर बन्न, तृ० २ तोर खेल। २. प्र० १, २, द्वि० ७ चौदसि। ३. प्र० १, २ बनहि, द्वि० २, ३, ७, तृ० १, पं० १ नैनन्हि, तृ० ३ बदन, द्वि० ४, ५ औ मैं। ४. तृ० ३ सारँग। ५ तृ० ३ में इस छंद की अंतिम पाँच पंक्तियों के स्थान पर छंद ४४४ की अंतिम पांच पंक्तियाँ हैं। ६. प० १ सुकन। ७. प्र० १, २ दाखि। ८. प्र० १ रवि जोति सवाहीं, द्वि० ७ जीतेउँ सब पाहीं, द्वि० ३ विद्रुम छपि जाहीं। ९. पं० १ बास लिहा। १०. प्र० १, २, द्वि० २, ४, ५, ३, प० १ मलयागिरि। ११. प्र० १, २, द्वि० १, २, ३ तृ० १, २ चंदन, द्वि० ५ निरमल। १२. प्र० १ नागिनि अस, द्वि० १ नागिनि मोहि। १३. प्र० १ यहसि। १४. प्र० २ किहिर कै, द्वि० १ रुधिर कौं, द्वि० ७ कि हरकै।

[४४३] १. द्वि० १, तृ० ३, पं० १ नवसि, द्वि० ४, ५, लूटि। २. प्र० १, २, द्वि० ४ हौ मोहिं चाहि ऊँचि नागेसरि, निसि दिन हिएँ चढावौं केसरि।

हौं साँवरि सलोनि सुभ नैना। सेत चीर मुख चात्रिक[3] बैना[4]।
नासिक खरग फूल धुव तारा। भौंहैं धनुक गँगन को पारा।
हीरा दसन सेत औ स्यामा। छपै बिज्जु जौं बिहँसै रामा।
बिद्रुम अधर रंग रस राते[5]। जूड़ अमीं अस रवि परभाते[6]।
चाल गयंद गरब अति भरी[7]। बिसा लंक नागेसरि करी[8]।
साँवरि जहाँ लोनि सुठि[8] नीकी। का गोरी सरवरि कर[9] फीकी।[10]

पुहुप बास हौं पवन अधारी कँवल मोर तरहेल।
जब चाहौं धरि[11] केस ओनावौं[12] तोर मरन मोर खेल॥

[४४४]

पदुमावति सुनि उतर न सही[1]। नागमती नागिनि जिमि[2] गही।
ओइ ओहि कहँ ओइ ओहि कहँ गहा। गहा गहनि तस जाइ न कहा।
दुऔ नवल[3] भर जोबन गाजीं। अछरीं जानु अखारें बाजीं।
भा बाँहनि बाँहनि सौं जोरा। हिया हिया सौं बाग न मोरा।
कुच सौं कुच जौं[4] सौहैं आने। नवहिं न नाए टूटहिं ताने।
कुंभ स्थल जेउँ गज[5] मैमंता। दूनौ अल्हर भिरे[6] चौदंता।

---

3. तृ० ३ सारँग। 4. प्र० २ सुठि लोनी, सेत चीर मुख चात्रिक बैनी। द्वि० २ सुठि लोनी, सेत चीर हर रस गज गौनी। तृ० २ मृग नैनी, सेत चीर मुख चात्रिक बैनी। 5. द्वि० २, पं० १ रस पाके। 6. प्र० १, २ जो दामिनि अस रवि नहिं ताते, द्वि० १ चूव अमी रस और हो ताते, द्वि० २ जो दामिनि अस दिप दिप नहिं ताते, द्वि० ७, पं० १ जो दामिनि अमर बिनु ताके, तृ० १ जूड़ अमी रवि ऐस न ताते, द्वि० ६ अंमित ओर रवि रस थिर ताते, द्वि० ४, ५ जो दामिनि अस रवि महँ ताते, द्वि० ३ जो दामिनि रस रवि नहिं ताते, तृ० २ जूड़ अमी रस रवि परभाते। 7. तृ० ३ भारी, कारी। 8. प्र० १, २, द्वि० ७ सो। 9. प्र० १, २ कहाँ सो गोरि करै सरि, द्वि० ६ काह सो गोरि लोनि पुनि, द्वि० ७ कहाँ सो गोरि अलोनी। 10. द्वि० २, पं० १ में इस पंक्ति के स्थान पर पादटिप्पणी २ की पंक्ति है। 11. तृ० १ गहि। 12. द्वि० ४ का सरवरि तू करसि जो।

[४४४] 1. द्वि० २ कही। 2. प्र० २ सिर। 3. प्र० २, तृ० ३ तूल। 4. तृ० १, ३ कुचन्हि सौं, तृ० २ कुच भै। 5. तृ० १, २ दुइ। 6. प्र० १, द्वि० १, २, ३, ४, तृ० १, पं० १ अभर भिरे, प्र० २ भरे, भिरे द्वि० ५ अभर पड़े।

देव लोक देखत मुए[7] ठाढ़े। लागे बान हियँ[8] जाहिं न काढ़े।

जानहुँ दीन्ह ठग लाडू, देखि आइ तस मींचु।
रहा न कोइ घरहरिया[9] करै जो टुहुँ महँ बीचु॥

[४४५]

पवन स्रवन[1] राजा के लागा। लरहिं दुओ[2] पदुमावति नागा[3]।
दूओ सम[4] साँवरि. औ गोरी। मरहिं तो कहँ पावसि[5] असि जोरी।
चलि राजा आवा तेहि बारी। जरत बुझाईं दूनौ नारीं[6]।
एक बार जिन्ह पिउ मन[7] बूझा। काहे कौं दोसरे सौं जूझा।
अैस ग्यान मन जान न कोई[8]। कबहूँ राति कबहुँ दिन होई।
धूप छाँह दुइ पिय[9] के रंगा[10]। दूनौं मिली रहहु एक संगा।
जूझब छाँड़हु बूझहु दोऊ। सेव करहु सेवाँ कछु[11] होऊ।

तुम्ह गंगा जमुना दुइ नारी[12] लिखा मुहम्मद जोग।
सेव करहु मिलि दूनहुँ[13] औ मानहु सुख भोग॥

---

७. प्र० २ सुनहिं सब, द्वि० १ सब देखहिं, द्वि० २ देखत सब, द्वि० ४, तृ० २ देखत हुते, द्वि० ३ देखत जो। ८. प्र० १ बोल बान हिय, प्र० २ बोल बान हिय, तृ० ३ लागे बान तेत। ९. प्र० २ घरहरिआ नहिं कोई।

[४४५] १. प्र० १, २ हीरामनि, द्वि० ५, ७ हीरामनि स्रवन, द्वि० ३ हीरामनि चरन, द्वि० ६, तृ० १, पं० १ पवन स्रवन। २. द्वि० ५ कहेसि लरहिं। ३. द्वि० ५, ६ पदुमिनि औ नागा। ४. प्र० १, २ दुओ चतुरि, द्वि० ५ दूनौ सौति। ५. प्र० १, २, द्वि० ७ नहिं पावै, द्वि० २ कहाँ पावसि, तृ० ३ कत पावसि, द्वि० ३, पं० १ कहँ पावहु। ६. प्र० १, २ लरत मरत बरजी दोउ नारी, द्वि० ७ जरी न बुझाइ दीन्ह दी बारी। ७. तृ० २ सन। ८. प्र० १ मन जाकर होई। ९. द्वि० ५ रंगी। १०. तृ० ? अंगा। ११. तृ० ३ मोख कछु, द्वि० ४, ५ सेवा भल। १२. प्र० १, २, द्वि० ३, तृ० २, पं० १ तुम्ह गंगा वह जमुना, द्वि० १ गंग जमुन तुम्ह दोऊ। १३. द्वि० ७ सेवा करहु रहसि मिलि। १४. प्र० २, द्वि० १, २, पं० १ रस।

* इसके अनंतर प्र० १, २, द्वि० ४, ५, ६, ७, तृ० ३ में दो छंद तथा द्वि० ३ में तीन छंद अतिरिक्त हैं।

[४४६]

राघौ चेतनि चेतनि[1] महा[2]। आइ ओरँगि राजा कै[3] रहा।
चित चिंता जानँ बहु भेऊ। कवि वियास पंडित सहदेऊ।
बरनी आइ राज कै[4] कथा। सिंघल कवि[5] पिंगल सब मथा[6]।
कवि ओहि सुनत सीस पै धुना। स्रवन सों नाद बेद कवि सुना[7]।
दिस्टि सो धर्म पंथ जेहि सूझा। ग्यान सो परमारथ मन[8] बूझा।
जोग सो[9] रहै[10] समाधि समाना। भोग सो गुनी केर गुन[11] जाना।
बीर सो रिस मारै मन गहा[12]। सोइ सिंगार पाँच भल कहा[13]।

वेद भेद जस बररुचि[14] चित चिंता तस[15] चेत।
राजा भोज चतुर्दस विद्या[16] भा चेतन[17] सौं हेत[18] ॥*

[४४७]

घरी अचेत होइ जौ[1], आई। चेतन कर पुनि[2] चेत भुलाई।
भा दिन एक अमावस सोई। राजैं कहा, दुइज कब होई।
राघौ के मुख निकसा आजू। पँडितन्ह कहा कालिह बड़ राजू[3]।

---

[४४६] १. प्र० १, २ पंडित। २. द्वि० २ कहा, द्वि० ७ सहा। ३. प्र० १, २ पहँ, द्वि० ६ सों। ४. प्र० १, २ बरनि न जाइ राज। ५. द्वि० ६ महँ। ६. तृ० ३ माया। ७. प्र० १ सुर बना, प्र० २ कबि सुना, द्वि० १ सो गुना, द्वि० २, तृ० १, २, पं० १ कवि गुना। ८. तृ० ३ पीरम अर्थ सो, तृ० १ परिमल अर्थ महँ। ९. प्र० २, द्वि० ४ जो। १०. प्र० १ जुगति, प्र० २ गवहि। ११. प्र० १ भोगी सोइ जो गुनी गुन, प्र० २, द्वि० २, ३, ५ तृ० १ भोगी सुगुनी केर गुन, तृ० २ भोगी सो गहि केर गुन, द्वि० ४ भोगि जो गुनी केर गुन, तृ० ३ भोग जोग नीकैं रँग। १२. प्र० १, २ बैरी सारि मारि मन रहा। १३. द्वि० ४, ५, तृ० २ कँन जो चहा, पं० १ जेहि सब भल कहा। १४. प्र० १ बरुचि, तृ० ३ रुचि, तृ० १ बरजहि। १५. प्र० १, २, द्वि० ७ चितहि चेतावै, द्वि० ६, पं० १ तस चेतन तहँ। १६. प्र० १, द्वि० ४, ६, पं० १ चतुर्दस। १७. द्वि० १ राजा, द्वि० ३, तृ० ३ राघौ। १८. प्र० १ भेंट।
*प्र० १, २ में इसके अनंतर चार अतिरिक्त छंद हैं।

[४४७] १. तृ० ३ अचेत चेत जौ, तृ० २ एक अचेत चित। २. प्र० १, तृ० १ केरँ, द्वि० ३, ४, ६ कर सब, तृ० २ कर गा। ३. प्र० १, २ महराजू, द्वि० २, ३, तृ० २ बड़ साजू। ४. प्र० १, द्वि० ७, पं० १ इन्ह महँ।

राजै दुहूँ दिसा फिरि देखा। को पंडित बाउर[6] को सरेखा[5]।
पैज टेकि तब पँडितन्ह[6] बोला। झूठा बेद[7] बचन जौं डोला।[8]
राघौ करत जाखिनी पूजा। चहत सो रूप देखावत दूजा।[9]
तेहि बर भए पैज कै कहा। झूठ होइ सो देस न रहा।

राघौ[10] पूजा जाखिनी[11] दुइज देखावा साँझ[12]।
पंथ गरंथ न जे चलहिं ते भूलहिं बन माँझ[12]॥

[४४८]

पंडित कहहिं हम परा न धोखा। यह सो[1]अगस्ति समुँद जेइँ सोखा।
सो दिन गएउ साँझ भौ दूजी। देखिअ दूजि[2] घरी वह[3] पूजी।
पंडितन्ह राजहिं दीन्ह असीसा। अब कसिअइ कंचन औ सीसा।[4]
जौं वह दूजि कालिन्ह कै होती। आजु तीजि देखिअति तसि[5]जोती।
राघौ कालिह दिस्टि बँध खेला। सभा मोहिं[6] चेटक सिर[7] मेला[8]।
एहि कर गुरू चमारिनि लोना[9]। सिखा काँवरू[10] पाढ़ित[11] टोना[12]।
दूजि अमावस महँ जो देखावै। एक दिन राहु चाँद कहँ लावै।

---

५. द्वि० ७ लेखा। ६. प्र० १, २, द्वि २, पं० १ पंडित दीन्ह आसिखा। ७. प्र० १, २ द्वि० २, ४, ५, पं० १ छाडहि देस, तृ० ३ झूठा सोर। ८. द्वि० ७ राघौ सो पंडित शुन साजा, दिया बाद बोलकर बाजा। द्वि० ६ में यह पंक्ति नहीं है। ९. प्र० १, २, द्वि० २, ४, ५, ६, पं० १ तेहि ऊपर राघौ बर राचा, दुइज आजु तौ पंडित साँचा। १०. द्वि० १ चेतन। ११. द्वि० ६ करन जाखिनी पूजा, द्वि० ७ तह जर बोले राघौ। १२. प्र० १, २, पं० १ साँझ, पंडित पंडित न देखइ भएउ बैर दुहु माँझ। द्वि० ६ साँच, सेहि कहा पंडित सब भूले वेत सास्तर बाँच। द्वि० ७ साँझ, सबहु कहा पंडित भूले गनती सास्तर माँझ।

[४४८] १. प्र० १, २, द्वि० २ यह को, द्वि० ५, ७, कौन। २. द्वि० १ आइ। ३. प्र० १, २ जब, द्वि० १ सो। ४. द्वि० ६ में यह पंक्ति नहीं है। ५. प्र० १ देखिअ अति, द्वि० २, ४, ५, पं० १ देखियत ससि। ६. द्वि० २, ४, ५, तृ० ३ माहँ। ७. द्वि० ४, ५ अस। ८. द्वि० २, पं० १ पंडित न होइ काँवरू चेला। ९. तृ० ३ नोना। १०. द्वि० २, पं० १ सोइ देखावै। ११. प्र० १, २ सो असि पढि दखरावै, द्वि० १ तेहि तें सिखे जाइ यह। १२. पं० १ सोइ दिखावै पाढ़ित टोना।

राज बार अस[13] गुनी न चाहिअ[14] जेहि टोना कर खोज ।
एहि छंद[15] ठगविद्या[16] डहँका राजा[17] भोज ॥*

[४४९]

राघौ बैन जो कंचन रेखा । कसें बान पीतर अस देखा[1] ।
अग्याँ भई रिसान नरेसू । मारौं काहु निसारौं देसू[2] ।
तब चेतन चित चिंता गाजा[3] । पंडित सो जो बेद मति साजा[4] ।[5]
कबि सो पेम तंत कबिराजा । झूँठ साच जेहि कहत न साजा ।[7]
खोट रतन सेवा[8] फटिकरा । कहँ खर रतन जो दारिद हरा[9] ।
चहै लच्छि बाउर कबि सोइ । जेहि सुरसती लच्छि कित[10] होई ।
कबिता सँग दारिद मति[11] भंगी । काँटइ कुटिल पुहुप के संगी ।

---

१३. पं० १ राजा । १४. द्वि० १ जाचर, पं० १ न राखिअ । १५. प्र० १, २ चेटर, द्वि० ७ भेष, तृ० १ भेद । १६. पं० १ औ । १७. द्वि० ७ डँहका बररुचि, द्वि० ४, ५ धरा हो ।

* प्र० १, २, द्वि० ३, ६, ७ में इस छंद की प्रथम पंक्ति के अनंतर आठ तथा, द्वितीय के अनंतर एक, कुल मिलाकर नौ पंक्तियाँ अतिरिक्त हैं । और इस छंद के अनंतर प्र० १, २, द्वि० ३, ६, ७ में दो छंद अतिरिक्त हैं ।

[४४९] १. पं० १ राजैं सुना सुनत मन भेला । दिस्टिबंद तस देखि सुपेखा । २. पं० १ राघौ पर काया परमेसू । अग्या भई निकारहु देसू । ३. प्र० १, २, द्वि० ६, ७ तब चेतन चेता होइ जागा । (द्वि० ६—गाजा), द्वि० १, ४, ५, तृ० १, २ झूठ बोल थिर रहै न राँचा । ४. प्र० १, २, द्वि० ६, ७ लागा, द्वि० १, ४, ५, तृ० १, २ साँचा । ५. पं० १ पंडित सो जो बेद मत सिखा, कविता सो जो परम पद लिखा । ७. प्र० १, २, द्वि० ७ कबि सोइ परम संत कबि करना, जेत बरनै छाजै सब बरना । तृ० २ टेढ़ी होइ सो मारग साँचा । झूठ बोल थिर रहै न बाचा । द्वि० ३, ६ पंथ जो चलै (सिध होइ चलै —द्वि० ३) सो मारग साँचा, झूठ बोल थिर रहै न बाचा । द्वि० ४, ५, तृ० २ बेद बचन मुख साँच जो कहा, सो जुग जुग अस्थिर थिर रहा । पं० १ तब हो बोल दुहूं कर साँचा, कुसुम रंग थिर रहै न राँचा । ८. प्र० १, २, द्वि० ६, ७ बरना, द्वि० ३, ४, ५, तृ० १ सोई । ९. तृ० २ सो भारिद हरा । १०. तृ० ३ तेहि । ११. प्र० २ गति ।

कबिता चेला बिधि गुरू[१२] सीप सेवाती बुंद।
तेहि मानुस कै आस का जो मरजिआ समुंद॥*

[४५०]

यह रे बात पदुमावति सुनी। चला निसरि कै[१] राघौ गुनी।
कै गियान धनि अगम बिचारा। भल न कीन्ह अस गुनी निसारा।
जेइँ जाखिनी पूजि ससि काढ़ी। सुरुज के ठाउँ करै पुनि ठाढ़ी।
कबि कै जीभ खरग हिरवानी। एक दिसि आग दोसर दिसि पानी।
जनि[२] अजगुत काढ़ै मुख भोरें। जस बहुतें अपजस होइ थोरें।
राघौ चेतनि बेगि हँकारा। सुरुज गरह[३] भा लेहु[४] उतारा।
बाँभन जहाँ दक्खिना पावा। सरग जाइ जौं होइ[५] बोलावा।
आवा राघौ चेतनि[६] धौराहर के पास।
अैस न जानै हिरदै[७] बिजुरी बसै अकास॥

[४५१]

पदुमावति सो झरोखें आई। निहकलंक जसि[१] ससि देखराई।
ततखन राघौ दीन्ह असीसा। जनहुँ चकोर चंद मुख दीसा।
पहिरें ससि नखतन्ह कै मारा। धरती सरग भएउ उजियारा।
औ पहिरें कर कंगन जोरी। लहै सो एक एक नग नव कोरी।
कंगन काढ़ि सो एक अडारा[३]। काढ़त हार[२] टूटि गौ मारा[३]।

---

[१२]. तृ० ३ बिच गुरू, द्वि० ६ बिरोध कै, तृ० १, २ बुधि गुरू।

* प्र० १, २ में इसके अनन्तर पाँच तथा द्वि० ३ में एक अतिरिक्त छन्द है।

[४५०] [१]. प्र० २, तृ० १ चला बिछुरि कै, द्वि० २,४, ५, पं० १ देस निसारा, द्वि० ७ चला बिरस कै, तृ० २ चला बिसुरि कै। [२]. प्र० २ जेहि। [३]. प्र० १, २, द्वि० ७ तृ० ३ सुरुज गहन भा, द्वि० ४, ५ सूरज गद तर, तृ० १ सुरज गरह भइ। [४]. प्र० १, २, द्वि० ६, पं० १ देउँ। [५]. तृ० ३ कोइ, तृ० २ जाइ। [६]. द्वि० ७ बेगि तहँ। [७]. प्र० १, २ जिय महँ।

[४५१] [१]. द्वि० ३, ६, ७, तृ० २ जनु, पं० १ होइ। [२]. द्वि० २ हाथ, द्वि० ३ नारि। [३]. प्र० २, द्वि० ६ अडारा, गै मारा, द्वि० १ अडारा, सँग मारा, द्वि० २, पं० १ अडारी, गिय मारी, तृ० ३, अडारा औमारा, द्वि० ४ अडारी, गियँ हारी, द्वि० ५ अडारी, गियँ नारी, द्वि० ७ अडारा, गा मारा, तृ० १ अडारा, गियँ मारा, तृ० ३ अटारा, औंवारा।

जानहुँ चाँद टूट लै[4] तारा। छूटेउ मरग[5] काल कर धारा।
जानहुँ सुरुज[6] टूट लै[7] करा[8]। परा चौंधि[9] चित चेतनि हरा।

परा आइ भुइँ कंगन जगत भएउ उजियार।
राघौ मारा बीजुरी बिसँभर कछु न सँभार॥

[४५२]

पदुमावति हँसि दीन्ह झरोखा। अब जो गुनी मरइ मोहिं दोखा।
सखीं सरेखीं[1] देखहिं[2] धाई। चेतन अचेत परा केहि घाईं[3]।
चेतन परा न एकौ चेतू। सबन्हि कहा एहि लाग परेतू।
कोइ कह काँप आहि सनिपातू। कोइ कह आहि मिरिगिया बातू।
कोइ कह लाग[4] पवन कर झोला। कैसेहुँ समुझि न राघौ[5] बोला।
पुनि उठारि बैसारिन्हि छाहाँ। पूँछहिं कौनि पीर जिय[6] माहँ॥
दहुँ काहू के दरसन हरा। कै एहि भूत भूत छँद छरा।

कै तोहि दीन्ह काहु किछु के रे डसा तूँ साँप।
कहु सचेत होइ चेतन देह तोरि कस काँप॥

[४५३]

भएउ चेत चेतन तब जागा। बकत न आव टकटका लागा[1]।

---

४. द्वि० ५ टूटती। ५. १ छूट अगस्ति, प्र० २ टूट अँगार, द्वि० ६, पं० १ छूट अकास, द्वि० १ टूटेउ सरग। ६. तृ० २ सरग। ७. द्वि० २ गै। ८. प्र० १, २ द्वि० ४,५,६, पं० १ जानहुँ बीजु टूटि भुइँ परा, द्वि० १ औ जस बीजु टूटि भुइँ परा; तृ० १ जानहु चाँद बीज भुइँ परा। ९. द्वि० १ चौंकि।

[४५२] १. द्वि० ३,४, ५, ७, तृ० १, पं० १ सहेली। २. द्वि० ३, तृ० ३ पूँछैं। ३. प्र० १, २, द्वि० २, ४, ५, ६, ७, द्वि० ३, पं० १ जगावहिं आई, तृ० ३ परा तेहि ठाईं। ४. द्वि० ६, तृ० १ मार। ५. द्वि० १, तृ० २ चेतन। ६. प्र० १, द्वि० २ तोहि, पं० १ हिय।

[४५३] १. द्वि० १, २, ३, ४, ५, तृ० १, २, ३, पं० १ भएउ चेत चेतन चित चेता, नैन झरोखें जीव सँकेता। यह पाठ इसलिए अप्रामाणिक लगता है, कि प्रथम चरण पुनः ४५६ के प्रथम चरण के रूप में आता है, और दूसरे चरण का 'नैन झरोखे" इस छंद की दूसरी अर्द्धाली के दूसरे चरण में आता है]

पुनि जौं बोला बुधि मति खोया। नैन झरोखा लाएँ रोवा[२]।
बाउर बहिर सीस पै धुना। आप न कहै पराए न सुना।
जानहुँ लाई काहुँ ठगौरी[३]। खिन पुकार खिन बाँधै पौरी[३]।
हौं रे ठगा एहि चितउर माहाँ। कासौं कहौं जाउँ केहि पाँहा।
यह राजा मुठि बड़ हत्यारा। जेइँ अस ठग राखा उजियारा[४]।
ना कोइ बरज न लाग गोहारी। अस एहि नगर होइ बटवारी।

दिस्टि दिए ठगलाडू[५] अलक[६] फाँस परि गींव।
जहाँ भिखारि न बाँचहि तहाँ बाँच को जीव॥

[४४४]

कत धौराहर आइ झरोखें। लै गै[१] जीव दक्खिना धोखें।
सरग सूर ससि करै अँजोरी[२]। तेहि तें अधिक ठेउँ केहि जोरी[२]।
ससि सूरहि जौं[३] होति यह जोती। दिन भा रहत रैनि नहिं होती।
सो हँकारि मोहि कगन[४] दीन्हा। दिस्टि न परै जीव हरि लीन्हा।
नैन भिखारि ढीठ सत[५] छाँड़े। लागे तहाँ बान त्रिसु[६] गाड़े[७]।
नैनहिं नैन जो बेधि समाने। सीस धुनहिं नहिं निसरहिं[८] ताने।
नवहिं न नाएँ निलज भिखारी। तबहुँ न रहहिं[९]लागि मुख कारी[१०]।

कत करमुखे नैन भए[११] जीव हरा जेहि बाट।
सरवर नीर बिछोह जेउँ तरकि तरकि हिय फाट॥

---

२. पं० १ जनु सो सुवा निसाँसी जागा, धुनि धुनि माथ मलै कर लागा। ३. तृ० ३ बौरी, पं० १ का ी। ४. पं० १ बटपारा। ५. तृ० ३ दिस्टार ठकलादू (उर्दू मूल)। ६. द्वि० २ लाग।

[४५४] प्र० २, २, द्वि० ३ पं० १ लौं गै, द्वि० १ लीन्ह, द्वि० ४ लै गएउ। २. प्र० १, २, द्वि० ६, ७, प० १ अँजोरा, जोरा। ३. प्र० १ सूरहि सौं, प्र० २, सोरह जो (उर्दू मूल), द्वि० १ सूरहि जस। ४. द्वि० ३, तृ० २, ३, च० १ दखिना। ५. प्र० १ तस। ६. प्र० १ लागे भैस बानवे, प्र० २, पं० १ लागै तहाँ बान होइ, द्वि० ३, ४, ५, ६, तृ० २ लागे तहाँ बान हिय, द्वि० ७ लागत बान हिए ते, तृ० १ लागे तहाँ बान जहँ। ७. द्वि० २ नवहिं न नाए नैन भिखारी, सीर न रहहि लाग बिख भारी। (तुलना० ४५४७)। ८. तृ० ३ सारहि। ९. द्वि० ४, ५ तबहूँ बड़े। १०. द्वि० २ थिर न रहहि ये नैन भिखारी, अनुमन होइ बिख लेहि भहारी। ११. प्र० १, द्वि० ७ नैन तुम्ह, प्र० २ नैन तुम्ह हेरइ, द्वि० १ भाए।

[४५५]

सखिन्ह कहा चेतनि बिसँभरा[१]। हिऐं चेतु जिय जासि न मरा[१]।
जौं कोइ पावै आपन माँगा। ना कोइ मरै[२] न काहू[३] खाँगा[४]।
वह पदुमावति आहि अनूपा[५]। बरनि न जाइ काहु कै रूपा।
जेइँ चीन्हा[६]सो गुपुत[७]चलि गएऊ। परगट काह[८] जीउ बिनु भएऊ।
तुम्ह अस बहुत बिमोहित भए। धुनि धुनि सीस[९] जीव दै गए।
बहुतन्ह दीन्ह नाइ कै गीवा। उतरु न देइ मार पै[१०] जीवाँ।
तूँ पुनि मरब होब जरि भुई। अबहुँ उघेलु कान कै रूई।

कोई माँगि मरै नहिं पावै[११] कोइ बिनु माँगा पाउ।
तूँ चेतनि औरहि समुझावहि दहुँ तोहि को[१२]समुझाउ॥

[४५६]

भएउ चेत चित[१] चेतनि चेता। बहुरि न आइ सहौं दुख एता।
रोवत आइ परे हम जहाँ। रोवत चले कवन सुख तहाँ।
जहँवाँ रहे साँसौ[२] जिय केरा। कौनु रहनि मकु[३] चलौं सबेरा[४]।
अब यह भीख तहाँ होइ[५] माँगौं। तेत देइ जग[६] जरमि न खाँगौं।
औ अस कगनु पावौं दूजी। दारिद हरै इंछ मन पूजी।[७]
ढीली नगर आदि तुरुकानू। साहि[८] अलाउदीन सुलतानू।
सोन जरै[९] जेहि की[१०] टकसारा। बारह बानी परहिं[११] दिनारा।

---

[४५५] १. द्वि० २, ३, ६, तृ० २, बिसँभारा, मारा। २. पं० १ पावै। ३. तृ० २, पं० १ कबहूँ। ४. प्र० १, २, द्वि० ७ में यह पंक्ति ६ है। ५. तृ० ३ सरूपा। ६. प्र० १, २, देखा। ७. द्वि० ६ गुनत। ८. द्वि० ३ कया, तृ० १ कपट। ९. तृ० ३ माँथ। १०. प्र० १ बरु, द्वि० २, ३ कै। ११. प्र० १, २, द्वि० २, पं० २ कोई माँगि न पावै। १२. प्र० १, द्वि० २, ७ तो कहँ को, तृ० ३ तोहि अब को।

[४५६] प्र० २, द्वि० ३, ७, मन। २. प्र० १, २, द्वि० ७ संसै, द्वि० १, २, ३, तृ० १, ३ साँखी। ३. प्र० २ बरु, द्वि० ६, तृ० २ बस। ४. द्वि० १ में यह पंक्ति नहीं है। ५. प्र० १ कै, द्वि० २ हौं। ६. प्र० १, २ लेन देइ बरु, द्वि० २ तुरत देइ जग, द्वि० ६ तैस देइ जग, द्वि० ७ तेऊ देइ। ७. च० १ छंद ४२८.१ से यहाँ तक खंडित है। ८. प्र० १ आहि आदि, तृ० २ नगर उवै। ९. प्र० २ जरद। १०. प्र० १ ताकी, प्र० २ ताकरि। ११. प्र० १, २ चलै।

तहाँ जाइ यह कँवल अभासौं[12] जहाँ अलाउद्दीन।
सुनि के चढ़ै भानु होइ[13] रतन होइ जल मीन[14]॥

[४५७]

राघौ चेतन कीन्ह पयाना। ढीली नगर जाइ नियराना।
जाइ साहि के बार[1] पहूँचा। देखा राज जगत पर ऊँचा।
छतिस लाख ओरगन्ह[2]असवारा। बीस[3] सहस हस्ती दरबारा।
जाँवत तपै जगत महँ[4] भानू। ताँवत[5] राज करै सुलतानू।
चहूँ खंड के राजा आवहिं। होइ अस मर्द[6]जोहारि न पावहिं।
मन तिवानि कै राघौ झूरा। नहिं उबारु जिय कादर[7] पूरा।
जहाँ झुराहिं दिहें[8] सिर छाता। तहाँ हमार को चालै बाता।

अरध उरध नहिं[9] सूझै लाखन्ह उमरा मीर।
अब खुर खेह जाब मिलि आइ परे तेहि भीर॥

[४५८]

पातसाहि सब जाना[1] बूझा। सरग पतार रैनि दिन सूझा।
जौं राजा अस सजग न होई। काकर राज कहाँ कर कोई।
जगत भार वहि[2] एक सँभारा। तौ थिर रहै सकल संसारा।

---

१२. प्र० १,२, द्वि० २,४, ५, तृ० १, च० १ दरसानौं, पं० १ खोलौं, द्वि० १ कँवल उघारौं, द्वि० ३,६ कँवल बिगासौं, तृ० ३ कँवल उभासौं,। १३. द्वि० ३, ७, भानु होइ तावहँ, पं० १ भानु कौ। १४. प्र० १, २, रतन जो होइ मलीन।

[४५७] १. तृ० ३ दर बार। २. प्र० २, तृ० ३ दरिगह, द्वि० ४, ५ तुरक (या तुरग)। ३. तृ० ३ तीस। ४. प्र० २, द्वि० २ दिन, द्वि० ५, ६, तृ० १, २ पर। ५. द्वि० ५ यहँलगि। ६. प्र० १, २, द्वि० २, ३,४, ५, ६, ७, च० १ ठाढ़ झुराहिं, द्वि० १ होइ अस पुरुख, तृ० १ होइ अस मरो, तृ० २ ठाड़ जुझार, पं० १ हो अम मी। ७. प्र० १, २, द्वि० ७, पं० १ नहिं पैसार जिउ का डर, द्वि० २ नाहिं अपार अगर डर, तृ० १ नाहिं और बाजीकि डर, च० १ नहिं उबार जिय का डर। ८. प्र० १, २, द्वि० ७ जहँ झूराहिं दीन्हे। ९. द्वि० ७ तोहिं, तृ० ३ मांहि
[४५८] १. प्र० १, २, द्वि० ७, तृ० १ जानै। २. तृ० ३ जौं, तृ० १ ये।

औ अस ओहिक सिंघासन ऊँचा। सब काहू पर दिस्टि पहूँचा।
सब दिन राज काज सुख भोगी। रैनि फिरै घर घर होइ जोगी।
रॉव रॉक सब जावँत जाती। सब की चाह[3] लेइ दिन राती।
पंथी परदेसी जेत आवहिं। सब की[3] बात दूत पहुँचावहिं।

यहु रे बात तहँ[4] पहुँची[5] सदा[6] छत्र सुख छाँह।
बाँभन एक बार है[7] कँगन[8] जराऊ बाँह॥

[४५९]

मया[1] साहि मन[2] सुनत भिखारी। परदेसी कहँ पूँछु[3] हकारी।
हम पुनि है जाना परदेसा। कौनु पंथ गवनब केहि भेसा।
ढीली राज चित मन गाढ़ी। यह जग जैस दूध महँ साढ़ी।
सैंति बिरोरि[4] छाछि कै[5] फेरा। मथि घिउ लीन्ह महिउ[6] केहि केरा।
एहि ढीली कत होइ होइ गए। कै कै गरब छार सब भए।
तेहि ढीली का रही ढिलाई। साढी गाढि ढीलि जब ताई[7]।
रावन लंक जारि सब तापा। रहा न जोबन औ तरुनापा।

भीखि भिखारिहि दीजिअै का बाँभनु का भाँट।
अग्याँ भई हँकारहु[8] धरती धरै लिलाट॥

[४६०]

राघौ चेतनि हुत जो[1] निरासा। तेतखन बेगि बोलावा[2] पासा।

---

३. प्र० १, २, पं० १ खन खन बात, द्वि० ३, ४, तृ० २, च० १ सब की चाह। ४. द्वि० ७ जौ। ५. द्वि० ७, तृ० ३ पहुँचै (उर्दू मूल)। ६. प्र० १ जहाँ। ७. च० १ बार है ठाढा। ८. द्वि० ३, तृ० ३ कनक, द्वि० ७ कसन।

[४५९] १. प्र० १ भएउ, प्र० २ मञा, द्वि० १ किरपा, द्वि० ७ मैआ। २. द्वि० २ मयावंत भा। ३. द्वि० १, तृ० ३ बेगि। ४. द्वि० १ मरोरि, द्वि० ४, ५ मिलोइ। ५. प्र० १ लीन्ह चहुँ, प्र० २, पं० १ कीन्ह चहुँ, द्वि० ७ आछि जग। ६. द्वि० १, तृ० ३ दही। ७. प्र० १, २ साढी काढि, लीन्ह जहँ ताईं, तृ० १ साढी गाढि, दूध जब ताईं, तृ० २ सा.ी काढि मनहु जहँ ताईं, द्वि० ३ सारी छाज ढील जब ताईं। ८. द्वि० १ साइकै, द्वि० ४, ५, तृ० ३, च० १ बोलहु।

[४६०] १. प्र० १ तहाँ, द्वि० १ रहा, द्वि० ७ होत। २. तृ० १ हँकारा।

सीस नाइ कै दीन्ह[3] असीसा। चमकत[4] नगु कंगनु कर दीसा।
अग्याँ भई सो[5] राघौ[6] पाहाँ। तूँ मंगन कंगन का[7] चाहाँ।
राघौ बहुरि[8] सीस भुइँ धरा। जुग जुग राज भान कै करा।
पदुमिनि सिंघल दीप की रानी। रतनसेनि चितउर गढ़ आनी।
कँवल न सरि पूजै तेहिं[9] बासाँ। रूप न पूजै चंद अकासाँ।
जहाँ कँवल ससि सूर न पूजा। केहि सरि देउँ और को पूजा।

सो रानी संसार मनि[10] दछिना कंगन दीन्ह।
आछरि रूप देखाइ कै धरि गहनें जिउ[11] लीन्ह॥

[४६१]

सुनि कै उतर साह मन हँसा। जानहुँ बीज चमकि परगसा।
काँच जोग जहँ कंचन पावा। मंगन तेहिं सुमेरु चढ़ावा।
नाउँ भिखारि जीभ मुख बाँची। अबहूँ सँभारु[1] बात कहु साँची।
कहँ असि नारि जगत उपराहीं। जेहि की सरिस सूर ससि[2] नाहीं।
जौं पदुमिनि सौ मंदिर मोरें। सातौ दीप जहाँ[3] कर जोरें।
सप्त दीप महँ चुनि चुनि आनी। सो[4] मोरें सोरह सौ रानी।
जौं उन्ह महँ देखसि एक दासी। देखि लोन होइ लोन बेरासी।

चहूँ खंड हौं चक्कवै जस रबि तपै अकास।
जौं पदुमिनि तौ मंदिल मोरें[5] आछरि तौ कबिलास॥

---

3. पं० १ औ देत। 4. तृ० १, ३ चमके, तृ० २ चमका। 5. प्र० १, २, पं० १ पुनि। 6. द्वि० ७ राजा। 7. प्र० १ कस। 8. प्र० १, २, द्वि० ६, पं० १ सुना, द्वि० १ पलटि। 9. च० १ सरवरि पूजै। 10. च० १ महँ। 11. प्र० २, तृ० २, ३ हरि गहने जिउ, तृ० १ हरि कै जिउ हरि।

[४६१] प्र० १, २ बहुरि सँभारु, द्वि० ६ अति संभारि, द्वि० ७ झूठ न बोलु, तृ० २ आपु सँभारु। 2. प्र० १, २, द्वि० ४, च० १ सरि ससि दरुज, द्वि० १ सरिस घर सो, द्वि० ६ सरि पूजै ससि। 3. प्र० १, २ आहिं द्वि० १ रहहिं। 4. प्र० १, २ तें। 5. प्र० १, २ जौ पदुमिनि सौं मोरें, द्वि० १ पदुमिनि मंदिल मोरें।

* इसके अनंतर प्र० १, २, द्वि० ६, ७ में एक छंद अतिरिक्त है।

[४६२]

तुम्ह बड़ राज छत्रपति भारी। अनु बाँभन हौं आहि भिखारी।
चारिहुँ खंड भीख कहँ बाजा। उदै अस्त तुम्ह ऐस न राजा।
धरम राज[1] औ सत कुलि[2] माहीं। भूठ जो कहै[3] जीभ केहि पाहीं।
किछु जो चारि[4]सब किछु[5]उपराहीं। सो एहि[6] जंबु[7] दीप महँ नाहीं।
पदुमिनि अंम्रित हंस[8] सदूरू। सिंघल दीप सो भलेहँ अँकूरू[9]।[10]
साती दीप देखि हौं आवा। तब राघौ चेतनि कहवावा।
अग्याँ होइ न राखौं धोखा। कहौं सो सब नारिन्ह गुन[11]दोखा[12]।
इहाँ हस्तिनी सिंघिनी औ[13] चित्रिनि बनबास[14]।[15]
कहाँ पदुमिनी पदुमसरि भँवर फिरहिं चहुँ पास॥

[४६३]

पहिलें कहौं हस्तिनी नारी। हस्ती कै परकीरति सारी।
कर औ पाय सुभर गियँ छोटी। उर कै खीनि लंक[1] कै मोटी।
कुंभस्थल गज मैमँत आहीं[2]। गवन गयंद ढाल[3] जनु बाहीं।
दिस्टि न आवै आपन पीऊ। पुरुख पराएँ ऊपर जीऊ।
भोजन बहुत बहुत[4] रति चाऊ। अछवाई सों थोर सुभाऊ[5]।[6]

---

[४६२] १. तृ० १ न्याव। २. द्वि० ३ सत तुम्ह, तृ० ३ सत कुल। ३. प्र० १, २ जो बोल। ४. द्वि० ६ जो चार पै, द्वि० ७ है जो चार, तृ० २ कहीं चार, तृ० ३ गज औ चार। ५. तृ० ३ जग। ६. द्वि० ६, तृ० ३ चारिहु। ७. तृ० २ चहूँ। ८. पं० १ सिंघ। ९. द्वि० ४, ५, च० १, पं० १ भलहि सो मूरू। १०. प्र० १, २, द्वि० ७ पंखि हंस औ पदुमिनि नारी, सारदूल अंम्रित पइ चारी। ११. प्र० १, २, द्वि० ४, तृ० २ कै। १२. द्वि० १ कहौं तो सबद जाइ सिवलोका। १३. द्वि० ६ कै। १४. प्र० २ अवास। १५. तृ० ३ इहाँ हस्तिनी चित्रिनी औ सिंघिनि बनबास।

[४६३] १. प्र० १ कनक। २. प्र० १, २ कुचमत उपराहीं, द्वि० २ कच ऊस्त अमाहीं, द्वि० ३, ४, ५, ६, तृ० १, ३, पं० १ गज उमत अमाहीं, द्वि० ७ उत्तिमता नाहीं, तृ० २ कुच मैमँत आहीं, च० १ गज हस्ति अमाहीं। ४. प्र० १, द्वि० ६ हेत हेत। ५. द्वि० २, ६ अभाऊ, तृ० १, २ अन्हाऊ। ६. द्वि० १ पुरुष पराए तै बहुत सुभाऊ।

मद जस मंद बसाइ पसेऊ। औ बिसवास धरैं जस बेऊ।
डर औ लाज न एकौ हिएँ। रहै जो राखें आँकुस दिएँ।

गज गति[7] चलै[8]चहूँ दिसि हेरति[9] लाइ[10] जगत कहँ चोख[11]।
यह हस्तिनी नारि पहिचानिअ[12] सय[13]हस्तिन्ह गुन[14]दोख[15]॥

[४६४]

पोसरें कही सिंघिनी नारी। करै बहुत बल[1] अलप अहारी।
उर अति[2]सुभर[3]खीन अति लंका। गरब भरी मन धरै[4] न संका।
बहुत रोस चाहै पिय हना। आगें घालि न काहूँ गना।
अपनै अलंकार ओहि भावा। देखि न सकै सिंगार परावा।
मैंाट माँसु रुचि भोजन तासू। औ मुख आव बिसाइधि बासू।
सिंघ कै चाल चलै डग ढीली[5]। रोवाँ बहुत होहि दुहुँ[6] फीली।
दिस्टि तराहीं हेर न[7] आगें। जनु मथवाह[8] रहै सिर[9] लागें।

सेजवाँ मिलत स्वामिहि[10] लावै उर नख बान।
जे गुन सबै सिंघ के सो सिंघिनि सुलतान॥

---

७. प्र० १ गजपति, द्वि० ७ गजमनि। ८. तृ० १ चकित। ९. प्र० १, द्वि० १, ४, ५, ७, पं० १ चहूँ दिसि, प्र० २, तृ० १ चहुँ दिसि चितवनि। १०. द्वि० ७ हेरत। ११. द्वि० १ दोख। १२. द्वि० ४, ५ वहै हस्तिनो नारी लिए, द्वि० १ वह हस्तिनि पहिचानिअ, तृ० २ सोई नारि हस्तिनी। १३. प्र० २, तृ० २ बहु, प्र० २, द्वि० ७ कहै। १४. प्र० १, २, द्वि० ५, ६, ७, तृ० ३, च० १, पं० १ के। १५. द्वि० १ मोख।

[४६४] १. तृ० ३ धरै। २. द्वि० ६ लावहि सुभर, च० १ औ सब सुभर, द्वि० १ उर अनि अबल। ३. तृ० ३ धरे। ४. द्वि० १ धरै, द्वि० ६ मन करै। ५. प्र० १ चयन्द (?) गनि ढोली। ६. द्वि० १ जाँघ औ। ७. प्र० १, २ देखत, द्वि० ४, ५, तृ० १, २, पं० १ हेरै, द्वि० ७ हेरत। ८. द्वि० ७ सिरवाह। ९. द्वि० १ धिर। १०. प्र० १, द्वि० ३ सामि कहँ, द्वि० ४ सो स्वामी, द्वि० ७ सामि के कोही, तृ० १, च० १ सामिहि, पं० १ सोवामी। ११. प्र० १, २ नख और बान, तृ० ३ उर नख दान।

[४६५]

तीसरि कहौं चित्रिनी नारी। महा चतुर रस पेम पियारी।
रूप सरूप सिंगार सवाई। आछरि जसि नागरि[१] अछवाई।
रो। न जानै[२] हँसता मुखी। जहँ असि नारि पुरुख सो सुखी[३]।
अपने पिय के जानै पूजा। एक पुरुख तजि जान न[४] दूजा।
चंद बदन रँग कुमुदिनि[५] गोरी। चाल सोहाइ हंस कै जोरी।
खीर खाँड किछु[६] अलप अहारू[७]। पान फूल सौं बहुत[८] पियारू[७]।
पदुमिनि चाहि घाटि दुइ करा। और सबै ओहि गुन निरमरा।

चित्रिनि जैस कमोद रँग आव न बासना अंग[९]।
पदुमिनि सब चंदन अस[१०] भँवर फिरहिं तिन्ह संग॥

[४६६]

चौथें कहौं पदुमिनी नारी। पदुम गंध सो दैउ सँवारी।
पदुमिनि जाति पदुम रँग[१] ओहीं[२]। पदुम बास मधुकर सँग होहीं[२]।
ना सुठि लाँबी ना सुठि छोटी। ना सुठि पातरि ना सुठि मोटी।
सोरह करा अंग होइ[३] बनी[४]। वह सुलतान पदुमिनी गनी[४]।

---

[४६५] १. प्र० १, २, द्वि० २, ३, ४, ५, ६, पं० १ जैसि रहै, द्वि० ७, तृ० १ जसि तारहरि, तृ० २ जनु आछै, च० १ जसि आछै। २. प्र० १ रोस नाहिनी। ३. प्र० १, २, द्वि ४, ५, ६, च० १, पं० १ कै वह सुखी, द्वि० १ पुरुख कस दुखी। ४. प्र० १ चित और न, प्र० २, तजि चहै न, द्वि० १ रनि न चाहै, द्वि० ४ कै जान न, द्वि० ६, तृ० ३, पं० १ तजि चाहन। ५. प्र० १ कुंमिनि। ६. प्र० १, २, तृ० २ रुचि। ७. द्वि० १ सहारी, रहहिं अधारी। ८. तृ० ३ अधिक। ९. प्र० १, २ औ तेहि बास न अंग, द्वि० ४, तृ० २ और बासना अंग, द्वि० ५ आव बासना अंग, द्वि० ७ औ बासना अनंग, च० १ आव बासना मान तेहि अंग, द्वि० ३, पं० ५ औ बासना न अंग। १०. प्र० १, २, द्वि० ७ पदुमिनि चंदन बास लगि, द्वि० ४ पदुमिनि बास चंदन जस, तृ० २ कहौं पदुमिनी पदुम हरि, च० १ कहा पदुमिनी पदुम रस।

[४६६] १. प्र० १, २ गँध। २. प्र० १ ओही सँग सोहीं, द्वि० १ नाहीं, सँग जाहीं, द्वि० ३ बोही, रस लेहीं। ३. प्र० १, २, द्वि० ७ अंग ओहि, द्वि० ४ रँग होर, द्वि० ५ रंग हिय। ४. प्र० १, २, दानी, जानी, द्वि० १ बानी, रानी।

दीरघ चारि चारि लघु सोई। सुभर चारि चारि खीन जो होई।
औ ससि बदन रंग सब[5] मोहा[6]। चाल मराल चलत गति सोहा[7]।
खीर न सहै अधिक सुकुवारा। पान फूल के रहै अधारा।

सोरह करा सँपूरन औ सोरहौ सिंगार।
अब तेहि भाँति[8] बरन गुन[9] जस बरनै संसार॥[*]

[४६७]

प्रथम केस दीरघ सिर[1] होहीं। औ दीरघ अँगुरी कर सोहीं।
दीरघ नैन तिक्ख तिन्ह देखा। दीरघ गीवँ कंठ तिरि रेखा[2]।
पुनि लघु दसन होहिं जस हीरा। औ लघु कुच जस उतँग जँभीरा।
लघू लिलाट दुइज परगासू। औ नाभी[3] लघु चंदन[4] बासू।
नासिक खीन खरग कै धारा। खीन लंक जेहि केहरि हारा।
खीन पेट जानहुँ नहिं आँता। खीन अधर बिद्रुम रँग राता।
सुभर कपोल देहिं सुख सोभा। सुभर नितंब देखि मन[5] लोभा।

सुभर बनी भुअडंड कलाई[6] सुभर जाँघ गज चालि।
ये सोरहौ[7] सिंगार बरनि कै[8] करहिं देवता लालि॥

---

५. प्र० १, तृ० १ देखि जग, प्र० २, द्वि० २, ४, ५, ६, ७, प० १ देखि सब, तृ० २ अंग जग। ६. द्वि० १ तेहि सोहा। ७. प्र० १ अति सोहा, द्वि० १ सब मोहा। ८. द्वि० ४ अब एहि चार। ९. प्र० १, २, द्वि० ६ च० १, प० १ बखानौ, द्वि० २, ३, ४, ५, ७, तृ० ३ बरन कौं। १०. द्वि० १ चारि चौंद औ चारि फल पचई ईमा चारि।

सोरह कला संपूरन औ सोरह सिंगार॥

* प्र० २ में इसके अनतर एक अतिरिक्त छंद है।

[४६७] १. प्र० १ सँग। २. प्र० २ कंठ तर (उर्दू मूल) रेखा, द्वि० कंबु पर लेखा। ३. द्वि० ५ लसी कचनाभी। ४. तृ० ३ चंदन लहु, च० १ भाव चंदन। ५. प्र० १ जग, द्वि० ६ मोहि। ६. प्र० १, तृ० १, ३, सुभर भु (अ) डंड कलाई, प्र० २, द्वि० २, ७ भुजा डँड बनो कलाई, द्वि० ६ भुजा डँड हस्त कलाई, द्वि० ४, ५, तृ० २, च० १, पं० १ सुभर कलाई अति बनो, द्वि० १ सुभर भुजा भु डंड सो। ७. तृ० २ असि कै सोरह, द्वि० ४, ५, च० १ सोरह, प्र० २ ऐ सोरह। ८. प्र० १, सिंगार बरनि सब, द्वि० १ सिंगार सो, तृ० १ सिंगार बरनि ए, तृ० २ सिंगार, प० १ सिंगारैं।

[४६८]

यह जो पदुमिनि चितउर आनी[1]। कुंदन कया[2] दुवादस बानी।
कुंदन कनक न गंध[3] न बासा। वह सुगंध जनु कँवल बिगासा।
कुंदन कनक कठोर सो अंगा। वह कोवँलि रँग पुहुप सुरंगा[4]।
ओहि छुइ पवन बिरिछ जेहि लागा। सोइ मलयागिरि भयउ सभागा।
काहु न मूँठि भरी ओहि देही। असि मूरति कै दैयँ उरेही।
सबै चितेर चित्र कै[5] हारे। ओहिक चित्र कोइ करै[6] न पारे।
कया कपूर हाड़ जनु[7] मोंती। तेहि तें अधिक दीन्ह बिधि जोती।

सुरुज क्रांति करा जसि[8] निरमल नीर[9] सरीर।
सौहँ निरखि नहिं जाइ निहारी[10] नैनन्ह आवै नीर॥*

[४६९]

कत हौं अहा[1] काल कर काढ़ा[2]। जाइ धौराहर वर भौ[3] ठाढ़ा[2]।
कत वह आइ झरोखें झाँकी। नैन कुरंगिनि चितवनि बाँकी।

---

[४६८] १. प्र० २, द्वि० २, च० १, प० १ चितउर रानी, तृ० २ सिंघल रानी। २. द्वि० १,७ कुंदन कनक, तृ० १ कुंदन कैम, तृ० ३ कनक सुगंध। ३. ६, तृ० २ ताहि नहिं। ४. प्र० १ तिल पुहुप सुरंगा, द्वि० १ मालति कै रंगा, द्वि० १ रँग पुहुप सुगंधा। ५. प्र० १, २ लिखि, द्वि० ७ चित। ६. प्र० १, २, द्वि० ३, ४, ५, ६, ७, तृ० २, पं० १ रूप कोइ लिखै, द्वि० २ चित्र कोइ लिखै। ७. प्र० १, २, द्वि० ४, ५, पं० १ सत, च० १ जस। ८. प्र० १ रविनि तें आगरि, प्र० २ क्रांति ते आगरि, द्वि० १ रानी तस करा, द्वि० २ करा तेहि तें निरमल, तृ० ३ करा नित करा जस (उर्दू मूल), द्वि० ४, ५, करौं जस निरमल, द्वि० ६ क्रांति जस निरमलि, द्वि० ७ कीता का तिक जस, तृ० २ क्रांति जस निरमल, च० १ करौं नित आवै, पं० १ करा नित आगरि। ९. प्र० १, २, च० १, प० १ निरमल तैस, द्वि० ६, ७, तृ० ३ निरमल अधिक, द्वि० २ बरनिन जाइ, द्वि० ४, ५ तेहि तें। १०. प्र० १, २, द्वि० ७ निरखि नहिं जाइ सो, तृ० २ दिष्टि नहिं जाइ निहारी, च० १, पं० १ निहारि न जाइ बांह।
* द्वि० ४, ५, ६ इसके अनन्तर एक अतिरिक्त छंद है।

[४६९] १. तृ० ३ कत मैं गयउँ, च० १ हौं जो अहा। २. तृ० १ काढ़ो, ठाढ़ो। ३. द्वि० १, च० १ भा।

बिहँसी ससि तरईं जनु परीं। कै सो रैनि छूटी फुलझरीं।
चमकि बीज जस भार्दों रैनी। जगत दिस्टि[४] भरि रहो डरैनी।
काम कटाख दिस्टि बिख बसा। नागिनि अलक पलक मह डसा।
भौंहँ धनुक तिल काजर बोड़ी। वह भै धानुक हौं हियँ[५] ओड़ी[६]।
मारि चली मरतहिं[७] मैं[८] हँसा। पाछें नाग अहा ओहि[९] डसा।

पाछें घालि काल सो राखा[१०] मंत्र न गारुरि कोइ।
जहाँ मँजूर पीठि ओहि दीन्हे[११] कासौं पुकारौं रोइ।।

[४७०]

बेनी छोरि झारु जौं केसा। रैनि होइ जग दीपक लेसा।
सिर हुति सोहरि[१] परहिं भुइँ बारा। सगरे देस होइ[२] अँधियारा।
जानहुँ लोटहिं चढ़े[३] भुअंगा। बेधे बास मलैगिरि संगा[४]।
सगबगाहिं बिख भरे बिसारे। लहरिआहिं लहकहिं अति कारे।
लुरहि मुरहिं मानहिं जनु केली। नाग चढ़ा मालति की बेली।
लहर देइ जानहुँ कालिंदी। फिरि फिरि भँवर भए चित फंदी[५]।
चवँर ढरत आछहिं चहुँ पासा। भवँर न उड़हिं जो लुबुधे बासा।

होइ अधियार[६] बीजु खन लौकै[७] जबहिं[८] चीर गहि झाँपु।
केस काल ओहि कत मैं देखे सँवरि सँवरि जिय काँपु।।

---

४. प्र० १ जगत रैनि, द्वि० १ जगत दीन्हि, द्वि० २ चमक दिस्टि, च० १ जग तू दिस्टि। ५. तृ० १ हौं जिउ, च० १ हिय भै। ६. प्र० १, २ मारेउ बान रहेउ हिय ओढे। ७. प्र० १ सिर देइ, तृ० १ पाछे, च० १ मरत। ८. द्वि० २, च० १ हौं। ९. प्र० १ रहा मोहि, द्वि० १ अहा तेहि, द्वि० ४ अहा हौ। १०. प० १ सो राखेसि। ११. द्वि० १ मुहमद चूरै पैठी, तृ० ? जहाँ मँजूर बैठि रह।

[४७०] १. द्वि० ४, ५ बिसहर, तृ० १, २ प० १ सुभरि, द्वि० ३, तृ० २ सिथरि। २. द्वि० ४, ५ मण्ड। ३. द्वि० ६ झनकै भेस। ४. प्र० १, २, द्वि० ३, ४, ७, तृ० २ अंगा। ५. प्र० १ रस भेदी, द्वि० ४ चित बँधी, तृ० १, २ चित भेदी। ६. प० १ उजियार। ७. प्र० १, २ बीजु खन, प्र० २ बीजु घन चमकै, द्वि० १ ओ लौके, द्वि० २ बीजु जस लौकै, द्वि० ४, ७ बीजु घन लौके। ८. द्वि० ४, ५, तृ० २, च० १ औहि (हिंदी मूल)

[४७१]

कनक माँग[1] जो सेंदुर[2] रेखा। जनु बसंत राता जग देखा।
कै पत्रावलि पाटी पारी। औ रचि चित्र बिचित्र सँवारी।
भएउ उरेह पुहुप सब[3] नामा[4]। जनु बग बगरि रहे[5] घन स्यामा[6]।
जमुँना माँझ सुरसती माँगा। दुहुँ दिसि चित्र तरंगहि गाँगा[7]।
सेंदुर रेख[8] सो ऊपर राती। बीर बहूटिन्ह की जनु पाँती।
बलि देवता भए देखि सेंदूरू। पूजै माँग भोर उठि सूरू।
भोर साँझ रबि होइ जो राता[9]। ओहीं सो सेंदुर राता गाता[10]।
बेनी कारी पुहुप लै निकसी[10] जमुना आइ।
पूजा इंद्र[11] अनद सो सेंदुर सीस चढ़ाइ।

[४७२]

दुइज लिलाट अधिक मनि करा। सकर देखि माँथ भुइँ धरा।
एहि निनि[1] दुइज जगत महँ दीसा[2]। जगत जोहारै देइ असीसा।
ससि होइ छपी[3] न सरवरि छाजै। होइ जो अमावस छपि मन लाजै।[4]

---

[४७१] १. प्र० १, २ द्वि० ७, तृ० १, ३ मानिक माँग, द्वि० १ वेसरि माँग, द्वि० २ माँक माँग, द्वि० ३, प० १ माँग माँ भ, च० १ माँग काढ़ी। २. द्वि० १ मानिक, तृ० ३ वेसरि। ३. प्र० १ जेत, च० १ जो। ४. द्वि० ७ नासा, स्वासा, च० १ रामाँ, स्यामाँ। ५. प्र० १, २ बगपाँति निसरि, द्वि० २ घन बक पवरि रहे, तृ० १, २ जनु बग बिथरि रहे। ६. प्र० १ लागा। ७. तृ० ३ बिसम। ८. द्वि० १ सोस झिा। ९. प्र० १ रुहिर सो रेख रात होइ गाता, प्र० २ ओही सो रेख रात सब गाता, प० १ वहै देखि राता सब गाता, द्वि० ६ ओही देखि राता भा गाता, तृ० १ सेंदुर वहै होइ रत गाता, च० १ ओही जोति भै राते गाता, द्वि० १ सेंदुर तेहि महँ तेरे आगा। १०. प्र० २ निसरी। ११. प्र० १, २; द्वि० ७ देव, द्वि० ६, तृ० ३, च० १ नद, द्वि० १ नाद।

४७२] १. तृ० ३ महँ। २. प्र० १, २ जगत दुइज सत दीसा, द्वि० ७ दुखी जगत सब दीसा। ३. प्र० १, २ होइ बिहसि, द्वि० २ पूनौं भइ, द्वि० ४, ५, प० १ जो होइ, द्वि० ७ होइ छीन। ४. द्वि० १ ससि यहँ सरवरि छाज न कोई, होइ जो अमावस जाइ छपि सोई।

तिलक सँवारि जो चूनी[5] रची। दुइज माहँ जानहुँ कचपची।
ससि पर[6] करवत[7] सारा राहू। नखतन्ह भरा दीन्ह पर दाहू।
पारस जोति लिलाटहि ओती। दिस्टि जो करै होइ तेहि जोती।
सिरी[8] जो रतन माँग बैसारा। जानहुँ गँगन[9] टूट[10] निसि[11] तारा।

सस्सि औ सूर जो निरमल तेहि लिलाट की ओप।
निसि दिन चलहिं न सरवरि पावहिं[12] तपि तपि[13] होहिं अलोप॥

[४७३]

भौंहैं स्याम धनुक जनु चढ़ा। बेझ करै मानुस कहँ गढ़ा।
चाँद[1] कि मूँठि धनुक वहँ ताना। काजर पनच[2] बरुनि विख बाना।
जासहुँ फेर छोहाइ न मारे। गिरिवर टरहिं सो भौंहँन्ह टारे।
सेत बंध जेइं धनुक बिडारा। उहौ धनुक भौंहँन्ह सौं[3] हारा।
हारा धनुक जो बेधा राहू। औरु धनुक कोइ गनै[4] न काहू।
कत सो धनुक मैं भौंहँन्हि देखा। लाग बान तेत आव न लेखा।
तेत बानन्ह झाँझर भा हिया। जेहि अस मार सो कैसें जिया।

सोत सोत तन[5] बेधा रोवँ रोवँ सब[6] देह[7]।
नस नस महँ भै सालहिं हाड़ हाड़ भए बेह॥

[४७४]

नैन चतुर[1] वै[2] रूप चितेरे[3]। कवल पत्र पर मधुकर घेरे[3]।

---

५. तृ० ३ चूने (उर्दू मूल), द्वि० ४, ५, पं० १ चदन, तृ० १ जोती। ६. च० १ सिर। ७. तृ० ३ कोरनि। ८. पं० १ सो है। ९. द्वि० ३ नखत। १०. प्र० १ बैठ। ११. तृ० ३ लै। १२. प्र० १, २, पं० १, दौरि न पूजहिं, द्वि० १ चले सो सरवरि, द्वि० ७ चलहिं पाव नहिं। १३. प्र० १, २ पुनि तपि, पं० १ फिरि फिरि।

[४७३] १. तृ० १, २, पं० १ चंद। २. द्वि० २, तृ० २ बीजु, तृ० १, च० १, पं० १ बीच। ३. च० १ उन भौंहन्हि। ४. तृ० २, च० १ वहै (गहै)। ५. प्र० १ सब, द्वि० १ सौं। ६. द्वि० २ सेत, तृ० २ पुनि। ७. पं० १ रोवँ रोवँ तन बेधा सोत सोत सब देह।

[४७४] १. प्र० २, तृ० ३ चित्र (उर्दू मूल)। २. प्र० १, २ दुर, तृ० ३ तम। ३. प्र० १, द्वि० २, ३, ५, ६, ७, तृ० २, च० २, पं० १ चितेरे, फेरे, प्र० २, तृ० ३ चितेरा, फेरा.

समुँद तरंग उठहि[४] जनु राते। डोलहिं तस घूमहिं जनु माँते।
सरद चंद महँ खंजन जोरी। फिरि फिरि लरहिं बहोरि बहोरी।
चपल बिलोल डोल रह लागी। थिर न रहहिं चंचल बैरागी।
निरखि अघाहिं न हत्या हर्ते। फिरि फिरि स्रवनन्हि लगहिं मर्ते।
अंग सेत मुख स्याम जो ओहीं। तिरिछ चलहिं खिन सूध[५] न होहीं।[६]
सुर नर गंध्रप लालि[७] कराहीं। उलटे चलहिं सरग कहँ[८] जाहीं।

असं ये नैन चक दुइ[९०] भवँर समुँद उलथाहिं।
जनु जिउ घालि हिडोरें लै आवहिं लै जाहिं॥

[४७५]

नासिक खरग[१] हरे धनि[२] कीरू। जोग सिंगार जिते औ बीरू।
ससि मुख सौंहँ खरग गहि[३] रामा[४]। रावन सौं चाहै संग्रामा[४]।
दुहूँ समुंद्र रचा जेन्हँ धीरू। सेत बंध बाँधेउ नल नीरू।
तिलक पुहुप अस नासिक तासू। औ सुगंध दीन्हेउ बिधि बासू।
कनक (?)[५]फूल पहिरें उजियारा। जानु सरद ससि[६] सोहिल[७]तारा।

---

४. प्र० १ तरंग लेहिं, द्वि० ४ तरंग उलथहिं। ५. द्वि० ६ सौंह।
६. प्र० १, तिरिछइ चलहिं सौंह नहिं होहीं, पं० १ तिरिछइ चलहिं खन नहिं मवँहीं। ७. द्वि० १ अंग मुखं गिनि अपरन्ह रेखा, उलटि पलटि लाग गिरि देखा। ८. प्र० १, पं० १ लागि। ९. द्वि० ६, च० १ लै।
१०. प्र० २ दुइ जोरें, द्वि० १ चकरवै, द्वि० ७ के जोरे।
* द्वि० ३ में इसके अनंतर एक अतिरिक्त छंद है।

[४७५] १. पं० १ दनी। २. प्र० १, २, द्वि० ६, ७ औ, तृ० १ जनु।
३. प्र० १, २, पं० १ है, द्वि० ३, तृ० १, ३, च० १ लै। ४. द्वि० ६ धारा, संधारा। ५. द्वि० ६ लौंग। शेष समस्त प्रतियों में पाठ 'करना' है, किंतु नासिका के वर्णन में 'करन' नितांत अप्रासंगिक है। इसी प्रकार २९८.४ में नासिका के वर्णन में तीन प्रतियों को छोड़कर शेष समस्त में 'करन फूल नासिक अति सोभा' पाठ है, और एक में 'करनफूल' पाठ के कारण 'नासिका' के स्थान पर 'सरवन' पाठ भी कर लिया गया है। केवल तीन प्रतियों में पाठ 'कनक' है, जो निश्चित रूप से प्रामाणिक माना गया है। उसी प्रकार कदाचित् यहाँ भी 'कनक' के स्थान पर प्रतिलिपिकारों ने 'करन' कर दिया है, और यहाँ तक यह हुआ है कि 'कनक' पाठ एक भी प्रति में शेष नहीं है। ६. प्र० १, २, द्वि० १, तृ० १ सरद रितु, द्वि० ७ ससि संग। ७. तृ० १ सीतल।

सोहिल चाहि फूल वह ऊँचा। धावहिं नखत न जाइ पहूँचा।
न जनौं कैइ फूल वह[८] गढ़ा। बिगसि[९] फूल सब चाहहिं चढ़ा[१०]।

अस वह फूल वास कर आकर[११] भा नासिक सनमंध[१२]।
जेत फूल ओहि फूलहिं हिरगे[१३] ते सब भए[१४] सुगंध॥

[४७६]

अधर सुरंग पान अस खीने[१]। राते रंग अमिअ रस भीने।
आछहि[२] भीज तँबोर सौं राते[३]। जनु गुलाल दीसहिं बिहँसाते।
मानिक अधर दसन नग[४] हेरा। बैन रसाल खाँड़[५] मकु[६] मेरा।
काढ़े अधर डाभ सौं चीरी। रुहिर चुवै जौं खडहि बीरी।
धारे रसहिं[७] रसहिं रस गीले। रकत[८] भरे[९] वै सुरग रँगीले।[१०]
जनु परभात रात रवि रेखा[११]। बिगसे बदन कवँल जनु देखा[१२]।
अलक भुवंगिनि अध न्ह राखा[१३]। गहै जो नागिनि सो रस चाखा[१३]।[१४]

---

८. प्र० १, २ सोहिल अस। ९. तृ० ३ बिहँसि। १०. तृ० १ मनि महेस के माथे चढ़ा। ११. द्वि० १ बाम अम आकर, पं० १ बास कर। १२. द्वि० २, ३, ५, तृ० १, २, नासिका समंद, च० १ नासिक सबंद, तृ० ३ नासिका सुगंध, पं० १ नासिक सनबंध। १३. प्र० १, २ नासिक हिरकहिं, द्वि० ४, ५ फूलहिं, द्वि० ७ हिरकहिं, द्वि० ६, पं० १ हिरके।

[४७६] १. प्र० २, द्वि० ७ भस कीन्हे, तृ० २ रसभीने। २. तृ० ३ छाद्दहि। ३. द्वि० १ भयो ओ बोलहिं बाना। ४. द्वि० २, ३, ४, ५, तृ० ३, च० १ जनु। ५. तृ० २ रमना भमी मोंह, द्वि० २ बैन रसाल खान। ६. प्र० १, २, तृ० ३ रिन, द्वि० २ केइँ, द्वि० ६, ७ जनु, द्वि० ३, ४, ५, तृ० १ मुख, च० १ गहि। ७. प्र० १, २ दारे अधर, द्वि० ४, ५ धारे दसन, द्वि० ३ दरे ते पीक। ८. तृ० १ रुहिर। ९. प्र० १ पैठि, प्र० २ बिमहिं, द्वि० ६, पं० १ बिनहिं। ११. प्र० २, द्वि० २ देखा। १०. द्वि० २ पान मोह तस रहै न पावा, एन्हु आछरि रकत लै आवा। १२. प्र० १, २ पेखा। १३. तृ० ३ राखी, चाखी। १४. द्वि० २ कुसुम जो रसन रखो भँमोठी, रसन बैन अमित रस मीठी।

अधर धरहिं[१५] रस[१६] पेम का अलक भुअंगिनि बीच।
तब अंम्रित रस पाउ पिउ[१७] ओहि[१८] नागिनि गहि[१९] खींचु[२०]॥

[४७७]

दसन स्याम पानन्ह रँग पाके। बिहँसत[१] कवँल भँवर अस[२] ताके।[३]
चमतकार[४] मुख भीतर[५] होई। जस दारिवँ औ[६] स्याम मकोई।[७]
चमकै चौक बिहँसु जौं नारी। बीज चमक जस[८] निसि अँधियारी।
सेत स्याम अस चमकै डीठी। स्याम[९] हीर दुहुँ[१०] पाँति बईठी।[११]
केइँ सो गढ़े[१२] अस दसन अमोला। मारै बीज बिहँसि जौं बोला।
रतन भीज रँग मसि भै स्यामा। ओही छाज पदारथ नामा।
कत वह दरस देखि रँग भीने। लै गौ जोति नैन भौ खीने।[13]

दसन जोति होइ नैन पँथ[१४] हिरदै[१५] माँझ बईठि।
परगट जग अँधियार जनु[१६] गुपुत ओहि पै डीठि[१७]॥

---

१५. द्वि० १ लीन, द्वि० ४, ५ अधर। १६. प्र० १ अधरन्हि रस जो, द्वि० ४ अधर अधर रस। १७. द्वि० १, ४ पावै, तृ० २ पाव सो। १८. द्वि० १ धार, तृ० १ जो। १९. तृ० ३ वहँ। २०. प्र० १ जब नागिनि कहँ खींच, प्र० २ पिन्दहि नागिनि बेढ़ सार, द्वि० ७ वोहि नागिनि के बीच।

[४७७] १. द्वि० ४, तृ० २, च० १ बिकसत। २. प्र० १ दसन भँवर मन, प्र० २, द्वि० ६, ७ पं० १ कँवल भवँर मैं, द्वि० १ भँवर बीज बर। ३. द्वि० २ दसन जोति तस बरनि न आवा, तन तन बाज चमक दिखरावा। ४. प्र० १ जगमगाहिं, तृ० ३ चमन्गिआर (उर्दू मू०), द्वि० ४, ५ अस चमकार, द्वि० ६, पं० १ औ चमकार, तृ० १ चमकाई। ५. द्वि० ६ वो मुख मई। ६. प्र० १ धन। ७. द्वि० १ होरा जोहि जोग अति होई। ८. प्र० १, २, घटा जनु। ९. द्वि० ६, पं० १ जानु। १०. प्र० १, द्वि० २ जनु। ११. द्वि० २ मधा कँवल बिकसत मैं डीठी। १२. प्र० १, २ रचा। 13. द्वि० २ जस दरपन महँ सूरज रेखा, तेहि तें अधिक दसन की रेखा। १४. प्र० १, २, पं० १ जोति अस निरमलि। १५. द्वि० १, पं० १ बे नैनन्ह। १६. प्र० १ सब, तृ० १ का। १७. च० १, पं० १ जहँ जहँ नैन पसारौं, तहँ तहँ आवहिं डीठि।

[४७८]

रसना सुनहु[1] जो कह रस बाता। कोकिल बैन सुनत मन राता।[2]
अंमित कोंप जीभ जनु लाई। पान फूल असि बात[3] मिठाई[4]।
चात्रिक बैन सुनत होइ साँती। सुनै सो परै पेम मद माँती।
धीरी सुख पाव जस नीरू। सुनत बैन तस पलुह सरीरू।
बोल सेवाति बुंद जँउ परहीं[5]। स्रवन सीप सुख[6] मोती भरहीं।
धनि वह बैन जो प्रान अधारू। भूखे स्रवननि देहिं अहारू[7]।
ओन्ह बैनन्ह कै काहि न आसा। मोहहिं मिरिग बिहँसि[8] भरि स्वाँसा[9]।

कंठ सारदा मोहहिं जीभ सुरसती काह[10]।
इंद्र चंद्र रबि देवता सबै जगत सुख चाह[11]॥

[४७९]

स्रवन सुनहु जो कुंदन सीपी। पहिरें कुंडल सिंघल दीपी।
चाँद सुरुज दुहुँ दिसि चमकाहीं। नखतन्ह भरे निरखि नहिं जाहीं।
खिन खिन करहिं बिज्जु अस काँपे। अंबर मेघ महँ[1] रहहिं न झाँपे।
सूक सनीचर दुहुँ दिसि[2] मतें[3]। होहिं निरार न स्रवनन्हि हुतें[4]।
काँपत रहहिं बोल जौं बैना। स्रवनन्हि जनु लागहिं फिरि नैना[5]।

---

[४७८] १. प्र० १ कहौं। २. द्वि० २ रसना कहौं अमीरस घोला, कोयल बैन रसाल अमोला। ३. द्वि० २ असि ताह, द्वि० ६, तृ० २ रस बात। ४. प्र० १, २, द्वि० ४, ५, ७ तृ० १, पं० १ सुहाई। ५. तृ० ३ बुंद सेवाति समुँद जंउ परहीं। ६. द्वि० ६ सुख। ७. तृ० ३ अधारू। ८. च० १ मूरख तैसे, पं० २ मिरिग वैस। ९. तृ० ३ थिर बासा, द्वि० ४, ५ तेहि स्वाँसा, तृ० १, च० १ भइ स्वाँसा, पं० २ मति स्वाँसा। १०. प्र० १, २ ताहि, च० १ छाँह, पं० १ माहिं। ११. प्र० १, २, च० १, पं० १ सब ओहि बात भोनाहिं।

[४७९] १. प्र० १, २, पं० १ अमर मेघ तर, तृ० ३ अमर मे घर बर, च० १ अमर मेघ अस। २. तृ० ३ स्रवनन्ह, तृ० २ दूहुं। ३. प्र० २, द्वि० ७, पं० १ माते। ४. प्र० १ में दूसरा चरण नहीं लिखा है, प्र० २ होहिं निनार न से तहँ ताते, द्वि० ७ होहिं निनार न स्रवनन्हि तते। ५. प्र० १ स्रवनन्हि जनु लागहिं फिरि सैना, द्वि० २, तृ० १ सुनतहिं जनु लागहिं फिरि नैना, तृ० ७ स्रवन्हि फिरि फिरि लाग जनु नैना, च० १ स्रवनन्हि जनु लागहिं फिरि नैना।

जो जो[६] बात सखिन्ह सौं सुना । दुहूँ दिसि फरहिं सीस वै धुना[७] ।
खूँट[८] दुहूँ धुव तरईं[९] खूँटीं । जानहुँ परहिं, कचपचीं टूटीं ।

बेद पुरान ग्रंथ जत सबै[१०] सुनै सिखि[११] लीन्ह ।
नाद बिनोद[१२] राग रस बिंदक[१३] स्रवन ओहि बिधि दीन्ह ॥

[४८०]

कँवल कपोल ओहि अस छाजे[१] । और न काहु दैयँ[२] अस साजे ।[३]
पुहुप पंक रस[४] अमिअ सँवारे । सुरग गेंदु नारँग रतनारे ।
पुनि कपोल बाएँ[५] तिल परा । सो तिल बिरह चिनिगि कै करा ।
जो तिल देख जाइ डहि[६] सोई । बाईं दिस्टि काहु जनि होई ।
जानहुँ भँवर पदुम[७] पर टूटा । जीउ दीन्ह औ दिएहुँ न छूटा ।
देखत तिल नैनन्ह गा गाड़ी । और न सूझै सो तिल छाँड़ी ।
तेहि पर अलक मंजरी[८] डोला । छुऐ सो नागिनि[९] सुरँग कपोला ।

रख्या करै मँजूर ओहि[१०] हिरदैं ऊपर[११] लोट[१२] ।
केहि जुगुति[१३] कोइ छुइ सकै दुइ परबत की ओट ॥

---

६. च० १ ज्यों ज्यों । ७. तृ० २ इंद मोह मह्या सिर धुना ।
८. प्र० १ कहत, तृ० ३ जूँठ । ९. प्र० १ धुव तरपहिं, प्र० २ और तरफहिं, द्वि० २ धुव तहाँ, तृ० ३ धुव तारे । १०. तृ० ३ बैन ।
११. तृ० १ आप हत । १२. तृ० ३ नाद बेद, तृ० १ नावहिं बेद ।
१३. तृ० १, पं० १ राग रस ।

[४८०] १. प्र० १, २ अस छाजे, बिधि साजे, द्वि० ७ बिधि साजे, अस छाजे ।
२. प्र० १, २ सोभा बदन केरि । ३. द्वि० २ कँवल कपोल भर्म रस छाजै, और सौंह रवि दरपन साँजै । ४. द्वि० १, २, तृ० १, २, ३, पं० १ अस । ५. प्र० १, २, द्वि० ६, ७, तृ० २ बाएँ गाल एक, च० १ बाएँ गाल लाग । ६ प्र० १, द्वि० १, ४, ५, ६ जरि, द्वि० २, तृ० १, २, च० १, पं० १ बहि । ७. प्र० १ पुहुप । ८. प्र० १ भुवंगिनि, प्र० २, द्वि० ७ मँजारी । ९. प्र० १, २ बिख नागिनि होइ, द्वि० ६ बिख नारँग छुम, द्वि० ७ बिख नागिनिं पिय । १०. च० १ दोख मँजूर आइ हिरदै बहि । ११. प्र० १, २ हिरदै नागिनि, द्वि० ७ हियैं लागि कोइ, च० २ नागिनि ऊपर । १२. द्वि० ६, च० १ हूट । १३. प्र०२ जोगप (उर्दू मूल) ।

[४८१]

गीवँ मँजूर फेरि जनु ठाढ़ी। कुँदे[1] फेरि[2] कुँदेरै काढ़ी।[3]
धन्य[4] गीवँ का बरनौं करा। बाँक तुरंग जानु गहि धरा।
घुरत[5] परेवा गीवँ उँचावा। चहै बोल तमचूर सुनावा।
गीवँ सुराही कै असि भई। अमिय[6] पियाला[7] कारन नई।[8]
पुनि तिहि ठाउँ[9] परी तिरि रेखा। नैन ठाँव जिउ होइ सो देखा[10]।
सूरुज कांति करा[11] निरमली। दीसै[12] पीकि जाति हिय चली।
कंज नार[13] सोहै गिवँ हारा[14]। साजि कवँल तेहि ऊपर धारा।

नागिनि चढ़ी कवँल पर चढ़ि कै बैठ[15] कमंठ।
जो[16]ओहि काल[17]गहि[18]हाथ पसारै सो लागै[19]ओहि कंठ॥

[४८२]

कनक डंड भुज बनीं कलाई। डाँड़ी कँवल[1] फेरि जनु लाई।
चँदन गाम[2] की भुजा सँवारी। जनु सुमेल[3] कोंवलि पौनारी[4]।

---

[४८१] १. द्वि० ७ मुंद्रा। २. प्र० १ जान। ३. द्वि० २ गीवँ मनो साँचे पर काढ़ी, कुँदेरै जानौ कै ठाढ़ी। ४. प्र० १, २ पदुमिनि, द्वि० ६ धनि वह। ५. प्र० १, द्वि०३, ४,५, च० १ गिरिनि, द्वि० २, तृ० ३ गिरत द्वि० ६ कुरत, द्वि० ७ गुफुरत। ६. द्वि० ६ नव०। ७. प्र० १ पिया के। ८. द्वि० २ में यह पंक्ति नहीं है। ९. प्र० १, २ गियँ माहँ, द्वि० ३ तिय ठाउँ। १०. प्र० १, २ घूँटत पीक लीक सब देखा (३११.६), तृ० २, ३ नैन ठाँव सो होइ जो देखा, द्वि० ७ सरस ठाँव नवै जो देखा। ११. प्र० १ कांति ते सुठि, प्र० २ कांति दुति गिव, द्वि० १ के करा ताहि, तृ० ३ करा नित बरा (उर्दू मूल) द्वि० ४ किरिनि दुति गियँ, द्वि० ७ कीनि करा, च० १ वरौं दुति गियँ। १२. प्र० १ घुम्न। १३. प्र० १, द्वि० २ कुच नारंग। १४. तृ० २, च० १ सोने के करा। १५. द्वि० ७ पीठि। १६. प्र० १, २ को। १७. तृ० १, २ कवँल। १८. प्र० १, २, द्वि० २, पं० १ वो। १९. प्र० १ लावे।

[४८२] १. प्र० १, २, द्वि० १, ३, ६, ७, पं० १ बदनि। २. द्वि० २, ६, ३ चंदन खाँभ, तृ० २ कँवल गाँभ, पं० १ कँदलि खाँभ। ३. द्वि० ४, ५ सुबेन, तृ० ३ मो मिश्री। ४. द्वि० १ बवँला रसनारी, तृ० १ कदलक पौनारी।

तिन्ह डाँड़िन्ह वह[5] कँवल हथोरी। एक कँवल कै दूनौ जोरी।
सहजहिं जानहुँ मेंहदी रचा। मुकुता लै जनु घुँघुची पचो[6]।
कर पल्लौ जो हथोरिन्ह साथाँ। वै सुठि रकत भरे दूहुँ हाथाँ।
देखत हिए काढ़ि जिउ[7] लेहीं। हिया काढ़ि लै जाहिं[8] न देहीं।[9]
कनक अँगूठी औ नग जरी। वह हत्यारिनि नखतन्ह भरी।

जैसनि भुजा कलाई तेहि बिधि जाइ न भाखि।
कंगन हाथ होइ जहँ तहँ दरपन का साखि॥

[४८३]

हिया थार कुच कनक कचोरा। साजे जनहुँ सिरीफल जोरा।[1]
एक पाट जनु[1] दूनौं राजा। स्याम छत्र दूनहुँ सिर साजा।
जानहुँ लट्ट दुऔ एक साथाँ। जग भा लटू चढ़ै नहिं हाथाँ।
पातर पेट आहि जनु पूरी। पान अधार फूल असि कोंरी[2]।[3]
रोमावलि ऊपर लट झूमा। जानहुँ दुऔ स्याम औ रूमा।
अलक भुवंगिनि तेहि पर लोटा। हिंगुरि[4] एक खेल दुइ गोटा।
बाँह पगार[5] उठे कुच दोऊ। नाग सरन उन्ह नाव न[6] कोऊ।

कैसेहुँ नवहिं न नाएँ जोबन गरब उठान।
जो पहिलें कर लावै[7] सो पाछें[8] रति[9] मान॥

---

५. तृ० ३ अध, द्वि० ४, ५, ६ संग। ६. प्र० १, द्वि० २, ६, ३, पं० १, लिहें जानु घुंघुची, च० १ लील तेहि जनु घुंघची। ७. प्र० १ काढ़ि जनु, द्वि० ६ कोरहि। ८. प्र० १ कै लेइ, द्वि० ४. ५ कै जाइ, तृ० १ जिउ लेइ, पं० १ लै लेहिं। ९. द्वि० २ जिउ लेइ कई दई निरभई, देखत हिया काढ़ि लै गई।

[४८३] १. तृ० ३ पर। २. द्वि० ४, ५, तृ० ३ गोरी। ३. तृ० २ (पंक्ति ७) कठिन कठोरें अमौ जो पीऊ. जो बिन लै धनि धनी मो जीऊ। ४. द्वि० ४, ५, तृ० २, च० १ हियकार। ५. तृ० ३ २ पुकारि, तृ० १ कार, च० १ बकार, पं० १ सिंगार। ६. तृ० १, च० १, पं० १ पाव। ७. प्र० १ उन्ह मौं पहिलहिं नवै, प्र० २, द्वि० ३ ७ उन्ह पहिलें नावें। ८. द्वि० ४, ५ पाये। ९. तृ० १ रस।

[४८४]

भिंगि लंक जनु माँझ न लागा। दुइ खँड नलिनि माँझ जस तागा।
जब फिरि चली देख मैं पाछें। आछरि इंद्र केरि जस काछें[1]।
उजहि चली जनु भा पछिवाऊ। अबहूँ दिस्टि लागि ओहि भाऊ[2]।
ओहि के गवन[3] छपि आछरीं गईं। भईं अलोप नहिं परगट भईं।
हंस लजाइ समुँद कहँ खेले। लाज गयंद धूरि[4] सिर मेले।
जगत इस्त्री देखी महूँ। उदै अस्त असि नारि न कहूँ।
महि मंडल तौ ऐस[5] न कोई। ब्रह्ममँडल[6] जौं होइ तौ होई।

घरनी नारि तहाँ लगि दिस्टि झरोखें आइ।
और जो रही अदिस्टि भै[7] सो कछु बरनि न जाइ ॥*

[४८५]

का धनि कहौं जैसि सुकुवारा। फूल[1] के छुएँ जाइ[2] बिकरारा।
पँखुरी लीजहिं[3] फूलन्ह सेंती। सो नित डासिअ सेज सुपेती।[4]
फूल समूच रहै जो पावा। ब्याकुलि होइ नींद नहिं आवा।
सहै न खीर खाँड औ घीऊ। पान अधार रहै तन जीऊ।
नसि पानन्ह कै काढ़िअ हेरी। अधरन्ह गड़ै फाँस ओहि केरी।
मकरी क तार ताहि कर चीरू। सो पहिरें छिलि[5] जाइ सरीरू।
पालक पाँव कि[6] आछहिं पाटा[7]। नेत बिछाइअ जौं चल बाटा[8]।

---

[४८४] [1]. तृ० २ सुर रहे। [2]. प्र० १ ठाऊँ। [3]. तृ० १ लाज, द्वि० ७ गवन ते। [4]. प्र० १, २, द्वि० १, तृ० २ छार। [5]. तृ० २ मिरित लोक। [6]. प्र० १, २ असि तीवइ। [7]. प्र० १, २ द्वि० ६, ७ सुर मंडल, द्वि० २ बहि मंडल, तृ० १, द्वि० ३, च० १, पं० १ मृत मंडल, तृ० २ अपर लोक। [8]. प्र० १, २, द्वि० ७ अदिस्ट भई, अलोप भई, द्वि० ४, पं० १ अदिस्ट धनि, च० १ अदिस्ट होइ।

* प्र० १, २, द्वि० ३ में इसके अनंतर एक अतिरिक्त छंद है।

[४८५] [1]. च० १ फूक। [2]. प्र० २ होइ। [3]. प्र० २ लेहिंओ। [4]. तृ० २ अनिसुकु धार फूल तन पासू। चरन कवँल अति सुगंध सो बासू। [5]. प्र० १, द्वि० १, ६, तृ० २, च० १ छिनि, तृ० ३ छपि। [6]. तृ० ३ पाय की, तृ० १ पावसि। [7]. पं० १ दान पर हिए। [8]. तृ० १, २ जो जन बारा, पं० १ लोटनक दहिए।

घालि नयन जनु[9] राखिअ पलक न कीजै ओट।
पेम क लुबुधा पावै[10] काहु सो बड़ का छोट॥

[४८६]

राघौ जौं धनि बरनि सुनाई। सुना साह मुरछा गति आई।
जनु मूरति वह परगट भई। दरस देखाइ तवहिं[1] छपि गई[2]।
जो जो मँदिल पदुमिनी लेखी। सुनत सो कवँल कुमुद जेउँ देखी।
मालति होइ असि[3] चित्त पईठी[4]। और पुहुप कोइ आव न डीठी।
मन[5] है भवँर भँवै वैरागा। कँवल छाँड़ि चित[6] और न लागा।
चाँद के रँग सुरुज जस राता। अब नखतन्ह सौं पूँछ न बाता।
तब अलि अलाउदीन जग[7] सूरू। लेउँ नारि[8] चितउर कै चूरू।
जौं वह मालति मानसर अलि न बेलबै जात।
चितउर महँ[9] जो पदुमिनी फेरि वहै कहु बात[10]॥*

[४८७]

ऐ जग सूर कहौं तुम्ह पाहाँ। और पाँच नग चितउर माहाँ।[1]
एक हंस है पंखि अमोला। मोती चुनै पदारथ बोला।

---

९. तृ० १ दुहूँ। १०. प० १ दा-र।

[४८६] १. द्वि० २, ३, ४, ५ तौहि (हिंदी मूल)। २. प्र० १ जानु छपि गई, द्वि० ६, च० १ जीव लै गई। ३. द्वि० ४, ५, च० १ धनि। ४. प्र० १ हियें पईठो, द्वि० ३ जइहि वईठी। ५. प्र० १, २ मन। ६. द्वि० २ कँवल छाडि चित मालति लागा, च० १ मालति वास पास चित लागा। ७. प्र० १, २ द्वि० ७ अलि अला भुजंगम, द्वि० २ अलि अला चन. जग, तृ० ३ अलि आला भूजग, द्वि० ३ अलि अला मान जग, च० १ अलि अलाउदीन जग, पं० १ अलाउ चाहि मग। ८. द्वि० २ ताहि, प० १ जाइ। ९. तृ० ३ सिंघल की। १०. द्वि० २ कहौ राघौ चेतन अब तेहि चितउर की बात।

*यह छंद तृ० १ में नहीं है, किंतु आगे के छंद का विषय बदला हुआ है, इसलिए पिछले विषय की परिसमाप्ति के लिए यह छंद प्रसंग में आवश्यक है।

[४८७] १. द्वि० १ (यथा ० ७) नग अमोल ए अउरौ बाँचौ, मान समुंद दीन्ह बदि पाँचौ।

दोसर नग जेहि अँमित बसा[२]। सब बिख[३] हरै जहाँ लगि डसा[२]।
तीसर पाहन परस पखाना। लोह छुवत होइ कंचन बाना।[४]
चौथ अहै सादूर अहेरी। जेहिं घन हस्ति धरे सब घेरी।
पाँचौं है सोनहा लागना। राज पंखि पंखी फर जना।
हरिन रोझ कोइ बाँच न भागा। जस सैचान तैस उड़ि लागा[५]।

नग अमोल[६]अस पाँचौं मान[७]समुँद ओहि दीन्ह[८]।
इसकंदर नहिं पाएउ जौं रे समुँद धँसि लीन्ह[८]॥*

[४८८]

मान दीन्ह राघौ पहिरावा। दस गज हस्ति घोर सौ पावा।[१]
औ दोसर कंगन कर जोरी। रतन लागि तेहि[२] बीस करोरी।[१]
लाख दिनार देवाई[३] जेंवा[४]। दारिद हरा समुद कै सेवा।[१]
हौं जेहि देवस पदुमिनी पावौं। तोहि राघौ चितउर बैसावौं।[१]
पहिलें कै पाँचौं नग मूँठी। सो नग लेउँ जो कनक अँगूठी।[१]
सरजा सेर पुरुख बरियारू। ताजन नाग सिंघ असवारू।[१]
दीन्ह पत्र लिखि बेगि चलावा। चतउर गढ़ राजा पहँ आवा।[१]

२. प्र० १, २ बसा जो नागिनि डसा, द्वि० ४ बसा, जहाँ लगि दसा, तृ० २ नाऊँ, होहिं जेहि नाऊँ। ३. द्वि० ६ जस। ४. प्र० १, २ तीसर पाहन परस पखाना, तातें छुवैं होइ द्वादस बाना, द्वि० १ तीसर पारस आदि बखाना, लोह छुअत होइ कंचन बाना। द्वि० ७, तृ० ३ तीसर पाहन परस पखाना, पूज सो कनक दुआदस बाना। द्वि० २ पीतर नग सो परसि होइ लोना, परसे लोह होइ सब सोना। ५. प्र० २, पं० १ देखत उड़ि सचान जस लागा। ६. द्वि० १ अगम मोल। ७. प्र० १, द्वि० ६ भेंट। ८. प्र० २ में यह दोनों पंक्तियाँ नहीं हैं।

*यह छन्द तृ० १ में नहीं है, किंतु अगले छन्द में अलाउदीन ने कहा है, 'पहिले के पाँचौ नगमूठी', और अन्यत्र कहीं इसके पूर्व उक्त पाँच नगों का कोई उल्लेख नहीं है, इसलिए यह छन्द प्रसंग में आवश्यक है।

[४८८] १. प्र० २ में ऊपर के दोहे की अंतिम दो पंक्तियों के साथ साथ इस छंद की भी प्रथम सात—अर्थात् कुल एक छंद भर की पंक्तियाँ नहीं हैं, इनके न रहने से प्रसंग खंडित हो जाता है, इसलिए अशुद्धि प्रकट है।
२. तृ० ३ रतन नग लेहि, द्वि० ५ रतन जो लाग वोहि। ३. प्र० १ अलाउदीन सो जेंवाइ। ४. तृ० ३ जेंवावा।

पत्र दीन्ह लै राजहि किरिया लिखी अनेग।
सिंघल की जो पदुमिनी सो चाहौं यहिँ[5] बेगि[6] ॥

[४८६]

सुनि[1] अस लिखा उठा जरि[2] राजा। जानहुँ देव तरपि घन गाजा।
का मोहि सिंघ देखावसि आई। कहौं तो सारदूर लै[3] खाई।
भलेहँ सो साहि पुहुमिपति भारी। माँग न कोइ पुरुख कै नारी।
जौं सो चक्कवै ता कहँ राजू। मँदिर एक[4] कहँ आपन साजू।
आछरि जहाँ इंद्र पै रावा[5]। औरु जो सुनै न देखै पावा।
कंस क राज जिता जौं कोपी[6]। कान्हहि[7] दीन्ह काहुँ कहुँ गोपी[8]।
का मोहि तैं अस सूर अँगारौं। चढ़ौं सरग औ परौं[8] पतारौं।

का तोहि जीव मरावौं सकति आन के दोस[9]।
जो तिस बुझै न समुँद जल[10] सो बुझाइ कत ओस[11] ॥

[४९०]

राजा रिसि न होहि अस[1] राता। सुनि होइ जूड़ न जरि कहु बाता[2]।

---

५. तृ० ३ पर्हि, तृ० १ तेहि, तृ० २ अब। ६. प्र० १, २, पठै देउ मोहि बेगि, द्वि० २ पठै देहु अब बेगि, द्वि० ४, ५, ६, ७, च० १ पठै देहु तेहि बेगि।

[४८९] १. द्वि० ६ तस। २. च० १ मरि। ३. प्र० १ धै, तृ० ३ ले, च० १ धरि। ४. प्र० २ मंडलीक, च० १ मँदिर आँक। ५. तृ० १ आव। ६. च० १ कोई, कर होई। ७. द्वि० ६, तृ० ३ कान्ह न, च० १ कतहुँ न, प० १ कंसन। ८. तृ० १ चढ़ौं मरग औ चढ़ौं, च० १, पं० १ चढ़ै सरग खसि परै। ९. प्र० १ आन कर आस, च० १, आनके आस, च० १ आन के रोस। १० प्र० १ जो निसो नहि बूझै जल, तृ० ३ जोतिस बुझै न समुँद जल, द्वि० ७ जोतिस बुझै समुँद्र जल, पं० १ जो तिस बुझै न समुँद म.ँ, च० १ जो सुनि छिद्दे न समुद जल। ११. प्र० १ सो बूझ कत अस, पं० १ सो बुझाइ किमि ओस।

[४९०] १. द्वि० १ सुनत थोर मा, द्वि० ३ तूँ न होहि अस। २. प्र० १, २ सनद होहि जूडे कहु बाता, तृ० ३ सुनि होइ जूड निडर कहु बात, तृ० २ सुनि होइ जूड बूझि कहु बाता।

आवा हौं सो[3] मरै कहँ आवा। पातसाहि अस जानि पठावा।
जौं तोहि भार न औरहि लेना। पूँछिहि काल उतर है देना।
पातसाहि कहँ अैस न बोलू। चढ़ै तौ परै जगत महँ डोलू।
सूरहि चढ़त न लागै बारा। धिकै आगि तेहि सरग पतारा।
परवत उड़हिं सूर के फूँके। यह गढ़ छार[4] होइ एक झूँके।
धँसै[5] सुमेरु समुँद का पाटा। भुइँ सम होइ धरै जौं[6] बाटा।[7]

तासौं का मइ बोलसि बैठि न चितउर खासि।
उपर लेहि[8] चँदेरी का पदुमिनि एक दासि॥

[४९१]

जौं पै ।घिहिनि[1] जाइ घर केरी। का चितउर केहि काज चँदेरी[2]।
जिउ लेइ[3] घर कारन कोई। सो घर देइ जो जोगी होई।[4]
हौं रनथँभउर नाँह[5] हमीरू। कलपि माँथ जेइँ[6] दीन्ह सरीरू।
हौं तौ रतनसेन सक बंधी। राहु बेधि जीती सैरिंधी।
हनिवँत सरिस[7] भार मैं[8] काँधा। राघौ सरिस[9] समुँद हठि बाँधा।[10]
बिक्रम सरिस[7] कीन्ह जेइँ साका। सिंघल दीप लीन्ह जौं ताका।
ताहि सिंघ के गहै को मोंछा। जौं अस लिखा होइ नहिं ओछा।[11]

---

3. प्र० १ आयहु इहाँ, द्वि० ४ अनु हौ इहाँ। 4. तृ० ३ भाङ्गर। 5. प्र० १, २, द्वि० ७ बहै द्वि० ६ बहै। 6. प्र० २ टरै तस, द्वि० ४ गिरै जेहि। 7. तृ० ३ सेना करु जो जिभन तोहि फाबी, नाहिं तौ भिरे भाँग होइ जाबी। (४९०.७) 8. प्र० १, २ और जो लेहि।

४९१] 1. द्वि० १ घरनि। 2. प्र० १ काकर चितउर कहाँ चँदेरी, प० १ को न मान चितउर चँदेरी। 3. द्वि० २, तृ० १ लेइ। 4. प्र० १, २, द्वि० ७, पं० १ जिय लौ लेइ घर कारन भोगी, घरनि सो देइ होइ जो जोगी। 5. द्वि० ३ नाहिं। 6. प्र० १ सर, प्र० २ सै,) द्वि० ६ सरि। 7. तृ० ३ सुरस (उर्दू मूल))। 8. प्र० १ जो। 9. तृ० ३ सुर। 10. तृ० २ हनिवँत सरिस कीन्ह मैं साका। सिंघल दीप लीन्ह जो ताका। 11. प्र० १, २, द्वि० ७ ताहि सिंघ कै गहै को मोंछा। ओछ कहैं कोइ होइ न ओछा। पं० १ सरवहि गाइ न काहै पोंछा। जिभत सिंघ कै गहै को मोंछा।

दरब लेइ तौ मानौं[12] सेव करौं गहि पाउ।
चाहै नारि पदुमिनी तौ सिंघल दीपहि जाउ॥

[४६२]

बोलु न राजा आपु जनाई[1]। लीन्ह उदैगिरि लीन्ह[2] छिताई।
सप्त दीप राजा सिर नावहिं। औ सँ चलीं पदुमिनी आवहिं[3]।
जाकरि सेवा करै सँसारा। सिंघल दीप लेत का बारा।
जनि जानसि तूँ गढ़ उपराहीं[4]। ताकर सबै तोर कछु नाहीं।
जेहि दिन आइ गाढ़ कै छेंकै। सरबस लेइ हाथ को टेकै।
सीस न भारु खेह के लागें[5]। सिर पुनि छार[6]होइ देखु आगें[7]।
सेवा करु जो जियनि तोहि भावी। नाहिं तौ फेरि भाँग[8] होइ जावी।

जाकरि लीन्हि जियनि पै[9] अगुमन सीस जोहारि।
ताकर कै सब जानै काह पुरुख का नारि॥

[४६३]

तुरुक जाइ[1] कहु मरै न धाई। होइहि इसकंदर कै नाईं।
सुनि अंब्रित केदली[2] बन धावा। हाथ न चढ़ा रहा पछितावा।
उड़ि तेहि दीप पतँग[3] होइ परा। अगिनि पहार पाउ दै जरा।
धरती सरग लोह भा ताँबै। जीउ दीन्ह पहुँचब गा[4] लाँबै।

---

१२. प्र० १ देऊँ, प्र० २, द्वि० ७ देउँ बहु।

[४६२] १. तृ० ३, पं० १ बोलु न राजा आपु जिनाई, तृ० १ बोला राजा आपु जनाई। २. प्र० १ जीति, द्वि० १ भाव, द्वि० ३ लेत। ३. तृ० १ लावहि। ४. च० १ तोहि पाहीं। ५. च० १ पारु न छार कंठ के लागें, प० १ सीस छाइ गहन के लागें। ६. तृ० १ तन। ७. प्र० १ सो सिर छार होइ सिर आगें, प्र० २, द्वि० ६ सो सिर छार होइ पुनि आगें। ८. तृ० १ माँक, च० १ माँख। ९. प० १ चढ़ै जब।

[४६३] १. प्र० १ धाइ। २. प्र० १, २, द्वि० ?, ४, ६, ७ कजली। ३. तृ० ३ पनिग। ४. प्र० १, २, तृ० १ सुठि, द्वि० ४ कर।

काले कुमैंद्रत लील सनेबी[4]। खंग कुरंग[5] बोरदुर[6] केबी[7]।
अबलक अबसर[8] अगज[9] सिराजी। चौधर चाल समुँद सब[10] ताजी।
सुरुमुज नोकिरा जरदा[11] भले। औ अगरान[12]बोलसिर[13]चले[14]।
पँच कल्यान सँजाब बखाने। महि सायर सब चुनि चुनि आने।
मुसुकी औ हिरमिजी इराकी। तुरकी कहे भोथार बुलाकी[15]।

सिर औ पोंछि उठाए[16] चहुँ दिस साँस ओनाहिं।
रोस भरे जस बाउर[17] पवन तरास[18] उड़ाहिं॥*

[४६७]

लोहैं सारि हस्ति पहिराए। मेघ घटा जस गरजत आए।
मेघन्ह चाहि अधिक वै कारे। भएउ असूझ देखि अँधियारे।
जनु भादौं निसि आई डीठी। सरग जाइ हिरगै तिन्ह पीठी।
सवा लाख[1] हस्ती[2] जब[3] चला। परवत सरिस[4] चलत[5] जग हला।[6]
कलित[7] गयँद माँते मद आवहिं। भागहिं हस्ति गंध जहें पावहि।

---

४. द्वि० ४ कुपैती, तृ० १, २ सनैनी। ५. द्वि० ७ तीख तुरंगा। ६. प्र० १, २, द्वि० ७ ते बोरर, द्वि० ४ बोजदुर, द्वि० ६ पूर दुर। ७. द्वि० ४ कुपैती, तृ० १, २ वनैती। ८. प्र० १, २, द्वि० ४, ७, तृ० १, २ अब रस, द्वि० १ कहसी। ९. प्र० १, २, द्वि० ६, ७, तृ० १, २, पं० १ कच्छि। १०. प्र० १ फम (भन ?)। ११. प्र० १ खुरमज नोका जरदा, द्वि० १ मुरकी हिरजी और सो, तृ० १ फिरमिजी नगरा जरदा। १२. द्वि० ४ रूप करा न, तृ० १ औ करलान। १३. तृ० २ हरे बहु। १४. द्वि० १ सबजा नोकिरा बने। १५. द्वि० १ कलावी, द्वि० ४ सनाकी, तृ० ३ सुनाकी। १६. प्र० २, द्वि० ७ जो रहहिं उठाए, द्वि० ६ जो रहहिं उँचाए। १७. प्र० १ औ चौकहिं, प्र० २, तृ० २ जनु चौंकहिं। १८. प्र० १ कि त्रास।

* इसके अनंतर द्वि० ३ में एक छंद अतिरिक्त है।

[४९७] १. द्वि० ४, ५ सोरह लाख। २. तृ० ३ परबत। ३. प्र० २ चुनि, द्वि० ६ जनु, तृ० २ सब। ४. प्र० १ सरिस, तृ० ३ सुरस, पं० १ सरकि। ५. प्र० १ रूकल। ६. तृ० ३ सवा लाख हस्ती दलचला, गिरि पहार डगमग सब हले। ७. प्र० २, द्वि० १, ४, द्वि० ३, च० १, पं० १ चले, द्वि० २, ७ चलत, द्वि० ७ गलित।

ऊपर जाइ गँगन सब खसा। औ धरती तर गहि[8] धसमसा।
भा भुइँचाल चलत गज गानी। जहँ पौ धरहिं उठै तहँ पानी।

चलत हस्ति जग काँपा चाँपा सेस पतार।
कुरुंम[9] लिहें होत धरती पैठि[10] गएउ गज[11] भार॥

[४६८]

चलें सो उमरा मीर बखाने। का बरनौं[1] जस उन्हके थाने[2]।
खुरासान औ चला हरेऊ। गौर बंगाले[3] रहा न केऊ।
रहा न रूम साम सुलतानू। कासमीर ठट्ठा मुलतानू।
जावँत बीदर तुरुक कि जाती। माँडौ वाले औ[4] गुजराती।
पाटि ओडैसा[5] के सब चलें[6]। लै गज हस्ति जहाँ लगि भले[7]।
काँवरू कामता औ पँडुआई। देवगिरि लेत उदैगिरि आई।
चला[8] सो परबत लेत कुमाऊँ। खसिया मगर[9] जहाँ लगि नाऊँ।

हेम[10]सेत औ गौर गाजना[11] बंग तिलंग सब लेत।
साती दीप नवौ खँड[12] जुरे आइ एक खेत॥[13]

[४६६]

धनि सुलतान जेहिक संसारू। उहै कटक अस जोरै पारू[1]।

---

8. प्र० १, द्वि० ७ औ सब तर धसी, प्र० २, द्वि० ६ औ तर सब धरती।
9. समस्त प्रतियों में कुरुंभ (हिंदी मूल)। 10. तृ० ३ पीठि। 11. प्र० १ लेहि, द्वि० ७ जग, तृ० ३ बहु,

[४६८] 1. तृ० २ जानौं। 2. तृ० १, २ बाने। 3. प्र० २ उहै अस्त लहु, द्वि० ६, ७ कुलि बंगाल, च० १ काबुल अरब। 4. प्र० १, २ माडौ लेत चले, द्वि० ७ माडवाली औ। 5. प्र० १, २, द्वि० ७ पटह ओडैसा, द्वि० ४, ५ पटना ओड़ैसा, तृ० ३ पाटी देसा (उर्दू मूल), द्वि० ४ दाहु आडैसा, तृ० १ बैठा ओडैसा। 6. द्वि० १ आए। 7. द्वि० १ चलै सब धाए। 8. प्र० २, द्वि० ७ जुमिला। 9. प्र० १, २, द्वि० २, ३, ४, ७, तृ० ३, पं० १ नगर। 10. तृ० ३ मेह। 11. द्वि० १ गढ़ गंजन। 12. प्र० १, २ द्वि० २ नवौ खँड सिधिमी, द्वि० ७ जहाँ लगि। 13. द्वि० ४, ५, ६, च० १।

उहै अस्त जहवाँ लहि दीपै को जानै तेहि नावँ।
साती दीप नवौ खँड जुरेआइ एक ठावँ॥

[४६९] 1. तृ० ३ संसारा, जुरवै पारा, द्वि० ४, ५ संसारा, जुरै अपारा।

सबै तुरुक सिरताज बखाने। तबल बाज औ बाँधे बाने।
लाखन्ह मीर बहादुर जंगी। जंत्र[2] कमानैं तीर खदंगी[3]।
जेबा खोलि[4] राग सौं मढ़े। लेजिम[5] घालि इराकिन्ह चढ़े।
चमकै पखरैं सारि सँवारीं। दरपन चाहि अधिक उजियारीं।
बरन बरन औ पाँतिहि पाँती। चली सो सैना भाँतिहि भाँती।
बेहर बेहर सब कै बोली। बिधि यह खानि[6] कहाँ सौं खोली।

सात सात जोजन कर एक एक[7] होइ[8] पयान।
आगिल जहाँ पयान होइ पाछिल तहाँ मेलान ॥*

[५००]

डोले गढ़ गढ़पति सब काँपे। जीउ न पेट हाथ हिय चाँपे[1]।
काँपा रनथँभउर डरि[2] डोला। नरवर[3] गएउ झुराइ न[4] बोला।
जूनागढ़ औ चंपानेरी। काँपा माँडौ लेत चँदेरी।
गढ़ गवालियर[5] परी मथानी। औ खंधार[6] मठा होइ पानी।
कालिंजर महँ परा भगाना। भाजि अजैगिर[7] रहा न थाना।
काँपा बाँधौ नर औ पानी[8]। डर[9] रोहितास बिजैगिरि मानी[10]।
काँप उदैगिरि देवगिरि डरा[11]। तब सो छिताई अब केहि[12] धरा[11]।

---

२. प्र० २, जंबूर, द्वि०, २, ४, ६, च० १, पं० १ मित्र। ३. प्र० १, २ तुफंगी, तृ० ३ खतंगी। ४. च० १ कहीं। ५. तृ० ३, च० १ केजिम। ६. तृ० ३ भैसानि, द्वि० २ मैं थोन। ७. प्र० २ दिन। ८. द्वि० १ कीन्ह, तृ० १ लिखा।

* प्र० १, २ द्वि० ७ में इसके अनंतर एक अतिरिक्त छंद है।

[५००] प्र० १ सूरति बेसुरनि होइ सो गई, मरउँ च भार न मँगवै दई। २. प्र० १ तोहू नान कर। ३. प्र० २ पवंर। ४. तृ० १ हेराइ। ५. प्र० १ सो। ६. द्वि० ७ खीहारे। ७. प्र० १, २ उदैगिरि, द्वि० २ अजैगढ़, द्वि० ४ भी जैगढ़, द्वि० ३ राजगिरि, पं० १ अजमेर। ८. प्र० १ नौव करोरी, प्र० २ नरौं करोरी, द्वि० १ औ नरपानी, द्वि० ४ नरवर रानी। ९. च० १ गढ़। १०. प्र० १, २ मोरी। ११. प्र० १, २ कहा, भहा, द्वि० २ कहा, चहा। १२. द्वि० ४, तृ० ३, छुटाइ अवहि गहि, तृ० १ छत्र गरब कर।

जावँत गढ़ गढ़पति सब काँपे औ डोले जस पात।
का कहँ बोलि[13] सौहँ भा पातसाहि कर छात ॥[14]*

[५०१]

चितउर गढ़ औ कुंभलनेरै। साजे दूनौ जैस सुमेरै[1]।
दूतन्ह आइ कहा जहँ राजा। चढा तुरुक आवै दर साजा।
सुनि राजैं दौराई पाती। हिंदू नाँव[2] जहाँ लगि जाती।
चितउर हिंदुन्ह कर अस्थानू। सतुरु तुरुक हठि कीन्ह पयानू।
आवा समुँद रहै नहिं बाँधा। मैं[3] होइ मेंड़ भार सिर काँधा।
पुरवहु आइ तुम्हार बड़ाई। नाहिं त[4] सत गौ छाँड़ि पराई[5]।
जौ लगि मेंड़ रहै सुख साखा। टूटे बार जाइ नहिं राखा।

सती जो जिय महँ सतु करै मरत न छाड़ै[6] साथ।
जहँ बीरा तहँ चून है पान सुपारी काथ[7] ॥

[५०२]

करत जो राय साहि कै सेवा। तिन्ह कहँ पुनि[1] अस[2] आउ परेवा।
सब होइ एकहि मतें सिधारै[3]। पातसाहि कहँ आइ जोहारै।[4]

---

13. प्र० १, २ काकहँ कोपि, द्वि० १ काकहँ चाँपि। 14. प्र० १
देस देस मत परा भगाना जो जहँ तहँ भै भेट।
औचक औचक परे न कोइ चित वहि चहूँ सो चेति।

* प्र० १, २, द्वि० ६, ७ में इसके अनंतर एक अतिरिक्त छंद है।

[५०१] 1. प्र० १ जैसलमेरी, प्र० २, द्वि० ७ जैस सुमेरी (उर्दू मूल), तृ० ३ सेत चँदेरी। 2. प्र० १, २ राइ। 3. प्र० १, द्वि० ७ सेइ। 4. प्र० १ नातर। 5. द्वि० ४, ५ सब कहँ मारि चढ़ाई, तृ० २, पं० १ मन को मारि छँड़ाई। 6. तृ० ३ चाहै 7. प्र० १ साथ।

[५०२] 1. तृ० ३, च० १ तिन्हहू कहँ। 2. प्र० १ एके, तृ० ३ निसि, च० १ पुनि। 3. तृ० १ बर हारे। 4. द्वि० १ सब मिलि एक मसहूरत भाई, पाति म्हहि कहँ सर को नाई।

चितउर है हिंदुन्ह के माता। गाढ़ परें तजि जाइ न नाता।
रतनसेनि है[5] जौहर साजा। हिंदुन्ह माँह अहै बड़ राजा।
हिंदुन्ह केर पतिंग कर लेखा। धौरि[6] परहिं आगि जहँ[7] देखा।
किरिपा करसि त[8] करसि समीरा[9]। नाहिं त हमहिं देहि हँसि बीरा।
हम पुनि जाइ मरहिं ओहि ठाऊँ। मेटि न जाइ लाज कर नाऊँ।[10]

दीन्ह साहि हँसि बीरा आवहिं तीन दिन[11] बीच।
तिन्ह सीतल को राखे जिन्हहिं आगि महँ मीच॥

[५०३]

रतनसेनि चितउर महँ[1] साजा। आइ बजाइ पैठ सब राजा।
तोंवर बैस पवाँर जो आए। औ गहिलौत आइ सिर नाए।
खत्री[2] औ पँचबान बघेले। अगरवार चौहान चँदेले।
गहरवार परिहार सो कुरी। मिलन हंस ठकुराई जुरी[3]।
आगे ठाढ़ बजावहिं हाड़ी[4]। पाछें धजा मरन कै काढ़ी।
बाजहिं सींग संख औ तूरा। चंदन घेवरें भरे सेंदूरा।
सँचि संग्राम बाँधि सत साका। तजि कै जिवन मरन सब ताका।

गँगन धरति जेइँ टेका का तेहि गरुअ पहार।
जब लगि जीव कया महँ परै सो अँगवै भार॥*

---

5. च० १ जहँ। 6. द्वि० ७ धाइ। 7. प्र० १ दीपक अहै, प्र० २ दीपक नहिं। 8. तृ० ३ तौ। 9. प्र० १, २ दया (कृपा-प्र० २) करहु तौ बाँधहु बीरा। 10. तृ० ३ पातिसाहि तू पुहुमि गोसाईं, आजु चित्र चढ़ा चितउर की नाईं। 11. प्र० १, २ कीन्ह तीन दिन, तृ० ३ दीन तीन दुइ।

[५०३] 1. द्वि० २ चितउर गढ़, तृ० ३ जहँ जौहर। 2. प्र० २, तृ० ३ छत्री। 3. तृ० १ गहरवार परिहार सो आए, भरत हंस जुरे ठकुराए। 4. तृ० ३ ठाढ़ो।

* प्र० १, २, द्वि० ६ में तीसरी अर्द्धाली के अनंतर आठ, और छठी अर्द्धाली के अनंतर एक, कुलनौ अर्थात् एक छंद की अतिरिक्त पंक्तियाँ हैं। (देखिए परिशिष्ट)

प्र० २ में इस छंद के अनंतर चार अतिरिक्त छंद हैं, जो प्र० १ में छन्द ५११ के अनंतर आते हैं। (देखिए परिशिष्ट)

द्वि० ७ में यह छंद नहीं है, किंतु पिछले छंद में रत्नसेन ने जो निमंत्रण भेजा है उसका क्या प्रभाव हुआ, इसके बताने के लिए प्रसंग में यह छंद आवश्यक है।

[५०४]

गढ़ तस सँवा जो चाहिअ सोई[1] । बरिस बीस[2] लहि खाँग न होई ।[3]
बाँके चाहि बाँक सुठि[4] कीन्हा । औ सब कोट चित्र कै लीन्हा ।[5]
खंड खंड चौखंडी सँवारीं । धरी बिखम गोलन्द्र की नारीं ।
ठाँवहि ठाँव लीन्ह गढ़ बाँटी । बीच न रहा जो सँचरै[6] चाँटी ।
बैठे धानुक कँगुरहि कँगुरा । पुहुमि न आँटी[7] अँगुरहि अँगुरा ।
औ बाँधे गढ़ि गढ़ि मतवारे । फाटै छाति[8] होहिं जिवधारे[9] ।
बिच बिच बुरुज बने[10] चहुँ फेरी । बाजें तबल ढोल औ भेरी ।[11]

भा गढ़ गरजि[12] सुमेरु जेंउ[13] सरग छुवै पै चाह ।
समुँद[14] न लेखें लावै गँगि सहस[15] मकु याह[16] ।।*

[५०५]

पातसाहि हठि कीन्ह पयाना । इंद्र फनिंद्र[1] डोलि डर माना ।

---

[५०४] १. प्र० २, द्वि० ४, ५, ३ कोई । २. द्वि० २ साठि, द्वि० ६ तीस । ३. तृ० १, तस गढ़ लाग सँजोवना होई, दसिउ बरिस लहि खाँग न कोई । ४. प्र० २, द्वि० ४, ५, पं० २ गढ़ । ५. प्र० १, द्वि० १ बाँके पर सुठि बाँकइ । औ सब (रानिहि—द्वि० १) कोट चित्र कै लेई । ६. तृ० ३ चढ़ही जो । ७. द्वि० १ बाँटिन भाटै, तृ० १ पुहुमि न छूठी । ८. प्र० १, २ होलैं धरनि । ९. द्वि० १ तरै नहिं तारे, तृ० ३ होहिं जौं टारे, पं० १ होहिं जी दारे । १०. प्र० १ गढ औ, प्र० २ राखे । ११. तृ० १ खंड खँड सीढ़ी भई जो गरेरी, उतरै चढ़ै लोग चहुँ फेरी । (३१·४) १२. द्वि० ३ गरगज । १३. द्वि० २, ३, तृ० ३ भा गढ गरजि सरग जेउँ । १४. तृ० २ गँगन । १५. प्र० १ गँगन सहस, तृ० १ औंर जो हसि । १६. प्र० २, द्वि० ६ मकु काह, द्वि० ४, ५, पं १ मुख चाह, द्वि० ३, च० १ मुख काह, तृ० २ मुख बाह ।

* द्वि० ७ में यह छंद नहीं है, किंतु गढ़ की तैयारी का वर्णन प्रसंग में आवश्यक लगता है, इसलिए यह छंद भी प्रसंगोचित है ।

[५०५] १. द्वि० १ मंभ, तृ० ३ महांड ।

नवे[२] लाख असवार सो[३] चढ़ा। जो देखिअ सो लोहैं मढ़ा।[४]
चढहिं पहारन्ह भै गढ़ लागू। बनखँड खोह न देखहिं[५] आगू।
बीस सहस घुम्मरहिं निसाना। गल गाजहिं धिहरे असमाना।
बैरख ढाल गँगन गा छाई। चला कटक धरती[६] न समाई।
सहस पाँति गज हस्ति चलावा। खसत अकास धँसत भुइँ[७] आवा।
बिरिख उपारि पेंड़ि सौं लेहीं। मस्तिक झारि डारि मुँह देहीं।

कोउ काहू न सँभारै होत आव तस चाँप।
धरति आपु कहँ काँपै सरग आपु कहँ काँप ॥*

[५०६]

चलीं कमानें जिन्ह मुख गोला। आवहिं चलीं धरति सब डोला।
लागे चक्र बज्र के गढ़े। चमकहिं रथ सब सोने मढ़े।
तिन्ह पर बिखम कमानें धरीं। गाजहिं[१] अस्ट धातु की भरीं[२]।
सौ सौ मन पीअहिं वै दारू। हेरहिं[३] जहाँ सो टूट पहारू।
माँती रहहिं रथन्ह पर परी। सतुरुन्ह कहँ सो होंहिं उठि खरी।
लागहिं जौं संसार न डोलहिं। होइ भौकंप जीभ जौं खोलहिं।
सहस सहस[४] हस्तिन्ह कै पाँती। खाँचहिं रथ[५] डोलहिं नहिं माँती।

नदी नगर सब पानी[६] जहाँ धरहिं वै पाउ।
ऊँच खाल बन बेहड़ होव बराबरि आउ ॥

---

२. द्वि० ४, ५, च० १ नवे (हिंदी मूल?)। ३. प्र० २, द्वि० ४, ५, ६, ७ जो, तृ० ३ क। ४. पं० १ में यह पंक्ति नहीं है। ५. प्र० १ सूझहि। ६. प्र० १, २ पं० १ काहूँ। ७. प्र० १, २ धँसत महि, द्वि० २ दिस्टि नहि।

* तृ० १ में यह छंद नहीं है, किंतु आगे के प्रसंग के लिए और आगे वाले छंद के विषय के लिए यह अनिवार्य है, इसी में बादशाह के प्रयाण का उल्लेख है।

[५०६] १. प्र० १, २, द्वि० ४, ५, ७ साँचे, तृ० ३, च० १, प० १ काँचै। २. द्वि० १ तृ० ३ मढ़ी। ३. प्र० २ भिरहिं। ४. द्वि० १ चली। ५. प्र० १, २, पं० १ जोरे रथन्हि। ६. प्र० १, २, द्वि० ७ सब पाटिसौ, द्वि० १ मत फाटेउ, तृ० ३ औ पानी।

[५०७]

कहौं सिंगार सो डीसी[1] नारी। दारू पिअहि सहज[2] मँतवारी।
उठै[3] आगि जौं छाँड़हिं स्वाँसा। तेहिं डर कोउ रहै नहिं पासा[4]।
सेंदुर आगि[5] सीस उपराहीं। पहिया[6] तरिवन झमकत[7] जाहीं।
कुच गोला दुइ हिरदें लाए। अंचल धुजा रहहिं छिटकाए।
रसना गूँगि[8] रहहिं मुख खोले[9]। लंका जरी सो उन्हके घोले[10]।
अलकें साँकरि हस्तिन्ह गीवाँ। खाँचत डरहिं मरहिं सुठि जीवा।[11]
धीर सिंगार दुवौ एक ठाऊँ[12]। सुतुरु साल गढ़ भंजन नाऊँ[13]।

तिलक पलीता तुपक तन[14] दुहुँ दिसि[15] मक[16] के बान[17]।
जहँ हेरहिं तहँ परै भगाना[18] हँसहिं स[19] केहि के मान[20]॥

---

[५०७] १. द्वि० ५, ६, पं० १ जेति पै नारी, द्वि० २ जेति मनवारी, द्वि० २ जो जैसी नारी। २. द्वि० ४, ५ जैसि। ३. प्र० १, २, द्वि० १, पं० १ उठहि, तृ० ३ उडहि। ४. प्र० १, २, द्वि० ४, ५, ६, पं० १ धुवाँ सो लागै जाइ अकासा, द्वि० २ तहँ कोउ और आव नहिं पासा, तृ० १ तेहि डर छोंडि रहै को पासा। ५. प्र० १ माँग, च० १ राक (राग)। ६. द्वि० १ पहिरें, तृ० १ बिछुआ। ७. द्वि० ४, ५, च० १ चमकत। ८. प्र० १ ढोल, प्र० २ गोभि, द्वि० १ कोर, द्वि० २ पोल, तृ० ३ कोख, द्वि० ४ लौग, द्वि० ५, ३ लौक, द्वि० ६, तृ० १, च० १, पं० १ कूंक, द्वि० ७ गोक, तृ० २ कोक। ९. द्वि० १ बाए, लाए। ११. प्र० १, २, द्वि० १, ४, ५, ७, तृ० १, च० १, पं० १ अलक जँजीर फेरि गियँ बाँधे, खाँचहि हस्ती टूटहि काँधे। १२. द्वि० २ साथा, माथा। १३. प्र० १, २, पं० १ तबहुँ न डोलहिं मारग दूरी, मरहिं भार सिर मेलहिं धूरी। १४. प्र० १, द्वि० ४, ५, ६, पं० १ माथें, प्र० २, द्वि० २, ७, तृ० २, च० १ नैन। १५. तृ० ३, च० १ ओन्ह दिसि, प्र० १, २, द्वि० ७, पं० १ दसन। १६. प्र० १, २ बीज के, द्वि० ७ बीजुरी। १७. द्वि० ३ तान। १८. द्वि० १ जहाँ पाँइ तहँ हेर आना, द्वि० ४ जहँ हेरहि तहँ मारहिं, द्वि० ६, प० १ बोलत परै भगाना। १९. द्वि० २ न। २०. द्वि० २, तृ० ३ हठहिं तो केहि के मान, द्वि० ४, ५ चुरकुस करहिं निदान, द्वि० ३ सुनतहि तन कै बान, तृ० २ सुनहिं तो चूरम नान, च० १ हँसहिं तो केहि के बान।

[५०८]

जेहि जेहि पंथ पंखी वे आवहिं । आवै जरत[1] आगि तसि लावहिं ।
जरहिं सो परबत लागि अकासा । बन खँड ढंख परास को पासा[2] ।
गैंड[3] गयंद जरे भए कारे । औ बन[4] मिरिग रोझ झँकारे ।
कोकिल काग नाग औ भँवरा । औरु जो जरहिं[5] तिन्हैं को सँवरा ।
जरा समुंद्र पानि भा खारा । जमुना स्याम भई तेहिं झारा ।
धुआँ जामि[6] अंतरिख भै मेघा । गँगन स्यामु भै भार न[7] थेंघा ।
सूरुज जरा चाँद औ राहू । धरती जरी लंक भा डाहू ।

धरती सरग असूझ भा तबहुँ[8] न आगि बुझाइ[9] ।
अहुठौ बज्र दिन कोई[10] मारा चहै जुझाइ[11] ॥

[५०९]

आवै डोलत सरग पतारू । काँपै धरति न अँगवै भारू[1] ।
टूटहिं[2] परबत मेरु पहारा । होइ होइ चूर उड़हिं[3] होइ[4] छारा[5] ।
सत खँड धरति भई खट खंडा । ऊपर अस्ट भए ब्रह्मंडा ।
इंद्र आइ तेहि खँड होइ छावा । औ[5] सब कटक घोर दौरावा ।

---

[५०८] १. पं० १ बरत । २. द्वि० १ जो पासा, तृ० १ को नासा । ३. तृ० ३ गैंद (उर्दू मूल) । ४. द्वि० ५, च० १ आवई । ५. द्वि० १ तरे । ६. द्वि० ५, च० १ स्याम । ७. द्वि० ५ धुवाँ जो, च० १ भार को । ८. तृ० ३ नीर, च० १ भारहिं । ९. प्र० १, २ पंथ न आगे बुझाइ, द्वि० १ तबहुँ न आगि बुझाइ । १०. प्र० २ आठौ बज्र दुंगवै जोरा, द्वि० ४, ५ अहुठौ बज्र जड़ि देगवै । ११. प्र० १ मारा छपै जुझाइ, द्वि० ४, ५ धूम रहै जग छाइ, द्वि० ७ मारै चहै बुझाइ, च० १ मारा चहै जो जाइ ।

[५०९] १. द्वि० १ में .१ के दूसरे चरण के स्थान पर .२ का दूसरा चरण और इसी प्रकार, .२ के दूसरे चरण के स्थान पर .१ का दूसरा चरण है । २. प्र० १ डोलै । ३. पं० १ तमकि कै चहै जानहुँ । ४. प्र० १, २, द्वि० ६ जसि, द्वि० ७ जो, तृ० १ तेहि । ५. प्र० १, २, द्वि० ५, पं० १ चढ़ि ।

जेहिं पँथ चला एरापति[6] हाथी। अबहूँ सो डगर गँगन महँ आथी[7]।
औ जहँ[8] जामि रही वह धूरी। अबहुँ बसी सो हरिचँद पूरी।
गँगन छपान खेह तसि छाई। सूरुज छपा रैनि होइ आई।

इसिकंदर केदली[9] बन गवने[10] अस[11] होइ गा अँधियार।
हाथ पसार न सूझै[12] बरै[13] लागु मसियार॥

[५१०]

दिनहिं राति अस परी अचाका। भा रवि अस्त चंद रथ हाँका।
दिन के पंखि चरत[1] उठि भागे। निसि के निसरि चरै[2] सब लागे।
मँदिलन्ह दीप जगत[3] परगसे। पंथिक चलत[4] बसेरै बसे।
कवँल सँकेता कुमुदिनि फूली। चकई बिछुरि[5] अचक मन[6] भूली।
तैस चलावा कटक[7] अपूरी। अगिलहि पानी पछिलहि धूरी।
महि उजरी सायर सब सूखा। बनखँड रहा न एकौ रूखा।
गिरि[8] पहार पब्बै[9] भे माँटी। हस्ति हेरान तहाँ को चाँटी।

---

६. द्वि० २ जेहि जहि पँथ चलि आवहि। ७. प्र० १, २, प० १ सो पथ गँगन डगर अस आथी, द्वि० ६, ७ सो पथ अबहु गँगन महँ आथी। ८. द्वि० ६ तहँ, च० १ चहुँ। ९. द्वि० ५ कजली। १०. द्वि० १ कजली बन जारा, द्वि० ४ कजली गवने, द्वि० ७ जो गए कदली बन, पं० १ जो चला कदली बन। ११. द्वि० ५, च० १ तस। १२. प्र० १ हाथ न सूझै। १३. तृ० १, द्वि० ३ परै।

[५१०] १. तृ० ३ उरत (उर्दू मूल)। २. तृ० ३ जरै (उर्दू मूल)। ३. प्र० १ निसि दीपक, द्वि० २ दीप चँद, तृ० २ जो नित। ४. प्र० १ जाइ, प्र० २, पं० १ पंथ, द्वि० ६ जानु। ५. द्वि० १ अचकि, द्वि० ६ दिनहि। ६. प्र० १, २ अचक्का, द्वि० १ चलत सो, द्वि० २, तृ० २ जगत मन, च० १ अक मन। ७. प्र० २, ५ चला कटक अस चढा। ८. द्वि० ५, च० १ गढ। ९. तृ० ३ पुबै (हिंदी मूल), द्वि० ४, ५ फूटि, तृ० २ सबै, च० १ परै, द्वि० ३ भाप।

जिन्ह जिन्ह के घर[10] खेह हेराने[11] हेरत[12] फिरहिं ते खेह।
अब तौ[13] दिस्टि तबहिं[14] पै आवहिं[15] उपजहिं[16] नए[17] उरेह[18] ॥

[५११]

एहि बिधि होत पयान सो[1] आवा। आइ साहि[2] चितउर नियरावा।
राजा राउ[3] देखि सब[4] चढ़ा। आउ कटक सब लोहैं[5] मढ़ा।
चहुँ दिसि दिस्टि परी गज जूहा। स्याम घटा मेघन्ह जग रूहा[6]।
अरध उरध कछु सूझ न आना। खरग लोह[7] घुम्मरहि निसाना[8]।
चैरख ढाल गँगन भै छाहीं[9]। रैनि होत आवै दिन माहीं।
चढ़ि धौरहर देखहिं रानी। धनि तूँ असि जाकर सुलतानी[10]।
कै धनि रतनसेनि तूँ राजा। जाकहँ बोलि[11] फटक अस साजा।

अंध कूप भा आवै उड़त आव तसि[12] छार।
ताल तलाव अपूरि गढ़[13] धूरि[14] भरी जेंवनार ॥*

---

१०. तृ० ३ खुर। ११. प्र० १, द्वि० ६, ७ खेत उड़ाने, प्र० २ खेहरानि, द्वि० १ खेह मुलाने। १२. प्र० १, २, द्वि० ४, पं० १ ढूंढत। १३. द्वि० ५ सो। १४. प्र० २ नाहि, द्वि० ४, ५, ६, प० १ तदहि (हिंदी मूल), द्वि० १ तब। १५. प० १ दिस्टि तबहिं पै आवहिं। १६. द्वि० ३ कीजै। १७. प्र० २ नैन। १८. तृ० १ सँदेह।

[५११] १. प्र० १, २, पं० १ जो। २. तृ० १ पातसाहि। ३. प्र० १ रौंक। ४. प्र० १, २ गढ़। ५. प्र० १, २ आइन। ६. प्र० २ जनु मेघ समूहा, द्वि० १ मेघन्हि मोहिं रूहा, द्वि० २, तृ० २ मेघन्ह जग उहा, द्वि ७ मेघन्ह गज जूहा। ७. द्वि० १ लौकै खाँड़। ८. प्र० १, २ भा अँदोर जस घुमर निसाना। ९. प्र० २, द्वि० ४, ५, च० १ केरि परिछाहीं, माहीं, द्वि० १ तक लाहीं, माहीं। १० द्वि० १ धनि सुलतान फटक जेहँ आनी, तृ० ३ धनि अस्तुति जाकरि सुलतानी। ११. द्वि० २ तुरक। १२. प्र० १ उठै झोल बहु, प्र० २ उड़ै झोल बहु, पं० १ अस उड़ै झोल धौ। १३. द्वि० १ पोखरी, द्वि० ४, ५ पोखर, द्वि० ७ अपूरि गा, द्वि० ३ अपूरि घर, च० १ पूरि गढ़। १४. तृ० १, २ आइ।

*प्र० २ में इसके अनन्तर चार अतिरिक्त छन्द हैं, जो प्र० २ में ५०३ के अनन्तर आए हैं। (देखिए परिशिष्ट)

[५१२]

राजैं कहा कीन्ह सो[1] करना । भएउ असूझ सूझ जस[2] मरना ।
जहँ लगि राज साज सब होऊ । तेतखन भएउ सँजोउ सँजोऊ ।
बाजे तबल अकूत[3] जुझाऊ । चढ़ा कोपि सब राजा[4] राऊ ।
राग सनाहा पहुँची टोपा[5] । लोहँ सार पहिरि[6] सब कोपा ।
करहिं तोखार पवन सौं रीसा । कंध ऊँच असवार न दीसा ।
का बरनौं जस ऊच तोखारा । दुइ पैरीं[7] पहुँचे[8] असवारा[9] ।
बाँधे मौर छाँह[10] सिर सारहिं । भाँजहिं[11] पूँछि चँवर जनु ढारहिं ।

टैआ[12] चँवर बनाए औ घाले गज[13] झाँप[14] ।
औ गज गाह सेत तिन्ह बाँधे[15] जो देखै सो[16] काँप[14] ॥

[५१३]

राज तुरंगम बरनौं काहा । आने छोरि[1] इंद्र रथ बाहा ।
औस तुरंगम परे न डीठी । धनि असवार रहहिं तिन्ह पीठी ।

---

[५१२] १. द्वि० १ जो, तृ० २ पै। २. द्वि० १, ६ भएउ असूझ सूझ अब, तृ० १ भएउ असूझि जूझ अब, तृ० २ तेहि अब सूरज बूझि है। ३. द्वि० २, ३, ४, ५, च० १, पं० १ अकूद। ४. प्र० १ राना। ५. प्र० १ राज सनाह सरै औ टोपा, प्र० २ राज सनाह दस्त सिर टोपा, द्वि० १ रंग सँभारू और सम टोपा, तृ० ३ राज सनाह बाँह ज टोपा, द्वि० २, ३, ४, ५, ६ तृ० १, २, च० १, पं० १ राग सँवाहा पहन चू टोपा। ६. द्वि० १ चढ़े। ७. प्र० १, द्वि० ७ पवरी, प्र० २ पावरी। ८. पं० १ चाढ चढ। ९. द्वि० १ भाँजहि पँछि मौर तस ढारहिं। १०. प्र० १, द्वि० १ मौर छत्र, च० १ मौन छाँह। ११. द्वि० ६ धावहिं, द्वि० ७ धावन। १२. द्वि० ४, ५, ६, पं० १ तैसी, तृ० १ नय्या, च० १ तैस। १३. द्वि० १ सब, द्वि० २ ३, ६, तृ० १, २, जग, द्वि० ४, ५ गल। १४. द्वि० ६ हस्त, नस्ट। १५. प्र० २ सेत तिन्ह, द्वि० ६, च० १, पं० १ सेत बैठ। १६. प्र० २ बाँधे देख सो।

[५१३] १. द्वि० १ जोरि।

जाति बालका[2] समुँद थहाए[3]। माँथे पूँछि गँगन सिर लाए[3]।[4]
बरन बरन पखरे अति लोने। सार[5] सँवारि लिखे सब सोने[6]।
मानिक जरे सिरी[7] औ काँधे। चँवर मेलि[8] चौरासी बाँधे।
लागे रतन पदारथ हीरा। पहिरन देहिं[9]देहिं तिन्ह[10]बीरा[11]।
चढ़े कुवँर मन[12] करहिं उछाहू। आगें घालि गनहिं नहिं काहू।

सेंदुर सीस चढ़ाएँ चंदन खेवरें[13] देह।
सो तन काह[14]लगाइअ[15] अंत भरे जो[16]खेह॥

[५१४]

गज मैमँत पखरे रजधारा[1]। देखिअ जानहुँ मेघ अकारा[2]।
सेत गयद पीत[3] औ राते। हरे स्याम घूमहिं[4] मद माँते।
चमकहिं दरपन लोहैं सारी। जनु परबत पर परी अंधारी।

---

२. द्वि० १ जोति पन्खा, द्वि० २, ३ जाति पालक, तृ० ३ जाति भलुका तृ० २ जाति बारका। ३. प्र० २, द्वि० १, ७ न भए, लए, तृ० ३ न भाए, लागे, च० १ निवाहे, लाए। ४. द्वि० ४, ५, पं० १ सेत पूँछि जनु चँवर बनाए। ५. प्र० १ सिरी, प्र० २ सारि (उर्दू मूल), पं० १ चित्र। ६. द्वि० ४, ५ जानहु चित्र सँवारे सोने। (तुलना० ३१.७) ७. द्वि० १ सिर देखिए, द्वि० ४ तिलक जड़े, द्वि० ६ जरे परे। ८. द्वि० ४ चँवर लागि, द्वि० ५ चतुर लागि। ९. प्र० १ भएँ देहि, प्र० २ सोहन देहिं, द्वि० १ तौ राजैं, द्वि० ५ बरनहि देहिं, तृ० १ बीरा देहिं, च० १ परहत बीर। १०. द्वि० १, २, तृ० २ देहिं हँसि, तृ० ३ देहि तेहिं (उर्दू मूल), द्वि० ४, ५ दोपन चहुँ। ११. द्वि० ४, ५ फेरा। १२. प्र० १ चढ़ें कुँअर सब, तृ० २ राज कुँवर मन। १३. प्र० २, तृ० ३, च० १ खेवरें (उर्दू मूल तुलना० ५२०.८)। १४. प्र० १ कहाँ, तृ० २ मोंनि। १५ प्र० १, २, द्वि० ७ काह छपाइअ द्वि० १ कहाँ छुपाइअ, तृ० २, ३ काह छुवाइअ। १६. द्वि० १ परै तेहि द्वि० ४, ५ होइ जो।

[५१४] १. द्वि० १ सो राजा बारा, द्वि० २ पखरे धर जाहीं, तृ० १, पं० १ पखरे उजिआरा। २. प्र० १ मेघ अमकारा, प्र० २ मेघ अम कारा, तृ० ३ दाढ़ पहारा, तृ० १ समुँद अकोरा। ३. तृ० २ पेत (उर्दू मूल)। ४. तृ० ३ झूमहिं।

सिरी मेलि पहिराई सूँडैं[५] । कटक न भाय[७] पाय तर रूँदे[५] ।[६]
सोनैं मेलि सो[८] दाँत सवाँरे । गिरिवर[९] टरहिं सो उन्हकें टारे ।
परवत उलटि पुहुमि सब[१०] मारहिं । परें ज्यों भीर तीर जेउँ[११] टारहिं[१२] ।
अस गयंद साजे सिंघली[१३] । गवनत कुरुँभ[१४] पीठि कलमली[१३] ।[१५]

ऊपर कनक मँजूसा[१६] लाग चँवर औ ढार ।
भलइत[१७] बैठ माल[१८] लै औ बैठे[१९] धनुकार ॥

[५१५]

असु दल गज दल[१] दूनौ साजे । औ घन तबल जूझ कहँ[२] बाजे ।
माँथें मटुक[३] छत्र सिर[४] साजा । चढ़ा बजाइ इंद्र होइ[५] राजा ।
आगें रथ[६] सैना भइ[७] ठाढ़ी । पाछें धजा अचल सो[८] काढ़ी ।
चढ़ा बजाइ चढ़ै जस इंदू[९] । देव लोक गोहन सब[१०] हिंदू[११] ।[१२]

---

५. तृ० २, ३, च० १ सुँडी, सूँडा, द्वि० ४ सोंटाए, रूँदै, तृ० १, प० १ सुँडा कुंडी । ६. तृ० २ सिरी सा सुँडी पहिराई, अन बन बिधि बहु भाँति बजाई । ७. प्र० १ कटक सो भई, द्वि० ३ कनक भाय । ८. प्र० १, द्वि० ७ सिरी मेलि सब, प्र० २ मेलिसि सिरिनि, द्वि० १ मेलि संग दै, द्वि० २ मेलि सबनै, तृ० १ मेलि सिसैं, द्वि० ३ मलि सान दै । ९. प्र० १ तरिवर । १०. द्वि० ४, ५ सो, च० १ सों । ११. प्र० १ परहिं सो भीर तीर मिग, प्र० २ परहिं जो फेरि धन सेउँ, द्वि० ४, ६ परैं जो भीर तीर अस । १२. प्र० १, २, द्वि० ४, ५० १ झारहिं, द्वि० १ मारा, द्वि० २ डारहिं, तृ० १ झारहिं, द्वि० ३ डारहिं । १३. तृ० ३ सिंघले, कलमले (उर्दू मूल) । १४. समस्त प्रतियों में कुरुँभ (हिंदी मूल) । १५. प० १ कला बहुत चाह वै बनीं । १६. प्र० २ मँजूसा अवारी । १७. द्वि० ४, ५ भलपत, च० १ भौंही । १८. प्र० २ माल लै पाछें, तृ० २ तहाँ लै । १९. प्र० १ पाछ बैठा, प्र० २ औ बैठा, द्वि० ७ औ पाछे ।

[५१५] १. द्वि० ४ कँवल दल । २. द्वि० ४, ५ जुझारू, च० १ जूझ के । ३. द्वि० ३ मुकुट । ४. प्र० १, २, द्वि० ७, तृ० २, च० १, पं० १ मन, द्वि० १ ढार । ५. द्वि० ४, ५ अस । ६. प्र० १, २, द्वि० ७ ओढ़ें । ७. तृ० ३ सो । ८. द्वि० ४, ५ मरन की । ९. प्र० १, २ जहाँ हनिवंत बैठ होइ इंदू । १०. द्वि० ४, ५ भा । ११. प्र० १ चंदू ।

जानहुँ चाँद नखत लै चढ़ा। सुरुज[13] कि कटक रैनि मसि मढ़ा।[12]
जौ लहि सुरुज चाँद[14] देखरावा। निकसि चाँद घर[15] बाहेर आवा।
गँगन नखत जस गने न जाहीं। निकसि आइ तस भुइँ न समाहीं।

देखि अनी राजा कै जग[16] होइ गएउ[17] असूझ।
दहुँ कस होइ चलत हौ[18] चाँद सुरुज कै[19] जूझ॥

[५१६]

इहाँ[1] राजा[2] असि साज बनाई। उहाँ साहि की भई अवाई।
अगिले धौरी[2] आगें आई। पाछिल बाछु[3] कोस दस ताँई।
आइ[4] साहि मंडल गढ़[5] बाजा। हस्ती सहस बीस[6] सँग साजा[7]।[8]
ओनै[9] आइ दुनौ दर गाजे। हिंदू तुरुक दुऔ सम[10] बाजे।
दुऔ समुँद दधि[11] उदधि अपारा। दूऔ मेरु खिखिंद[12] पहारा।
कोपि जुझार दुहूँ दिसि मेले। औ हस्ती हस्तिन्ह कहँ[13] पेले।
आँकुस चमकि बीज अस[14] जाहीं[15]। गरजहिं[16] हस्ति मेघ घहराहीं[15]।[17]

---

१२. द्वि० ७ में यह पंक्तियाँ नहीं है। १३. द्वि० ३ सरग। १४. द्वि० १ चाँद सुरुज, तृ० ३ सुरज चाँद। १५. प्र० १, द्वि० १, तृ० २ गढ़, प्र० २ गढ़ह (उर्दू मूल ?)। १६. प्र० २ गज। १७. प्र० १ भगी। १८. प्र० १, द्वि० १, ५, ७, च० १, पं० १ चहत है, प्र० २ चढ़ैन ही, द्वि० २ जियत ही। १९. द्वि० २, ४ ५, ६ सों।

[५१६] १. प्र० १, २ बैठ। २. द्वि० ४, ५, डौढ़ी, च० १ फौजैं। ३. प्र० १, २, द्वि० १, २, ४ पाछु, द्वि० ७ आगु, तृ० २, द्वि० ३ बाछु। ४. प्र० १, २, द्वि० ७ आपु। ५. प्र० १ माँडौ गढ़, तृ० ३ मंदिल चढ़ि, द्वि० ४, ५ चितउर गढ़। ६. द्वि० ३ एक। ७. द्वि० ३ तन गाजा, द्वि० ४, ५, ६, ३ सँग गाजा। ८. च० १, पं० १ साजे साज साहि तेहि पाछैं, हस्ती तीस सहस सँग काछें। ९. द्वि० १ टूटि। १०. प्र० १, २ दर, पं० १ बर। ११. प्र० १ औ। १२. द्वि० २, तृ० १ पं० १, कलकंद पहारा, द्वि० ४ खिखिंद अपारा, द्वि० ५, तृ० २ खँड खँड पहारा। १३. प्र० १, २, द्वि० ७, च० १ सौं। १४. प्र० १ बर, द्वि० १, च० १ घर। १५. द्वि० १, ५ बाजहिं, गाजहिं। १६. प्र० २, पं० १ चिक्करहिं। १७. द्वि० ६ आँकुस चमकि बीज अस बाजहिं, हस्ती चिक्करहि मेघ अस गाजहिं।

धरती सरग दुऔ दर[18] जूहहिं ऊपर जूह।
कोऊ टरै न टारै[19] दूऔ बज्र समूह॥

[५१७]

हस्तिन्ह सौं हस्ती हठि[1] गाजहिं[2]। जनु परवत परबत सौं बाजहिं[2]।
गरुअ गयंद न टारे टरहीं। टूटहिं दंत सुंड भुइँ[3] परहीं।
परवत आइ जो परहिं तराहीं। दर[4] महँ चाँपि[5] खेह मिलि जाहीं।
कोइ हस्ती असवारन्ह लेहीं। सुंड समेटि पाय तर देहीं।
कोइ असवार सिंघ होइ मारहिं। हनि मस्तक सिउँ सुंड उतारहिं।
गरब[6] गयंदन्ह गँगन पसीजा। रुहिर जो चुवै धरति सब भीजा।
कोइ मैमंत सँभारहिं नाहीं। तब जानहिं जब सिर गइ खाँही।

गँगन रुहिर[7] जस बरिसै धरती भीजि[8] बिलाइ[9]।
सिर धर टूटि बिलाहिं तस पानी पंक बिलाइ[10]॥[11]

[५१८]

अहुठौ बज्र जूझि जस सुना। तेहि तें अधिक होइ चौगुना।
बाजहिं खरग उठै दर[1] आगी। भुइँ जरि चहै सरग कहँ लागी।
चमकै बीज होइ उजियारा। जेहि सिर परै होइ दुइ फारा।

---

१८. प्र० १, २, पं० १ अमूझ भा द्वि० ७ दुऔ दर समुख। १९. द्वि० ७ न टारे बेहु।

[५१७] १. तृ० ३ उठि। २. द्वि० १ हठि हारा, तें हारा। ३. प्र० १ सुंड महि, द्वि० ४, ५ सुंड गिरि, द्वि० ३ धरनि महँ। ४. द्वि०१ मरि, द्वि० ६, तृ० ३ मैं। ५. तृ० १ दर बिनु होहिं। ६. प्र० १, २ गिरत, द्वि० ६ हरत, द्वि० ७ सिरन। ७. तृ० ३ गँगन धरति, द्वि० ६ सरग रुहिर। ८. प्र० १, २ बहि जो, द्वि० ३ बीज। ९. प्र० १, २, द्वि० ४, ५, ७, ३ च० १ मिलाइ, तृ० १ मिलाहिं। १०. प्र० १ पंक मिलाइ, द्वि० १ पंक समाहिं, द्वि० ४ न लाइ, द्वि० ५ बेगि मिलाइ। ११. पं० १ सो धर टूटि परहिं जो रुहिर पंक होइ जाइ।

५१८] १. द्वि० २ दहि, तृ० ३ डग, द्वि० ३ हर।

सैन मेघ अस दुहुँ दिसि गाजै। खरग जो बीच बीज अस[2] बाजै।[3]
बरिसै सेल आँसु होइ काँदो। जस बरिसै सावन औ भादौं[4]।
टूटहिं कुंत परहिं[5] तरवारी। औ गोला ओला जस भारी।
जूझे बीर लिखौं कहँ ताईं। लै अछरि कबिलास सिधाईं।

स्यामी काज जे जूझे[6] सोइ गए[7] मुख रात।
जो भागे सत छाँड़ि कै[8] मसि मुख चढ़ी[9]परात[10]॥

[५१६]

भा संग्राम न अस भा काऊ। लोहैं दुहुँ दिस भएउ अगाहू[1]।
कंध कबंध पूरि भुइँ परे। रुहिर सलिल होइ सायर भरे।
अनँद बियाह करहिं मँसुखाए। अब भख जरम जरम कहँ[2] पाए।
चौसँठि जोगिनि खप्पर पूरा। बिग[3] जँमुकन्ह[4] घर बाजहिं तूरा[5]।
गीध चील्ह सब माँड़ौ छावहिं। काग[6] कलोल करहिं औ गावहिं।
आजु साहि हठि अनी बियाही[7]। पाई भुगुति जैस जियँ चाही।
जेन्ह जस माँसू भखा परावा। तस तेन्ह कर लै औरन्ह खावा।

---

२. प्र० १, २, द्वि० ६ भिउँ, द्वि० ७ तस। ३. पं० १ मेघ जेउँ हस्ति हस्ति मिउँ गाजहिं, बीज खरग जस बीच न राखहिं। ४. प्र० १, २ पं० १ ओनै लाग जस सावन भादौं। ५. प्र० १ लव अभरहि परहिं, द्वि० २, ४, ५ लपटहिं कोपि परहिं, द्वि० ६ लै रहँ कोपि बरथ, तृ० ३ लव उथ कुंत परहिं, तृ० १ गहि गहि कुंट परहिं, तृ० २ लेखहि कुंत परहिं, द्वि० ३ लपटहिं कुंड पारि, च० १ टूटहिं कुंड परहिं। ६. द्वि० ७ जीत दप। ७. प्र० १ भा निन्हका, प्र० २ सो निन्ह कै, द्वि० ६ निन्हहिं। ८. द्वि० १ मुहमद जिन्ह सत छाड़ा। ९. प्र० २ लाग। १०. द्वि० ३ न रात।

[५१६] १. प्र० २, द्वि० ५, तृ० १, २ अघाऊ, द्वि० ३ अगाऊ। २. तृ० १ लहि। ३. प्र० १, २ पग। ४. तृ० ३ चमकहिं, द्वि० ७ पंचप, द्वि० ३, जमके। ५. द्वि० ७ बाजै घनतूरा। ६. प्र० १ कंवल, द्वि० ७ केलि। ७. प्र० १, २ आपु साहि हठि आइ बिआहीं।

काहूँ साथ[8] न तनु[9]गा[10] सकति मुएँ पै[11] पोखि।
ओछ पूर तब जानब[12] जब[13]भरि[14]आउब[15]जोखि[16]॥

[५२०]

चंद न टरै सूर सौं रोपा[1]। दोसर छत्र सौंहँ कै कोपा[1]।
सुना साहि अस भएउ समूहा। पेले सब हस्तिन्ह के जूहा।
आजु चंद तोहि करौं निपातू। रहै न जग महँ दोसर छातू।
सहस करौं होइ किरिन पसारा। छपि गा चाँद जहाँ लगि[2] तारा।
दर लोहैं दरपन भा आवा। घट घट जानहुँ भानु[3] देखावा।
वहु किरोध कुंताहल[4] धावै। अगिनि पहार जरत जनु आवै।
खरग बीज जस[5] तुरुक उठाएँ[6]। ओड़ न चंद कंवल कर पाएँ।

चकमक अनी[7] देखि कै धाइ[8] दिस्टि तसि[9] लागि।
छुई होइ जौं लोहैं रई माँझ उठ आगि[10]॥

[५२१]

सूरज देखि चाँद मन लाजा। विगसत बदन कुमुद भा राजा।
चंद बड़ाई[1] भलेहँ निसि पाई। दिन दिनियर सौं कौनु बड़ाई।

---

८. च० १ हाथ। ९. द्वि० ५ तौ। १०. तृ० ३, च० १ न तिनुवा (उर्दू मूल), प० १ चलै वा। ११. द्वि० ४, ५ सत्र। १२. द्वि० १ तोपै मकुन छोह जिअ। १३. समस्त प्रतियों में जौ (हिंदी मूल)। १४. प्र० २ जौ फिरि, द्वि० ५ जौ नहिं। १५. द्वि० ४, ५ आवत। १६. द्वि० ६ आवत चोख, तृ० १ चोखै चोख।

[५२०] १. प्र० १, द्वि० ३, ४, ५, ६, ७, तृ० २, च० १ थोपा, रोपा। २. प्र० १, २, प० १ छपा सब। ३. प्र० १, द्वि० २ चाँद। ४. द्वि० ५ कटक हल। ५. द्वि० ४, ५ सर। ६. तृ० ३ उठानी। आनी चंद कँवल के पानी। तृ० २ उठाएँ, ओड़ न चंद कठिन कर धाएँ। ७. तृ० २, ५ जगमग अनी (उर्दू मूल), द्वि० ६, ७ चमकत अनी, द्वि० ३ जगमग न सत्र। ८. प्र० १, २ चमकि, तृ० २ अही। ९. द्वि० ४, ५ तेहि। १० प्र० १, २ रई माँझ जल आगि. द्वि० ४ माँझ आव तेहि लागि।

[५२१] प्र० १, २, द्वि० ७ बड जौ, तृ० ३ बड कै (उर्दू मूल), द्वि० ४, ५, ६, तृ० २ आव, तृ० १ बहव, द्वि० १, च० १, प० १ बढाव।

अहे जो नखत चंद सँग तपे। सूर की दिस्टि गँगन महँ छपे।
कै चिंता[2] राजा मन बूझा। जेहि सों सरग[3] न धरती[4] जूझा।
गढ़पति उतरि लरै नहिं[5] धाए। हाथ परें गढ़ हाथ पराएँ[6]।
गढ़पति[7] इंद्र गँगन गढ़ राजा। दिवस न निसर रैनि को राजा।
चंद रैनि रह नखतन्ह माँझा। सुरुज न सौंह[8] होइ चह[9]साँझा[10]।

देखा चंद भोर[11] भा सूरुज के बड़ भाग।
चाँद फिरा भा गढ़पति सुरुज गँगन गढ़[12] लाग॥

[५२२]

कटक असूझ[1] अलावल साही। आवत कोइ[2] न सँभारै ताही।
उदधि समुँद जेउँ लहरैं देखें[4]। नैन देखि[3] मुँह जाहिं न लेखें[4]।
केत बजावत उतरे घाटी। केत बजाइ गए मिलि माँटी।
केतन्ह निति हि देइ[5] नव साजा[6]। कबहुँ न साज घटै तस राजा।
लाख जाहिं आवहिं[7] दुइ लाखा। फरहिं झरहिं उपनहिं नौ साखा।
जो आवै गढ़ लागै सोई। थिर होइ रहै न पावै कोई।
उमरा मीर अहे जहँ ताईं। सबहूँ बाँटि अलंगै पाईं।

लागि[8] कटक चारिहुँ दिसि गढ़ सो परा अगिडाहु[9]।
सुरुज गहन भा चाँदहि चाँद भएउ जस राहु॥

---

२. प्र० १, २ गिझान। ३. द्वि० १ गगन माथ। ४. प्र० १ धरति सब। ५. द्वि० १ आइ जौ। ६. प्र० १ न आई। ७. द्वि० १ औ पुनि। ८. प्र० १, २, पं० १= रुज सौंहैं। ९. तृ० १ चह। १०. द्वि० ६ साथा। ११. द्वि० १ भरम, तृ० २ दिवस। १२. द्वि० ७ गगनहि।

[५२२] १. द्वि० ३ कटक आव, च० १ आवै कटक। २. प० १ गरत। ३. द्वि० १ अधिक। ४. तृ० ३ देखीं, मुहँ खाहिं न लेखी (उर्दू मूल), तृ० १ देखे, मुख जाहिं परेखे। ५. प्र० १, २ अवर दिए, द्वि० १ छत्र दिए, द्वि० ६, पं० १ अवर दीन्ह। ६. प्र० २ लव बाजा, द्वि० ७ तृ० १ नव बाजा। ७. तृ० ३ औनवहिं। ८. तृ० ३ लाख। ९. प्र० १, पं० १ खँड खँड भा आगि डाहु, प्र० २ खँड खँड भा अवगाहु, तृ० १ आर धउर धन काहु।

[५२३]

अँथवा देवस सुरुज भा[1] बासाँ। परी रैनि ससि उवा अकासाँ।
चाँद छत्र दै बैठेउ आई। चहुँ दिसि नखत दीन्ह छिटकाई।
नखत अकासहुँ चढ़े दिपाहीं। टूटहिं लूक परहिं न बुझाहीं।
परहिं सिला[2] जस परै बजागी। पहनहि पाहन बाजि उठ आगी[3]।
गोला परहिं कोल्हु ढुरुकावहिं[4]। चून करत चारिहुँ दिसि आवहिं[4]।
अवनि अँगार[5] दिस्टि[6] झरि लाई। ओला टपकै परै न बुझाई[7]।
तुरुक न मुँह फेरहिं गढ़[8] लागें[9]। एक मरें दोसर होइ आगें[9]।

परहिं बान राजा कें[10] मुख[11] न सकै कोइ काढ़ि।
अनी[12] साहि कै सब निसि रही भोर लहि[13] ठाढ़ि[14]॥

[५२४]

भएउ बिहान[1] भान पुनि चढ़ा। सहसहुँ करा जैस बिधि गढ़ा।
भा ढोवा गढ़ लीन्ह[2] गरेरी[3]। कोपा कटक लाग चहुँ फेरी।
बान करोरि एक मुख छूटहिं। बाजहिं जहाँ फोंक लगि फूटहिं।
नखत गँगन जस देखिअ घने। तस गढ़ फाटहिं[4] बानन्ह हने।

---

[५२३] १. द्वि० १ भएउ जो, तृ० १ अँथइ भा। २. तृ० ३ परै सलिल। ३. प्र० १ उठ दर आगी। ४. प्र० २ ढहराहीं, आहीं। ५. प्र० २ बरतै अकरा, तृ० ३ ओनै अकास, द्वि० ४, ५ ओनई घटा, द्वि० ७ परलै काल। ६. प्र० १, २ दिस्टि, द्वि० २ सिस्टि, तृ० २ परट (उर्दू मूल), द्वि० ४,५ बरसि, द्वि० ६ नरट, द्वि० ७, ३ मिरिट, तृ० २ मेघ। ७. तृ० १ टुपक परात चढ़ तहँ इथाई। ८. च० १ रन। ९. द्वि० ७ गढ़ लागे मुख फेरहिं, दूसर होर भीरहिं। १०. द्वि० २ च० १ राजा के सब निसि, द्वि० ६ राजा के चहूँ दिसि। ११. द्वि० २ सिर, द्वि० ५ सनमुख। १२. तृ० ३ औनि, तृ० २ सेनि, च० १ रैनि। १३. द्वि० १ तक। १४. प्र० १, २ रैनि साहि के रोपे रही रैनि। ब ठाढ़ि, द्वि० ४ औनि साहि के सब तस रहो भोर लहि ठाढ़ि, पं० १ रतनसेनि के चूके रही रैनि सब ठाढ़ि।

[५२४] १. तृ० ३ भयो बिहान, द्वि० ४ भएउ प्रभान। २. द्वि० १, तृ० ३ लागि। ३. द्वि० १ घेरी। ४. तृ० ३ भाँतिन्ह (उर्दू मूल)।

जानहुँ[५] मेघि माहि कै राता। गढ़ भा गरुर फुलाएँ पाँखा।
ओरँगा फेरि कठिन है जाता। सौ पै लहै होइ मुख राता।
पीठि देहिं नहिं बानन्हि[६] लागे। चाँपत जाहिं पगहिं पग आगे[७]।

चारि पहर दिन बीता[८] गढ़ न टूट तस बाँक।
गरुअ होत पै[९] आवै दिन दिन टाँकहि टाँक।

[५२५]

छेंका गढ़ जोरा[१] अस[२] कीन्हा। खनिया मगर[३] सुरँग तेइँ[४] दीन्हा।
गरगज बाँधि कमानैं धरीं। चलहिं एक मुख दारू भरीं[५]।
हबसी रूमी औ जो फिरंगी। बड़ बड़ गुनी औ तिन्ह कै संगी।
जिन्ह के गोट[६] जाहिं उपराहीं[७]। जेहि ताकहि तेहि चूकहिं नाहीं।
अस्ट धातु के गोला छूटहिं। गिरि पहार पब्बै सब[८] फूटहिं[९]।
एक बार सब छूटहिं गोला। गरजै गँगन धरति सब डोला।

---

५. द्वि० ४, ५ हान।   ६. प्र० १, २, पं० १ बानन्ह।   ७. प्र० १, २, पं० १ पैग पैग पारहिं धुरें आगे, तृ० ३ एक मरै दोसर होइ आगें (५२३. ७), तृ० १ चाँपत जाहि नपत्त सँग आगें।   ८. प्र० १, २ चारि पहर गढ़ जूझ भा, द्वि० २, ४, ५, ७, पं० १ चारि पहर दिन जूझ भा, तृ० १ चारिउ पहर जूझि कै, द्वि० ३ चारि पहर रन जूझ भा।   ९. तृ० १ गढ़।

५२५] १. द्वि० १, ६, च० २, पं० १ पूरा।   २. प्र० १ हठि।   ३. द्वि० १ मुँगेर, द्वि० २, ५, तृ० २ मगर, द्वि० ३ मग।   ४. द्वि० ५, च० १ पं० १ तहँ।   ५. प्र० १, २, द्वि० ५, च० २, पं० १ बजर आगि मुख दारू भरी, द्वि० १, तृ० १ गाजहिं अस्ट धातु की भट्टी, द्वि० ७ गाजहि अस्ट धातु की भरी।   ६. द्वि० १ उड़हिं गोला, द्वि० ५ जिन्ह के कोट।   ७. प्र० १, २, पं० १ गोट कोट पर जाहीं, द्वि० १ गोला ऊपर जाहीं, द्वि० ४ कोत जाहिं उपराहीं, तृ० २ सो पै आपु समाहीं।   ८. प्र० १ परबत सर, प्र० २ लागत तेहि, द्वि० १ पानी सम, द्वि० ४, ५, ६, पं० १ चून होइ, तृ० १ पब्बै अस, द्वि० २, ३ पब्बै अनु, तृ० ३ परै सर, च० १ पट्टी सब।   ९. तृ० १, द्वि० ३ टूटहिं।

फूटै कोट फूट जस सीसा। ओदरहिं[10] बुरुज परहिं कौसीसा[11]।

लंका रावट जसि भई डाह परा गढ सोइ।
रावन लिखा जो जरै कहँ किमि अजरावर[12] होइ॥

[५२६]

राजा केरि लागि रहै[1] ढोई[2]। फूटै जहाँ सँवारहिं सोई[3]।
बाँके पर सुठि बाँक करेई। रातिहि कोट चित्र कै लेई।
गाजे गँगन चढ़े जस मेघा। बरिसहिं बज्र सिला[3] को थेघा।
सौ सौ मन के बरिसहिं गोला। बरिसहिं तुरुक तीर जस ओला।
जानहुँ परी सरग हुति गाजा। फाटै धरति आइ जहँ बाजा।
गरगज चूर चूर होइ परहीं। हस्ति घोर मानुस संघरहीं।
सबहिं कहा अब[4] परलौ आवा। धरती सरग जूझ दुहुँ[5] लावा।

अहुठौ बज्र जुरे सनमुख होइ[6] एक दिन कोई[7] लागि।
जगत जरै[8] चारिहुँ दिसि को रे बुझावै आगि॥

[५२७]

तबहूँ राजा हिएँ न हारा। राज[1] पँवरि पर रचा अखारा[2]।
सौंहँ साहि जहँ उतरा आछा। ऊपर[3] नाच अखारा काछा।[4]

---

१०. द्वि० ५ ओडहिं, तृ० १ दौरहिं। ११. द्वि० ५ जाइ सन पीसा, द्वि० ३ परहिं गिरि सीसा। १२. प्र० १ किमि नजरावट तृ० ३ किमि अचिरावर, द्वि० १ सो किमि ऊजर, तृ० १ किमि करि अजरा, पं० १ किमि करि अजर सो।

[५२६] १. द्वि० ४, ५ गढ, तृ० ३ रहि। २. प्र० धेई, तेइ, तृ० १ थवई, सवई, पं० १ थोई, तोई। ३. द्वि० ४, ५ सलिल। ४. प्र० १, २ काहू कहँ। ५. प्र० १, द्वि० १ जनु, द्वि० ४, ५ नस। ६. प्र० १, पं० १ जुरे जस, प्र० २ जुरे सर, द्वि० ३ जुरे सनमुख। ७. प्र० २, द्वि० ७, तृ० ३ दगवै (उर्दू मूल)। ८. तृ० ३ जुरे (उर्दू मूल), द्वि० ६ जुवै। ९. द्वि० ३, पं० १ तस सद करर समूह कए कैसेहुँ बुझै न आगि।

[५२७] १. द्वि० २ पाँच। २. तृ० ३ पँवारा। ३. द्वि० ३ उतरा।

जंत्र पखाउझ आउझ[५] बाजा। सुरमंडल रबाब[६] भल साजा।
बीन पिनाक कुमाइच कहे[८]। बाजि अँबिरती अति[७] गहगहे[८]।
चंग उपंग नाग सुर[९] तूरा[१०]। महुवरि बाज बंसि भल पूरा[१०]।
हुरुक बाज डफ बाज गँभीरा। औ तेहि गोहन[११] झाँझ मँजीरा।
तंत वितंत सुभर[१२] घनतारा[१३]। बाजहिं[१४] सबद होइ झनकारा।

जस[१५] सिंगार मन मोहन[१६] पातर नाँचहिं पाँच।
पातसाहि गढ़ छेंका राजा भूला नाँच॥

[५२८]

बीजानगर केर[१] सब[२] गुनी। करहिं[३] अलाप बुद्धि[४] चौगुनी।
प्रथम राग भैरौ तेन्ह कीन्हा। दोसरें माल कौस पुनि लीन्हा।
पुनि हिंडोल[५] राग विन्ह गाए। चौथें मेघ मलार सोहाए[६]।
पुनि उन्ह[७] सिरी राग भल किया। दीपक कीन्ह[८] उठा बरि दिया।

---

४. प्र० १, २, द्वि० ४, ५, ६, तृ० ३, च० १, पं० १ सौंह साहि कै बैठक जहाँ, सनमुख नाच करावैं तहाँ। द्वि० ७ सौंह साहि कै मनमुख देखा, सनमुख होइ अखार बिसेखा। द्वि० १ तृ० १ सौंहैं साहि केरि जहँ दीठी, पातर नारि चूर दै पीठी। ५. प्र० १, २ औ जत, द्वि० ४, च० १ आव जो। ६. प्र० १ बाज। ७. तृ० ३ बाजे अंमित सो। ८. द्वि० ४, ५, च० १ कही गहगही (कहे, गहगहे)। ९. प्र० १, २ एक सुर, द्वि० १ नाफ सुर, द्वि० ३, ४, ५, ६, तृ० २, प० १ नाद सुर, च० १ ताक सुर, द्वि० ७ नायक सर, तृ० ३ नागसर (उर्दू मूल)। १०. द्वि० १, ४, ५, ६, तृ० २, ३, पं० १ पूरा, तूरा। ११. प्र० २, २, द्वि० ४, ५, पं० १ बाजहि भल। १२. प्र० १, द्वि० ७ सिखर, तृ० ३ सुधिर। १३. तृ० ३ करतारा। १४. प्र० १, २, द्वि० ७ पाँचो। १५. द्वि० ३, ४, ५ जग। १६. तृ० ३ जगमोहन।

[५२८] १. द्वि० ६ गुने। २. प्र० १ बहु, प्र० २ दस, द्वि० ३, ६, पं० १ बस। ३. द्वि० ६ तस। ४. द्वि० १ चारि मस, द्वि० २ बिधा, द्वि० ३, ६, पं० १ तिन्ह तें। ५. द्वि० १ तौ दुमार। ६. प्र० १, २, द्वि० ३, तृ० २, पं० १ मेघ मलार मेघ बरसाए। ७. द्वि० ५, पं० १ पचएँ। ८. प्र० १ दीपक लीन्ह, द्वि० ४-५ छठएँ दीपक।

छवउ राग गाएनि भल गुनी। औ गाएनि छत्तीस[9] रागिनी।[10]
ऊपर भईं सो पातर नाँचहिं। तर भै तुरुक कमानैं[11] खाँचहिं।[12]
सरस कंठ भल राग सुनावहिं। सबद देहिं मानहुँ सर लागहिं।[13]

सुनि सुनि सीस धुनहिं सब[14] कर मलि मलि पछिताहिं[15]।
कब हम हाथ चढ़हिं ये पातरि नैनन्ह के दुख जाहिं[16]॥*

[५२६]

पतुरिनि[1] नाँचै दिहैं जो पीठी[2]। परिगै सौहँ[3] साहि कै डीठी।[4]
देखत साहि सिंघासन[5] गूंजा। कब लगि मिरिग चंद रथ भूँजा[6]।
छाँडहु थान जाहिं उपराहीं। गरब फेर सिर सदा तराहीं।

---

९. द्वि० १ बतिसो, द्वि० २, तृ० १ तीसा। १०. प्र० १, २, द्वि० ७- छवो राग ये प्रथमहि गाए, पुनि तीसौ भारजा सुनाए। पं० १ गढ़ पर पंद नाच भलि होई, माठा धोदा (दोहा?) झुमरा सोई। ११. प्र० १, २ धनुक कर, द्वि० ७ धनुक सर। १२. पं० १ होइ बरबार बंद औ देसी, दिस्टि न कटक काह परदेसी। १३. प्र० १, २ (यथा-२) छवौ राग तस नाचहिं तारा, सगरी कटक होइ झनकारा। द्वि० ४, ५, तृ० ३, च० १ कादा माठ दोहा झूमरा, तर भै देखहिं मीर औ उमरा। द्वि० ६, ७ (यथा. २) सरस कठ सारंग सुनावहिं, तुरुक सुनहिं जानहुं सर लागहिं। १४. प्र० १, २ धनुक बान तहँ पहुँचहिं नारी, द्वि० २, ३ सुनि सुनि तुरुक- धुनहि सिर, द्वि० ७ धनुक बान तहँ पहुँचहिं। १५. द्वि० ४ कब हम हाथ पर चढ़हिं ई के तब यह दुक्ख जाहिं, द्वि० ५ कब हम हाथ चढ़हिं आइके- तब नैनन्ह दुख जाहिं।

१६. च० १, पं० १ पाछे नाच होइ भल नाचन होइ भिनुसार।
बाजे तुरुक तरानर (तुरुकाओ तुर्रा-पं० १) धन्द्देर जस बनिजार॥

* द्वि० १ में इसके अनंतर सात अतिरिक्त छंद हैं, जिनमें से एक तृ० १ के अतिरिक्त शेष सभी प्रतियों में भी है।

[५२९] १. द्वि० १ बैरिन, द्वि० ३ पैरिन। २. प्र० १, २, फिर गै नाचि दई तेहि पीठी, द्वि० ७ बरै तार साही सों पीठी, पं० १ पतुरिनि नाच दीन्ह तुई पीठी। ३. द्वि० १ बैठे, तृ० १ रवहिं। ४. प्र० १, २, द्वि० ६, पं० २ जहँवाँ सोइ साहि सौं पीठी, द्वि० ७ दहनी के राजा सौं पीठी। ५. द्वि० ७ सिंघ कस। ६. प्र० १, २, पं० १ साहि सिंघासन ऊपर गूँजा, देखा चाँद सरग भा दूजा।

बोलत थान लाख भा ऊँचा। कोइ सो कोट कोइ पँवरि[७] पहूँचा।
मलिक जहाँगिर कनउज[८] राजा। ओहि क थान पातरि कहँ बाजा[९]।
बाजा थान जंघ जस नाँचा[१०]। जिउ गा सरग परा भुइँ साँचा।[११]
उदसा नाँच नचनिया मारा। रहसे तुरुक बाजि[१२] गए तारा।[१३]

जो गढ़ साजा लाख दस कोटि[१४] सँवारहि[१५] कोट।
पातसाहि जब चाहै बचहि न कौनिहु ओट[१६]॥

[५३०]

राजैं पँवरि अकास चलाई[१]। परा बाँध[२] चहुँ फेर अलाई[३]।
सेतबंध जस राघौ बाँधा। परा फेरु भुइँ भारु न काँधा।
हनिवँत होइ सब लाग गुहारा। आवहिं[४] चहुँ दिसि फेर[५] पहारा।[६]
सेत फटिक सब लागै गढ़ा[७]। बाँध उठाइ चहूँ[८] गढ़ मढ़ा[९]।[१०]
खँड ऊपर खँड होहिं पटाऊ। चित्र अनेग अनेग कटाऊ।[११]

---

७. प्र० १ मरग। ८. द्वि० १ जहाँगीर कनउज था राजा। ९. तृ० ३ लाजा, द्वि० ४ लागा। १०. प्र० १, २ हाजन थान उदमि गा नाँचा, द्वि० ७ तार चूरि जस पातरि नाँचा। ११. तृ० १ पातर नाचि तान जस तूरा, लाग बानि हिरदै महँ पूरा। १२. तृ० १ नाचि। १३. प्र० १, २ (यथा- २), द्वि० ६, पं० १ तदहिं ताल दै बैठी चूरी, देखा साहि भई रिस पूरी। १४. द्वि० १ बहुत। १५. प्र० १, २ उठावहिं। १६. प्र० १, च० १ छपहिं न कौनिउ ओट, द्वि० १ बाँच न कौनिउ ओट, द्वि० २ बचहिं न एकौ ओट, तृ० ३ रहै न एकौ ओट, तृ० २ छपहिं न एकौ ओट, पं० १ रहै न कौनिउ ओट।

[५३०] १. द्वि० १ लवाई। २. द्वि० ७ फाँद। ३. प्र० १ बँधाई, प्र० २ न आई, द्वि० ४, ५ ललाई। ४. प्र० १, पं० १ ढोइ जो, प्र० २ ढोइ ढोइ। ५. प्र० २, पं० १ कीन्ह, द्वि० २, ३, ४, ५ ६, तृ० २, च० १ चले। ६. द्वि० १, तृ० १ चले पखान चहुँ दिसि आवहिं, गढ़ जस कारे कारे बैनावहि। ७. प्र० १ लोहै गढ़े। ८. प्र० १, २, पं० १ बाँध चाहहि। ९. प्र० २ चढ़ा। १०. द्वि० १, तृ० १ खंड पर खंड होत तस जाहीं, जानहुँ चढ़ा गगन उपराहीं। ११. प्र० १ खंड खंड पर ऊपर भाऊ, चित्र अनेग अनेग कटाऊ; प्र० २, प० १ खंड पर खंड भाउ पर भाऊ, चित्र अनेक अनेक कटाऊ; तृ० २ खंड पर खंड जो खंड सँवारे, धनुक बान तेहि ऊपर धारे; द्वि० १ में पंक्ति छूटी हुई है।

सीढ़ी होति जाहिं बहु भाँती। जहाँ चढ़हिं हस्तिन्ह के पाँती[12]।
भा गरगज[13] अस कहत न आवा[14]। जनहुँ[15] उठाइ गँगन कहँ[16] लावा।[17]

राहु लाग जस चाँदहि गढ़हि लाग तस बाँध।
सब दर[18] लीलि ठाद भा[19] रहा जाइ गढ़[20] काँध॥

[५३१]

राजसभा सब मतैं बईठी। देखि न जाइ मंदि[1] भै डीठी।
उठा बाँध तस सब गढ़ बाँधा। कीजै बेगि भार[2] जस[3] काँधा।
उपजै आगि आगि जौं[4] बोई। अब मत किएँ आन नहिं होई।
भा तेवहार जो चाँचरि जोरी। खेलि फागु अब लाइअ[5] होरी।
समदहु फागु मेलि सिर धूरी। कीन्ह जो साका[6] चाहिअ पूरी[7]।
चंदन अगर मलैगिरि काढ़ा। घर घर कीन्ह सरा रचि ठाढ़ा।
जौहर कहँ साजा रनिवासू। जेहि सत हिएँ कहाँ तेहि आँसू।

पुरुखन्ह सरग सँभारे[8] चंदन खेवरे[9] देह।
मेहरिन्ह सेंदुर मेला[10] चहहिं भई जरि[11] खेह॥*

---

१२. प्र० १ साखा सीढ़ी मिना उँचाई, भाँति भाँति पुनि होइ चढ़ाई, प्र० २, पं० १ लाखन्ह सीढ़िन्ह (साखा सरहन्ह-प्र० २ उर्दू मूल) सिला गढ़ाऊ, भाँति भाँति पुनि होइ चढ़ाऊ। १३. तृ० ३ गढ़गर। १४. प्र० २, ३, पं० १ गढ़ मढ़ि कै तस बाँध उठावा। १५. द्वि० ५ चहहिं। १६. द्वि० ४, ५ गँगन लै, तृ० ३, च० १, पं० १ सरग लै। १७. तृ० १ चित्तर सारी होहिं अनेका, लिखहिं सोकल मेर कौ देका; द्वि० १ चित्रसारि सब होहिं अनेका, देखिअ मेरु कां मोकल देका। १८. द्वि० ४,५, च० १ धरि। १९. प्र० १ मरव अंग री लीलिगा प्र० २ सरब अग गा लीलि रह। २०. प्र० २ रहा जाइ कै, द्वि० २ रहा जाइ लै, द्वि० ३ जानै गए के।

[५३१] १. प्र० १ साग, प्र० २, द्वि० १ मँदिल। २. प्र० १, पं० १ कीजै भार सोई। ३. प्र० २ अब। ४. द्वि० ४, ५ जस। ५. प्र० १, २ दाहब। ६. द्वि० ६, तृ० २, ३ जो अब साधा। ७. च० १ खेलि फाग अब लाइअ धूरी। ८. द्वि० १ सँभारे औ। ९. प्र० २, तृ० ३ च० १ खेवरे (उर्दू मूल: तुलना० ५१२.८)। १०. द्वि० ६ पूरा, द्वि० ७ मैलिआ, तृ० २ सारा। ११. द्वि० १ होइ भस, द्वि० ३ होइ जरि।
*पिछले छंद की अंतिम छः तथा इस छंद की प्रथम तीन—पूरे एक छंद की पंक्तियाँ द्वि० ७ में नहीं हैं; किंतु ये प्रसंग में अनिवार्य हैं, यह प्रकट है।

[५३२]

आठ[1] बरिस गढ़ छेंका अहा[2]। धनि सुलतान कि राजा महा[3]।
आइ साहि अँबराउ जो लाए। फरे झरे पै गढ़ नहिं पाए[4]।[5]
हुठि चूरौं[6] तौ जौहर होई। पदुमिनि पाव हिऍं मति[7] सोई।
एहि बिधि ढीलि दीन्ह तब ताँई। दीली की अरदासैं आईं।
पछिउँ हरेव[8] दीन्ह जो पीठी। सो अब चढा[9] सौंहँ कै डीठी।
जिन्ह भुईं माँथ गँगन तिन्ह[10] लागा। थाने उठे आइ सब भागा।
उहाँ[11] साह चितउर गढ[12] छावा। इहाँ देस सब[13] होइ परावा।

जेहि जेहि पंथ न तिनु परत बाढ़े बैरि बबूर।
निसि ॲंधियारि बिहाइ[14] तब बेगि उठे[15] जब सूर॥

[५३३]

सुना साहि अरदासि जो पढ़ी। चिंता आनि आन कछु[1] चढ़ी।
तब अगुमन मन चिंतै[2] कोई। जो आपन चिंता कछु होई।
मन झूठा जिउ हाथ हराएँ। चिंता एक भए दुइ ठाँए।
गढ़ सौं अरुझि जाइ तब छूटा। होइ मेराउ कि सो गढ़ टूटा।
पाहन कर रिपु[3] पाहन हीरा। बेधौं रतन पान दै बीरा।
सरजा सेंती कहा यह भेऊ। पलटि जाहि अब[4] मानै सेऊ[5]।
कहु तोसौं न पदुमिनी लेऊँ। चूरा कीन्ह छाँड़ि गढ़ देऊँ।

---

[५३२] १. द्वि० १ इगारह। २. तृ० २, द्वि० ३, च० १ रहा। ३. द्वि० ७ सहा। ४. प्र० १ हाथ न आए। ५. पं० १ जबहिं पेम गढ़ घालि सकोचा, अगुमन सोच सोच साहि मन सोचा। ६. प्र० २ तूरौं, द्वि० ५ जूरै। ७. प्र० १, २, तृ० १, पं० १ पदुमिनि हाथ आव (चढ़ै—तृ० १, पं० १) मत, द्वि० १ पदुमिनि पार हियें महँ, द्वि० ७ पदुमिनि आर हीअ महँ। ८. तृ० १ रहे। ९. प्र० १ चला। १०. द्वि० ४, ५ सिर। ११. पं० १ आपु। १२. प्र० १, २ होइ। १३. द्वि० ४, ५ अब। १४. द्वि० ४, ५, च० १ जाइ, द्वि० ३ होइ। १५. प्र० १, २, च० १ चढ़ै।

[५३३] १. प्र० १, द्वि० २, ६, तृ० १, पं० १ जिअँ, प्र० २ जो, द्वि० ४, ५, च० १ चित। २. प्र० १, द्वि० ७ अगुमन चितन, द्वि० १, तृ० १, २, च० १, पं० १ आगू मन चिंतै, ३ आगुमन चिंतै का। ३. द्वि० ४, ५ करब। ४. द्वि० १ औं। ५. द्वि० १, तृ० १, २ देऊ।

आपन देस खाहि भा निश्चल[६] औरु पँवेरी लेहि।
समदन समुँद जो कीन्ह तोहि[७] ते पाँचौं नग देहि ॥*

[५३४]

सरजा पलटि सिंघ चढ़ि गाजा। अग्याँ[१] जाइ कही[२] जहँ राजा।
अबहूँ हिएँ समुझु रे राजा। पातसाहि सौं जूझ न छाजा।
जाकरि धरी[३] पिरिथिमी सोई। चहै त मारै[४] औ जिउ देई[५]।
पींजर महँ तूँ कीन्ह परेवा। गढ़पति सो बाँचै कै सेवा।
जब[६] लगि जीभि अहै मुख तोरें। पँवरि[७] उघेलु बिनौ[८] कर जोरें।
पुनि जौं जीभ पकरि जिउ लेई। को खोलै को बोलै देई[९]।
आगें जस हमीर मत मंता। जौं तस करसि तोर भावंता[१०]।

देखु काल्हि गढ़ टूटिहि राज ओही कर होइ।
करु सेवा सिर नाइ कै घरन घालु बुधि खोइ ॥*

[५३५]

सरजा जस हमीर मन थाका[१]। और निबाहेसि आपन साका।
ओहि अस हौं सकबंधी नाहीं। हौं सो भोज बिक्रम उपराहीं[२]।

---

६. प्र० २, तृ० १, पं० १ साहि सत्र, द्वि० १ खाहि तैं। ७. प्र० १, २ द्वि० ७, पं० १ जो दीन्ह तोहि, द्वि० १ नग किए, द्वि० ७ जो दीन्हा।
* प्र० १, २ में इसके अनंतर दो अतिरिक्त छंद हैं।

[५३४] १. द्वि० १ अब। २. प्र० १, २ लै फ़रमान चला। ३. प्र० १, २ गँगन, तृ० २, ३ करै। ४. द्वि० १ आइ जो चढ़ा मारि। ५. प्र० १, २ दुख देई, द्वि० १ पै लेई, द्वि० ४, ५, तृ० १ जिउलेई। ६. प्र० २ तथा अन्य कुछ प्रतियों में 'जौं' (हिंदी मूल)। ७. द्वि० ५ सँवरि। ८. प्र० १, २ द्वि० ३, ७, पं० १ सेउ तृ० १ बँदि। ९. प्र० १, २ कोलहि कहाँ बोलि जिउ देई, द्वि० १ छाड़ै नहि बोलै जिउ देई। १०. प्र० १, द्वि० ७ भौ अंता, प्र० २ भल अंत, द्वि० ६ भलवंता।
* द्वि० १, तृ० २ इसके अनंतर एक अतिरिक्त छंद है।

[५३५] १. प्र० २, द्वि० ४, ५, तृ० ३ ताका। २. प्र० १, २, पं० १ हौं ओहि ते आगर सकबंधी, बिक्रम सरिस सोज बर बंधी (सिरि कंधी —प्र० २ पं० १)।

बरिस माठि[3] तहि अन्न[4] न खाँगा। पानि पहार चुवै बिनु माँगा।
तेह ऊपर जौं पै गढ़ टूटा। सत सकबंधी केर न छूटा।
सोरह लाख[5] कुँवर हहिं मोरे। परहिं पतिंग जस दीपक अँजोरे।
तेहि[6] दिन चाँचरि चाहौं जोरी। समदौं फागु लाइ कै[7] होरी।
जो दै गिरिहिनि रावत जीऊ। सो कस आहि निपुंसिक[8] पीऊ।[9]

अब हौं जौहर साजि कै कीन्ह चहौं उजियार।
फागु गएँ होरी बुझें[10] कोउ समेंटहु छार॥

[५३६]

अनु राजा[1] सो जरै निआना[2]। पातसाहि कै सेव न[3] माना।
बहुतन्ह अस गढ़ कीन्ह सजाना। अंत भए लंका के रवना।
जेहि दिन ओइँ छेंकी गढ़ घाटी। भएउ अन्न[4] तेहि दिन सब[5] माँटी।
तूँ जानहि जल[6] चुवै पहारू। सो रोवै मन सँवरि सँधारू।
सोतहि सोत ओस गढ़ रोवा। कस होइहि जौं होइहि ढोवा[7]।
सँवरि पहार सो ढारै आँसू[8]। पै तोहि सूझ न आपन नासू[9]।
आजु काल्हि चाहै गढ़ टूटा। अबहुँ मानु जौं चाहसि छूटा।

हहिं जो पाँच नग तो सिउँ[1] लै पाँचौं करु भेंट।
मकु सो एक गुन मानै सब ओगुन धरि मेंट॥

---

३. द्वि० २, ४, ५, पं० १ सात। ४. प्र० १ माँठ, प्र० २ संच। ५. द्वि० १ महस। ६. द्वि० ४, ५ नहिं। ७. तृ० ३ मेलि मि. द्वि० ४, ५ मेलि कै। ८. द्वि० ४, ५ नमोसक, तृ० ३ नब सक (उर्दू मूल), च० १ निपन सक। ९. प्र० १, २, पं० १ जौ एहि बीच हरै नहिं योई, देखु यानि धौं काकर होई। (मूल पाठ की पंक्ति इन तीनों प्रतियों में ५३७.५ के स्थान पर है) द्वि० १ (यथा.१) राजै ज्ञान कीन्ह बिचारी, तर सोसर जेहि दीन्ह सँवारी। १०. द्वि० ७ मिटें।

[५३६] १. प्र० १. २ सरजा। २. द्वि० ४ पयाना। ३. प्र० १, २ कै सेवा। ४. प्र० १, २, पं० १ सँचा होइ, तृ० ३ भयो आनि (उर्दू मूल), द्वि० ५ ोर अन्न, तृ० २ होरहि अन्न। ५. द्वि० ४, ५, तृ० १, २, च० १ ओही दिन। ६. तृ० ३ यह, द्वि० ७ सलिल। ७. प्र० १ विद्योरा। ८. प्र० २ दकारै माँटी, साँनी। ९. द्वि १, तृ० १ तोरें द्वि० २ सो पई।

[५३७]

अनु सरजा को मेंटै पारा। पातसाहि बड़ आहि हमारा।
औगुन मेंटि सकै पुनि सोई। और जो कीन्ह चहै सो होई॥
नग पाँचौं औ देउँ भँडारा। इसकंदर सौं बाँचै दारा।
जौं यह बचन तौ माँथें मोरें। सेवा करौं ठाढ़ कर जोरें।
पै बिनु सपत न अस[1] मन माना। सपत क बोल बचा परवाना।[2]
नाइत[3] माँझ भँवर हुति गीवाँ[4]। सरजैं कहा मंद यहु जीवाँ।
खंभ[5] जो गरुव लेहिं जग[6] भारू। ताकर बोल न टर पहारू।

सरजैं सपत कीन्ह छर[7] बैनन्हि मीठै[8] मीठ[9]।
राजा कर मन माना[10] मानी तुरित[11] बसीठि॥*

[५३८]

हंस कनक[1] पिंजर हुति आना। औ अंब्रित नग परस पखाना।
औ सोनहा सोनें की डांड़ी। मारदूर रूपे कीं काँड़ी[2]।
बसिठि दीन्ह[3] सरजा लै आए। पातसाहि पहँ आनि मिलाए।
ऐ जग सूर पुहुमि उजियारे। बिनती करहिं काग[4] मसि कारे[5]।
बड़ परताप तोर जग तपा। नवौ खंड तोहिं कोइ न छपा।

---

[५३७] १. द्वि० २, च० २ पै न सपथ होर। २. प्र० १, २, पं० १ जौं धरनी दै राखहि नीऊ, मो तौ आहि निबंसक पीऊ। (५३७.७) ३. तृ० ३ नाइन, द्वि० ७ राहत, द्वि० ३ तैं तेहि। ४. प्र० १ केंश। ५. द्वि० २ पुरुस। ६. प्र० १ कीन्हे जग भारू, द्वि० २ लिए सब भारू, तृ० २ लीन्ह सिर भारू। ७. प्र० १, २ जिउ। ८. प्र० १, २ बात कहौं सब, द्वि० ७ मुख बैनन्ह रस। ९. पं० १ नाहीं नैनन दाठ। १०. प्र० २ माना भोरे। ११. तृ० ३ माजे तुरित, द्वि० १ माना बेगि, द्वि० ७ सामत चूक।

* प्र० १, २ में इसके अनंतर चार अतिरिक्त छंद हैं।

[५३८] १. द्वि० १ हँसा लंक। २. प्र० १, च० १ गाड़ी, द्वि० ६ डाँडी, तृ० ३ गाडी। ३. प्र० १, २ राय बसीठ, द्वि० ७ औ बसीठ। ४. द्वि० ३ चाल। ५. द्वि० २ मन कारे, तृ० ३ मसिआरे।

कोह छोह दूनौ तोहि पाहाँ। मारसि धूप जियावसि छाहाँ।
जौं मन सुमन चाँद सौं[6] रूसा। गहन गरासा परा मँजूसा।

भोर होइ जौं लागै उठहिं रोर कै काग[7]।
मसि छूटै सब रैनि[8] कै कागा कौंय[9] अभाग॥

[५३९]

कै बिनती अग्याँ असि पाई। कागहु सैं आपुहि मसि लाई।
पहिलैं धनुक नवै जब लागे। काग न नए[1] देखि सर भागे।
अबहूँ तेहिं सर भौंहँ न होहीं। देखहिं धनुक चलहिं फिरि ओहीं[2]।
तिन्ह कागन्ह कै कौनु बसीठी। जो मुख फेरि चलहिं दै पीठी।
जौं ओहि सर सौं होत[3] संग्रामा। कत बग सेत होत ओइ स्यामा।
करहिं न आपन उज्जर केसा। फिरि फिरि कहहिं पराव सँदेसा।
काग नाग एइ दूनौ बाँके। अपने चलत स्याम भै आँके।

अब कैसेहुँ मसि जाइ न मेंटी[4] भे जो स्याम ओइ अंक।
सहस बार जौं धोवहु तबहुँ[5] गयंदहि पंक[6]॥

[५४०]

अब सेवाँ जौं[1] आइ जोहारे। अबहूँ देखौं सेत कि कारे।
कहहु जाइ जौं साँच न डरना। जहवाँ सरन नाहिं तहँ मरना।

---

६. प्र० १, द्वि० ४, ५, पं० १ जनम न चाद सूर सौं, द्वि० १ जो मन सँवरि चाँद सौं, द्वि० २ जनम न सँवरि चाँद सौं, तृ० १, च० १ जगन न सूर चाद मन। ७. प्र० १, २ उठहि दौरि कै काग, द्वि० ३ रो करहि सब काग। ८. द्वि० २ निसि। ९. द्वि० ७ वहा।

[५३९] १. प्र० १, २ टिरहिं, द्वि० ४ लिए, पं० २ नये। २. प्र० १, २ फिरि सोही, द्वि० ३ उपराहीं। ३. द्वि० ४ नर होहिं, द्वि० ५ सर मोउ। ४. प्र० १, २ अब न मोहिं मसि जाइहि। ५. द्वि० ४, ५, च० १ तौहु (हिंदी मूल)। ६. प्र० १ गयंद तजै नहिं पंक, द्वि० २ तबहूँ जाइ न पंक, द्वि० ४, ५, ६, च० १, पं० १ तौहु (हिंदी मूल) न मिटै कलंक।

[५४०] १. प्र० १, २ सेवक होइ।

काल्हि आव गढ़ ऊपर भानू। जौं रे[2] धनुक सौहँ हिय थानू[3]।
बसिठन्ह पान मया के पाए। लीन्ह पान राजा पहँ आए।
जस हम भेंट कीन्ह[4] गा कोहू[5]। सेवा महँ पिरीति औ छोहू।
काल्हि साहि गढ़ देखै आवा। सेवा करहु जैस मन[6] भावा।
गुन सौं चलै सो बोहित बोझा[7]। जहँवाँ धनुक बान तहँ सोझा।

भा आयसु राजा कर[8] बेगिहि करहु रसोइ।
तस सुसार रस[9] मेरवहु जेहि रे[10] प्रीति रस होइ॥

[५४१]

छागर मेंढा[1] बड़ औ छोटे। धरि धरि आने जहँ लगि मोटे।
हरिन रोझ लगुना बन बसे। चीतर गौन झाँख औ ससे।
तीतर बटई लवा न बाँचे। सारस[2] कूँज[3] पुछारि जो नाँचे।
धरे परेवा पंडुक हेरी। खीहा[4] गडुरू उसर[5] बगेरी।
हारिल चरज आइ बँदि परे। बन कुकुटी जल कुकुटी[6] धरे।
चकवा चकई केंव[7] पिदारे। नकटा लेदी[8] सोन[9] सिलारे।[10]
मोट बड़े[11] सब टोइ टोइ धरे। ऊबरे दुबरे खुरुक न[12] चरे।

कंठ परी जब छूरी रकत ढरा होइ आँसु।
कै[13] आपन तन पोखा[14] भा सो[15] परावा माँसु॥

---

२. द्वि० ४ जो दै, द्वि० ५, च० १, पं० १ जौवै। ३. तृ० १ मानू। ४. पं० १ लीन्ह। ५. तृ० १ वाहू। ६. तृ० ३ जिअ। ७. तृ० १ गुन सौं बोहित चलै जिउँ बोझा। ८. द्वि० ४, ५ अस राज घर। ९. द्वि० ६, तृ० १ सव, तृ० २ भ्रम। १०. द्वि० १ जेहि तैं।

[५४१] १. द्वि० २ मेंडा। २. द्वि० १ हारिल। ३. प्र० १ कुरल। ४. प्र० १ सखहा, प्र० २ खगहा। ५. प्र० १, २, द्वि० ३ ऊीर, द्वि० ४ ऊनर। ६. प्र० १ जल के सव, प्र० २ जल केवदा। ७. द्वि० ४, ५ केंप। ८. च० २ कौंदी। ९. द्वि० २ लोन, तृ० ३ सवन। १०. प्र० १, च० २ चकया कैंवा लेंदी, नकटा चाँथा मीन सलेंदी, प्र० २ चरई चकवा केंवा लेंदी, करै मीन वहड़े जल भेदी। ११. प्र० २ मोट वरि, तृ० ३ मोट मोट। १२. प्र० २ खुरुक ले, पं० १ खरिकन्ह। १३ द्वि० २, ३ जेइँ, तृ० २ कै, द्वि० ४, ५ कत, तृ० १ केइँ। १४. द्वि० ७ पोषिआ। १५. प्र० १ मच्छि, प्र० २ भरिव ता, द्वि० १ साँई, द्वि० २ सामी।

[५४२]

घरे मंछ पढ़िना औ रोहू। धीमर मारत करै न[1] छोहू।
संध सुगंध[2] घरे जल बाढ़े। टेंगनि[3] मोइ टोइ[4] सब काढ़े।
सिगी[5] मँगुरी बीनि सब[6] घरे। नरिया[7] भोथ[8] बाँब[9] बंगरे[10]।
मारे भरक चाल्ह परहाँसी[11]। जल तजि कहाँ जाइ जल[12] बासी[13]।
मन होइ मीन चरा मुख धारा। परा जाल दुख को निरुवारा।
माँटी खाइ मंछ नहिं बाँचे। बाँचहिं का जो भोग सुख राँचे[14]।
मारे कहँ सन अस कै पाले। को उबरा एहि सरवर घाले।

एहि दुख कंठ सारि कै अगुमन[15] रकत न राखा देह।
पंथ[16] भुलाइ आइ जल बाझे[17] झूठे जगत सनेह[18]॥

[५४३]

देखत गोहूँ कर हिय फाटा। आने तहाँ होब जहँ आटा।

---

[५४२] १. द्वि० १, ४, ५, तृ० ३ धीमर धरत करै नहिं। २. प्र० १ सनद सिल ध, प्र० २ सनदहि सनद, द्वि० १, ७ सिध सिन ध, तृ० ३ संध सेंध। ३. द्वि० १ टेगर, द्वि० २ मगका, तृ० १ नवर्धी। ४. प्र० १ धोर, प्र० २ टोर। ५. प्र० १ और मंग। ६. प्र० ४ जो। ७. प्र० १, २ नैर्ना, द्वि० ४ तरया, द्वि० ५ तरथा। ८. द्वि० ४, ५ बहुत, द्वि० ७ कटआ। ९. प्र० १ बाँक, द्वि० ५ भाँति। १०. द्वि० २ टेंकरे, च० १ बँकरे। ११. प्र० १, द्वि० ७ मरे सो चनका चेल्हा पिआसी, प्र० २ मारे चनगा चाल्हि परिआसी। १२. द्वि० ५ जल तासी, तृ० ३ बन बासी। १३. द्वि० १ जगत जिआ वहँ जल मो भासी। १४. द्वि० ६, तृ० १ पाँचे। १५. प्र० १ एहि दुख कठ सारि कै, द्वि० १ एहि दुख कठ जारि कै, प० १ कंठ सारि कै अगुमन। १६. प्र० २, द्वि० ५ तरई। १७. प्र० १ आइ जल, द्वि० ४ आइ जल पाछे। १८. द्वि० २, तृ० ३ झूठा भया सनेह।

*यह छंद तृ० २ में नहीं है, किंतु यह छंद प्रसंग में आवश्यक है, क्योंकि एक तो आगे मांस के बाद मछलियाँ पकान का वर्णन हुआ है, और दूसरे इस छंद की ५—९ पूर्ण रूप में जायसी की विचारधारा और उनकी अध्यात्म वाद-प्रमुख प्रवृत्ति की पंक्तियाँ हैं।

तव पीसे जव पहिलेहिं धोए। कापर छानि माँडि भल पोए[1]।
करिल चढ़े[2] तहँ पाकहिं पूरीं[3]। मूँठिहि[4] माँह रहहिं सो चूरीं[5]।
जानहुँ सेत पीत[6] ऊजरी। लैनू चाहि अधिक कोंवरी।
मुख मेलत खिन जाहिं बिलाई[7]। सहस सवाद पाव जो खाई।
लुचुई पोइ घीय सो भेईं। पाछें चहीं[8] खाँड सौं जेईं।
पूरि[9] सोहारी करी[10] घिउ चुवा। छुवत बिलाहिं[11]डरन्ह को[12]छुवा।

फही न जाइ मिठाई कहति मीठि सुठि बात।
जेंवत[13]नाहिं अघाइ कोइ[14] हिय वरु[15]जाइ सिरात॥

[५४४]

सीमहिं[1] चाउर वरनि न जाहीं। वरन वरन सब सुगँध बसाहीं।
रायभोग औ काजर रानी। भिनवा रौंदा[2] दाउद खानी।
कपुरकांत लेंजुरि[3] रितुसारी। मधुकर ढेला जीरा सारी[4]।
घिरतकोंदो[5] औ कुँवर[6] बेरासू। रामरासि[7] आवै अति बासू।
कहिअ सो सोंधे लाँचे[8] बाँके[9]। सगुनी देगरी[10] पद्दिनी पाके[11]।

---

[५४३] १. द्वि० ४, ५ होए। २. द्वि० ७ चुद। ३. प्र० २ धुरी। ४. प्र० २, द्वि० १, २ हाथहि। ५. प्र० १ होहिं सो चूरी, द्वि० ४, ५, तृ० ३ रहहिं सो जोरी। ६. तृ० ३ पेत (उर्दू मूल)। ७. द्वि० ५ मिलाई। ८. प्र० १, २ जानु। ९. प्र० १,२ पुआ। १०. प्र० १ महँ, तृ० ३ करे (उर्दू मूल), तृ० २ कर, द्वि० ३ कचोर। ११. पं० १ हाथ। १२. तृ० १ जो। १३. द्वि० १ देखत। १४. प्र० २ नाहिं अघाइ कोइ, तृ० ३ जाइ अघाइ कोद, द्वि० ४ जाद अघाइ न कोई, च० १ अघाइ न कोई, पं० २ नाहिं अघाई। १५. तृ० २, च० १ हियोरे।

[५४४] १. प्र० १, द्वि० २, ४, ५ रींधहिं, द्वि० १ रींधे, प्र० २, द्वि० ३ रीमहिं, तृ० १, २, पं० १ रीमे। २. प्र० १ भिनवाँ द्धा, प्र० २ भिनवाँ रुदवा, द्वि० ७ छेदअन लुआ, च० १ पुनि भिनवां औ। ३. द्वि० ४, ५ कजरी। ४. प्र० १ मधुकर जीरा देहुला भारी। ५. प्र० १ सो सुख दास। ६. प्र० १, २ कवँल। ७. प्र० १, २, द्वि० ७, पं० १ राम सारि, द्वि० १ राय नाँद, द्वि० ४, ५, ६ राम दाति। ८. द्वि० ४, ५, तृ० २ लाँची, तृ० १ लाजन, द्वि० ३ लायची, च० १ लाँजी। ९. प्र० २ काटी देहुला जीरा बाँके। १०. द्वि० ७, च० १, पं० १ देव जीरा औ। ११. प्र० २ मीन लरिका बाजा देवा नागा, जगरनाथ भोग सद लागा।

गड़हन जड़हन बड़हन मिला। औ संसार तिलक खँडचिला[12]।
रायहंस औ हंसा भौंरी[13]। रूपमाँजरि केतुकी चिकौरी[14]।

सोरह सहस बरन अस सुगँध बासना छूटि।
मधुकर[15] पुहुप सो[17] परिहरे[18] आइ परे सब[19] टूटि॥

[५४५]

निरमल[1] माँसु, अनूप पखारा[2]। तिन्ह के अब बरनौं परकारा।
कटवाँ बटवाँ[3] मिला सुबासू। सीका अनवन[4] भाँति गरासू।
बहुते सोंधे घिरित बघारा[5]। औ तहँ कुंकुहँ पीसि उतारा[5]।
सेंधा लोन परा सब हाँड़ी। काटे कंद मूर कै आँड़ी।
सोवा सौंफ उतारी धना[6]। तेहि ते अधिक आव[7] बासना।
पानि उतारा टाँकहिं टाँका[8]। घिरित परेह रहा तस पाका[9]।
औरु कीन्ह[10] माँसुन्ह के खंडा। लाग चुरै[11] सो[12] बड़ बड़ हंडा।

छागर बहुत समूँचे[13] धरे सरागन्हि भूँजि।
जो अस जेंवन जेंवै उठै सिंघ अस[14] गूँजि॥

---

१२. तृ० १ खँट तिला। १३. तृ० १ गौरी। १४. द्वि० १ चातक चौरी, द्वि० ४, ५ औ गन गौरी। १५. प्र० २ धानी देहुला अकर अनाना, यहा कहा मासु बरनौ धान।। १६. तृ० ३ मधुन्ह। १७. प्र० १ २, द्वि० ७, तृ० २, प० १ पुहुप जो, द्वि० १ ते मत्र, द्वि० २ पुहुप। १८. द्वि० १ रीझेउ, द्वि० ४, ५ ज नि कै। १९. तृ० ३ तेहि।

[५४५] १. प्र० १, २ कोमल, द्वि० २, च० १, पं० १ परिमल। २. प्र० १, २ द्वि० ७, बघारा, च० १, प० १ सँवारा। ३. तृ० ३ पटवा (उर्दू मूल), तृ० १ साँवाँ। ४. द्वि० ४ अनुभग, च० १ उत्तिम, द्वि० ५ मै अनवन (हिंदी मूल तुलना० ३२८-९)। ५. प्र० १, २ बहुत सोंधे घिउ महँ तरें, कस्तुरी केसरि पीसि उतारें, द्वि० ६ बहुते सोंधे घिरित बघारा, अब तिन्ह के बरनौं परकारा, द्वि० ३ घिरित बघारि मेलि बिस्तारा, औ तहँ लौंगहिं पीसि उतारा। ६. द्वि० ४, ५ धनियाँ। ७. प्र० १ बसाइ। ८. प्रायः समस्त प्रतियों में 'तापहि ताका' है, जो निरर्थक है। ९. तृ० १ राखा। १०. द्वि० ४, ५ लीन्ह। ११. द्वि० ४, ५, च० १ चढ़े। १२. तृ० ३ सब। १३. द्वि० ७ समूचे पुनि। १४. तृ० १ होइ।

[५४६]

भूँजि समोसा घिय महँ काढ़े। लौंग मिरिचि तिन्ह महँ सब डाढ़े।
औरु जो माँसु अनूप सो बाँटा। भे फर[1] फूल आँब औ भाँटा।[1]
नारँग दारिवँ तुरुँज जँभीरा। औ हिंदुआना[2] बालवाँ[3] खीरा।[2]
कटहर बड़हर तेउ सँवारे। नरियर दाख खजूर छोहारे।
औ जावँत खजेहजा होहीं। जो जेहि बरन[4] सवाद[5] सो ओहीं।[3]
सिरिका भेइ काढ़ि तें[6] आने। कँवल जो कीन्ह रहहिं बिगसाने[7]।[8]
कीन्ह मसौरा[9] घनि सो[10] रसोई। जो किछु सबहि माँसु हुतें[11] होई।[9]

वारी आइ पुकारे[12] लिहें सबै[13] फर छूँछ।
सब रस लीन्ह रसोईं[14] अब मो कहँ[15] को पूँछ॥[*]

[५४७]

काटे मंछ मेलि दधि[1] धोए। औ पखारि चहुँ बार[2] निचोए।[1]
करुए तेल कीन्ह बसिवारू। मेंथी कर तेहि[3] दीन्ह धुँगारू।
जुगुति जुगुति[4] सब मछ्छ बघारे। आँब चोरि[5] तेहि माहँ उतारे।[2]
ऊपर तेहिं तहँ[6] चटपट राखा। सो रस परस पाव जो चाखा।

---

[५४६] १. तृ० २ जैफर। २. प्र० १ दोस और जी, प्र० २ औ डेढसा पुनि। ३. द्वि० २, ३, ४, ५, तृ० २ बालम, तृ० ३ बाँका। ४. द्वि० १ तेहि तें अधिक। ५. तृ० १ बाँह तेहि। ६. द्वि० ४, ५ गाढ़ जनु। ७. प्र० १ रहहिं कुँभिलाने। ८. च० १ (यथा. २) जो मासु सो नासू मिला, तै कबाब कै ऊपर तना। ९. च० १ मेवरा। १०. प्र० १ सुपच, प्र० २ सीझि। ११ प्र० १, २ कहा मासु तें। १२. द्वि० ७ पुकारै तहँ। १३. प्र० १,२, द्वि० ६, च० १ हाथ लिहें, द्वि० ३ कीन्ह सबै। १४. प्र० २ रसोइ धरि। १५. तृ० १ हमहि, च० १ सो कतहुँ।

* पं० १ में इस छंद की सातवीं पंक्ति के बाद से लेकर छंद ५४९ की सातवीं पंक्ति तक का अंश नहीं है। अशुद्ध प्रकट है।

[५४७] १. प्र० १ मेलि धनि, द्वि० १ धानि दधि, द्वि० ४, ५ मेलि दूध। २. प्र० १ जेहि चार, प्र० २, द्वि० ७ चौवार, च० २ जल बारि। ३. तृ० ३ मींठे कर तेहिं (उर्दू मूल), द्वि० ४, ५ मीठे पिरित सों, च० १ मीठे फेरे। ४. प्र० १ जतन जतन, द्वि० १ जुगुति महिन। ५. प्र० १, २ आँबचूर, द्वि० ७ आँब मेलि। ६. द्वि० ३, ४ औ परेह तेहि, तृ० ३ औ परेह तहँ।

भाँति भाँति तिन्ह खँडरा तरे। अंडा[7] तरि तरि बेहर[8] धरे।
घिउ टाटक महँ सोधि सेराया। पंखि बघारि[9] कीन्ह अरदाया[10]।
कुंकुहँ परा कपूर बसाई। लौंग मिरिचि तेहि ऊपर लाई।

घिरित परेह[11] रहा तस हाथ पहुँचा लहि बूड़[12]।
बूढ़ खाइ तौ होइ नवजोबन[13] सौ मेहरी लै ऊड़[14] ॥*

[५४८]

भाँति भाँति सीझी तरकारी। कइउ भाँति कुम्हड़ा कै फारी।
भै भूँजी लौआ[1] परवती। रैता कहँ काटे कै रती[2]।
चुक्क लाइ कै रींधे भाँटा। अरुई कहँ भल अरिहन बाँटा[3]।
तोरई चिचिंडा, डिंडसी तरे। जीर धुँगारि कतै सब[4] धरे।
परवर कुँदुरू भूँजे ठाढ़े। बहुते घियँ चुरुचुर कै[5] काढ़े।
करुई काढ़ि[6] करैला काटे। आदी मेलि तरे किए खाटे।
रींधे ठाद सेंब[7] के फारा। छौंकि साग पुनि सोंधि उतारा[8]।

---

७. तृ० ३ खँडरा। ८. द्वि० ७ बाहर। ९. प्र० १ नख बरारि, प्र० २ नख बघारि, च० २ अनेक बखान। १०. द्वि० ६ अरिहन लाखा। ११. द्वि० ७ प्रेव। १२. द्वि० ७ डूब। १३. तृ० ३ खाइ होइ नौ जोबन, द्वि० ३, ४, च० १ खाइ नौ जोबन। १४. प्र० १ होइ कंठ कै जूड़., प्र० २ जोबन मे.रा बूड़., द्वि० १, च० १ सौ मेहरी कै ऊड़., तृ० ३ मेहरि मेहरि कौ ऊड़, तृ० १ सबै मेहरि छै ऊड़, तृ० २ जो नवै दरस का ऊड़, द्वि० ३ होइ सो मेहरि कहँ ऊड़.।

* यह छंद प्र० १ में नहीं है। किंतु ऊपर छंद ५४२ में मछलियों के पकड़े जाने का उल्लेख हुआ है, इस लिए यह छंद प्रसंगोचित लगता है।

[५४८] १. द्वि० १, ४, ५ लौका। २. प्र० १,२ रैतू कीन्ह काटि रनि रती ३. प्र० १,२ काँटा। ४. प्र० १ सारभँति, प्र० २ ठारि भँपि, द्वि० ४, ५, मेलि सब। ५. प्र० १ महँ चुनि चुनि (हिंदी मूल) ६. प्र० १, २ बरुए आनि, तृ० ३ अरुई काढ़ि। ७. तृ० ३ मेक, द्वि० ४ सेप, द्वि० ५ सेब। ८. प्र० १, २ साग छ साग रींधि कै धरा।

सीझी सब तरकारी भा जेंवन सब[9] ऊँच।
दहुँ जेंवत का रूचै[10] केहि पर दिस्टि पहूँच ॥*

[५४९]

घिरित कराहन्हि बेहर धरा[1]। भाँति भाँति सब पाकहिं बरा।
एकहि आदि मिरिच सिउँ पीठे[2]। औरु जो दूध[3] खाँड सो मीठे[2]।
भई मुँगौछी[4] मिरिचैं परीं। कीन्ह मुंगौरा[5] औ गुरबरी[6]।
भई मेंथौरी सिरिका परा। सोंठि लाइ कै खिरिसा धरा।
मीठ[7] महिउ[8] औ जीरा लावा। भीजि बरी[9] जनु लैनू न्हावा।
खँडुई कीन्ह अवचुर तेहिं परा। लौंग लाइची सिउँ[10] खडि धरा[11]।[12]
कढ़ी सँवारी औ ढुमुकौरी[13]। औ खँडवानी लाइ बरौरी।[14]

पान लाइ कै रिकवछ छौंके[15] हींगु मिरिच औ आद।
एक[16] कठहँडी जेंवत सत्तरि[17] सहस[18] सवाद ॥

[५५०]

बहरी पाकि लोनि[1] औ गरी। परी चिरौंजी औ खुरुहुरी[2]।

---

९. च० २ बुठि। १०. तृ० ३ जोवत का रूचै, द्वि० ४, ५ का रूचै साहि कहँ।

* यह छंद पं० २ में नहीं है, किंतु और सब व्यंजनों के साथ तरकारियों का वर्णन प्रसंगोचित लगता है।

[५४९] १. द्वि० ३ भरि भरि परा, द्वि० ६ बेगर परा। २. प्र० १, २. द्वि० ७ दाठे, मीठे, तृ० ३ पींठा, मींठा (उर्दू मूल)। ३. तृ० ३ दही। ४. प्र० १ भई फुलौरी, द्वि० ७ भई मुँगौरी, च० १ मुँगछी भीतर। ५. प्र० १ कीन्हि मुँगौछा, द्वि० ७ कान्ह मुँगौरा। ६. प्र० १ कोंवरी, प्र० २ कोरवरी, द्वि० ३ खँडवरी, च० २ कुछ बरी। ७. तृ० ३ मीठा। ८. द्वि० ३ दहिउ। ९. द्वि० ४, ५ वरा। १०. प्र० १, २, द्वि० ४, ५, तृ० २, ३ सो। ११. प्र० १, २, द्वि० ४, ५ बरा, तृ० १ धरा। १२. द्वि० ६ सोंठि लाइ कै खिरिसा धरा (५४९.४)। १३. द्वि० ४, ५ और फुलौरी। १४. द्वि० २ में, ६ के प्रथम चरण के साथ, ७ का दूसरा चरण तथा ७ के प्रथम चरण के साथ, ६ का दूसरा चरण है। १५. प्र० १, च० २ रिकवद्ध, प्र० २ रिकवछ कीन्हे। १६. द्वि० ५ यक। १७. प्र० १, २ पाइम, द्वि० २, ४, ५ पावै, द्वि० ६ सरह, तृ० १ सहद। १८. द्वि० ६ सत।

[५५०] १. प्र० १, २ लौंग औ गरी, द्वि० ४, ५ नोन औ गरी, द्वि० ७ लोनी गुरी। २. तृ० ३ खुर खुरी।

घिरित भूँजि कै पाका पेठा। औ भा अंम्रित गुरँव[3] मरेठा।[4]
चुंथक लोह्दा[5] औटा खोवा। भा हलुवा घिउ करै निचोवा।
सिखरन सोंधि छनाई गाढ़ी। जामा दूध दहिउ सिउँ[6] साढ़ी।
और दहिउ के मोरँड बाँधे। औ संधान बहुत तिन्ह[7] साँधे।
भै जो मिठाई कही[8] न जाई। मुख मेलत खिनु जाइ बिलाई।
मोंतिलड्डु छाल और[9] मुरकुरी[10]। माँठ पेराक बुँद बुरबुरी[11]।

फेनी पापर भूँजे भए अनेग परकार।
भै जाउरि[12] पछियाउरि[13] सीका सब जेंवनार॥

[५५१]

जति परकार रसोइँ बखानी। तब मह जब[1] पानी सौं सानी।
पानी मूल परेखौ कोई। पानी बिना सवाद न होई।
अंम्रित पानि न अंम्रित आना। पानी सौं घट रहै पराना।
पानि दूध मह‍ँ[2] पानी घाँऊ। पानि घटैं घट रहै न जीऊ।
पानी माह‍ँ समानी[3] जोती। पानिहि उपजै मानिक[4] मोंती।
पानी सब मह‍ँ निरमरि करा। पानि जो छूवै[5] होइ[6] निरमरा[7]।

---

३. प्र० १ और अंम्रित वरि वरे, प्र० २ और अम्रित गर गरौं, तृ० २, पं० १ औ भा अंम्रित गरं। ४. च० १ अंतरस कीन्ह जो पाका पेंठा, जानहु अंम्रित करहि कर पैठा। ५. प्र० २ चक मक लोहडा औटा, द्वि० ६ आनि लोहहा, च० १ चुंवक हंडा। ६. प्र० १ भत, प्र० २, जस, तृ० ३ कै। ७. प्र० २ बहु अनवन, प्र० २ अनवन विधि, द्वि० ३, ४, ५, ६, ७ च० १ बहु भाँतिन्ह। ८. तृ० ३ कहै (उर्दू मूल)। ९. तृ० ३ मोति लड्डु गईंलड औ, द्वि० ४, ५, च० १, पं० १ मोटिला छाल और, द्वि० २, ६, तृ० २ मोटिला छाटिना औ, तृ० १ मोटिला छर और। १०. प्र० १ धोंधे औ कोवरे, प्र० २ औन मुरकुरी, तृ० ३ औ मुरकोरी। ११. प्र० १ बूँद ढूंढि ढूंढि बरे, तृ० ३ पेराक जो बुंद ढरो रे, द्वि० ४, ५ पेराकैं और बुंदौरी। १२. द्वि० ४, ५, तृ० ३ चाउर। १३. प्र० २ बधिआउरि, द्वि० ४, ५ भजिआउरि।

[५५१] १. द्वि० ४, ५, ६, तृ० १ सब। २. प्र० १, २, द्वि० ४, ५, च० १ सो, तृ० २ कौ। ३. द्वि० १ मह‍ँ सो निरालि। ४. प्र० १ निरमल। ५. प्र० १, २ कहु। ६. द्वि० ४ होइ। ७. च० १ पानिहि पानि जो होइ निरमरा, पं० १ पानिहि सों जो होइ निरमरा।

सो पानी मन[8] गरब न करई। सीस नाइ खाले कहँ ढरई।

मुहमद नीर[9] गँभीर जो सोनै[10] मिलै समुँद।
भरे ते भारी होइ रहे छूछे बाजहिं दुंद॥*

[५५२]

सीझि रसोई भएउ बिहानू। गढ़ देखै गवने[1] सुलतानू।
कवँल सहाइ सूर सग लीन्हा। राघौ चेतनि आगें कीन्हा।
तेतखन आइ बेवान पहूँचा। मन सों अधिक गँगन सौं ऊँचा[2]।
उघरी पँवरि चला सुलतानू। जानहुँ चला गँगन कहँ भानू।
पँवरि सात सातौ खँड बाँकी। सातौ गढ़ि[3] काढ़ी दै[4] टाँकी[5]।
जानु उरेह[6] काटि सब काढ़ीं। चित्र मूरति[7] जनु बिनवहिं ठाढ़ीं।
आजु पंवरि मुख भा निरमरा। जौं सुलतान आइ पगु धरा।

लख लख बैठ[8] पँवरिया जिन्ह सौं नवहिं करोरि।
तिन्ह सब[9] पँवरि उघारी[10] ठाढ भए कर जोरि॥

[५५३]

सातहुँ पँवरिन्ह कनक केवारा। सातहुँ पर बाजहिं घरियारा।[1]
सातहुँ रंग सो सातहुँ पवँरी। तब तहँ चढ़ै फिरै सत भँवरी।

---

८. प्र० १। २ निरमलि पानि सो। ९. द्वि० १ पानि। १०. द्वि० ४, ५ जो सोते, द्वि० ६, तृ० १ जे तेंरे, च० १ जे सो ते।

* प्र० १, २ में इसके अनंतर एक छंद अतिरिक्त है।

[५५२] १. तृ० २ आवै, पं० १ आगा। २. पं० १ मन तें चाहि अधिक सों ऊँचा। ३. पं० १ खंट। ४. प्र० १, २ काढ़ि एक, द्वि० ७ लाई कै. पं० २ गढ़ी है। ५. प्र० २, द्वि० ४, ५ नाकी। ६. तृ० २ जावँत जीव। ७. प्र० १, पं० १ मूरतईं। ८. द्वि० १ लाखन्ह बैठ, तृ० ३ लाखन्ह बैठ, तृ० १ लाखन्ह लाख। ९. तृ० ३ तिन्ह सो (हिंदी मूल), द्वि० ६ तें सन, च० १, पं० १ ते सोँ। १०. प्र० १, २, द्वि० २ उघारि कै, द्वि० ६ होइ राखा कै, प० १ राखा रहहि।

[५५३] १. प्र० १ अम, द्वि० ४, ५ ना।

खँड खँड साजी पालक[2] पीढ़ी। जानहुँ[3] इंद्र लोक की सीढ़ी।
चंदन बिरिख सुहाई[4] छाँहाँ। अंब्रित कुंड भरे तेहि माहाँ।[5]
फरे खजेहजा दारिवँ दाखा। जो ओहि पंथ जाइ सो चाखा।[6]
सोने क छात[7] सिंघासन[8] साजा। पैठत पँवरि मिला लै[9] राजा।
चढ़ा साहि चितउर गढ़[10] देखा। सब संसार पाँव तर लेखा।

साहि जबहि[11] गढ़ देखा[12] कहा देखि कै साजु[13]।
कहिअ राज[14] फुर[15] ताकर सरग करै जो[16] राजु ॥

[५५४]

चढ़ि[1] गढ़ ऊपर बसगति[2] देखी। इंद्रपुरी[3] सो जानु बिसेखी[4]।
ताल तलाव सरोवर भरे। औ अँबराउँ चहूँ दिसि फरे।
कुँआ बावरी भाँतिन्ह भाँती[5]। मढ़ मंडप तहँ भे चहुँ पाँती[6]।
राय राँक घर घर सुख[7] चाऊ। कनक मँदिल नग कीन्ह[8] जराऊ।
निसि दिन बाजहिं मंदिर[9] तूरा। रहस कोड सब लोग[10] सेंदूरा।

---

२. प्र० १ पलँग औ, प्र० २ पालकी, द्वि० १ पलका। ३. प्र० १, २, पं० १ लागीं। ४. प्र० १ मोहावन, तृ० २ सो छोहँ। ५. तृ० २ पँवरि भात जस रहा उँचावा, तैन भात मीहि बरनि न आवा। ६. तृ० २ सो देखत छवि आहि न ठाऊ, बहुत भाँति मद ऊँच उँचाऊ। ७. तृ० २ रतन जड़ाव। ८. द्वि० २ इद्रासन। ९. प्र० १ च। लै। १०. द्वि० ४, ५ चढ़ि। ११. द्वि० २, ३ जौरि (हिंदा मूल) द्वि० ४, ५ गगन। १२. प्र० १, २, द्वि० ४, च० १, पं० १ देखा साहि गगन गढ। १३. द्वि० १, औ देखा सब साजु, द्वि० २, ३, तृ० १, २, कहा देखि कै साज, द्वि० ४, ५, च० १, प० १ इंद्र लोक के साज। १४. प्र० १ जिअन। १५. तृ० २, द्वि० ३ थिर १६. प्र० १, २, तृ० १ अस।

[५५४] १. द्वि० ७ पुनि। २अ. द्वि० ४, ५ संगति। ३. द्वि० ७ कंचन पुरी। ४. प्र० १, २, प० १ पुनि देखा गढ ऊपर बसा, धनि राजा जाकरि अस देसा। ५. प्र० १ कुआ बावरी पाँनिहि पानी, द्वि० १ कूप देख नहँ भाँति भाँती। ६. प्र० १ तहँ भाँतिहि भाँती, प्र० २ साजे चहुँ पाँती, तृ० २, पं० १ महँ पानिहि पाती। ७. प्र० १ मद। ८. प्र० १, २, पं० १ लाग। ९. प्र० १, २ मादर। १०. प्र० १, २ भरे, द्वि० १, ७ माँग।

रतन पदारथ नग जो बखाने । खोरिन्ह[11] महँ देखिअ[12] छिरिआने[13]।[14]
मँदिल मँदिल फुलवारी बारी । बार बार तहँ[15] चित्तरसारा[16] ।[17]

पाँसा सारि कुँवर सब खेलहिं[18] स्रवनन्ह गीत ओनाहिं[19]।
चैन चाउ तस देखा जनु गढ़ छेंका नाहिं ॥*

[५५५]

देखत साहि कीन्ह तहँ फेरा । जहाँ मँदिल पदुमावति केरा ।
आस पास सरवर[1] चहुँ पासाँ । माँझ मँदिल जनु लाग[2]अकासाँ ।
कनक सँवारि नगन्हि सब जरा । गँगन चाँद जनु नखतन्ह भरा ।
सरवर चहुँ दिसि पुरइनि फूली । देखा बारि[3] रहा मन भूली ।
कुँअर लाख दुइ बार अगोरे । दुहुँ दिसि पँवरि[4] ठाढ़ कर जोरे ।
सारदूर दुहुँ दिसि गढ़ि काढ़े । गल गाजहिं[5] जानहुँ रिसि बाढ़े[6] ।
जावँत कहिअै चित्र कटाऊ । तावँत पँवरिन्ह लाग जराऊ ।

साहि मँदिल अस देखा जनु कबिलास अनूप ।
जाकर अस धौराहर सो रानी केहि रूप ॥

[५५६]

नाँघत[1] पँवरि गए खँड साता । सोनै[2] पुहुमि बिछावन राता ।

---

११. द्वि० ३ पँवरिन्ह । १२. प्र० १ खोरिन्ह माँह रहहिं, द्वि० ७ खोरि खोरि दीसहिं । १३. प्र० १, २, द्वि० ७ छिनराने, च० १ छहराने । १४. तृ० २ में चंदन बिरिख सुहाई छाँहाँ, अंम्रित कुंड भरे तेहि माहाँ (५५३.४) १५. प्र० १, पं० १ सर । १६. द्वि० ४ चित्र सँवारी । १७. तृ० २ फरे सजोहजा दारिउँ दाखा, जो ओहि पंथ जाइ सो चाखा । (५५३.५) १८. पं० १ खेल सब । १९. प्र० १ चित चिंता नहिं ताहि ।

* तृ० २ में इसके अनंतर एक अतिरिक्त छंद है ।

[५५५] १. प्र० २ पुरइनि, द्वि० १ सागर । २. तृ० २ अति ऊँच । ३. तृ० ३ बागि, तृ० १ साहि । ४. तृ० १ बिनव । ५. द्वि० ७ हरहिं गयंद । ६. प्र० २ जानहुँ गिर चढ़े, तृ० ३ जानहुँ सिर ठाढ़े, द्वि० ३, ४, ५, च० १ जानहुँ रिस ठाढ़े, तृ० २ गढ़वर नहँ ठाढ़े, पं० १ जानहुँ ते ठाढ़े ।

[५५६] १. द्वि० १ देखत । २. द्वि० ४, ५ सारँ ।

आँगन साहि ठाढ़ भा आई। मँदिल छाँह अति सीतलि पाई[3]।
चहूँ पास फुलवारी बारी। माँझ सिंघासन धरा सँवारी।
जनु बसंत फूला सब सोने। हँसहि फूल बिगसहि[4] फर लोने।
जहाँ सो ठाँउ दिस्टि महँ आवा। दरपन भा दरसन देखरावा।
तहाँ पाट राखा सुलतानी। बैठ साहि मन जहाँ सो रानी।
कँवल सुभाइ[5] सूर सौं हँसा। सूर क मन[6] सो चाँद पहँ[7] बसा।

सो पै जान पेम[8] रस हिरदैं पेम अँकूर।
चंद जो बसै चकोर चित नैनन्ह आव न सूर॥

[५५७]

रानी धौराहर उपराहीं[1]। गरबन्द दिस्टि न करहि तराहीं।
सखीं सहेलीं साथ बईठी। तपै सूर ससि आव न[2] डीठी।
राजा सेव करै कर जोरें। आजु साहि घर आवा मोरें।
नट नाटक पतुरिनि[3] औ बाजा। आनि अखार सबै तहँ साजा।
पेम क लुबुध बहिर औ अंधा। नाच कोड जानहुँ सब धंधा।
जानहुँ काठ नचावै कोई। जो जियँ नाँच[4] न परगट होई[5]।
परगट कह राजा सौं बाता। गुपुत पेम पदुमावति राता।

गीत नाद[6] जस धंधा[7] धिकै[8] बिरह कै आँच।
मन की डोरि लागि तेहि ठाँई[9] जहाँ सो गहि गुन खाँच[10]॥

---

३. प्र० १, २, च० १, पं० १ चित मा चित्र देखि घौरानाई, दरपन रूप पुहुमि चिकनाई। ४. तृ० ३ भरि। ५. तृ० ३ सहाय। ६. प्र० १, २, द्वि० ७, पं० १ जाँउ, द्वि० ? दीठ। ७. प्र० १, २ महँ, द्वि० ६ सो, द्वि० ३ जहँ। ८. प्र० १ नेह, तृ० ३ नैन।

[५५७] १. तृ० ३ उपर जाही, द्वि० ७ पर आही। २. तृ० १ परै न। ३. तृ० ३ पैन्ही। ४. प्र० १, २, पं० १ भाव। ५. द्वि० १ न उपनै सोई, द्वि० ३ निरत बन होई। ६. द्वि० १ बदित नाम्ह, पं० १ नाँच नाद। ७. प्र० २, द्वि० १ सब धंधा, द्वि० ७ सब धंध जस, पं० २ नाहिं भावै। ८. तृ० २ जरै। ९. द्वि० १ तन महँ डोरी लाइकै, द्वि० २, पं० १ मन की डोरि लागि तहँ, तृ० १, च० १ मन की डोरि लागि जहँ। १०. प्र० १, २, द्वि० ७, च० १ जहँ सो गुन गहि खाँच (प्र०२—पाँच), द्वि० १ जाहँ केहि गुन खाँच, द्वि० २ जहँ जेहि कन गहि खाँच, तृ० १ जहँ सो कर गहि खाँच, तृ० २ जहाँ सो गहि कै खाँच, पं० १ ठाइं प्रेम गहि खाँच।

[५५८]

गोरा बादिल राजा पाहाँ। राउत दुवौ दुवौ जनु बाहाँ।
आइ स्रवन राजा के लागे। मूँसि न जाहि[1] पुरुख जौं जागे।
बाचा परखि[2] तुरुक हम बूझा। परगट मेरु[3] गुपुत छर सूझा।
तुम्ह न करहु तुरुकन्ह सौं मेरू। छर पै करहिं अंत के फेरू।
बैरी कठिन कुटिल जस काँटा। ओहि मकोइ रहि[4] चूरिहि[4] आँटा।
सतुरु कोटि जौं पाइअ गोटी। मीठे खाँड़ जेंवाइअ रोटी।
हम सो ओछ कै पावा छातू। मूल गए सँग रहै न पातू।

इहाँ किसुन बलि धार जस[5] कीन्ह चाह छर बाँध।
हम बिचार अस आवै[7] मेरहि[8] दीज न काँध॥

[५५९]

सुनि[1] राजा हियँ[2] बात न भाई[3]। जहाँ मेरु तहं अस नहिं भाई[4]।[5]
मंदहि भल[6] जो करै भलु सोई[7]। अंतहु भला भले कर होई।
सतुरु जौं बिख दे चाहै मारा। दीजै लोन जानु बिख सारा।
बिख दीन्हे बिखधर होइ खाई। लोन देखि[8] होइ लोन बिलाई।
मारें खरग खरग कर लेई। मारै लोन नाइ सिर देई।

---

[५५८] १. प्र० १, २ मूसहिं चोर, द्वि० ७ मूझ न जाहि, तृ० २ मुस न कोर, पं० १ चोरहि मूस। २. तृ० ३ बाचा हरख, तृ० ३ बाजा तुरुक (उर्दू मूल), च० १ बाजा खरग। ३. तृ० १ हेत। ४. प्र० २ दहि मकोइ रह, द्वि० १ सो मकोइ दहि, तृ० ३ सो मकोइ नहिं, द्वि० ३ ७, देइ अकोर रह, तृ० १, च० १ रह मकोइ रह, पं० २ रह मकोइ जिमि। ५. प्र० १, २ जो रह, द्वि० ३, ७ जहा नहिं, तृ० २ रहै तो, पं० १ धुरिमन। ६. द्वि० ४, ५ येह सो किसुन बलि राजा जस, पं० १ जस २ किसुन बलि बाँधा। ७. प्र० २ तस येह चाह कीन्ह मन आने, पं० १ तस येह चाह कीन्ह। ८. प्र० १, २, च० १ बैरिहि।

[५५९] १. द्वि० २ मन। २. प्र० १, २, पं० १ राजहिं येह। ३. प्र० १ भाही। ४. प्र० १ छर तहाँ न चाही। ५. द्वि० ७ में यह पंक्ति नहीं है। ६. प्र० १, २ भँद कर भल, द्वि० १ पाँच किहें, तृ० १ सब कहि भल। ७. द्वि० १ जौं पै भल होई। ८. प्र० १, २ दिए।

कौरवँ बिस जौं पंडवन्ह दीन्हा। अंतहुँ दाँउ पंडवन्ह लीन्हा।
जो छर करै ओहि छर बाजा। जैसें सिंघ[९] मंजूसा साजा।[१०]

राजैं लोनु मनावा[११] लाग दुहूँ जस लोन।
आए कोंहाइ मँदिल कहँ सिंघ जानु औगौन[१२]॥[१३]

[५६०]

राजा के सोरह सै दासीं। तिन्ह महँ चुनि[१] काढ़ीं चौरासीं।
बरन बरन सारीं पहिराईं। निकसि मँदिल हुतें सेवाँ[२] आईं।
जनु निसरीं सब बीर बहूटीं। रायमुनीं पिंजर हुति छूटीं।
सबै प्रथम[३] जोबन सौं सोहीं। नैंन बान[४] औ सारँग भौंहीं।
मारहिं धनुक फेरि सर ओहीं। पनघट घाट[५] ढंग[६] जित[७] होहीं।
काम कटाख हरहिं चित हरनी। एक एक तें आगरि बरनी।[८]
जानहुँ इंद्र लोक तें काढ़ीं। पाँतिन्ह पाँति भईं सब ठाढ़ीं।

साहि पूँछ राघौ कहँ सर ऽ तीसे नैनाहँ।[९]
तैं जो पदुमिनी बरनी कहु सो कवन इन्ह माहँ॥

[५६१]

दीरघ आउ पुहुमिपति भारी। इन्ह मह नाहिं पदुमिनी नारी।
यह फुलवारि सो ओहि की दासी। कहँ वह केत[१] भँवर सँग बासी।

---

९. प्र० १,२ बुभ। १०. प्र० १ छर बदि लीन्ह जो सिंघ मंजूसा, आमहि भरै दई तस रूमा। ११. प्र० २ सुनाव ज्व। १२. द्वि० २ आगौन। १३. द्वि० १ आए रिसाइ दुनौ जन सिंघ जनु बौनु।

[५६०] १. प्र० १ सुनि। २. प्र० १ निकसि मँदिर हुतें बाहर, च० १ कै सिंगार सेवाँ सब। ३. प्र० १, २ समागम। ४. तृ० १ बाँक। ५. प्र० १, २, द्वि० २, ३, ४, ७, तृ० १, २, च० १, पं० १ बिनु गढ़ घाट। ६. द्वि० २ धानुक, तृ० ३ धनुष (उर्दू मूल)। ७. प्र० १ फिरि, प्र० २, द्वि० २ अब, तृ० ३ रूप, द्वि० ६ सब। ८. द्वि ६ में यह पंक्ति नहीं है। ९. प्र० १ समहर नखत सो नाहिं, द्वि० २ सबै सती नैनाहँ, तृ० ३ सरिन खेलै नाहिं।

[५६१] १. द्वि० १, तृ० १ सा फूल।

वह सो पदारथ-एइ सब मोती। कहँ वह दीप पतँग[२] जेहि जोती।
ये सब तरई , सेव कराहीं। कहँ वह ससि[३] देखत छपि जाहीं[४]।
जौ लहि सूर कि दिस्टि अकासू। तब लगि ससि न करै परगासू।
सुनि कै साह दिस्टि तर नावा[५]। हम पाहुन एक मँदिल परावा[६]।[७]
पाहुन ऊपर हेरै नाहीं। हना राहु अरजुन परिछाहीं[८]।
तपै बीज जस धरती सूख बिरह कै घाय।
कब सुदिस्टि कै[९] बरिसै[१०] तन तरिवर होइ जाय॥

[५६२]

सेव करहिं दासी चहुँ पासाँ। अछरीं जानु इंद्र कबिलासाँ।
कोइ लोटा. कोंपर[१] लै आईं। साहि सभा सब[२] हाथ धोवाईं।[३]
कोइ आगें पतवार बिछावहिं। कोइ जेंवन सब लै लै आवहिं।
कोईं माँडि जाहिं धरि जोरी। कोई[४] भात परोसहिं पूरी।
कोईं लै लै आवहिं थारा। कोइ परसहिं बावन परकारा।[५]
पहिरि जो चीर परोसै[६] आवहिं। दोसरै और बरन देखरावहिं।[७]
बरन बरन पहिरहिं हर फेरा[८]। आव झुंड जस अछरिन्ह फेरा[८]।
पुनि सँधान बहु आनहिं परसहिं बूकहिं, थूक।
करै सँवार[९] गोसाईं जहाँ परै किछु[१०] चूक॥

---

२. तृ० ३ पतिंग। ३. तृ० १ दीप। ४. द्वि० १ में यह पंक्ति नहीं है। ५. द्वि० ४ नाहीं। ६. तृ० १ मंदिर आवा। ७. द्वि० १ सुनि कै साहि दिस्टि तर नाईं, तौवै लागि तैस दिस खाईं। ८. द्वि० १ वहाँ सो हिए देखि छपि जाहीं। ९. प्र० १ होइ, प्र० २, ७ धन। १०. तृ० २ परसै।

[५६२] १. द्वि० ६ कोपी। २. तृ० २ साहि सभा लै, तृ० ३ साहि सभा होइ, प० १ आनि साहि कै। ३. द्वि० ३ (यथा. ६) चाँद के रंग फिरहिं सब आईं, फटिक माझ जनु देखिअ लाइ। च० १ कोइ लोटा कोइ गेडुवा झारी, साहि सभा सब हाथ पसारी। (मूल की तुलना कीजिए ५६४.५ से) ४. द्वि० ३ औ। ५. पं० १ पुनि आए जेवन लै खारा, भाँति भाँति आए परकारा। ६. च० १ एक बेर। ७. प्र० १,२, तृ० १, पं० १ जाहिं परोसि बहुरि जौ आवहिं, आन बसन पहिरे देखरावहिं, च० १ पहिरि जो चीर एक बेर आवहिं, दोसर और चीर पहिरावहिं। ८. तृ० १ फेरी, न जानौं कनक चीर ओन्ह केरी। ९. च० १ सुसार। १०. तृ० १,३ परी होइ जहँ।

[५६३]

जानहुँ नखत रहहिं[1] रवि सेवाँ[2]। बिनु ससि सूरहि भाव न जेंवाँ।
सब परकार फिरा हर फेरें। हेरा बहुत न पावा हेरें।
धरी असूझ सबै तरकारी। लोनी बिना लोन सब खारी।
मंछ छुअै आवहिं कर काँटे जहाँ कँवल तहँ हाथ न आँटे।
मन लागेउ तेहि कँवल की डंडी। भावै नहिं एकौ कठहंडी।
सो जेंवन नहिं जाकर भूखा। तेइ बिनु[3] लाग[4] जानु सब रूखा।
अनभावत चाखै बैरागा। पंच अंब्रित जानहुँ[5] बिख लागा।

> बैठि सिंघासन गूँजै सिंघ चरै नहिं घास।
> जौं लहि मिरिग[6] न पावै भोजन गनै[7] उपास॥

[५६४]

पानि लिहें दासीं चहुँ ओरा। अंब्रित बानी भरें कचोरा।
पानी देहिं कपूर क[1] बासा। पियै न पानी दरस पियासा[2]।
दरसन पानि देइ तौ जीयौं। बिनु रसना नैनन्ह सौं पीयौं।
पीउ[3] सेवाती बुंदहि अघा[4]। कौनु काज जौं बरिसै मघा।
पुनि लोटा कोंपर[5] लै आई। कै निरास अब हाथ धोवाई।[6]
हाथ जो धोवै बिरह करोरा। सवरि सँवरि मन हाथ मिरोरा।
बिधि मिलाउ जासौं मन लागा। जोरि न तोरु पेम कर तागा।

---

[५६३] १. तृ० ३ बरहिं रवि, द्वि० ६, तृ० २, च० १ रहहिं सब। २. पं० १ नखत फिरहिं चारिहु दिसि सेवा। ३. द्वि० २, तृ० १, २ तौतन (हिंदी मूल), पं० १ तेहि बिनु। ४. तृ० ३ लाख। ५. प्र० १, २ पाँचौ अंब्रित जनु। ६. प्र० १, २ गजहि, पं० १ हेन। ७. प्र० २, २ तब लगि करैं, तृ० २ भोजन करै।

[५६४] १. तृ० १, ३, च० १ कै, द्वि० २, तृ० २ का। २. प्र० १, २, च० १, पं० १ पिअै नाहिं दरसन क पिआसा, द्वि० ४, ५ सो तेहि पिअै दरस कर प्यासा। ३. द्वि० ४, ५ पपिहा। ४. प्र० १ जौ पै स्वाति बुंद नहिं अघा, द्वि० ४, ५ पपिहा बुंद सेवातिहि अघा। ५. प्र० १, २ भारी कोंपर, पं० १ गेंडुआ चौंमन। ६. तुलना कीजिए ५६२.२ से।

हाथ धोइ जस बैठेउ ऊभि लीन्ह तस साँस।
सँवरा सोई गोसाईं देहि निरासहि आस॥

[५६५]

भैं जेवनार फिरा[1] खँडवानी। फिरा अरगजा कुंकुहँ बानी।
नग अमोल सौ थारा भरे। राजैं सेवा आनि कै धरे।
बिनती कीन्ह घालि गियँ पागा। ऐ जग सूर सीउ[2] मोहि लागा।
औगुन भरा काँप यह[3] जीऊ। जहाँ भान रहँ तहै न सीऊ।
चारिहुँ खंड भान अस तपा। जेहि की दिस्टि रैनि मसि छपा[4]।
कँवल भान देखे पै हँसा। औ भानहि चाहै परगसा।
औ भानहि असि[5] निरमरि करा। दरस जो पाव सोइ निरमरा।

रतन स्यामि तहँ[6] रैनि मसि[7] ऐ[8] रबि तिमिर[9] संघार।
करु सुदिस्टि औ किरिपा देवस देहि उजियार॥

[५६६]

सुनि बिनती बिहँसा[1] सुलतानू। सहसहुँ करा दिपै[2] जस भानू।
अनु राजा तूँ साँच जड़ावा। मैं सुदिस्टि सो[3] सीउ छड़ावा।
भान की सेवा जाकर जीऊ। तेहि ममि कहाँ कहाँ तेहि सीउ।
खाहि देस आपन करु सेवा। औरु देउँ माँडौ तोहिं देवा।
लीक पवान पुरुख कर बोला। धुव सुमेरु तेहि उपरैं डोला।
बहुरि पसाउ[4] दीन्ह जग सूरू। लाभ देखाइ लीन्ह चह मूरू।

---

[५६५] १. प्र० १, २ फिरी। २. तृ० २, ३ धोख। ३. प्र० १, २ मोर, तृ० १ तेहि। ४. प्र० १ पारसरूप दरस देइ छपा। ५. पं० १ जगत भान कै। ६. तृ० ३ स्याम तेहि (उर्दू मूल)। ७. पं० १ है निसि मसि। ८. प्र० १ तैं। ९. द्वि० १ बीती मैं, तृ० ३ रबि मरत।

[५६६] १. तृ० ३, च० १ आया। २. द्वि० २ सहस करा दिपा, तृ० २ सहस करा हँसा, तृ० १ दिसा आजु तपा, द्वि० ३ सहसहुँ करा तपै। ३. प्र० १ अब, प्र० २ जो। ४. तृ० ३ फेरि बसाउ, तृ० १, पं० १ बहुरि बसाउ, तृ० २ बहुत बसाउ, च० १ बहु बौसाउ।

हँसि हँसि बोलै[५] टेकै काँधा। प्रीति भुलाइ चहै छरि बाँधा।[६]

माया बोलि बहुत कै पान साहि हँसि दीन्ह।
पहिलें रतन हाथ कै चहै पदारथ लीन्ह॥

[५६७]

भगा सूर परसन[१] भा राजा[२]। साहि खेल सँतरज कर साजा।
राजा है जौ लहि सिर[३] घामू। हम तुम्ह घरिक करहिं बिसरामू।[४]
दरपन साहि पैत[५] तहँ[६] लावा। देखौं जबहि[७] झरोखें आवा।
खेलहिं दुवौ साहि औ राजा। साहि क रुख दरपन रह साजा।
पेम क लुबुध पयादें पाऊँ[१०]। चलै सौहँ ताकै कोनहाऊँ[१०]।
घोरा दै फरजी बँदि लावा। जेहि[११] मोहरा रुख चहै सो पावा।
राजा फील देइ सह माँगा। सह दै साहि फरजी दिग खाँगा[१२]।

फीलहि फील[१३] ढुकावा भए दुवौ[१४] चौ दंत[१५]।
राजा चहै बुरुद भा साहि चहै सह मंत[१५]॥

[५६८]

सूर देखि ओइ तरईं दासीं[१]। जह ससि तहाँ जाइ परगासीं[१]।

---

५. प्र० १ राजहि, प्र० २, द्वि० ७ बात ह। ६. प० १ तौ बहि मरन तुम्हार न बाँधा, बिधि बाँधें हा सब गा बाँधा।

[५६७] १. द्वि० २, ४, ५, च० १ परस। २. प्र० १, २, तृ० १, प० १ एक दिसि आवु दोसर दिसि राना, द्वि० ४, ५ माया मोह परस भा राना। ३. द्वि० ७ अबहि आदि जरि। ४ प्र० १, २, प० १ बैठे आइ धौराहर छाहीं, साह क जिय पदुमावति पाहीं। ५ द्वि० २ बिकर (?), तृ० २ नियर। ६ द्वि० ३ महँ। ७ द्वि० ४, ५, ६, च० १ जौहि (हिंदी मूल), द्वि० १ आवहुँ। ८. प्र० १, २, तृ० १, प० १ रचा खेल दरपन धरि आगे, रही सुदिस्टि धौरहर लागे। ९. प्र० १, २, प० १ मकु धनि झाँकै आइ झरोखे, दरस होइ सतरंज के धोखे। १०. द्वि० ४, ५ यहँ ठाऊँ, कोनहाऊँ, तृ० १ न पावै भानू भ्रानू। ११. तृ० ३ चह (उर्दू मूल)। १२. द्वि० ४, ५ सम्ह दै चाह मारै रथ खाँगा, तृ० १, च० १ सह दै चाह परै रू खाँगा, द्वि० १ सभ दै साहि फरजि दै खाँगा, द्वि० ६ सह दै साहि तुरी दै खाँगा। १३. द्वि० १, ४, तृ० १, च० १ पेलि। १४. प्र० २ जूझ, प० १ चहूँ। १५. तृ० १ चौदाँत, भा मात।

[५६८] १. प्र० १ तरईं सब हँसी, परगसीं।

सुना जो हम ढीली सुलतानू। देखा आजु तपै जस भानू।
ऊँच छत्र[2] ताकर जग माँहाँ। जग जो छाँह सब ओहि की छाँहाँ।
बैठि सिंघासन गरबन्ह गूँजा। एक छत्र चारिहुँ खंड[3] भूँजा।
सौहँ न निरखि जाइ ओहि पाहीं। सबै नवहिं कै दिस्टि तराहीं।
मनि माँथें ओहि रूप न दूजा। सब रुपवंत करहिं ओहि पूजा।
हम अस कसा कसौटी आरसि। तहूँ देखु कंचन[4] कस[5] पारस[6]।

पातसाहि ढीली कर कत चितउर महँ आव।
देखि लेहि पदुमावति हियँ[7] न रहै पछिताव॥

[५६६]

बिगसि[1] जो कुमुद कहै[2] ससि ठाँऊ। बिगसा कँवल सुनत रबि नाऊँ[3]।
भै निसि ससि[4] धौराहर चढ़ी। सोरह[5] करा जैसि बिधि गढ़ी।
बिहँसि झरोखें आइ सरेखी। निरखि साहि दरपन महँ देखी।
होतहि दरस परस भा लोना। धरती सरग भएउ सब[6] सोना।
रुख माँगत रुख तासौं भएऊ। भा सह मात खेल मिटि गएऊ।[7]
राजा भेद न जानै झाँपा। भै बिख नारि[8] पवन बिनु[9] काँपा।[10]
राघौ कहा कि लाग सुपारी। लै पौढावहु सेज सँवारी।

रैनि बिहानी भोर भा उठा सूर तब[11] जागि।
जौं देखै ससि नाहीं रही करा चित लागि॥

---

२. प्र० १ छात। ३. प्र० १, २ चक, द्वि० ६, च० १ दिसि। ४. द्वि० २ चाँद। ५. प्र० १ अम। ६. प्र० १ असा, परसा, प्र० २ अरसा, परसा, द्वि० १ कसा, परगसी। ७. द्वि० ४, ५, तृ० ? जियँ।

[५६५] १. तृ० २ बिहँसि। २. द्वि० १ भई ससि जानूँ, द्वि० ५ गहै ससि ठाऊँ। ३. द्वि० १ बिगसा सूर सुना ससि नाऊँ। ४. प्र० १, २ ससि समान। ५. प्र० १, २ षोडस। ६. प्र० १, २ जस। ७. प्र० १, २ तृ० १, प० १ मा रुख दाउ जो मुहरा भेंटा, भा सब मात खेल सब मेंटा। ८. तृ० २ भा मुख बान (या बिख बान?), पं० १ भा मुसरात, द्वि० ४, ५ भा बिख नारि। ९. द्वि० २, तृ० १ तन, तृ० ३, च० १ बर, द्वि० ७ मुख, द्वि० ३ हिय, पं० १ जस। १०. द्वि० ६ कस मुरझान साहि कस काँपा, पं० १ भा मुसरात कँवल जस चाँपा। ११. द्वि० ६, तृ० ३ पनि।

[५७०]

भोजन पेम सो जान जो जेंवा। भँवर न तजै[1] बास रस केवा।
दरस देखाइ जाइ ससि छपी। उठा भान जस जोगी तपी।
राघौ चेतनि साहि पहँ गएऊ। सुरुज देख[2] कँवल बिख[3]भएऊ।
छत्रपती मन कहाँ पहूँचा। छत्र तुम्हार गँगन पर[4] ऊँचा।
पाट[5] तुम्हार देवतन्ह पीठी। सरग पतार रैनि दिन डीठी।
छोह त पलुहे उकठा रूखा। कोह त महि सायर सब सूखा।
सकल जगत तुम्ह नावै माँथा। सब की जियनि तुम्हारे हाथा।

दिन न नैन[6] तुम्ह लावहु रैनि बिहावहु[7] जागि।
अब निचिंत अस सोए[8] काहे बेलँब असि[9]लागि॥

[५७१]

देखि एक कौकुत[1] हौं रहा। अहा अंतरपट पै नहिं अहा।
सरवर एक देख मैं सोई। अहा पानि पै पानि न होई।
सरग आइ धरती महँ छावा। अहा धरति पै धरति न आवा।
तेहि महँ है[2] पुनि मंडप[3] ऊँचा। करहि अहा पै कर न पहूँचा।
तेहि मंदिल[4] मूरति मैं देखी। बिनु तन बिनु जिय जियैं बिसेखी[5]।[6]
चाँद सँपूरन जनु होइ तपी। पारस रूप दरस दै छपी।
अब जहँ छत्र दिसैं[7] जिउ तहाँ। भान[8] अमावस पावै कहाँ।[9]

---

[५७०] १ प्र० १, २, द्वि० १, ४, ५, ७, तृ० २ रचै, द्वि० ३ रहै। २. प्र० १, देखा साहि। ३. प्र० १ मन, तृ० ३, च० १ सुरु, द्वि० ७ सुख। ४. प्र० १ गँगन तें, द्वि० १ जगत तें, द्वि० ३, ६, ७, तृ० ?, च० १, पं० १ जगत पर। ५. प्र० १ परत। ६. तृ० ३ नैनन्ह। ७. द्वि० ४, ५ भानु बहि। ८. द्वि० ७ सोइ गए, द्वि० ३ होर सोवै, पं० १ का पोवहु। ९. तृ० ३ अति।

[५७१] १. द्वि० १, ३, ४, ५ कौतुक। २. द्वि० १ देखौं ससि, द्वि० ४, ५ तेहि महँ एक। ३. द्वि० ४, ५, ६, च० १ मँदिर। ४. द्वि० ४, ५ मंडप। ५. प्र० १, २, द्वि० ३, ७ सरेखी। ६. द्वि० २ बिनु तन बिनु मन मन बिनु देखो। ७. प्र० २, द्वि० ७ चतुरदसी, तृ० ३ छत्र बसैं, तृ० १ चतुरदसी, प० १ चित्र बसै। ८. तृ० १ या जो। ९. द्वि० १ जब तें जीव दरस भै ताही, जानु अमावस पावै नाहीं।

बिगसा कँवल सरग निसि[10] जनहुँ लौकि गा[11] बीजु।
यहौ राहु भा भानहि[12] राघौ मनहि[13] पतीजु॥

[५७२]

अति बिचित्र देखेउँ सो ठाढ़ी[1]। चित कै चित्र लीन्ह जिय काढ़ी[1]।
सिंघ की लंक कुंभस्थल जोरू। अंकुस नाग महावत मोरू।
तेहि ऊपर भा कँवल बिगासू। फिरि अलि लीन्ह पुहुप रस[2] बासू[3]।
दुहुँ खंजन बिच बैठेउ सुवा। दुइज क चाँद धनुक लै उवा[4]।
मिरिग देखाइ गवन फिरि किया। ससि भा नाग सुरुज भा दिया।
सुठि[5] ऊँचे देखत औचका। दिस्टि पहुँचि कर पहुँचि न सका।
भुजा बिहूनि[6] दिस्टि कत भई। गहि न सकै देखत वह गई।

राघौ आधौ होत जौं[7] कत आछत जियँ साध[8]।
ओहि बिनु आघ[9] बाघ बर[10] सकै त लै[11] अपराध॥

[५७३]

राघौ सुनत सीस भुइँ धरा। जुग जुग राज भान कै करा।
ओहि करा औ रूप बिसेखी। निस्चैं तुम्ह पदुमावत्ति देखी।
केहरि लंक कुँभस्थल हिया। गीवँ मंजूर अलक रवि दिया।
कँवल बदन औ बास समीरू। खंजन नैन नासिका कीरू।

---

[10]. द्वि० २ सरग पर, द्वि० ६ सरग सर, तृ० २ सुरुज तस। [11]. तृ० ३, च० १ लागि गा, द्वि० ४, ५ लौगि का, द्वि० ७ लागी। [12]. प्र० १, भनौ राहु भा भानहि, प्र० २, द्वि० ७, पं० १ भौ राहु भा भानुहि, द्वि० २ और डाह भा सूरज, तृ० ३ भरनौ डाह भा राजा, द्वि० १, तृ० १ भौर डाह भा भानुहि, च० १ भौर डाह भा राजहि, तृ० २ राहु भेद भा भानुहि।

[५७२] [1]. प्र० १, २, द्वि० ७, पं० १ नारी, कहौं कहाँ सन बूझि बिचारी॥ [2]. प्र० १, २, पं० १ मधु, द्वि० १ कै। [3]. द्वि० ७ दूज चाँद जनु कीन्ह प्रगासू। [4]. द्वि० १ दुआदस चाँद चाँद भै उठा। [5]. तृ० ३ उठि। [6]. द्वि० ४, ५, च० २ पहुँचा भएउँ। [7]. द्वि० ४, ५ हेरत जो गएउँ। [8]. द्वि० ४, ५ हिएँ समाध। [9]. द्वि० ४, ५ बदि तन राधि। [10]. द्वि० ४, ५ भा, द्वि० ३, च० १ पर। [11]. प्र० १, २, द्वि० १, ७ लेनै, द्वि० ४, ५ नकै।

भौंह धनुक[1] ससि दुइज लिलाटू। सब रानिन्ह ऊपर वह पाटू।
सोई मिरिग देखाइ जो गएऊ। बेनी नाग दिया चित भएऊ।
दरपन महँ देखी परिछाँहीं। सो मूरति जेहि तन जिय नाहीं[2]।

सबहि सिंगार बनी धनि[3] अब[4] सोई मत कीज।
अलक जो लगुने अधर कें[5] सो गहि कै रस लीज॥

[५७४]

मत भा[1] माँगा बेगि[2] बेवानू। चला सूर सँवरा अस्थानू।
चलन पंथ राखा जो पाऊ[3]। कहाँ रहन थिर कहाँ बटाऊ[4]।
पथिक कहाँ कहाँ सुस्ताई। पथ चलें पै पंथ सिराई।
छर कीजै घर जहाँ न आँटा। लीजै फूल टारि कै काँटा।
बहुत मया सुनि राजा फूला। चला साथ पहुँचावै भूला।
साहि हेतु राजा सौं बाँधा। बातन्ह लाइ लीन्ह गहि काँधा।
घिउ मधु सानि दीन्ह रस सोई[5]। जो मुख मीठ पेट बिख होई[6]।

अमिअ बचन औ माया[7] को न मुएउ रस भीजि।
सतुरु मरै जौं अंब्रित कत ताकहँ बिख दीजि॥*

---

[५७३] १. प्र० १, २ बदन। २. प्र० १, प० १ नो बिनु तन मूरति जिदँ नाहीं, द्वि० ५ सो मूरति भीतर जिउ नाहीं, तृ० १ सो मूरति देखी तुरद नाहीं। ३. प्र० १, २ दरनि धनि, द्वि० २ वह धनि, द्वि० ३ पुनि सोई। ४. द्वि० २ कै। ५. प्र० १, २, द्वि० ४, ५ अलक सो लटक अधर पर, द्वि० २ अलक जो थारो अधर कै, तृ० २ अंक जो लिखे लिलाट क।

[५७४] १. द्वि० २ मया मत्र, तृ० ३ मन भा, द्वि० ७ सत भा। २. द्वि० ७ जो। ३. प्र० १, द्वि० ७ जेहँ राखा पाऊ। ४. प्र० १ कहाँ रहँ थिर चलत बटाऊ, द्वि० १ कत रहना जो भए बटाऊ, तृ० ३ कहाँ रहा न थिर कहाँ बटाऊ, तृ० २ कहाँ रहन थिर जहाँ बटाऊ, पं० १ कहाँ रहन थिर रहै न बटाऊ। ५. प्र० १, २ दिएँ रस होई। ६. प्र० १, २ मोई। ७. द्वि० १ सुनि राजा। ८. प्र० १ खिन खाइ अवन कीजि, तृ० ३ तौ काहें विखि दीजि।

* प्र० १, २ द्वि० ३, ४, ५, ६, ७ में इसके अनतर एक अतिरिक्त छंद है।

[५७५]

एहि जग बहुत नदी जल जूड़ा। कौन पार भा को नहिं बूड़ा।
को न[1] अंध भा आँखि न देखा। को न भएउ डिठियार सरेखा।
राजा कहँ बियाधि भै माया। तजि कविलास परे भुइँ पाया।
जेहि कारन गढ़ कीन्ह अगूठी। कत छाँड़ै जौं आवै मूँठी।
सतुरुहि कोउ पाव जौं बाँधी। छाँड़ि आपु कहँ करै बियाधी।
चारा मेलि धरा जस माछू। जल हुँति निकसि सकत मुव काछू।
मंत्रन्ह नाग पेटारें मूँदा। बाँधा मिरिग पैगु नहिं खूँदा।

राजा धरा आनि कै औ पहिरावा लोह।
ऐस लोह सो पहिरै जो चेत[5] स्यामि[6] कहँ दोह[7]॥

[५७६]

पायन्ह गाढ़ीं बेरीं परीं। साँकरि गींव हाथ हथकरीं।
औ धरि बाँधि मँजूसा मेला। अस सतुरुहु जनि होइ[1] दुहेला।
सुनि चितउर महँ परा भगाना[2]। देस देस चारिहुँ खँड जाना।
आजु नराएन फिर जग खूँदा। आजु सिंघ मंजूसा मूँदा।
आजु खसे रावन दस माँथा। आजु कान्ह कारी फन[3] नाथा।
आजु परान कंससेनि ढीला[4]। आजु मीन संखासुर[5] लीला।
आजु परे पंडौ बँदि माहाँ। आजु दुसासन उपरी[6] बाहाँ।

---

[५७५] १. द्वि० ४, ५ कौन। २. तृ० १ आगन। ३. द्वि० ४, ५ कौन। ४. च० १ अैस लोह। ५. प्र० १ होइ, द्वि० १ जो चेत, तृ० ३ चित्त, तृ० ७ चितव, द्वि० २ चित। ६. तृ० २ साहि। ७. प्र० १ साहि का द्रोह।

[५७६] १. द्वि० ३ परै। २. द्वि० ४, ५ बखाना। ३. प्र० १, २ कर, द्वि० ७ पुनि। ४. द्वि० ३ सकट जिउ दीन्हा, द्वि० ४, ५ कंस कर ढीना, तृ० २ कंसासुर (ढीला), द्वि० ३ कंसासुर ढीला। ५. तृ० १, तृ० ३, च० १, पं० १ सिंघासन। ६. द्वि० १, ४, ७, तृ० १ उतरी।

आजु धरा बलि राजा[७] मेला बाँधि पतार।
आजु सूर दिन अँथवा[८] भा चितउर अँधियार[९] ॥*

[५७७]

देव सुलेमाँ की बँदि परा। जहँ लगि देव सबहि सत हरा।
साहि लीन्ह गहि कीन्ह पयाना। जो जहँ सतुरु सो तहाँ बिलाना।
खुरासान औ डरा हरेऊ। काँपा बिदर[१] धरा अस देऊ।
बिंधि[२] उदैगिरि धवलागिरी। काँपी सिस्टि[३] दोहाई फिरी।
उवा सूर भै सामुहँ करा। पाला[४] फूटि[५] पानि होइ ढरा।
डंडवं डाँड़ दीन्ह जहँ ताईं। आइ सो डँडवत कीन्ह सबाईं।
दुंदि छाँड़ि सब सरगहि गई। पुहुमि जो डोली सो अस्थिर भई।

पातसाहि ढीली महँ आइ बैठ सुख पाट।
जिन्ह जिन्ह सीस उठाए[६] धरती धरे[७] लिलाट॥

[५७८]

हबसी बंदिवान जियबधा। तेहि सौंपा राजा अगिदधा[१]।
पानि पवन कहँ आस करेई। सो जिय बधिक साँस नहिं देई[२]।
माँगत पानि आगि लै धावा। मोंगरुहूँ एक आइ सिर लावा।
पानि पवन तैं पिया सो पिया। अब[३] को आनि देइ पापिया[४]।[५]
तब चितउर जिय अहा न तोरें। पातसाहि है सिर पर मोरें।

---

७. द्वि० ७ आजु जो राजा बली हरा। ८. द्वि० ७ आजु राज मथुरा गयौ। ९. द्वि० ७ भादौं कुल अँधियार।

* प्र० १, २ में इसके अनंतर पाँच और द्वि० ७ में एक अतिरिक्त छंद है।

[५७७] १. प्र० १ देव। २. तृ० ३ बंधि (उर्दू मूल)। ३. प्र० १, २ च० १, पं० १ चारिहु खंड, द्वि० ७ काँपी दिस्टि। ४. द्वि० १, तृ० ३ पाल। ५. प्र० १ टूट। ६. तृ० ३ जहँ जहँ सीस उठावा। ७. प्र० १, २, द्वि० ७ निन्ह भुइँ धरा।

[५७८] १. प्र० १, द्वि० १, ३ जिय बाँधा, अगि दाधा; द्वि० २ हिय बाँधे, लै दाढ़े; द्वि० ७ जो बाँधा, अगि दाधा। २. प्र० १ बाँधि उसास न लेई। ३. द्वि० २ आगि। ४. द्वि० ४, ५ पानिया। ५. प्र० १, २ अब को देइ इहाँ जिउलिया, द्वि० १ अब को आनि देइ को पिया।

जबहिं हँकारहि है उठि चलना। सो कत करौं होइ कर मलना[६]।
करौं सो मीत गाढ़ि बँदि जहाँ। पानि पवन पहुँचावै तहाँ।

जल अंजुलि महँ सोवा[७] समुँद न सँवरा[८] जागि।
अब धरि काढ़ा मंछ जेउँ पानी माँगत आगि॥

[५७९]

पुनि चलि दुइ जन पूँछै[१] आए। ओहि सुठि दगध आइ देखराए।
तूँ मरपुरी न कबहुँ देखी। हाड़ जो बिथुरै देखि न लेखी[२]।
जाने नहिं कि होब अस महूँ। खोजें खोज न पाउब कहूँ।
अब हम उतर देहि रे देवा। कवने गरब न माने सेवा।
तोहि अस केत गाड़ि खनि मूँदे। बहुरि न निकसि बार कै खूँदे।
जो जस हँसै सो तैसै रोवा। खेलि हँसि एहि भुँइ पै सोवा।
तस अपने मुँह काढ़े धुवाँ। चाहसि परा[३] नरक के कुँवा।

जरसि मरसि अब बाँधा तैस लाग तोहि दोख।
अबहूँ मानु[४] पदुमिनी जौं चाहसि भा[५] मोख॥

[५८०]

पूँछेन्हि बहुत न बोला राजा। लीन्हेसि चूपि[१] मींचु मन साजा[२]।

---

६. प्र० १ होइ सिर मरना, द्वि० ७ होर किन मिलन। ७. प्र० १, २, द्वि० ७ सूरिगा, द्वि० ३ सँवरा। ८. प्र० = समुद न बिसुरा, द्वि० ६ समुँद न सूझा, द्वि० ३ सोर समुँद महँ।

[५७९] १. पं० १ देखै। २. प्र० १ उहउँहि देखि आपु केहि लेखे, प्र० २, च० १, पं० १ ओन्हहीं देखि आपु नहिं लेखे, द्वि० १ तमवै सरके आपुहि लेखा, द्वि० ६ हाड जो बिसरै देखि न लेखा, तृ० १ जैस वै मरै न आपहु लेखी। ३. प्र० १, २ मेलेसि तोहि, च० १, पं० १ मेलेसि आनि। ४. तृ० ३, च० १, तृ० २, २, प० १ माँगु। ५. प्र० १ जिय, प्र० २, द्वि० ३, गति, प० १ का।

५८०] १. द्वि० ४, ५ जैस, च० १ मौन। २. प्र० १, २, प० १ पूँछा बहुत न राजा बोला, दीन्ह केवार न केहुँ खोला।

खनिगड़ ओबरी महँ लै[3] राखा। निति उठि दगध होहिं नौ[4] लाखा।
ठाँउ सो साँकर औ अँधियारा। दोसरि करवट लेइ[5] न पारा।
बीछी साँप आनि तहँ मेले। बाँका आनि छुवावहिं हेले।
धरकहिं[6] सँडसी[7] छूटहिं नारी। राति देवस दुख गंजन[8] भारी।
जो दुख कठिन न सहा पहारू। सो अँगवा मानुस सिर भारू।
जो सिर परै सरै सो सहै। कछु न बसाइ काहु कै[9] कहै।

दुख जारै दुख भूँजै दुख खोवै[10] सब लाज।
गाजहि चाहि गरुव[11] दुख दुखी जान जेहि[12] बाज॥

[५८१]

पदुमावति बिनु कंत दुहेली। बिनु जल कँवल सूखि जसि[1] बेली।
गाढ़ि प्रीति पिय मो सौं[2] लाए। ढीली जाइ निचिंत[3] होइ छाए।
कोइ न बहुरा निनहुर[4] देसू। केहि पूछौं को कहै सँदेसू।
जो गौनै सो तहाँ कर होई। जो आवै कछु जान न सोई।
अगम पंथ पिय तहाँ सिधावा। जो रे जाइ सो बहुरि न आवा।
कुँआ ढार जल[5] जैस बिछोवा। डोल भरै नैनन्ह तस[6] रोवा।
लेँजुरि भई नाँह बिनु तोही। कुवाँ परी धरि[7] काढ़हु मोही।

नैन डोल भरि ढारै हिएँ न आगि बुझाइ।
घरी घरी जिउ बहुरै[8] घरी घरी जिउ जाइ॥

---

3. प्र० १ खनि गाढा ओबरी, द्वि० ६ खनि गढ़वा लै लेहि महँ, द्वि० २ खनि गड़ आचर महँ, द्वि० २ खनि गढ़ औ खनि ऊपर, द्वि० ४ खनि गड़ आचर तहँ लै, द्वि० ५ खनि गड़ बाचर तहँ लै। 4. तृ० ३ सौ। 5. तृ० ३ देइ। 6. द्वि० ४ धराहि, द्वि० ५ धरहि, तृ० ३ धरा नहि,। 7. प्र० १ संस हसि, तृ० ३ मँहासा, च० १ सँधालै। 8. च० १ गजन। 9. द्वि० ४, ५ सौं। 10. तृ० ३ होइ, द्वि० ७ जो भै। 11. प्र० १, २, द्वि० ७ अधिक। 12. तृ० ३ दुख।

[५८१] 1. प्र० १, २ मर। 2. प्र० १ सँग न। 3. प्र० १, २ अनचित, द्वि० २ निहचै। 4. द्वि० ४, ५ पनहर, प्र० ४ नैहर। 5. द्वि० २ रहा जन, तृ० ३ टो-जल, द्वि० ७ पानि हो। 6. द्वि० ४, ५, च० १ धनि। 7. प्र० १, २ कुआँ पानि गहि, द्वि० ७ कुआँ परी गहि, तृ० १ च० १ कआँ परा वो। 8. प्र० १, २, द्वि० १, ६, ७ घरी जो बहुरै बरिस बर (पुरुष पर द्वि० १), द्वि० ४, ५ घरी घरी जिउ आवै।

[५८२]

नीर गँभीर कहाँ हो पिया। तुम बिनु फाट सरोवर हिया।
गएहु हेराइ बिरह के[1] हाथा। चलत सरोवर लीन्ह[2] न साथा।
चरत जो पंछि केलि कै नीरा। नीर घटै कोउ आव न तीरा।
कँवल सूख पँखुरी बिहरानी। कन कन होइ मिलि[3] छार उड़ानी।
बिरह रेति[4] कंचन तनु लावा। चून चून कै खेह मिलावा।
कनक जो कन कन होइ बिहराई। पिय पै छार[5] समेटैं आई।
बिरह पवन यह छार सरीरू। छारहु आनि मिला बहु नीरू।

अबहूँ मया कै आइ जियावहु[6] बिथुरी[7] छार समेटि।
नव अवतार होइ नइ काया दरस तुम्हारें भेंटि॥

[५८३]

नैन सीप[1] मोतिन्ह भरि[2] आँसू। टुटि टुटि परहिं करै तन नाँसू[3]।
पदिक पदारथ पदुमिनि नारी। पिय बनु भै कौड़ी बर बारी।
सँग लै गएउ रतन सब जोती। कंचन कया काँचु भै पोती[4]।
बूड़ति हौं दुख उदधि गँभीरा। तुम्ह बिनु कंत लाव को तीरा।
हिएँ बिरह होइ चढ़ा पहारू। जल जोबन सहि सकै न भारू।
जल महँ अगिनि सो जान[5] बिछूना। पाहन जरै होइ जरि[6] चूना।
कवने जतन कंत तुम्ह पावौं। आजु आगि[7] हौं जरत बुझावौं[8]।

---

[५८२] १. प्र० १, २ परेहु केहि। २. प्र० १, २ गएउ। ३. प्र० १ गलि घुलि गई सो, प्र० २ गलि घुलि होइ मिलि, द्वि० ४, ५ गलि घुलि कै मिलि, च० १ गरि गरि होइ मिलि। ४. द्वि० १ डेत, तृ० ३ रैनि। ५. प्र० १ पिउ तेहि पार, प्र० २ पीउ न पार, द्वि० २, च० १ पिउ पै पार। ६. द्वि० १ आवहु आइ मया करि, तृ० ३ अबहु दिस्टि कै आइ जियावहु, द्वि० ३ अबहु जियावहु मया कै। ७. तृ० ३ बिहरी।

[५८३] १. च० १ समुँद। २. द्वि० ४ तस, द्वि० ५ अस। ३. च० १ निन निन परहिं दरै तन माँसू। ४. तृ० ३ मोती। ५. तृ० ३ न जान, द्वि० ७ सो जैस। ६. द्वि० ४, ५ सब। ७. प्र० १, २, द्वि० २, ३, ६, च० १, पं० १ अजर जरत होइ, द्वि० ७ अमर जरत हो। ८. द्वि० १ अजर जरत कै आगि बुझावौं, द्वि० २ सौ उर जरत सो आजु नसावौं।

फवन खंड हौं हेरौं[9] कहाँ मिलहु[10] हो नाहँ।
हेरें कतहुँ न पावौं बसहु तौ[11] हिरदै माहँ॥*

[५८४]

कुंभलनेरि राय देवपालू। राजा केर सतुरु हिय सालू।
ओहँ पुनि[1] सुना कि राजा बाँधा। पाछिल बैर सँवरि छर साँधा।
सतुरु साल तब नेवरै सोई। जौ घर आव सतुरु कै[2] जोई।
दूती एक बिरिध ओहि ठाऊँ। बाँभनि जाति कमोदिनि नाऊँ।
ओहि हँकारि कै बीरा दीन्हा। तोरे बर मैं बर जिय कीन्हा।
तूँ कुमुदिनी कँवल के नियरे। सरग जो चाँद बसै तुव हियरे।
चितउर महँ जो पदुमिनि रानी। कर बर छर सो देहि मोहि आनी।

रूप जगत मनि मोहनि[3] औ पदुमावति नाउँ।
कोटि दरब तोहि देहूँ[4] आनि करसि एक ठाउँ॥

[५८५]

कुमुदिनि कहा देखु मैं सो हौं। मानुस काह देवता मोहौं।
जस काँवरू चमारी लोना[1]। को न छरा पाढ़ित औ टोना।
बिसहर। नाँचहि पाढ़ित मारें। औ धरि मूँदहि घालि पेटारें।
बिरिख चलै पाढ़ित की बोला। नदी उलटि बह परबत डोला।
पाढ़ित हरै पँडित मति गहिरे। औरु को अंध गूँग औ बहिरे।

---

९. प्र० १, २ को गुर अगुआ होइ सखि, द्वि० ६ हेरौं कहाँ होइ तुम्ह कहँ, द्वि० ७ खोजौं कंत कहाँ तुम्ह। १०. द्वि० ४, ५ बंदि। ११. प्र० १, २, द्वि० १, तृ० २ सो।

* प्र० १, २, द्वि० ४, ५, ६, ७, (तृ० १) में इसके अनंतर तीन अतिरिक्त छंद हैं, किंतु इनमें से प्रथम प्र० १ में यथा स्थान आता है।

[५८४] १. द्वि० ४, ५, च० १ पै। २. तृ० ३ आवै रिपु कै। ३. प्र० १, २ मनि आगरि, द्वि० १, ३ तृ० १ संसार मनि, द्वि० २, ६, पं० १ मानिक हिअ, द्वि० ७ मानिक हिअ सो। ४. द्वि० ६ देत तोहि, द्वि० ७ देव तोहि, (तृ० १), तृ० ३ आपौं।

[५८५] १. तृ० २, ३ नोना, द्वि० ६ टोना।

पाढ़ित औसि[2] देवतन्ह लागा। मानुस का पाढ़ित हुति भागा।
पाढ़ित कै सुठि काढ़त बानी[3]। कहाँ जाइ पदुमावति रानी।

दूती बहुत पैज[4] कै बोली पाढ़ित[5] बोल।
जाकर सत्त[6] सुमेरु है[7] लागै जगत न डोल॥

[५८६]

दूती दूत पकवान जो साँधे। मोंतिलडु कीन्ह खिरौरा बाँधे।
माँठ पेराक फेनी औ पापर। भरे बोझ[1] दूती के कापर।
लै पूरी भरि डाल अछूती। चितउर चली पैज कै दूती।
बिरिध बएस जो बाँधै पाऊ[2]। कहाँ सो जोबन कर बेवसाऊ।
तन छुड़ाइ मन बूढ़ न होई। बल न रहा लालच जिय सोई।
कहाँ सो रूप देखि जग राता। कहाँ सो गरब हस्ति जस माँता[3]।
कहाँ सो तीख नैंन तन[4] ठाढ़ा। सब मारि जोबन पुनि[5] काढ़ा।

मुहमद बिरिध जो नै चलै काह चलै[6] भुइँ टोइ।
जोबन रतन हेरान है[7] मकु[8] धरती महँ होइ॥*

[५८७]

आइ कमोदिनि चितउर[1] चढ़ी। जोहन मोहन पाढ़ित पढ़ी।
पूँछि लीन्ह रनिवाँस बरोठा। पैठि पँवरि[2] भीतर जहँ[3] कोठा।

---

२. प्र० १,२, द्वि० २,६ औस। ३. तृ० ३ गाढ़ी सुठि बानी। ४. प्र० १, २ गरब, तृ० ३ पएस। ५. प्र० १, २ तेहि पद्मिना के। ६. तृ० ३ सत्त। ७. द्वि० १ बिधि राखै सुमेरु सत।

[५८६] १. १. प्र० २, द्वि० ६ पहि केमि पूजि, द्वि० २, तृ० २, च० १ पहिरे पूजि, द्वि० ७ पहिरेसि फेरि। २. तृ० ३ बाऊ, द्वि० ७ जाऊ। ३. तृ० १ गाता। ४. तृ० ३ विनु (उर्दू मूल)। ५. प्र० २, द्वि० २ नैन पुनि, द्वि० ३ हिएँ तन। ६. द्वि० १ तृ० ३ जानि। ७. द्वि० ६, ७ जो, तृ० २ दै। ८. द्वि० ३ मत।
* प्र० १ में यह छंद नहीं है, किंतु आगे दूती ने पद्मावती के आगे पकवान खोल कर रखे हैं, इसलिए यह छंद प्रासंगिक है।

[५८७] १. तृ० ३ चितुर (उर्दू मूल तुलना० ३६७.१)। २. द्वि० ७ महल। ३. प्र० १, २ उर, द्वि० १ भी, द्वि० ४, ५ बहु, च० १ भइ, पं० १ बर।

जहँ पदुमावति ससि उजियारी। लै दूती पकवान उतारी।
बाँह पसारि धाइ कै भेंटी। चीन्है नहिं राजा कै बेटी।
हौं बाँमनि जेहि कुमुदिनि नाँऊ। हम तुम्ह उपनी एकहि ठाँऊ।
नाँउ पिता कर दूबे बेनी। सदा पुरोहित गंध्रप सेनी।
तुम्ह बारी तब सिंघल दीपाँ। लीन्हें दूध[४] पिआइउँ छीपाँ[५]।

ठाउँ कीन्ह मैं दोसर[६] कुंभलनेरिहि[७] आइ।
सुनि तुम्ह कहँ चितउर महँ कहिउँ कि भेंटौं जाइ॥

[५८८]

सुनि निस्चै नैहर कै कोई। गरें लागि पदुमावति रोई।
नैन गँगन रवि बिनु अँधियारे। ससि मुख आँसु टूट जनु तारे।
जग अँधियार गहन[१] दिन परा। कब लगि ससि नखतन्ह निसि भरा[२]।
माइ बाप कत जनमी बारी। इइउ तुहूँ न जन्मतहि मारी[३]।
कत बियाहि[४] दुख दीन्ह दुहेला। चितउर पठै[५] कंत बँदि मेला।
अब एक जीवन बादि जो मरना[६]। भएउ पहार जरम दुख भरना।
निसरि न जाइ निलज यह जीऊ। देखौं मंदिल सून बँदि[७] पीऊ।

कुहुँकि जो रोई ससि नखत नैनन्ह रात चकोर।
अबहूँ बोलहिं तेहि कहुँकि[८] कोकिल चातिक[९] मोर॥

[५८९]

कुमुदिनि कंठ लागि सुठि रोई। पुनि लै रोग बारि मुख धोई।

---

४. द्वि० २ सो दीप। ५. द्वि० २, ३, ४, ५, ६, पं० १ साँपाँ।
६. प्र० १ अगुमन। ७. द्वि० ७ सिंघल दीपहि।

[५८८] १. तृ० ३ रैनि, द्वि० ३ कठिन। २. प्र० १ ससि मुख नखतन्ह भरा, प्र० २ ससि नखतन्ह बिसभरा, द्वि० ७ ससि नखतन्ह ससि भरा। ३. प्र० १, २ जनमत काहे न गई तू मारी (नारी प्र० २), द्वि० २ गइउँ गात नव कोइ न मारी, द्वि० ३, ४, तृ० १ च० १ गइउँ तुईं नाहीं रत मारी, तृ० २ गइउँ तूर किन जन्मत मारी, पं० १ तबही गइउँ न जनमत मारी। ४. तृ० १ बिआध। ५. तृ० ३ बैठि। ६. प्र० १ बादि भम मरना, च० १ चाहि भल मरना। ७. प्र० १ नहिं, द्वि० ७ बिनु। ८. तृ० ३ बोल निन्ह कुहुक। ९. द्वि० १ लै चात्रिक कै।

तूँ ससि रूप जगत उजियारी। मुख न झाँपु निसि होइ अँधियारी।
सुनि[1] चकोर कोकिल दुख दुखी। घुँघुची भई नैन कर मुखी।
केती धाइ मरे कोइ बाटा। सो पै पाव जो लिखा लिलाटा।
जो पै लिखा आन नहिं होई। कत धावै कत रोवै कोई।
कत कोइ इंछ कर औ पूजा[2]। जो बिधि लिखा सो होइ न दूजा।
जेत कमोदिनि बैन करेई। तस पदमावति स्रवन न देई।[3]

सेंदुर चीर मैल तस[4] सूखि रहे सब[5] फूल।[6]
जेहिं[7] सिंगार[8] पिउ तजि गा[9] जरम न बहुरे मूल[10]॥[11]*

[५९०]

पुनि[1] पकवान उघारे दूती। पदुमावति नहिं छुवै[2] अछूती।
मोहिं अपने पिय[3] केर खभारू। पान फूल कस[4] होइ अहारू[5]।
मो कहँ फूल भए जस काँटे। बाँटि देहु जेहि चाहहु बाँटे[6]।
रतन छुए जिन्ह हाथन्ह सेंती। औरु न छुऔं सो हाथ सँकेती।
ओहि के[7] रँग तस[8] हाथ मँजीठी। मुकुता लेउँ तौ[9] घुँघुची डीठी।
नैन करमुखे राती[10] काया। मोंति होहिं घुँघुची जेहि छाया।
अस कर ओछ[11] नैन हत्यारे। देखत गा पिउ गहै न पारे।

---

[५८९] १. प्र० १ ससि। २. प्र० १, पं० १ कत कै मरै इंछ कै पूजा। ३. द्वि० ४ तसि पदुमावति उतर न देई, द्वि० ७ में यह पंक्ति नहीं है। ४. प्र० १ चीर तँबोल सा, च० १ सीम मेलि तस। ५. द्वि० ४ सब भूल, द्वि० ५ तस भूल, द्वि० ३, ६, च० १ सिर फूल। ६. द्वि० ७ सेंदुर चोर मैल तस सिर कर करहिं सिंगार। ७. द्वि० ४ जनु, द्वि० ३, ६ पुनि जहँ। ८. द्वि० १ सौं दार। ९. प्र० १ दैगा। १०. द्वि० ४ फूल। ११. द्वि० ७ भोग मानि ले दिन दस करु जोबन तन सार।

* यह छंद प्र० २ में नहीं है, किन्तु पिछले छंद में पद्मावती रोई है, उसकी सांत्वना के लिए यह छंद आवश्यक लगता है।

[५९०] १. द्वि० ४, ५, ६, तृ० ३ तब, द्वि० १ जब। २. द्वि० ७ निन्ह कहै। ३. तृ० ३ जिय। ४. तृ० ३ सक। ५. तृ० १ अधारू। ६. प्र० १, द्वि० २, पं० १ दिस्टि परन लागहिं जनु चाँटे। ७. द्वि० ४, ५ दमकि। ८. प्र० १, द्वि० ४, ५, च० १, पं० १ भए हाथ, द्वि० १ जस आहि। ९. द्वि० ४, ५ यह। १०. तृ० ३ राते (उर्दू मूल)। ११. प्र० १, द्वि० ६ कर मुखे, च० १ कर ऊँच।

का तेहि[१२] छुओं पकावन[१३] गुर करुवा घिउ रूख।
जेहि मिलि होत सवाद रस लै सो गएउ सव[१४] भूख ॥*

[५९१]

कुमुदिनि रही कँवल के पासा। बैरी सुरुज चाँद की आसा।
दिन कुँभिलानि रहै भै चोरू[१]। रैनि विगसि बातन्ह कर मोरू[१]।
कत[२] तूँ बारि रहसि कुँभिलानी।, सूखि बेलि जस पाव न पानी।
अबहीं कँवल करी तूँ बारी। कोंवलि वएस उठत पौनारी।
बैरिनि[३] तोरि मैलि औ रूखी। सरवर माँझ रहसि कत[४] सूखी।
पान[५] बेलि बिधि[६] कया जमाई। सींचत रहै तबहिं पलुहाई।
करु सिंगार सुख फूल तँबोरा[७]। बैठु सिंघासन मूलु हिंडोरा[८]।

हार चीर तन[९] पहिरहि सिर कर करहि सँभार।[१०]
भोग मानि ले दिन दस जोवन के पैसार[११] ॥[१२]*

---

१२. द्वि० १ कस रे, द्वि० ४, ५ का नोर। १३. प्र० २, द्वि० ७ का पकवान छुओं कन्ह हार्थान्ह। १४. प्र० १, द्वि० १, ४, ५ पिउ गएउ सो।

* यह छंद प्र० २ में नहीं है, किन्तु ऊपर दूती के पकवान लाने का उल्लेख है, इसलिए यह छंद प्रसंगोचित है। पं० १ में यह छंद ५९१ के बाद आता है।

[५९१] १. प्र० १ चोरू, विगस्त रैनि बास रस मोरू, तृ० ३ जोरू (उद्दू मूल) रैनि बिगसि बातन्ह कर मोरू। २. प्र० १, च० १ तस, द्वि० १, २, ४, तृ० २, पं० १ कस। ३. द्वि० ४ बैनी, तृ० १ प्रीति, द्वि० ३ चांरू। ४. प्र० १, द्वि० २, ४, ६, ७ कस। ५. तृ० ३ पाप। ६. तृ० ३ जस। ७. द्वि० १ मुख खाँहि तमोरा, तृ० ३, सुरस फूल पटोरा, द्वि० ६ सुरस सुगुध तँमोरा, पं० १ सुरस पहिरि पटोरा। ८. द्वि० ७ (यथा. ५) कत रे बारि रहसि कुँभिलानी, सूखी बेलि जस पानि बिलानी। ९. द्वि० २ ले, द्वि० ३, ६, तृ० १, पं० १ नित। १०. द्वि० ७ मैलि चीर नित पहिरहु मूँख रहहु जसि बेलि। तृ० २ चीर हार नित पहिरहु राग रंग सुख स्वाद। ११. द्वि० ४, ५ गए न बार। १२. द्वि० ७ जेहि सिंगार पिउ तजि गा जनम न बहुरै भूमि। तृ० २ भोग मानि लै दस दिन जोवन के परसाद।

* प्र० २ में यह छंद नहीं है, किन्तु आगे आनेवाले यौवन-संबंधी वाद-विवाद के लिए इस छंद की भूमिका आवश्यक है। पं० १ में यह छंद ५९२ के बाद आता है।

[५९२]

बिहँसि[1] जो कुमुदिनि जोवन कहा। कवल जो बिगसा संपुट गहा।
कुमुदिनि कहु जोबन तेहि पाहाँ। जो आछहि पिय का सुख छाँहाँ।
जाकर छतिवनु बाहर[2] छावा। सो उजार घर को रे बसावा।
अहा जो राजा रैनि[3] अँजोरा[4]।[5] केहि क सिंघासन केहि क हिंडोरा[4]।[6]
को पालक सोवै को[7] माढ़ी। सोवनिहार परा बँदि गाढ़ी।
जेहि दिन गा घर[8] भा अँधियारा। सब सिंगार लै साथ सिधारा।
कया बेलि तब जानौं जामी। सींचनिहार आव घर स्वामी।

तब लगि रहौं मूरि अस जब लहि आव सो कंत।
यहै फूल यह सेंदुर[9] नव होइ उठै बसंत॥*

[५९३]

जनि तूँ बारि करसि अस जीऊ। जौ लहि[1] जोबन तौ लहि[2] पीऊ।
पुरुख सिंघ आपन केहि केरा। एक खाइ[3] दोसरेह मुँह[4] हेरा।
जोवन जल दिन दिन जस घटा। भँवर छपाइ हंस परगटा।
सुभर सरोवर जौ लहि[5] नीरा। बहु आदर पंछी बहु तीरा।

---

[५९२] १. द्वि० ६ मल। २. द्वि० ४, ५ छत्र सो बाहर, द्वि० ६ पिउ बाहर होइ। ३. प्र० १, द्वि० ७, तृ० १ राजा दइउ, द्वि० १ राज सो दइम, द्वि० ४, ५, पं० १ राजा रतन। ४. द्वि० २ उजारा, भँडारा, द्वि० ७ अघोरा, हिंडोरा। ५. तृ० ० अहा जो गवन रैनि बसेरा। (४०४.४) ६. प्र० १, द्वि० ३, पं० १ केहि क सिंगार के पहिर पटोरा, तृ० २ पिय बिन राज पाट केहि केरा, च० १ का सिंगार को फूल हिंडोरा। ७. द्वि० ४ पौटा है, द्वि० ५ पौढ़े को। ८. द्वि० ४, ५ चहुँ दिसि यह घर। ९. प्र० १ यहै फूल यह जोबन, द्वि० १ यहई सूझा नहिं मरि, द्वि० ७ यहै फूल यह सेंदुर मेला।

* प्र० २ में यह छंद नहीं है, किंतु आगे जो यौवन-संबंधी वाद-विवाद है, उसके लिए पद्मावती के उत्तर की यह भूमिका आवश्यक है।

[५९३] १. तृ० ३ जब लगि। २. द्वि० १ तौ लगि(हिंदी मूल), तृ० ३ तब लगि। ३. द्वि० १ आपन खाइ, द्वि० ७ एक छाड़ि। ४. प्र० १ दोसर दह, प्र० २, द्वि० ६ दोसरे कहँ, द्वि० १, परावा, द्वि० २, च० १ दोसर सो, द्वि० ७ दोसरे पहँ, पं० १ दोसर सिउँ। ५. तृ० ३ जब लगि।

नीर घटें पुनि[६] पूँछ न कोई। बेरमि जो लीज हाथ रह सोई।
जब लगि कालिंदिरी बेरामी[७]। पुनि सुरसरि होइ समुँद गरासी[८]।
जोबन भँवर फूल तन तोरा। बिरिध[९] पोंछ[१०] जस हाथ मरोरा।

क्रिस्न जो जोबन करत तन मया गुनत[११] नहिं साथ[१२]।
छरिकै जाइहि यान लै धनुक छाँड़ि[१३] तोहि[१४] हाथ[१५]॥*

[५६४]

कित पावसि पुनि[१] जोबन राता। मैमंत चढ़ा स्याम सिर छाता।
जोबन बिना बिरिध होइ नाऊँ। बिनु जोबन थाकसि[२] सब ठाऊँ।
जोबन हेरत मिलै न हेरा। तेहि बन[३] जाइहि फरिहि न[४] फेरा।
हहि जो केस नग भँवर जो बसा[५]। पुनि बग होहिं जगत सब हँसा[५]।
सँवर सेइ न चित करु[६] सुवा। पुनि पछितासि अंत होइ भुवा।
रूप तोर जग ऊपर लोना। यह जोबन पाहुन जग होना[७]।
भोग बेरास केरि यह बेरा। मानि लेहि पुनि[८] को केहि केरा[९]।

---

६. तृ० ३, च० १ तब। ७. प्र० १ न परासी, प्र० २, द्वि० ४, ५, तृ० १, च० १ होइ बेरासी, द्वि० १ होइ निरासी, द्वि० २ होइ तरासी, द्वि० ६ जोबन आसी, तृ० ३ तरासी। ८. द्वि० ४, ५, तृ० १ परासी। ९. पं० १ बोध। १०. प्र० १, २ दूभ। ११. प्र० १ माइ कंत, प्र० २ माइ कोटि, द्वि० २, च० १, पं० १ मया गुनत, तृ० ३ मया कोप, द्वि० १, ७, च० १ मया कोटि। १२. प्र० १ तेहि सथ्थ, हथ्थ; प्र० २, तृ० ३, च० १, पं० १ तेहि साथ, हाथ; द्वि० २ कछु साथ, हाथ। १३. प्र० १, २, पं० १ रहै। १४. द्वि० ५ दुइ, च० १ तोर।

* प्र० १, २ में इसके अनंतर नौ तथा, द्वि० ४, ५, ६, में उनमें से एक छंद अतिरिक्त है।

[५६४] १. तृ० ३ बिनु, पं० १ तन। २. प्र० १, २, द्वि० ७ थाकर, द्वि० २ ताकसि। ३. द्वि० ३ पुनि। ४. प० १, २ फिरहि न। ५. प्र० १ सुबासा, हाँसा; प्र० २, द्वि० ७ सुअंसा, हंसा; द्वि० १ आरसा, हँसा, पं० १ बसा, परिहँसा। ६. प्र० १ सेव निचिन होइ, द्वि० ७ सेवै चित दै, पं० १ भूलि न करु चित। ७. प्र० १, २, द्वि० १, ३, ६, तृ० १, पं० १ चलि होना, द्वि० ४, ५ जनि होना। ८. तृ० ३ अब। ९. द्वि० ७ तेहि बन जाइहि करिहि न फेरा।

उठत कोंप तरिवर जस तस जोबन तोहि रात।
तौ[10] लहि रंग लेहि रचि पुनि सो पियर ओइ[11] पात ॥*

[५६५]

कुमुदिनि बैन सुनाए जरे[1]। पदुमिनि हिय ॲंगार जस परे[2]।
रॅग[3] ताकर हौं जारौं रचा[4]। आपन तजि जो पराएँ लचा[4]।
दोसर करै जाइ दुइ बाटा। राजा दुइ न होहिं एक पाटा।
जेहि जियँ पेम प्रीत दिन[5] होई। सुख सोहाग सौं निबहा[6] सोई।
जोबन जाउ जाउ सो भॅंवरा। पिय की प्रीति सो जाइ न सॅंवरा।
एहि जग जौं पिय करिहि न फेरा। ओहि जग मिलिहि सो दिन दिन मेरा।
जोबन मोर रतन जहँ पीऊ। बलि सौंपौं[7] यह जोबन जीऊ।
भरथ बिछोउ पिंगला[8] आहि करत जिय दीन्ह[9]।
हौं बिसारि जौं जियति हौं[10] यहै दोस बहु कीन्ह[11]॥*

---

१०. तृ० ३ जौं। ११. प्र० २ जस, द्वि० ४, ५ हो।

* च० १ में यह छंद नहीं है, किंतु छंद ५९५ में पदमावती ने 'रंग रचना' का जो उत्तर दिया है, वह कुमुदिनी के कथन में इस छंद की अंतिम पंक्ति में ही आता है, इसलिए यह छंद प्रसंग में आवश्यक है।

[५९५] १. प्र० १, २, द्वि० ४, ५, तृ० २ सुनत हिय जरी। २. प्र० १, २, द्वि० ४, तृ० २ आगि आंस परी, द्वि० ५, ७ आगि जनु परी। ३. द्वि० १ मॉंग। ४. प्र० १, २, द्वि० १ काचा, रांचा। ५. प्र० १, २ जेहि के जिय पिराति हर, द्वि० १ जेहि सो जिय पिरीत नहिं, द्वि० २ जेहि के जिय पिरीत बहु, द्वि० ६ जेहि जिय पिय कै प्रीति दिढ, द्वि० ७ जेहि के जिय पिय कै हर, तृ० ३ जेहि के जीय प्रीति पै। ६. द्वि० ४, ५ बैठा। ७. तृ० १ सो नाउँ। ८. द्वि० ४, ५ भरभरि बिछोह पिंगला, द्वि० १ भरथ बिछोही पिंगला, द्वि० ७ भरथरी बिछोइ जब। ९. द्वि० ७ पिंगला कन जिउ दीन्ह। १०. प्र० १, २, द्वि० २, ३, ४, ५, तृ० २, पं० १ हौं पापिनि (हौं पिया—द्वि० २, दिन पिया—पं० १) जो जिअति हौं, द्वि० १, मैं बिसारि जौं जीय तें, तृ० ३ हौं बिसारि जो हनिवन, द्वि० ६, तृ० २ हौं पिय बाज जो जिअति हौं, द्वि० ७ हौं पापिनि पिमि जिय धरी। ११. प्र० १, २, द्वि० २, ३, ४, ५, ६, तृ० १, २, पं० १ इहै दोस मैं कीन्ह, द्वि० १ इहै दोसर कीन्ह, द्वि० ७ दोस लाहि का दीन्ह।

* च० १ में यह छंद नहीं है, किन्तु आगे के छंद में कुमुदिनी का वचन है, इसलिए उसके पूर्व पदमावती का वचन जैसा इस छंद में है, होना चाहिए।

[५९६]

पदुमावति सो कवनि रसोई। जेहि परकार न दोसर होई।
रस दोसर जेहि जीभ बईठा। सो पै जान रस खट्टा मीठा।
भवर बास बहु फूलन्ह लेई। फूल बास बहु भँवरन्ह देई।
तैं रस परम न दोसर पावा। तिन्ह जाना जिन्ह लीन्ह परावा।
एक चुरू रस[1] भरै न हिया। जौं लहि नहिं भरि[2]दोसर पिया[3]।
तोर जोबन जस समुँद हिलोरा। देखि देखि जिउ बूड़ै मोरा।
दिन क[4] ओर नहिं पाइअ बैसे[5]। जरम ओर तुहँ पाउब कैसें।

देखि धनुक तोर नैना मोहि लागहिं बिख बान।
बिहँसि कँवल जौं मानैं भँवर मिलावौं आनि॥*

[५९७]

कुमुदिनि तूँ बैरिनि नहिं धाई। मुँह मसि बोलि चढ़ावै[1] आई।
निरमल जगत नीर कस नामा। जौं मसि परै सोउ होइ स्यामा।
जहँवाँ धरम पाप तहँ[2] दीसा। कनक सोहाग माँझ जस सीसा।
जो मसि परी[3] भई ससि[4] कारी। सो मसि लाइ देसि मोहि गारी।
कापर महँ न छूट मसि अंकू। सो मोहि लाए अैस[5] कलंकू।

---

[५९६] प्र० १ एक जो लै रस, प्र० २ एक चोलि रस, द्वि० १ एक अँजुली जल, द्वि० २ एक अ अनि रस, तृ० ३ एक जो दरस, द्वि० ६ एक चुलू जल, द्वि० ७ एक अंजलि जस, तृ० १ एक फू रस, द्वि० ३ एक कचोर रस। २. प्र० १, २ पल, द्वि० ४, ५ फिर। ३. प्र० १, २ कीया। ४. द्वि० ५ रंग, द्वि० ६ एक। ५. द्वि० १ जैस, तृ० ३ अैने।

* च० १ में यह छंद नहीं है, किन्तु आगे के छंद में इस छंद में आए हुए 'भँवर मिलावौं आनि' का उत्तर है, इसलिए यह भी प्रसंग में आवश्यक है।

[५९७] १. प्र० १, २, द्वि० १, ६, तृ० १, २, पं० १ सुनावसि। २. प्र० १, २, पं० १ मसि, द्वि० १, ४ नहिं, द्वि० ३ तम। ३. द्वि० ३ बरन। ४. तृ० ३ मसि। ५. प्र० १, पं० १ सो मसि कैसें छूट कलंकू, द्वि० १ सो मसि लाए होसि कलंकू, द्वि० २ सो मसि लावसि देसि कलंकू, द्वि० ३, ४, ५, तृ० २, सो मसि लाइ मोहि देसि कलंकू, द्वि० ७ सो मसि लाइ मोहि दीन्ह कलंकू।

स्यामि भँवर मोर[6] सूरुज करा। औरु जो भँवर स्याम मसि भरा।
कँवल भँवर रवि देखै आँखी[8]। चंदन बास न बैठै माँखी।

स्यामि समुँद मोर निरमल[9] रतनसेनि जग सेनि।
दोसर सरि जो कहावै तस बिलाइ जस[10] फेनि॥*

[५६८]

पदुमिनि बिनु[1] मसि बोलु न बैना। सो मसि चित्र[2] दुहूँ तोर नैना[3]।
मसि सिंगार काजर सब[4] बोला। मसि क बुंद तिल सोह कपोला।
लोना सोइ जहाँ मसि रेखा। मसि पुतरिन्ह[5] निरमल जग[6] देखा।[7]
जो मसि घालि नैन दुहुँ लीन्ही। सो मसि फेहर जाइ न कीन्ही।
मसि मुंद्रा दुहुँ कुच उपराहीं। मसि भँवरा जस कँवल बसाहीं[8]।
मसि केसन्हि मसि भौंह[9] उरेही।[10] मसि बिनु दसन[11] सोभ नहिं देही।
सो कस सेत जहाँ मसि नाहीं। सो कस पिंड न जेहि परिछाहीं।

अस देवपाल राउ मसि[12] छत्र धरा सिर फेरि।
चितउर राज बिसरि गा[13] गइउँ जो कुंभलनेरि॥

[५६६]

सुनि देवपाल जो कुंभलनेरी। कँवल जो नैन भँवर धनि फेरी।

---

६. तृ० ३ मोर भँवर जस। ७. प्र० १, २, पं० १ और न भव भँवर। ८. प्र० १, २, प० १ दोसर भँवर न देखौं आँखी। ९. द्वि० १ स्यामि भँवर मोर निरमल। १०. प्र० २ सें बिलाइ होइ।

* च० १ में यह छंद नहीं है, किन्तु आगे के छंद में इस छंद के 'मसि' को लेकर कुमुदिनी ने उत्तर दिया है, इस लिए यह छंद प्रसंग में आवश्यक है।

[५६८] १. द्वि० ४, ५ पुनि। २. द्वि० ४, ५ देखु, तृ० १ भँवर, तृ० २ दसम। ३. तृ० २ सोह मुख बैना। ४. तृ० ३ ससि। ५. पं० १ सोभा। ६. द्वि० ७ नैनन्हि महँ। ७. प्र० १, २ मसि सोभा कै रेहु जग देखा, मसि कोरी (गोनी—प्र० २) रोमावलि रेखा। ८. प्र० १, २, द्वि० ७ चढ़ि कँवल भुनाहीं, द्वि० २ जस कँवल सनाहीं, द्वि० ३ चढ़ि कँवल भँवाहीं, द्वि० ४, ५, च० १ जस कँवल भँवाही। ९. द्वि० ७ नैन। १०. प्र० १,२ पं० १ मसु भौंहैं जेउँ धनुक उरेहीं। ११. द्वि० १ बदन, तृ० ३ दरस। १२. द्वि० ४, ५ तम। १३. द्वि० ५, तृ० ३, पं० १ निमर का (उर्दू मूल)।

मोरे पिय[1] क सतुरु देवपालू । सो कत पूज सिघ सरि भालू ।
दोग्ध भरा तन चेतनि[2] पैसा[3] । तेहि क संदेस सुनावहि वेसा[3] ।
सोन नदी अस मोर पिय गरुवा । पाहन होइ परै जौं हरुवा ।
जेहि ऊपर अस गरुवा पीऊ । सो कस डोल डोलाएँ जीऊ ।
फेरत नैन चेरि सौं[4] छूटीं[5] । भै कूटनि कुटनी[6] तसि कूटी ।
कान नाक काटे मसि लाई[7] । बहु रिसि काढ़ि दुवार नँघाई[8] ।

मुहमद गरुए जो विधि गढ़े[1] का कोई तिन्ह फूँक ।
जिन्हके भार जगत थिर उड़हिं न पवन के मूँक ॥

[६००]

रानी धरमसार पुनि[1] साजा । बंदि मोरत जेहिं[2] पावै राजा ।
जाँवत परदेसी चलि आवा । अन्न दान[3] पय पानि[4] पियावा ।
जोगी जती आव जेत कंथी । पूँछै पियहि जान कोइ पथी ।
देस जो दान बाँह भइ ऊँची । जाइ साहि पहँ बात पहूँची ।
पातर एक हुती जोगि सुवाँगी[5] । साहि अखारें हुति ओहि माँगी ।
जोगिनि भेस वियोगिनि कीन्हा । सिंगी सबद मूल तँतु लीन्हा ।
पदुमिनि कहँ पठई कै[6] जोगिनि । वेगि आनु कै विरह[7] वियोगिनि ।

---

[५९९] १. प्र० १ पति । २ प्र० २ तन जमना, द्वि० १ तन नियते, तृ० ३ तन चेरटन, द्वि० ५ जिय तज, द्वि० ७ जावर नरा, तृ० २ चितवत । ३. द्वि० १, २, ४, ५ किया, सिया, तृ० २ सँदेसा, बेसा । ४. द्वि० ७ मर । ५. तृ० ३ टूटी । ६. द्वि० १, तृ० ३ कुटनी (उर्दू मूल) । ७. द्वि० १ नाक काटि मसि दीन्हि लगाई । द्वि० १ रिससि दीन्ह दुआर नँधाई, तृ० ३ बिहि असि (उर्दू मूल) काढ़ि दुआर नँघाई । ८. द्वि० ४, ५ निखे ।

[६००] १. प्र० १, २ पव । २. प्र० १, २ मधु, द्वि० १ तेहि । ३. प्र० १, २ अन्न दीन्ह । ४. प्र० १, २, द्वि० ४, ७, पं० १ औ, द्वि० ६ सो । ५. प्र० १, २ जो हुती सँयोगी, तृ० ३ हुती जोगि सुबानी, द्वि० ७ भी जोगिनि स्वाँगी । ६. प्र० १, २ पं० १ पास जाइ रे, द्वि० ६, ७, च० १ पहँ पठई कै । ७. प्र० १, २, पं० १ हरि मेर रे ।

चतुर कला[८] मन मोहनि परकाया परवेस।
आइ चढ़ी[९] चितउर गढ़ होइ जोगिनि के भेस।।*

[६०१]

माँगत राजबार चलि आई। भीतर चेरिन्ह बात जनाई।
जोगिनि एक बार है कोई। माँगै जैस बियोगिनि होई।
अबहिं नवल जोबन तप[१] लीन्हे। फारि पटोरा[२] कंथा कीन्हे।
बिरह भभूति जटा बैरागी। छाला काँध जाप कँठ[३] लागी।
मुंद्रा स्रवन डँड न[४] थिर जीऊ। तन तिरसूल अधारी पीऊ।
छात न छाँह[५] धूप जस मरई। पायन पाँवरि भूँभुरि जरई।
सिंगी सबद धधारी करा। जरै सो ठाँउ पाँउ जहँ[६] धरा।

किंगिरी गहें बियोग बजावै बारहिं[७] बार सुनाव।
नैन चक्र[८] चारिहुँ दिसि हेरै[९] दहुँ दरसन कब[१०] पाव।।

[६०२]

सुनि पदुमावति मँदिल बोलाई। पूँछी कवन देस सों[१] आई।
तरुनि बैस तुम्ह छाज[२] न जोगू। केहि कारन अस कीन्ह बियोगू।
कहेसि बिरह दुख जान न कोई। बिरहिनि जान बिरह जेहि होई।
कंत हमार गए परदेसा। तेहि कारन हम जोगिनि भेसा।
काकर जिउ जोवन औ देहा। जौं पिय गएउ भएउ सब खेहा।

---

८. प्र० २ कला। ९. प्र० २ सची. द्वि० १ पनी।

* प्र० १ में इसके अनंतर आठ अतिरिक्त छंद हैं, जिनमें से तीन प्र० २ में भी यहीं हैं, किंतु शेष पाँच अगले छंद के बाद हैं।

[६०१] १. तृ० ३ तँत (उर्दू मल)। २. तृ० ३ पटोर जो। ३. प्र० १, २, काँध कंठ जप लागी, द्वि० १ छाँह भभूत सुहागी। ४. तृ० ३ डंड, द्वि० ४, ५ नहीं। ५. तृ० ३ छाता छाँह। ६. द्वि० ४, ५ जहाँ पग। ७. द्वि० ७ बारम बार। ८. तृ० ३ चक्र। ९. प्र० १, द्वि० १ दिसि दिसि चितवै, द्वि० ६ दिसि फेरै। १०. प्र० २, पं० १ यहै।

[६०२] १. द्वि० ४, ५, तृ० २, च० १ हुत। २. तृ० ३ फाब।

फारि पटोर कीन्ह मैं कंथा। जहँ पिउ मिलै लेहुँ सो[3] पंथा।
फिरा करौं चहुँ चक्र पुकारा। जटा परीं को सीस सँभारा।

हिरदै भीतर पिउ बसै मिलै न[4] पूँछौं[5] काहि।
सून जगत सब लागै[6] पिय[7] बिनु किछौ न आहि।

[६०३]

स्रवन छेदि मुंद्रा मैं[1] मेले[2]। सबद ओनाउँ[3] कहाँ दहुँ खेले।
तेहि बियोग सिंगी नित पूरौं। बार बार होइ किंगरी मूरौं।
को मोहिं लै पिउ के डँड[4] लावै। परम अधारी[5] बात जनावै।
पाँवरि टूटि चलत गा[6] छाला। मन न मरै तन जोबन वाला।
गइँउ पयाग[7] मिला नहिं पीऊ। करवत लीन्ह दीन्ह बलि जीऊ।
जाइ बनारसि जारिउँ कया[8]। पारिउँ पिंड निथहुरे गया[10]।
जगरनाथ जगरन कै आई। पुनि दुवारिका जाइ अन्हाई[11]।

जाइ केदार दाग तन कीन्हेउ[12] तहँ न[13] मिला[14] तन आँकि।
ढूँढि अजोध्या सब फिरिउँ[15] सरग दुवारी झाँकि॥*

---

३. तृ० ३ लीन्ह (उर्दू मूल)। ४. प्र० १, २, द्वि० २, तृ० १ पुकारा, सिर को निरवारा, प० १ पुकारौं, गिउ सिर पर डारौं। ५. तृ० ३ तौ। ६. द्वि० ७ जग मोहि। ७. द्वि० १ तेहि, द्वि० ५, ६ बहि।

[६०३] १. द्वि० ४, ५ मैंन मुदरा। २. प्र० १, द्वि० ७ मेला, मेला। ३. च० १ मोहै नहिं। ४. द्वि० ४, ५ य ठ। ५. तृ० ३ विरस धँधारी। ६. प्र० १, २, द्वि० ७ चलत पग, तृ० ३ परत गा। ७. प्र० १, २ गया तहँ। ८. द्वि० २, तृ० २ लिण्डउँ, तृ० ३ कीन्ह। ९. तृ० ३ दिया। १०. द्वि० १, ६ न बहुरा गया (काया—द्वि० १) तृ० २ न बहुरे दिया, च० १ न पारउँ गया,। ११. प्र० २, २ बहुरि द्वारिका, द्वि० ७ पुरी द्वारिका, तृ० ३ पुनि मो द्वारिका। १२. द्वि० १ हिए, द्वि० ३ दीन्हेउँ। १३. द्वि० २, पं० १ तेहि न, द्वि० ६, ७ तौन, तृ० १ नहुँ न, तृ० ३ मीन। १४. तृ० २ दीन्हेउँ तेहि बिन। १५. द्वि० १ अजोध्या आइउँ, च० १, पं० १ अवध फिरि आइउँ।

* प्र० १, २, द्वि० ४, ५, ६, ७ में इसके अनंतर एक छंद अतिरिक्त है।

[६०४]

बन बन सब हेरेउँ बनखंडा[1]। जल जल नदी अठारह गंडा।
चौंसठि तिर्थ कीन्ह सब ठाँऊ। लेत फिरौं ओहि पिय कर नाऊँ।
ढीली सब हेरेउँ तुरुकानू। औ सुलतान केर बँदिवानू।
रतनसेनि देखेउँ बँदि माहाँ। जरै धूप खिन पाव न छाहाँ।
का सो भोग[2] जेहि अंत न केऊ[3]। एहि दुख लिहें भई[4] सुखदेऊ।
सब राजा बाँधे औ दागे[6]। जोगिनि जानि राजा पाँ लागे।
ढीली नाउँ न जानहि ढीली। सुठि बँदि गाढ़ न निकसै कीली।

देखि दगध दुख ताकर अबहूँ कया[7] न जीउ[8]।
सो धनि जियत[9] किमि आछै[10] जेहिक असैं बँदि पीउ॥

[६०५]

पदुमावति जौं सुना बँदि पीऊ। परा अगिनि महँ जानहुँ[1] घीऊ।
दौरि पायँ जोगिनि के परी। उठी आगि जोगिनि पुनि जरी।
पाय देइ दुइ नैनन्ह लावौं। लै चलु तहाँ कंत जहँ पावौं।
जिन्ह नैनन्ह देखा तैं पीऊ। सो मोहि देखाउ देउँ बलि जीऊ।
सत औ धरम देउँ सब तोही। पिय की बात कही जेइ[2] मोही॥

---

[६०४] [1]. प्र० १, २ नौ खंड। [2]. प्र०१, २ का तेहि भोग, द्वि० १ का सो भोजन, तृ० ३ का सो भोग, च० १ का सो फूल। [3]. प्र० १, २ जेहि अंत न लेख, द्वि० १ बिहेउ न आंटा, द्वि० ७ जेहि अंत न नोखू। [4]. तृ० ३ लेन गए (उर्दू मूल), द्वि० ४, ५, तृ० २ लै सो गएउ, द्वि० ६ लिए भएउँ, द्वि० ३ जार भए। [5]. प्र० १, २ जेहि दरस लेन रहै मढ़िदेवा, द्वि० १ सो दुख देखि भएउ सुठि जौंना, द्वि० ७ का सो भोग जेहि कया न पोखू। [6]. तृ० २ दागे। [7]. प्र० १, २ अजहूँ गएउ, द्वि० ७ अबहु गँवावा। [8]. पं० १ जौ नहँवा पिउ पउतिन्ह हेरत देनिउँ जीउ। [9]. प्र० १, २ सो रांविनि, द्वि० ४, ५, तृ० २, पं० १ सो धनि कैसे, द्वि० ७, तृ० १ सो कहुँ जियत। [10]. द्वि० ४, ५, तृ० २, पं० १ दहुँ जिअै, तृ० ३ किमि औछे।

[६०५] [1]. प्र० १, २ परा हुतासन मई जनु, द्वि० ७ परा अगिनि मउँ जैसें। [2]. प्र० १ आइ कहि, प्र० २, द्वि० २ कहसि है।

तूँ मोरि गुरू तोरि हौं चेली। भूली फिरत पंथ जेइँ मेली[3]।
डंड एक माया करु मोरें। जोगिनि होउँ चलौं सँग तोरें।

साखिन्ह कहा पदुमावति रानी[4] करहु न परगट भेस[5]।
जोगी सोइ गुपुत मन जोगवै[6] लै गुरु कर[7] उपदेस ॥

[६०६]

भीखि लेहि जोगिनि फिर माँगू। कंत न पाइअ किए सँवागू।
एइ विधि जोग वियोग जो सहा। जैसें पिउ राखै तिमि रहा।
गिरिही महँ भै[1] रहै उदासा[2]। अंचल खप्पर सिंगी स्वाँसा[2]।
रहै पेम मन अरुझा लटा। विरह धँधारि परहिं सिर[3]जटा।
नैन चक्र हेरै[4] पिय पंथा। कया जो कापर[5] सोई कंथा।
छाला पुहुमि गँगन सिर छाता। रंग रकत रह हिरदै राता।
मन माला फेरत तंत ओहीं। पाँचौं भूत भसम तन[6] होहीं।

कुंडल सो जो सुनै पिय बैना पाँवरि पाय परेहु।
डँड एक जाहु[7] गोरा बादिल पहँ[8] जाइ अधारी लेहु[9] ॥

[६०७]

सखिन्ह बुझाई दगधि अपारा। गै गोरा बादिल के बारा।

---

3. प्र० १ कंत बँदि मेली। ४. प्र० १, २ पदुमावति, पं०१ तुम्ह रानी। ५. प्र० २ रानी करहु नट भेस। ६. प्र० १, पं० १ मन, द्वि० ७ मन जानै। ७. प्र० १ जोगवै करि, द्वि० ६ लैकै गुरु, द्वि० ७ जो गुरु कर, पं० १ दै कर गुरु।

[६०६] १. प्र० १, २ तन गिरही महँ, द्वि० ७ कापरन्ह महँ भै, च० १ घरही महँ भै। २. प्र० १, २, द्वि० ७ उदासा, अंजुरी खप्पर सिंगी स्वासा, द्वि० २, तृ० ३ उदासी, अँचल सिंगी मुख स्वाँसी। ३. (तृ० १), पं० १ धँधारी झलकै, च० १ धधार परहि सिर, तृ० ३ धँधोर परहि सिर। ४. द्वि० १ हेरहु पिय, तृ० ३ हेरत पिय, द्वि० ४, ५ लावै लै, च० २ लावै पिय। ५. द्वि० ७ ध्यान जो खप्पर। ६. प्र० १ जरि, द्वि० २ सँग, द्वि० ६ तव। ७. प्र० १ चलि, प्र० २ चलहि, द्वि० ६ चाहि। ८. प्र० १ गढ़। ९. द्वि० १ यइहु अधारी देहु।

कँवल चरन भुइ जरम न धरे। जात तहाँ लगि छाला परे।
निसरि आए सुनि छत्री दोऊ। तस काँपे जस काँप न कोऊ।
केस छोरि चरनन्ह रज झारे। कहाँ पाउ पदुमावति धारे।
राजा आनि पाट सोनवानी। बिरह बियोग न बैठी रानी।
चँवरधारि होइ[1] चँवर डोलावहिं। माथें छाहँ[2] रजायसु पावहिं।
उलटि बहा गंगा कर पानी। सेवक बार न आवै[3] रानी।

का अस कीन्ह कस्ट जिय जो तुम्ह करत न छाज।
अग्याँ होइ बेगि कै[4] जीव तुम्हारे काज॥

[६०८]

कहै रोइ पदुमावति बाता। नैनन्ह रकत देखि जग राता।
उलथि समुँद जस मानिक भरे। रोई रुहिर आँसु तस ढरे।
रतन के रंग नैन पै[1] वारौं। रती रती कै लोहू ढारौं।
कँवलन्ह ऊपर भवर उड़ावौं। सुरुज जहाँ तहाँ लै लावौं।
हिय कै हरद बदन कै लोहू। जिउ बलि देउँ सो सँवरि बिछोहू।
परहिं[2] आँसु सावन जस नीरू। हरियर भुइँ कुसुंभि तन चीरू[3]।
चढ़े भुवंग लुरहिं लट केसा। भै रोवत जोगिनि[4] के भेसा।

बीर बहूटी होइ चली तबहुँ रहहिं न आँसु[5]।
नैनन्हि पथ[6] न सूझै लागेउ भादवँ मासु॥*

---

[६०७] १. द्वि० ४, ५ चँवर ढार होइ, तृ० ३ चँवर ढारि कै। २. प्र० १, , द्वि० २, (तृ० १), पं० १ छात, द्वि० ४, ५ छाथ। ३. प्र० १, २, तृ० २, पं० १ आव किमि, द्वि० ३ जो आवै। ४. प्र० १, द्वि० ४, ६, (तृ० १), तृ० २, प० १ मा, प्र० २ तुम्ह आपहु, द्वि० १ तस, द्वि० २ तिन्ह।

[६०८] १. प्र० १ जीउ बलि, प्र० २ नैन भरइ, द्वि० ७ नैन येह। २. तृ० ३ बिरह। ३. तृ० ३ तेहि जन अग लाग सर चारू। ४. प्र० १ मालति ५. द्वि० ७ राखे रहहिं न मांसु। ६ तृ० -, प० १ पथहि पंथ, तृ० ३ नैनहि नीर।

* प्र० १, २ में इसके अनंतर दो अतिरिक्त छंद हैं।

का[9] बरखा अगस्ति की डीठी। परे पलानि तुरंगम[10] पीठी।
बेधौं राहु छड़ावौं सूरू[11]। रहै न दुख कर मूल अँकूरू।

वह सूरज तुम्ह ससि सरद[12] आनि मिलावहिं सोइ।
तस दुख महँ सुख उपनै रैनि[13] माँझ दिन होइ॥

[६११]

लेहु[1] पान बादिल औ गोरा। केहि लै देउँ उपम तुम्ह जोरा[2]।
तुम्ह सावँत नहिं सरवरि कोऊ। तुम्ह अंगद हनिवँत सम[3] दोऊ।
तुम्ह बलबीर[4] जाज[5] जगदेऊ। तुम्ह मुस्टिक[6] औ मालकँडेऊ[7]।
तुम्ह अरजुन औ भीम भुआरा। तुम्ह नल नील मेंड़ देनिहारा।
तुम्ह टारन[8] भारन जग जाने। तुम्ह सो परमु[9] औ करन बखाने।
तुम्ह मोरे बादिल औ गोरा। काकर मुख हेरौं बँदिछोरा।
जस हनिवँत राघौ बँदि छोरी। तस तुम्ह छोरि मिलावहु जोरी।

जैसें जरत लखा घिहँ[10] साहस कीन्हेउ[11] भीवँ।
जरत खंभ तस काढ़हु[12] कै पुरुखारथ जीवँ॥*

---

९. द्वि० १ गौं, द्वि० ३ गह, द्वि० ४, ५, तृ० ३ गा, तृ० २ गाइ। १०. तृ० ३ तुरँकी। ११. प्र० १, २, पं० १ बेधा राहु छूट जब (जम—प्र० १) सूरू। १२. द्वि० १, ४, ५ ददन, च० १ कँवन। १३. द्वि० ७ जस रैनि।

[६११] १. प्र० १ लीन्ह। २. प्र० १ ओरा। ३. प्र० १ दर, द्वि० ७ सरि। ४. तृ० ३ नल नील। ५. प्र० १, २ जाजा, द्वि० १ बाज, द्वि० ४, ५ जजा, च० १ चाच, पं० १ छाज। ६ तृ० ३ नरिनक (उर्दू मूल), द्वि० ४ संवर, द्वि० ५ सं।। ७. प्र० १, २, पं० १ गँगेऊ। ८. प्र० १ जारन, तृ० ३, च० १ तारन (उर्दू मूल)। ९. तृ० ३ सोप रस (उर्दू मूल), तृ० १ सापरस। १०. प्र० २, तृ० ३ लखा गिरि, द्वि० ४, ५ लखा घर, च० १ लाख गृह। ११. तृ० ३ कीन्ही। १२. तृ० ३ काढ़ेन्ह (उर्दू मूल)।

* प्र० १, २, द्वि० ४, ६, ६, ७ में इसके अनंतर एक छंद अतिरिक्त है, और तृ० २ में इस छंद की तीसरी और चौथी पंक्तियों के बीच में तीन अन्य छंदों की अतिरिक्त पंक्तियाँ हैं।

[६०९]

तुम्ह गोरा बादिल खँभ दोऊ। जस भारथ तुम्ह[1] और न कोऊ।
दुख बिरिखा अब रहै न राखा। मूल पतार सरग भइ[2] साखा।
छाया रही सकल महि पूरी। बिरह बेलि होइ बाढ़ि खजूरी।
तेहि दुख केत[3] बिरिख बन[4] बाढ़े। सीस उघारें रोवहिं ठाढ़े।
पुहुमी पूरि सायर दुख पाटा। कौड़ी भई बिहरि[5] हिय फाटा।
बिहरा हिए[6] खजूरि क बिया। बिहरै नहिं यह[7] पाहन हिया।
पिय जहँ बंदि जोगिनि होइ धावौं[8]। हौं होइ बंदि पियहि मोकरावौं।

सूरज गहन गरासा कवँल न बैठे पाट।
महूँ पंथ तेहि गवनब कंत गए जेहि बाट॥

[६१०]

गोरा बादिल दुवौ पसीजे। रोवत रुहिर सीस पाँ[1] भीजे।
हम राजा सौं इहै कोहाने। तुम्ह न मिलहु धरि[2] येहु[2] तुरुकाने[3]।
जो मत सुनि हम आइ कोहाई। सो निआन हम माँथें आई।
जब लगि जियहिं न ताकहिं दोहू। स्यामि जिअै[4] कस जोगिनि होहू[5]।
उअै अगस्ति हस्ति घन[7] गाजा। नीर घटा घर[8] आइहि राजा।

[६०९] १. प्र० १ जैन भार तुम्ह, प्र० २, द्वि० ६, च० १ जस भा रन तुम्ह, द्वि० १ जस भारथ तुम, द्वि० ४ जस रन भारथ, द्वि० ५ जस रन भारथ तुम्ह। २. प्र० १ मूल रहीं सो उहै नां, तृ० ३ मूल पतार सरग भुई। ३. प्र० १, २, द्वि० २,४,५, ६, च० १ लेत, तृ० ३ तेल, द्वि० ७ दहे, तृ० २, द्वि० ३ लपटि। ४. प्र० १ बिरिख बर, (?) पलास तें। ५. प्र० १ बिरहिनि। ६. प्र० १ बिरहा हिया, तृ० ३ बिरहा हिएँ। ७. प्र० १, २, पं० १ नबहुँ न बिहरा। ८. प्र० २ जोगिनि होउँ कंत घर पावौं।

[६१०] १. प्र० १ आँसु तन, प्र० २, प० १ बूड़ि तनु, द्वि० १ सीस तस, द्वि० ४, ५ सास लहि, द्वि० ३ सास पाग। २. प्र० १ धर पै, द्वि० ४ धरे, च० १ धपई, पं० १ धरिए। ३. द्वि० २ सुलताने। ४. द्वि० ४, ५ आगहिं। ५. प्र० १, २, द्वि० १, २, ३, ६, तृ० २ मियत, द्वि० ४, ५, तृ० ३ जोंइ, तृ० १ दाज। ६. द्वि० ४, ५ यस जोगिनि होहू, च० १ कस जोगिनि रोहू। ७. प्र० १, २, द्वि० ४, ५, तृ० १, च० १ अब, तृ० २ पुनि। ८. प्र० १, २ पं० १ अब।

का[9] बरखा अगस्ति की डीठी। परे पलानि तुरंगम[10] पीठी।
बेधौं राहु छड़ावौं सूरू[11]। रहै न दुख कर मूल अँकूरू।

वह सूरज तुम्ह ससि सरद[12] आनि मिलावहिं सोइ।
तस दुख महँ सुख उपनै रैनि[13] माँझ दिन होइ॥

[६११]

लेहु[1] पान बादिल औ गोरा। केहि लै देउँ उपमा तुम्ह जोरा[2]।
तुम्ह सावँत नहिं सरवरि कोऊ। तुम्ह अंगद हनिवँत सम[3] दोऊ।
तुम्ह बलबीर[4] जाज[5] जगदेऊ। तुम्ह मुस्टिक[6] औ मालकँडेऊ[7]।
तुम्ह अरजुन औ भीम भुआरा। तुम्ह नल नील मेंड़ देनिहारा।
तुम्ह टारन[8] भारन जग जाने। तुम्ह सो परसु[9] औ करन बखाने।
तुम्ह मोरे बादिल औ गोरा। काकर मुख हेरौं बदिछोरा।
जस हनिवँत राघौ बँदि छोरी। तस तुम्ह छोरि मिलावहु जोरी।

जैसें जरत लखा घिहँ[10] साहस कीन्हेउ[11] भीवँ।
जरत खंभ तस कादहु[12] कै पुरुखारथ जीवँ॥*

---

९. द्वि० १ गौ, द्वि० ३ गह, द्वि० ४, ५, तृ० ३ गा, तृ० २ गाइ। १०. तृ० ३ तुरँकी। ११. प्र० १, २, पं० १ बेधा राहु छूट अब (जस—प्र० १) मूरू। १२. द्वि० १, ४, ५ मदन, च० १ कँवल। १३. द्वि० ७ बस रैनि।

[६११] १. प्र० २ लीन्ह। २. प्र० १ ओरा। ३. प्र० १ बर, द्वि० ७ सरि। ४. तृ० ३ नल नील। ५. प्र० १, २ जाजा, द्वि० १ बाजा, द्वि० ४, ५ जजा, च० १ चाच, पं० १ छाज। ६ तृ० ३ मस्तिक (उर्दू मूल), द्वि० ४ संकर, द्वि० ५ सं।। ७. प्र० १, २, पं० १ गँगेऊ। ८. प्र० १ जारन, तृ० ३, च० १ तारन (उर्दू मूल)। ९. तृ० ३ सोप रस (उर्दू मूल), तृ० १ सापरस। १०. प्र० २, तृ० ३ लगा गिरि, द्वि० ४, ५ लखा घर, च० १ लाख गृह। ११. तृ० ३ कीन्हौ। १२. तृ० ३ कादेन्ह (उर्दू मूल)।

* प्र० १, २, द्वि० ४, ५, ६, ७ में इसके अनंतर एक छंद अतिरिक्त है, और तृ० २ मे इस छंद की तीसरी और चौथी पंक्तियों के बीच में तीन अन्य छंदों की अतिरिक्त पंक्तियाँ हैं।

[६१२]

गोरा बादिल बीरा लीन्हा। जस अंगद हनिवँत बर कीन्हा।[1]
साजि[2] सिंहासन तानहिं छातू। तुम्ह माँथें जुग जुग[3] अहिवातू।
कवँल चरन भुइँ धरत दुखावहु[4]। चढ़हु सुखासन[5] मँदिल सिधावहु[6]।
सुनि सूरज कवँलहि जिय जागा। केसरि बरन बोल[7] हियँ लागा।
जनु निसि महँ रबि दीन्ह देखाई। भा उदोत मसि[9] गई बिलाई[10]।
चढ़ि सो सिंघासन झमकत चली। जानहुँ दुइज चाँद निरमली।
औ सँग सखी कमोद तराई। ढारत चवर[11] मँदिल लै[12] आई।

देखि सो दुइज सिंघासन संकर धरा लिलाद।
कवँल चरन पदुमावति[13] लै बैसारेन्हि पाट॥

[६१३]

बादिल केरि जसोवै माया। आइ गहे बादिल के पाया।
बादिल राय मोर तूँ बारा। का जानसि कस होइ जुझारा।
पातसाहि पुहुमीपति राजा। सनमुख होइ न हमीरहिं छाजा।
छत्तिस लाख तुरै जेहिं[1] छाजहिं[2]। बीस[3] सहस हस्ती दर गाजहिं[2]।
जबहिं[4] आइ जुरिहै यह ठटा। देखत जैस गगन घन[5] घटा[6]।

---

[६१२] १. द्वि० ६ में (यथा . ७) आः पइन घर सुख सो त बाईं, जई रान निन जनता आई। २. तृ० १ छात। ३. प्र० १, २ आनहिं। ४. द्वि० ७ धरि दुख पावहु। ५. द्वि० ४, ५, तृ० ३ सिंघासन। ६. प्र० १, च. प० १ साजि सिंधासन आगें आनें, कँवल चरन धरि भुइँ कुँभिलाने। ७. प्र० १, २ फूल, द्वि० ४ पीन। ७. द्वि० ४, ५ अब। ९. द्वि० १ मारी मसि तसि, तृ० २ भा उदोत निसि। १०. प्र० १ गई देराई, तृ० ३ गैसि बिलाई। ११. प्र० २ कमल। १२. प्र० २ कई। 13. प्र० १, २, द्वि० २ गहि हाथहि, द्वि० ६ कै हाथहि, द्वि० ७ धरि हाथन्हि, च० १लै हाथहि।

[६१३] १. प्र० १, २ तुरै दर, पं० १ नर बारा। २. द्वि० १, पं० १ साजा, गाजा, द्वि० २, ६ साजहिं, गाजहिं। ३. द्वि० ७ बीस। ४. प्रायः समस्त प्रतियों में 'जौहि' (हिंदा मून)। ५. द्वि० ३ महँ। ६. प्र० १, २ देखत गगन मेघ जस फाटा (घाटा—प्र० २)।

चमकहिं खरग सो बीज समाना[7]। गल गाजहिं घुम्मरहिं[8] निसाना[9]।
बरिसहिं सेल बान घन घोरा। धीरज धीर[10] न बाँधहिं तोरा।

जहाँ दलपती दलमलहिं तहाँ तोर का जोग[11]।
आजु गवन तोर आवै मंदिल मानु सुख भोग[12]॥*

[६१४]

मंता न जानसि बालक[1] आदी। हौं बादिला सिंघ रनबादी[2]।
सुनि गज जूह अधिक जिउ[3] तपा। सिंघ की जाति रहै नहिं छपा।
तब गाजन गलगाज सिंघेला[4]। सौंहँ साहि सौं जुरौं अकेला।
अंगद कोपि[5] पाँव जस[6] राखा। टेकौं कटक छतीसौ लाखा।
को मोहि सौंहँ होइ मैमंता। फारौं कुंभ[7] उचारौं दंता।
जादौं[8] स्याम सँकरे[9] जस टारा[10]। बल हरि[11] जस जुरजोधन मारा।
हनिवँत सरिस[12] जघ बर जोरौं। धँसौं समुंद्र स्यामि बँदि छोरौं।[13]

---

७. तृ० ३ बीज जम माना। ८. प्र० १, २ घूमि रहहिं गल गाजि, द्वि० २ घुमरि उठहिं गल गाजि। ९. तृ० २ फेरहिं असमाना। १०. प्र० १ जीउ। ११. प्र० १, द्वि० ४, ५, च० १, काज। १२. प्र० १ करहु सुख राज, द्वि० १, पं० १ भानु रस भोग, द्वि० ४, ५, च० १ मानु सुख राज।

* द्वि० ७ में यह छंद नहीं है, किंतु आगे बादल और उसकी पत्नी का संवाद है, इस प्रति में वह भी अधूरा है, इस लिए द्वि० ७ में यह अंश छूटा हुआ ज्ञात होता है।

[६१४] १. तृ० २ बादिल। २. तृ० ३ अस बादी। ३. प्र० १ सो। ४. प्र० १ सुखेला, पं० १ बघेला। ५. तृ० ३ रोपि। ६. तृ० १ तस। ७. प्र० १, २ पेलौं कुंभ, द्वि० १ फारौं कंठ, तृ० ३ मारौं कुंभ, द्वि० ४, ५ फारौं सुंड। ८. द्वि० ४, ५ जरौं, च० १ जदौं। ९. प्र० १, २ संकट। १०. तृ० ३ जम तारा (उर्दू मूल), द्वि० ४ पर टारा, च० १ जस मारा। ११. द्वि० १ बलि जस जुरि। १२. तृ० ३ सुरस (उर्दू मूल)। १३. प्र० १, २ पं० १ हनिवँत जस राखौं बँदि छोरौं, धँसौं समुंद करौं तस जोरी (पोरी प्र० २)।

जौं तुम्ह मात जसोवै कान्ह[१४] न जानहु वार।
जहँ[१५] राजा बलि बाँधा छोरौं[१६] पैठि[१७] पतार ॥*

[६१५]

बादिल गवन जूझि कहँ साजा। वैसेहिं गवन आइ घर बाजा[१]।
लिहें साथ[२] गवने कर चारु। चंद्र वदनि रचि कीन्ह सिंगारू।
माँग मोंति भरि सेंदुर पूरा। बैठ मँजूर बाँक तस जूरा।[३]
भौंहें धनुक टँकोरि परीखे। काजर नैन[४] मार सर तीखे।
घालि कचपची टीका सजा। तिलक जो देख ठाउँ जिउ तजा।
मनि कुंडल डोलहिं दुइ स्रवना। सीस धुनहिं सुनि सुनि पिय[५] गवना।
नागिनि अलक झलक उर[६] हारू। भएउ सिंगार कंत बिनु भारू[७]।

गवन जो आई पिय रवनि[८] पिय गवने परदेस।
सखी बुझावौं किमि अनल बुझै सो कहु उपदेस ॥*

[६१६]

मानि गवन जस[१] घूँघट काढ़ी[२]। विनवै आइ नारि भै ठाढ़ी[२]।

---

१४. द्वि० ४, ५ मोहि। १५. प्र० १, २ जस। १६. प्र० २ काढ़ौं। १७. द्वि० २, ६ जाइ।

* द्वि० ७ में यह छंद भी नहीं है, किंतु ऊपर छंद ६१३ में दिए हुए का कारणों से यह छंद भी प्रतिलिपि करने में छूटा हुआ ज्ञात होता है।

[६१५] १. प्र० १, २ जा दिन बादिल चलै सिधावा, थोड़ी दिवस गौना गढ़ आवा। २. प्र० १ का बरनौं, प्र० २, द्वि० ६ का देखौं, द्वि० १ लिहें हाथ, तृ० ३ लिहें साथ, तृ० १ किहें साज। ३. प्र० १, २, पं० १ माँगि मोति भरि सेंदुर पूरा, जनु मँजूर बाँका तस जूरा। (तमचूरा—प्र० १); तृ० २ माँगि मोति सिर सेंदुर सारा। जस मँजूर तस जूड सँवारा। ४. प्र० १, द्वि० १ पनच (तुलना. ६१९.४)। ५. द्वि० १ पियका सुनि, द्वि० ३ सुनि सुनि कै। ६. द्वि० २ रूर, च० १ औ। ७. प्र० १ छारू। ८. द्वि० १ पिय मिलन, द्वि० ४, ५ पँवरि महँ।

* द्वि० ७ में यह छंद नहीं है, किन्तु आगे प्रसंग के लिए यह आवश्यक लगता है।

[६१६] १. प्र० १, तृ० २, च० १, पं० १ सो, प्र० २ सैं। २. तृ० ३ बाँध, ठाढ़े।

बीले हेरि चीर गहि ओढ़ा। कंत न हेर कीन्ह जिय पोढ़ा।
तव धनि बिहँसि कीन्ह चखु[3]डोठी। बादिल तबहिं दीन्ह फिरि पीठी।
मुख फिराइ[4] मन उपनी[5] रीसा। चलत न तिरिया कर मुख दीसा।
भा मन फीक[6] नारि के लेखें। कस पिय[7]पीठि दीन्हि मोहिं[8]देखें।
मकु पिय दिस्टि समानेउ चालू।[9] हुलसा पीठि कढ़ावै सालू।[10]
कुच तूँबी अब पीठि गड़ोवौं[11]। कहेसि जो हूक काढ़ि रस धोवौं।[12]

रहौं लजाइ तौ पिय चलै कहौं तो मोहि कह डीठि[13]।
ठाढ़ि तिवानी का करौं दूभर दुवौ बसीठि॥*

[६१७]

मान किहें जौ पियहि न पावौं। तजौं मान कर जोरि मनावौं।[1]
कर हुँति कंत जाइ जेहि[2] लाजा। घूँघट लाज आव[3] केहि काजा।
तब धनि बिहँसि कहा[4]गहि[5]फेटा। नारि जो बिनवै कंत न[6] मेंटा[7]।
आजु गवन हौं आई नाहाँ। तुम्ह न कंत गवनहु रन माहाँ।
गवन आव धनि मिलन की ताईं। कवन गवन जौ गवनै साईं।

---

3. प्र० १, २ सौंह किए, द्वि०२७, द्वि० ३ कीन्ह जो। 4. प्र० १, पं० १ दिस्टि फिरत, प्र० २ दिस्टि परत। 5. तृ० २ बोला कै। 6. प्र० १, २, तृ० १, २ भंग, द्वि० २ भीक, द्वि० ४, ५, तृ० ३ भीख। 7. प्र० १, २ तुम्ह। 8. प्र० २ हम। 9. द्वि० २, ३ चालू। 10. प्र० १, २ तौ मुख पोंछि (मोछ—प्र० २) जीव पर खेलौं, स्वामि काज इद्रासन पेलौं। (६१८ . ६) 11. द्वि० १ कुचमच जोइ बैठि कौ देवौं। 12. प्र० १, २ पुरुष का बोल रहै नहिं पाछू, दसन गयंद गीव नहिं काछू। (६२८ . ७)। 13. तृ० ३ गहीं (उर्दू मूल) तो मोहि कह डीठ, द्वि० ६ बिथा कहीं तौ डीठ।

* द्वि० ७ में यह छंद भी नहीं है, किंतु इसके बिना अगले छंद की संगति नहीं रह जाती है, इसलिए यह आवश्यक है। प्र० १, २ में इसके अनंतर एक अतिरिक्त छंद है। (देखिए परिशिष्ट)

[६१७] 1. प्र० १, २ ठाढ़ि ठाढ़ि मन कीन्ह तेवानू, जौं पिय पीठि आव असमानू। प० १, ठाढ़ि ठाढ़ि मन कीन्ह गियानू, जै पिय जाइ न आवै आनू। 2. प्र० १, २, च० १, पं० १ जौपै (कै जौ—प्र० २) जाइ मान औ। 3. प्र० १, २, पं० १ लाज मान आवै। 4. तृ० ३ गहा (उर्दू मूल)। 5. प्र० १, २, प० १ घूँघट छाड़ि गहा धनि। 6. प० १ बादिल तबहि कत नहिं। 7. प्र० १ भेंटा।

जौं तुम्ह मात जसोवै कान्ह[14] न जानहु धार।
जहँ[15] राजा बलि बाँधा छोरौं[16] पैठि[17] पतार ॥*

[६१५]

बादिल गवन जूझि कहँ साजा। तैसेहिं गवन आइ घर बाजा[1]।
लिहँ साथ[2] गवने कर चारू। चंद्र बदनि रचि कीन्ह सिंगारू।
माँग मोंति भरि सेंदुर पूरा। बैठ मँजूर बाँक तस जूरा।[3]
भौंहैं धनुक टँकोरि परीखे। काजर नैन[4] मार सर तीखे।
घालि कचपची टीका सजा। तिलक जो देख ठाउँ जिउ तजा।
मनि कुंडल डोलहिं दुइ स्रवना। सीस धुनहिं सुनि सुनि पिय[5] गवना।
नागिनि अलक झलक उर[6] हारू। भएउ सिंगार कंत बिनु भारू[7]।

गवन जो आई पिय रवनि[8] पिय गवने परदेस।
सखी बुझावौं किमि अनल बुझै सो कहु उपदेस ॥*

[६१६]

मानि गवन जस[1] घूँघट काढ़ी[2]। बिनवै आइ नारि भै ठाढ़ी[2]।

---

१४. द्वि० ४, ५ मोहि। १५. प्र० १, २ जस। १६. प्र० २ काढ़ौं। १७. द्वि० २, ६ जाइ।

* द्वि० ७ में यह छंद भी नहीं है, किंतु ऊपर छंद ६१३ में दिए हुए का कारणों से यह छंद भी प्रतिलिपि करने में छूटा हुआ ज्ञात होता है।

[६१५] १. प्र० १, २ जा दिन बादिल चलै सिधावा, ओही दिवस गौंना गढ़ आवा। २. प्र० १ का बरजौं, प्र० २, द्वि० ६ का देखौं, द्वि० १ लिहँ हाथ, तृ० ३ किहँ साथ, तृ० १ किहँ साज। ३. प्र० १, २, पं० १ माँगि मोति भरि सेंदुर पूरा, जनु मँजूर बाँका तस जूरा (तमचूरा—प्र० १); तृ० २ माँगि मोंति सिर सेंदुर सारा। जस मँजूर तस जूड़ सँवारा। ४. प्र० १, द्वि० १ पनच (तुलना. ६१९.४)। ५. द्वि० १ पियका सुनि, द्वि० ३ सुनि सुनि है। ६. द्वि० २ हर, च० १ औ। ७. प्र० १ झारू। ८. द्वि० १ पिय मिलन, द्वि० ४, ५ पँवरि महँ।

* द्वि० ७ में यह छंद नहीं है, किन्तु आगे प्रसंग के लिए यह आवश्यक लगता है।

[६१६] १. प्र० १, तृ० २, च० १, पं० १ सो, प्र० २ सें। २. तृ० ३ बाँध, ठाढ़े।

[६१९]

जौं तुम्ह जूझि चहौ पिय बाजा[1]। किहेँ सिंगार जूझि मैं साजा[2]।
जोबन आइ सौहँ होइ रोपा[3]। पखरा बिरह काम दल कोपा।
भएउ बीर रस[4] सेंदुर माँगा। राता रुहिर खरग जस नाँगा[5]।
भौंहैं धनुक नैन सर साँधे। काजर पनच बरुनि बिख बाँधे।
दे कटाख सो सान सँवारे। औ नख[6] सेल भाल अनियारे।
अलक फाँस गियँ मेलि[7] असूझा[8]। अधर अधर सौं चाहै जूझा।
कुंभस्थल दुइ कुच मैमंता। पेलौं सौहँ सँभारहु कंता।

कोपि सँघारहु बिरह दल[9] टूटि होइ दुइ आध।
पाँहलें मोहि संग्राम कै करहु जूझ[10] कै साध॥

[६२०]

कैसेहुँ कंत[1] फिरै नहिं फेरें। आगि परी चित उर धनि केरें।[2]
उठे सो धूम नैन करुआने। जबहीं आँसु रोइ बेहराने[3]।
भीजे हार चीर हिय चोली[4]। रही अछूत कंत नहिं खोली[4]।[5]

---

[६१९] प्र० १ कंत जाउ रन गाढा, प्र० २, पं० १ कत जियहि रन बाजा, द्वि० २,४, ६, तृ० १, च० १ चहौ जूझ पै बाजा, तृ० ३ जूझि चहौ पिय काजा, तृ० २ चहौ जूझ पै राजा। २. प्र० १ तुम्ह किए साहस मैं सत बाँधा। ३. प्र० १, २ रन रोपा, तृ० ३ होइ कोरा, द्वि० ७ मैं रोपा। ४. प्र० १, २, पं० १ खरग उठि। ५. प्र० १, २ रुहिर भरा लागै सब आँगा, पं० १ रही बिथुरि अलकैं जस नाँगा। ६. तृ० ३ उर नख, द्वि० ४, ५ की मुख। ७. द्वि० १ घालि। ८. प्र० १ अरुझा। ९. प्र० १ बरनि रन, प्र० २ बिरह रन, द्वि० १ बिरह, तृ० ३ पर दल, द्वि० ७ बिरह तल, च० १ बिरह बल। १०. प्र० २ जूध, तृ० ३ जुध्य, तृ० १ झूझ।

[६२०] १. द्वि० ७ मता। २. प्र० २, पं० १ एको कंतन मानै नाहीं, परी आगि धनि चित उर माहीं। ३. प्र० १, द्वि० ७ चुवहिं आँसु रोवहिं बिहसाने, प्र० २ हिय दौलाह कंत बिहराने, द्वि० १, तृ० १, च० २ लागे परै आँसु बिहराने (द्वि० १ झरि आने), तृ० २ चुवहिं आँसु जस सावन पानी, पं० १ ए दौं लागि कंठ बेहराने। ४. तृ० २ चोले, खोले (उर्दू मूल)। ५. प्र० २, पं० १ चलै आँसु धनि दहुरि न बोली, भीजेउ हार चीर उर मेली।

धनि न नैन भरि देखा पीऊ। पिय न मिला धनि सौं भरि जीऊ।
वहँ सब आस भरा हिय पेया। भँवर न तजै बास रस लेवा।[9]
पायन्ह धरे लिलाट धनि बिनति सुनहु हो राय।
अलक परी फँदवारि होइ[10] कैसेहुँ तजै न पाय[11]॥

[६१८]

छाँड़ु फेंट धनि बादिल कहा। पुरुख गवन धनि फेंट न गहा।
जौं तूँ गवन आइ गजगामी। गवन मोर जहँवाँ मोर[1] स्वामी।
जब लगि राजा छूटि न आवा। भावै[2] बीर सिंगारु न भावा[3]।
तिरिया पुहुमि खरग कै चेरी। जीतै खरग होइ तेहि केरी।
जेहिं कर खरग मूठि[4] तेहि[5] गाढ़ी। जहाँ[6] न आँड़ न[7] मोंछ न दाढ़ी[8]।
तब मुख मोंछ जीव पर खेलौं। स्वामि काज इंद्रासन पेलौं[9]।
पुरुख बोलि कै टरै न पाछू। दसन गयंद गीव नहिं काछू[10]।[11]
तूँ अबला धनि कुबुधि बुधि जानै जाननिहार।[12]
जहँ पुरुखन्ह कहँ[13] बीर रस भाव न तहाँ[14] सिंगार॥

धनि कहँ। ९. प्र० १, २, पं० १ (पद्मा-२) तजौं लाज कर जोरि मनावौं, करौं दिठार पाठि औ (दिठ—प्र० २, पं० १) पावौं, द्वि० १ तेहि सब काज भरी तुहि पेऊ, भँवर न छुटै बास रस लेऊ, द्वि० १ तोहि सब काज किया औ देऊ, भँवर न तजै बास रस लेऊ। १०. प्र० १, द्वि० ७ फँदवारी। ११. तृ० २ तजाइ।

[६१८] १. प्र० २ हैं, द्वि० १ बोहि। २. प्र० १, २ तजि मोहि, तृ० २ हौं लहि। ३. च० २ पराव। ४. प्र० १ मीच। ५. द्वि० ७ नहि। ६. द्वि० ४, ५ तहाँ। ७. प्र० १ निदान, प्र० २ इन्हाव, तृ० २ अह। ८. द्वि० ७ मोंछ औ दाढ़ी। ९. प्र० १ जीव पर खेलौं। १०. द्वि० २ गयद के होहि न पाछू, तृ० २ गयंद न छाँड़ै पाछू। ११. प्र० १, २ काछु करौं रन आपन मेरई, कुल रन करौं करै नहिं कोई। १२. प्र० १, २, पं० १ जानै अबला कुबुध मति (कुबुधि अबला जानि बुधि—प्र० २, पं० १) अबहुँ समुझि पगु धरि। द्वि० १ तूँ अबला धनि कुबुधिनि जानति कंत न हार। द्वि० २, ७, तृ० २ तूँ अबला धनि कुबुध बुधि जान जो जाननिहार (जाननहार द्वि० २, तृ० २), द्वि० ३, ५, तृ० ३ तुई अबला धनि कुबुध बुधि (कुबुध बुधि—द्वि० ३) जान जो जाननिहार। १३. प्र० १, २, तृ० २ जहँ पुरुख का, द्वि० १ जहाँ पुरुख कहँ, द्वि० २ जहाँ पुरुष कौ, द्वि० ४, ५, तृ० २ जिन्ह पुरुष हिय, द्वि० ६ जहँ पुरुखन्ह हिय, पं० १ पुरुष को मन। १४. द्वि० ४, ५ तिन्ह।

[६१९]

जौं तुम्ह जूझि चहौ पिय बाजा[1]। किहूँ सिंगार जूझि मैं साजा[2]।
जोबन आइ सौहँ होइ रोपा[3]। पखरा बिरह काम दल कोपा।
भएउ बीर रस[4] सेंदुर माँगा। राता रुहिर खरग जस नाँगा[5]।
भौंहैं धनुक नैन सर साँधे। काजर पनच बरुनि बिख बाँधे।
दे कटाख सो सान सँवारे। औ नख[6] सेल भाल अनियारे।
अलक फाँस गियँ मेलि[7] असूझा[8]। अधर अधर सौं चाहै जूझा।
कुंभस्थल दुइ कुच मैमंता। पेलौं सौहँ सँभारहु कंता।

कोपि सँघारहु बिरह दल[9] टूटि होइ दुइ आध।
पाहिलें मोहि संग्राम कै करहु जूझ[10] कै साध॥

[६२०]

कैसेहुँ कंत[1] फिरै नहिं फेरें। आगि परी चित उर धनि केरें।[2]
उठे सो धूम नैन करुआने। जबहीं आँसु रोइ बेहराने[3]।
भीजे हार चीर हिय चोली[4]। रही अछूत कंत नहिं खोली[4]।[5]

---

[६१९] प्र० १ कंत जीउ रन गाढा, प्र० २, पं० १ कंत जियहि रन बाजा, द्वि० २,४, ६, तृ० १, च० १ चहौ जूझ पै बाजा, तृ० ३ जूझि चहौ पिय काजा, तृ० २ चहौ जूझ पै राजा। २. प्र० १ तुम्ह किए साहस मैं सत बाँधा। ३. प्र० १, २ रन रोपा, तृ० ३ होइ चोपा, द्वि० ७ भै रोपा। ४. प्र० १, २, पं० १ खरग उठि। ५. प्र० १, २ रुहिर भरा लागि सब आँगा, पं० २ रही बिथुरि अलकैं जस आँगा। ६. तृ० ३ उर नख, द्वि० ४, ५ औ मुख। ७. द्वि० १ घालि। ८. प्र० १ अरूझा। ९. प्र० १ बरनि रन, प्र० २ बिरह रन, द्वि० १ बिरह, तृ० ३ पर दल, द्वि० ७ बिरह तल, च० १ बिरह बल। १०. प्र० २ जूध, तृ० ३ जुध्य, तृ० २ जूझ।

[६२०] १. द्वि० ७ मता। २. प्र० २, पं० १ एको कंतन माने नाहीं, परी आगि धनि चित उर माहीं। ३. प्र० १, द्वि० ७ चुवहिं आँसु रोवहि बिरछाने, प्र० २ हिय ढीलाह कंत बिहराने, द्वि० १, तृ० १, च० १ लागे परे आँसु बिहराने (द्वि० १ झरि लागे), तृ० २ चुवहिं आँसु जस सावन पानी, पं० १ ए दौ लागि कंठ बेहराने। ४. तृ० ३ चोले, खोले (उर्दू मूल)। ५. प्र० २, पं० १ चले आँसु धनि बहुरि न बोली, भीजेउ हार चीर उर मेली।

भीजी[६] अलक चुई कटि मंडन[७]। भीजे भँवर कँवल सिर फुंदन[८]।
चुइ चुइ काजर आँचर भीजा। तबहुँ न पिय कर रोवँ[९] पसीजा[१०]।
छाँड़ि[११] चला हिरदै दै दाहू[१२]। निठुर नाहँ आपन नहिं काहू।[१३]
सबै सिंगार भीज भुइँ चुवा। छार मिलाइ[१४]कंत नहिं छुवा।[१५]

रोएँ कंत न बहुरै तेहि[१६] रोएँ का काज[१७]।
कंत धरा मन जूझ रन[१८] धनि साजे सब साज[१९]॥[२०]

[६२१]

मँते बैठ बादिल औ गोरा। सो मत कीज परै नहिं भोरा।
पुरुख न करहिं नारि मति काँची। जस नौसावै[१] कीन्ह न बाँची।
हाथ चढ़ा इसिकंदर बरी[२]। सकति छाँड़ि कै मै[३] बँदि परी[४]।
सजग जो नाहिं काह बर काँधा। बधिक हुते[५] हस्ती गा[६] बाँधा।

---

६. प्र० १, २, द्वि० ७, प० १ भींजे अलक चुवै गनि मंदे, तृ० २ भींजै लाग चुर नहिं मंडन, द्वि० ५ भींजे लाग चुवै कटि मंडन, तृ० २ भींजे अलक चुरकुन मडन। ७. प्र० १, २, द्वि० ७, पं० १ कँवल रस बंदे। ८. द्वि० ६ निठुर नाह कै मैंदुन, द्वि० ३ तबहुँ न पिय कर दिदि। ९. पं० १ निठुर नाह दीहू न पसीजा। १०. तृ० ३ चलहि। ११. प्र० १, २, द्वि० ७ चला विछोहि हिय दै दाहू। १२. प्र० २, पं० १ जो तुम्ह कन्त जूझ रन साधा, तुम्ह पिय सका मैं मन बाँधा। १३. प्र० १, २, द्वि० ७ मिला जो। १४. प्र० २, पं० १ रन चढ़ि जीति दर्जन घर आवहु, साज होइ जो पाठि दिखावहु। १५. तृ० २ धनि। १६. प्र० २, पं० १ तुम्ह लै गै रन मारहु मोहि दै मांग सिंदूर। १७. तृ० २ क[illegible]। १८. द्वि० १ साजे सा साज, द्वि० २, ५, तृ० २, ३, च० १ साजे सब साज, तृ० १ साजे सब साज, तृ० ३ तौ होहै सिरसाज। १९. प्र० १, देहु पँवारे है सबा मंदिर बाजहि काज, प्र० २, प० १ देहु देंवारे है सबी बाजै मंदिर तूर, द्वि० ६ दुहुँ दवा हिं यहि मँदिर सँवरि धरे मन साज, द्वि० ७ देहु धावा है सबी मंदिर बाजहि काज।

[६२१] १. प्र० २, द्वि० २, ८, तृ० १, नौसावाँ, द्वि० ७ नौ सावैं, द्वि० १ नौ सभै, तृ० ३ नौ साव, द्वि० ४ नौसाबाँ। २. प्र० २, द्वि० ५, ७, तृ० १, च० १, पं० १ बैरी, पैरी। ३. प्र० १, द्वि० २, ६, तृ० २ पहिरी, प्र० २ परी। ४. तृ० २ कुधि कहिए, तृ० ३ कुधि कहिय। ५. प्र० १, २, पं० १ कुबुधि भिखार लिय कहँ माग, कुबुधि जो निज कुप परि हारा।

देवन्ह चलि आई असि आँटी। सुजन कँचन दुर्जन भा माँटी[६]।
कंचन जुरै[७] भए दस खंडा। फुटि न मिलै माँटी[८] कर भंडा।
जस तुरुकन्ह[९]राजहिं[१०]छर साजा[११]। तस हम साजि[१२]छड़ावहिं राजा।

पुरुख तहाँ करै छर जहँ बर कीन्हें[१३] न आँट।
जहाँ फूल तहाँ फूल होइ[१४] जहाँ काँट तहाँ काँट[१५]॥*

[६२२]

सोरह सौ[१] चंडोल सँवारे। कुँवर सँजोइल कै बैसारे।
साजा पदुमावति क बेवानू। बैठ लोहार न जानै भानू।
रचि[२] बेवान तस साजि[३] सँवारा। चहुँ दिसि चँवर[४]करहिं[५]सब ढारा।
साजि सबै चंडोल चलाए। सुरँग ओढ़ाइ मोंति तिन्ह लाए।
भै सँग गोरा बादिल बली। कहत[६]चले[६] पदुम वति चली।
हीरा रतन पदारथ भूलहिं। देखि बेवान देवता भूलहिं।
सोरह सै[७] सँग चलीं सहेलीं। कँवल न रहा और को बेली।

रानी चली छड़ावै राजहि[८] आपुहं इ तेहि ओल।
बत्तिस[९]सहस सँग तुरिअ खिंचावहिं[१०] सोरह सै[११] चंडोल॥

---

६. च० १ में उपर्युक्त पादटिप्पणी ५ का पाठ। ७. प्र० १, २, द्वि० ७, पं० १ मिलै। ८. द्वि० ५, ६, तृ० १ छारि। ९. तृ० ३ बर कीन्ह। १०. द्वि० ७ हम सौं। ११. तृ० २ साँधा, बाँधा। १२. द्वि० १, ७ छर साजि, द्वि० ६ चह साजि, तृ० १ हम छाज। १३. द्वि० २ पुरुष नहिं, द्वि० ७ परसान्हि। १४. द्वि० २, पं० १ है, द्वि० ६ लीजै। १५. द्वि० ७ हाथ गरि कै काँटा।

* प्र० १, २ में इसके अनंतर एक अतिरिक्त छंद है।

[६२२] १. प्र० १, द्वि० ३ ६, ७, सहस, तृ० ३ सौ। २. तृ० २ जनु, पं० १ राज। ३. प्र० १, २, च० १ सिर छात, द्वि० २ औ छात, द्वि० ६ ससि छात, द्वि० ७ ससि छत्र। ४. तृ० १ नखत। ५. प्र० १ धारि, प्र० २ ढारि। ६. तृ० ३ दान, तृ० ?, च० १ जाहि। ७. प्र० १, २, द्वि० १, ३ ६, ७ सहस। ८. तृ० २, पं० १ छड़ावै। ९. द्वि० १ सोरह, द्वि० ४, ५ तीसि, तृ० ३ निसि, च० १ तीनि। १०. प्र० १, २ तुरिअ भा, द्वि० २ तुरीअ जानौं, द्वि० ७ कुद्ध जानी, तृ० २ सँग तराईं, द्वि० ३ तुरिअ चलाए, द्वि० ७ तुरै सँग, पं० १ तुरिअ सिचाऊ। ११. द्वि० १, ३, ६ ७, सहस।

[६२३]

राजा बंदि[1] जेहि की सौंपना। गा गोरा तापहँ[2] अगुमना।
टका लाख दस[3] दीन्ह अँकोरा। बिनती कीन्ह पाय गहि गोरा।
बिनवहु पातसाहि पहँ जाई। अब रानी पदुमावति आई।
बिनै करै आई हौं ढीली। चितउर की मो सिउँ है कीली।[4]
एक घरी जौं अग्यौं पावौं। राजहिं सौंपि मँदिल कहँ[5] आवौं।
बिनवहु पातसाहि के आगें। एक बात दीजै मोहिं माँगें[6]।
हते रखवार आगें सुलतानी। देखि अँकोर भए जस पानी।

लीन्ह अँकोर हाथ जेइँ जाकर[7] जीव दीन्ह तेहि हाँथ[8]।
जो वह कहै[9] सरै मों कीन्हे[10] कनउड़ भार न माँथ[11]।।

[६२४]

लभ पाप कै नदी अँकोरा। सतु[1] न रहै हाथ जस बोरा।
जहँ अँकोर तहँ नेगिन्ह राजू। ठाकुर केर बिनासहिं काजू।
भा जिउ घिउ रखवारन्ह केरा। दरब लोभ चंडोल न हेरा।
जाइ साहि आगें सिर नावा। ऐ जग सूर चाँद चलि आवा।

---

[६२३] १. द्वि० ३ दुत। २. प्र० १, द्वि० ६ बादल। ३. प्र० १, २ एक। ४. प्र० १, २, पं० १ बिनती करै आनि सो केती, चितउर कै कुंजी मोहि सौंपी; द्वि० ३ बिनती करै कर जोरे खरी, लै सौंपौं राजहि एक घरी (६२४. ७); द्वि० ३, ६, ७, तृ० २ बिनती करै कहाँ पै पूँजी, सब भँडार कै मो सिउ कुंजी। (तुलना० ६२४. ६)। ५. तृ० २ सब मई। ६. प्र० १, २, पं० १ दरब भँडार जहाँ लगि साजा, मोरे हाथ दीन्ह सब राजा; द्वि० १, २, तृ० १, च० १ तजा छोह भा छोह बुझाइ, पातिसाहि सों बिनवै धाइ; द्वि० ४, ५, पादटिप्पणी ४ में दिया हुआ द्वि० ३, ६, ७, तृ० २ का पाठ; द्वि० ३, तृ० ३ बिनवहु बात साहि कै आगें, कब सो धाति आवै सँग लागें। ७. प्र० १ जेइँ, द्वि० ७ जिन्ह। ८. प्र० १, २, पं० १ दीन्ह हाथ तेहि नाथ। ९. तृ० २ चहै। १०. प्र० १, २, च० १, पं० १ जहाँ चलावै तहँ चलै, तृ० ३ जो वहु कहै चहै सो कीन्हे, द्वि० ६ जो वह कहै सरै सो, द्वि० ७ जो वह करै कहै सो कीन्हे, तृ० २ जो वह कहै करै सो। ११. प्र० १, २ फेरे फिरै न माँथ, द्वि० ६, च० १ कहौ फिरै नहिं माँथ, तृ० १, २ कबहुँ न फेरै माथ।

[६२४] १. तृ० ३ सतुर।

औ जावँत[2] सँग[3] नखत तराईं। सोरह सै[4] चंडोल सो आईं।
चितउर जेति राज कै पूँजी। लै मो आई पदुमावति कूँजी[5]।
बिनति करै कर जोरैं खरी। लै सौंपौं राजहि[6] एक घरी।[7]

इहाँ उहाँ के स्वामी[8] दुहूँ जगत मोहि[9] आस।
पहिलें दरस देखावहु तौ आवौं[10] कयिलास॥

[६२५]

अग्याँ भई जाउ एक घरी। छूँछि जो घरी फेरि बिधि[1] भरी।
चलि बेवान राजा पहँ आवा। सँग चंडोल जगत गा[2] छावा[3]।
पदुमावति मिस हुत जो लोहारू। निकसि काटि बँदि कीन्ह जोहारू।
उठेउ कोपि[4] जस छूटेउ[5] राजा। चढ़ा तुरंग सिंघ अस गाजा।
गोरा बादिल खाँड़ा काढ़े। निकसि कुँवर चढ़ि चढ़ि भए ठाढ़े।
तीख तुरंग गँगन सिर लागा। केहु जुगुति को टेकै बागा।
जौं जिउ ऊपर खरग सँभारा। मरनिहार सो सहसन्हि मारा।

भई पुकार साहि सौं[6] ससियर[7] नखत सो नाहिं।
छर कै गहन गरासा[8] गहन गरासे जाहिं॥

---

२. प्र० १, २ लान्हे, द्वि० ७ आई। ३. द्वि० १, ५ सत। ४. प्र० १, द्वि० १, ६, ७ सहस। ५. प्र० १, २, पं० १ पदुमावति लान्हे सब कुंजी, द्वि० १ कुंजा सो आई हमतें पुजा, तृ० ३ हाथ सो पदुमावति कै कुंजी। ६. द्वि० ६, ७ पावौं। ७. पं० १ बिनति करै बहु भाँति बड़ाई, राजहि सौंपि मँदिर चह आई। ८. द्वि० १ राजा, द्वि० ६ स्वामि तुम्ह, पं० १ मूल मोहि। ९. प्र० १ तोहि, तृ० २ कै। १०. प्र० १, २ पठवहु।

[६२५] तृ० ३ निधि। २. प्र० १, २, द्वि० ५, ७, तृ० २ सब। ३. प० १ चलि बेवान गा राजा ठाईं, झाँपि रहे चंडोल सनाईं। ४. द्वि० २ गरबि, द्वि० ४ काँपि। ५. प्र० १, २ टूटन खिन। ६. प्र० २, द्वि० ७, च० १ साहि पहँ, द्वि० २ राजा सौं, द्वि० ५ सूर सौं। ७. तृ० १ ससि औ। ८. प्र० १ नखत जो परगसे, प्र० २, तृ० १, च० १ गरह जो परिगसे, द्वि० ६ गह जो परसै, प० १ गरह जो परगसे।

[६२६]

लै राजहिं चितउर कहँ चले। छूटेउ सिरिग सिंघ कलमले।
चढ़ा साहि चढ़ि लागि गोहारी। कटक असूझ[1] पारि जग कारी।
फिरि बादिल गोरा सौं कहा। गहन छूट पुनि जाइहि गहा।
चहुँ दिसि आइ अलोपत भानू। अब यह गोइ इहै मैदानू।
तूँ अब राजहिं लै चलु गोरा। हौं अब उलटि जुरौं भा जोरा।
दहुँ चौगान तुरुक कस खेला। होइ खेलार रन[2] जुरौं अकेला।
तब पावौं बादिल अस नाऊँ। जीति मैदान गोइ लै जाऊँ।

आजु खरग चौगान गहि करौं सीस रन[3] गोइ।
खेलौं सौंहँ साहि सौं[4] हाल जगत महँ होइ ॥*

[६२७]

तब अंकम[1] दै गोरा मिला। तूँ राजहिं लै चलु बादिला।
पिता मरै[2] जो सारैं साथैं। मींचु न देइ पूत के माँथैं।[3]
मैं अब आउ भरी औ भूँजी। का पछितावँ[4] आइ जौं[5] पूजी।
बहुतन्ह मारि मरौं जौं जूझी। ताकहँ जनि रोवहु मन बूझी।
कुँवर सहस सँग[6] गोरैं लीन्हें। और बीर सँग बादिल दीन्हें।
गोरहि समदि बादिला गाजा। चला लीन्ह आगें[7] कै राजा।

---

[६२६] १. द्वि० ४, ५, च० १ परी। २. प्र० १, द्वि० १, २, ६, तृ० २ चढ़ौं खेलार रन, तृ० ३ होइ खेलार रन। ३. प्र० २, द्वि० ७, (तृ० १) रिपु। ४. द्वि० ७ पहं, तृ० ३ कै।
* प्र० १, २, द्वि० ६, ७, (तृ० १) में इसके अनंतर छः अतिरिक्त छंद हैं। (देखिए परिशिष्ट)

[६२७] १. द्वि० १ अंकम भरि, द्वि० ५, च० १, पं० १ अगीन दै, द्वि० ७ हाँक दै, (तृ० १) सो अंक दै, तृ० २ अगवन होइ। २. प्र० १, २ छिलै। ३. द्वि० ६, तृ० २ पिता बरोक मरै जो लिए, आपन मींचु भएउ तेहि दिए; (तृ० १) पूत जो बार मरै का लिए, आपन मींचु भएउ तेहि दिए। ४. द्वि० ७ का पछिताव, च० १ कहा चलिउँ घर। ५. प्र० १, २ आइ जब, तृ० ३ आइ अब, द्वि० ४, ६, (तृ० २), पं० १ आइ जो, च० १ होइ गइ। ६. प्र० १, ? द्वि० ७ दस, द्वि० १ एक। ७. प्र० १ अगवन।

गोरा उलटि खेत भा ठाढ़ा। पुरसन्ह देखि चाउ मन बाढ़ा।

आउ कटक सुलतानी[8] गँगन छपा मसि माँझ।
परत आव जग कारी[9] होत[10] आव दिन साँझ॥*

[६२८]

होइ मैदान परी अब गोई। खेल हाल दहुँ काकरि होई।
जोबन तुरे चढ़ी सो रानी। चली जीति अति खेल सयानी।
लट[1] चौगान गोइ[2] कुच साजी। हिय मैदान चली लै बाजी।
हाल सो करं[3] गोइ लै बाढ़ा[4]। कूरी दुहुँ[5] बीच कै काढ़ा[6]।
भए पहार दुवौ वै कूरी। दिस्टि नियर पहुँचत सुठि दूरी।
ठाढ़ बान अस जानहुँ दोऊ। सालहिं हिए कि[7] काढ़ै कोऊ।
सालहिं तेहि न जासु हियँ[8] ठाढ़े[9]। सालहिं तासु चहै ओन्ह[10] काढ़े।

मुहमद खेल पिरेम का खरी[11] कठिन चौगान।
सीस न दीजै गोइ जौं हाल न होइ मैदान[12]॥

[६२९]

फिरि आगें गोरैं तब हाँका। खेलौं आजु करौं रन साका।
हौं खेलौं धौलागिरि गोरा। टरौं न टारा बाग न मोरा।

---

८. प्र० १, २ साहिकर, द्वि० ६, ७ सुलतान कर। ९. द्वि० १ जस कारी, द्वि० ७ जस करिआ। १०. प्र० १, पं० १ फिरत।

*तृ० २ में इस छंद की .४, .५, .६, .७ को बीच-बीच में रखते हुए, दो छंदों की अतिरिक्त पंक्तियाँ आई हैं।

[६२८] १. प्र० १ चित, प्र० २ नट, द्वि० ४, ५ कटि। २. प्र० १, २, द्वि० ७ हाल। ३. प्र० १ ओ चंपक, प्र० २, द्वि० ७ सो चिबुक। ४. द्वि० ७ कुठ ठाढा। ५. प्र० २ कुअँरि से दुइँ, तृ० २ लैके कोई। ६. द्वि० ५ ठाढ़ा। ७. प्र० १, २, द्वि० ५, ६, पं० १ न। ८. प्र० १ ताहि जाहिअ, प्र० २ ताहि न जाहिअ। ९. प्र० २ बाढ़े, च० १ बाढे। १०. च० १ दुहुँ। ११. प्र० १, २ कठिन रे। १२. द्वि० ३, तृ० २, च० १, पं० १ निदान।

मोहिल जैस इंद्र[1] उपराहीं। मेघ घटा मोहि[2] देखि बिलाहीं।
सहसौं सीसु[3] सेस सरि[4] लेखौं। सहसौं नैन इंद्र भा देखौं।
चारिउ भुजा चतुर्भुज आजू। कंस न रहा और को राजू।
हौं होइ भीवँ आजु रन[5] गाजा। पाछे घालि डुंगवै राजा।
होइ हनिवँत जमकातरि ढाहौं। आजु स्वामि सँकेरें निरबाहौं।

होइ नल नील आजु हौं देउँ समुँद महँ[6] मेंड़।
कटक साहि कर टेकौं होइ सुमेरु रन[7] बेंड़॥*

[६३०]

ओनी[1] घटा चहूँ दिसि तमि आई[2]। चमकहिं खरग[3] बान करि लाई[4]।
डोलहिं नाहिं देव जस आदी। पहुँचे तुरुक बाद कहँ बादी।
हाथन्ह गहे खरग हिरवानी[5]। चमकहिं सेल बीज की बानी।
सजे बान जानहुँ ओइ गाजा[6]। बासुकि डरै सीस जनि बाजा।
नेजा उठा डरा मन इंदू। आइ न बाज[7] जानि कै[8] हिंदू।

---

[६२९] १. प्र० १, २, द्वि० ७ बाँध, द्वि० २ बाँधा, द्वि० ६ नीर। २. तृ० ३ मुख। ३. द्वि० १ सहस सिर, द्वि० ३ सहस सहस। ४. प्र० २, ३, द्वि० १ संकर सर, द्वि० २, ७ संकर सम, द्वि० ३, ४, पं० १ संकर सरि, तृ० २ एक सरि। ५. प० १, २ सो अरजुन। ६. प्र० २, द्वि० २, ३, तृ० १, च० १, पं० १ कहँ। ७. प्र० १ सामुहँ रन, प्र० २ सुमर रैन, तृ० ३ सुमेरु न।

* प्र० २ में इसके अनन्तर दो अतिरिक्त छंद हैं, जिनमें से प्र० १ में एक यहाँ पर और एक छंद ५२३ के अनंतर है, द्वि० २, ६, ७ में एक ही छंद अतिरिक्त है, और वह उपर्युक्त दो में से है।

[६३०] १. द्वि० ६ आइ बल। २. द्वि० १ आई चहुँ फेरा, द्वि० ४, ५, ६ चहूँ दिसि आई, तृ० २ मेघ भरि लाई, द्वि० ३, पं० १ चहुँ दिस घिरि आई। ३. द्वि० ४, ५ छूटहिं बान। ४. प्र० २ बान जस लाई, द्वि० २ होइ बान घेरा, द्वि० ४, ५ मेघ भरि लाई। ५. पं० १ त्रिग बानी। ६. द्वि० २ पहुँचे बान जानहु वै गाजा, तृ० ३ साजे बान जानहु ओइ गाजा, द्वि० ४, ५ साजें बान उत आवै गाजा, (तृ० १) साजें खरग हाथ सो गाजा, तृ० २ सजे बान आवै जस गाजा, च० १ सजे बाहँ जानहु दुर गाजा, पं० १ सज बान जानहु दे गाजा। ७. द्वि० ४, ५, प० १ पाछ। ८. प्र० १ तुरक सौं।

गोरैं साथ लीन्ह सब[9] साथी। जनु मैमंत सुंड बिनु[10] हाथी।
सब मिलि पहिलि[11] उठौनी कीन्ही[12]। आवत अनी[13] हाँकि सब लीन्ही[13]।

रुंड मुंड सब[14] टूटहिं[15] सिउँ[16] बकतर[17] औ कुंडि[18]।
तुरिअ होहिं बिनु काँधे हस्ति होहिं बिनु सुंडि॥

[६३१]

ओनवत आव[1] सैन सुलतानी। जानहुँ परवाइ[2] अति बानी।
लोहँ सैन सूझ सब कारी[3]। तिल एक कतहुँ न सूझ[4] उघारी।
खरग पोलाद निरँग[5] सब काढ़े। हरे बिज्जु अस चमकहिं ठाढ़े।
कनक बानि[6] गजबेलि सो नाँगी[7]। जानहुँ काल करहिं जिउ माँगी[8]।
जनु जमकात करहिं[8] सब भवाँ[9]। जिउ लै चहहिं सरग उपसवाँ[9]।
सेल साँप जनु चाहहिं डसा। लेहिं काढ़ि जिउ मुख विख बसा।
तिन्ह सामुहँ गोरा रन कोपा। अंगद सरिस[10] पाउ रन[11] रोपा।

---

९. प्र० १, २, द्वि० ७, (तृ० १) लीन्ह संग दस, द्वि० १ आपन लीन्हा। १०. द्वि० ७ सुँडदन्त। ११. द्वि० ३ एक। १२. प्र० १ किया, सब लिया, (तृ० १) फिर लीन्ही, द्वि० ५ सब लीन्ही, तृ० ? फिर दीन्ही। १३. द्वि० ४ आर, द्वि० ७ कटक। १४. द्वि० ७ मति, तृ० ३ अति, पं० १ अब। १५. द्वि० १ पारेउ। १६. द्वि० ३, ६, तृ० २ सैं। १७. प्र० १, २ चाकतरा, द्वि० ६, तृ० १ पाखर। १८. च० १ लुंडि।

[६३१] १. द्वि० ६ दीख। २. तृ० ३ परी आन (उर्दू मूल), द्वि० १ परन आव, द्वि० ६, च० १ परलौ आव। ३. प्र० १ जूझ अधिकारी, प्र० २ सूझ अधिकारी, द्वि० १, ६ जूझि अधिकारी, पं० १ जूझ सबकारी। ४. प्र० १ दीख, पं० १ होहिं। ५. द्वि० ४, ५ तुरुक, च० १ खरग। ६. प्र० १, २ निगवानी, द्वि० ४, ५ पानिवान, (तृ० १) अगुन आनि, तृ० ३ लिगवानि, तृ० २ भगवानी, द्वि० १ कटक बान (हिंदी-उर्दू मूल)। ७. प्र० १ ताके, बाँकि, तृ० २ बाढ़ी, काढ़े, द्वि० ४, ५ (तृ० १) बाँकी, माँगी। ८. प्र० १, २ काढ़, द्वि० ७ काढ़ि। ९. तृ० २ भावाँ, मरग उपसावाँ; द्वि० ७ भँवावा, सरग उड़ावा। १०. तृ० ३ आइ। ११. द्वि० १, ३, ६, ७, मुरैं।

सुपुरुस[12] भागि न जानै भएँ भीर मुइँ[13] लेइ।
असि बर गहेँ दुहूँ कर[14] स्यामि काज जिउ देइ ॥

[६३२]

औ बगमेल सेल घन घोरा। औ गज पेल अकेल सो गोरा।
सहस कुँवर सहसहुँ[1] सत बाँधा। भार पहार[2] जूझि कहँ काँधा[3]।
लागे मरै गोरा के आगें। बाग न मुरै घाव मुख लागें।
जैस पतंग आगि धँसि लेहीं। एक मुएँ दोसर जिउ देहीं।
टूटहिं सीस अधर धर मारे। लोटहिं कंध कबंध निनारे।
कोई परहिं[4] रुहिर होइ राते। कोइ घायल घूमहिं जस माँते।
कोइ खुर खेह गए[5] भरि[6] भोगी। भसम चढ़ाइ परे जनु जोगी।

घरी एक[7] भा[8] भारथ भा असवारन्ह मेल।
जूझि कुँवर सब बीते[9] गोरा रहा अकेल ॥

[६३३]

गोरैं देख साथ सब जूझा। आपन काल नियर भा बूझा।
कोपि सिंघ सामुहँ रन मेला। लाखन्ह सौं नहिं मुरै[1] अकेला।
लई हाँकि हस्तिन्ह के ठटा[2]। जैसें सिंघ बिडारै घटा[2]।

---

[12]. प्र० १ सत रस, द्वि० १ अस नो। [13]. प्र० १ भीर परे मुइँ लेइ, द्वि० १ भय छाड़ै मुइँ लेइ, द्वि० २, ६ फेरि फेरि मुइँ लेइ, तृ० ३, पं० १ भएँ भरि भर लेइ, द्वि० ४, ५ मुइँ जो फिर फिर लेइ। [14]. प्र० १ गहै जोन फिर ताकर, द्वि० ४, ५ सूर गहैं दुइँ कर, द्वि० ६ असब गहैं जो दुहूँ कर।

[६३२] [1]. प्र० १, २, द्वि० ६, ७ दसो सहस कुँअरन्ह। [2]. प्र० १ २ भा परिहार, द्वि० १ फिरि फिरि भए, पं० १ भएउ अपार। [3]. द्वि० ७ साधा। [4]. तृ० २ खुर खेह। [5]. द्वि० ४, ५ कोर घर खेह धन्हि। [6]. प्र० १, द्वि० ७ मिलि, द्वि० ४, ५, (तृ० २) होइ। [7]. प्र० १, २, द्वि० ७, (तृ० २) पहर तीनि, द्वि० ६ पहर एक। [8]. द्वि० २ भौ। [9]. प्र० १, २ द्वि० ६ बीति गए, द्वि० ४, ५ बैठे।

[६३३] [1]. तृ० ३ परै (उर्दू मूल। [2]. प्र० १, २ ठटा, जैसे सिंघ बिडारे ठाटा, तृ० ३ ठाटा, जैसे सिंघ बिडारै गज थाटा, पं० १ ठटा, जैसे पवन बिडारै घटा।

जेहि सिर देइ कोपि कर वारू। सिउँ[3] घोरा[4] टूटै असवारू।
टूटहिं[5] कंध कबंध निनारे[6]। मींठ मँजीठि जानु रन ढारे[6]।
खेलि फागु सेंदुर छिरियावैं[7]। चाँचरि खेलि आगि रन धावैं[7]।
हस्ती घोर आइ जो ढूका। उठै देह तिन्ह रुहिर भभूका।

भै अग्याँ सुलतानी बेगि करहु एहि हाथ।
रतन जात है आगें लिए पदारथ साथ।।

[६३४]

सबहि कटक मिलि गोरा छेंका। कुंजल[1] सिंघ जाइ नहिं टेका।
जेहि दिसि उठै सोइ जनु खावा[2]। पलटि सिंघ तेहिं ठायँन्ह[3] आवा।
तुरुक बोलावहिं बोलहिं बाहाँ। गोरैं मींचु धरा मन[4] माहाँ।
मुए पुनि[5] जूझि जाज जगदेऊ। जियत न रहा जगत महँ केऊ।
जनि जानहु गोरा सो अकेला। सिंघ की मोंछ हाथ को मेला।
सिंघ जियत नहिं आपु धरावा। मुएँ पार[6] कोई घिसियावा।
करै सिंघ हठि सौंही डीठी। जब लगि जिऐ देइ नहिं पीठी।

---

3. द्वि० ७, तृ० ३ सो। 4. द्वि० ७, तृ० ३, च० १, प० १ रन घोरै। 5. तृ० ३ लोटहिं (उर्दू मूल)। 6. प्र० १, २ सेल कि भभकि उठै असरारा, ढारा; द्वि० १ लोटहिं घायल खाँड सँघारे, ढारे; द्वि० ४, ५ टूट बध सिर परैहिं निरारे, ढारे; द्वि० ६ टूटहिंकंध कबध निरारे, ढारे; द्वि० ३ लोटहिं रुह मुह धरि मारे, ढारे; तृ० २ वै बादल दीसहिं अनियारे, ढारे; प० १ कंध कबध दीस रतनारे, ढारे; द्वि० ७ सरौन की भभकि उठै असरारौं, ढरहीं; 7. प्र० १ छहरावै, रन ढावै; प्र० २, द्वि० ४, ५, (तृ० १), तृ० २ च० १, प० २ छिरिकावै, रन लावै; द्वि० ७ छिरकावहिं, अनु लावहिं।

[६३४] 1. द्वि० ४, ५ गूँजन। 2. प्र० २ जेहिं दिसि उठहि सोइ दिसि खावा, द्वि० ७ जेहि दिसि हेरै सोइ जनु खावा, तृ० ३ चहुँ (उर्दू मूल) दिस उठै होइ जनु खावा। 3. प्र० २, द्वि० ७, तृ० २ ठाहर, तृ० ३ ठायन्ह (उर्दू मूल) 4. तृ० २ रन। 5. द्वि० १ बोइ पुनि, द्वि० ५ मोइ बिन। 6. द्वि० ४, ५, तृ० ३ बार, द्वि० २ पाउ, तृ० २ पाछ।

रतनसेनि तुम्ह[7] बाँधा[8] मसि गोरा के गात।
जब लगि रुहिर[9] न धोवौं तब लगि होइँ[10] न रात॥

[६३५]

सरजा बीर[1] सिंघ चढ़ि गाजा। आइ सौंहँ गोरा के बाजा।
पहलवान सो बखाना बली। मदति मीर हमजा औ अली।
मदति अयूब मीस चढ़ि[2] कोपे। राम लखन जिन्ह नाउँ अलोपे।
औ ताया[3] सालार सो आए[4]। जिन्ह कौरौ पंडौ बँदि पाए।
लिंधउर[5] देव धरा जिन्ह[6] आदी[7]। और को माल[8] बादि कहँ बादी[9]।
पहुँचा आइ सिंघ असवारू। जहाँ सिंघ गोरा बरियारू।
मारेसि साँगि पेट महँ धँसी। काढ़ेसि हुमुकि आँति भुइँ खसी।

भाँट कहा धनि गोरा तू भोरा रन राउ।
आँति सैंति करि काँधे[1] तुरै देत है पाउ॥

[६३६]

कहेसि अंत[1] अब भा भुइ परना। अंत सो तंत खेह सिर भरना।
कहि कै गरजि सिंघ अस धावा। सरजा सारदूर पहँ आवा[2]।
सरजै कीन्ह साँगि सौं घाऊ। परा खरग जनु परा निहाऊ।
बज्र साँगि औ बज्र के डाँडा। उठी आगि सिर बाजत[3] खाँडा।

---

७. प्र० १, २, द्वि० ७ नहिं, द्वि० ४, ५, च० १ चहि। ८. प्र० २, द्वि० ७ बाँधिया। ९. प्र० १, २ लोहि। १०. तृ० २ होइ।

[६३५] १. तृ० ३, च० १ मेर। २. प्र० १, २ जो आइ सीम चढ़ि, द्वि० १ आइ बंमि चरि तृ० ३ आइ ऊर (उर्दू मूल) मीस चढ़ि। ३. प्र० १, तैऊंहि, तृ० ३ तैआ, द्वि० ७ तेहि मियाँ। ४. प्र० २ औ धाए। ५. द्वि० ६ इधौर, द्वि० ३ गंधप, च० १ किन्धौर। ६ प्र० १, चढ़ा जो, प्र० २ चढ़ा जेहि। ७. द्वि० ४, ५ आवै, गावै। ८. द्वि० २ और धो देव, द्वि० ७ पहुँचे तुरक द्वि० ३ और गोपाल, च० १ औ को कुवँर। ९. प्र० २ धर बाँधे, पं० २ बाँधे पर।

[६३६] १. प्र० २, द्वि० ७ सर्मा भाति। २. द्वि० १ में यह चरण नहीं है। ३. प्र० १, द्वि० ३ बाजत तम, प्र० २ सिर बाजत, द्वि० २ भा चानिस, तृ० ३ सरजा जिन (उर्दू मूल), द्वि० ४, ५ हम बाजा।

जानहुँ बजर बजर सौं बाजा। सबहीं कहा परी अब गाजा।
दोसर खरग कुंडि पर दीन्हा। सरजै धरि ओड़न पर लीन्हा।
तीसर[4] खरग कंध पर लावा[5]। काँध गुरुज हुत घाव न आवा[5]।
अस गोरैं हठि मारा[6] उठी बजर की आगि।
कोइ न नियरैं आवै सिंघ सदूरहि लागि॥

[६३७]

तब सरजा गरजा[1] बरिबंडा। जानहुँ सेर केर[2] भुअडंडा।
कोपि गुरुज मेलेसि[3] तस बाजा। जनहुँ परी परबत[4] सिर[5] गाजा।
ठाठर टूट, टूट सिर तासू। सिउँ[6] सुमेरु जनु टूट अकासू।
धमकि[7] उठा सब सरग पतारू। फिरि गै डीठि भवाँ संसारू[8]।
भा परलौ सबहूँ अस जाना। काढ़ा खरग सरग नियराना।
तस मारेसि सिउँ[9] घोरैं काटा। धरती काढ़ि सेस फन फाटा।[10]
अति जौं सिंघ बरिअ होइ आई[11]। सारदूर से कवनि बड़ाई।[12]
गोरा परा खेत महँ सिर पहुँचावा बान।[13]
बादिल लै गा राजहिं[14] लै[15] चितउर नियरान[16]॥*

---

४. प्र० १ दोसर। ५. तृ० २ मारा, काँध गुरुज सौं दिएँ उतारा।
६. प्र० १ मार्ता, प्र० २, द्वि० ७ मारिआ।

[६३७] १. द्वि० ४, ५, तृ० २ कोपा। २. प्र० २, द्वि० १, ४, ५, तृ० १, च० १, पं० २ जानु सुदूर केर, द्वि० ६ जनु रो सादूर। ३. प्र० १, २, द्वि० ४, ५ मारेसि। ४. प्र० १, २, द्वि० १ (तृ० १), च० १, पं० १ तरपि, द्वि० ४, ५ पुरन। ५. प्र० १, २ रन, (तृ० १), च० १, पं० १ कै। ६. द्वि० ४, ५, ६, तृ० ३ सै। ७. तृ० ३ भरमि। ८. प्र० १, २ भया अँधियारू, द्वि० ४, ५, ६, च० १, पं० १ फिरा संसारू। ९. द्वि० ४, ५, ६, तृ० ३ सै। १०. तृ० २ जब गोरा कहँ लोहैं धरा, भौ तर तोरन सो भा खरा। ११. प्र० १ होर बरिआई। १२. तृ० २ सरग पौढ़ि कै तबँ बर पारा, नमस्कार कै सरग सिधारा। १३. द्वि० १, (तृ० १), च० १ कै भारथ कुरु खेत। १४. द्वि० १, (तृ० १), च० १ बादिला आवा बाद सिउँ। १५. प्र० १ गढ, द्वि० ३ गै। १६. द्वि० १ (तृ० १), च० १ चितउर राजहि लेत।

* यह छंद द्वि० ७ में नहीं है, किंतु स्पष्ट ही प्रसंग के लिए अनिवार्य है। प्र० १, २, (तृ० १), द्वि० ३ में इसके अनंतर एक छंद, और तृ० २ में उससे भिन्न तीन छंद अतिरिक्त हैं।

[६३८]

पदुमावति मन अही जो झूरी[1]। सुनत सरोवर हिय गा पूरी[1]।
अद्रा महँ हुलास जस होई। सुख सोहाग आदर भा[2] सोई।
नलिनि[3] निवंदी[4] लीन्ह[5] अँधूरू। उठा कँवल उगवा सुनि सूरू।
पुरइनि पूरि सँवारे[6] पाता। पुनि विधि आनि धरा सिर छाता।
लागे उहै होइ जस भोरा। रैनि गई दिन कीन्ह बहोरा।
अस्तु अस्त सनि भा किलकिला। आगें मिलै कटक सब चला।
देखि चाँद अस पदुमिनि रानी। सखी कमोद सबै बिगसानी।[7]

गहन छूट दिनकर कर[8] ससि सौं होइ मेराउ।
मँदिल सिंघासन साजा[9] बाजा नगर बधाउ॥*

[६३९]

बिहँसि चंद दै[1] माग सेंदूरा। आरति करै चली जहँ सूरा।
औ गोहने सब सखीं तराईं। चितउर की रानी जहँ ताईं।
जनु बसंत रितु फूली छूटी। कै सावन महँ[2] बीरबहूटी।
भा अनंद बाजा पँच[3]तूरा। जगत रात होइ चला सेंदूरा।
राजा जनहुँ सूर[4] परगासा। पदुमावति मुख कँवल बिगासा।
कँवल पाय सूरुज के परा। सूरुज कँवल आनि सिर धरा।
दुंद मृदंग मुर ढोलक[5] बाजे। इंद्र सबद सो सबद सुनि लाजे[6]।

सेंदुर फूल तँबोर सिउँ सखी सहेलीं साथ।
धनि पूजै पिय पाय दुइ पिय पूजी धनि माथ॥

---

[६३८] १. प्र० १, २ जरी, भरी। २. प्र० १ सो निबही। ३. द्वि० ४, ५ नैन। ४. प्र० १ निकसि जस, प्र० २ निकसि कै, द्वि० ४, ५ जो कुमुदिनि। ५. तृ० १ बाँन्ह। ६. प्र० १, २ सरोवर। ७. प्र० १, २. तृ० ३, प० १ दिनकर गहन सो कीन्ह पयाना, निसि कर गहन आइ नियराना। (तुलना ६३८.८)। ८. तृ० ३ गा दिनकर। ९. प्र० २ साजधर, द्वि० ६ साजि बहि।

* द्वि० ७ में यह छंद नहीं है, किंतु प्रसंग में इसकी अनिवार्यता प्रकट है।

[६३९] १. च० १ औ। २. द्वि० ३ कै रातो जनु। ३. प्र० १ सब। ४. प्र० १, २, द्वि० ४, ५, प० १ देखि कतं जस रवि। ५. द्वि० ४, ५ अति मृदंग मंदिर बहु। ६. प्र० १, २ इंद्र के सबद सुनै सब लागे, द्वि० २, ३, ६, च० १ इंद्र मै सबद सबद सुनि लाजे, तृ० २ इंद्र सबद सो सब सुनि लागे।

[६४०]

पूजा कयनि देउँ तुम्ह राजा। सबै तुम्हार आव मोहि लाजा।
तन मन जोबन आरति करेऊँ। जीउ काढ़ि नेवछावरि देऊँ।
पंथ पूरि कै दिस्टि बिछावौं। तुम्ह पगु धरहु नैन[1] हौं लावौं।
पाय बुहारत[2] पलक न मारौं। बरुनिन्ह सेंति चरन रज झारौं।
हिया सो मँदिल तुम्हारे[3] नाहाँ। नैनन्हि पँथ आवहु[4] तेहि[5] माहाँ।
बैठहु पाट छत्र नव फेरी। तुम्हरें गरब गरुइ हौं चेरी।
तुम्ह जियँ हौं तन जौं अति मया[6]। कहै जो जीउ करै सो कया।

जौं सूरुज सिर ऊपर आवा तब सो कँवल सुर छात[7]।[8]
नाहिं तौ भरे[9] सरोवर सूखे पुरइनि पात[10]॥[11]

[६४१]

परसि पाय राजा के रानी। पुनि आरति बादिल कहँ आनी।
पूजे बादिल के भुअडंडा। तुरिअ के पाउ दाबि कर खंडा।
यह गज गवन गरब सिउँ[1] मोरा। तुम्ह राखा[2] बादिल औ गोरा।
सेंदुर तिलक जो आँकुस अहा। तुम्ह माँथें राखा तब रहा।
काज रतन[3] तुम्ह जिय[4] पर खेला। तुम्ह जिउ आनि मँजूसा मेला।

---

[६४०] १. द्वि० ४, ५ सीस। २. द्वि० ४, ५ राखत पाय। ३. प्र० १ सुभाव सो तुम्हरे, प्र० २ समदि जो तुम्हरें। ४. च० १ नैनन्हि पँथ पँथ। ५. प्र० १, २ द्वि० ७ मोहि। ६. प्र० १ में तन जिय माया, द्वि० ४, ५ (तृ० १) जौ लहि मया, द्वि० ६ जोरब तहँ मया। ७. प्र० १ सिर छाप, प्र० २, द्वि० ५, ६, पं० १ सिर छात। ८. द्वि० २, ३, च० १ तुम्ह बिनु हौं कछु नाहीं जौ तुम्ह तौ सिर छात। ९. प्र० २ बहुरे, द्वि० ४ फरे, द्वि० ७ बिछुरी। १०. प्र० १, २ साजहिं पुरइनि पात, द्वि० ७ पुरइनि होत निपात। ११. द्वि० २, ३, च० १ तुम्ह धरहु सुदिस्टि पिय तौ मोहि होइ अहिबात।

* प्र० १, २ में इसके अनंतर तीन अतिरिक्त छंद हैं, जिनमें से एक यहाँ है, और दो अगले छंद के अनंतर हैं। (देखिए परिशिष्ट)

[६४१] १. प्र० १, २, द्वि० ४, ५ सौं, द्वि० ? जो, द्वि० ४ सब, द्वि० ७ ते। २. प्र० १, २ राजा। ३. प्र० १, २ बाँधि मेलि, द्वि० २, च० १ काज मेलि, द्वि० ४, ५, (तृ० १) काज स्वामि, द्वि० ३ काज रतन, तृ० ३ बाँधि रैनि, पं० १ काज मोर। ४. द्वि० २ सिर।

राखेउ छात चँवर औ ढारा। राखेउ छुद्रघंट झनकारा।
तुम्ह हनिवँत होइ धुजा बईठे। तब चितउर पिय आइ पईठे।

पुनि गज हस्ति चढ़ावा नेत बिछावा बाट।
बाजत गाजत राजा आइ बैठ सुख पाट[५] ॥*

[६४२]

निसि[१] राजैं रानी कँठ लाई। पिय मरजिया नारि ज्यौं[२] पाई।
रँग कै[३] राजैं दुख अगुसारा[४]। जियत जीव नहिं करौं[५] निनारा।
कठिन बंदि लै तुरुकन्ह गहा[६]। जौं सँवरौं जिय पेट न रहा।
खनि गड़ ओबरी[७] महँ लै मेला[८]। साँकर औ[९] अँधियार दुहेला।
राँध न तहँवाँ दोसर कोई। न जनौं[१०] पवन पानि कस होई।
खिन खिन जीव सँड़ासिन्ह[११] आँका। औ नित डोंब छुवावहिं बाँका।
बीछी साँप रहहिं निति पासा। भोजन सोइ डसहिं[१२] हर स्वाँसा।

आस तुम्हारे मिलन की रहा जीव तब[१३] पेट[१४]।
नाहिं तो होत निरास जौं[१५] कत जीवन[१६] कत भेंट ॥

---

५. प्र० १, २, द्वि० ७ बाजत गाजत सुक्ख सौं आनि बैठ सुख पिउ पाट। द्वि० २, ३, ६ बाजत गाजत आइ मंदिर महँ आइ बैठ सुख छात। द्वि० ४, च० १, प० १ बाजत गाजत राजा आइ बैठ सुख पाट।

* प्र० १, २, द्वि० ६, (तृ० १) में इसके अनंतर एक अतिरिक्त छन्द है।

[६४२] १. द्वि० २, पं० १ सुनि, द्वि० ३, ४, ५, च० १ तस। २. प्र० १, २, पं० १ जिउ। ३. प्र० १ रँगभ्र जो, तृ० ३ रँग लै, द्वि० ४ संगी, द्वि० ५ अलग लै, च० १ लै संग, प० १ सुनि कै। ४. प्र० १ अनुसारा। ५. प्र० १, २, द्वि० २, ३ ६, ७ रहौं। ६. प्र० १, द्वि० ७ तुरकन्ह कै (मोहि-द्वि० ७) अदा। ७. द्वि० २ ओनर, द्वि० ५ ऊपर, द्वि० ३ ताचुर। ८. प्र० १, २ लै खनि गाडा (कै गड़—प्र० २) ओबरी मेला। ९. प्र० १ आत, (तृ० १) ठौंर। १०. द्वि० ४ भोनन। ११ प्र० १, २, द्वि० ७, पं० १ करहिं सँड़ासन्हि आँका। १२. प्र० १ भोजन करहिं डसहिं, द्वि० १ भजिय सोइ रहै। १३. द्वि० ४, ५ तब सो रहा जिउ, तृ० ३ रहा जीव तौ। १४. प्र० १, द्वि० ७ सँवरि रहा जिउ भेटि (पेटि-द्वि० ७)। १५. प्र० १, द्वि० ५, पं० १ निरास जिउ, द्वि० ४ निनार जिउ, द्वि० ७ बिछोह जो, (तृ० १) निरास हो, तृ० ३ निनार ज्यों। १६ द्वि० १ रे मिलन।

[६४३]

तुम्ह पिय भँवर[1]परी अति बेरा[2]। अब दुख सुनहु कँवल[3]धनि केरा।
छाँड़ि गएहु सरवर महँ मोहीं। सरवर सूखि गएउ बिनु तोहीं।
केलि जो करत हंस[4]उड़ि गएऊ। दिनअर[5] मीत[6] सो बैरी भएऊ।
गईं भीर तजि पुरइनि पाता। मुइउँ धूप सिर रहा न छाता।
भइउँ मीन तन[7] तलफै लागा। बिरहा[8] आइ बैठ होइ कागा।
काग चोंच तस साल न नाहाँ[9]। जसि बँदि तोरि साल हिय माहाँ।
कहेउँ काग अब लै तहँ जाही। जहँवाँ पिउ देखी मोहि[10] खाही।

काग निलिद्ध गीध अस[11] का मारहिं हौं मंदि[12]।
एहि पछताएँ झुठि मुइउँ[13] गइउँ न पिय सँग बंदि ॥

[६४४]

तेहि ऊपर का कहौं जो मारी। बिखम पहार परा दुख भारी।
दूति एक देवपाल पठाई। बाँभनि भेस[1] छरै मोहिं आई।
कहै तोरि हौं आदि सहेली। चलु लै जाउँ भँवर जहँ बेली[2]।
तब मैं ग्यान कीन्ह सतु बाँधा। ओहि के बोल लागु बिख साँधा।

---

[६४३] १. द्वि० ४, ५ पिउ भा.इ, द्वि० ६ पुनि प्रान। २. प्र० २ आपन परे सो बेरा, द्वि० ४ आइ परे अस बेरा, च० १, प० १ आनि परी असि पीरा। ३. प्र० १ कुँवर। ४. प्र० १, द्वि० ७ पखी, द्वि० १ भँवर। ५. द्वि० १ हित औ। ६ द्वि० २ सुनअत, तृ० ३ भेंट, द्वि० ४, ५ निपट। ७. प्र० १ जलि, द्वि० १ तजि। ८. तृ० ३ बधै। ९. प्र० १, २ काग जो चित्त साल गुन नाहाँ। १०. तृ० ३ तूँ। ११. प्र० १ काग निन्द्र अभाय वह, प्र० २ काग निन्द्र बिप भरत है, द्वि० १ जग निखिद्ध अस लाए। १२. प्र० १, २ तहँवाँ मुइउँ न मदि, द्वि० १ का जानि अति मंदि, द्वि० ४, ५ का मारहिं बहु मंदि, द्वि० ७ तिन्दहु भई मैं मंदि, द्वि० ६, प० १ तौ हुत मुइउँ भनि मन्दि, द्वि० ३ का नारी हौं मंदि, प० १ का मारहि मुठि मंदि। १३. प्र० १ एह पछितावा जिय रहा, प्र० २ एहि पछिताव पै रहिउ गइ, द्वि० ७ एइ पछितावा करौं निति, च० १, प० १ एहि पछिताएँ पै मुइउँ।

[६४४] १. प्र० १, द्वि० ७ रूप। २. प्र० १, २, द्वि० ६, ७ चलु तोहि लै भेरवौं पिय बेली (सेली-द्वि० ६)।

कहेउँ कँवल नहिं करै अहेरा। जौं है भँवर करिहि से[3] फेरा।
पाँच भूत आतमा नेवारेउँ। बारहिं बार फिरत मन मारेउँ।
औ समुझाएउँ आपन हियरा। कंत न दूरि अहै सुठि नियरा।

बास फूल घिउ छीर[4] जस निरमल नीर मँठाहँ[5]।
तस कि घटै घट पूरुस[6] ज्यों रे अगिनि कठाहँ[7]॥

[६४५]

सुनि देवपाल राव कर चालू। राजहि कठिन परा जिय सालू।
दादुर पुनि सो कँवल कहँ पेखा। गादुर मुख न सूर कर देखा।
अपने रँग जस नाँच मँजूरू। तेहि सरि साध करै तँवचूरु।
जब लहि आइ तुरुक गढ़ बाजा। तब लगि धरि आनौं तौ राजा।
नींद न लीन्ह रैनि सब जागा। होत बिहान जाइ गढ़ लागा।
कुंभलनेरि अगम गढ़[2] बाँका[3]। बिखम पंथ चढ़ि[4] जाइ न झाँका।
राजहि तहाँ गएउ लै कालू। होइ सामुँह रोपा देवपालू।

दुवौ लरे[5] होइ सनमुख[6] लोहँ भएउ असूझ।
सत्रुरु जूझि तब निबरै एक दुहूँ महँ जूझ॥*

---

3. प्र० १, २, द्वि० ६ पै। 4. प्र० १, ७ फूल बास मधु छीर, द्वि० १ छीर छाँड़, मधुबास। 5. प्र० १ निरमल सौं मँठाह, प्र० २, द्वि० ७ निरमल मँठाइ, द्वि० २, ४, ५, ६, तृ० २, च० १, पं० १ नीर मिलाइ मथाहिं। 6. प्र० २ तस निघटन घट पूरख, (तृ० १) तस निघटन तन ना भरहि, तृ० २, ३ तस निघटन घट पौरख, द्वि० ४, ५ तस निघटा घट सत, च० १ तैस नखत घट पौरष, पं० १ तैस निघर घट पुरुष। 7. द्वि० ४, ५ अगिनि कहँ खाद, पं० १ रागिन कंठाहिं।

* प्र० १, २, द्वि० ७ में इसके अनंतर बारह अतिरिक्त छंद हैं, जिनमें से नौ द्वि० ६ में और दस (तृ० १) में भी हैं। (देखिए परिशिष्ट)

[६४५] 1. द्वि०, ४, ५ सुख। 2. प्र० १, (तृ० १) सुठि, द्वि० १ बन। 3. द्वि० १ घाटी, चौटी। 4. प्र० १, २ चढ़ुँ, द्वि० ६ कोइ, तृ० ३ गढ़। 5. तृ० ३ औनि, तृ० २ सूर। 6. तृ० २ रन सौंह होइ।
* प्र० १, २, द्वि० ६, ७ में इसके अनंतर दो अतिरिक्त छंद हैं। (देखिए परिशिष्ट)

[६४६]

चढ़ि[1] देवपाल राउ[2] रन गाजा। मोहि तोहि जूझि एकौझा राजा।
मेलेसि साँगि आइ बिख भरी। मेटि न जाइ काल की घरी।
आइ नाभि तर साँगि बईठी। नाभि बेधि निकसी जहँ पीठी[3]।
चला मारि तब राजैं मारा। कंध टूट धर परा[4] निनारा।
सीस[5] काटि कै पैरैं[6] बाँधा। पावा दाउँ बैर जस साँधा।
जियत फिरा[7] आइउँ बलु हरा। माँझ बाट होइ लोहैं धरा।
कारी घाउ जाइ नहिं डोला। रही जीभ जम कहै[8] को बोला[9]।

सुद्धि बुद्धि सब बिसरी बाट परी मँझ बाट।
हस्ति घोर को काकर घर आना कै खाट[10] ॥*

[६४७]

तेहि दिन साँस पेट महँ रही। जौं लगि दसा[1] जियन की रही।
काल आइ देखराई साँटी। उठि जिउ चला[2] छाँड़ि कै माँटी।
काकर लोग कुटुँब घरबारू[3]। काकर अरथ दरब संसारू[3]।
ओहि घरी सब भएउ परावा। आपन सोइ जो बेरसा[4] खावा।

---

[६४६] १. द्वि० ४, ५ जौ। २. प० १ आइ। ३. प्र० १, २, द्वि० ७ भूली जाइ छिरकी जहँ पीठी, पं० १ निकसत पीठि परी नहिं दीठी। ४. प्र० १, २, ३, द्वि० ४, ५, तृ० ३, च० १ भएउ। ५. द्वि० ३ मूँड। ६. प्र० १ पौरन्ह, प्र० २ पौरै, द्वि० ७ पैरी। ७. द्वि० ३ जैस भोरा। ८. द्वि० २, ३, ४, ५ रही जीभ मम गही, द्वि० ६ रही जीभ मुख कहै। ९. द्वि० १ जम जाइ न बोला, च० १ मुख जाइ न बोला, पं० १ मुख कहै को बोला। १०. प्र० १, २, द्वि० ७ हस्ति घोर सब बिसरा घर आँगन कर घाट।

* प्र० १, २ द्वि० ६ (तृ० १) में इसके अनंतर एक अतिरिक्त छंद है।

[६४७] १. प्र० १, २, द्वि० ६, ७ घरी। २. प्र० २ उठा सो जीउ। ३. प्र० १ केहि केरा, दहि खेरा, प्र० २ केहि केरा, घर खेरा, द्वि० १, ६, ७, पं० १ परिवारा, संसारा, तृ० २ घर बार, संसारू। ४. द्वि० ४, ५, ६, च० १ परसा।

अहे जो हितू साथ के[५] नेगी। सबै लाग[६] काढ़ैं[७] पै[८] येगी।
हाथ झारि जस चला जुवारी। तजा राज होइ चला भिखारी।
जब हुत जीव रतन सब कहा। जौं भा बिन जिय[९] कौड़ि न लहा।

गढ़ सौंपा बादिल कहँ गए निकसि बसुदेउ[९]।
छाँड़ी लंक भभीखन[१०] जेहि भावै सो लेउ ॥*

[६४८]

पदुमावति नइ[१] पहिरि पटोरी[२]। चली साथ होइ पिय की जोरी[२]।
सुरुज छपा रैनि होइ गई। पूनिवँ ससि सो[३] अमावस भई।
छोरे[४] केस मोंति लर छूटे[५]। जाहुँ रैनि नखत[६] सब टूटे[५]।
सेंदुर परा जो सीस उघारी। आगि लाग जनु[७] जग अँधियारी।
एहि देवस हौं चाहति नाहाँ। चलौं साथ बाहौं[८] गल बाहाँ।
सारस पंखि न जियै निनारे। हौं तुम्ह बिनु का जियौं पियारे।
नेवछावरि कै तन छिरिआवौं। छार होइ[९] सँग बहुरि न आवौं[१०]।

---

५. प्र० १, २, द्वि० ७ मीत सब, द्वि० ६ मीत औ। ६. प्र० १, २ द्वि० १ कइहि। ७. द्वि० १ यहि, च० १ लै। ८. तृ० ३ पतन तौ। ९. प्र० १, द्वि० ४, ५, ६ गए टिकन बसुदेव, प्र० २, द्वि० १, ७ किए टीका सब देउ, द्वि० २ गए निकसन बसुदेव, तृ० ३ गए टिकन सब देउ (तृ० १) निसरि गएउ सहदेव, तृ० २ किए टीका बसुदेव, द्वि० ३ गए इद्र बसुदेव। १०. प्र० १, (तृ० १) ल का रावन, द्वि० ३, ५, तृ० २ राम अजोध्या।

* प्र० २ में इसके अनन्तर तीन छंद अतिरिक्त हैं, द्वि० १ तथा (तृ० २) में भी एक छंद यहाँ अतिरिक्त है, किंतु वह पूर्वोक्ति से भिन्न है।

[६४८] १. द्वि० ५ पुनि। २. प्र० १, २, प० १ नौ पहिरि पटोरा, हाथ सिधोरा। ३. प्र० १, पुनिवँ ससि छपा, पं० १ बूड़ ससि जो। ४. द्वि० ६ जेहि गरे। ५. प्र० १, २ सिर छूटे, टूटे, द्वि० ३ लर टूटे, छूटे, तृ० ३ सब छूटे, टूटे। ६. तृ० ३ नखत करहिं। ७. द्वि० ४, ५ चह। ८. प्र० १, २ पावौं, द्वि० १ घाले, द्वि० ४, ५ नान्हौं, तृ० ३ बाहि, द्वि० ६ होर दै, द्वि० ७ पावहिं, तृ० २ दै पिय, द्वि० २, प० १ दैके। ९. द्वि० ६ जो चला। १०. प्र० १ औ होद जनम स्यामि कँठ पावौं।

दीपक प्रीति पतंग जेउँ जनम निबाह करेउँ।
नेवछावरि चहुँ पास होइ कंठ लागि जिउ देउँ ॥*

[६४९]

नागमती पदुमावति रानीं। दुवौ महासत सती[1] बखानीं।
दुवौ आइ[2] चढ़ि खाट[3] बईठीं। औ सिवलोक परा तिन्ह डीठीं।
बैठौ कोइ राज औ पाटा। अंत सबै बैठिहि एहि खाटा।
चंदन अगर काढ़ि सर साजा। औ गति देइ चले लै राजा।
बाजन बाजहिं होइ अकूता। दुऔ कंत लै चाहहिं सूता।
एक जो बाजा भएउ बियाहू। अब दोसरें होइ ओर[4] निबाहू।
जियत जो जरहिं कंत की आसा। मुँए रहसि बैठहिं एक पासा।

आजु सूर दिन अँथवा आजु रैनि ससि बूड़ि।
आजु नाँचि जिय दीजिअ आजु आगि हम[5] जूड़ि ॥*

[६५०]

सर रचि दान पुन्नि बहु कीन्हा[1]। सात बार फिरि भाँवरि दीन्हा।
एक भँवरि भै जो रे बियाहीं। अब दोसरि दै गोहन जाहीं।
लै सर ऊपर खाट बिछाई[2]। पौढ़ीं दुवौ कंत कँठ[3] लाईं।
जियत कंत तुम्ह हम कँठ लाईं। मुए कंठ नहिं छाँड़हिं साँईं।
औ जो गाँठि कंत तुम्ह[4] जोरी। आदि अंत दिन्हि[5] जाइ न छोरी।[1]

---

* प्र १, २, द्वि० ६, ७, में यहाँ एक अतिरिक्त छंद है, जो (तृ० १) में ६४६ के अनंतर है।

[६४९] १. प्र० १ सरिस, प्र० २ सती। २. द्वि० ५ सतनि। ३. प्र० १, २ पाट। ४. तृ० ३ दोसरं साजन जनम, तृ० २ दोसरे बाजन भएउ। ५. तृ० ३ मुईं, तृ० १, द्वि० ३ एइ, च० १ भइ।

* द्वि० ७ में इसके अनतर एक अतिरिक्त छंद है।

[६५०] १. द्वि० १ आगि चहूँ दिसि दीन्हा। २. प्र० १, २ साँथी छाईं। ३. द्वि० ४, ५ गियँ। ४. प्र० १, २, पं० १ सों, द्वि० ७ सँग। ५. प्र० १, २, द्वि० ६, ७, च० १, पं० १ अब सो अत लहि, द्वि० २,३ आदि अत सो, द्वि० १ आदि अंत तच, द्वि० ४, ५, तृ० १ आदि अन्त लहि।

एहि जग काह जो अथि निअथी। हम तुम्ह नाहँ दुहूँ जग साथी।
लागीं कंठ आगि दै होरीं। छार भईं जरि अंग न मोरीं।[६]
रातीं पिय के नेह[७] गइँ[८] सरग[९] भएउ रतनार।
जो रे उवा सो अँथवा रहा न कोइ संसार ॥*

[६५१]

ओइ सहगवन[१] भईं जय ताईं[२]। पातसाहि गढ़ छेंका आईं।
तव लगि सो औसर होइ बीता। भए अलोप राम औ सीता।
आइ साहि सब सुना[३] अखारा। होइ गा राति देवस जो बारा।
छार उठाइ लीन्हि एक[४] मूँठी। दीन्हि उड़ाइ[५] पिरिथमी झूठी।
जौं लगि ऊपर छार न परई। तब लगि नाहिं जो तिस्ना मरई।
सगरें कटक उठाई माँटी। पुल बाँधा जहँ जहँ गढ़ घाटी।
भा ढोवा भा जूझि असूझा[६]। बादिल आइ पँवरि होइ[७] जूझा।[८]
जौहर भईं इस्तिरी पुरुख भए[९] संग्राम।
पातसाहि गढ़ चूरा चितउर भा इसलाम ॥*

---

६. तृ० २ में यहाँ निम्नलिखित दोहा और भी है :
जो ठाँवर यम तुमहि दे सो हम देहू निदान।
ठाँवर के ठावर देई भाजन देइ परान ॥
७. द्वि० १ पेम। ८. तृ० ३ कै (उर्दू मूल)। ९. द्वि० १ जगत।

* प्र० २ में इसके अनंतर तीन छंद अतिरिक्त हैं, जिनमें से एक प्र० ३, द्वि० ७, (तृ० १) में भी है।

[६५१] १. द्वि० १ सहगामिनि। २. प्र० १ संग साईं, प्र० २ सहत गईं, द्वि० २, ४ जत जाईं, पं० १ संग जाईं। ३. प्र० १, २ अब सुना, द्वि० १, ६ तब सुना, तृ० ३ मर सुना, द्वि० ४, ५, पं० १ ओ सुना। ४. प्र० १, २ द्वि० ७ भरि। ५. प्र० १, २ द्वि० ७, पं० १ राहु न आपन। ६. प्र० १, २, द्वि० ७, (तृ० १) जूझे कुँवर अनगिनत असूझा। ७. द्वि० ४, ५ पर। ८. प्र० २ पेम पवित्र केरि यह माँटी, पेमहि लागि पीठि महँ साँटी। ९. प्र० १, २ पुरुखन्हि भा।

* इस छंद की सातवीं तथा आठवीं पंक्तियों के बीच प्र० १, ९ (तृ० १) में ग्यारह अतिरिक्त छंदों की पंक्तियाँ आती हैं। द्वि० ४, ५, (तृ० १) में एक भिन्न अतिरिक्त छंद इस छंद के अनंतर है, जो कुछ प्रतियों में छंद १३३ के अनंतर आया है।

[६५२]

मुहमद यहि कबि जोरि सुनावा। सुना जो पेम पीर गा पावा[1]।
जोरी लाइ रकत कै लेई[2]। गाढ़ी प्रीति नैन[3] जल भेई[4]।
औ मन जानि कबित अस कीन्हा। मकु यह रहै जगत महँ चीन्हा।
कहाँ सो रतनसेनि अस राजा। कहाँ सुवा असि बुधि[5] उपराजा।
कहाँ अलाउदीन सुलतानू। कहँ राघौ जेइँ कीन्ह बखानू।
कहँ सुरूप पदुमावति रानी। कोइ न रहा जग रही कहानी[7]।
धनि सो पुरुख जस[8] कीरति जासू। फूल मरै पै[9] मरै न बासू।

केइँ न जगत जस बेंचा[10] केइँ न लीन्ह जस[11] मोल।
जो यह पढ़ै[12] कहानी हम सँवरै[13] दुइ बोल[14]॥*

[६५३]

मुहमद बिरिध बएस अब भई[1]। जोबन हुत सो अवस्था[2] गई[1]।
बल जो गएउ[3] कै खीन सरीरू। दिस्टि गई नैनन्ह दै नीरू।
दसन गए कै तुचा[4] कपोला। बैन गए दै अनरुचि बोला।

---

[६५२] १. यह पंक्ति च० २ प्र में नहीं है। २. तृ० ३ -। रगाइ कंत कै लेई, द्वि० ४, ५ जोरे लाइ कत लै गए, द्वि० ७ जो जिअ लाइ ननर कै लेई। ३. द्वि० ४, ५ प्रेम प्रीति नैनन्ह, च० २ बाँटहि मीनि। ४. तृ० ३ भेई, द्वि० ४, ५, भए। ५. द्वि० ४, ५ गात। ६. प्र० १, २, द्वि० ७ पेम, द्वि० १ सुबुद्धि, तृ० ३ जेहँ बुधि। ७ प्र० १ कहा सो नागमती मिर रानी, प्र० २ कहाँ सो नागमती जो बखानी, द्वि० ७ कहाँ नागमती जग रही कहानी। ८. प्र० १, २, द्वि० ४, ५, प ० १ सोई जस, द्वि० २ सो पुरुस जहि, द्वि० ६, (तृ० २) सो रे जग, द्वि० ७ सोइ जग। ९ प्र० १, २ धनि फूल जेहिं। १०. प्र० २, द्वि० ७ बेंचिआ। ११. द्वि० २, तृ० ३ जस, द्वि० ३ अस। १२. प्र० २ सुनै। १३. द्वि० १ समुझै। १४. द्वि० ७ में यह पंक्ति नहीं है।
* प्र० १, २ में इनके अनंतर चार छंद अतिरिक्त हैं, जिनमें से तीन (तृ० १) में यहाँ पर और एक छंद ६५१ के अनंतर है।

[६५३] १. प्र० १ येह आई, भाई, प्र० २ अब आई, आई, तृ० ३ जौ भइ, गई, तृ० २ असि भई, गई। २. द्वि० ७ अबिरथा। ३. द्वि० १ दत्त सो गवा। ४. प्र० १, २ वै छाडि, द्वि० २, ७, पं० १ भा खीन।

बुद्धि[५] गई हिरदै बौराई। गरब गएउ तरहुँत सिर नाई।
सरवन गए ऊँच दै[६] सुना। कारी[७] गएउ सीस भा[८] धुना।
भँवर गएउ केसन्ह[९] दै भुवा। जोबन गएउ जियत जनु मुवा[१०]।
तब लगि जीवन जोबन सार्था[११]। पुनि सो मींचु[१२] पराए हार्था।

बिरिध जो सीस डोलावै[१३] सीस धुनै तेहि रीस[१४]।
बूढ़ आढे[१५] होहु तुम्ह केइँ यह दीन्ह असीस॥*

---

५. तृ० २ मति। ६. प्र० १, २ तव, प० १ कै। ७. द्वि० ४ स्याही। ८. प्र० १, २ तव, द्वि० ७, (तृ० १) पै, द्वि० २ दै। ९. द्वि० ४ दीन्ह। १०. प्र० १, २, द्वि० ७ बिनु जोबन जिअतै जनु मुवा, द्वि० ४, च० १ जोबन गएउ जिअत है जुवा। ११. प्र० १, २, द्वि० ७ या जीवन जोबन नहिं साथा। १२. प्र० १, २, द्वि० ७ को मैउ नाइ (आस -द्वि० ७)। १३. च० १ मुहँमद बिधि जो काँपै। १४. प्र० १, २ कहा जानि कै रीस, पं० १ जानत हौ केहि रीस। १५. प्र० १ आउहि, द्वि० ६ आउ पै।
* प्र० १, २, (तृ० १) में इसके अनंतर तीन छंद अतिरिक्त हैं, जिनमें से दो द्वि० ७ में भी हैं।

परिशिष्ट

'पदमावत' के प्रक्षिप्त छंद

[२२अ]

द्वि० १—

मानिक एक पाएउँ. उजियारा। सैयद असरफ पीर पियारा।
धुंध धूम देखौं कलि माहाँ। कहत धूप धुर नावत छाहाँ।
जायस नगर मोर अस्थानू। नगर क नाउँ अवध अस गाऊँ।
तहवाँ देवस दस पठाएँ आएउँ। भा बैराग बहुत दुख पाएउँ।
सुख भा सोच एक सँग मानेउँ। वहि बिनु जीवन मरन कै जानेउँ।
जहवाँ देखौं तहवाँ सोई। और न आव दृष्टि तर कोई।
सभै जगत दरपन कर लेखा। आपन दरसन आपुहिं देखा।

अपने कौतुक कारन मेलि पसारसि हाथ।
मलिक मुहम्मद पंथी होइ निसरे तेहि बाट॥

[५५अ]

शुक्ल, ग्रियर्सन—

एक दिवस पदमावति रानी। हीरामनि तइँ कहा सयानी।
सुनु हीरामनि कहौं बुझाई। दिन दिन मदन सतावै आई।
पिता हमार न चालै बाता। त्रासहि बोलि सकहि नहिं माता।
देस देस के बर मोहि आवहिं। पिता हमार न आँखि लगावहिं।
जोबन मोर भएउ जस गंगा। देह देह हम लाग अनंगा।
हीरामनि तब कहा बुझाई। बिधि कर लिखा मेंटि नहिं जाई।
अग्याँ देउ देखौं फिरि देसा। तोहि जोग बर मिलै नरेसा।

जौ लगि मैं फिरि आवौं मन चित धरहु गिवारि।
सुनत रहा कोइ दुरजन राजहि कहा बिचारि॥

[६०अ]

द्वि० २, तृ० १, २, ३ च० १, —

मिलहिं रहसि सब चढ़हिं हिंडोरी। झूलि लेहिं सुख बारी भोरी।
झूलि लेहु नैहर जब ताईं। फिरि नहिं झूलन देइहि साईं।
पुनि सासुर लेइ राखिहि तहाँ। नैहर चाह न पाउब जहाँ।
कित यह धूप कहाँ यह छाहाँ। रहब सखी बिनु मंदिर माहाँ।
गुन पूछिहि औ लाइहि दोखू। कौन उतर पाउब तहँ मोखू।
सासु ननँद के भौंह सिकोरे। रहब सँकोचि दुवौ कर जोरे।
कित यह रहसि जो आउब करना। ससुरेइ अंत जनम दुख भरना।

कित नैहर पुनि आउब कित ससुरे यह खेल।
आपु आपु कहँ होइहि परब पंखि जस डेल।

[६०अ[१]]

प्र० १, २—

सुनि सासुर पदुमावति डरी। जल बिनु सूख कँवल ज्यों करी।
अब लगु सखी स्रवन नहिं सुना। डरपा जिउ हियरे महँ गुना।
हा हा करौं सखी हौं चेरी। कहु फिरि बात सखी पिउ केरी।
अगसरि जाब कि दूसर संगा। सुभर पंथ की आहि कुरंगा।
वोहि दीप सखि आहि कि दूजा। एक सूरज की दूसर सुरुजा।
कैसा नगर कैस बसगोती। कहु अब तहाँ कैसि है रीती।
चख गहि बरें धरकु सो हिया। देइ मान तरहेले तिया।

कस रे मिलन कस आदर कैस नम कर लोग।
कैस कंत वहु पंथ कस कैस मिलै सुख भोग॥

[६०अ[२]]

प्र० १, २—

कहा सखी खेलत सँग अही। अब सु बात पदुमावति कही।
जस नैहर सासुर है काहाँ। जरन झुरन आहै निज्जु ताहाँ।
सेवा सो सासुर बड़ काजू। जौ सो सुकंत तौ सदा सोहागू।
सेवा सासु ननद बस करई। सेवा मान सवति कर हरई।

संजम सौं निसि भै भलि होई। देवर जो जिउ बोलु न कोई।
सुजन परारा होइहि अजाना। नैहर होइहि रैनि सयाना।
कहा तुम्हार नीक हम सखो। झुरि झुरि भर बन देखब आँखी।

कहाँ खेल कहाँ सरवर कहाँ सखी कहँ रानि।
सखी बुझावहि आपु पर समुझि सो सबै तिवानि॥

[६१अ]

तृ० २—

चोली चीर छोरि के धरीं। देखि स्वभाव छपीं आछरीं।
औ जत अभरन पहिरें अहा। काढ़ि ठिठाँव परन को कहा(?)।
दिपै लिलाट दीप मुख धारा। पाछें लाग फिर अँधियारा।
सरब चंद्रमुख जोति सरूपा। खंजन नैन सो दीख अनूपा।
बदन जोति पटतर नहिं दूजे। पूनिउ ससि सरि होइ न पूजे।
जग उजियार कीन्ह बिधि जोती। मुख औ बान... ... (?)।
ससि देखे सर कँवल लजाई। देखि अँजोर कुमुद बिकसाई।

जगमग जोति अपूरब भा मूरत बहु ठायँ।
जहँ जहँ दरस परस भा तहँ भा रूप सुहान।

[६१ आ]

तृ० २—

मरदन औ तन सो विधि साजै। सीस पखारन बिधि उपराजे।
कै मंजन तन सो विधि जो मिला। बिमल कथा कपूर निर्मला।
बिमल सुगंधि महा सुख रासी। औ माती बहु फूल न पाती।
सीठी (?) लाइ केस जब मले। अष्टौ कुली नाग कलमले।
सु कहब का (?) सो कुछ सो अलगा। दहकत दुसह स्याम सो लगा।
एक घरी जनु उपरें सारी। एक घरी जनु भितरें हारी।
चंदन खास खस केवड़ा हरे। जहँ लग सुगंधि आनि सब धरे।

महा भूप रस कुसुम औ बहु बहु रंग सवारि।
चीर चारु औ अभरन अगर धरा तहँ चारि॥

[६४ अ]

प्र० १, २—

जेहिं कर सीप चढ़ा सो हंसा। पोंघी सेवार पाव सो नसा।
पदुमिनि सभहिं सखिन्ह सैं पूछा। केहि सरि लाभ फिरा को छूछा।
हेरि हार सब करन्ह तो आना। जो जहाँ आहि सो वहाँ भुलाना।
काहु न सूझा सरवर ताला। जिन्ह बिरा बिथा आइ उर साला।
मुरुछि परी पदुमावति रानी। सखी जगाव मेलि मुख पानी।
मुरछहिं सखी नारि कर टोई। व्याधि सोइ जेहि ओखद न होई।
नग अमोल हरवा मह अहा। चंपावति पूछैं का कहा।

रोवै रानि पदुमावति हार हरा एहि ठाँउ।
सबै सखी रहु मान सौं हौं बिरुचो एहि गाउं॥

[६४ आ]

प्र० १, २—

बोलैं सखी सबै एक बानी। जो दुख तुम्हैं हमैं सो रानी।
तुम्ह रोई गंध्रप की बारी। हम कुँवरिन्हि केहि माहिं बिचारी।
छाँड़ि भोकार रानि सब झँखी। मानत नाहिं बुझावत सखी।
सब मिलि कहहिं एइ समुँद रोवावा। कोइ रोवै कोइ करै बुझावा।
तुम्ह जानहु जेहि हमरहि हारा। तोहि सौं हमैं होइ दुख भारा।
सब मिलि कै कर जोरि पुकारा। देहि हार अब समुँद हमारा।
सबै खेल अब भा फुर खेला। सुख सनेह हम दुख कर मेला।

कहाँ जाउं कापहँ कहौं हार समुद मोर लीन्ह।
हेरि कँवल जल मीन पहँ का जानौं का कीन्ह॥

[८७ अ]

तृ० २ में छंद ८७ की अतिरिक्त पंक्तियाँ—

कै अहेर राजा घर आए। बाजन बाजत सबद सुहाए।
दिन बितीत निसि आइ तुलानी। सुख बिहँसत आई तहँ रानी।
आसन भयौ सो उठि कै आनी। नीद परै कछु कहै कहानी।
रुहिर चुवै जो जो कह बैना। रकत आइ भरि मोरै नैना।

और जो कहसि सो कहै न आवा। बिषम कुठार हनै जसु लावा।
महूँ अचकि जकि रहीं अबोली। रकत सेज भीजी तन चोली।
बूझे नाह औसि जो कहा। अस मुख बचन कहाँ को सहा।
अगिनि सुनाइ कहै मुख बाता। जर जर रह्यो भयो हिय बाता॥

[६० अ]

तृ० २—

मैं रिसि सुवा सो मारैं कहा। पै जेहि बिधि राखै सो रहा।
कै गियान मन अगम बिचारा। जेहि पूजै नहिं चाहिय मारा।
मैं सयान कस होउँ अयानी। यह दुख मारैं औस कहानी।
तूँ तिरिया मति हीन पियारी। यह परबत पर रिस न सँभारी।
यह दिन सँवरि सुवा मैं राखा। तजहु सोच चित कै अभिलाखा।
धायँ आनि सुवा सो दीन्हा। रहसि भरी रानी सो लीन्हा।
गएउ भूलि(?)दुख दुंद जो अहा। दुख के अंत सुक्ख है कहा॥

सावधान जग होइ जो सदा सुखी सो होइ।
बिन बूझे जो काज कर अंत दुखी होइ सोइ॥

[११८ अ]

प्र० १, २, द्वि० ७—

बारह अभरन कहौं बिचारी। औ षोडसौ सिंगार सिंगारी।
सेत चारि सोहै अति स्यामा। राते चारि सोह अति रामा।
माँग सेत लोचन नख चौका। देखि जो चौक कौंध जनु लौका।
कच चख भौंह स्याम कुच सीसा। छाघा (?) काम उपमा तनु ईसा।
नैन दसन कर तरवा राता। राते सबै जग जेहि के नाता।
एह अभरन औ कहौं सिंगारा। जेहि तन भान सिरे कर तारा।
नासिका अधर पल्लव कटि खीनी। गाल कसाई सुभर कटि छीनी।

जंघ सुभर छबि सुभरता सौ नहिं सीत न कार।
पुनि गति सील सुभाउ तें एह षोडस सिंगार॥

[१२५ अ]

द्वि० ४, ५—

हिंदू मीत बहुत समुझावा। मान न राजा गवन भुलावा॥

ऊँचे पेम पीर घिर आई। परबोधक होइ अधिक सुहाई।
अमृत घात कहत विष जाना। पेम को बचन मीठ कै माना।
जो यह बिरह मारि कै खाई। पूछौ ताही पेम मलाई।
पूछौ बात भरथरिहि जाई। अमरित राज तज्यौ बिस खाई।
औ महेस बड़ सिद्ध कहावा। उनहूँ बिखै कंठ पै लावा।
होत आव रवि किरन निकासा। हनुमत होइ देइ को आसा।

तुम सब सिद्धि मनावहु होइ गनेस बुधि लेहु।
चेला को न चलावै मिलै गुरू जहँ भेउ॥

[१३३अ]

प्र० १, द्वि० ४, ५, (तृ० १)—

मैं एहि अरथ पंडितन्ह बूझा। कहा कि हम्ह किछु और न सूझा।
चौदह भुवन जो तर उपराहीं। ते सब मानुख के घट माहीं।
तन चितउर मन राजा कीन्हा। हिय सिंघल बुधि पदमिनि चीन्हा।
गुरू सुवा जेइ पंथ देखावा। बिनु गुरु जगत को निरगुन पावा।
नागमती यह दुनिया धंधा। बाँचा सोइ न एहि चित बंधा।
राघव दूत सोइ सैतानू। माया अलाउदीं सुलतानू।
पेम कथा एहि भाँति विचारहु। बूझि लेहु जो बूझै पारहु।

तुरकी अरबी हिंदुई भाषा जेती आहिं।
जेहि महँ मारग पेम कर सबै सराहैं ताहि॥

प्र० १ में यह छंद यथा १३३ अ है; द्वि० ४ में यह छंद दो बार आया है, एक बार यथा २७४ आ, और दूसरी बार यथा ६५१ अ; अंतर यह है कि २७४ आ में छंद की प्रथम दो पंक्तियाँ नहीं हैं, उनके स्थान पर यथा पाँचवीं और सातवीं निम्नलिखित पंक्तियाँ हैं :

मैं यह जानि लिखा अस कीन्हा। बूझै सोइ जु आपन चीन्हा।
आपनि जीभि औ आपनि बोली। मूरख मारै बोली ठोली।

और छंद की सातवीं पंक्ति के स्थान पर २७४ आ में छठवीं पंक्ति का पाठ इस प्रकार है :

प्रेम कथा एहि भाँति बनाई। मूरख कहहिं कहानी गाई।

(तृ० १) तथा द्वि० ५ में यह छंद एक बार यथा ६५१ अ आया है।

[१४८ अ]

द्वि० १, ४, ५, ६, (किंतु द्वि० १, ६ में यह यथा १४६अ है)—

बात कहत भइ देस गोहारी। कउनिहु चाल्ह समुद महँ मारी।
हस्ती सिस्टि लाइ हठ कीला। दौड़ि आइ एक चाल्हा लीला।
केवट लोग लाख हुत वली। फिरै न चाल्ह जिवन कलकली।
बोहिथ सहस जानहु चहुँ ओरा। होइ कलोल जानु तद बोरा।
सुनि कै आप चढ़ा सैं राजा। औ सब देस लोक मिलि बाजा।
भाल बाँधु खाँडे बहु परहीं। जानु पहाल बाज कै चढ़हीं।
चारा लील सो माछर भाजी। कहाँ जाइ जो जाकर खाजी।

माछर कर बिख हिरदैं बहु साँधी बिस बान।
सबहिन पहुँचि कै मारा चाल्हहिं बचे परान॥

[१४८ आ]

द्वि० १, ४, ५, ६, (किंतु द्वि० १, ६ में यह यथा १४६ आ है)—

जस धौलागिरि परबत होई। तिहीं भाँति उतिरान्यौ सोई।
सबहिं देस मिलि तीरि न आना। लीन्ह कुल्हाड़ी लोग जहाना।
जनु परबत पर लागहिं चाँटी। लै लै माँसु रही सब काटी।
पाँजर परी कोस दस मडे। पाँजर कसि जस सेत बिरडै।
नैन सो जान कोट कै पँवरी। कत अस गई फिरी तहँ भवरी।
रतनसेनि सो सुनि कै कहँ। अस अस मच्छ समुँद महँ अहँ।
राजा तू चाहहु तहँ गवना। होउ संजोग बहुरि नहिं अवना।

तुम्ह राजा औ गुरू हम सेवक अरु चेर।
कीन्ह चहैं सब आएसु अब गवनें तहँ फेर॥

[१५६ अ]

प्र० १, द्वि० १, २, ३, ४, ५, ६, तृ० १, २, ३, प० १; (किंतु प्र० १ में यह यथा १४६ अ है)—

राजैं दीन्ह कटक कर बीरा। सुपुरुस होहु धरहु मन धीरा।

ठाकुर जेहि क सूर भा कोई। कटक सूर पुनि आगुहि होई।
जौ लहि सती न जिउ सत बाँधा। तौ लहि देइ कहाँर न काँधा।
पेम समुद महँ बाँधा बेरा। यह सब समुद बूँद जेहि केरा।
ना हौं सरग क चाहौं राजू। न मोहि नरक सेंति किछु काजू।
चाहौं ओहि कर दरसन पावा। जेइ मोहि आनि पेम पथ लावा।
काठहि काह गाढ़ का ढीला। बूड़ न समुद मगर नहिं लीला।

कान समुद धँसि लीन्हेसि भा पाछे सब कोइ।
कोइ काहू न सँभारै आपनि आपनि होइ॥

[१५८अ]

द्वि० २—

राजहिं दिस्टि पंथ नभ देखे। भइ पाथर सब मोरे लेखे।
का लै करौं पर नर भारा। तब का कीन्ह जब लीन्ह भँडारा।
कछु नहिं हाथ लाग जो छाँड़ा। ठावहिं ठाउँ रहा सब गाड़ा।
सिद्ध पुरुष सब जामौं भागे। जिय न सकैं तिहि हाथ न लागे।
अथिर होइ भाग सो राँचा। पंथी लै पथ जीवन बाँचा।
सातौं परवत गए का हाथा। सातौं गुरू दुहूँ जग साथा।
कँवल लागि भँवरा जस गिरहीं। मकु जिय जाइ वेगि नहिं हरहीं।

धन औ दरब मोर पदमावत हौं बेधा जेहि पेम।
सातौं समुद देउँ नेवछावरि मिलौं तौ जब तब पेम॥

[१६३अ]

प्र० १, २, द्वि० ३ ५, ७,—

नीचे संग नित होइ निचाई। जैसे बकु मराल की नाईं।
नीच न कबहूँ जिय महँ राखिअ। नीच संग कबहूँ नहिं लाइअ।
नीच न कबहूँ होइ भलाई। नीचे सौं पुनि पुनि मंदाई।
नीच न कबहूँ आवै काजा। नीचे रहै न एकौ लाजा।
नीचे सौं निति होइ निचाई। नीच निबाह न ऊँच मिताई।
नीचे संग न कबहूँ कीजे। नीचे पंथ पाउँ नहिं दीजे।
नीचे नहिं कीजै ब्योहारू। नीचे काहि न दीजै भारू।

होइ ऊँच नहिं कबहूँ जेहि नीचे मन भाउ।
नीच लै ऊँच बिनासै नीच संग लागि न साउ॥

[१६८अ]

तृ० ३—

जब जनमी पदमावति रानी। ता दिन गनकु कहा मन जानी।
जंबू दीप देस एक अहा। पदुमावति कर तहाँ देस हा।
एक दिन धाई बात चलावा। लरकाईं जिउ गहबरि आवा।
जौं रतिपति ज्यौं राति समाना। सिंभु निसिंभु दोउ उठे अमाना।
सँवरत सो निसि बासर जाई। भवन छपा सो किछु न सुहाई।
बिरह बिथा अति ब्याकुल भारी। हरि हित लेपन भाव न सारी।
जलसुत सीतल देह चढ़ाई। अधिक बिरह तनु लाग दहाई।

बनिता बैठि जु सुमिरै हरि भँडार कर देइ।
सुरुज चाँद सखि कब मिलें जो रति पति करेइ॥

[१८०अ]

प्र० १, २, द्वि० १, २, ३, ४, ५, ६, ७, तृ० १, च० १, पं०१—

सुना जो अस धनि जारी कया। तन भा साँच हिएँ भै मया।
देखौं जाइ जरै कस भानू। कंचन जरे अधिक होइ बानू।
अब जौं मरै वह पेम बियोगी। हत्या मोहिं जेहि कारन जोगी।
सुनि कै रतन पदारथ राता। हीरामन सौं कह यह बाता।
जौं वह जोगि सभारै छाला। पाइहि भुगुति देउँ जयमाला।
आव बसंत कुसल जौं पावौं। पूजा मिस मंडप कहँ धावौं।
गुरु के बैन फूल हौं गाँथे। देखौं नैन चढ़ावैं माथे।

कवँल भँवर तुम्ह बरना मैं माना पुनि सोइ।
चाँद सूर कहँ चाहिअ जौं रे सूर वह होइ॥

[१८५अ]

प्र० १, २, द्वि० १, २, ४, ५, ६, तृ० ३—

रँगरेजिन वहु राती सारी। चली चोखि सो नाइन बारी।

ठठेरिनि चलीं बहु ठाठर कीन्हे। चलीं अहीरिनि काजर दीन्हे।
गूजरि चलीं गोरस कै माती। तँबोलिन चलीं रंग बहु राती।
चलीं लोहारिनि पैने नैना। भाँटिनि चली मधुर मुख बैना।
गंधिनि चलीं सुगंध लगाए। छीपिनि छीपइँ चीर रँगाए।
मालिनि चलीं फूल लै गाँथे। तेलिनि चलीं फुलाएल माँथे।
कै सिंगार बहु बेसवा चलीं। जहँ लगि मूँदीं बिगसीं कलीं।

नटिनी डोमिनि ढोलिनि सहनाइनि भेरिकारि।
निरतत तत बिनोद सौं बिहँसत खेलत नारि॥

[२३१अ]

यह अतिरिक्त छंद तृ० ३ म यथा २३१ अ, द्वि० ३, ६ म यथा २३२ अ तथा द्वि० ५ में, यथा २३३ है—

रहौं गगन महँ बार बियोगी। चाहै भोग सो रावल जोगी।
मागै सीस देउँ कर जोरी। आरा देइ अंग नहिं मोरी।
जेहि महँ मोहि वह अधिक सुहावै। जो जिउ लेइ मारा नहिं आवै।
पास जौ राखै हौं परिछाइँ। सेवा जोग जगत हौं नाईं।
तजि वह नाउँ न जानउँ दूजा। कबहुँ जो मिलै इ छ(?)मन पूजा।
अपने जिउ पर लोभ न मोहीं। पेम द्वार होइ मागउँ ओही।
दरसन लागि तपौं औ जरौं। खन खन बरिस बरिस ज्यों तरौं।

ओहि दरसन कहँ जोवौं दीपक जैस पतंग।
कटि कटि मासु जो मारौ मरत न मोरौं अंग॥

[२३८अ]

प्र० १, द्वि० ५—

यहै बात गढ़ परचहि चहै। कोई कहै किछु अन कहै।
देखन पौन छतीसौं धावा। कोइ देखै कोइ सीस डोलावा।
तब लग यह गढ़ हुता अछूता। भवा निदान आइ गढ़ दूता।
देखि लोग गढ़ करहिं बुझावा। यह गढ जीउ अनेकन्ह लावा।
यह सिंघल घर घर सुख साजा। दुख की बात न जानै राजा।
जोग जुगुति किछु है न समानी। अब चख भरे ढरा सब पानी।

पकरि काल अब तहँ लै आवा। अब तुम्हार जिउ रहै न पावा।[1]

काहू जियन भयौ गढ़ भीतर काहू भयौ अन्याउ।
पाँव फिरौ गढ़ पाछू अबहुँ सुना नहिं राउ॥

[२३८आ]

प्र० १, द्वि० ५—

बोला रतन सुनहु सिंघली। सिद्ध न और विधाता बली।
जिन यह करिया बूढ़हिं टेका। सत्तर पीर भए गढ़ एका।[2]
बर सनमानौं एक हर केरा। रन बन माँड रहा चहुँ फेरा।
छन एक माँह करै दुख भंगा। राज छँड़ाइ करै भिखमंगा।
जो कोई आपन कै कै गहै। ओहि कै डीठ सबै पर रहै।
जब कोई चाहै तब नहि भेटा। ताहि मिलै जो पीछें टेक।
तिन सौं कोई करै सरबली। सो जग ऊपर जग सब कली।

बोउ काहू अभिमान जनि नैन हियहि के देखि।
गिरै रोवै जौ माँगई निरखि परै अपलेख॥

[२६२अ]

प्र० १, द्वि० २, ३, ४, ५, ६, तृ० १, २ (किंतु तृ० २ में यथा २६१ अ है)—

जोगिन्ह जबहिं गाढ़ अस परा। महादेव कर आसन टरा।
वै हँसि पारबती सौं कहा। जानहुँ सूर गहन अस गहा।
आजु चढ़े गढ़ ऊपर तपा। राजै गहा सूर तब छपा।
जग देखैगा कौतुक आजू। कीन्ह तपा मारै कहँ साजू।
पारबती सुनि पायन्हँ परी। चलि महेस देखहि एहि घरी।
भेस भाँट भाँटिनि कर कीन्हा। औ हनुवत बीर सँग लीन्हा।
आए गुपुत होइ देखत लागी। वह मूरति कस सती सभागी।

कटक असूझ देखि कै राजा गरब करेइ।
दैउ क दसा न देखइ दहुँ का कहँ जय देइ॥

---

[1] प्र० १ में इस पंक्ति का पहला चरण है लै सो चान्ति जोगा तुम्ह आए, दूसरा चरण लिखने में रह गया है।

[2] प्र० १ में दूसरा चरण है। 'होइ म०।य सो आइ मंगला।' इसी प्रकार शेष नीचे का पंक्तियों में भी पाठ भेद है।

[२६२आ]

द्वि० २, ३, ४, ५—

'अस लव लीन्ह रहा होइ तपा। पदुमावति पदुमावति जपा।
मन समाधि तासौं धुनि लागी। जेहि दरसन कारन बैरागी।
रहा समाइ रूप औ नाऊँ। और न सूझ बार जहँ जाऊँ।
औ महेस कहँ करौं अदेसू। जेइ यह पंथ दीन्ह उपदेसू।
पारबती पुनि सत्य सराहा। औ फिरि मुख महेस कर चाहा।
हिय महेस जौ कहै महेसी। कित सिर नावहिं ए परदेसी।
मरतहु लीन्ह तुम्हारहि नाऊँ। तुम्ह चित किए रहे एहि ठाऊँ।

मारत ही परदेसी राखि लेहु एहि बीर।
कोइ काहू कर नाहीं जो होइ चलै न तीर॥

[२६२इ]

द्वि० ३, ४, ५—

लै सो सँदेस सुवा गयो तहाँ। सूली देन गए लै जहाँ।
देखि रतन हीरामनि रोवा। राजा जिउ लोगन्ह हठि खोवा।
देखि रतन हीरामनि फेरा। रोवहिं सब राजा मुख हेरा।
माँगहिं सब बिधिना सौं रोई। कै उपकार छुड़ावै कोई।
कहि सँदेस सब बिपति सुनाई। बिकल बहुत किछु कहा न जाई।
काढ़ि प्रान बैठी लेइ हाथा। मरै तौ मरौं जिऔं एक साथा।
सुनि सँदेस राजा तब हँसा। प्रान प्रान घट घट महँ बसा।

सुअटा भाँट दसौंधी भए जिउ पर एक ठाँउ।
चलि सो जाइ अब देख तह जहँ बैठा रह राउ।'

[२६२अ१]

तृ० १—

गौरैं फुनि ईसर सन कहा। मरतहु परै जियत डर रहा।
ओहि पै पंथ भएउ जिउ खोई। निस्चै न जानहुँ ओहि कस होई।
भावै जीउ सूरी दै लेई। भावै राज पाट कोइ देई।

छंद की शेष अर्द्धालियाँ २६२ की ४, ५, ६, तथा ७ हैं और दोहा २६२ आ का है, केवल द्वि० ४ में यह समस्त शेष पंक्तियाँ २६२ आ की इन्हीं संख्याओं की पंक्तियाँ हैं।

[२६४अ]

द्वि० ३ —

मैं अग्यां को भाट अभाऊ। बाएँ हाथ दीन्ह बरम्हाऊ।
को मोहिं जोग होइ जग पारा। जासौं हेरौं जाइ पतारा।
सुर नर गन गंध्रप रिपि देवा। सब जग जीति करहिं नित सेवा।
तेहि बिनु जीव जंत जत अहहीं। माथ नाइ मुख अस्तुति कहहीं।
परगट गुपुत जहाँ लगि होई। सीस नाइ सौंपै सब कोई।
रन बन जीव जंतु जो रहहीं। घरस पाइ सेवा सब करहीं।

तासौं को सरवरि करे अरे अरे झूँठे भाँट।
छार होहिं सब तपसी जो छूटहिं गज पाँति॥

[२६४आ]

द्वि० २, ३ —

राजा रिसहिं सुनी नहि बाता। अति रिस भरा कोह भा राता।
सूरी खड़ी कीन्ह लै कहाँ। आठौं बज्र खड़े जुरि जहाँ।
अन बाजहिं बाजन बहु भाँता। राजा हिय न होइ सुख साँती।
मारै मार करहिं सब कोई। गंध्रपसेन आगि रन बोई।
कहा न मानै अति रिसि भरा। जेहिं दिसि हेर सोई दिसि जरा।
बिनवहिं सबहि सो मंत्री महा। गंध्रपसेन सुनै नहिं कहा।
छत्री बीर सकल रन रोपी। टेरहिं टेर बीर रन कोपी।

काहू कहा न मानहि राजा राजहिं अति रिसि कीन्ह।
धरि मारहु सब जोगी राइ रजाएसु दीन्ह॥

[२६४इ]

द्वि० २ —

ईसर भाँट भेस अस भाखा। हनुमत बीर रहै नहिं राखा।

लीन्ह चूरि वै ततखन सूरी। धरि मेलेसि मानहुँ मुरु मूरी।
औ तस भौर लँगूर नचावा। जहँ याना तहँ खोज न पावा।
तस रन रूप पाय कै मारे। यहि लाग रन रुहिर पनारे।
मुँह सों मुँह तस भा रन जोरा। हय सो हय जुरे वाग न मोरा।
पुरुख पुरुख सों भै तस मारी। खरग धनुख मैं मारि वजाई।
सेल माँगि औ चलहिं जु गोला। वरसैं वान पनग जिमि ओला।

भए सहाइ देवता रन गगन जाहिर कीन्ह।
देखि रौन जोगिन्ह कर राजहिं परा असुझ (?)॥

[२६४२]

द्वि० १—

ब्रह्मा विस्नु एक मति भए। रतनसेनि कहँ देखै गए।
देखि रतन कहँ भए दयाला। भइ दयाल तो कंचन जाला।
यहि वालक के कोइ न साथा। भवा अकेल चहा संघाता।
तौ ब्रम्है उठि विनती कीन्हा। महादेव तो भाखा लीन्हा।
तोहिं राजै वड़ अजुगति कीन्हा। यहि वालक कहँ मारै कीन्हा।
है कोइ चूरै यह सूरी। चूरि चारि धरि डालै दूरी॥
तब हनिवँत उठि अग्याँ सारी। धरि हिलाइ कै डारि उपारी।

धरि मेरवै अस औ ठेसि टूक टाक धरि कीन्ह।
सब सिंघल नृप मिलि कै दूखन सबौं कहँ दीन्ह॥

[२६४३]

द्वि० १—

दाँयें दूखौ कहूँ तै आवा। जहँ मारन एकंत छोड़ावा।
मारि मारि कै कीजत धावा। आस पास सब मिलि कै आवा॥
देखौ वरम्हा औ गोविंदा। देखौं देवता महा नरिंदा।
देखौ वासुकि फनपति राजा। कै धनि रतनसेनि का साजा।
कै धनि वै पदुमावति रानीं। जेहि के कारन मीचु तुलानी।
सब मिलि आइ कै छेंका कैसें। सिव वढ़ि मंडल छवै जैसें।
वचन एक जो सीव चलावा। विस्नु कटक काहे कहँ आवा।

सिव हरसाइ सबहि रोँ कहा मारहु रन साज।
मारि मेरावहु माँटी देहु रतन कह राज॥

[२६४ऊ]

द्वि० १—

कोह भए रिस राते वैना। ब्रम्हा बिस्नु की आई सैना।
सिरी क्रिस्न तिरसूल सँभारा। बिस्नु फाँस लीन्ह तेहि वारा।
महादेव चकर सब लीन्हा। महादेव तेज तीनौ लीन्हा।
मारि राज सब लिहेउ अँजोरी। पैज होति है झूठी मोरी।
तीनौ सूर उठे तपि कया। अहुठ वक्र पढ़ि देखौं जिया।
सँवरै महादेव कै जोगी। भए सँजोइल किस्न सो भोगी।
किस्न उतारि कँवच पहिनाई। छका कटक राजा कहँ आई।

मारि मेरावहु माँटी करहु वेगि सो आन।
हमते रन कस बाँधे हम कहँ खंडन आन॥

[२६४ए]

द्वि० १—

जबहीं किरसन सेना साजा। महादेव कर डँवरू बाजा।
छत्र धारि सिर छत्र बनावा। जूझा रन सनाह पहिनावा।
तरपहिं नारद अगमन जानी। यहि गली मवकी मींच तुलानी।
चढ़े एक देखौं मन विचारी। वहुँ कस होति अहै महा मारी।
जौं हम मारे कहँ बड़ आए। वाहिकें अधिक होइ कड़ वाए।
वै माँनुस मारें का लाजा। हम भागै सब होइ अकाजा।
सकल कोट सब काहूँ हँसा। ब्रन्हा बिस्नु सब भाजे अंसा।

छाडि देहु सब धंधा मैं धरम न ऐसी भाँति।
पैठे भाँट बराभन करैं जगत कर साँति॥

[२६४ऐ]

द्वि० १—

जाइ भाँट आगे सिर नावा। बाएँ हाथ देइ वरँभावा।
धनि लैं गंधपसे न सुर घाती। बोलै भाँट सब अनवन बाती॥

महाराज राजन्ह मैं मीसा। जगत मवैं देइ तोहि असीसा।
जस जग करैं बड़ाई तोरी। तैसन समुझु बात तैं मोरी।
बरम्हा बिस्नु सिव पठवा मोही। बरजहिं राजा तेवैं तोही।
तुम्ह गढ़ बारी सबै सनाथा। भवा अकेल छाँड़ा सँग साथा।
आपु हितैं जनि बात बिगारहु। औ जनि बालक जोगी मारहु।

जौं जानसि तू भीख देइ आवा बार अतीत।
जीव निठुर केर अहार भा परे गयंद की सीत॥

[२६८अ]

द्वि० २, ३, ४, ५, ६, तृ० २ तथा ग (किंतु द्वि० ३ में यह छंद यथा २१३ के अ आया है)—

ततखन बस महेस मन लाजा। भाँट गिरा होइ बिनवा राजा।
गंध्रपसेन तू राजा महा। हौं महेस मूरति सुनु कहा।
जौं पै बात होइ भलि आगे। कहा चहिय का भा रिस लागे।
राज कुँवर यह होइ न जोगी। सुनि पदमावति भएउ बियोगी।
जम्बूदीप राजघर बेटा। जो है लिखा सो जाइ न मेंटा।
तुम्हरहि सुआ जाइ ओहि आना। औ जेहि कर बर कै तेइ माना।
पुनि यह बात सुनी सिवलोका। करसि बियाह धरम है तोका।

माँगै भीख खपर लेइ मुए न छाँड़ै बार।
बूझहु कनक कचोरी भीखि देहु नहिं मार॥

[२६८आ]

द्वि० २, ४, ५, ६, तृ० ३, ग—

ओहट होहु रे भाँट भिखारी। का तू देत मोहिं अस गारी।
को मोहि जोग जगत होइ पारा। जा महुँ हेरौं जाइ पतारा।
जोगी जती आव जो कोई। सुनतहिं भासमान भा सोई।
भीखि लेहिं फिरि माँगहि आगे। ए सब रैनि रहे गढ़ लागे।
जस हींछा चाहौं तिन्ह दीन्हा। नाहिं बेधि सूरी जिउ लीन्हा।
जेहि अस साध होइ जिउ खोवा। सो पतंग दीपक तस रोवा।
सुर नर मुनि सब गंध्रप देवा। तेहि को गनै करहिं नित सेवा।

मो सौं को सरबरि करै सुनु रे झूठे भाँट।
छार होइ जो चालौं निजु हस्तिन कर ठाट॥

[२६८ इ]

द्वि० २, ३, ४; ५, ६, तृ० १, ३ तथा ग—

जोगी धरि मेले सब पाछे। औरै माल आइ रन काछे।
मंत्रिन्ह कहा सुनहु हो राजा। देखहु अब जोगिन्ह कर काजा।
हम जो कहा तुम्ह करहु न जूझू। होत आव दर जगत असूझू।
खिन इक महँ झुरमुट होइ बीता। दर महँ चढ़ि जो रहै सो जीता।
कै धीरज राजा तब कोपा। अंगद आइ पाँव रन रोपा।
हस्ति पाँच जो अगमन धाए। तिन्ह अंगद धरि सूँड़ फिराए।
दीन्ह उड़ाइ सरग कहँ गए। लौटि न फिरे तहँहि के भए।

देखत रहे अचंभौ जोगी हस्ती बहुरि न आय।
जोगिन्ह कर अस जूझब भूमि न लागत पाय॥

[२६८ ई]

द्वि० २, ३, ४, ५, ६, तृ० १, ३ तथा ग—

कहहिं बात जोगी हम पाए। खिनक माहँ चाहत हहिं धाए।
जौ लहि धावहि अस कै खेलहु। हस्तिन्ह केर जूह सब पेलहु।
जस गज पेलि होहिं रन आगे। तस बगमेल करहु सँग लागे।
हस्ति क जूह धाय अगुसारी। हनुवँत तबै लँगूर पसारी।
जैसे सेन बीच रन धाई। सबौ लपेटि लँगूर चलाई।
बहुतक टूट भए नौ खंडा। बहुतक जाइ परे बरम्हंडा।
बहुतक भँवत सोह अंतरीखा। रहे सो लाख भए ते लीखा।

बहुतक परे सँमुद महँ परत न पावा खोज।
जहाँ गरब तहँ पीरा जहाँ हसी तहँ रोज॥

[२६८ उ]

द्वि० २, ३, ४, ५, ६, तृ० १, ३ तथा ग—

पुनि आगे का देखै राजा। ईसर केर घंट रन बाजा।

सुना संख जो विस्नू पूरा। आगे हनुवँत केर लँगूरा।
लीन्हे फिरहिं लोक बरम्हंडा। सरग पतार लाइ मृदमंडा।
बलि बासुकि औ इंद्र नरिंदू। राहु नखत सूरज औ चंदू।
जावँत दानव राच्छस पुरे। आठौ बज्र आइ रन जुरे।
जेहि कर गरब करत हुत राजा। सो सब फिरि बैरी होइ साजा।
जहवाँ महादेव रन खड़ा। सीस नाइ नृप पायँन्ह परा।

केहि कारन रिस कीजिए हौं सेवक औ चेर।
जेहि चाहिय तेहि दीजिय बारि गोसाईं केर॥

[२६८अ[१]]

द्वि० २—

राजा कोह भवा अति ताता। अति रिस भरे सुनै नहिं बाता।
अस जरि उठा जूड़ नहिं होई। जरत आगि महँ पैठि न कोई।
गरब भरा जिउ महँ अस गाढ़ा। मन महँ फूल सरग लहुँ बाढ़ा।
रिस रिस सीव भएउ बहु भाँती। मोर बाज होइ नहिं साँती।
राजा कहा न काहु का रहा। मारु मारु पुनि और न कहा।
जोगी जानि धरा अभिमानू। राजमद थिर रहा न ग्यानू।
मोरे देह करौं अपनाई। खरग खनहिं सब संग सहाई।

रिसि नरेस मन अस भरा दीन्ह बहुत सो कान।
रही कर लौं नग तेहि पुनि हिरदै सबै सुहान (?)॥

[२७४ अ]

द्वि० २, ३, ४, ५, ६, ७, तृ० ३ ग—

बोल गोसाईं कर मन माना। काह सो जुगुति उतर कहँ आना।
माना बोल हरख जिउ बाढ़ा। औ बरोक भा टीका काढ़ा।
दूवौ मिले मनावा भला। सुपुरुख आपु आपु कहँ चला।
लीन्ह उतारि जाहि हित जोगू। औ तप करै सो पावे भोगू।
वह मन चित जो एकै अहा। मारै लीन्ह न दूसर कहा।
जो अस कोई जिउ पर छेवा। देवता आइ करहिं निति सेवा।
दिन दस जीवन जो दुख देखा। भा जुग जुग सुख जाइ न लेखा।

रतनसेनि संग बरनौं पदमावति का बियाहु।
मंदिर बेग सँवारा मादर तूर उछाहु॥

[२७४ आ]

द्वि० २ में छंद २७४ नहीं है, उसके स्थान पर उपर्युक्त २७४ अ है, जिसके पूर्व निम्नलिखित दो अर्द्धालियाँ हैं :

देखि तौ राजा मन बिहँसाना। राज कुँवरि निश्चै करि माना।
महादेव सौं बिनती कीन्ही। लीजै बार जेही जेहि दीन्हीं।

और बीच में यथाक्रम निम्नलिखित दोहा है :

अस सीस तप अरथ जिउ पेम नेम चित लाइ।
अंत तंत सो अनमिल साहस सिद्ध सहाइ॥

और निम्नलिखित पाँच अर्द्धालियाँ हैं :

मन चित रहै समाधि समाई। मन पहुँचै भल सो लै खाई।
मारि कै अमर होइ निजि सोई। काल जाहिं वह काल न होई।
अस रस पेम अमी लै पिया। जुग जुग अमर जु मारि कै जिया।
दुख मारग जु जाइ कोइ कोई। दुख के अंत सु फल सुख होई।
जेहि दिन कह इंछा मन लावा। पेम प्रम्माद सोई दिन पावा।

इस प्रकार नौ अतिरिक्त पंक्तियाँ बढा कर एक अतिरिक्त छंद २७४ आ की पूर्ति की गई है।

[२८४ अ]

प्र० १, द्वि० २, ४, ५, ६, तृ० ३ —

जेंवन आवा बीन न बाजा। बिनु बाजन नहिं जेवैं राजा।
सब कुँवरन्ह पुनि खैचा हाथू। ठाकुर जेवँ तौ जेंवैं साथू।
बिनय करहिं पंडित बिद्वाना। काहे नाहिं जेवहिं जजमाना।
यह कबिलास इंद्र कर बासू। जहाँ न अन्न न माछरि माँसू।
पान फूल आसी सब कोई। तुम्ह कारन यह कीन्ह रसोई।
भूख तौ जनु अमृत है सूखा। धूप तौ सीयर नींबी रूखा।
नींद तौ भुइँ जनु सेज सपेती। छाँटहु का चतुराई एती।

कौन काज केहि कारन बिकल भएउ जजमान।
होइ रजाएसु सोई बेगि देहिं हम आन॥

[२८४अ]

प्र० १, द्वि० २, ४, ५, ६, तृ० ३—

तुम्ह पंडित जानहु सब भेदू। पहिले नाद भएउ तब बेदू।
आदि पिता जो बिधि औतारा। नाद संग जिउ ग्यान सँचारा।
सो तुम बरजि नीक का कीन्हा। जेंवन संग भोग बिधि दीन्हा।
नैन रसन नासिक दुइ स्रवना। इन्ह चारहु संग जेंवै अवना।
जेंवन देखा नैन सिराने। जीभहि स्वाद भुगुति रस जाने।
नासिक सबै बासना पाई। स्रवनहिं काह कहत पहुनाई।
तेहि कर होइ नाद सौं पोखा। तब चारिहु कर होइ सँतोखा।

औ सो सुनहिं सबद एक जाहि परा किछु सूझि।
पंडित नाद सुनै कहँ बरजेहु तुम का बूझि॥

[२८४इ]

प्र० १, द्वि० २, ४, ५, ६, तृ० ३—

राजा उतरु सुनहु अब सोई। महि डोलै जौ बेद न होई।
नाद बेद मद पैड़ जो चारी। काया महँ ते लेहु बिचारी।
नाद हिए मन उपनै काया। जहँ मद तहाँ पैड़ नहिं छाया।
होइ उनमद जूझा सो करै। जो न बेद आँकुस सिर धरै।
जोगी होइ नाद सो सुना। जेहि सुनि काय जरै चौगुना।
कया जो परम तंत मन लावा। घूम माति सुनि और न भावा।
गए जो धरम पंथ होइ राजा। तिन कर पुनि जो सुनै तो छाजा।

जस मद पिए घूम कोइ नाद सुने पै घूम।
तेहि ते बरजे नीक है चढ़े रहसि कै दूम॥

[२८७अ]

द्वि० २—

सुनि गभ्रप राजा के बैना। अत सुख भा जत जाना (?)।
उन्ह पुनि सुनि बिनती उन्ह केरी। भएउ ... ...।

देस पुहुमि अपने मन जेती। रतनसेन कहँ दीन्हीं तेती।
आधा राजपाट उन्ह दिया। बहुत भाँति संतोखन किया।
हम घर कुल दीपक नहिं अहा। तुम्ह पाएउँ जस मन चित चहा।
गंध्रपसेन बहुत सुख पावा। रतनसेन सुख कहत न आवा।
उनहिं जीव संतोख तब भएऊ। त्रिसमै दुंद छूटि सब गएऊ।

अस सो आस कै कोई गंध्रपसेनि नरेस।
देखि रतन सुख सपने गा दुख दुंद अदेस॥

[२८८ अ]

द्वि० ३, ५, ६, तृ० ३—

चेरि सहस दुइ पाईं भली। धनि. गोहने धौराहर चली।
सात खंड साजा उपराहीं। रानो लै लौकावति जाहीं।
खंड खंड कौतुक देखरावहिं। औ राजा कहँ बातन्ह लावहिं।
पहिल खड नौ देखइ राजा। फटिक पखान कनक सब साजा।
जस दरपन महँ दीखै देहा। तैस साज सब कीन्ह उरेहा।
साउज पंखि जो कीन्ह चतेरे। औ पारिध जनु लाग अहेरे।
औ जावँत सब त्रिभुवन लिखा। जनु सब ठाढ़ देहिं आसिखा।

देखि बखानै राजा भीवँसेन का राज।
धन्नि चक्कवै राजा जेइँ रे मँदिर अस साज॥

[२८८ आ]

द्वि० २, ३, ५, ६, तृ० ३—

दोसर खंड सब भूप सँवारा। साजे चाँद सुरुज औ तारा।
तीसर खड सो कनक जड़ाऊ। नग जो लाग अस दीख न काऊ।
चौथ खंड मनि मानिक जरे। देखि अनूप पाप सब हरे।
पाँचव हीरा ईंटि गढ़ावा। औ सब लाग कपूर गिलावा।
छठएँ लाग रतन गजमोंती। होइ उजियार जगत तेहि जोती।
जगर मगर सब राँभे करहीं। निसि सब जनहुँ दिया अस बरहीं।
तहाँ न दीपक औ मसियारा। सब नग जोति होइ उजियारा।

अस उजियार होइ किछु चाँद सुरुज नहि बार।
जो ओहि थावा अँजोरे सो देखै उजियार॥

[२८६अ]

प्र० १—

ऐसी सेज साजि तेहि जोगी। बैठि दुवहु मानहुँ रस भोगी।
धनि सो सेज धनि सोवनिहारी। भई हुलास देखि जो बारी।
रतन पदारथ दीख अँजोरी। चाँद सूर दोइ कला अँजोरी।
इंद्र राज औ छत्तर पावा। आज सिंगार होइ सब आवा।
देखि सखीं सब देखत हारा। एक·एक सुख काम की धारा।
जो आवा अैसे घर नए। पुनि उठि चला आन के भए।
ना कहुं का भूठा मन दौरा। जो दौरावे सो मन बौरा।

रचि चेटक चितसारी बहुतहिं भाँति बनाय।
चेतक भए तेहि सोवते चेत नैन भए पाव (?)॥

[२८६अ१]

द्वि० ३—

प्रथम खंड का बरनौं भावा। इंद्रलोक अस दिस्टि देखावा।
धनि थँवई औ धनि सुतहारा। जिनि यह खंड रचा उजियारा।
औ बहु भाँतिन भएउ गिलावा। मन मानिक औ रतन जड़ावा।
मंद भाव का देखै राजा। बहुत परान कनक जरि साजा।
भाँति भाँति कर लिखा अहेरा। चित जग साउज भार चितेरा।
औ जित नाच अखारा होई। ताल मृदंग भाव सब होई।

जित गुन मंदिर धौरहर सब साजें विधि साज।
रसना बरनि बरन कत रहै मोहि तेहि लाज॥

[२६२अ]

द्वि० ४, ६, ख—

का पूँछहु तुम धातु निछोही। जो गुरु कीन्ह अंतरपट ओही।
सिधि गुटिका अब मो सँग कहा। भएउँ राँग सत हिएँ न रहा।

सो न रूप जासौं दुख खोलौं। गएउ भरोस तहाँ का बोलौं।
जह लोना बिरवा कै जाती। कहि कै सँदेस आन को पाती।
कै जो पार हरतार करीजै। गंधक देखि अवहिं जिउ दीजै।
तुम्ह जोरा कै सूर मयंकू। पुनि बिछोह सो लीन्ह कलंकू।
जो एहि घरी मिलावै मोही। सीस देउँ बलिहारी ओही।

होइ अबरक इँगुर भया फेरि अगिनि महँ दीन्ह।
काया पीतर होइ कनक जौ तुम्ह चाहहु कीन्ह॥

[३१५अ]

द्वि० २, ४, ५, ६, तृ० ३—

हँसि पदुमावति मानी बाता। निहचै तू मोरे मद माता।
तूँ राजा दुहुँ कुल उजियारा। अस कै चरचिउँ मरम तुम्हारा।
पै तूँ जंबूदीप बसेरा। किमि जानेसि कस सिंघल मेरा।
किमि जानेसि सो मानसर केवा। सुनि सो भौंर भा जिउ पर छेवा।
ना तुइँ सुनी न कबहूँ दीठी। कैस चित्र होइ चितहि पईठी।
जौ लहि अगिनि करै नहि भेदू। तौ लहि औटि चुवै नहिं मेदू।
कहँ संकर तोहि ऐस लखावा। मिला अलख अस पेम चखावा।

जेहि कर सत्य सँघाती तेहि कर डर सोइ मेंट।
सो सत कहु कैसे भा दुवौ भाँति जो भेंट॥

[३१५आ]

द्वि० २, ४, ५, ६, तृ० ३—

सत्य कहौं सुनु पदुमावती। जहँ सत पुरुख तहाँ सुरसती।
पाएउँ सुवा कही वह बाता। भा निहचै देखत मुख राता।
रूप तुम्हार सुनेउँ अस नीका। ना जेहि चढ़ा काहु कहँ टीका।
चित्र किएउँ पुनि लेइ लेइ नाऊँ। नैनहिं लागि हिए भा ठाऊँ।
हौं भा साँच सुनत ओहि घड़ी। तुम होइ रूप आइ चित चढ़ी।
हौं भा काठ मुरति मन मारे। चहै जो करु सब हाथ तुम्हारे।
तुम्ह जो डोलाइहु तबहीं डोला। मौन साँस जौं दीन्ह तौ बोला।

को सोवै को जागै अस हौं गएउँ बिमोहि।
परगट गुपुत न दूसर जहँ देखौं तहँ तोहि॥

[३१५इ]

द्वि० २, ४, ५, ६, तृ० ३—

बिहँसी धनि सुनि कै सत भाऊ। हौं रामा तू रावन राऊ।
रहा जो भौंर कँवल की आसा। कस न भोग मानै रस बासा।
जस सत कहा कुँवर तूँ मोहीं। तस मन मोर लाग पुनि तोही।
जब हुँत कहि गा पंखि सँदेसी। सुनिउँ कि आवा है परदेसी।
तब हुँत तुम्ह बिन रहै न जीऊ। चातकि भइउँ कहत पिउ पीऊ।
भइउँ चकोरि सो पंथ निहारी। समुँद सीप जस नैन पसारी।
भइउँ बिरह दहि कोइल कारी। डारि डारि जिमि कूकि पुकारी।

कौन सो दिन जब पिउ मिलै यह मन राता जासु।
वह दुख देखै मोर सब हौं दुख देखौं तासु॥

[३१६अ]

द्वि० ४, ५, ६ (किंतु द्वि० ६ में यह छंद ३१६ के पूर्व आता है)—

रतनसेन सो कंत सुजानी। खट रस पंडित सोरह बानी।
तस होइ मिले पुरुष औ गोरी। जसि बिछुरी सारस जोरी।
रची सारि दूनौ एक पासा। होइ जुग जुग धावहि कै लासा।
पिय धनि गही दीन्ह गलबाहीं। धनि बिछुरी लागी उर माहीं।
ते छकि नव रस केलि करेहीं। चोका लाइ अधर रस लेहीं।
धनि नौ सात सात औ पाँचा। पुरुख दस तेरह किमि बाँचा।
लीन्ह बिधाँसि बिरह धनि साजा। औ सब रचन जीत हुत राजा।

जनहुँ औटि कै मिलि गए तस दूनौ भए एक।
कंचन कसत कसौटी हाथ न कोऊ टेक॥

[३१८अ]

तृ० ३—

पदुमावति कह सुनहु राजा। कैसे तुमहि हिए रँग राता।

सुवा बचन बिरहा तब लागा। रहे न प्रान प्रेम तन जागा।
राज पाट है गै तजि नारी। तुव दरसन कहँ भएउँ भिखारी।
सोरह सहस कुँवर सँग आथी। जोग पंथ तिसरे होइ साथी।
चलेउँ मनसि सिंघल दीप देसा। बचन हिरामनि के उपदेसा।
आइ देसा तहँ समुँद अपारू। बोहित चढ़े सँवरि करतारू।
आइ परे मानसर माहाँ। देखि धवल तन भएउ उछाहाँ।
सुअैं कहा अब देखाहु राजा। महादेव कर मंडप साजा।

गुर उपदेस चढेउँ गढ़ रागैं पकरेउ मारि।
सूरी देत तहँ बाँचेउँ तुव सुमिरन सुनु नारि॥

[३१८आ]

तृ० ३—

अब सुनु रतन बात तें मोरी। भएउ अगाह हृदय यह तोरी।
केहु कहा जेगी सब मारे। सुनत हंस तब चला निनारे।
सर रचि जरै तबै मैं चाहा। सखिन्ह धाइ पकरी मोरि बाहाँ।
वोहि मोहि कबहुँ न दरसन भएऊ। मोरि निति मैं दुख कैसे सहेऊ।
अब हौं सखी जरौं वोहि लागी। पेम प्रीति मोहि तन महँ जागी।
अब जौं वोहि लागि जिउ देऊँ। रहि कल दोसरे क नाउँ न लेऊँ।
पिय मोर जाइ इंद्रासन साजा। लै अपछरा भुँजैहहिं राजा।

रहि निमित्त सुनु बालम अर्ध उर्ध मोर जीय।
मंदिल झरोखे मारग जोवौं कोस देस कहँ पीय॥

[३३२अ]

प्र० १, २, द्वि० ३, ४, ५, ७—

पदुमावति कह सुनहु सहेली। हौं सो कँवल तुम कुमुद चमेली।
कलस मानि हौं तेहि दिन आई। पूजा चलहु चढ़ावहिं जाई।
मँझ पदमावति कर जो बेवानू। जनु परभात परै लखि भानू।
आस पास बाजत चौडोला। दुंदुभि झाँझ तूर डफ ढोला।
एक संग सब सोंधे भरीं। देव दुवार उतरि भइ खरीं।
अपने हाथ देव नहवावा। कलस सहस एक घिरित भरावा।

पोता मँडप अगर औ चंदन। देय भरा अरगज औ बंदन।

के प्रनाम आगे भईं बिनय कीन्ह बहु भाँति।
रानी कहा चलहु घर सखी होति है राति॥

[३६१ अ]

प्र० १, २, द्वि० १, ३, ४, ५, ६, ७, तृ० १, २, ३—

पदुमावति सौं कहेउ बिहंगम। कंत लोभाइ रहे जेहि संगम।
तू घर घरनि भई पिउ हरता। मोहि तन दीन्हेसि जप औ बरता।
रावट कनक सो तोकहँ भएऊ। रावट लंक मोहि कै गएऊ।
तोहि चैन सुख मिलै सरीरा। मो कहँ हिए दुंद दुख पूरा।
हमहुँ बियाहीं सँग ओहि पीऊ। आपुहि पाइ जानु पर जीऊ।
अबहुँ मया करु करु जिउ फेरा। मोहि जियाउ कंत देइ मेरा।
मोहिं भोग सौं काज न बारी। सौंहि दीठि कै चाहनहारी।

सवति न होसि तू बैरिनि मोर कंत जेहि हाथ।
आनि मिलाउ एक बेर तोर पायँ मोर हाथ॥

[३८२ अ]

द्वि० ४, ५—

परिवा नौमी पुरुब न भाएँ। दूइजि दसमी उतर अदाएँ।
तीज एकादसि अगनिउ मारै। चौथि दुवादसि नैरित बारै।
पाँचइं तेरसि दखिन रमेसरी। छठि चौदसि पच्छिउँ परमेसरी।
सतमी पूनिउँ बायब आछी। अठइँ अमावस ईसन लाछी।
तिथि नछत्र पुनि बार कहीजै। सुदिन साधि प्रस्थान धरीजै।
सगुन दुघरिया लगन साधना। भद्रा औ दिकसूल बाँचना।
चक्र जोगिनी गनै जो जानै। पर बर जीति लच्छि घर आनै।

सुख समाधि आनंद घर कीन्ह पयाना पीउ।
थरथराइ तन काँपै धरकि धरकि उठ जीउ॥

[३८२आ]

प्र० १, २, द्वि० २, ४, ५, ६, ७—

मेस सिंघ धन पूरुब बसै। बिरिख मकर कन्या जम दिसै।

मिथुन तुला औ कुंभ पछाहाँ। करक मीन बिरिछिक उतराहाँ।
गवन करै कहँ उगरै कोई। सनमुख सोम लाभ बहु होई।
दहिन चंद्रमा सुख सरबदा। बाएँ चंद न दुख आपदा।
अदित होइ उत्तर कहँ कालू। सोम काल बायब नहिं घालू।
भौम काल पच्छिउँ बुध निरिता। गुरु दक्खिन औ सुक अगनइता।
पूरब काल सनीचर बसै। पीठि काल देइ चलै त हँसै।

धन नछत्र औ चंद्रमा औ तारा बल सोइ।
समय एक दिन गवनै लछिमी केतिक होइ॥

[३८३५]

प्र० १, २, द्वि० २, ४, ५, ६, ७—

पहिले चाँद पुरुब दिसि तारा। दूजे बसै इसान बिचारा।
तीजे उतर औ चौथे बायब। पँचएँ पच्छिउँ दिसा गनाएब।
छठएँ नैरित दक्खिन रतएँ। बसै आइ अगिनिउ सो अठएँ।
नवएँ चंद सो पृथिवी बासा। दसएँ चंद जो रहै अकासा।
ग्यरहेँ चंद पुरुब फिरि जाई। बहु कलेरा सौं दिवस बिहाई।
असुनी भरनी खेती भली। मृगसिर मूल पुनरबस बली।
पुख्य ज्येस्ठा हस्त अनुराधा। जो सुख चाहै पूजै साधा।

तिथि नछत्र औ बार एक अस्ट सात खंड भाग।
आदि अंत बुध सो एहि दुख सुख अंकम लाग॥

[३८३६]

प्र० १, २, द्वि० २, ४, ५, ६, ७—

परिवा छट्टि एकादसि नंदा। दुइजि सत्तमी द्वादसि मंदा।
तीजि अस्टिमी तेरसि जया। चौथि चतुरदसि नवमी रखया।
पूरन पूनिउँ दसमी पाँचै। सुकै नंदै बुध भए नाँचै।
अदिति सौं हस्त नखत सिधि लहिए। बीफै पुख्य स्रवन ससि कहिए।
भरनि रेवती बुध अनुराधा। भए अमावस रोहिनि साधा।
राहु चंद्र भू संपाति आए। चंद गहन तब लाग सजाए।
सनि रिक्ता कुज अशा लीजै। सिद्धि जोग गुरु परिवा कीजै।

छठे नछत्र होइ रबि ओही अमावस होइ।
बीचहि परिवा जौं मिलै सुरुज गहनतव होइ॥

[३८५अ]

द्वि० ३, तृ० २, च० १—

चले कुँवर चितउर के साथी। औ जत गवनचार के आथी।
औ हीरामनि साथ परेवा। तहँ पहुँचाइ चले भलि सेवा।
औ सब रातिन्ह केर बेवाना। भा सब काहूँ चितउर जाना।
दल कर खेह छिपा रबि सारा। नैन न सूझइ हाथ पसारा।
जे सब कुँवर देस के अहे। औरु जु सिंघल दीप के रहे।
अगनित कटक चला बल साजी। बड़ परताप चौघड़िया बाजी।
दल पर दल चित गनत न आवा। अैस कटक दल साजि चलावा।

गवन कीन्ह चितउर कहँ रतनसेनि जगराइ।
सोरह सहस कुँवर सिउँ हीरामनि सुखदाइ॥

[३८८अ]

प्र० १, २—

राजकुँवर रानी औ सुवा। बेगर बेगर चाहैं तहँ हुवा।
गरथ गाँठि मन साह न खोला। लहर खाहि औ सत नहिं डोला।
उठत आउ अब लहरि अपारा। भाँति भाँति ज्यौं चला पहारा।
लहरि अचक्कैहुँ जानहुँ आगी। काहूँ हिए चँदन असि लागी।
काहूँ जानु अमी मुख सारा। काहूँ जनु बिख सुरा सँचारा।
घरी घरी जो अगम न जाई। जानहुँ काल नियर भा आई।
नैन पसारि हेरु जौं राजा। सरग पताल एक सँग साजा।

नैनन्ह पँथ जो भूलि गा अगुमन भा अँधियार।
हेरि हेरि सब मूँखहिं दुख महँ गुरु अधार॥

[३८८आ]

प्र० १, २—

समुँद कहा सुनु मुरुख अग्याना। जेहि गथ नाहिं का करौ पयाना।

एह समुँद कर अैस सुभाऊ। दै कै देइ बोहित महँ पाऊँ।
अजहूँ समुझु मुगुध मन माहाँ। काल कुस्ट होइहि सो ताहाँ।
तबहुँ न समुझु जबहिं सिर आई। लहरि उपर सैं लहरें खाई।
सबै रेनु होइ जाइहि कहाँ। खोजे खोज न पाइब तहाँ।
चकित भए कुँवर जल देखी। धरनि गगन जल संग बिसेखी।
देखि सो लहर भरे चख पानी। कहहिं सबै अब आइ तुलानी।

लहरि असूझ देख तस जैसे साज सुमेर।
चहुँ दिसि जनु घन घोरें काहि न जाइ तस घेर॥

[३८८इ]

प्रं० १, २—

हीरामनि परगट ओहि ठाँई। होइहि सरग ससि राहु कि नाईं।
ओहि का अंस भार जौं कोई। एक संग एनतालिस खोई।
पुनि सिर धुने न आइहि हाथा। आदि अंत जनु रहा न साथा।
सब पख फेरि रहहिं ओहि ठाईं। लै जाइहि आपन की नाईं।
अमी काढ़ि माखन रस लेईं। तुम्ह निचोइ सरि मौन करेईं।
पुनि न समाइ आइ घट पवना। फिरहिं न फिरि राजा इसौ गौना।
एह रे समुद है बिप्र हमारा। बोहित नाउ इहै कड़हारा।

जो रे आइ सूखे महँ जल निकुंज घट होइ।
जिन्ह रे ठगा जिअ जगत महँ भेप धरे है सोइ॥

[३८८ई]

प्र० १, २—

हीरामनि जब बहुत बुझावा। तेहँ जनु भाँग धतूरा खावा।
काहे न जानत आपु समाना। गएउ ग्यान तेहिं भाँति तिवाना।
रानी कहा सुनहु हो नाहू। एहि जल होत चहत तन दाहू।
कोस कोस की लहरैं आवहिं। पवन सो पानी अधिक ते धावहिं।
झँखहि कुँवर सो करहिं तिवाना। तुम्ह राजा मन माहँ भुलाना।
इहै मंत्र रावन अस हरा। इहै मंत्र लंकेस्वर छरा।
इहै मंत्र आसाबरि मारी। इहै मंत्र छरा कुबेर भँडारी।

सोइ मंत्र तुम्ह राजा भूले समुँद महँ आइ।
जैसे सीस माछी धुनै कर मींजै पछिताइ॥

[३८८३]

प्र० १, २—

अजहुँ समुझु बौरे अभिमानी। बट महँ निकट आइ सँग तानी।
सुनु राजा तैं समुँद क कहा। तुम्ह पहँ कछू न राखा रहा।
जैसें भूँजि करि खेतहिं बोवा। मोर मोर कहि चाहत खोवा।
तासौं का कीजै सरबरी। जासौं मोच चाव घर धरी।
बाट घाट महँ है सब ठाऊँ। ताकी रहनि सुवासित गाऊँ।
कै आपन जानहु मन माहीं। ताहो कर एह तोर किछु नाहीं।
सो तुम्ह सौं सब लेइ सँभारी। तुम्हहि करिहि घरि माहँ भिखारी।

हिएँ समुझु तैं राजा साहु समुँद तैं चोर।
आपुन करिहि सो मारिहि हिए तुहँ कहे का मोर॥

[३८८४]

प्र० १, २—

राजैं कहा दान देउ देवा। जब सो चलै समुद महँ खेवा।
उभरे बोहित सुनि मो दानू। रतनसेन मन करहि तिवानू।
एक एक गय दरब मैं जोरा। तेसि सो समुँद कह चाहत मोरा।
सो मोहिं देव नाहिं बनि आवा। रहै पाहनहि होइ परावा।
देउँ सो दान पार जौं जाऊँ। जौं रे सुनौं चितउर करनाऊँ।
केइ रे समुद स्वामी बौरावा। राज दान सत मंगे पावा।

दान देइ व्यापारी परजा जेहि भौ भीर।
हौं रे आहि छिन गंध्रप राज समुँद लहु तीर॥

[४०२छ]

प्र० १, २—

रोवै पदुमावति गहि केसा। कहाँ रहे बसि रूप नरेसा।
कहाँ हीरामनि पंडित मोरा। चाँद सुरुज जेहि जग महँ जोरा।
आहि अहार तन मन दुख फसा। सिंघल रहे न चितउर बसा।

माँझ घाट कै केइ गुन काटा। भइउँ अथाह देखि पिउ घाटा।
फिरैं केस भेस मुख लावें। भई बेहाल लाल नहिं पावें।
अनचिन्ह सभै न आपन कोई। प्रात साँझ निस वासर होई।
कौन करै एहि ठाउँ गोहारा। लाज पियहि जेहि ऊपर भारा।

थाके रसन अधर रँग स्रवन कनक के फूल।
थके भुजा वलयौ कर व्यापित भौ तन सूल॥

[४०४अ]

प्र० २—

परा आइ अब कूप अँधारा। सूझि न परै गगन औ तारा।
चहूँ ओर चित चकित भएऊ। जनु सिव लै रावन हरि गएऊ।
अहि अहार नैना जल पीऔं। पदुमावति बिन कैसे जीऔं।
कहाँ पावै करवत जिव पेलौं। सीस उतारि समुद महँ मेलौं।
कहाँ हीरामनि पंडित आथी। बिछुरे सबै कुवर पँच साथी।
गए अमोल नग देखत पाँचा। तब गुन कीन्ह समत मैं काँचा।
गए सो मेघ उमर सिर छाता। पाटन कनक जराव की हाता।

गए ते अरथ दरब सब केहि कर गरब मैं कीन्ह।
अब पछिताउ होइ जिउ कौन मंत्र मैं कीन्ह॥

[४१८अ]

प्र० १, २, द्वि० १, २, ३, ४, ५, ७, तृ० १, २, ३, च० १,
पं० १—

जनि काहू कर होइ बिछोऊ। जस वै मिले मिलै सब कोऊ।
पदुमावति जौ पावा पीऊ। जनु मरजियहि परा तन जीऊ।
कै नेवछावरि तन मन वारी। पायन्ह परी घालि गिउ जारी।
नव अवतार दीन्ह विधि आजू। रही छार भइ मानुस साजू।
राजा रोव घालि गियँ पागा। पदुमावति के पायन्ह लागा।
तन जिउ महँ विधि दीन्ह बिछोऊ। अस न करै तौ चीन्ह न कोऊ।
सोई मारि छार कै मेटा। सोइ जियाइ करावै ...

मुहमद मीत जौं मन बसै बिधि मिलाव ओहि आनि।
संपति बिपति पुरुख कहँ काह लाभ का हानि॥

[४१८आ]

तृ० २—

लछिमी पदुमावति पहँ धाई। भइ सुसार जेंवहिं चलि जाई।
औ समुंद्र चलि पार सो आवा। रतनसेनि कहँ आइ बुलावा।
चलहु बेगि भइ सिद्धि रसोई। मुगुति न तजै जिऔ जौ कोई।
जौं न होइ कहुँ जिऔ सो खाई। आदि अंत लहि चलै सो धाई।
राजा सुनि उठि जहवाँ चलै। पदुमावती हाथ तब मलै।
अस बूझै सब लोग खवाई। हम तुम्ह दोउ जिव जेंवहिं जाई।
भाय बंद औ सखा सहेली। सब पर प्रेम जनहुँ अकेली।

तुम्ह सुजान औ पंडित दस औ चार निधान।
मैं मुगुध बुधि औ जिय दई देह (?)अलप ग्याँन॥

[४८६]

तृ० २—

जौं बिधि जगत राखि दिन चारी। सँग साथ सो करै न यारी।
हिलि मिलि सब जस जिउ तब रहे। सुत बित सकल साथि न रहे।
मैं तिरिया बुधि अलप बखानी। तुमहिं पुरुख बहु बुद्धि कहानी(?)।
बूझि ग्याँन गुन देखौ आपू। कहँ लगि यहुरहिं यह बड़ पापू।
जे मुख बोल सुनत कहँ ताई। मरन भला जीवन ते साईं।
जो लेइगा सब साथ न प्यारा। हम बाँचे धिग जिवन हमारा।
सब क साथ बिधि राखहु होई। बिनु सँग जिवन मरन भल सोई।

(दोहे की पंक्तियाँ प्रति में नहीं हैं)

[४१८?]

तृ० २—

लछिमिनि बहुत जतन समुझाई। काहु कहे मोहि मुवा न जाई।
तब पदुमावति बिनती कीन्हें। जग मो हार परा हम चीन्हें।
सब सँग आनि समुँद महँ खोवा। सभनि जाइ हम संग बिछोवा।

जिनि सँग हम निति खेल धमारी। औ जस जगत अंत संसारी।
तिन्ह बिनु अब हम जिया न जाई। जिवन्ह कैस बिनु संग सहाई।
मया करहु जो हम कहँ मारा। जिसु कंथा जहँ वह संसारा।
यहैं करहु जो हम निस्तारा। जेहिं रे मरहु के जौहर बारा।
एतना बोल देहिं हम माँगे। सूरुज आइ जरावहिं आगें।

(दोहे की पंक्तियाँ प्रति में नहीं हैं)

[४१८ उ]

द्वि० ४, ५, तृ० २—

लछिमी सौं पदमावति कहा। तुम्ह प्रसाद पाएउँ जो चहा।
जौं सब खोइ जाहिं हम दोऊ। जो देखै भल कहै न कोऊ।
जें सब कुँवर आए हम साथी। औ जत हस्ति घोड़ औ आथी।
जौं पावैं सुख जीवन भोगू। नाहिं त मरन मरन दुख रोगू।
तब लछिमी गइ पिता के ठाऊँ। जो एहि कर सब बूड़ सो पाऊँ।
तब सो जरी अमृत लै आवा। जो मरे हुत तिन्ह छिरकि जियावा।
एक एक कै दीन्ह सो आनी। भा सँतोख मन राजा रानी।

आइ मिले सब साथी हिलि मिलि करहिं अनंद।
भई प्राप्त सुख संपति गएउ छूटि दुख द्वंद॥

[४१८ ऊ]

द्वि० ४, ५, तृ० २—

औंर दीन्ह बहु रतन पखाना। सोन रूप तौ मनहिं न आना।
जे बहु मोल पदारथ नाऊँ। का तिन्ह बरनि कहौं तुम ठाऊँ।
तिन्ह कर रूप भाव को कहै। एक एक नग दीप जो लहै।
तीर फार बहु मोल जो अहे। तेइ सब नग चुनि चुनि कै गहे।
जौं एक रतन भँजावै कोई। करै सोइ जो मन महँ होई।
दरब गरब मन गएउ भुलाई। हम सम लच्छ मनहिं नहिं आई।
लघु दीरघ जो दरब बखाना। जो जेहि चहिय सोइ तेइ माना।

बड़ औ छोट दोउ सम स्वामि काज जो सोइ।
जो चाहिय जेहि काज कहँ ओहि काज सो होइ॥

[४२०अ, आ]

४२० की प्रथम और द्वितीय पंक्तियों के बीच में प्र० १, २, द्वि० ३, ७ में पूरे दो छंदों की पंक्तियाँ अतिरिक्त हैं, जिनमें से दूसरा छंद (४२० आ) द्वि० ४, ५ में भी ४२० के अनन्तर आया है :

कोटि एक दिन लागैं भोगू। जेवैं कुरी छतीसौ लोगू।
सीझहिं बहु बिंजन परकारा। लाखन जेंवन बहुत अपारा।
पहिले भोग गोसाइँ चढ़ावहिं। तेहि पाछें तप जप सब पावहिं।
भरि कै थाल कंचन लै धरहीं। दै पट बाहर अस्तुति करहीं।
जल घरिका सब बाहिर आवहिं। पैठहिं पंडित चार उठावहिं।
जो जन गा सो भोजन पावहिं। सो जेंवहिं पड़ि सीस चरहावहिं।

और बिकाइ जो हाँड़िन्ह ऊँच नीच सब लेइ।
भाँति न केहु काहु के फोरें टूक होइ तेइ ॥

कुँवरन्ह जो बहि घाटन्ह लागे। बहु बेकरार मए जनु जागे।
बिकल अचेत चेत नहिं नेकौ। संग सखा नहिं देखौं एकौ।
कहाँ अहे हम आए कहाँ। नहिं जा नहिं लै जाइहि जहाँ।
जेहि क हम अदिस्टि कै अपनी। लाइ भाग बिधि दीन्हीं जपनी।
जेन्ह के संग पदुमिनी बाँची। बहुत अनंद तें फिरि फिरि नाची।
सब सँग मिले आइ जगनाथा। सबन्ह आइ ओन्ह नावा माथा।
अति दुख आइ मिले तहँ राजा। मोइ तें गएउ न एकौ काजा।

सोइ हीरामनि रतन रबि सोइ पदुमावति लाल।
सोइ कुँवर सोइ पदुमिनी सोइ प्रेम प्रतिपाल ॥

साठैं जबै और बहु घाता। निसठें मुक्ख न आवै बाता।

[४२५अ]

प्र० १, २ (किंतु प्र० १ में यह छंद ४२६ के अनन्तर आया है) —

जिअँ तौ दरब मिलै नौ लाखा। औ तरिवर उपनै नौ साखा।
जिअँ तौ सोइ सखा सोइ ठाऊँ। पुनि सो गाउँ सोइ पुनि नाऊँ।

जिऔ तौ तुरी अनेकन्ह हाथी। सब बिछुरेइ बिछुरे भइ साथी।
जिऔ तौ फिरि नैनन्ह जग देखा। दुरजन सुरजन सबै बिसेखा।
जिऔ तौ स्रवनन्ह सुनै सँवादा। फिरि बिछुराइ मिलावै राधा।
जिऔ तौ क्रीडा दुख सुख भावा। जिऔ तौ इंद्र अपछरा पावा।
जिऔ तौ रतन पदारथ पावा। जिऔ तौ चितउर फिरि गृह आवा।

जिऔ तौ देखु सिव मंडप : सिघल दीप पहार।
जिऔ तौ लीन्ह जो सरगँह सब जिऔ तौ मय संभार॥

[४२५आ]

प्र० १, २ (किंतु प्र० १ में यह छंद यथा ४२६ के अनन्तर आया है)—

जिय बिनु रावनु लंका जारी। जिय बिनु कहा कुबेर भँडारी।
जिय बिनु भूइं आहि सब माटी। बिनु जिय को देरौ गरह घाटी।
बिनु जिय हिया गुनन को गुना। बिनु जीयहिं स्रवनन नहिं सुना।
बिनु जिय पाँचौं बेगर होई। बेगर भए समेटौ कोई।
बिनु जिय भँवर कँवल नहिं जाना। बिनु जिय छारहिं छार समाना।
बिनु जिय जोबन भए पराए। गए हेराइ न खोजन पाए।
जिय एहि जग होइहि परवाना। जिय बिनु सो जानहुँ पतियाना।

कहि के सबै बुझावहिं सैन सखा अरु बीर।
बिनु जिय काटौ कोटि सिर होइ न एकौ पीर॥

[४२६अ]

प्र० १, २, द्वि० ४, ५, ६, ७—

बैठ सिंघासन लोग जोहारा। निधनी निरगुन दरब बोहारा।
अगनित दान निछावरि कीन्हा। मँगतन्ह दान बहुत कै दीन्हा।
लेइ कै हस्ति महाउत मिले। तुलसी लेइ उपरोहित चले।
बेटा भाइ कुँवर जत आवहिं। हँसि हँसि राजा कंठ लगावहिं।
नेगी गए मिले अरकाना। पँवरिहिं बाजे घुरुरि निसाना।
मिले कुँवर कापर पहिराए। देइ दरब तिन्ह घरहि पठाए।
सबकै दसा फिरी पुनि दुनी। दान डाँक सबही जग सुनी।

बाजें पाँच सबद नित सिद्धि बखानहिं भाँट।
छतिस कुरि खट दरसन आइ जुरे ओहि पाट॥

[४२६आ]

प्र० १, २—

रतनसेनि गढ़ महँ पगु धारा। दिन दस यह गढ़ रहा परारा
दिन दस बैस देसंतर गएऊ। पुनि एह मंदिर आपन भएऊ
एह गढ़ आछा जैसे सपना। पुनि सँभारि लीन्हा आपना
चित्त कूर कहा रहत एहि भाँती। बासर भूख न निद्रा राती
भा दरसन अब रूप मुरारी। पै सत बार जो कीन्ह जोहारी
एह मंदिर सो सिंघल धावा। कहेउ कि होइ जनि मँदिल परावा
देखेउँ आगुन समुद पहारा। साहु दान लै पार उतारा

जोग तें पाएउ भोग मैं पित चितउर नहिं मोर।
मंदिल पै सो दान दै दिपहि होइ दुख थोर॥

[४४५अ]

प्रति प्र० १, २, द्वि० ४, ५, ६, ७—

अस कहि दुवो नारि समुझाईं। बिहँसत हिए चाँपि कँठ लाईं।
लेइ दोउ संग मँदिर महँ आए। सोन पलँग जहँ रहे बिछाए।
सीझी पाँच अमृत जेवनारा। औ भोजन छप्पन परकारा।
हुलसीं सरस खजहजा खाईं। भोग करत बिहँसीं रहसाईं।
सोन मँदिर नगमति कहँ दीन्हा। रूप मँदिर पदमावति लीन्हा।
मंदिर रतन रतन के खंभा। बैठा राज जोहारै सभा।
सभा सो सबै सुभर मन कहा। सोई अस जो गुरु भल कहा।

बहु सुगंध बहु भोग सुख कुरलहिं केलि कराहिं।
दुहुँ सौं केलि नित मानै रहस अनँद दिन जाहिं॥

[४४५आ]

द्वि० ३—

नाग पदम नागरि दुइ नारी। बरनी दूनउँ परम पियारी।
पदम नाग पदम अँग सुभाएँ। चँदन मलैगिरि अंग लगाएँ।

पदुम पदारथ पदिक नवेलीं। फारी सैन यनी अलवेलीं।
गोरी साँवरि नवल सलोनी। कोकिल चातक कंठ बिलोनी।
लिखी मुहम्मद दूलो नारीं। रतनसेन की परम पियारीं।
जस दुख देख जगत महँ लोगू। तस तेहि के रँग माने भोगू।
छह रितु बारह मास गँवाना। पदुम नाग कर आरस माना।

चंदन चीर धातु औ चोवा परिमल मेद सुगंध।
पुहुप बास रस माहँ भरि जोबन सीस सुबंध॥

[४४५इ]

प्र० १, २, द्वि० ४, ५, ६, ७—

जाएउ नागमती नगसेनिहिं। ऊँच भाग ऊँचै दिन रैनिहिं।
कँवलसेनि पदमावति जाएउ। आनहुँ चांद धरति मह आएउ।
पंडित बहु बुधिवंत बोलाए। रासि बरग औ गरह गनाए।
कहेन्हि बड़े दोउ राजा होहीं। ऐसे पूत होहिं सब तोहीं।
नवौ खंड के राजन्ह जाहीं। औ किछु दुंद होइ दल माहीं।
खोलि भँडारहिं दान देवावा। दुखी सुखी करि मान बढ़ावा।
जाचक लोग गुनी जन आए। औ अनंद के बाज बधाए।

बहु किछु पावा जोतिसिन्ह औ देइ चले असीस।
पुत्र कलत्र कुटुंब सब जियहिं कोटि बरीस॥

[४४६अ]

प्र० १, २—

जुरी सभा तहँ अनिबन भाती। बैठि कुँवर सब पाँती पाँती।
कोइ चतुराई सारि सौ खेलहिं। औ डम ठारि-आपु तर हेलहि।
कोइ पंडित पढ़ि बेद सुनावहिं। औ कंचन बहु भाव देखावहिं।
अब इन्ह बेगु गुनी कर ठाटा। सुनि सो सबद रतन हिय फाटा।
गुनी न छाडत कोइ नटसारा। जौ रे होत अस्थिर दरबारा।
ना एक डाक गुनी सँग पावा। अपनी अपनी भाँति सुनावा।
सोइ बियार जौ अधिकौ नवई। नवै सो पाव भाव सो भवई।

भाव सो मिलै जो साजन सखा भाव भरम गौ ताहि।
अन रे भाव भरम रहै जनु रे बाउर एहि आहि॥

[४४६आ]

प्र० १, २—

अकथ कथा जे कह सब कोई। सब की चाह चलावै सोई।
करहिं सो अपनी आपनि बाता। जेहि जस पहुँच बकसै सो ताका।
बकहिं सो पंडित वेद सुबेदा। गुपुत बाल बकु जो ओहि भेदा।
कहहिं जोगि सब आपन जोगू। कहहिं राउ जो मानहिं भोगू।
औ वैसे आपन गुन कहा। धन जो कहैं अब कोउ न रहा।
जो सब रहे ओही दरबारा। सब काहू कहँ कीन्ह जोहारा।
फिरी दिस्टि सब के उपराहीं। उन्ह घल ओट रहा कोइ नाहीं।

आजु राउ होइ बैठे सुनहिं कथा गुन ग्याँन।
सोइ सबद सरवन भै अंम्रित जो उनके मन मान॥

[४४६इ]

प्र० १, २—

तब पंडित पढ़ि वेद सुनावै। अगम एक चाहत जो आवै।
होइहिं उपद्रौ चितउर माहाँ। जस घर भेद लंक महि डाहा।
कहै न कोइ एहि चितउर मेरा। रतनसेनि चितउर केहि केरा।
वेद उछेद न सुनै कहानी। औ चितउर भूला हौ रानी।
भूला स्वाद रंग औ नादा। औ भूले जिन्ह सुभ न आगा।
भूला कटक देखि हम हाथी। औ जानी आपन है साथी।
औ तेहि ऊँच देखि गढ़ भूला। जैसें सुवा सेंवर के फूला।

भूला रहै जो गरब तें सुनै न आपु समान।
ऊँचा चितउर देखि करि जियहिं कीन्ह अभिमान॥

[४४६ई]

प्र० १, २—

बाँभन एक बसै ओहि गाऊँ। अहा गुपुत परगट भा नाऊँ।
कीन्ह बाद तेन्ह राघौ सेती। भई बात गइ राजा सेती।
बाँभन चेतनि सौं भै बादा। राजा सुख हेरै सब लागा।

बाँभन पूँछै बेद गरंथा। चित चेतनि औ दधि मंथा (?)।
सँवरि सुरसती मनहिं ननावै। बाक बाद नीक्क आ दे पावै (?)।
कहइ एक एक अस मुख बोला। पंडित कहहिं बेद अब डोला।
देखहिं पत्रा करहिं तिवाना। बेद मंत्र बुधि सबै हेराना।

कह बाँभन सुनु चेतन बाद कीन्ह तुम्ह आजु।
को निबटावइ बीच होइ अहा अधिक होइ बाजु॥

[४४७अ]

प्र० १, २, द्वि० ३, ६, ७, में ४४७·१ के अनन्तर आठ तथा ४४७·२ के अनन्तर एक। कुल निम्नलिखित नौ पंक्तियाँ अतिरिक्त हैं—

राजा यह तौ साँच न होई। अस तौ दिस्टि बंध पै होई।
वह वो साव कोस लहु चाँदू। आगे होइ होहिं तौ बाँदू।
पवन, पाव जो तुरै पलानहु। चहूँ ओर असवार धवावहु।
चहूँ ओर असवार धवाए। एक निमिख महँ देखत आए।
कहेन्हि आइ सत आहि नरेखा। आगे सकल अमावस देखा।
राजैं कहा कालि निजु जानब। देखि चाँद तबहीं पहिचानब।

फुर औ मूठ तब जानव दिस्टि परै जब चाँद।
कालि साँझ यह निपटहि को ठाकुर को बाँद॥

दुइज क चाँद छीन सब चीन्हा। मूठा मूठ फूर फुर कीन्हा।

[४४८अ]

प्र० १, २, द्वि० ३, ६, ७—

राघौ जो रे बात यह सुनी। राजा पहँ आएउ बड़ गुनी।
कहेसि निकट परलौ अति आवा। बेद गरंथ मों अस देखावा।
सब कहँ बड़ संदेह जिउ लागा। राजा सत्त दत्त नित साँगा।
भएउ सो देवस सबहिं देखरावा। पानी पानी देस सब छावा।
बादृत आइ गरह तर होइ बाजा। देखन चढ़ा मँदिल पर राजा।
बूड़हिं लोग मँदिल घहराहीं। बूड़हिं छजा छपर उतिराहीं।
बूड़हिं मँदिल मडप औ देवा। बूड़हिं तपा जपा जो सेवा।

बूड़हिं बालक औ मेहरि नर बूड़े थहे जाहिं।
बुड़हि एक एक उछरहिं मुँह बाएँ घिघियाहिं॥

[४४८अ]

प्र० १, २, द्वि० ३, ६, ७—

बूड़हिं एक उठावहिं बाँही। बूड़हिं आपु प्रवर लपटाहीं।
बूड़हिं हय फरकत सिर काढ़े। बूड़हिं गै जनु गिरिवर ठाढ़े।
बूड़हिं पसु सब गोते खाहीं। बूड़हिं पंखी सोर कराहीं।
बूड़हिं कोट बुरुज घहराने। बूड़हिं कुँवर राउ औ राने।
बूड़ नगर सब जलहर छावा। राघौ अैस भगल देखरावा।
मंदिलौ आइ लीन्ह जब पानी। राजैं सत्त मीचु तब जानी।
एक नाव दुइ खेवट आए। राजै देखि चढ़न्ह कहँ धाए।

राजैं चढ़ै न दीन्हेउ चढ़ पंडित लिहे बीर।
राघौ अैस दिस्टि बँध खेला बहुरि न देखा नीर॥

[४४६अ]

प्र० १, २—

दुखी पै सत जिय करहिं न लोभा। पै सो होइ तेहि और न सोभा।
जौं पतंग सनमुख जिउ देई। सौंह जरैं कर बदन हिलेई।
जौं सेवा कीजै एहि भाँती। तौ पति मिले होइ जौ साँती।
अग्याँकारि आहि जो कोई। सेवा पियार यार नहिं कोई।
जा कहँ माँथ जाइ कै दीजै। तासौं सरबरि काहे को कीजै।
जौ सरबरि राघौ जिय कीन्हा। चितउर तजा दिली चित दीन्हा।
पति रिसान रिसि भै सब कोई। सबै बिरुझ आपन नहिं होई।

सामीं सरबरि का करै जेहि सेवा नित आस।
जो रिसाइ सेवक सौं ठाकुर तौ अस छाड़ै पास॥

[४४६आ]

प्र० १, २—

कह राजा सुनि राघौ चेतनि। सबै नीक दोख तोहि एतनि।

दीन्ह मंत्र तुम कौने ग्यॉना। कै तिवान मन मोहती जाना।
तुम्ह जाना की अस्थिर महीं। सभै कोई कह वाकी अहीं।
पिउ ठाकुर भँवरा औ जोगी। अहुठ कीन्ह सेवा सो भोगी।
तो पहँ आहि जाखिनी देवी। चढ़ि दुइ नाव कीन्ह अस भेवी।
जेइ दुइ बाट घाट महँ ताका। मरनहिं वार पार सो थाका।
अंतरीछ अनाएहु ससी। पै अलोप पै छिन नहिं गसी।

तुम्ह छर कीन्ह जो मोसंन आनि उआएहु जोन्हि।
चेटक छआ जो छिनहिं की भएउ होन्हि सो होन्हि॥

[४४६३]

प्र० १, २—

सुनु राजा तैं बात जो कही। मोहि जिय लागि धनी मैं रही।
सेवक जोगी पंथ क भँवरा। यह नहिं रह थिर जौं चित सँवरा।
आजु लीन्ह एहि ठाउँ बिसराऊँ। कालि जो बसब कालि के गाऊँ।
जौं जानैं अस्थिर मग होई। काहे आइ चलै फिरि कोई।
काहे आपन के यह जग जाना। सभै जाइ मन माहँ भुलाना।
मैं अब चलौं अलादिन पाहाँ। जेहि की छया जगत सब माहाँ।
जो रहि मंत्र ऊँच दुइ बाता। दहुँ केहि पथ चलौं मैं साता।

चेतनि चितउर उचिठा चलत निमिख नहिं हेर।
जौ लागै संसार तेहि रहै न कवनौ फेर॥

[४४६ई]

प्र० १, २—

रतनसेनि बहु भाँति बुझावा। चेतनि चला चेटक जनु लावा।
जो चितउर नहिं आपन देसा। तेहि ढिल्ली कब होइ बिसेसा।
एहि निदरि छरु नहिं सुलतानू। राइ रान कर आहि न मानू।
आपन और परार नहिं देखा। सेवा के मानू पुनि लेखा।
जहाँ नीर खीर न जाइ सँभारी। तहाँ चलहु तुम्ह जहाँ भिखारी।
तेहि दरबार गुनी बहु गुनी। आन्हा लाई अही बेगुनी।
वह रुपवंत जो चतुर सयाना। आपुहि अरथ गरंथ समाना।

आपुहि छत्र सँवारि सिर आपुहि करै निछात।
गुन गंधप सुर मुनि नर रहा न काहू दाप॥

[४४६ उ]

प्र० १, २—

सुन राजा मैं आपु न चेतनि। करहि न साहि बात सुनु एतनि।
सेवा सवाई करौं मैं रहौं। संजम अधर रसन पति महौं।
लंक नैन गिय लाइ बुझावौं। औ रसना सौं साहि मनावौं।
जेहि की आहि चहुँ खंड दोहाई। तेहि सेवत कत होइ दुखाई।
तौ चेतनि चतुराई सौं खेलौं। ढारि सुसारि आपु तर हेलौं।
राजा रिपु रावन होइ आवै। लंक भभीछन राज दियावै।
औ ऊधौ अगुआई किया। हरि रानी दासहिं लै दिया।

होइ अंगद सिर रोपिहैं हनुवँते मारे हाँक।
जौं रावन होइ आगिमों हाँक दिए सब थाँक॥

[४४६ अ']

द्वि० ३—

दुइ नहिं होइ एक ठाहर माहीं। दिन औ रात घाम औ छाहीं।
ग्याँन गरब दुइ एक न होहीं। सब नैना एक रूप न मोहीं।
बिद्या बुद्धि औ गति औ रागू। केत नाव औ कष्ट सभागू।
दान खरग जोगी औ भोगी। सोग असोग रंग औ रोगी।
मूरति सूरति करत बखानू। औ तिन कर नित ग्रंथ बयानू।
सूर होइ संग्रामहिं वपा। क्रूर रमैया रामहिं जपा।
मौन अपड गिरहस्थ उदासी। जोगी जंगम तपा संन्यासी।

कोई दास कोइ ठाकुर कोई नरक कबिलास।
चेत चेत चित चेतनि मन नहिं करै उदास॥

[४६१ अ]

प्र० १, २, द्वि० ६, ७—

आए समय अलाउदीं साही। देखन महल के भीतर नाहीं।

भीतर महल जो राघौ आए। आदर के सबहिन बैसाए।
आपुहिं सब देखरावहिं मनी। और को है हमतें रुपमनी।
राघौ कह बहु देहि अकोरा। कहहि कि कहिअइ हजरि(?)ओरा।
अपने पर सब राखहि धोखा। भाव देखावहिं गावहिं चोखा।
चेतनि चीकैं सबनि निहारी। कोउ न देखौं पदुमिनि नारी।
चरन टेकि कै गोचरा साहो। अनु अपरूप सब बरनि न जाहीं।

चित्रिनि सिंघिनि हस्तिनी बहु कटाछ बहु भाइ।
एक साहि घर नाहिं पदुमिनी जेहि मुख कँवल बसाइ॥

[४६६अ]

प्र० २—

बिहँसा नाम सुनत पदुमिनी। अब वह बात फेरि कहु गुनी।
केहि रे बात सो देस निकारा। कैसे आइ ढिली पग धारा।
कैसे चितउर सें तुम्ह आवा। रतनसेन किमि भवा परावा।
केहि रे भाँति कहु पदुमिनि नारी। जस चखु लागि तैसि कहु बारी।
सोइ भाँति तुम बरनहु रूपा। वह सो छाँह कोइ मरै न धूपा।
जनि आगे ओहि के कोइ परै। ककपि कंठ वरु आपुहिं मरै।
बरनौं तासु अलावलि दीना। आहै नाद बेद सुर बीना।

सुघर सुरति कीन्ही सुफलि अब जो देउँ सरि केहि।
औ सो रुकमिनि जनकसुत सरि सो काहि मैं देहि॥

[४६८अ]

द्वि० ४, ५, ६—

ससि मुख जबहिं कहै किछु बाता। उठत ओठ सुरुज जस राता।
दसन दसन सौं किरिनि जो फूटहिं। सब जग जनहुँ फुलझरी छूटहिं।
जानहुँ ससि महँ बीजु देखावा। चौंधि परै किछु कहै न आवा।
कौंधत अह जस भादौं रैनी। साम रैनि जनु चलै उडैनी।
जनु बसंत रितु कोकिल बोली। सरस सुनाइ मारि सर छोली।
ओहि सिर सेस नाग जौ हरा। जाइ सरनि बेनी होइ परा।
जनु अंमित होइ बचन बिगासा। कँवल जो बास बास धनि पासा।

सबै मनहिं हरि जाइ मरि जो देखै तस चार।
पहिले ।सो दुख बरनि कै बरनौं ओहिक सिंगार॥

[४७४ अ]

द्वि० ३—

बरुनी तिरिछि पेम जग कीन्हा। औ बिख बाँधि सान धरि दीन्हा।
बरुनी सोभ कहाँ लगि सोभहिं। जेइँ देखा सो सुर नर मोहहिं।
अरजुन बान बनावरि बरनी। खंजन रूप सोह सो तरनी।
नाविक बान ताहि तैं पेखे। भाँझर करै जीव तेहि देखे।
कंटक बरुनि औ तँग वै भौंहीं। बहुरि जाहिं निरखत सो सोहीं।
बरुनी बान देखि जनु नैना। दुरै एकाँव कटाछ कै सैना।
बरुनी बरनि काह लै लावौं। दुइ जग सरवरि काहु न पावौं।

बरुनी बान भा पार वहि जग बेधा तेहि बान।
जीवहु करेजन फाँस जिमि जबहिं बरुनि कत जान॥

[४८४अ]

प्र० १, २, द्वि० ३—

रंग पुहुप जो पदुम सरि कहाँ। कंठ सो साल रहै जल महाँ।
को रंग पाव तासु सरि कोई। जा कहँ दिस्टि फेरु जर सोई।
वह रंग देखि सबै रँग जरा। रूप देखाइ बहुरि सो छरा।
बान सबै ओहि पहँ रँग राते। छुटै काह जनु लाग बिसाते।
नौज परै ओहि आगे कोई सनमुख सो जिय जियै न कोई।
केउ काल लागे रह रुहा। एकहिं बार न धाव सामुँहा।
आपुहिं बान आपुहिं धनुधारी। आपुहि काल काल किहु कारी।

सबै सेन सनमुख गहै औ सो सिस्टि अनसिस्टि।
नव अवतार सो आहि नर जो रे फिरै ओहि दिस्टि॥

[४६४ अ]

प्र० १, २—

अलादीन चित चितउर हेरा। कब रे आइ गढ़ ऊपर फेरा।

अब मोहिं चाह पदुमिनी केरी। हम कहँ हमै रतन कहे मेरी।
गढ़ अगूढ़ नहिं जाइहि हेरा। पँवरि एक घाटी बहु फेरा।
सो गढ़ करौं फाग कै धूरी। तौ साँचा साहि अलावलि पूरी।
चौंकि चौंकि निसि दीन लगावहिं। पाँति पाँति सेवक सब भागहिं।
बाजा तबल जाग सब कोई। भै पुकारि चौकी भलि होई।
गहि करनाइ सब्द भल साजा। बाजन कोटि एक सँग बाजा।

भै चौकी निसि बीती भोर उठे सब जागि।
सही साहिले माँगी और हाजिरी त्यागि॥

[४६४अ]

प्र० १, २—

साहि सुजान सजन हँकराए। सुनत सबद नेबी सब धाए।
आवहु बैसि मंत्र अब जोरहिं। कै सुमंत्र अब चितउर तोरहिं।
कोइ कहै गढ़ है अति बाँकी। लेहु गढ़ाइ कर दुहमुँह (?) टाँकी।
कोइ कह सर औ कुअँड कुलेहू (?)। सन्मुख चलहु पीठि जनि देहू।
कोइ कहै इमि भाँति न पावहु। करतब चढ़ै सीस जौं लावहु।
सबै मंत्र मंत्री अरथावहिं। स्रवन टेरि लै राव सुनावहिं।
पलौ कलम गम गहि भरि स्यामा। लिखिस पढ़ेसि चातुर गुन ग्याँना।

चढ़े आइ अब कागद छतिस कुरी सब जाति।
कोई आउ सवेरे कोहू माभ भइ राति॥

[४६६अ]

द्वि० ३—

पातसाहि जब ठोक निसाना। सपत दीप महँ परा भगाना।
दर मिर चेत सो छार कुडानी (?)। अंबर उठे भए चढ़त पानी।
कला औ परभा केहरि हरी (?)। चले चाल सो एक पातरी।
और पलंग चित्र रतनारी। कारे कान्हहि पाय पखारी।
कटि लै मीर चले बहु पाँती। पाखर पाखर सो आँती (?)।
अस कै पखरे और धरानी। बरनत कोउ बरनि नहिं जाई।
जहँ बस परे जगत सब अहे। साँचाकरन (?) कोटि सिर गहे।

सीतलि बानी आहि रस अलप अहार न रोस।
तरपहिं महिं मै बाजिगन तारहिं ए सब दोस॥

[४६६अ]

प्र० १, २, द्वि० ६, ७—

रूमी हबसी औरु फिरंगी। हलबिजार अरबी औ जंगी।
चीन मचीन खुतन औ खीता। चले बँगाली बोलत मीता।
भक्खर खग्गर चले हजारी। काबुल रोहन रहा पहारी।
खानदेस औ बीजानगरा। मारवार हठि आवै लगरा।
बदखसान बगदादी जर्दी। थार कोच जहाँ लगि हंदी।
उतर देस सब चला भोवंतू। दक्खिन देस जहाँ लहि अंतू।
पछिम जहाँ लगि सायर नीरू। पूरब जहँ लगि उगवै सीरू।

सेस कलमलै महि हलै परबत होइ मसिवान।
सायर सूख अलोप रबि अलादीन के पयान॥

[४६६अ]

प्र० १, २, द्वि० ६, ७—

सुरति बेसूरति होइ (सो) गई। भरउँच भार न अँगवै दई।
काँपि तिहूनगिरि तिनवर डोला। नरवर गएउ भुराइ न बोला।
राइसेन ईडर डरि काँपी। आबू पूँछि जंघ महँ झाँपी।
ताकर चरन चरनाठि कुमाऊँ। मडराइल मडराइ उड़ाऊँ।
गिरि गिरिनैर काँप थरहरी। बैरागर असेरी भरहरी।
धौरागढ़ ठट्ठा डर माना। छीदागढ़ लंबेग भुलाना।
डरा जधानू गिरिवर हाले। नरवर वै भूवा कलमले।

देस देस सभ परा भगाना जो जहाँ तहँ भैभीत।
भौचकि औचकि पर चकवे चितवहिं चहुँ सोधि (?)॥

[५०३अ]

प्र० १,२, द्वि० ६ में ५०३.२ के बाद आठ नई पंक्तियाँ और ५०३.६ के बाद एक नई पंक्ति बढ़ा कर एक छंद अतिरिक्त कर दिया गया है—

रघुबंसी जादव सूरबंसी। औ निकुंभ कासिब सोमबंसी।

रैकवार जनवार धधारे। रतिसवार जो महा करारे।
चंदगूजर बिसेन औ धाकर। सेंगर सुरकी जगत उजागर।
मदवरि आमंडलिक अखीची। खरयन्ह दान जूझि नहिं नीची।

एकक देस के ठाकुर कुरी न कोऊ नीच।
बोलहि बिरद दसौंधी खेल भई जनु मीच॥

बाछिल औ बजगोती आए। पोंढ पुरिर जो सुनि कै धाए।
बुंदेले गौरह भिलवारे। महि दुवार कटि आरज धारे।
अहवड जैन कछवाहे मिले। औंर नैर कठिहरिया भले।

[५०३आ]

प्र० १, २ (किंतु प्र० १ में यह यथा ५११ अ है)—

रचे सु चारि खंभ नहिं डोलहिं। थाके रसन कहा अब बोलहिं।
थाके स्रवन सबद का होई। कोटि धमकि जो ठोंकै कोई।
थाके अधर दसन के रँगा। थाके पान सुपारी संगा।
(?) सो भोजन कापर पागा। छिन महँ सीस बैठ चह कागा।
बेगर बेगर आपन होई। चरत चलत नहिं टेकै कोई।
भाव माहँ जो भा अनभावा। मात पिता सब भवा परावा।
औ न कोइ काहु कहँ पूछा। सबै अहा चलते भा छूँछा।

तजा सो अर्थ दर्ब सब औ सो सखा सुख पाठ।
भौ सँग माटी आगि जल लै सूतौ अत्र काठ॥

[५०३ इ]

प्र० १, २ (किंतु प्र० १ में यह यथा ५११ आ है)—

कहा नाग पदुमावति रानी। काहे जरन मरन तूँ ठानी।
तुम्ह चितउर ते सिंघल लीन्हा। फिरि पयान चितउर कहँ कीन्हा।
औदधि उदधि न तुम सौं याँचा। लीन्ह जो रतन माँगि नग पाँचा।
जब दुइ बाट घाट महँ भए। कहु रानी कहु राजा भए।
सुख निसरा दुख भरा सरीरा। तब नहिं जरेहु अहा घट पीरा।
जब रे जाइ त्रिन चहुँ पनावा। केइँ रे लाव केइँ जरत बुझावा।

जब सिंघल महँ कुँवरन्ह छेका। कस नहिं फिरेहु जरनि की टेका।
का राजा तुम्ह सर रचा कहहु कहाँ सो लागि।
(एह जो) छोड़हु उठहु सिलह सर जरि रहहु साहि की आगि॥

[५०३ ई]

प्र० १, २ (किंतु प्र० १ में यह यथा ५११ इ है)—

एहि जिउ कठिन छुटै नहिं आँका। छाड़ा जरन मरन घर ताका।
रतनसेनि पोड़िहार बोलावा। लै सँग गढ़ ऊपर कहँ आवा।
दीन्ह हाँक अब मारहु घेऊ। लै अस चढ़हु असुर जस देऊ।
ठाँवहिं ठावँ अब लागी टाँकी। कोइ भरि खाँच चढ़ावहिं भाठी।
फूटा कोट ओट सब करहीं। तापर छीनि कँगूरा धरहीं।
कोइ कर जोरि फिरत कर राना। हम सहि ठाँव आहि दिन मरना।
बाँधि सबात सूत सौं ताका। जहाँ होइ टेट निहुरि सो ताका।

चहूँ ओर सूत सँचरे टेकि आपु सो आपु।
दिन बीते निसि आइहै सब कहँ मारा थापु॥

[५०३ उ]

प्र० १, २ (किंतु प्र० १ में यह यथा ५११ ई है)—

भएउ बिहान कमानैं आईं। भाँति भाँति की आनि चढ़ाईं।
परी हाँक कोटवार पुकारा। आपु आपु महँ रह हुसियारा।
है सिर ऊपर अलादीन छावा। जाइ हँकार करै सो धावा।
जौं चूरै ताके मन माहाँ। एह चितउर राखै को काहाँ।
कठिन आहि तिनकर दरबारा। जो बदि परै न छूटै पारा।
तुरुक रहा दुइ अगुवा सोई। उन्ह सौं सकै कहै का कोई।
दुहि सब ऊपर तुरुक सो दारुना। जबहिं हँकार साहि तब मारुना।

सुनि कै चौंकि परा है रतनसेन सो राउ।
पहरन्हि जाइ बुझावा औ ते बात सुनाउ॥

[५२८ अ]

द्वि० १—

चेड़िनि निरित करै बहु बानी। देखै रतनसेनि सुर ग्यानी।

अधरन बरन सो बेड़िनि भली। सुरस कंठ तब गावत चली।
थेई थेई इजारन्ह सुर कीन्हे। सीस धुनहि सँग केऊ सुने।
जस नारद जग दीसै लागै। करहिं बिनौ दखिन के आगैं।
प्रात काल भैरव के राजा। तेहि पर देव गंधार सो साजा।
तौ पुनि काफी टोड़ी गाई। सुनत साह तौ गा मुरछाई।
सारँग गावहिं सुराग नान्हें। सुरँग देखि हिएँ दुख जान्हें।

हिएँ माहँ सुख होइ तब पदुमावति हरि लेहि।
तेहि पर बड़िनि नाच कै अधिक हिएँ दुख देहि॥

[५२८आ]

द्वि० १—

साह सँभारि कमानैं गईं। करहिं मोहल्ला आपन सही।
सबहि साह केर रहु बारहिं। हनि बल लैं सीव करि मारहिं।
गैबर जाहिं सँसाहत करहीं(?)। भएउ निकंद लाइ कोट सँघारहि।
पार रवाना दीख जहाँ लागी। अधिक होइ ऊपर कहँ भागी।
सनई पँवर भाल जो पैठी। तब रन दरहि हिएँ जनु बैठी।
एक बेर सब केऊ छूटहिं। जस भौ जीत पतंग पर टूटहिं।
मेर न तबहिं देर कै ऊँची। कोइ सो कोई पँवरि पहूँची।

कोइ पहुँच पँवरी तक कोइ दरवाजै पास।
नायक के मन अनँद भा पातर के मन हुलास॥

[५२८इ]

द्वि० १—

ऊपर राजा करै हुलासा। तर भै साह सो होइ उदासा।
देखि उदास जहाँगीर लाजा। समुझावै कहँ जाइहि राजा।
काहें साह दुक्ख जिय धरहू। हिएँ अनंद हरख नहिं करहू।
नायक मारौं गन मों कीन्हा। चाँप कमान हाथ कै लीन्हा।
लकत (?) देखि निरित मन लावा। कै गियान उपदेस देखावा।
मुख राजा के सन्मुख कीन्हा। पीठ तरेह साह के दीन्हा।
नाचक लगियन जहाँ देखावा। बेड़िनि नाच ताहि डसि आवा।

नौंपत पावर देखेब नायक देइ देखाइ।
चौतर तरपहि साह के सुख राजहि मन लाइ॥

[५२८ई]

द्वि० १—

देखि साह मन मुरवै लागा। बावँ हमार देहि अस भागा।
जौं उदास जिउ साह क देखा। श्रैसी बात अपने मन लेखा।
सखत कमान चोंप जौं लीन्हा। औ बम साह तें अग्याँ लीन्हा।
गहि मारौं गहि ढाहौं आजू। करौं निकँट जत ओहि कर राजू।
साहि कहा नायक कहँ मारू। मोरे जिय कर परिहँस टारू।
नहि कमान कर तीर सँभारा। तबहिं रिसाइ ताकि के मारा।
नायक ठाढ़ कहाँ रहु पाना। छूटत बान हिएँ न समाना।

जो गढ़ साज लाख दस कोटि सूर महँ कोटि।
पातसाहि जब चाहै रहै न एकौ ओट॥

[५२८उ]

प्र० १, २, द्वि० १, २, ३, ४, ५, ६, ७, तृ० २, ३, च० १, पं० १—

छइउ राग नाँची पातुरिनी। पुनि लीन्हेसि तिन्ह के रागिनी।
औ कल्यान कान्हरा होई। राग बिहाग केदारा सोई।
परभाती होइ उठै बँगाला। आसावरी राग गुनमाला।
धनासरी औ सूहा कीन्हा। भएउ बिलावलु मारू लीन्हा।
रामकली नट गौरी गाई। धुनि खम्माच सो राग सुनाई।
साम गूजरी पुनि भल भाई। सारँग औ बिभास सुहँ आई।
पुरबी सिंधी देस बरारी। टोड़ी गौड़ सौं भई निरारी।

सबै राग औ रागिनी सुरै अलापति ऊँच।
तहाँ तीर कहँ पहुँचै दिस्टि जहाँ न पहूँच॥

[५२८ऊ]

द्वि० १—

दुख कर मानत दुख मन छावा। जब नायक तब कारन आवा।

अतहर न दुख औ ताता येई। देस दिखाइ जीव हरि लेई।
जब नायक देखा वै देसू। तबहि साहि तब होइ कलेसू।
भा कलेस सुख गएउ सुखाई। तवही साह गएउ मुरछाई।
दहिना बावँ सोम कै राजा। देखत साहि मुरछि कै लाजा।
पानि लेइ सतदन तूलाना। पानि पियावा हिरदै जुड़ाना।
निकसी आँखिहि जोति अपारा। मलिक जहाँगिर तय हुंकारा।

आए मलिक जहाँगिर कीन्हा आइ सलाम।
देखि साहि मन दुख धरे लागा करै कलाम॥

[५२८ए]

द्वि० १—

जौ कलाम कर बचन सुनावा। सुनत साहि जिव खेह आवा।
पाँव दहिन पूजहि कै हेरा। है कोइ ऐसा दोसत मेरा।
जौं कोइ यह नायक मारै आजू। देउँ चँदेरी चितउर आजू।
मीरन्ह केर मजालिस भई। जेहि के महँ सूरा अस कही।
कनियर तार नहिं सो तरई। समुहें घाव खाइ सो मरई।
सब मिलि एक मसूरत कीन्हा। हाथ कमान चाँप कै लीन्हा।
सभारा साह वदा सो दहिने। कूंद की गेंद चूरी मली (!)।

बड़ा धनी जब संभारा तवहि झूठ और न कोइ।
तबहि तेज कि मैं सबरौं सूझा था जग होइ॥

[५२६अ]

द्वि० १—

साहि जो वेढ़िनि देखत लाजा। ओके मन महँ सब कै हाजा।
बैठे राय रॉक सब जुरी। जनहुँ बैठ इंद्रासन पुरी।
राना राव औ गजपति जेते। रन लिखार करु मन महँ बैठे।
श्ररन नतर राजा की मही॥ जत दुख रहै तत सब वही।
गोरा बादिल महानरेसू। बनहि देखा जेहि राय कलेसू।
काहँ नृपति दुक्ख मन माहाँ। फूल वदन नहिं देखौं कान्हाँ।
तुम्ह गोरा बादिल मोर भाई। को तुरकन्ह तें करै लराई।

को तुरकन्ह तें रन करै को जिव खोवै आज।
को अस आहि महाबली को रे करै रन साज॥

[५२६ आ]

द्वि० १—

को मेंटै दुख बात हमारी। बिनवौ बिरंचि देव मुरारी।
को मलेछ तें जोरै अनी। को रे कहावै रन का धनी।
बादिल बात जो मन महँ भाई। राजा करै लाग बड़ाई।
का मैं राव दुक्ख जेहि धरसी। महा अनंद हरख तेहि करसी।
जैसें तुरकंन्ह बेड़िनि मारा। तैसें सेवक अहौं तुम्हारा।
दै अग्याँ कि मारौं थाना। सो मोहि देइ दिखाइ निसाना।
बादिल कहा राजै सनकारौं। छत्र धरैं ताकर कर मारौं।

छत्र धरैं छत्र धारी ताहि मारौं बलवंड।
सुनु बादिल मन हरखा बंदवा कहै कमंद॥

[५२३इ]

द्वि० १—

गहि कमान निरखा तो बादिला। मरा बीर जुझार सो आदिला।
भो नग लाइ के खाँजी जेहीं। छूट बान बादिल कर तेहीं।
लाग बान तब कर उधिराना। देखत बान साहि तब ताना।
ओके मन महँ तुरुक जुझारा। सन बंध तब सब संहारा।
अबन हाथ गढ़ आवै कबहीं। बिनवा जाइ सारि ते सबहीं।
कै मद छाड़तु कै गढ़ लाहाँ। कै तौ मरन तहाँ गढ़ माहाँ।
सेर तुरुक तो बिनती कीन्हा। दगा किए महँ मसूरत कीन्हा।

दया कीन्ह जब राजा तब पै आवै हाथ।
नाहीं तो हथ लागें टूटत इन कहँ माँथ॥

[५३३अ]

प्र० १, २—

भोग कीन्ह मानेहु सुख साँती। अब नग देहु आहि जनु पाती।

हरजे सुना स्रवन गति वाता। भएउ सँजोग चलेउ जहँ राता।
लीन्ह सो समत साहि कर काना। परी घरी सब कीन्ह पयाना।
दुइ जो पयान कीन्ह ओहि ठाऊँ। तिसरे जाइ पहूँचे गाऊँ।
तब राजा मन माहँ सकाना। दहुँ कस बनै रतन पहँ जाना।
अनचिन्ह सबै कोउ नहिं साथा। दहुँ कस बनै रतन पहँ जाना(?)।
औ भै कीन्ह मनहि चल भेरी। जहाँ साहि औ राजा केरी।

गया देवस अब आउ निसि बिसरावा ओहि ठाँव।
पैसत पवरि अचेत भौ भूलि परे एहि गाव॥

[४३३आ]

प्र० १, २—

सरजा सबद साहि कर लावा। रहे कहाँ जो सीस उठावा।
भई चाह चितउर की हाटा। जहँ नग कनक जराव की पाटा।
ब्याकुल भई छतीसौ जाती। आजु साहि की आई पाती।
जौं भल होइ तौं राजा काँधौं। लै पाती सिर ऊपर बाँधौं।
जो चाहे सो अग्या करै। लै नग रतन आगे कै धरै।
करहु भान जनि चितउर देखी। होइ सिस्टि पुनि रैनि बिसेखी।
कोट बोट नहिं काहुहि आवा। जौं रे साहि सैना सौं गाहा।

खोजत खोज न पाउब जेउ रे छुआ की छाँह।
सपने की सी संपति नैन खोलैहइ काँह॥

[४३४अ]

द्वि० १, तृ० २—

अनु सरजा तू कहा हमारा। जानहि लोक लाज ब्यौहारा।
दान मान सुमिरत संसारा। माँग न कोइ पुरुख कै दारा।
जो घरनी दै कै घर राखा। पुरुख न कहिय निपुंसक भाखा।
जावत सेव कहिअ सेवकाई। तावत करौं माँथ भुइँ लाई।
अरथ दरब औ हस्ति तोखारा। रतन पदारथ देहुँ भँडारा।
देस कोस औ राज दोहाई। जो माँगी सो देउँ सवाई।
औ कर जोरे नेवा सारौं। पै एक घरनी देइ न पारौं।

जहँ लगि लच्छि परापति राज साज ब्यौहार।
सब पायन्हँ तर धारौं जो रे अरथ भँडार॥

[५३७अ]

प्र० १, २—

सुनि सो बात राजा मन भावा। कहिन्हि जाइ अब सेवौं पावा।
औ कर जोरि मनावौं ओही। देइ मुकुति चितउर जिय मोही।
सुनु बसीठ साहि कर ओरा। चितउरिया बिनवौं कर जोरा।
औ जौं चलब तुम्हारे साथा। सभै जाब जिउ लेउँ मैं हाथा।
औ घर सेवा करब अहारा। सब छाँड़ब यह कटक भँडारा।
चितउर माहँ कीन्ह मैं सेवा। रतन अंध दिठियार हो देवा।
जेहि सब सेव करै दिन राती। मैं कुसेव बिनवौं केहि भाँती।

जौं रे रहौं तौ बनै नहिं चलौं सभै मोहिं दोरा।
कहा आइ रानीन्ह सौं करहु बिदा मोहिं चोरा॥

[५३७आ]

प्र० १, २—

जौं तुम्ह चले साइँ पहँ देवा। अब हम लाइ काहि कै सेवा।
जौं पिय जीय तौ आपन होई। सभै तुम्हार मोर नहिं कोई।
बिनवै पदुमावति सुनु नाहा। अब कस चले अलादिन पाहाँ।
तब न जाइ गिय नाइ जोहारा। अब कस चले मिलन बेवहारा।
नहिं जानै जिय अंत मेराऊ। आए साहि कस भए बटाऊ।
औ न कीन्ह मन माहँ बिचारा। हिए जान सभ आहि हमारा।
सोइ सेवा पिउ जिउ रह हाथा। रहन पदुमावति नागरि साथा।

तब न मिलो जिय केत तुम्ह को हसि सरि बहु छोह।
बिख ब्यापित भौ चितउर होइ मिलन कस नोह॥

[५३७इ]

प्र० १, २—

पदुमावति मन माहँ बिचारा। जौं सरजा तौ साह हमारा।

नील कँधामरी माँगिन्ह बेगी। मारि साल पहिराइह नेवी।
रतन कीन्ह बिनती कर जोरी। तुम्ह सौं प्रगट और सौं चोरी।
औ सो अंत सो जानै अगुमाना। तासों कौन रहै अभिमाना।
उठि कर जोरि बिनय तब कीन्हा। तुम्ह ते साहि अलादिन चीन्हा।
टारि अमी परगट भौ बाता। अस्तुति जोग कहा है राता।
नर नरिंद कहा मोहिं सरि होई। ओहि सर कौन कहा वै कोई।

सेवा संजम मोहिंअहि सुनु सरजा समुझाइ।
आवै घरी जौं मिलन की देखौं साहि के पाइ॥

[५३७ई]

प्र० १, २ —

सरजैं कहा रतन नग लाऊ। जेहि कारन मोहि साह पठाऊ।
देहु नगर तन करौं लै भेंटा। जौ चाहहु गढ़ चितउर टेका।
जौं न देहु माँगे नग पाँचा। रतन सो कहा पदारथ याँचा।
अब मोहिं देहु फरे फिरि धरौं। लै के आगे साहि के धरौं।
देहु चलौं हमही बिलवाई। रहा आइ चितउर गढ़ आई।
अब जौं घरी चलन की आवै। कैसे रहै कोइ कोटि मनावै।
सरजैं कहा घरी सो आई। चलन डगा अब फेरि न जाई।

धाजत बल आदल माँ फिरी साहि की आँच।
सरजा मानि गरम सो माँगि लीन्ह नग पाँच॥

[५५१अ]

प्र० १, २, —

मुख सोंधिया जो रोठ सोपारी। सो सरौते कीन्ह दुइ फारी।
लै चीरहि सो वास बसाई। लौंग लाल सौं मुख बिहराई।
अनबन भाँति साजु सो गुआ। औ बिमोद सब बेहर हुआ।
दान परान पयान कराई। रुहिर रंग अधरन्ह जे भराई।
मसी कपूर अगर की साजी। रसन रदन होइ रही बिराजी।
चोवा सो चतुरानन साजा। औ सँग तेल फुलेल बिराजा।
जूकहिं बूक बुका छिरिरावहिं। आपु हेराइ तौ दरसन पावहिं।

सबै सँभारि संजुत करै रतन साहि जिय लागि।
जो रुचि करै तौ सरै सब नातरु कसै बेलागि॥

[५५४अ]

तृ० २—

रतन पदारथ नग जो बखाने। जिन्ह महं ते देखे छहराने।
मँदिर मँदिर फुलवारी बारी। पुरुख नारि सँग खेल कुँवारी।
बरन बरन जस ठाउँ देखावा। जनु बैकुंठ औस दर पावा।
एक निरखि बहरावन लागे। देखहु मोहीं पुरुख सभागे।
मनु इंछा जो चितमन होई। बिधि प्रसाद घनि पावै सोई।
रहस कोड महँ दिवस पराई। भोग भुगुति तस देहिं बढ़ाई।
दुख औ हुद न जानै कोई। इंद्रलोक जस देखा सोई।

भोग भुगुति सुख सपनै दुखी न कोइ तेहि दीस।
मन निचित भल तेहि भा जो सिरजा जगदीस॥

[५७४अ]

प्र० १, २, द्वि० ३, ४, ५, ६, ७—

चाँद घरहिं जो सूरज आवा। होइ अलोप अमावस छावा।
पूँछहिं नखत मलीन सो मोती। सोरह कला न एकौ जोती।
चाँद क गहन अगाह जनावा। राज भूल गहि साहि चलावा।
पहिली पँवरि नाँघि जौ आवा। ठाद होइ राजहिं पहिरावा।
सौ तुखार तेइस गज पावा। दुंदुभि औ चौघड़ा दियावा।
दूजी पँवरि दीन्ह असवारा। तीजि पँवरि नग दीन्ह अपारा।
चौथि पँवरि देइ दरब करोरी। पँचईं दुइ हीरा कै जोरी।

छठईं पँवरि देइ माडौ सतईं दीन्हि चँदेरि।
सात पँवरि नाँघत नृपहिं लेइगा बाँधि गरेरि॥

[५७६अ]

प्र० १, २—

आजु गनत सहदेव सौं पूछा। आजु कान्ह जल महँ भै लूका।

आजु गँगेउ जूझि मुईं परा। आजु राज जिरजोधन टरा।
आजु दयंत कुँवर छरि हरा। आजु कबीर दुदिस्टि ग धरा।
आजु लखन कहँ सकती लागा। आजु प्रान दसरथ हरि त्यागा।
आजु सत्त सौं हरिचँद हारा। आजु जुदा कीन्हा दुइ फारा।
आजु भीम राकस गहि लीला। आजु इंद्र इंद्रासन ढीला।
आजु पंडौ भजि गए पतारा। आजु कुर्म छाँड़ेउ महिभारा।

आजु महा परलौ भौ दिग दिग डोल पहार।
आजु सूर दिन अथवा भा चितउर अँधकार॥

[५७६आ]

प्र० १, २—

आजु छाँड़ि चितउर अन्हसाथा। आजु जो परे पराए हाथा।
आजु लिखा मोकहँ बदिसारा। आजु कीन्ह मैं आहि अहारा।
बिस्नु गोविंद महेस मनावौं। सोस धुनौं पै दरस न पावौं।
रतनगिरि बिनवौं कर जोरे। काटइ बंदि कृपाल निहोरे।
जिय जोबन धन तुम सौं पावा। अब मो सन का होहु परावा।
तुम्हहीं नरक नेवारन साईं। तुम्ह पति जोउ मैं दास गोसाईं।
जल थल आहि भँवर अरु देसू। ताहि सबै घट सबहिं नरेसू।

का मानुस का पंखी का सावक का मीन।
सब घट भीतर पैठि कै दीन्ही लिखि भापा भीन॥

[५७६इ]

प्र० १, २—

अतना कहत नींद जब आई। सपन रूप देखेउ अरसाई।
पुरिख एक अचरिजु जो देखा। परगट रूप न जाइ निरेखा।
जिन्ह भोजन अभिमान क खावा। खात अमी पुनि भा पछितावा।
अजहँ समुझ रे हिरदै माहाँ। जैसे भृंग भाग घट पाहाँ।
जिन्ह निहचै बाँधा उन्ह बेरा। बिन गुन पार जे करैं सबेरा।
तब भरमाइ जो नैंन उघारे। जनु गग ठगन्हि ठगौरी भारे।
भरम भूलि कै जीभ उघेला। अब बँदि आनि कहाँ तैं मेला।

जनि यमि काहू के कोइ परै दास होइ की राज।
हरै धरै जो भाव ओहि रहै न ओसौं लाज॥

[५७६ई]

प्र० १, २—

भएउ काल अभिमान थँभाऊ। मित्र मया जनु संग बटाऊ।
कासौं कहौं जो आहि अपाना। जो देखौं संग सबै बेगाना।
कोउ नहिं मोहि छिन एक बोलावौं। पैग पैग पै लागु चलावौं।
सुख संगति सो भएउ परावा। दुख जिय सँग बँदिहार चलावा।
दुख कर मिथ्या नेह कनीरू (?)। सो पीऔ दुख होइ सरीरू।
इन्ह दुखनै मोर ओर निबाहा। सब सँग दीन्ह जबै मैं चाहा।
मैं मलया दुख भएउँ भुवंगा। गहु लपटाइ न छाड़ै संगा।

दुख सुख की है ओबरी पथिक बसे जे आइ।
मुहमद दोऊ एक सँग औ हँसि चले रोआइ॥

[५७६उ]

प्र० १, २—

पुनि सो राउ बोला ओहि ठाएँ। तुम जो प्रीति परापति लाएँ।
तब तुम्ह सुख आपन कै जाना। अब तुम्ह सौं काहे बेगराना।
निहचै जानहु संग सुभाऊ। भा दुइ मारग केर बटाऊ।
जाना तुम्ह जो अस्थिर राजू। घटत न घटै अमर यह साजू।
कनक पहार जे लंका पुरी। सुनि तेहि डाहि मेराएउँ धूरी।
सुत संजम तिन्ह आपु सँभारा। पुनि ओहि ठाउँ ओही कड़हारा।
गीव देइ गोचरै दै हाथा। अगमन धाइ मिलै पै साथा।

तासौं गहर न कीजिए जासौं है निति काज।
सबै दास ओहि आएसु जाकर अस्थिर राज॥

[५८३अ]

प्र० १, २, द्वि० ४, ५, ६, ७, (तृ० १)—

पदुमावती पीव रट लागी। निसि दिन तपै मच्छ जिमि आगी।

भँवर भुजंग कहाँ हो पिया। हौं ढरका तुम कान न किया।
भूलि न जाहि कँवल के पाहाँ। बाँधत बिलम न लागै नाहाँ।
कहाँ सो सूर पास हौं जाऊँ। बाँधा भौंर छोरि कै लाऊँ।
कहाँ जाउँ को कहै संदेसा। जाउँ सो तहँ जोगिनि के भेसा।
फारि पटोरहिं पहिरौं कंथा। जो मोहि कोइ देखावै पंथा।
वह पथ पलकन्ह जाइ बोहारौं। सीस चरन कै तहाँ सिधारौं।

को गुरु अगुआ होइ सखि मोहि लावै पथ माहँ।
तन मन धन बलि बलि करौं जो रे मिलावै नाहँ॥

[५८३आ]

प्र० १, २, द्वि० ४, ५, ६, ७, (तृ० १)—

कै कै कारन रोवै बाला। जनु टूटहिं मोतिन्ह कै माला।
रोवति भई न सांस सँभारा। नैन चुवहिं जस ओरति धारा।
जाकर रतन परै परहाथा। सो अनाथ किमि जीवै नाथा।
पाँच रतन ओहि रतनहिं लागे। वेगि आउ पिय रतन सभागे।
रही न जोति नैन भए खीने। स्रवन न सुनौं बैन तुम्ह लीने।
रसनहिं रस नहिं एकौ भावा। नासिक और बास नहिं आवा।
तचि तचि तुम्ह बिनु अंग मोहि लागे। पाँचौ दगधि बिरह अब जागे।

बिरह सो जारि भसम कै चहै उड़ावा खेह।
आइ जो धनि पिय मेरवै करि सो देइ नइ देह॥

[५८३इ]

प्र० १, २, द्वि० ४, ५, ६, ७, (तृ० १)—

पिय बिनु व्याकुल बिलपै नागा। बिरहा तपनि साम भइ कागा।
पवन पानि कहँ सीतल पीऊ। जेहि देखे पलुहै तन जीऊ।
कहँ सो बास मलयागिरि नाहाँ। जेहि कल परति देति गलबाहाँ।
पदुमिनि ठगिनी भइ कित साथा। जेहि तें रतन परा पर हाथा।
होइ बसंत आवहु पिय केसरि। देखे फिर फूलै नागेसरि।
तुम्ह बिन नाह रहै हिय तचा। अब नहिं बिरह गरुड़ सौं बचा।
अब अँधियार परा मसि लागी। तुम्ह बिनु कौन बुझावै आगी।

नैन स्रवन रस रसना सबै खीन भए नाँहि।
कौंन सो दिन जेहि भेटि कै आइ करै सुख छाँह॥

[५६३अ]

प्र० १, २—

आछहु का रोवहु पदमिनी। सो रोवै जो होइ बिरहिनी।
पिता तोहार गंध्रप उजियारा। सिंघल दीप जान संसारा।
तुम्ह पदुमावति तिन्ह कै बारी। जेउँ निसि माहँ चाँद उजियारी।
राजा तोर दुख देसहिं देसा। तब मैं भई मलीनी भेसा।
सुसुकि सुसुकि अधिकै सो रोवै। टोटक सौं कुमुदिनि मुख धोवै।
समुझि रोव पदमावति बारी। सो दुख कोइल भुअंगिनि कारी।
अब न रोउ बहुतै तैं रोई। अजन बदन जात है धोई।

देखि तोहार बदन भै मोर रतन रतनार।
जल पलौं(?) गहि धोउ मुख कपट राइ बेटपार॥

[५६३आ]

प्र० १, २—

कुमुदिनि कहा रानि सुनु बैना। जिय तुम्हार देखे मोहिं चैना।
नैन चलहि जनु ओरी धारा। अधिक देखाइ गई बेकरारा।
उरध साँस लै लै चख फेरै। रानी भूलि लागु मुख हेरै।
जस दुख मोहिं किय और न काहू। तैं कहु धाइ कवन दुख धाई।
केहि कारन चितउर बिस बोवा। जहाँ आइ तोर कंत बिछोवा।
तोर दुख कुँवरि कहौं केहि भाँती। भूख न देवस नींद नहिं राती।
तुम्ह तौ नींद सोवहु एक छिना। मोहि जुग बीतै होइ बिहीना।

भूख हरी निद्रा गई तन नहिं धीर सँभार।
अलक अरुझि चख स्याम गै जौं बिसतर बिस झार॥

[५६३इ]

प्र० १, २—

कै तौ हित आपन जे होई। औ घट को दुख बाँट न कोई।

सुनु रे धाइ तैं बहुत बुझावा। जारे पर तू मोहिं जरावा।
भोग भुगुति जिय सबै बिसारा। पिउ गुमान जे कीन्ह निनारा।
भा घटपार अलावलि दीना। सुख सोहाग मान जो छीना।
ढारि आफवित (?) सायर भरा। दारुन साहि कंत मोर हरा।
उन्ह सौं धाइ कहै को पारा। सब उमरन्ह ऊपर बरियारा।
अवर जो लिए जाइ उन्ह पाहाँ। उन बिन लिए आहि को काहाँ।

सबै आस ओहि साँइ का बाउर कहुँ को भोर।
लेत न लागै बार तेहि का रे बहुत का थोर॥

[५६३ई]

प्र० १, २—

चौंकि उठी सुनि कुंभलनेरी। जनु ठग ठगन्ह ठगौरी मेरी।
सुख कुंभल देवपाल है तेरे। चितउर नग है रतन अमोरे।
का भावै मोहिं कुंभलनेरी। मोहि चितउर रतनागिरि केरी।
जा दिन मिलै आइ मोहि राऊ। ता दिन करौं अनंद बधाऊ।
जौं न होति रखवारि निसंखी। कैसे भेस मिलत मोहिं पंखी।
हिएँ सपथि मोहिं गभप केरी। मरौं मरनि होइ कंत कि चेरी।
सौं पापी तैं चंपावति रानी। पंथ देखाव अहा हीरामनि।

नैनन राखौ कुँजलहि अँडहि आगि बुझाइ।
ता दिन पलक फरार चल मेरौं कंत के पाइ॥

[५६३ उ]

प्र० १, २—

का रानी रोवहु मन माहाँ। मेरवहुँ भँवर सदा जेहि छाहाँ।
चितउर महँ जो बसै घटपारा। कुंभलनेर झाँकि को पारा।
जैसा सिंघल दीप तुम्हारा। तैसे कुंभल साजु देवपारा।
राखा तोरि सो शतयन भाँती। सुरँग घरवान लगे चहुँ पाँती।
कोट बरनि नहिं जाइ अपारा। मेरु कनक विधि आपु सँवारा।
सुचैन पुरी आहि सब जोगा। घर घर कामिनि मानहिं भोगा।
जो ओहि ठाँउ पाव बिसामा। पहुरि न आइ मरै सो धामा।

जनु हरिचंद पुरी सोउ गढ़हीं (?) सब हाट।
कनक लेहिं नग बेचा रहहिं बिछाए पाट॥

[५६३ऊ]

प्र० १, २—

का कुमुदिनि तुम्ह पाट सुनावहु। जाहि भोरी जेहि भोरए पावहु।
यह देवपाल कहा मोहिं छाजा। रतनसेनि मोर दुहुँ जग राजा।
पदुमावति मन महँ बिहँसानी। पिव देवपाल तुम कुमुदिनि रानी।
सुनु भावै बिख वाका दूजा। जेहि जो तेहि आन न पूजा।
सो पिव धरहु अनत कर धावौं। जौं घर नाहिं तौ अनत न पावौं।
अब मोहि पिउ के परनि है भरना। आगे करहु धाइ जो करना।
रतन लीन्ह चितउर लेइ देवा। तबहुँ न तजौं मैं ताकी सेवा।

स्रम जल सूखा हेरत मगु भति रे देवस निसि भोर।
नैन सिराने हेरत सखि भूली चंद चकोर॥

[५६३ए]

प्र० १, २—

सुनसि कुँवरि जौ कहा हमारा। देखेउँ मात जो पिता तुम्हारा।
गंध्रपसेनि चँपावति रानी। जेन्ह घर महँ सिंघल सब जानी।
ब्याह कीन्ह जो गवनउ सारा। मही समद तोर चाह सँचारा।
राखु राउ मोर गंधप राऊ। तुम्ह पदुमावति अहहु बटाऊ।
यह चितउर देखउँ मैं तोरा। कुंभलनेरिहिं न पूजै जोरा।
जस लंकापुर रावन राजा। सो देवपाल कुँवर बिधि साजा।
हौं कुमुदिनि जो तुम्हरी धाई। करु मन भंग कि राखु बड़ाई।

गुन गंधप मोर जानै कुंभलनेर देवपाल।
चितउर हरा जो चतुर तो पदुमावति केदार॥

[५६३ऐ]

प्र० १, २—

का कुमुदिनि सुख चैन सुनावहि। बिना नाह मोहिं कछू न भावहि।

जौं रे पाप घट आपु संचारै। सुकृत धर्म कंत सौं हारै।
पलक न मार पलक भारि कंता। बैठे ढाल होइ ढील न संता।
बहुत डेराउँ धाइ मैं राती। मोहिं सौं पाइ गए बिन पाती।
सुनहु धाइ हिय डरहिं डराऊँ। कहाँ तुम्हार हौं कैसे दराऊँ।
अब एह बार लेइ अपना। मोहि करिहै निसि केर सपना।
तोरे कहैं। हौं जे कंत हि भावै। बिना नाह को औगुन लावै।

मोहि भाहि डरपी अधी जेहि लाएउ जिय साथ।
राखौ मान कि करै भँग हौं बिकानि ओहि हाथ॥

[५९३ ओ]

प्र० १, २, द्वि० ४, ५, ६ (प्र० १, २, द्वि० ६ में यह छंद यथा ५९५ अ है)—

जौं पिउ रतनसेन मोर राजा। बिन जिउ जोबन कौने काजा।
जौ पै जिउ तौ जोबन कहे। बिन जिउ जोबन काह सो अहे।
जौ जिउ तौ यह जोबन भला। आपन जैस करै निरमला।
कुल कर पुरुख सिंघ जेहि खेरा। तेहि थर कैस सियार बसेरा।
हिया फार कूकुर तेहि केरा। सिंघहि तजि सियार मुख हेरा।
जोबन नीर घटे का घटा। सत्त के बर जौ हिय नहिं फटा।
सघन मेघ होइ साम बरीसहिं। जोबन नव तरवर होइ दीसहिं।

रावन पाप जो जिउ धरा दुवौ जगत मुह कार।
राम सत्त जो मन धरा ताहि छरै को पार॥

[६०० अ]

प्र० १, २—

चढ़ी धाइ गढ़ चितउर सोई। खूँदत पँवरि तहाँ सो रोई।
आँसू चला रकत कै धारा। चोली भीजि भई रतनारा।
चकित भए नगर सब कोई। पैसत नम जो निकसैं कोई।
कहु जोगिनि तैं बिथा अपानी। माँगे दान देत है रानी।
सोए मुद्रा कि कनक जराऊ। सोएहु अधारी हेरत न पाऊ।

गए चकित चित फिरत न भावा। कै उड़ि आन काहु उपसावा।
थिर नहिं रहति उमगि भरि पानी। कहु जोगिनि काहे बौरानी।

कै रे खसेउ कछु कर तें कै रे बिया किछु होइ।
भँवर भाव का जीय महँ पँवरि देत पग रोइ॥

[६००आ]

प्र० १, २—

अस दुख मोहि कीन्ह अँग दाहू। होइ रिपु कोटि घरै जनि वाहू।
हिरदै आगि नैन जल साँची। तेहि तें फिरौं जोगिनि भै राती।
जिय वरु जात जात जनि नाहाँ। कापहँ हेरौं जाउँ केहि पाहाँ।
पथिक न पावौं मिलै सँदेसा। का भा लाए आए सभेसा।
नाहिं भूख बासर निस हरी। औ बिनु साँस साँच हौं खरी।
रोवत लीन भै अंग अँगारा। ऊभि पवन ते रहि भइ छारा।
जौं रे नाँह नहिं चितउर पावौं। यह तनु डाहि मैं खेह उड़ावौं।

जोगिनि नम पईसी लाए पिउ मग नैन।
जौं चातिक रट लागि थिर नाहिं करहिं ते बैन॥

[६०८इ]

प्र० १, २—

सुनि सो बैन कोई नहिं सोवै। मानुस भूलि पंखि सब रोवै।
रोदन सुनि भा नगर अँदोरा एकै दुही कै पाँडुक बोला।
सद सुनि रोदन करै वह कागा। मरुदुम पहर पहर निसि जागा।
आपु उहाई आग कोकिला। फिरा बौर पै स्याम न मिला।
ईंगुर रूप कीन्ह चख आँसू। हाड़ कंकोरि कीन्ह तनु माँसू।
ऊपर रात भितर तन स्यामा। खोरि खोरि मोहि डाहै कामा।
जेहि रे आगि तरियर त्रिन जरई। सोई आगि मोरे सिर परई।

जरौं मरौं दुख पिय बिन अधिक चहै तन डाहि।
भै परचंड डाह तन टंक न होति भथाहि(?)॥

[६००ई]

प्र० १, २ (किंतु प्र० २ में यह यथा ६०१ अ है)—

सखी एक पदुमावति पाहाँ। तेइँ रे चाह पहुँचाई ताहाँ।
स्याम भँवर कहाँ मालति हेरा। अलिन्ह कीन्ह मालति पर फेरा।
जिवै नाहि बिनु दरसन पाए। चंद चकोर दिस्टि जौ लाए।
एक सब्द सब तंत बजावै। सबै बजाइ आपु पुनि गावै।
गुपुत रहै कोइ देख न बाजा। अस रे ठाट कहि काहू साजा।
पाँच बार एक तंतुहि लागे। एक सब्द पाँचौ उठि जागें।
लै लौकारि जो सरनि सराई। पाँच सब्द समागी गाई।

सबै तार एक ठाट महँ औ लाग फिर जोटि।
सब संवाद सवन सब मोहै फिरि थिर गोटि॥

[६००उ]

प्र० १, २ (किंतु प्र० २ में यह यथा ६०१ अ है)—

पदुमावति जो सखिन्ह सौं कहा। जोगिनि माँगि लेउ जो चहा।
कहहु जाहि धरमसौलै नामा। जहँ सब अतिथि करैं बिसरामा।
पूँछहु जाति भाँति धेवहारा। कहा सो अबहिं कहाँ पग धारा।
काहे बिरह भभूति चढ़ाई। कहु सखि जोगिनि केइ बौराई।
केहि कारन एह लाए भेसू। पूँछहि फिरि फिरि कहु उपदेसू।
कै गँवारि पिव सेव न जानी। कै गिरि हीन दसा सु रिसानी।
की एहि खोरि कि नाह गँवारा। जेहि ते निकसि लाइ मुख छारा।

कौन रूप कै संजम केइ एह देस निकार।
जाइ कहहु जोगिनि तैं फिरि मिह जाइ सँमार॥

[६००ऊ]

प्र० १, २ (किंतु प्र० २ में यह यथा ६०१इ है) —

की रे केस सेंदुर भरि माँगा। चंदन जो छार चढ़ाए अंगा।
बिहँसत दसन सो भा चमकारा। लौक खसी जौ बीज अपारा।
चख सोभित जनु अंबुज धारी। निसि भै जाग नैन रतनारी।

थाम गजोगिरि तासु मयाई। चैस मरुप आदरि अह्वाई।
ध्यान तासु जनु जंगम जती। देखत जैसि जनकजा सती।
सुख फूँ भांट जो तासु मँयारी। सो जोगिनि अरु जनु धनु पारी।
दिस्टि समाधि छाए पिउ पार्टी। जनु पिउ घसै तासु के काहा।

देख फिरे मर्गान किए घँसे तासु कहा पीउ।
भोजन नींद सिथिल की लागि रहै यक जीउ॥

[६००८]

प्र० १, २ (किंतु प्र० २ में यह यथा ६०१ई है)—

देखा जोगिनि चितउर धारी। दहुँ कैसी पदुमावति धारी।
औ तेहि भई मनहि महँ संका। रही तवाइ टेकि करि लंका।
जलहर नैन जो पलक करारा। चल्हक मीन चमकै मद धारा।
चलु जल नैन कपोलन्ह भीजा। छीजा तासु स्याम जेहि रीझा।
अब जोगिनि जिअ अःइ मआरू। कहिसि जाउ पदुमावति मारू।
खनहिं चले खन जिअ भै छोई। खनहिं अपोठ खनहि मरि रोई।
समुझि साहि की बचा कहानी। कैस फिरे जिउ पदुमिनि रानी।

लाइ छार मुख रात तन सकमि चलौं जिअ सोइ।
दरसनि देखों जाइ अब चलि घुमाइ जिअ रोइ॥

[६००ऐ]

प्र० १, २ (किंतु प्र० २ में यह यथा ६०१३ है)—

जोगिनि कहा मँदिल महँ जाऊं। जहँ सूनी पदुमावति ठाऊँ।
मिलौं रहस कै रंग चढ़ाई। करौं सुहार लक गिव लाई।
परसौं तासु नैन भरि पानी। करौं आपु बसि पदुमिनि रानी।
एक बार जौ दरसन पावौं। समुझि तासु कर जोरि मनावौं।
फेरि फेरि मुख भुअम चढ़ावौं। पिय समाद चहुँ ओर सुनावौं।
जापि बिभूतिहि भस्म चढ़ावौं। धै समाधि आगे पगु नावौं।
छार लाइ मुख मस्तर रंगा। पीय जिलाइ जगत मैं मगा।

हेरेउ भुवनि निकुंज धुव औ पंछी सब पाहँ।
होइ मोर गुर चितउर जौं रे मिलावै नाह॥

[६०२अ]

प्र० १, २, द्वि० ४, ५, ६, ७,—

गउ मुख हरिद्वार फिरि कीन्हिउँ। नगरकोट कटि रसना दीन्हिउँ।
ढूँढ़िउँ बालनाथ कर टीला। मथुरा मथिउँ न सो पिउ मीला।
सुरुज कुंड महँ जारिउँ देहा। बद्री मिला न जासौं नेहा।
रामकुंड गोमति गुरुद्वारू। दाहिन कीन्ह कै बारू।
सेतुबंध कैलास सुमेरू। गइउँ अलकपुर जहाँ कुबेरू।
बरम्हावरत ब्रम्हावति परसी। बेनी संगम सीझिउँ करसी।
नीमखार मिसरिख कुरुछेता। गोरखनाथ अस्थान समेता।

पटना पुरुब सो घर घर हाँड़ि फिरिउँ संसार।
हेरत कहूँ न पिउ मिला ना कोइ मिलवनहार॥

[६०८अ]

प्र० १, २—

रोइ रोइ उपमा देइ सो रानी। बादिल त्रिनसौं किहौ घरानी।
दिस्टि तासु लागी भुइँ माहाँ। स्रवद टेरि पदुमावति पाहाँ।
जनि रोवहु रानी दुख भरी। अगिनि आँसु जरिहै सब करी।
तब लगि है रोदन पुनि पाहाँ। जब लहि मिलै न बिछुरे नाहाँ।
हम सब होइ बुझावहिं जीऊ। रोइ सोहाइ न पावहि पीऊ।
जौं सुदिस्टि करिहै करतारा। आवत तेहि न लागै बारा।
जौ सो घरी मिलन की होई। कोढ़ि लेक कोइ रहै न सोई।

कोटि ओट जो होइ तेहि औ दधि बुंद पहार।
किरपावंत क्रिपाल होइ आवत ताहि न बार॥

[६०८आ]

प्र० १, २—

क्रिपा सुनत पौढ़ा जिय रानी। नैन सूख जिमि सोहिल पानी।
धनि दयाल जिन्ह अमर डोलाई। सो दयाल हरि बंदि पठाई।
धनि दयाल धलि राजा छरा। धनि दयाल लंका सो जरा।

घनि दयाल दधि मथी मथानी। औसि विलोइ खार किछु पानी।
किछे तुरुक कीन्ही दुइ जाती। और घर मै कत दूत बराती।
उन्ह ही रतन राउ घनि आवा। उन्ह ही साहि सिर छत्र टरावा।
उन्ह दयाल की बात निरारी। आप अनाह मौ करै कियारी।

मै असतुति पदुमावति सुमिरन के मनमाल।
चख अंबुधि ठरकाइ कहँ रतन मिलावै दयाल॥

[६०८इ]

प्र० १, २—

सुनि दयाल सब सखि विहँसावी। लै आँचर पोछे चखि पानी।
उन्ह का भार दोइ को ग़रू। उन्ह लेखे जग त्रिन जस हरू।
रहै गुपुत परगट सब ठाँईं। का देखौ कोइ रूप गोसाईं।
बरनि न जाइ सुंदरता तासू। पदुमिनि रुकमिनि सो जग दासू।
चंद्रकला सो दरसन पावै। द्रौपदी रवि दिस्टि न आवै।
ओहि कै रूप कोइ लखै न पारैं। ससिहर मसियर त्यौं जिउ सारैं।
अरु जेह ओर गहै कर बारू। पलकहिं धार पलक कर बारू।

उनही जनक दराइ कै फेरि मिलावहि स्याम।
उहै अजोध्या लंकपुर बसि रावन भै राम॥

[६११अ, आ, इ]

द्वि० २ में छंद ६११.३ और '४ के बीच निम्नलिखित सचाइस पंक्तियाँ अतिरिक्त हैं—

हम सेवक तुम्ह दोइ गुसाईं। असतुति कौन करौं कहँ ताईं।
जिनि कछु चिंत करहु मन माहीं। जगमग राज साज सुख छांहीं।
हम जस भीम पाइ कै छारा। तुम्ह परसाद विधि कीन्ह पहारा।
होइ कुसल बलि आवहि सोई। जिहिं आवहि राजा सुख होई।

तुम्ह जिय जौ लहि सेस औ धुवहू अचल अडोल।
माथे छत्र सोहाग का बिहँसि चेरि फल्लोल॥

उलटि बहा गंगा कर पानी। सेवक बार आव जौ रानी।*
हम सेवक कै जानहिं सेवा। सेवा लागि जीव पर खेवा।
यह जिउ नेवछावरि पहिं रानी। जुग जुग जगत राज रजधानी।
भाग सोहाग सदा सुख होई। तोहि सरि होइ न पारै कोई।
सीता राम राज तप भारी। अब सो हाव भाव संसारी।
हम सेवक सेवा कै जाना। सेवा सभै परापति माना।
आयसु श्रैस सीस पर सारा। तुम्ह पायन्ह तर माँथ हमारा।

जुग जुग आव नाथ तुम्ह राज साज सुख भेव।
महाराज घर आवहिं तुम्ह स्वारथ हम सेव॥

पदुमावति असतुति कहि कहा। बोलहु बोल वचन जस चहा।
तुम कहँ दाहिन होइ बिधाता। आवहु जियत होइ मुख राता।
तुही पुरुख पुरुखारथ पूरे। महाबीर रनधीरन सूरे।
जो परकाज लागि कोउ धावा। तेहि काजहिं बिधि आपु पुरावा।
परसुख लागि दुक्ख जो सहा। तेहि दुख अंत सुक्ख धन लहा।
साहस सौं लच्छन सिधि होई। साहस करत न बहुरै कोई।
साहस करत अहो मोहिं ताई। सिधि अब तुमहीं देउ गुसाईं।

साहस जहाँ सिद्धि तहँ लच्छन, देखहु बूझि।
परकाजो पर स्वारथी अमर भए रन जूझि॥

गोरा बादिल दूनउ बीरा। पदुमावति करि कै मनधीरा।
मन सुख जो नहिं दौल (?) चढ़ाई। बिधि प्रसाद घर आवै साईं।
सुनि साईं कर नाम सुहावा। पदुमावति जानहुँ जिउ पावा।

[६११अ[१]]

प्र० १, २, द्वि० ४, ५, ६, ७—

राम लखन तुम्ह दैत सँघारा। तुमहीं घर बलभद्र भुवारा।
तुमहीं द्रोन औ गंगेऊ। तुम्ह लेखौं जैसे सहदेऊ।
तुम्हीं जुधिष्ठिर औ दुरजोधन। तुमहिं नील नल दोउ संबोधन।

---

*यह पंक्ति अन्य प्रतियों में ६०७.७ है, और वहाँ पर तृ० २ में भी है।

परसुराम राघव तुम जोधा। तुम्ह परतिष्ठा ते हिय बोधा।
तुमहि सत्रुघ्न भरत कुमारा। तुमहिं छल्न चानूर सँघारा।
तुम परदुम्न औ अनिरुध दोऊ। तुम अभिमन्यु बोल सब कोऊ।
तुम्ह सरि पूज न बिक्रम साके। तुम हमीर हरिचँद सत आँके।

जस अति संकट पंडवन्ह भएउ भीवँ बँदिछोर।
तस परबस पिउ काढ़हु राखि लेहु भ्रम मोर॥

[६१६अ]

प्र० १, २—

कँसेहु कंत फिरै नहिं फेरे। चितउर आगि परी घनि केरे।
उठे सु धूम नैन करुवाने। चुवहिं आँसु रोवहिं निहँसाने।
भीजै हार चीर औ चोली। रही अछूति कंत नहिं खोली।
भीजहिं अलक चुवहिं गति मंदे। भीजहिं भँवर कँवल रस फंदे।
चुइ चुइ काजर आँचर भीजा। निठुर नाह हँसेउ न पसीजा।
सबै सिंगार भोजि भुइँ चुवा। छार मिला जौं कंत न छुवा।
चला बिछोइ हिए दै डाहू। निठुर नाह आपन नहिं काहू।

रोए कंत न बहुरै तेहि रोए का काजु।
दुहूँ पवाँरे। है सखी माँदर बाजै आजु॥

[६२१अ]

प्र० १, २—

कोपि चला नगसेन कुमारू। भीमहु चाहि बीर बरियारू।
कँवलसेन गढ़ उपर राखे। रहै न मनुहारनि पै राखे।
बिनि बिनि कुँवर लीन्ह बरिवडा। सूर बीर अति बल परचडा।
औ सब कटक कँवल सँग राखा। मूल रहै तौ उपजै साखा।
बत्तिस सहस कुँवर चलबली। जनु उमड़े मैमंत सिंघली।
चढ़ि चंडोल कुँवर दुइ बैसे। प्रति चौडोल तुरै दुइ तैसे।
काज की बेर सिंघ अस गाजहिं। सौ सौ तुरुक सौं एक एक बाजहिं।

जैसे प्रसेद महँ भीजे पदुमावति के चीर।
तेते बान महँ लीन्हे भौंर न छाँड़हिं भीर॥

[६२६अ]

प्र० १, २, द्वि० ६, ७, (तृ० १)—

राजा अगमन दीन्ह चलाई। बादल ठाढ़ खेत भा जाई।
पहुँचे मलिक पीर औ बेगा। नेज बाज औ नाँगी तेगा।
भैया बैठ साँगि कर गहे। चमकहिं खरग माहँ चहचहे।
परी चोट तह चाँसा सारू। बाजहिं दुंद भयावन मारू।
बोलहिं बिरिद दसौंधी भाँटा। जुरे आइ हस्तिन्ह के ठाटा।
बादल कटक फूट तस पारा। बिचलि चला कोइ बाँधनवारा।
साहि पछारै आपुहिं खरा। जाइ न पावै हिंदू धरा।

उमरा खान जाइ जब पहुँचहिं बादल देइ चलाइ।
तब रिसि सौं बगमेल होइ दीन्हेहु साहि धँसाइ॥

[६२६आ]

प्र० १, २, द्वि० ६, ७, (तृ० १)—

बादल पलटि सिंघ होइ गूँजा। भाजि चले हस्तिन्ह के पूँजा।
अगुमन रिसि सौं पहुँचेउ साही। बादल तमकि साँगि सिर बाही।
ढाठर टूटि सीस महँ फूटी। साहि तेग बादिल सब छूटी।
मलिक जहाँगीर अति बलबीरू। सवा सेर कर जाकर तीरू।
मलिक जहाँगिरि बिचि होइ आरा। बादल खरग मलिक सिर मारा।
मलिक गुरुझि सौं बादिल मारा। मलिक वार बोढन सो टारा।
बादिन कीन्ह कटारी घाऊ। मलिक मूभि पकरी करिहाऊ।

दोउ कुटियाइक करि लरे परे धरनि बहु बीर।
बादिल मार्‌यौ मलिक जब झौंकरी परि तब मीर॥

[६२६इ]

प्र० १, २, द्वि० ६, ७, (तृ० १)—

बादिल मलिक जहाँगिरि मारा। परी भीर आपुहि पटतारा।
सिंघ की नाईं बादल घेरा। बाट भई दल की पहुँ ओरा।
अब फेर बादिल बल दूना। राउत गनिअ घाउ जब दूना।

ओड़न रारग छीन कर गहा। जेहि मुग्र धावै कोइ न रहा।
सूर सहस दस कुँअर के संगा। दौरि परे जस दीप पतंगा।
जेउँ सरवर महँ बूँद समाहीं। श्रैम अंनि महँ कुँवर समाहीं।
जस सरदूल देखि गज जूहा। धावहि साहि अंनि सामूहा।

रुंड मुंड मंडित महि गज जूझे असरार।
फर फर सौं अरुझाने धर धर सौं सिरमार॥

[६२६६]

प्र० १, २, द्वि० ६, ७, (तृ० १)—

छूटि नगसेनि सो बादिल छोड़ावा। तुरै आनि धरि बाँह चढ़ावा।
गल गाजे तब दूनउ बीरा। अब जानब को बादिल मीरा।
माहि क सूत सो अति बरबंडा। मुहमद साह धरी भुजदंडा।
गुरु जहँगीर कुँवर कहँ मारा। टूटि कमर तूरिय तेहि धारा।
गिरतेहि कुँवर हना हठ साँगी। निकसि जेब फूटी दुइ आँगी।
खींचत साँगि हाथ रह डांड़ा। कुँवर तमकि तब काटेउ फाँड़ा।
मुहमद साहि तेग असि बाही। बोदन फूटि टूटि सिर राही।

कुँवर हनेउ तूरिय तब जनु चारिउ हने पाउ।
गिरो साहि सुत रन महँ तब जो कहानेउ राउ॥

[६२६७]

प्र० १, २, द्वि० ६, ७, (तृ० १)—

आपु साहि सरजहि लै आवा। सरजैं मुहमद साहि छँड़ावा।
परी मारि अति कठिन अपारा। गरजहिं सूर सूरहिं परचारा।
टूटहिं धार उठहि बहु फीका। सलिता चली सौंन अस धीका।
ठाउँ ठाउँ सब दल भगि रहा। घूमहि धाइ धरनि गहि रहा।
एक तें सीस मीच सो मारहिं। एक ते गहि गहि धरनि पछारहिं।
एकते खरग कंठ महँ देहीं। काटहिं माथ हाथ कै लेहीं।
एक ते उठहिं गिरहिं बिकरारा। एक ते रोस गहैं कर छारा।

एक ते धावहिं रुंड मुंड बिनु उठहिं कमंध असूझ।
है गै नर मिलि एक हुए मासु परे नहिं बूझ॥

[६२६ङ]

प्र० १, २, द्वि० ६, ७, (तृ० १)—

एक ते धावहिं लटकहिं आँतें। एक ते बिह्वल बकतहिं बातें।
एक ते काँख गहे सिर धावहिं। एक ते दुइ फरकतहिं जोवावहिं (?)।
एक ते टूटि टेकि गहि बैठहिं। एक ते मारु मारु कै पैठहिं।
एक ते बैठे बिधुन सरीरा। एक ते लौन चुवहिं जनु नीरा।
एक ते लोटहिं महा भएवना। एक ते गाजहिं भादौं सवना।
एक ते भूम जानू मदमाते। एक ते परे रुहिर रँग राते।
एक ते सीस हँसहिं ठटराई। एक ते परहिं अपछरा आई।

तौ लहि निबहा राजा दिस्टि पए नहिं घोर(?)।
बादिल कुँवर लीन्ह आगे कै जाइ मिला जहँ गोर॥

[६२७ अ आ]

-तृ० २ में ६२७ ४,-५,-६,-७ को बीच-बीच में रखते हुए दो छंदों की अतिरिक्त पंक्तियाँ इस प्रकार आती हैं— -

हठि कै बादल चढ़ै न चला। तब गोरा सिर धुनि कर मला।
मैं पदुमिनि सौं बोलि जो कहा। मैं -आनब राजा जहँ कहा।
मरनौ जूझि परौं एक ठाऊँ। जाइ बचन तौ रहै न जाऊँ।
गोरहिं समदि बादलि गाजा। चला लीन्ह आगे कै राजा।

बादलि तब राजहिं लै कै भा चितउर के बाट।
गोरा गाजि ठाँवँ नहिं सो मैदान सुहाट॥

कुँवर सहस सब गोरा लीन्हे। और बीर बादिल सँग दीन्हे।
गोरा उलटि खेत रन माँडा। जस नायक रन रावत माँडा।
भा परबत सम ठाढ़ सो गाढ़ा। रन कहँ देखि चाउ चित बाढ़ा।
फिरे कुँवर मन किए उछाहू। आगे कहाँ गनै नहिं काहू।
बाँधि हिए सत साता पूरी। खेलि फाग रन चाँचरि जोरी।
लाख लेरिन वह कीन्ह सुराई। एक मतैं भै कुँवर सहाई।
धनि गोरा धनि रावत महा। जा जानहिं जगदेव सौं कहा।

धनि धनि कुँवर सूर सब सुगंधे रन राव (?)।
होइ-सनमुख भै ठाढ़े बेगि आइ दोउ पाव॥

चहुँ दिसि आवा टूटत भानू। अब एहि गोइ भई मैदानू।
भा मुहँचाल चलत सुलतानू। धनि जेइ इनके सब तुरकानू।
दल बादिल अस चला अपूरी। परवत टूटि मिलहिं सब धूरी।
कोई कह फेर कोई डर भारा। धाएउ कटक छतीसौ लारा।
धनि गोरा औ कुवर सहाई। जिहिं टेके एहि अनी सहाई।
भई दुहुँ कटक सनमुख दीठी। गौन न चहै हार कै पीठी।
गहि कै धनुष बान तस मारा। रहे लपकि दूनौ तेहि पारा।

[६२६अ]

प्र० १, २, द्वि० ३, ६, ७—

आजु अँगद होइ रोपौं पाऊँ। बंदि हौं ताहि छड़ैहै ठाऊँ।
आजु दुसहस बाहु बल बाढ़ा। होइ धू अचल खेत महिं ठाढ़ा।
आजु हनुमत होइ मारौं हाँका। रसना सेर सहज जनु ताका।
आजु होइ लंकेसर दस सीसा। मारि साहि कौं घालौं कीसा।
आजु होइ साका बिक्रमजीता। जीतौं साहि अलावदि कीता।
आजु होइ अरजुन भीम भुवाला। भारत माहँ करौं सिव माला।
आजु सुमेर होइ रन कोपौं। उमड़ा समुँद अगस्त होइ रोपौं।

गोरा भौंरा रन चक्कवै रन दूलह मोहि नाम।
आनि बियाहौं दल दलौं सीस सामि के काम॥

[६२६आ]

प्र० २ (किंतु यह प्र० १ में यथा ५१३ अ है)—

देखि कटक नहिं जाइ अपारा। धाए बीर सो कारि जुमारा।
पूरौं चितउर लंक कि नाईं। साका भभीखन राज भवाई।
रावन रतन राम कै खेलौं। सैना सहित समुद होइ पेलौं।
समुद बाँधि परवत पर लीन्हे। नैन लागि यह चितउर दीन्हे।
अब हौं अलादीन चयौं टरौं। पदुमिनि सनि सैरिंधी करौं।

रतन राहु अब सौंह न मोरौं। अलादीन होइ धनुख टकोरौं।
सेना सहित राम होइ धावौं। लंक हेत चित बिलम न लावौं।

इंद्रजीत कहँ लच्छन हौं रावन कहँ राम।
भए भभीखन चेतनि का पावै बिसराम॥

[६३७अ]

तृ० २—

देखत साहि भयो पछितावा। अैस पुरुख कस मारि नसावा।
पुनि सुलतान आयसु सुनि कीन्हा। औ सब कहँ बीरा अस दीन्हा।
जैसे जाइ न पावै राजा। तुरुक रिसाइ पाछि नहिं बाजा।
औ जित कुँवर जियत हैं आछे। ठाढ़ भए बादिल के पाछे।
भा परलौ अस सबहीं जाना। काढ़ा खरग सरग तर आना।
जो जासौं होइ सनमुख भिरा। होइ बगमेल जूझ सो गिरा।
ठाठरि फूटि टूट सिर तासू। जनु सुमेर सौं टूट अकासू।

जाइ न पावै राजा औ बादिल रन राव।
बेगि दुवौ हथियावहु जैसे करत रहाव॥

[६३७आ]

तृ० २—

औ राने जे करहिं तराहीं (?)। ते मोपै तस जाइ न कहीं।
साका कटक टेकि भै ठाढ़े। भै पहार भार लै गाढ़े।
है भै सेन जो कटक मलाई। जिमि सैयद मेदिनि अधिकाई।
जो चह होइ तस खेत न आवा। हिंदू तुरुक जो चह तस लावा।
बाढ़ ते उतरि आनि जो आए। बाजहिं सोइ चले अगवाए।
बादिल लै राजहिं गढ़ बाजा। चितउर गढ़ सो विचित्र(?)सभ साजा।
खरग नवहिं दौवानि दिखानी। परहिं धान जिमि बरसै पानी।

हिंदू तुरुक सु बाजे सनमुख फिरे बिचारि।
लै आयौ बादल घर राजहिं खरग सँभारि॥

[६३७इ]

तृ० २—

बरनौं कोटि गाढ़ गढ़ भारी। बज्रसिला गढ़ लागि केवारी।
अस गढ़ सिरिजा सिरजनहारा। कत्र उतंग तस बाढ़ पहारा।
अगम थाँक गढ़ घेरि सो खाईं। जाकर बहुत घेर गहराई।
चहुँ दिसि खोह परी तस थाँकी। काँपै जीव जाइ नहिं झाँकी।
जो तह परै न निकसै पारा। गढ़ कोट जम ठाढ़ पहारा।
तस विधि बाहन जोरि निरावा। जिसु आए जुरि करहिं बनावा।
अति उतंग साजे परवाजे। दो केवार सब बज्र के साजे।

तस गढ़ गाढ़ा साजि कै रचे बुरुज तेहि ठाउँ।
राज बुरुज का बरनौं जस उत्तिम ओहि ठाउँ॥

[६३७अ']

प्र० १, २, द्वि० ३, (तृ० १)—

चले प्रान गोरा गिउ बाटा। उतरि तुरिय ते धा-जो भाटा।
दलपति राउ भांट कर नाऊँ। जैनराव जाना मत्र ठाऊँ।
धरि गोरा कोरा कै लीन्हा। बिरद बोलि बह अस्तुति कीन्हा।
तुरुक कहै गोरा सिर याटा। मारौं ताहि सीस लहु फाटा।
कोई चाहै पावन छाहीं। दल की पति राखी रन माहीं।
जेहि क सामि सरजा अस जूझै। तेहि कहँ जियन कौन विधि जूझै।
अखतियार सरजा क खवासू। एकै तेग गनै रन तासू।

दब दबाइ दलपति कहँ दौरे लटपटाइ रहे खेत।
सामि काज जूझे दोउ कै राता मुख सेत॥

[६४०अ]

प्र० १, २, द्वि० ६, ७, (तृ० १)—

नागमती अँग माइ न खरी। आइ पाइँ लपटाइ कै परी।
तुमते हम लाखन्ह बर लहा। कनकोई कौड़ी आठ न कहा।
लाख टके कर जो अस होई। बिनु गथ हाथ लेइ नहिं कोई।

बहुरे नैन देखि भै जोती। पानिप बहुरि चढ़ी नग ओती।
बहुरे श्रवन सुनत मधु बैना। बहुरे चाइ चित्त सुख चैना।
बहुरी नीम भूख रस रसा। कुँजरा जगत जानु फिरि बसा।
बहुरे प्रान धास जिमि पावा। बहुरि तुचा पिउ जिउ घट आवा।

अंग अंग सब बहुरा बहुरि भएउ औतार।
तखन्ह सौं (?) माजि कै नैनन्ह ते न उतार।

[६४०आ]

प्र० १, २, द्वि० ६, ७, (तृ० १)—

बादिल गिरिह दुंदुभी बाजा। प्रानमती कर खोडस साजा।
मंगल विरद बरनि कत जाई। हस्ती चढ़े आइ मिह माई।
नेवछावरि काजा सो माता। पहिराए पहिरन सब राता।
कुटुँब सो आइ मिले रहसाता। अंदर कै बैसे बिहँसाता।
अंम्रित पाँच मेले बहु दीन्हा। जो जेहि तेहि क मान तस कीन्हा।
मँदिर सेज बहु भाँति सँवारी। पौढ़े जाइ जहाँ चित सारी।
प्रानमती आरति लै आई। प्रानौ चाहि अधिक जिउ भाई।

गही बाँह बैसारि सेज पर सगद अलिंगन देइ।
अलक भुवंगिनि कर गही अधर अमी रस लेइ॥

[६४०इ]

प्र० १, २, द्वि० ६, ७, (तृ० १) —

बादिल आपु कुँवर भुज पूजा। जै जै भुज पुनि बिक्रम दूजा।
जै जै भुज नमसेनि कुमारा। जिन्ह भुज छतिसौ लाख बिदारा।
जिन्ह भुज गज सूँड़ा फल पेला। जिन्ह भुज बीर परिग काहि मेला।
जिन्ह भुज सँकट छोड़ावा मोहीं। जिन्ह भुज रहे सिंघ रन कोही।
जिन्ह भुज भरत अंग वा कोपी। जिन्ह भुज जाँघ अँगद होइ रोपी।
जिन्ह भुज अँग नित सैन सँवारा। जिन्ह भुज मुहमद साहि पछारा।
जिन्ह भुज साहि अलावलि मोरा। जिन्ह भुज चितउर राज बहोरा।

ते भुजराज गले लै वा भेटे हिरदै लाइ।
कँवलसेनि गहि उर लपटाए आइ गहे जनु पाइ॥

[६४१ग्र]

प्र० १, २, द्वि० ६, ७, (तृ० १)—

खँडित कपोल दसन रस लेई। सुरति माँग वह सुरवि न देई।
फंदे हंस मान कर कदना। नवै न नाए जोबन तरना।
रही समाइ गले जनु माला। महा चतुर वल ग्रति रस बाला।
लागे नख कुच मंत उभस्थल। जेहि डर छपे आइ तजि असथल।
दुग्रौ ग्रँनि सनमुख होइ रचीं। नाभिहि नाभि लाइ जनु मचीं।
रहे लपटाइ गात जनु एकै। दूसर निरखि जाइ नहिं सकै।
परी सो स्वाति बूंद पिव बरसा। तन पलुहा नौतन जग दरसा।

गौने गौनि जो पिउ गए साल रहे हिय बीच।
चुंवक चुँवन सुरति सौं काढ़ि ग्रमी रस सींच॥

[६४४ग्र]

प्र० १, २, द्वि० ६, ७, (तृ० १)—

इहाँ की धार हने देवपालू। बाँधौं वलिहि जो बैठ पतालू।
जौ समुंद रारी दै इ हाथी। लै आवौं कारी जिमि नाथी।
जौ भगि जाइ इंद्र के पीछे। जीतौं सहित ऐरापति पीछे।
जौ इंद्र सहस लौ नैन देखावौ। फोरौं नैन जाइ कहँ पावौं।
सहस बाहु होइ सहसौं भुजा। बाँधौं कहाँ जाइ भजि दूजा।
जौ निसियर होइ दरस सिर धरौ। काटौं रुंड मुंड भुइँ परौ।
अहुठ वज्र होइ बरिसै सारू। होइ अगस्त सोखौं देवपालू।

बरखा जाइ सरद रितु लागै तुरियन्ह परै पलानि।
उवै अगस्त जु जल सुरै सुखै पवन औ पानि॥

[६४४ग्रा]

प्र० १, २, द्वि० ६, ७, (तृ० १)—

गौन सुदिन पदुमावति पासा। नागमतिहिं पिय केर पिग्रासा।
भइ निसि नागमती पहँ आए। नागमति स्वाति बूँद जनु पाए।
बिहँसहिं सम आलिंगन देहीं। पान्हि खँडि अधरन रस लेहीं।

रितक हँसहि हँसि कै कँठ लागा। रितु फरि हँसी सबन्हि सुख लागा।
दुख कहि डरथ साँस मन मागहिं। सामी पास न कबहूँ राँगहिं।
अति आनंद हितु कै पिय बरसा। तनु पलुहा नीतन जग दरसा।
नव जोबन फिरि नइ होइ काया। खोवा रतन फेरि कै पाया।

सब निसिं रंग रहस महँ करवट भएउ बिहान।
प्रात उठहिं असनान कहँ कर बीरा मुख पान॥

[६४४इ]

प्र० १, २, द्वि० ६, ७, (तृ० १)—

पान खात बिहँसत गौ सभा। बैठे रतन मँदिर अठखँभा।
दहिनि भुजा नागसेन कुमारू। बाँईं कँवलसेन बरियारू।
दहिने तेहि ते राउ बादिला। कँवल ते गोरा सुत साहिमला।
भैया बेटा बैठि ओरगाना। उँचगर बिरिद बोल ओहि बाना।
इंद्र सोस भो देखि लजाई। चाँद के निकट तरईं सब आई।
तुरिय जो दे दे सब पहिराए। दस गुन ओरग बगुराए।
बादिल कहँ चौधरिया दीन्हा। औ गोरा सुत कहँ बहु कीन्हा।

दान दीन्ह अगनित अस राँक रहा नहिं देस।
दिस दिन गीत निरत ते भाव आन नहिं भेस॥

[६४४ई]

प्र० १, २, द्वि० ६, ७, (तृ० १)—

एक पहर निसि निरित करावा। सभा बहोरि मँदिर पहँ आवा।
देखि मँदिर पद्मावति केरा। परगट गुपुत जासो मन मेरा।
चित से ध्यान टरै नहिं कैसेहु। चलत खरेहु पुनि बोलत बैसेहु।
तन मन धन पदुमावति जीऊ। जियत के ठौर जानि पिउ पीऊ।
एक बिनती औ पीउ परारा। उतरि सेज सो कीन्ह जोहारा।
कर गहि सेज बैठि लै किया। मुख मोरे कहँ छाँडो पिया।
बिहँसत गाढ़ अलिगंन कीन्हा। मान छूट पर पिय कहँ लीन्हा।

अधर अधर सो उर उरते कटि नाभिहिं नाभि।
चोप खिहुटि अस होइ मिले जो समुझि परै नहिं काभि॥

[६४४ड]

प्र० १, २, द्वि० ६, ७, (तृ० १)—

पिय के समिप पावस रितु आई। घटा गरजि तरपी अति भाई।
स्याम घटा मों वग की पाँती। पहिरे कुसुंभी सोम रँग राती।
कयहूँ हँसहि कंत अँग मोरा। अति सोहाग योलहिं पिव कोरा।
कयहुँ सेज पर वैठहिं जाई। करहिं भरनि तेहि लाग सोहाई।
परत बूँद लागत कस नीके। फूल झरी खेलत जस जीके।
रचि चंदन कहि सेज नचावहि। सुरस विभास मलार ते गावहि।
रीझे घन वरसत असुवाती। नर परवीन की कौन गनाती।

मेह वरिस विरा धारा दीपक वरहिं छँछार।
मिलत सुरति रति वाढ़ै वैसक करहिं अपार॥

[६४४ढ]

प्र० १, २, द्वि० ६, ७, (तृ० १) —

प्रीतम पासु मास जड़ काला। नवल नेह नित जोवन वाला।
हेम के भेंस जनम लिय कामी। सवही सोभ भई अति वामी।
पियहिं पेम मा वालहिं वाला। चयन अधर चख केर पियाला।
जेवहिं पाँच अंम्रित वहु भाँती। पान खाहिं जागहिं सब राती।
खाहिं सुगंध सुवास लगावहिं। सुनहिं नाद और निर्त करावहिं।
सारि सेज फूलन सौं साजहिं। लटपटात सो अधिक विराजहिं।
गात ते अंतर छिनौ न भावै। अंकमालि कै लागि जगावै।

देखव सुनव कहव रस तन मन रही न गत्ति।
भजि पदुमावति रतन भो रतन सो पदुमावत्ति॥

[६४४ए]

प्र० १, २, द्वि० ६, ७, (तृ० १) —

रतन साथ आवौ धुपकाला। अंग अरगजा परम रसाला।
सीतल मँदिर अनूपम वासा। सेत सेज सौं पालक हासा।
सीतल राठा कठै अरु सारँग। धिना हाथ को रहै न नारंग।

रवि ढलिके सीतल अति छाहीं। करहिं कलोल बैठि परछाहीं।
खलहल लेहि लाल औ लाला। खोलि कै पहिरहिं फूलन माला।
पिय तिन तोरि नौलासी दीन्हीं। नारि गूंदि गेंदिरस लीन्हीं।
तैसि निरमली निसि उजियारी। आलिंगहिं फिरि फिरि पिउ नारी।

परम चतुर दोउ परम सुख परम हेतु हितु पीउ।
निति समीप औ हँसि मिलनि पावहिं धनि धनि जीउ॥

[६४४ ऐ]

प्र० १, २, द्वि० ७, (तृ० १)—

राजहिं अवि देखत निव भावा। साँझ होइ तौ निर्त करावा।
औसर पाँच नाच नित होई। नतवत सा भूला सब कोई।
तंति बेतंति धन सिखर बजावहिं। छंद प्रबध धुरंधर गावहिं।
मंठ सरमंठ गीत झनकारहिं। धुरपरु सकर मति औ मारहिं।
षडज रिखभ गंधार जु धमा। धैवत अरु निषाद सुर पँचमा।
नाभि ग्राम तिय कंठ कपाली। एक ताली कठताल अठताली।
सोरह सहस नाद होइ तहाँ। आडव पाडव सपूरन जहाँ।

तउ बाला औ सुरगंध गावै पोत सुदेसी चाल।
नाचहिं तब तिर पाउर थिरकि लेहि मन छाल॥

[६४४ओ]

प्र० १, २, द्वि० ७—

पुरुस नाच नाचहि अति बाँका। नेम मैं होई थिर मन थाका।
ससिहर कला सिंगार बनि अंगा। भूपन भान कला दुपरंगा।
कछनी जटित जराउ जगमगी। रति औ तासु उपमा तरगी (?)।
नखसिख सोभें केरि सँवारी। मधुलितु बास तजो फुलवारी।
नाचहिं नाच बाज गहगहा। देवता ठगि रहे मानुस कहा।
कँवल जानि कुच ऊपर बैसै। बाँधा वास बेधि कर तैसै।
मुख मोती कर चक्र भवाँवहिं। सीस कलस पग नाचत आवहिं।

जस जस सीस चढ़ावहिं याकुल व्याकुल होइ।
साँस साधि ढहि पौन धरि धरि पटिकिन्ह सोइ॥

[६४४ औ]

प्र० १, २, द्वि० ७—

गति रीझे जहँ नाच महँ भला। सो सब करहिं अनूपम कला।
परस परी औ चित औढ़िया। आड़िय अड़अर नाच पीढ़िया।
भैरोचंद नालिचंद नाचहिं। अधर अंग जानहु धरि टाँचहिं।
राधा कान्ह पुलक छंद लावहिं। अधर नारि नाटे सुभ गावहिं।
कटरी गुन संगीत हत जेते। ते गावहिं नाचहिं थातेते।
सुरंग निरित ध्यान जे तहहीं। ताल ध्याइ सब्द सब कहहीं।
उपजहिं तान रंग रँगरंगा। नाचत अति झनखात सुरंगा।

अस औसर निति देखौं मन मोहन बहु भेख।
नायक जैस नचावहिं तस तस नाचहिं सेख॥

[६४४अं]

प्र० १, २, द्वि०६, ७, (तृ० १)—

पदुमावति सो रंग रस मानै। नागमती सु प्रीति बहु ठानै।
पदुमावति कह मैं सब कीना। नागमती कह रंग हम भीना।
जो जैसेहिं सो तैसेहिं मिला। कबहूँ मौन रहै रस खिला।
पुरुप सो बानि पानि अस होई। जेहि रँग मिलै ताहि रँग होई।
राउ रांक कोउ दुखी न देखिय। धरमराज सबही कर लेखिय।
बहुत देवस सुख भूँजेन्हि राजू। नेगी सब चलावै काजू।
कोउ निरित सुख खेल सब भावा। दुख की बात न कोइ सुनावा।

जस दुख देखि साहि बनि विधि सुख दीन्ह अपार।
जेहि कारन कोइ ध्यावै सो पुरवै करतार॥

[६४४अः]

प्र०१, २, द्वि० ६, ७, (तृ० १)—

विधिना सत्रु न सिरजै काऊ। सत्रु न छाड़ै आपन डाऊ।
रतन क सत्रु महा देवपालू। मिटै न कबहुँ सत्रु हिय सालू।
दूती साह पठाए बेगी। जाइ साहि लै गुदरहु नेगी।

चितउर चहूँ ओर असि बाँकी। पूरब ओर ताकि मैनाकी।
तेहि नाकी चढ़ि रतन सँहारौं। साहि के काज पाइ प्रति पारौं।
पदुमिनि पकरि देउँ तौ साँचा। बरम्हा बिस्नु सीव ही बाँचा।
दूनउ कुँवर जियत धरि देऊँ। बादिल सहित प्रतिंगा लेऊँ।

आई साह गढ़ छेकहु बिलम न लावहु नेक।
सैं रनिवास पदुमिनी चितउर तोरि देउँ दँड एक॥

[६४५अ]

प्र० १, २, द्वि० ६, ७,(तृ० १)—

सुभट सुभट सौं महि परचारे। कमनैतहँ कमनैत हँकारै।
साँगि साँगि सौ उठै ठंठारीं। खाँडहि खाँड होइ झनकारी।
कमनैतहँ कमनैत बिदारैं। छुरी छुरी सौं एक एक मारे।
गुरिझ गुरिझ सौ लागे बाजा। जानहुँ तरपि परै रन गाजा।
सिर सिर सौ पर ठेलिक ठेला। बीर बीर सौ पेली क पेला।
सुँडाहल सुंडाहल पेलहिं। गहहिं जाहि ताहि गहि मेलहिं।
कंध कमंध गिरै असरारा। सलिता स्रौन बही जु अपारा।

भएउ महा भारत रन परे सुहृद से बीर।
गीध कराल सियार सब दहि बहि लागहिं तीर॥

[६४५आ]

प्र० १, २, द्वि० ६, ७, (तृ० १)—

महा मसान भयावन परा। स्रौन क सरवर लोथिन भरा।
हा धितिपाल (?) भुजा पवनारू। कया सूखि उलथहिं जेहि भारू।
पुरइन कीच कँवल भौ सीसा। अवध धमंक मंछ बहु दीसा।
लोथिन्ह मंगर गोह उतिराहीं। रथ बोहिथ जनु भौंर भवाँहीं।
केस सेवार आँत बहुं नारा। प्रात के घर बहु पहुप पसारा।
जंबुक खेलहिं चभका चूभा। परहिं भूत लोथिन्ह पर ऊभा।
बोल मसान सो उठै अँदोरा। मारु मारु सुनिए चहूँ ओरा।

भैंरो भूत असनान करि रुद्र बजावहिं घंट।
चरनोदक जोगिनि पियहिं पूजा फंटक फंट॥

[६४६अ]

प्र० १, २, द्वि० ६, (तृ० १)—

नैन उघारि कुँवर हँकराए। दुनौ कुँवर छाती लै लाए।
बादिल और साहिमल बोले। राम नाम लै जीभ उघेले।
आए सब नेगी हँकराए। भैया बेटा ओरगान बोलाए।
कँवलसेनि कहँ टीका दीन्हा। भार सबै नगसेन सु लीन्हा।
तुम्ह नगसेन पिता के ठाऊँ। मोहि गए रहिहौ एक भाऊँ।
राज सरज सो सौंपौ बादिला। किहेहु नेति जस कीन्ह आदिला।
भरि भरि नैन सबै कँठ लावा। दिया पान बाहर बहुरावा।

बोले सब रनिवासौ दुऔ रानी कँठ लाइ।
सोइ करहु रहै जस जैसे हम तुम्ह साथहिं जाइ॥

[६४७अ]

प्र० २—

नागमती पदुमावति कहा। तुम्ह सो सब पावा जो चहा।
तुम्ह सामी परदेस सिधारू। अब हम कौन जु करैं बिचारू।
जौ तुम्ह तौ हम भाव सिंगारा। तुम्ह बिनु सब अलँकार भै छारा।
जौ राजा तुम्ह कह अस बानी। बिना सँग जीऔं क्यूँ धनी।
नागमती रोदन अनुसारा। घर घर नगर भएउ भनकारा।
रोवै मालिनि गाँथे फूला। बरइन होइ अधिक तन सूला।
रोदन करहिं आइ सब चेरी। अब एहि मँदिल करै को फेरी।

रोवैं सबै जु नारी घर घर भा भनकार।
भरैं सबै लो फूल सो कहहु कहै को पार॥

[६४७आ]

प्र० १, २ : (किंतु प्र० १ में यह यथा ६५० आ है)—

सब राजा मिलि आइ पुकारी। निस्चैं यह राजा जे सिधारी।
आवहिं जाहिं सब बोध कराहीं। रानी अंध बहिर भै जानी।
यह जग ऐसा आहि बिहूना। जैसे मिलै पानि महँ चूना।

कोइ आपन जग कहै न कोई। जौ बिसाल कर मानिक होई।
पानी क बूँद अैस परिवारा। रतन करहि याहर तेहि बारा।
कागज पानी जैसे मेराए। गा हेराइ खोजत केहि पाए।
निस्चै एहि जग सिद्धन तजा। दिस्टि फिरी पै आइ न भजा।

कोइ आवहिं कोइ जाहिं फिरि भौभँग नैन चढ़ाइ।
आए बोधै ताहि कहँ चले आपु समझाइ॥

[६४७इ]

प्र० १, २ (किंतु प्र० १ में यह यथा ६५० इ है)—

सब रानिन्ह जनु राहु गरासा। अरु झूमरि रोवहिं एक पासा।
भरि भरि कूक रुहिर छिहरानैं। एक आपु सँग पाँच नचावैं।
आप आपु महँ पाँचौं रोई। ई नायक हम पाँच बिछोई।
हम पाहुन इन लेसे जाना। भोर भए सो कीन्ह पयाना।
बहुत बुझाइ बुझावहिं रानी। पदुमावति भइ गूँगि देवानी।
भोजन निंद्रा तासु क हरा। है गै साँच जे नर कै करा।
रतन छड़ा रतनारि रिमाहा (?)। पीय पदारथ पानै कहा।

भएउ जनक रिपु रावन चितउर सो देवपाल।
छया जाइ चित होइ रिपु भएउ रतन कहँ काल॥

[६४७अ१]

द्वि० १, तृ० १—

आजु सीस की टरि गइ रती। आजु नागमति होइहि सती।
आजु सो उर बन जग अँधियारा। आजु कँवल उकठैं भै छारा।
आजु इंद्र इंद्रासन खसा। आजु सूर कैलासहिं बसा।
आजु चतुर्भुज चकता करौं (?)। आजु चलाए सदना सरौं (?)।
आजु चला बहु ठाहर छाँड़ा। आजु समुंद्र भएउ जल गाढ़ा।
आजु सुमेर डोल भा हाला। आजु तयार होइ घौ काला।
आजु गगन जनु चाहै फटा। आजु पतन औ होइहि कटा।

आजु महा परलौ भा आजु जगत जनु मेंट।
आजु रतन धरती पर परा आजु भइ भेंट॥

[६४८ अ]

प्र० १, २, द्वि० ६, ७, (तृ० १) : किंतु (तृ० १) में यह छंद यथा ६५० अ है—

परे जु कुँवर सहस सँग जूझी। चली सती किछु परै न बूझी।
खुले मूँड बहु सेंदुर सीसा। पहिरन रात सबै जग दीसा।
सेंदुर भरे अलक जनु नागिनि। सेस के मुए होइ सहगामिनि।
कजरी माँझि परी जनु आगी। कै सुमेर दिवारि जनु लागी।
दुंद मृदंग झाँझ बहु बाजहिं। नाचत चलहिं ते अधिक बिराजहिं।
कै जु रतन जोगी होइ चला। सब सिर मारि रोइ कर मला।
प्रीति बचा प्रति सिर पहुँचावौं। ओहू जनम सामी कँठ लावौं।
आस पास (जो ?) सर रचे भा झार चौ सुर नाथ(?)।
मुहमद जन्मे एक सग मरत गमेउ लै साथ॥

[६५० अ]

प्र० १, २, द्वि० ७, (तृ० १) : (प्र० १ में दो छंद यहाँ और अतिरिक्त हैं, किंतु वे ऊपर के छंद ६४७ आ, इ हैं)—

जरी जु पिउ के रँग रस राती। जेउँ जेउँ झार लाग तेउँ राती।
राते जोगी जती संन्यासी। राते पुहुप ओप बनबासी।
राते कुसुम मँजीठ महावर। राते नैन पेम रँग बाउर।
राते एँगुर सेंदुर रोईं। राते हेम हंस की जोईं।
राते मेघ भानु मंसूरू। राते रायमुनी तमचूरू।
राते ठौर कंठ जहँ वाईं। राती बीर बहूटि सुहाईं।
राते धनुख और बनसपती। राते बिंब प्रेम की याती।
राते केस हरदि मिलि घूला पीक परेवा नैन।
राते अस्व सिंघली हाथी गेरू रीझहिं मैन॥

[६५१ अ]

प्र० १, २, द्वि० ७, (तृ० १)—

माटी धूरि ठौर भौ कटक सबै बौरान।
जेहि देखि असेहि (?) नठा गाठ साहि सुलतान॥

माटी इहै जगत चौरावा। माटी इहै परम पद पावा।
माटी इहै जोति परगटी। माटी इहै लागि सब ठटी।
माटी इहै हंस सौं खेला। माटी इहै जु चेटक मेला।
माटी इहै रूप रँग पावा। माटी इहै जु अलख लखावा।
माटी इहै दहूँ जग राजा। माटी इहै जु करत न छाजा।
माटी इहै रचा सो रचा। माटी इहै नचाव सो नचा।
माटी इहै पेम पै लहा। माटी इहै कहाउ सो कहा।

[६५१आ]

प्र० १, २, द्वि० ७, (तृ० १)—

माटी आपु आपु माटी होइ रहा सो पावै जोति।
माटी · निकट निरंतरि माटी आन न होति॥

साहिमल्ल राजहिं लै जाही। हौं बादिल गढ़ छाँड़ौं नाहीं।
चांदपाल सुत सब परिवारा। तोहंहिं भार नगसेन कुमारा।
रामपाल देवपाल क वेटा। आइ साह पहँ लोग समेटा।
कबहूँ अँसु न पैहहु पारी। जाइ लेहु कुंभल गढ़ मारी।
उतरि कै दौरि जाइ गढ़ घेरा। भएउ सार बाजा चहुँ फेरा।
चढ़ा साहिमल लै नगसेनी। रानिन्ह चली साजि कै सेनी।
पूत सपूत गने ते साँचे। टाटक बैर लिए रिपु नाचे।

[६५१इ]

प्र० १, २, द्वि० ७ (तृ० १)—

रैनि छूटि जौहर भा जूझा सुत सिसुपाल।
हस्ति घोर गढ़ पावा औ पावा धनपाल॥

ढोवा कीन्ह साहि गढ़ छेंका। धनि बादिल सँमुहा होइ टेका।
अबला बली अलावलि साही। सहसा बादिल गनै न ताही।
खोली पँवरि जुझाऊ बाजहिं। हाँकहिं बीर सिंध जनु गाजहिं।
लरहिं निसंक सामि के काजा। टाहत ।? सुभट दोहाई राजा।
बरसै आगि कोट चहुँ फेरा। जरि भसमंत होइ जहँ हेरा।
मतवारे अस गिरि ढहराहीं। कचरे जाहिं सो थिर न रहाहीं।

जूझहिं तुरुक करहिं गोहराऊ। चाँपत जाहिं पगहिं पग पाऊ।

[६५१ई]

प्र० १, २, द्वि० ७, (तृ० १)—

गढ़ समुंद औ सार की बूड़ लहरि अपार।
निकसहिं धाइ समाहिं फिरि बोरहिं लोहैं धार॥

चपरि साह ढोवा कै देखा। जूझा कटक बहुत अनलेखा।
आपुहिं साह अलंगै बाँटी। चहूँ ओर गढ़ घेरा घाटी।
लागे रहहिं खान औ मीरा। बाजै सार परैं जहँ भीरा।
सबहिं माँग करकच कर साजा। कोपा कटक धरी मन लाजा।
सिगरी रैन सो गरगज बाँधहिं। होत बिहान कमानै साधहिं।
गोलन्ह मारि देइँ ओहि ढाही। किलकिलाइ औ खीझै साही।
रात दिवस बाजत रह सारू। रहै सो जिहि राखै करतारू।

[६५१उ]

प्र० १, २, द्वि० ७, (तृ० १)—

बाजैं दुंद भयावन होइ महा रन मार।
धनि ओहि सूर सराहिए जो अँगवै अस भार॥

खानजहाँ सरजा कर बेटा। लोह लंगर सिरमौर अमेटा।
जहाँगीर कर अजमत खानू। रन महँ तपै जेठ कर भानू।
महमद साह केर वह जोद्ध। लागे जाइ बिखम गढ़ पोद्ध।
भीमसेन नेगी जेहि ओरा। तिन्ह सो बिखम परा कै जोरा।
करहिं टूक दुइ तुपक की चोटा। लोटहिं तुरुक जो करहिं खसोटा।
सब दिन साहि फिरै चहुँ हेरा। चाँपि लीन्ह चितउर गढ़ घेरा।
लाग कटक गढ़ आव न आँटी। जस लपटाइ जाइ गुर चाँटी।

[६५१ऊ]

प्र० १, २, द्वि० ७ (तृ० १)—

भा गरगज जस अजगर ठाढ़ भएउ सिर काढ़ि।
भएउ कोट पर खलभलि लील चाह गढ़ बाढ़ि॥

बादिल भीमसेन हँकराए। बेटा भैया सबन्हि बोलाए।
बरिस देवस लगि हम गढ़ राखा। भा गढ़ बिचल भार जस राखा।
ठाहर ठाहर जौहर साजहिं। करहिं भगति रामहिं अवराधहिं।
भानमती बादिल के काना। तजि पतिबरता भाउ न आना।
होत अग्याँ तेहिं जौहर सजा। चंदन अगर मलय अरगजा।
सरजा जौहर चाँचरि जोरी। फागु खेलि कै लावहिं होरी।
ऐसन दाउ बहुरि कब पाउब। बहुरि कि एहि जग खेलै आउब।

[६५१८]

प्र० १, २, द्वि० ७, (तृ० १)—

पुरखन खरग सँभारा मेहरिन माँझ अवास।
खेलहिं महा अनंद सों रानी ओहि रनिवास॥

बाजहिं ढोल मृदंग पखाउज। बाजहिं डफ सुरमंडल आउझ।
बाजहिं बंस उपंग किनारी। बाजहिं जंत्र पिनाक बिसारी।
बाजहिं ताँब झाँझ झनकारा। दुंद भेरि करताल औ थारा।
बाजहिं सहनाई बाँसुरी। गावहिं कोकिल कंठ जा सुरी।
अति सुंदर खोडस रस बाला। भीगी पहिरे सोंधे माला।
छिटकहिं कुसुम उड़ावहिं बूका। चाँचरि गढ़ मों चहुँ दिसि फूका।
नारि पुरुख गलबाहीं जोटी। सहजेहिं माते लोटहिं लोटी।

[६५१ऐ]

प्र० १, २, द्वि० ७, (तृ० १)—

खेलहिं सबै अनंद सौं रात मात कै भेस।
गाइ नाचि गढ़ समहिया रहहिं सो जगत अदेस॥

एक मासु लगि चाँचरि पारी। सब कोइ खेलहिं आपनि पारी।
कोई पुरुख जूझि कै आवहिं। सोइ आइ खेलहिं औ गावहिं।
सोई आइ बजावहिं सारू। सोई आइ देखहिं झनकारू।
सोइ उहाँ ढाहि अरि आवन। सोई आइ देख मन भावन।

बरस एकादसि जय जब कीन्हा। खेलत हँसत दान बहु दीन्हा।
कै असनान दंडवत पूजा। बाजे सबद संत गढ़ गूँजा।
पुरुख कै चरन माथ लै धरहीं। कूदहिं जाहिं माझ सर परहीं।

[६५१ओ]

प्र० १, २, द्वि० ७, (तृ० १)–

अगिनि परी चितउर महँ जौहर भा पछिराति।
खोलि दीन्ह दरवाजा भा ढोवा परभाति॥

चढ़ि गजराज साहि गज पेला। सूझ न गगन सरग सौं खेला।
बादिल गढ़ बाहेर होइ लीन्हा। भीमसेन मुख ऊपर दीन्हा।
जेहि कहँ धरि आगे कै लेहीं। खिनु एक लरहिं पीठि पुनि देहीं।
भारत गए जाहिं जहँ ताईं। चले चिकारि गज सूँड छिपाईं।
'बादिल ऊपर मुरवैं पीठी। भई साह सौं सनुँही दीठी।
साहि ताकि कै आपुन धावा। बीचहिं महिमा साह उठावा।
भई कारि अस कठिन अपारा। मेरु पहार जाइ नहिं टारा।

[६५१औ]

प्र० १, २, द्वि० ७, (तृ० १)–

भएउ बहुत संग्राम भयावन भई बहुत उरफेरि।
कै कलबल बहु बाढ़े जाइ लीन्ह गढ़ फेरि॥

जातहिं जाइ हने सब घोड़ा। आपुन साह कीन्ह पग जोरा।
कोइ न काहू पाछे परहीं। *लरहिं साथ पुनि सँग एक मरहीं।*
साहि क सैन निकट गढ़ बाजा। काहू पहँ न चपै दरवाजा।
हुकुम भया छाँड़हु सब घोड़ा। चढ़ि गरगज कूदहु चहुँ ओरा।
कूदा खान' जहाँ बर बीरा। कूदा अजमति खाँ रनधीरा।
कूदा महमद साहि बरिवंडा। भीमसेन सौं माजा खंडा।
भीमसेन भै कीचक मारू। भीमसेन अँगएउ बर भारू।

[६५१अ]

प्र० १, २, द्वि० ७, (तृ० १)–

भएउ जूझि बादिल सौं पँवरहि ढहा न जाइ।
तुरुक पैठ घर भीतर लीन्ह मँदिर तब आइ॥

दौरहिं जिधरि ओकर(?)सिर काढ़े। परि भरहरि कोइ रहै न ठाढ़े।
महा मल्ल टोडर बादिला। भएउ जुद्ध जस हमजा आदिला।
अलह अलह होइ रामहिं रामा। कहि दौरहिं जूझहिं संग्रामा।
तुरुक मारि दीन्हा गढ़ बाहर। परी लोथ कोइ रहै न ठाहर।
भीमसेन जूझा जहँ बाँका। परा कुँवर सहसा केतु चाँका(?)।
घनि बादला मींचु अस काँधी। साहि सैन सो परा सो आँधी।
जूझे कुँवर अगनित असूझा। बादिल जहाँ पँवरि होइ जूझा।

[६५२अ]

प्र० १, २, (तृ० १): किंतु (तृ० १) में यह छंद यथा ६५१अ है —

पाछे जूझि मुए सब संगी। जस सौं लागि सीतल आँगी।
जस कहँ प्रान देत नहि. बारा। जस कहँ जाइ समुंदहिं पारा।
जस कहँ दुख सहै सो भानू। जस कहँ करिय करिय तप दानू।
जस कह सहै सो नीका लागा। जस कहँ प्रान दुख जो भागा।
जस कहँ साथ मीत संसारा। जस कहँ धरम उतारै पारा।
जस कहँ नेम धरम जो करै। जस कहँ कबहिं जोहरां परै।
जस कहँ मन मानुस देहिं तापा। जस कहँ राम नाम मन जापा।

जस चमकहिं देहिं तारन निस्छल अचल सँभार।
जस सौं प्रभु जग राखा जस सों कर संसार॥

[६५२आ]

प्र० १, २, (तृ० १)–

जस जग महँ जेहि कर सो भला। कहाँ सकबँधी गोरा बादिला।
कहाँ सो राम औ सीता सती। कहाँ त्रिनैन कहाँ गिरजती।
कहँ लोरिक कहाँ चाँदा मैना। कहँ अनिरुध ऊखा कहरौना।

कहाँ सो राजकुँवरि मिरगावति। कहँ राजा नल कहाँ दमावति।
कहाँ भर्तहरि कहाँ सो पिंगली। कहाँ सो रावन कहाँ चंद्रावली।
कहाँ सो अरजुन कहाँ द्रौपदी। कहाँ सो रावन कहाँ मँदोदरी।
कहाँ सो बलि छू,कहाँ चंपावति। कहाँ माधौनल कहाँ दमावति।

कहाँ जुधिष्ठिर धरमवत कहाँ प्रान अंगारमति।
कहाँ जुरजोधन मानमति कहँ बिक्रम सपनावति॥

[६५२५]

प्र० १, २, (तृ० १)—

सहनापै सम रतन न आना। जेहि बिनु रॉक बिरद होइ थाना।
कहाँ केस नग बिसहर कारे। देखत जगत माहँ हत्यारे।
कहाँ अस नैन तीख अनियारे। पैग न चलत सैन सर मारे।
कहाँ सो भौंह धनुख जेहिं तानहिं। बरछे रहँ बहुत हठ मानहिं।
कहाँ अमिय पान अधर सो सूरा। कहाँ सो अंमृत हरै जु दूखा।
कहाँ सु दसन बीजु कै पाँती। कहाँ सो गाढ़ अलिंगन राती।
कहाँ कपोल भोल आरसी। कहाँ सो बदन सुधारस बासी।

मंडरीक कुच अबला बली लिए काम की लूटि।
डरहु न गाढ़ अलिंग ते मत निसरै हिय फूटि॥

[६५२६]

प्र० १, २, (तृ० १)—

कहँ कुच तीख अनी अलि पीना। कहाँ नितंब बिसा कटि छीना।
कहँ गजचाल चलत गरगती। कहँ जोबन उनमद मदमती।
कहँ कोकिल कँठ बचन रसाला। कहाँ कटाछ सो बिहसन बाला।
कहँवा कनक लता सो लागू। कहाँ लिलाट दिपै मनि भागू।
कहँ मन गरब सो रूप निरासा। कहँ चतुराई मन चित बासा।
कहाँ छत्र दीरी पर पाया। कहाँ दुवादस खोडस भाया।
कहँ जोबन जस सुरधुनि धारा। बढ़त घटत कछु लागि न बारा।

मुहमद जैसा नगर बसि होइ उजार रह चीन्ह।
तस तरुनापै तन तजा जुरा जो खारारि कीन्ह॥

[६५३ अ]

प्र० १, २, द्वि० ७, (तृ० १)—

तुम्ह करुनामै दीन दयाला। आप पवनपति अति प्रतिपाला।
आएसु भएउ परम निधि भारी। देखौं तोहि जेहि माह चिन्हारी।
अरस कहै मैं आहि अजीमा। मोहि छाँड़ि किहि देइ करीमा।
कर सीवै से जिय महँ करी। तेहि गुमान अभिमत चित धरी।
जौं न समाउ होत असमाना। तेहि के ऊपर जानि गुमाना।
एहि धरती कछु मन महँ आना। उतर देइ चुकी(?)चित केहि माना।
वेचारगी चहूँ दिसि भाई। जौं मसु रतन खिलाफत पाई।

पंचरसी कर सलपटा मानुस लीन्हो दौरि।
पान पुहुप सिर राखौं जौ अग्यां होइ तोरि॥

[६५३आ]

प्र० १, २, द्वि० ७, (तृ० १)—

ऐ जगदीस जगत गुरु मेरे। मुहमद चरन गहे दृढ़ नेरे
ऐ पूरब प्रभु तू पै पूरे। मानुस कौन बात कहँ झूरै।
ऐ सकती सकता सब बिधी। मारि नरेस दीन्ह रँक सिधी।
ईसुर ईसुर तै पै ईसा। दानी तू जग मंगन कैसा।
अंतरजामी घट तू माहाँ। ऐ नटवर सब तोही छाहाँ।
ऐ करतार तुही करतारा। तु ही करै भवसागर पारा।
ऐ दयाल किरपाल गोसाईं। अपराधिन्ह तू बकसहि साईं।

चिरघिन पापी ऊपकारी मोहिं आस सब ठाँउँ।
नित हाँके जस काँट महँ मुख आवै तोर नाउँ॥

[६५३इ]

प्र० १, २, (तृ० १)—

रे किंचित अपराधी देवा। होइ प्रसन्न मानहि मोरि सेवा।

कर जोरे भुइँ लाए सीसा। राति दिवस मागौं जगदीसा।
जियतहिं मुए आस बिधि तोरी। तू बिरद रसना लागी मोरी।
जियतहिं मुएँ लेत ओहि नामू। खुदा एक मुहमद मोर कामू।
यह जो कछु मोमों कहवावा। मैं न कहा तुम सौं सब पावा।
कद के महमद होत कबूलू। जौ लहि जगत सो वौ लहि मूलू।
कलमा कहते तजौं परानू। मुख राता कै चलौं निदानू।

मुहमद मुहमद सरनि गहि डिगहि न मन ते सोइ।
बिधि किरपा कीनिहु जुगुति जौ मन महँ सो होइ॥

अ ख रा व ट

[१]

गगन हुता नहिं महि हुती हुते चंद नहिं सूर।
अैसेइ अंधकूप महँ रचा मुहम्मद नूर॥

साईं केरा नावँ हिया पूर काया भरी।
मुहमद रहा न ठाँव दूसर कोइ न समाइ अब॥

आदिहु तें जो आदि गोसाईं। जेइँ सब खेल रचा दुनियाईं।
जस खेलेसि तस जाइ न कहा। चौदह भुवन पूरि सब रहा।
एक अकेल न दूसर जाती। उपजे सहस अठारह भाँती।
जौ वै आनि जोति निरमई। दीन्हेसि ग्याँन समुझि मोहिं भई।
औ उन्ह आनि बार मुख खोला। भइ मुख जीभ बोल मैं बोला।
वै सब किछु करता किछु नाहीं। जैसे चले मेघ परछाहीं।
परगट गुपुत बिचारि सो बूझा। सो तजि दूसर और न सूझा।

कहौं सो ग्याँन ककहरा सब आखर महँ लेखि।
पंडित पढ़ि अखरावटी टूटा जोरेहु देखि॥

हुता जो सुन्न-म-सुन्न नाँव ठावँ ना सुर सबद।
तहाँ पाप नहिं पुन्नि मुहमद आपुहि आपु महँ॥

[२]

आपु अलख पहिले हुत जहाँ। नाँव न ठाँव न मूरति तहाँ।

पूर पुरान पाप नहिं पुन्नू। गुपुत ते गुपुत सुन्न ते सुन्नू।
अलख अकेल सबद नहिं भाँती। सूरज चाँद दिवस नहिं राती।
आखर सुर नहिं बोल अकारा। अकथ कथा का कहौं बिचारा।
किछु कहिए तौ किछु नहिं आखौं। पै किछु मुहँ महँ किछु हिय राखौं।
बिना उरेह अरंभ बखाना। हुता आपु महँ आपु समाना।
आस न बास न मानुस अंडा। भए चौखंड जो ऐस पखंडा।

सरग न धरति न खंभमय बरम्ह न बिसुन महेस।
बजर बीज बीरौ अस ओहि न रंग न भेस॥

तब भा पुनि अंकूर सिरजा दीपक निरमला।
रचा मुहम्मद नूर जगत रहा उजियार होइ॥

[३]

ऐस जो ठाकुर किय एक दाऊँ। पहिले रचा मुहम्मद नाऊँ।
तेहि के प्रीति बीज अस जामा। भए दुइ बिरिछ सेत औ सामा।
होतै बिरवा भए दुइ पाता। पिता सरग औ धरती माता।
सूरुज चाँद दिवस औ राती। एकहि दूसर भएउ संघाती।
चलि सो लिखनी भइ दुइ फारा। बिरिछ एक ऊपनी दुइ डारा।
भेंटेन्ह जाइ पुन्नि औ पापू। दुख औ सुख आनँद संतापू।
औ तब भए नरक बैकूँठू। भल औ मंद साँच औ झूँठू।

नूर मुहम्मद देखि तौ भा हुलास मन सोइ।
पुनि इबलीस सँचारेउ डरत रहै सब कोइ॥

हुता जो एकहि संग हौं तुम्ह काहे बीछुरा।
अब जिउ उठै तरंग मुहमद कहा न जाइ किछु॥

[४]

जौ उतपति उपराजै चहा। आपनि प्रभुता आपु सौं कहा।
रहा जो एक जल गुपुत समुंदा। बरसा सहस अठारह बुंदा।
सोई अंस घट घट मेला। औ सोइ बरन बरन होइ खेला।
भए आपु औ कहा गोसाईं [illegible] नावहु स[illegible] दुनियाईं।
आने फूल भाँति

जिया जंतु सब अस्तुति कीन्हा। भा संतोख सबै मिलि चीन्हा।
तुम्ह करता बड़ सिरजन हारा। हरता धरता सब संसारा।

भरा भँडार गुपुत वहँ जहाँ छाँह नहिं धूप।
पुनि अनबन परकार सौं खेला परगट रूप॥

परै प्रेम के झेल पिउ सहुँ धनि मुख सो करै।
जो सिर सेंती खेल मुहमद खेल सो प्रेम रस॥

[५]

एक चाक सब पिंडा चढ़े। भाति भाँति के भाँड़ा गढ़े।
जबहीं जगत किएउ सब साजा। आदि चहेउ आदम उपराजा।
पहिलेइँ रचे चारि अद्वायक। भए सब अदवैयन के नायक।
भइ आयसु चारिहु के नाऊँ। चारि बस्तु मेरवहु एक ठाऊँ।
तिन्ह चारिहु कै मंदिर सँवारा। पाँच भूत तेहि महँ पैसारा।
आपु आपु महँ अरुझी माया। अस न जानै दहुँ केहि काया।
नव द्वारा राखे मँझियारा। दसवँ मूँदि कै दिएउ केवारा।

रकत माँसु भरि पूरि हिय पाँच भूत कै संग।
प्रेम देस तेहि ऊपर बाज रूप औ रंग॥

रहेउ न दुइ महँ बीचु बालक जैसे गरभ महँ।
जग लेइ आई मीचु मुहमद रोएउ बिछुरि कै॥

[६]

उहँई कीन्हेउ पिंड उरेहा। भइ सँजूत आदम कै देहा।
भइ आयसु यह जग भा दूजा। सब मिलि नवहु करहु एहि पूजा।
परगट सुना सबद सिर नावा। नारद कहँ बिधि गुपुत देखावा।
तू सेवक है मोर निनारा। दसईं पँवरि होसि रखवारा।
भइ आयसु जब वह सुनि पावा। उठा गरब कै सीस नवावा।
धरिमिहि धरि पापी जेहि कीन्हा। लाइ संग आदम के दीन्हा।
उठि नारद जिउ आइ सँचारा। आइ छींक उठि दीन्ह केवारा।

आदम हौवा कहँ सृजा लेइ घाला कैलास।
पुनि तहँवाँ ते काढ़ा नारद के बिसवास॥

आदि फिएउ आदेम मुहाहिं तें अस्यूल भए।
आपु करै सब भेस मुहमद चादर ओट जेउँ॥

[७]

का-करतार चहिय अस कीन्हा। आपन दोख आन सिर दीन्हा।
खापनि गोहूँ कुमति भुलाने। परे आइ जग महँ पछिताने।
छोड़ि जमाल जलालहि रोवा। कौन ठाँव तें दैउ बिछोवा।
अंधकूप सगरउँ संसारू। कहाँ सो पुरुस कहाँ मेहरारू।
रैनि छ मास तैसि झरि लाई। रोइ रोइ आँसू नदी बहाई।
पुनि माया करता कै भई। भा भिनुसार रैनि हुटि गई।
सुरुज उए कँवल दल फूले। दूवौ मिले पंथ कर भूले।

तिन्ह संतति उपराजा भाँतिन्ह भाँति कुलीन।
हिंदू तुरुक दुवौ भए अपने अपने दीन॥

बुंदहि समुँद समान यह अचरज कासौं कहौं।
जो हेरा सो हेरान मुहमद आपुहि आपु महँ॥

[८]

खा-खेलार जस है दुइ करा। उहै रूप आदम अवतरा।
दूहूँ भाँति तस सिरिजा काया। भए दुइ हाथ भए दुइ पाया।
भए दुइ नयन स्रवन दुइ भाँती। भए दुइ अधर दसन दुइ पाँती।
माथ सरग धर धरती भएऊ। मिलि तिन्ह जग दूसर होइ गएऊ।
माटी माँसु रकत भा नीरू। नसैं नदीं हिय समुँद गंभीरू।
रीढ़ सुमेरु कीन्ह तेहि केरा। हाड़ पहार जुरे चहुँ फेरा।
बार बिरिछ रोवाँ खर जामा। सूत सूत निसरे तन चामा।

सातौं दीप नवौं खंड आठौं दिसा जो आहिं।
जो बरम्हंड सौ पिंड है हेरत अंत न जाहिं॥

आगि बाउ जल धूरि चारि मेरइ भाँडा गढ़ा।
आपु रहा भरि पूरि मुहमद आपुहि आपु महँ॥

[९]

गा- गौरहु अब सुनहु गियानी। कही ग्याँन संसार बखानी।
नासिक पुल सरात पथ चला। तेहि कर भौंहैं हैं दुइ पला।
चाँद सुरुज दूनौ सुर चलहीं। सेत लिलार नखत झलमलहीं।
जागत दिन निसि सोवत माँझा। हरख भोर बिसमय होइ साँझा।
सुख बैकुंठ भुगुति औ भोगू। दुख है नरक जो उपजै रोगू।
बरखा रुदन गरज अति कोहू। बिजुरी हँसी हिवंचल छोहू।
घरी पहर बेहर हर साँसा। बीतै छओ ऋतु बारह मासा।

जुग जुग बीतै पलहि पल अवधि घटति निति जाइ।
मीचु नियर जब आवै जानहुँ परलय आइ॥

जेहि घर ठग हैं पाँच नवौ बार चहुँदिसि फिरहिं॥
सो घर केहि मिस बाँच मुहमद जौ निसि जागिए॥

[१०]

घा- घट जगत बराबर जाना। जेहि महँ धरती सरग समाना।
माथ ऊँच मक्का बन ठाऊँ। हिया मदीना नबी के नाऊँ।
सरवन आँखि नाक मुख चारी। चारिहु सेवक लेहु बिचारी।
भावै चारि फिरिस्ते जानहु। भावै चारि यार पहिचानहु।
भावै चारिहु मुरसिद कहऊ। भावै चारि किताबैं पढ़ऊ।
भावै चारि इमाम जे आगे। भावै चारि खंभ जे लागे।
भावै चारिहु जुग मति पूरी। भावै आगि बाउ जल धूरी।

नाभि कँवल तर नारद लिए पाँच कोटवार।
नवौ दुवारि फिरै निति दसईं कर रखवार॥

पवनहु ते मन चाँड़ मन तें आसु उतावला।
कतहुँ मेड़ न डाँड़ मुहमद बहु बिस्तार सो॥

[११]

ना- नारद तस पाहरू काया। चारा मेलि फाँद जग माया।
नाद बेद औ भूत सँचारा। सब अरुझाइ रहा संसारा।
आपु निपट निरमल होइ रहा। एकहु बार जाइ नहिं गहा।

जस चौदह खँड तैस सरीरा। जहँवै दुख है तहँवै पीरा।
जौन देस महँ सँवरै जहँवाँ। तौन देस सो जानहु तहँवाँ।
देखहु मन हिरदय बसि रहा। खन महँ जाइ जहाँ कोइ चहा।
सोवत अंत अंत महँ डोलै। जब बोलै तब घट महँ बोलै।

तन तुरंग पर मनुआ मन मस्तक पर आसु।
सोई आसु बोलावई अनहद बाजा पासु॥

देखहु कौतुक आइ रूख समाना बीज महँ।
आपुहि खोदि जमाइ मुहमद सो फल चाखई॥

[१२]

चा- चरित्र जौ चाहहु देखा। बूझहु बिधिना केर अलेखा।
पवन चाहि मन बहुत उताइल। तेहि तें परम आसु सुठि पाइल।
मन एक खंड न पहुँचै पावै। आसु भुवन चौदह फिरि आवै।
भा जेहि ग्याँन हिए सो बूझै। जो धर ध्यान न मन तेहि रूझै।
पुतरी महँ जो बिंदि एक कारी। देखै जगत सो पट बिस्तारी।
हेरत दिस्टि उघरि तसि आई। निरखि सुन्न महँ सुन्न समाई।
पेम समुँद सो अति अवगाहा। बूड़ै जगत न पावै थाहा।

जबहिं नींद चख आवै उपजि उठै संसार।
जागत ऐस न जानै दहुँ सो कौन भँडार॥

सुन्न समुँद चख माँहि जल जैसी लहरैं उठहिं।
उठि उठि मिटि मिटि जाहिं मुहमद खोज न पाइए॥

[१३]

छा- छाया जस बुंद अलोपू। ओठईं सौं आनि रहा करि गोपू।
सोइ चित्त सौं मनुवाँ जागै। ओहि मिलि कौतुक खेलै लागै।
देखि पिंड कहँ बोली बोलै। अब मोहिं बिनु कस नैन न खोलै।
परम हंस तेहि ऊपर देई। सोऽहं सोऽहं साँसै लेई।
तन सराय मन जानहु दीया। आसु तेल दम बाती कीया।
दीपक महँ बिधि जोति समानी। आपुहि बरै बाति निरबानी।
निघटे तेल झूरि भइ बाती। गा दीपक बुझि अँधियरि राती।

गा सो प्रान परेवा कै पींजर तन छूँछ।
मुए पिंड कस फूलै चेला गुरु सन पूँछ॥

बिगरि गए सब नावँ हाथ पाँव मुँह सीस धर।
गोर नावँ केहि ठावँ मुहमद सोइ बिचारिए॥

[१४]

जा- जानहु अस तन महँ भेदू। जैसे रहै अंड महँ मेदू।
बिरिछ एक लागीं दुइ डारा। एकहिं ते नाना परकारा।
मातु के रकत पिता के बिंदू। उपने दुवौ तुरुक औ हिंदू।
रकत हुतें तन भए चौरंगा। बिंदु हुतें जिउ पाँचौ संगा।
जस ये चारिउ धरति बिलाहीं। तस वै पाँचौ सरगहि जाहीं।
फूलै पवन पानि सब गरई। अगिनि जारि तन माटी करई।
जस वै सरग के मारग माहाँ। तस ये धरति देखि चित चाहा।

जस तन तस यह धरती जस मन तैस अकास।
परमहंस तेहि मानस जैसि फूल मँह बास॥

तन दरपन कहँ साजु दरसन देखा जौ चहै।
मन सौं लीजिय माँजि मुहमद निरमल होइ दिया॥

[१५]

झा- झाँखर तन महँ मन भूलै। काँटन्ह माँझ फूल जनु फूलै।
देखेउ परमहंस परछाहीं। नयन जोति सो बिछुरति नाहीं।
जगमग जल महँ दीखै जैसे। नाहिं मिला नहिं बेहरा तैसे।
जस दरपन महँ दरसन देखा। हिय निरमल तेहि महँ जग देखा।
तेहि संग लागीं पाँचौ छाया। काम कोह तिस्ना मद माया।
चख महँ नियर निहारत दूरी। सब घट माँह रहा भरिपूरी।
पवन न उड़ै न भीजै पानी। अगिनि जरै जस निरमल बानी।

दूध माँझ जस घीउ है समुँद माहँ जस मोति।
नैन मींजि जौ देखहु चमकि उठै तस जोति॥

एकहि ते दुइ होइ दुइ सौं राज न चलि सकै।
बीचु तें आपुहि खोइ मुहमद एकै होइ रहु॥

[१६]

ना-नगरी काया विधि कीन्हा। जेइ खोजा पाया तेइ चीन्हा।
तन महँ जोग भोग औ रोगू। सूझि परे संसार सँजोगू।
रामपुरी और कीन्ह कुकरमा। मौन लाइ सोधै अस्तर माँ।
पै सुठि अगम पंथ बड़ बाँका। तस मारग जस सुई क नाका।
बाँक चढ़ाव सात खँड ऊँचा। चारि बसेरे जाइ पहूँचा।
जस सुमेरु पर अमृत मूरी। देखत नियर चढ़त बड़ि दूरी।
नाँघि हिवंचल जो तहँ जाई। अमृत मूरि पाइ सो खाई।

एहि वाट पर नारद बैठ कटक कै साज।
जो ओहि पेलि पईठै करै दुवौ जग राज॥

हौं कहते भए ओट पिये खंड मो सौं किएउ।
भए बहु फाटक कोट मुहमद अब कैसे मिलहिं॥

[१७]

टा-टुक झाँकहु सातौ खंडा। खंडै खंड लखहु बरम्हंडा।
पहिल खंड जो सनीचर नाऊँ। लखि न अँटकु पौरी महँ ठाऊँ।
दूसर खंड ब्रिहस्पति तहवाँ। काम दुवार भोग घर जहँवाँ।
तीसर खंड जो मंगल जानहु। नाभि कमल महँ ओहि अस्थानहु।
चौथ खंड जो आदित अहई। बाईं दिसि अस्तन महँ रहई।
पाँचवें खंड सुक्र उपराहीं। कंठ माहँ औ जीभ तराहीं।
छठएँ खंड बुद्ध कर बासा। दुइ भौहन्ह के बीच निवासा।

सातवें सोम कपार महँ कहा सो दसवँ दुवार।
जो वह पँवरि उघारै सो बड़ सिद्ध अपार॥

जौं न होत अवतार कहाँ कुटुम परिवार सब।
झूँठ सबै संसार मुहमद चित्त न लाइए॥

[१८]

ठा-ठाकुर बड़ आप गुसाईं। जेइ सिरजा जग अपनिहि नाईं।
आपुहि आपु जौ देखै चहा। आपनि प्रभुता आपु सौं कहा।
सबै जगत दरपन कै लेखा। आपुहिं दरपन आपुहि देखा।

आपुहि बन औ आपु परेरू। आपुहि सौजा आपु अहेरू।
आपुहि पुहुप फूलि बन फूले। आपुहि भँवर बास रस भूले।
आपुहि फल आपुहि रखवारा। आपुहि सो रस चाखनहारा।
आपुहि घट घट महँ मुख चाहै। आपुहि आपन रूप सराहै।

आपुहि कागद आपु मसि आपुहि लेखनहार।
आपुहि लिखनी आखर आपुहि पँडित अपार॥

केहु नहिं लागिहि साथ जब गौनब कैलास महँ।
चलब झारि दोउ हाथ मुहमद यह जग छोड़ि कै॥

[१९]

डा-डरपहु मन सरगहि खोई। जेहि पाछे पछिताव न होई।
गरब करै जो हौं हौं करई। बैरी सोइ गोसाइँ क अहई।
जो जानै निहचय है मरना। तेहि कहँ मोर तोर का करना।
नैन बैन सरवन बिधि दीन्हा। हाथ पाँव सब सेवक कीन्हा।
जेहि के राज भोग सुख करई। लेइ सवाद जगत जस चहई।
सो सब पूँछिहि मैं जो दीन्हा। तैं ओहि कर कस अवगुन कीन्हा।
कौन उतर का करब बहाना। बोवै बबुर लवै कित धाना।

कै किछु लेइ न सकत तब नितिहि अवधि नियराइ।
सो दिन आइ जो पहुँचै पुनि किछु कीन्ह न जाइ॥

जेइ न चिन्हारी कीन्ह यह जिउ जौ लहि पिंड महँ।
पुनि किछु परै न चीन्हि मुहमद यह जग धुंध होइ॥

[२०]

ढा-ढारै जो रकत पसेऊ। सो जानै एहि बात क भेऊ।
जेहि कर ठाकुर पहरै जागै। सो सेवक कस सोवै लागै!
जो सेवक सोवै चित देई। तेहि ठाकुर नहिं मया करेई।
जेइ अवतरि उन्ह कहँ नहिं चीन्हा। तेइ यह जनम अँबिरथा कीन्हा।
मूँदे नैन जगत महँ अवना। अंधधुंध तैसै पै गवना।
लइ किछु स्वाद जागि नहिं पावा। भरा मास तेइ सोइ गँवावा।
रहै नींद दुख भरम लपेटा। आइ फिरै तिन्ह कबहुँ न भेंटा।

धावत बीतै रैनि दिन परम सनेही साथ।
तेहि पर भएउ बिहान जब रोइ रोइ मींजै हाथ॥

लछिमी सत कै चेरि लाज करै बहु मुख चहै।
दीठि न देखै फेरि मुहमद राता प्रेम जो॥

[२१]

ना-निसता जो आपु न भएऊ। सो एहि रसहि मारि बिख किएऊ।
यह संसार झूठ थिर नाहीं। उठहिं मेघ जेउँ जाइ बिलाहीं।
जो एहि रस के बाएँ भएऊ। तेहि कहँ रस बिख भर होइ गएऊ।
तेइ सब तजा अरथ बेवहारू। औ घर बार कुटुम परिवारू।
खीर खाँड़ तेहि मीठ न लागै। उहै बार होइ भिच्छा माँगै।
जस जस नियर होइ वह देखै। तस तस जगत हिया महँ लेखै।
पुहुमी देखि न लावै दीठी। हेरै नवै न आपनि पीठी।

छोड़ि देहु सब धंधा काढ़ि जगत सौं हाथ।
घर माया कर छोड़ि कै धरु काया कर साथ॥

साँई के भँडारु बहु मानिक मुकता भरे।
मन चोरहि पैसारु मुहमद तौ किछु पाइए॥

[२२]

ता-तप साधहु एक पथ लागे। करहु सेव दिन रात सभागे।
ओहि मन लावहु रहै न ऊठा। छोड़हु झगरा यह जग झूठा।
जब हँकार ठाकुर कर आइहि। एक घरी जिउ रहै न पाइहि।
ऋतु बसंत सब खेल धमारी। दगला अस तन चढ़व अटारी।
सोइ सोहागिनि जाहि सोहागू। कंत मिलै जो खेलै फागू।
कै सिंगार सिर सेंदुर मेलै। सबहि आइ मिलि चाँचरि खेलै।
औ जो रहै गरब कै गोरी। चढ़ै दुहाग जरै जस होरी।

खेलि लेहु जस खेलना ऊख आगि देइ लाइ।
झूमरि खेलहु झूमि कै पूजि मनोरा गाइ॥

कहाँ ते उपने आइ सुधि बुधि हिरदय उपजिए।
पुनि कहँ जाहिं समाइ मुहमद सो खँड खोजिए॥

[२३]

था- थापहु यहु ग्यॉन विचारू। जेहि महँ सब समाइ संसारू।
जैसी अहै पिरथिमी सगरी। तैसिहि जानहु काया नगरी।
तन महँ पीर औ बेदन पूरी। तन महँ बैद औ ओखद मूरी।
तन महं बिख औ अमृत बसई। जानै सो जो कसौटी कसई।
का भा पढ़े गुने औ लिखे। करनी साध किए औ सिखे।
आपुहि खोइ ओहि जो पावा। सो बीरौ मनु लाइ जमावा।
जो ओहि हेरत जाइ हेराई। सो पावै अमृत फल खाई।

आपुहि खोए पिउ मिलै पिउ खोए सब जाइ।
देखहु बूझि बिचार मन लेहु न हेरि हेराइ॥

कहु है पिउ कर खोज जौ पावा सो मरजिया।
तहँ नहिं हँसी न रोज मुहमद ऐसै ठाँव वह॥

[२४]

दा-दाया जाकहँ गुरु करई। सो सिख पंथ समुझि पग धरई।
सात खंड औ चारि निसेनी। अगम चढ़ाव पंथ तिरबेनी।
तौं वह चढ़ै जौ गुरू चढ़ावै। पाँव न डगै अधिक बल पावै।
जो बरु सकति भगति भा चेला। होइ खेलार खेल बहु खेला।
जो अपने बल चढ़ि कै नाँघा। सो खसि परा टूटि गइ जाँघा।
नारद दौरि संग तेहि मिला। लेइ तेहि साथ कुमारग चला।
तेली बैल जो निसि दिन फिरई। एका परग न सो अगुसरई।

सोइ सोधु लागा रहै जेहि चलि आगे जाइ।
नतु फिरि पाछे आवई मारग चलि न सिराइ॥

सुनि हस्ती कर नावँ अधरन्ह टोवा धाइ कै।
जेइ टोवा जेहि ठावँ मुहमद सो तैसै कहा॥

[२५]

धा-धावहु तेहि मारग लागे। जेहि निस्तार होइ सब आगे।
बिधिना के मारग हैं तेते। सरग नखत तन रोवाँ जेते।
जेइ हेरा तेइ तहँवै पावा। भा सतोख समुझि मन गावा।

तेहि महँ पंथ कहौं भल गाई। जेहि दूनौ जग छाज बड़ाई।
सो बड़ पंथ मुहम्मद केरा। है निरमल कैलास बसेरा।
लिखि पुरान बिधि पठवा साँचा। भा परवान दुवौ जग बाँचा।
सुनत ताहि नारद उठि भागें। छूटै पाप पुन्नि सुनि लागे।

वह मारग जो पावै सो पहुँचै भव पार।
जो भूला होइ अनतहि तेहि लूटा बटपार।

साइँ केरा बार जो थिर देखै औ सुनै।
नइ नइ करै जोहार मुहमद निति उठि पाँच बेर॥

[२६]

ना-नमाज है दीन क थूनी। पढ़ै नमाज सोइ बड गूनी।
कही सरीयत चिसती पीरू। उधरित असरफ औ जहँगीरू।
तेहि के नाव चढा हौं धाई। देखि समुद जल जिउ न डेराई।
जेहि के ऐसन सेवक भला। जाइ उतरि निरभय सो चला।
राह हकीकत परै न चूकी। पैठि मारफत मार बुड़ूकी।
ढूँढ़ि उठै लेइ मानिक मोती। जाइ समाइ जोति महँ जोती।
जेहि कहँ उन्ह अस नाव चढ़ावा। कर गहि तीर खेइ लेइ आवा।

साँची राह सरीअत जेहि बिसवास न होइ।
पाँव रासि तेहि सीढ़ी निभरम पहुँचै सोइ।

जेइ पावा गुरु मीठ सो सुख मारग महँ चलै।
सुख अनंद भा डीठ मुहमद साथी पोढ़ जेहि॥

[२७]

पा-पाएउँ गुरु मोहदी मीठा। मिला पंथ सो दरसन दीठा।
नावँ पियार सेख बुरहानू। नगर कालपी हुत गुरु थानू।
औ तिन्ह दरस गोसाईं पावा। अलहदाद गुरु पंथ लखावा।
अलहदाद गुरु सिद्ध नवेला। सैयद मुहमद के वै चेला।
सैयद मुहमद दीनहि साँचा। दानियाल सिख दीन्ह सवाचा।
जुग जुग अमर सो हजरत ख्वाजे। हजरत नबी रसूल नेवाजे।
दानियाल तहँ परगट कीन्हा। हजरत ख्वाज खिजिर पथ दीन्हा।

खड्ग दीन्ह उन्ह जाइ कहँ देखि डरै इबलीस।
नावँ सुनत सो भागै धुनै ओट होइ सीस॥
देखि समुँद महँ सीप बिनु बूड़े पावै नहीं।
होइ पतंग जलदीप मुहमद तेहि धँसि लीजिए॥

[२८]

फा-फल मीठ जो गुरु हुँत पावै। सो बीरौ मन लाइ जमावै।
जो पखारि तन आपन राखै। निसि दिन जागै सो फल चाखै।
चित मूलै जस मूलै ऊखा। तजि के दोउ नींद औ भूखा।
चिंता रहै ऊख पहँ सारू। भूमि कुल्हाड़ी करै प्रहारू।
तन कोल्हू मन कालर फेरै। पाँचौ भूत आतमहि पेरै।
जैसे भाठी तप दिन राती। जग धंधा जारै जस बाती।
आपुहि पेरि उड़ावै खोई। तब रस औट पाकि गुड़ होई।

अस के रस औटावहु जामत गुड़ होइ जाइ।
गुड़ तें खाँड़ मीठि भइ सब परकार मिठाइ॥
धूप रहै जग छाइ चहूँ खँड संसार महँ।
पुनि कहँ जाइ समाइ मुहमद सो खँड खोजिए॥

[२९]

बा-बिनु जिउ तन अस अँधियारा। जौ नहिं होत नयन उजियारा।
मसि क बुंद जो नैनन्ह माहीं। सोई प्रेम अंस परिछाहीं।
ओहि जोति सौं परखै हीरा। ओहि सौं निरमल सकल सरीरा।
उहै जोति नैनन्ह महँ आवै। चमकि उठै जस बीजु दिखावै।
मग ओहि सगरे जाहिं बिचारू। साँकर मुँद तेहि बड़ बिस्तारू।
जहँवाँ किछु नहिं है सत करा। जहाँ छूँछ तहँ वह रस भरा।
निरमल जोति बरनि नहिं जाई। निरखि सुन्न महँ सुन्न समाई।

माटी तें जल निरमल जल तें निरमल बाउ।
बाउहिं तें सुठि निरमल सुनु यह जाकर भाउ॥
इहै जगत के पुन्नि यह जप तप सत साधना।
जानि परै जेहि सुन्न मुहमद सोई सिद्ध भा॥

[३०]

भा-भल सोइ जो सुन्नहि जानै। सुन्नहि तें सब जग पहिचानै।
सुन्नहि तें है सुन्न उपाती। सुन्नहिं ते उपजै बहु भाँती।
सुन्नहिं माँझ इन्द्र बरम्हंडा। सुन्नहि ते टीके नवखंडा।
सुन्नहिं ते उपजे सब कोई। पुनि बिलाइ सब सुन्नहि होई।
सुन्नहि सात सरग उपराहीं। सुन्नहि सातौ धरति तराहीं।
सुन्नहि ठाट लाग सब एका। जीवहि लाग पिंड सगरे का।
सुन्नम सुन्नम सब उतिराई। सुन्नहि महँ सब रहे समाई।

सुन्नहि महँ मन रूख जस काया महँ जीउ।
काठी माँझ आगि जस दूध माहँ जस घीउ॥

जावँन एकहि बूँद जामै देखहु छीर सब।
मुहमद मोति समुंद काढ़हु मथन अरंभ कै॥

[३१]

मा-मन मथन करै तन खीरू। दुहै सोइ जा आपु अहीरू।
पाँचौ भूत आतमहि मारै। दरब गरब करसी कै जारै।
मन माठा सम अस कै धोवै। तन खैला तेहि माहं बिलोवै।
जपहु बुद्धि कै दुइ सन फेरहु। दही चूर अस हिया अभेरहु।
पछवाँ कडुई कैसन फेरहु। ओहि जोति महँ जोति अभेरहु।
जस अंतरपट साढ़ी फूटै। निरमल होइ मया सब छूटै।
माखन मूल उठै लेइ जोती। समुँद माँहि जस उलथै मोती।

जस घिउ होइ जराइ कै तस जिउ निरमल होइ।
महै महेरा दूर करि भोग करै सुख सोइ॥

हिया कँवल जस फूल जिउ तेहि महँ जस बासना।
तन तजि मन महँ भूल मुहमद तब पहिचानिए॥

[३२]

जा- जानहु जिउ बसै सो तहँवाँ। रहै कँवल हिय संपुट जहँवाँ।
दीपक जैसे बरत हिय आरे। सब घर उजियर तेहि उजियारे।

तेहि महँ अंस समानेउ आई। सुन्न सहज मिलि आवै जाई।
जहाँ उठै धुनि आउंकारा। अनहद सबद होइ झनकारा।
तेहि महँ जोति अनूपम भाँती। दीपक एक बरै दुइ बाती।
एक जो परगट होइ उजियारा। दूसर गुपुत सो दसवँ दुवारा।
मन जस टेम प्रेम जस दीया। आसु तेल दम बाती किया।

तहँवा जिउ जस भँवरा फिरा करै चहुँ पास।
मींचु पवन जब पहुँचै लेइ फिरै सो बास॥

सुनहु बचन यह मोर दीपक जस आरे बरै।
सब घर होइ अँजोर मुहमद तस जिउ हीय महँ॥

[३३]

रा-रातहु अब तेहि के रँगा। बेगि लागु प्रीतम के संगा।
अरध उरध अस है दुइ हीया। परगट गुपुत बरै जस दीया।
परगट मया मोह जस लावै। गुपुत सुदरसन आप लखावै।
अस दरगाह जाइ नहिं पैठा। नारद पँवरि फटक लेइ बैठा।
ताकहँ मंत्र एक है साँचा। जो वह पढ़ै-जाइ सो बाँचा।
पंडित पढ़ै सो लेइ लेइ नाऊँ। नारद छाँडि देइ सो ठाऊँ।
जेकरे हाथ होइ वह कूँजी। खोलि केवार लेइ सो पूँजी।

उघरै नैन हिया कर आछै दरसन रात।
देखै भुवन सो चौदहौ औ जानै सब बात॥

कंत पियारे भेंट देखै तूलम तूल होइ।
भए बयस दुइ हैंठ मुहमद निति सरवर करै॥

[३४]

ला-लखई सोई लखि आवा। जो एहि मारग आपु गँवावा।
पीउ सुनत धुनि आपु बिसारै। चित्त लखै तन खोइ अडारै।
हौं हौं करत अडारहु खोई। परगट गुपुत रहा भरि सोई।
बाहर भीतर सोइ समाना। कौतुक सपना सो निजु जाना।
सोइ देखै औ सोई गुनई। सोई सब मधुरी धुनि सुनई।
सोई करै कीन्ह जो चहई। सोइ जानि बूझि चुप रहई।

सोई घट घट होइ रस लेई। सोइ पूँछै सोइ उत्तर देई।

सोई साजै अंतर पट खेलै आपु अकेल।
वह भूला जग सेती जग भूला ओहि खेल॥

जौ लगि सुनै न मीचु तौ लगि मारै जियत जिउ।
कोई हुतेउ न बीचु मुहमद एकै होइ रहै॥

[३५]

वा यह रूप न जाइ बखानी। अगम अगोचर अकथ कहानी।
छंदहि छंद भएउ सो बंदा। छन एक माहँ हँसी रोवंदा।
बारे खेल तरुन वह सोवा। लइटी बूढ़ लेइ पुनि रोवा।
सो सब रंग गोसाइँ केरा। भा निरमल कैलास बसेरा।
सो परगट महँ आइ भुलावै। गुपुत में आपन दरस देखावै।
तुम अनु गुपुत मते तस सेऊ। ऐसन सेउ न जानै केऊ।
आपु मरे बिनु सरग न छुवा। आँधर कहहिं चाँद कहँ उवा।

पानी महँ जस बुल्ला तस यह जग उतिराइ।
एकहि आवत देखिए एक है जात बिलाइ॥

दीन्ह रतन बिधि चारि नैन बैन सरवन्न मुख।
पुनि जब मेटहि मारि मुहमद तब पछिताब मैं॥

[३६]

सा-साँसा जौ लहि दिन चारी। ठाकुर से करि लेहु चिन्हारी।
अंध न रहहु होहु डिठियारा। चीन्हि लेहु जो तोहि सँवारा।
पहिले सो जो ठाकुर कीजिय। ऐसे जियन मरन नरि छीजिय।
छाँड़हु घिउ औ मछरी माँसू। सूखे भोजन करहु गरासू।
दूध माँसु घिउ कर न अहारू। रोटी सानि करहु फरहारू।
एहि बिधि काम घटावहु काया। काम क्रोध तिस्ना मद माया।
तब बैठहु बज्रासन मारी। गहि सुखमना पिंगला नारी।

प्रेत तंतु तम लाग रहु करहु ध्यान चित बाँधि।
पारधि जैस अहेर कहँ लाग रहै सर साधि॥

अपने कौतुक लागि उपजाएन्हि बहु भाँति कै।
चीन्हि लेहु सो जागि मुहमद सोइ न खोइए॥

[३७]

खा-खेलहु खेलहु ओहि भेंटा। पुनि का खेलहु खेल समेटा।
कठिन खेल औ मारग सँकरा। बहुतन्ह खाइ फिरे सिर टकरा।
मरन खेल देखा सो हँसा। होइ पतंग दीपक महँ धँसा।
तन पतंग कै भिरिंग कै नाईं। सिद्ध होइ सो जुग जुग ताईं।
बिनु जिउ दिए न पावै कोई। जो मरजिया अमर भा सोई।
नीम जो जामि चंदन पासा। चंदन बेधि होइ तेहि बासा।
पावँन्ह जाइ बली सन टेका। जौ लहि जिउ तन तौ लहि भेका।

अस जाने है सब महँ औ सब भावहि सोइ।
हौं कोहाँर कर माटी जो चाहै सो होइ॥
सिद्ध पदारथ तीनि बुद्धि पाँव औ सिर कया।
पुनि लेइहि सब छीनि मुहमद तब पछिताव मैं॥

[३८]

सा-साहस जाकर जग पूरी। सो पावा वह अमृत मूरी।
कहौ मंत्र जो आपनि पूँजी। खोलु केवारा ताला कूँजी।
साठि बरिस जो लपई झपई। छन एक गुपुत जाप जो जपई।
जानहु दुवौ बराबर सेवा। ऐसन चलै मुहमदी खेवा।
करनी करै जो पूजै आसा। सँवरे नावँ जो लेइ लेइ साँसा।
काठी धँसत उठै जस आगी। दरसन देखि उठै तस जागी।
जस सरवर महँ पंकज देखा। हिय के आँखि दरस सब लेखा।

जासु कया दरपन कै देखु आप मुँह आप।
आपुइ आपु जाइ मिलु जहँ नहिं पुन्नि न पाप॥
मनुवाँ चंचल ढाँप बरजे अहथिर ना रहै।
पाल पेटारे साँप मुहमद तेहि बिधि राखिए॥

[३९]

हा-हिय ऐसन बरजे रहई। बूड़ि न जाइ बूड़ अति अहई।

सोइ हिरदय कै सीढ़ी चढ़ई। जिमि लोहार घन दरपन गढ़ई।
चिनगि जोति करसी तें भागै। परम तंतु परचावै लागै।
पाँच भूत लोहा गति लावै। दुहूँ साँस भाठी सुलगावै।
कया ताइ फेंफरि दर (?) फरई। प्रेम कै सँड़सी पोढ़ कै धरई।
हनि हथेव हिय दरपन साजै। छोलनी जाप लिहे तन माँजै।
तिल तिल दिस्टि जोति महँ ठानै। साँस चढ़ाइ कै ऊपर आनै।

तौ निरमल मुख देखै जोग होइ तेहि ऊप।
होइ डिठियार सो देखै अंधन के अँधकूप॥

जेकर पास अनफाँस कहु हिय फिकिर सँभारि कै।
कहत रहै हर साँस मुहमद निरमल होइ तब॥

[४०]

खा-खेलन औ खेल पसारा। कठिन खेल औ खेलन हारा।
आपुहि आपुहि चाह देखावा। आदम रूप भेस धरि आवा।
अलिफ एक अल्ला बड़ सोई। दाल दीन दुनिया सब कोई।
मीम मुहम्मद प्रीति पियारा। तिनि आखर यह अरथ बिचारा।
सुरत विधि अपने हाथ उरेहा। दुइ जग साजि सँवारा देहा।
कै दरपन अस रचा बिसेखा। आपन दरस आप महँ देखा।
जो यह खोज आप महँ कीन्हा। तेइ आपुहि खोजा सब चीन्हा।

भागि किया दुइ मारग पाप पुन्नि दुइ ठाँव।
दहिने सो सुठि दाहिने बायें सो सुठि बावँ॥

भा अपूर सब ठावँ गुड़िला मोम सँवारि कै।
राखा आदम नाव मुहमद सब आदम कहै॥

[४१]

औ उन्ह नावँ सीखि जौ पावा। अलख नावँ लेइ सिद्ध कहावा।
अनहद ते भा आदम दूजा। आप नगर करवावै पूजा।
घट घट महँ होइ निति सब ठाऊँ। लाग पुकारै आपन नाऊँ।
अनहद सुन्न रहै रँग लागे। कबहुँ न बिसरै सोए जागे।
लिखि पुरान महँ कहा बिसेखी। मोहिं नहिं देखहु मैं तुम्ह देखी।

तू तस साइँ न मोहिं बिसारसि। तू सेवा जंते नहिं हारसि।
अस निरमल जस दरपन आगे। निसि दिन तोरि दिस्टि मोहिं लागे।

पुहुप बास जस हिरदय रहा नैन भरिपूरि।
नियरे से सु ठि नीयरे ओहट से सु ठि दूरि॥

दुवौ दिरिट टक लाइ दरपन जौ देखा चहै।
दरपन जाइ देखाइ मुहमद तौ मुख देखिये॥

[४२]

छा-छाँड़हु कलंक जेहि नाहीं। केहुन बरावरि तेहिं परछाहीं।
सूरुज तपै परै अति घामू। लागे गहन गरास होइ सामू।
ससि कलंक का पटतर दीन्हा। घटै गढ़ै औ गहनै लीन्हा।
आगि बुझाइ जौ पानी परई। पानि सूख माटी सब सरई।
सब जाइहि जो जग महँ होई। सदा सरबदा अहथिर सोई।
निहकलंक निरमल सब अंगा। अस नाहीं केहु रूप न रंगा।
जो जानै सो भेद न कहई। मन महँ जानि बूझि चुप रहई।

मंत ठाकुर कै सुनि कै कहै जो हिय मझियार।
बहुरि न मत तासौं करै ठाकुर दूजी बार॥

गगरी सहस पचास जौ कोउ पानी भरि धरै।
सुरुज दिपै अकास मुहमद सब महँ देखिए॥

[४३]

ना-नारद तब रोइ पुकारा। एक जोलाहैं सौं मैं हारा।
प्रेम तंतु नित ताना तनई। जप तप साधि सैकरा भरई।
दरब गरब सब देइ बिथारी। गनि साथी सब लेहि सँभारी।
पाँच भूत माँड़ी गनि मलई। ओहि सौं मोर न एकौ चलई।
बिधि कहँ सँवरि साज सो साजै। लेइ लेइ नावँ कूँच सौं माँजै।
मन मुरी देइ सब अंग मारै। तन सों बिनै दोउ कर जारै।
सूत सूत सो कया मँजाई। सीझा काम बिनत सिधि पाई।

राउर आगे का कहै जो सँवरै मन लाइ।
तेहि राजा निति सँवरै पूँछै धरम बोलाइ॥

तेहि मुख लावा लूक समुझाए समुझै नहीं।
परै खरी तेहि धूक मुहमद जेइ जाना नहीं॥

[४४]

मन सौं देइ कहनी दुइ गाढ़ी। गाढ़े छीर रहै होइ साढ़ी।
ना ओहि लेखे राति न दिना। करगह बैठि साट सो बिना।
खरिका लाइ करै तन घीसू। नियर न होइ डर इबलीसू।
भरै साँस जब नावै नरी। निसरै छूँछी पैठे भरी।
लाइ लाइ कै नरी चढ़ाई। इलाजिलाह कै ढारि चलाई।
चित डोलै नहिं खूटी टरई। पल पल पेखि आग अनुसरई।
सीधे मारग पहुँचै जाई। जा एहि भाँति कर सिधि पाई।

चलै साँस तेहि मारग जेहि से तारन होइ।
धरै पाँव तेहि सीढ़ी तुरतै पहुँचै सोइ॥
दरपन बालक हाथ मुख देखै दूसर गए।
तस भा दुइ एक साथ मुहमद एकै जानिए॥

[४५]

कहा मुहम्मद प्रेम कहानी। सुनि सो ग्याँनी भए धियानी।
चेलै समुझि गुरू सौं पूछा। देखहु निरखि भरा औ छूँछा।
दुहूँ रूप है एक अकेला। औ अनयन परकार सौं खेला।
औ भा चहै दुवौ मिलि एका। को सिख देइ काहि को टेका।
कैसे आपु बीच सो मेटै। कैसे आप हेराइ सो भेंटै।
जौ लहि आपु न जीयत मरई। हसै दूरि सौं बात न करई।
तेहि कर रूप बदन सब देखै। उहै घरी महँ भाँति बिसेखै।

सो तौ आपु हेरान है तन मन जीवन खोइ।
चेला पूछै गुरू कहँ तेहि कस अगरे होइ॥
मन अहथिर कै टेकु दूसर कहना छाँड़ि दे।
आदि अंत जो एक मुहमद कहु दूसर कहाँ॥

[४६]

सुनु चेला उत्तर गुरु कहई। एक होइ सो लाखन लहई।

अहधिर कै जो पिंडा छोंड़ै। औ लेइ कै धरती महँ गाड़ै।
काह कहौं जस तू परिछाहीं। जौ पै किछु आपन बस नाहीं।
जो बाहर सो अंत समाना। सो जानै जो ओहि पहिचाना।
तू हेरै भीतर सौं मिंता। सोइ करै जेहि लहै न चिंता।
अस मन बूझि छाँड़ु को तोरा। होहु समान करहु मति मोरा।
दुइ हुँत चलै न राज न रैयत। तब वेइ सीख जो होइ मग औयत।

अस मन बूझहु अब तुम करता है सो एक।
सोइ सूरत सोइ मूरत सुनै गुरू सौं टेक॥

नवरस गुरु पहँ भीज गुरु परसाद सो पिउ मिलै।
जामि उठै सो बाज मुहमद सोई सहस बुँद॥

[४७]

माया जरि अस आपुहि खोई। रहै न पाप मैलि गइ धोई।
गौ दूसर भा सुन्नहि सुन्नू। कहँ कर पाप कहाँ कर पुन्नू।
आपुहि गुरू आपु भा चेला। आपुहि सब औ आपु अकेला।
अहै सो जोगी अहै सो भोगी। अहै सो निरमल अहै सो रोगी।
अहै सो कड़ुआ अहै सो मीठा। अहै सो आमिल अहै सो सीठा।
वै आपुहि कहँ सब महँ मेला। रहै सो सब महँ खेलै खेला।
उहै दोउ मिलि एकै भएऊ। बात करत दूसर होइ गएऊ।

जो किछु है सो है सब ओहि बिनु नाहिंन कोइ।
जो मन चाहा सो किया जो चाहै सो होइ॥

एक से दूसर नाहिं बाहर भीतर बूझि ले।
खाँड़ा दुइ न समाहिं मुहमद एक मियान महँ॥

[४८]

पूछौं गुरू बात एक तोहीं। हिया सोच एक उपजा मोहीं।
तोहि अस कतहुँ न मोहि अस कोई। जो किछु है सो ठहरा सोई।
तस देखा मैं यह संसारा। जस सब भाँड़ा गढ़ै कोहाँरा।
काहू माँझ खाँड़ भरि धरई। काहू माँझ जो गोबर भरई।
वह सब किछु कैसे कै कहई। आपु बिचारि बूझि चुप रहई।

मानुस सौं नीके सँग लागै। देखि धिनाइ त उठि कै भागै।
सीझ घाम सब काहू भावा। देखि सरा सो नियर न आवा।

पुनि साईं सब जग रमै औ निरमल सब पाहि।
जेहि न मैलि किछु लागै लावा जाइ न ताहि॥

जोगि उदासी दास तिन्हहिं न दुख औ सुख हिया।
घर ही माहँ उदास मुहमद सोइ सराहिए॥

[४६]

सुनु चेला जस सब संसारू। ओही भाँति तुम किया विचारू।
जौ जिउ काया तौ दुख सौं भीजा। पाप के ओट पुन्नि सब छीजा।
जस सुरुज उग्र देख अकासू। सब जग पुन्नि उहै परगासू।
भल औ मंद जहाँ लगि होई। सब पर धूप रहै पुनि सोई।
मंदे पर वह दिस्टि जो परई। ताकर मैलि नैन सौं ढरई।
अस वह निरमल धरति अकासा। जैसे मिली फूल महँ बासा।
सबै ठाँव औ सब परकारा। ना वह मिला न रहै निनारा।

ओहि जोति परछाहीं नवौ खंड उजियार।
सुरुज चाँद कै जोती उदित अहै संसार॥

जेहि कै जोति सरूप चाँद सुरुज तारा भए।
तेहि कर रूप अनूप मुहमद बरनि न जाइ किछु॥

[५०]

चेलैं समुझि गुरु सौं पूछा। धरती सरग बीच सब छूँछा।
कीन्ह न थूनी भीति न पारा। केहि बिधि टेकि गगन यह राखा।
कहाँ से आइ मेघ बरिसावै। सेत साम सब होइ कै धावै।
पानी भरै समुंद्रहि जाई। जहाँ से उतरै बरसि बिलाई।
पानी माँझ उठै बजरागी। कहाँ से कौंकि बीजु भुइँ लागी।
कहवाँ सूर चंद औ तारा। लागि अकास करहिं उजियारा।
सूरुज उवै बिहानहि आई। पुनि सो अथै कहाँ कहँ जाई।

काहे चंद घटत है काहे सूरुज पूर।
काहे होइ अमावस काहे लागै मूर॥

जस किछु माया मोह तेरी मेघा पवन जल।
बिजुरी जैसे कोह मुहमद तहाँ समाइ यह॥

[४१]

सुनु चेला एहि जग कर अवना। सब बाहर भीतर है पवना।
सुन्न सहित बिधि पवनहि भरा। तहाँ आप होइ निरमल करा।
पवनहि महँ जो आप समाना। सब भा बरन ज्यों आप समाना।
जैसे डोलाए बेना डोलै। पवन सबद होइ किछहु न बोलै।
पवनहि मिला मेघ जल भरई। पवनहि मिला बुंद भुइँ परई।
पवनहि माहँ जो बुल्ला होई। पवनहि फूटै जाइ मिलि सोई।
पवनहि पवन अंत होइ जाई। पवनहि तन कहँ छार मिलाई।

जिया जंतु जत सिरिजा सब महँ पवन सो पूरि।
पवनहि पवन जाइ मिलि आगि बाउ जल धूरि॥

निति जो आयसु होइ साईं जो अग्याँ करै।
पवन परेवा सोइ मुहमद बिधि राखै हरी॥

[४२]

चढ़ करतार जिवन कर राजा। पवन बिना किछ करत न छाजा।
तेहि पवन सौं बिजुरी साजा। ओहि मेघ परबत उपराजा।
उहै मेघ सौं निकरि देखावै। उहै माँझ पुनि जाइ छपावै।
उहै चलावै चहूँ दिसि सोई। जस जस पावँ धरै जो कोई।
जहाँ चलावै तहवाँ चलई। जस जस नावै तस तस नवई।
बहुरि न आवै छिटकत झाँपै। तेहि मेघ सँग खन खन काँपै।
जस पिउ सेवा चूके रूठै। परै गाज पुहुमी तपि फूटै।

अगिनि पानि औ माटी पवन फूल कर मूल।
उहई सिरिजन कीन्हा मारि कीन्ह अस्थूल॥

देखु गुरू मन चीन्ह कहाँ जाइ खोजत रहे।
जामि परै परबीन मुहमद तेहि सुधि पाइए॥

[४३]

चेला चरचत गुरु गुन गावा। खोजत पूछि परम रस पावा।

गुरु बिचारि चेला जेहि चीन्हा। उत्तर कहत भरम लेइ लीन्हा।
जगमग देख उहै उजियारा। तीनि लोक लहि किरिन पसारा।
ओहि ना बरन न जाति अजाती। चंदन सुरुज देवस ना राती।
कथा न अहै अकथ भा रहई। बिना बिचार समुझि का परई।
सोऽहं सोऽहं बसि जो करई। जो बूझै सो धीरज धरई।
कहै प्रेम कै बरनि कहानी। जो बूझै सो सिद्ध गियानी।

माटी कर तन भाँड़ा माटी महँ नव खंड।
जे केहु खेलै माटि महँ माटी प्रेम प्रचंड॥

गलि सरि माटी होइ लिखने हारा बापुरा।
जौ न मिटावै कोइ लिखा रहै बहुतै दिना॥

परिशिष्ट

श्री गोपालचंद्र सिंह की प्रति के पाठांतर

छंद-संख्याएँ वर्गाकार कोष्ठकों में दी हुई हैं । शेष संख्याएँ पंक्तियों और उनके अंशों की हैं। प्रत्येक पंक्ति दो अंशों में विभाजित है—पूर्वार्द्ध और उत्तरार्द्ध ; उसी के अनुसार पंक्ति-संख्या देने के अनंतर-१ तथा-२ की संख्याएँ दी हुई हैं । प्रत्येक अंश में उल्लिखित पाठांतर किस स्थान पर आता है, यह बताने के लिए यदि वह अंश के प्रारंभ से ही नहीं आता है, उतने शब्दों के लिए बिंदु दे दिए गए हैं जितने शब्द उसके पूर्व उक्त अंश में आते हैं। और यदि पाठांतर प्रारंभ में आता है, तो उक्त अंश में उसके बाद आने वाले शब्दों की संख्या के अनुसार बिंदु दिए गए हैं।

[१] १,२ पंक्तियों में आने वाला दोहा नहीं है। ३-२ हियें···। ५-१···आपु । ५-२···कीन्ह । ६-१ तस····। ६-१··जस । ७-१···साथी। ८-१··आना तौ हौं आवा । ८-१···मैं गावा । ९-१ औ वै बचन दार जब·। १०-२ तीसरा शब्द नहीं है। १०-१···कीना। १०-२·चलत । १२-१कहै ग्यान के आखर। १२-२··मन । १३-२ जोरहु टूटन·। १४-१ हतेउ··।

[२] १-१ पहला शब्द नहीं है। १-१· ··तहां। १-२···जहां। २-१ पूरा पुरन···। ३-१ अन भाँती। ४-२··· हँकारा। ५-१····महा। ५-२··माँनिकुन्द्ध होइ रहा। ७-१ असन बस···। ७-२ बाजहिं खंड औ स पाखंडा। ८-१··धरतौ करंभ नहिं। ९-१ पांच··। ९-२ जाना मैं···। १०-१··बीज ।

[३] १-१ अैसे को रातो मा टाऊँ। २-२··बरन। ५-१ भई····। ५-१···रोइ। ६-१ मैंटि न····। ८-२ भर निचिंत जिय छोह । ९-२··तहँ घोइ। १·-२ हौं तूँ यहँ तैं बीछुरे। ११-२·बिच ।

[४] १-१ औं···। १-२··· जो इच्छि। १-२-होइ सो। २-१ हंतेउ····। ४-१ मा काम्बु हौं सर क·। ५-१ कहाँ····। ५-१ · भौनिन्ह । ६-१··मिलि। ६-१···कीन्ही । ६-२ भर आपनु सबही नहिं चीन्ही। ७-१ तूँ सौंपा···। ७-१ करता हरता··। ८-१···हुत। ९-१· अनीन (हिंदी मूल)। १०-२ पिउ मुकतै धनि सकरे। ११-२··लिलार सों। १०,११ छंद ६ वां सोरठा इस छंद में दिया हुआ है ।

[५] २-१ जीहौं (हिंदी मूल)। २-१· लीन्ह। २-२ जे सब अदवे कीन्है·। ४-१

भा····। ५-१····मैंवारहु । ५-२ भौर पाँचौ भीतर बैठारहु । ६-२··· को । ७-१ नव दुवार गोलहि॰ । ४-२···दं गइ । ८-२··वै । ९-२··बिन । १०-१ (तेउ न···। १०-२ : अेउ हुत। १०,११ छंद ४ का सोरठा इसमें दिया हुआ है।

[६] १-२··· गौ। ४-१··हमि। ४-२·· छोहि। ५-१····पावमि। ५-२····न नावमि। ६-१ धरमिहि महँ धरि पावी॰। ६-२ लाइ मैंघान पाव··। ७-१ उठा नाम जिउ जियान। ७-२··वै संभारा। ८-१ आदम बरजि जो भाखन बाजै। ९-१ तहाँ हुतें पुनि॰। १०,११ छंद ५ का सोरठा इसमें दिया हुआ है।

[७] १-१ या करना चाहै··। १-२ भसकै····। २-२···भौ। ३-१··जमाल रोप। ३-२··· हुत दैव बिछोए। ३ अ (अतिरिक्त पंक्ति) अस दूनौ धरि मंदिल पियारे। पूरब पच्छिम हुवे निनारे। ६-१···कर। ६-२··· मनि। ७-१·· फल। ८-१ निनई मिरिट। १०,११ 'सोरठा' शीर्षक है, किंतु उसकी पंक्तियाँ नहीं हैं।

[८] १-१··तम। २-१···सिरिजी। ४-२ मोंथ···। ५-२····मरँहू। ७-१····जामैं। ७-२ सोन सोन निकसै जस नामैं। ९-२ हेरै भोइट न जाइ। ११-२ मुहमद नाउँ न ठाउँ जेहि।

[९] १-१ गा गोंव मत मवहिं बखानू। १-२ कहाँ गियान सुनौ दे कानू। २-२ निखरी औहैंन कर··। ३-२ सोन निलाट··। ४-२·· तेहि। ६-२··कीन्ह। ६-२ हँसी बीज देवँन डर छोहू। ७-१· बैठहिं। ७-२ बमँ····। ८-१·· टेरहिं। ८-२ जैसें···। ९-१··जो पहुँचो। ९-२ निखरी मानौ··। १०-१·· तर कर। १०-२ भव बातैं। ११-१··तौपै।

[१०] १-१···चाहि बड। २-१···बड। २-२····गाऊँ। ३-१···पुनि। ४-२··भौंन। ६-१ तथा ६-२ परस्पर स्थानांतरित हैं। ७-भावे चारौ दसा घर। ८-२ निहैं··। १०-२··भम। ११-१ खेलहु मैंड पिंडा पिंड।

[११] २-१···वाहन। २-१ बुंद मद बेह। ३-२ बरन। ३-२···कहा। ४-२··नहँ बौं बहु। ६-१·· जम। ६-२····कान। ७-१···भा। ७-२·· जो रे बुनावे। ८-२··· भंम। ९-२ सोहैं सोहैं बोलैं। ९-२··बंम। ११-१·लेइ मिलाइ ११-२· तो फर।

[१२] १-१···चाहसि। १-२···ह मैखा। २-२ भंस। ३-१··· जो। ३-२ भंम····। ४-१ कौन गियान हियें केहँ बूभा। ४-२ तेहँ धरि ध्यान नेन मथ सूभा। ५ पुतरिन्ह मांझ जो बिंदिका का रे। जगत चाहि वह बड़ बिस्तारा। ६-१··भोहटि कस जाई। ६-२ सरग भाइ तेहि माहँ। ७-१ पुनि जन मतुंद जो। ८-१ जोहि (हिंदी मूल)। ८-१···लागै। ११-१·· मिलि मिलि।

सातवीं पंक्ति के दोनों अंश परस्पर स्थानांतरित हैं। ८-१ सुन मौक तस निर-खहु। ९-१ काठहि'''। ११-२' महा भरम'।

[३१] १-१ मा—भयनी जो'''। २-१'''मारै। २-२'''धरि जारै। ३ मरो महेसा करि तन छोवै। मन रोवनि तेहि पानि बिलोवै। ४ यह पंक्ति नहीं है, किंतु पंक्ति २ और ४ के बीच में निम्नलिखित पंक्ति और है, अर्थात् दुध दिय निरमल कीजै। बचन गुरू कर आवन दीजै। ५-१ भाव देह दुइ सौंसहि फेरहु। ५-२''नस दिये। ६ यह पंक्ति प्रति में नहीं है। ८-१'''निरावै। ९-१ महीर पाप चोर कै। ९-२''घहु। १०-१'देसु। ११-२' तौ (हिंदीमूल)।

[३२] १-१'''बास सों कहाँ। १-२ हिया कँवल बहु सपुट जहाँ। ४-१ तहाँ उठै धुनि आउ ईकारा। ५-१'''अरूप अभौनी। ६-१'''मँझियारा। ७-१'' टैंव तेल सन'। ७-२ रवौना बानी सरवा हिया। ८-१'जम। ८-२ भँवा'''। ९-१''अब। ९-२ लोन चहीं तम'।

[३३] १-१''अस पिय के रंगा। १-२ जेहि लागउ'''। २-१ अरध औ ऊरध दुइ मुख'। २-२'' कहा। ३-१'''जग। ३-२' सो आपन रूप देखावै। ४ एक सो परगट भा जग कहा। दूसर गुपुत जोनि अति महा। ५-१'''सुख। ५-२''सिखा। ६-१ पाहिल पढ़न होन जो नाऊँ। ७-१''''डोली। ७-२ मो राजा और तासों डोली। १०-१ कंत पियारा धून। १०-२ देखौं। ११-१ भएउँ परस दुइ ईठ। ११-२''' करन।

[३४] १-१'लखाव सोई लखि पावा। १-२ जेई तेहि। २ पिउ सँवरा धनि आपु बिसारा। चित्त लसा मन मारि सो टारा। ३-१''करब अदारसि। ४-२ जागत सपना बराबरि जाना। ५-१''पुनि सोई सहँ। ५-२'सबद मधुरी धुनि दहै। ६-१''वई जस। १०-१'' मुएमिन। १०-२ सौ लहि मरि लौ चीन्हि ओहि। ११-१ जैसे रहँ''। ११-२'' होहिं दुइ।

[३५] २-१ जैसहि भेस और छंदहि छंदा। २-२'''ताहि नौ नंदा। ३ दालो ढेली तरने रोवै। लडरि बूढ़ होइ बहुरै ढोवै। ४-२ सो निनार निरमल सुठि देरा। ५-२ जो''''। ५-१''''भुलाई। ५-२''राखन दरस छुवाई। ६-१ तुँ पुनि गुपुत भाँति। ६-२ भैमन भेद'''। ७-१'मुवे। ७-२ अधहि कहह चाँद जेउँ'। ८-१''' पुरखुरा। ९-२ एकै जाहि. बिलाइ। १०-२'' नासिक स्रवन।

[३६] १-१ सा-सूरत। १-२'सो। २-१''''डिठियारी। २-२'' केई तोहि अवतारी। ३-१ जो यह बरनी''। ३-२'जाउ मरै नहि। ४-२ सुख भोजन

सँजो। ५-१ ·· चित। ६-१ तहँ कलंक ···। ६-२ ना काहू के ···। ७-१ ··· निरति। ७-२ ·· बूझि चुप कै ·। ९-१ · मनै न हँकारै। ११-२ ·· पद।

[४३] १-१ ना-नारद सँग ··। २-१ परम ····। २-२ ·· साँस सब केरा गुनई। ३-२ गुरु साथी भल रोल ·। ४ यह पंक्ति प्रति में नहीं है। ५-१ ··· काज सब। ५-२ ···· सब माँगौं। ६ यह पंक्ति प्रति में नहीं है। ८ राव रांक जो काल है जो सेवै चित लाइ। ९-२ बान बनाइ। १०-१ ·· रासा। ११-१ परी परी ··।

[४४] १-१ ··· दीन मन गाँठा। २-१ पोढ़े राय पेम सौं साँठा। २-२·· सब। ३-१ सरिक लाइ कोपा मद केमू। ४-१ ··· ते है। ५-१ लाइ लाइ के ताद [?]। ५-२ ·· गहि हाथ कुंजी। ६-१ चित न डोल जो गही ·। ६-२ ··· जिय तें। ७-१ मिथ मारग वह ··। ७-२ ··· करै सत। ८-१ चना राह न धारोभत काहू किछु न बसार। ९-२ ·· जाइ। १०-२ ··· गहै। ११-२ ·· जानु निजु। १०,११ इस छंद में सोरठा अगले छंद का है।

[४५] १-१ कही ···। २-२ ··· कै। ३-१ ·· वोहि। ३-२ औ ताना पुरुखारथ खेला। ४-२ ··· कहाँ। ५-१ केहि विधि आपुहि विच हुत मेंटै। ५-२ ·· हेराएँ। ६-२ · दूसर। ७-१ ताकर बरन रूप सब देखै। ७-२ वह पिरीत बहु ··। ८-२ ·· जा बिन खोट। ९-२ पहुँचा आगर। १०,११ इस छंद में सोरठा पूर्ववर्ती छंद का है।

[४६] २-१ मैस फिरै ··। ३ इस पंक्ति के दोनों अंश परस्पर स्थानांतरित हैं। ४ गुनवंत सो जो हिरदै ध्याना। मीत औ दारी हौं कहना। ५-१···· सुनता। ५-२ ·· जो वोहि बड़ चिना। ६-१ · ·झाडु हिय जोरा। ६-२ ·· कहै जग बौरा। ७ यह पंक्ति प्रति में नहीं है। ८-१ ··· आन तजि। ८-२ · रहै। ८-२ ·· कै भीज। ९-१ ·· जस। ९-२·· आप जस सहस गुन।

[४७] १-१ आ आगर भस आपुहि खाएँ। १-२ ·· मैन पाप के धोएँ। ३ हौं ही गुरू मो हौं ही चेला। हौं ही सब-औ हौ ही अकेला। ४-१ हौं ही सो जोगी हौं ही ··। ४-२ हौं ही सो निरमल हौं ही ··। ५-१ हौं ही सो कडुवा हौ ही ··। ५-२ हौं ही सो अमिल हौं ही ··। ६-१ हौं ही मांझ सब आ दई ·। ६-२ हौं ही सब मुख खेलौं ·। ७-१ हौं तूं दोउ मिलि एकै भए। ७-२ करत जो दूसर सो मिटि गए। ८-१ ···· हौं ही। ८-२ मोहि ···। ९-१ · मैं। ९-२ अब जो करौं। १०-२ ··· तूं। ११-१ छांडि। ११-२ ·· पुरयार।

[४८] १-२ ·· जस औ पुनि मोहीं। २-१ ···· ओहि। २-२ जत किछु

मथ ठाईं •। ३-१ जब देखौं ••••। ४-२ •• भी। ५-१ ••• ठाईं पैसे। ५-२ ऐसे बिचारि अब बूझा कहई। ६-१ • सी। ६-२ • यो ठाउँ हियें दइ भागें। ७-१ सोध घरंत तेहि तहाँ आवा। ७-२ • मरथि नियर नहिं। ८-१ यह तूँ गोसाईं जग कर। १०-१ जो रे ••। १०-२ ना होइ दुकड़ न सुन पछू।

[४९] १-१ •• श्रम। २-१ •• ध्यान दुब सुख वई मजा। २-२ पेट पराए न कै दिन तजा। ३-२ •• होइ किरन परगासू। ४-१ ••• लेत बिछु। ४-२ ••• पर देखौं। ५-१ • ऊपर। ५-२ •• न ऊमर भरई। ७-२ •••• होइ निनारा। ७ प्रति में यथा ३ है। ८-१ देखि मुई। ८-२ सुरुज चद •। ९-१ •• परिछाहीं। ९-२ भा उजियर। १०-२ ताकर मैनि रूप। १०-२ ••• ग्रहै।

[५०] २१ तहँ नहिं ••••। ३-२ काहैं सरग गगन बिचि •। ३-१ कहँ दुत उपजि मेघ सब आवहिं। ३-२ •• कहँ दुन होइ धावहिं। ४-१ समुंद समाहीं। ४-२ •• उतरहिं बरसि बिलाहीं। ५-२ ••• सोइ। ६-२ •• के हैं अधिकारा। ७-१ •• उहाँ दिन आईं। ७-२ पुनि अथवै निसि कहाँ सो जाई। ९-१ • गहन गहै दिन। १०-२ • भेद भी। ११ यह पंक्ति प्रति में नहीं है।

[५१] १-१ ••जब आहि अवना। २-१ • सहज। २-२ रहा आपु होइ कीनिउ। ३-१ पवन कीन्ह अस ••। ३-२ सब कई बरनै सबहिं निदाना। ४-१ जहाँ डोलावै पौनै डोला। ४-२ ••• सब किछु बोला। ५ यह पंक्ति प्रति में नहीं है। ६-१ • काहैं बुलबुला। ६-२ • इत। ७-२ ••• सो। ७-२ • बिन तन। ८-२ राजा •••। ९-१ देखु पवन बिनु नाही। ८,९ परस्पर स्थानांतरित हैं। १०-२ आपका आप प्रथम करै। १०,११ परस्पर स्थानांतरित है।

[५२] १-२ आछ पवन बिन आगि। २-२ ताकरैं ताजन ••। २-२ •• बिन दुत। ३-१ पवन मेघ होइ जो जग छाईं। ३-३ •••• बिलाई। ३ के दोनों अंश परस्पर स्थानांतरित हैं।
इसके अनंतर प्रति खंडित हो गई है।

आखिरी कलाम

[१]

पहिले नावँ दैउ कर लीन्हा। जेइ जिउ दीन्ह बोल मुख कीन्हा।
दीन्हेसि सिरा सँवारे पागा। दीन्हेसि कया जो पहिरै बागा।
दीन्हेसि नयन जोति उजियारा। दीन्हेसि देखै का संसारा।
दीन्हेसि स्रवन बात जेहि सुनै। दीन्हेसि बुधि गियान बहु गुनै।
दीन्हेसि नासिक लीजै बासा। दीन्हेंसि सुमन सुगंध बिरासा।
दीन्हेसि जीभ बैन रस भाखै। दीन्हेसि भुगुति साध तेहि राखै।
दीन्हेसि दसन सुरंग कपोला। दीन्हेसि अधर जो रचैं तबोला।

दीन्हेसि बदन सुरूप रंग दीन्हेसि माथे भाग।
देखि दयाल मुहम्मद सीस नाइ पय लाग॥

[२]

दीन्हेसि कंठ बोल जेहि माहाँ। दीन्हेसि भुजाडंड बल बाहाँ।
दीन्हेसि हिया भोग जेहि जामा। दीन्हेसि पाँच भूत आतमा।
दीन्हेसि बदन होत (सीत?) औ घामू। दीन्हेसि सुक्ख नींद बिसरामू।
दीन्हेसि हाथ चाह अस कीजै। दीन्हेसि कर पल्लौ पल्लव?) गहि लीजै।
दीन्हेसि रहस कोड बहुतेरा। दीन्हेसि हरख हिया औ थोरा।
दीन्हेसि बैठक आसन मारै। दीन्हेसि बूत जो उठै सँभारै।
दीन्हेसि सबै सँपूरन काया। दीन्हेसि दोइ चलने का पाया।

दीन्हेसि नौ नौ नाटका (फाटका?) दीन्हेसि दसवँ दुवार ।
सो अस दानि मुहम्मद तिनके हौं बलिहार ।।

[३]

मरम नैन कर अँधरे बूझा । तेहि बिय (बिन?) रे सुंसार न सूझा ।
मरम स्रवन कर बहिरे जाना । जो न सुनै किछु बोली साना ।
मरम जीभ कै गूँगे पावा । साधहि मरै पै निकर [न] नावाँ ।
मरम बाँह कर लूलै चीन्हा । जेहि बिधि हाथन्ह पाँगुर कीन्हा ।
मरम कया कै कुस्टी भेंटा । नित घिरकुट जो रहै लपेटा ।
मरम बैठ उठ तेहि पै गुना । जो रे मिरिग कस्तूरी पहाँ ।
मरम पावँ कै तेहि पै दीठा । जो अपया भुइँ चलै बईठा ।

अति सुख दीन्ह बिधाते औ सब सेवक ताहि ।
आपन मरम महम्मद अबहूँ समुझ कि नाहिं ॥

[४]

भा औतार मोर नौ सदी । तीस बरिख ऊपर कवि बदी ।
आवत उधतचार बड़ ठाना । भा भूकंप जगत अकुलाना ।
धरती दीन्ह चक्र बिधि भाईं । फिरै अकास रहट कै नाईं ।
गिरि पहार मेदिनि तस हाला । जस चाला चलनी भल चाला ।
मिरित लोक जेहि रचा हिंडोला । सरग पताल पवन घट (खट?) डोला ।
गिरि पहार परवत ढहि गए । सात समुंद्र कदच (कीच?) मिलि भए ।
धरती छात फाटि भहरानी । पुनि भइ मया जौ सिस्टि हठानी (ढिठानी?) ।

जो अस खंभहि पाइ कै सहसजीव (जीभ?) गहिराइँ ।
सो अस कीन्ह मुहम्मद तो अस बपुरे काइँ ।।

[५]

सूरुज सेवक वाके अहै । आठौ पहर फिरत जो रहै ।
आयसु लिहे राति दिन धावै । सरग पताल दुवौ फिरि आवै ।
दगधि आग महँ होइ अँगारा । तेहि कै आँच धिकै सुंसारा ।
सो अस बपुरे गहनै लीन्हा । औ धरि बाँधि चँडाले दीन्हा ।
गा अलोप होइ भा अँधियारा । दीखै दिनहि सरग माँ तारा ।

उघतें झाँपि लीन्ह घुप चापै। लाग सरप (सरघ?) जिउ थर थर काँपै।
जिउ का परै कया (ग्याँन?) सब छूटै। तब भा. मोख गहन जौ छूटै।

ताको अता तरासै जो सेवक अस मित।
अबहुँ न डरसि मुहम्मद काह रहसि निहचिंत॥

[६]

ताकरि अस्तुति कीन्हि न जाई। कौनो जीभि मैं करौं बड़ाई।
जग पताल जो सैतै कोई। लेखनी परखि समुँद्र मसि होई।
लागै लिखै सिरिट मिलि जाई। समुद घटै पै लिखि न सिराई।
साँचा सोइ और सब झूठे। ठाघ न कतहूँ ओन के रूठे।
आयसु हूँ इबलीस जौ टारै। नारद होइ नरक महँ पारै।
सौ दुइ कटक कइउ लत धीरा। फरऊँ रौंदि नील महँ बोरा।
जौ सदाद बैकुंठ सँवारा। पैठत पाँरि बीच गहि मारा।

जो ठाकुर अस दारुन सेवक तईं निरदोख।
माया करै मुहम्मद तौ पै होइहि मोख॥

[७]

रतन एक बिधनै अवतारा। नावँ मुहम्मद जग उजियारा।
चारि मीत चहुँ दिसि गजमोती। माँझ दिपै मनि मानिक मोती।
जेहि हित सिरिजा सात समुंदा। सातहु दीप भरे एक बुंदा।
ता पर चौदह भुवन दसारे (?)। बिच बिच खंड बिखंड सँवारे।
धरती औ गिरि मेरु पहारा। सरग चाँद सूरुज औ तारा।
सहस अठारह दुनिया सेरी (?)। आवत जात जातरा फेरी।
जेइ नहिं लीन्ह जनम माँ आऊँ। तेहि कहँ कीन्ह नरक माँ ठाऊँ।

सो अस दैव न राखा जेहि कारन सब कीन्ह।
दहुँ तुम काह मुहम्मद एहि मिथिमी चित दीन्ह॥

[८]

बाबर साह छत्रपति राजा। राज पाट उन का बिधि साजा।
मुलुक सुलेमाँ का अस दीन्हा। अदल दून (दुनी?) उम्भर जस कीन्हा।
अली केर जस कीन्हेसि खाँडा। लीन्हेसि जगत समुँद भा डाँडा।

पग हमजा कर जैस सँभारा। जो बरिआर उठा तेहि मारा।
पहलवान नाए सब आदी। रहा न कतहुँ बादि का बादी।
बड़ परताप आप तप साधे। धरम के पथ दई चित बाँधे।
दरब जोरि सब काहू दिए। आपुन बिरद (!) आपु जस लिए।

राजा होइ करै तब (तप) छाँड़ि जगत माँ राज।
सब अस कहै मुहम्मद नौं कीन्हा सिधु काज॥

[९]

मानिक एक पाएउँ उजियारा। सैयद असरफ पीर पियारा।
जहाँगीर चिश्ती निरमरा। कुल जग माँ दीपक विधि धरा।
औ निहंग दरिया जल माहाँ। बूड़त कहँ धरि काढ़त बाहाँ।
समुँद माँझ जो बोहित फिरई। लतै नावँ सहूँ होइ तरई।
तिन घर हौं मुरीद सो पीरू। सँवरत बिन गुन लावै तीरू।
कर गहि धरम पंथ देखराएउ। गा भुलाइ तेहि मारग लाएउ।
जो अस पुरुखै मन चित लाए। इच्छा पूजै आस तुलाए।

जो चालिस दिन सेवै वार बुहारै कोइ।
दरसन होइ मुहम्मद पाप जाइ सब धोइ॥

[१०]

जायस नगर मोर अस्थानू। नगर क नावँ आदि उदयानू।
तहाँ देवस दस पहुने आएउँ। भा बैराग बहुत सुख पाएउँ।
सुख भा सोच एक दुख मानौं। ओहि बिनु जिवन मरन कै जानौं।
नैन रूप सो गएउ समाई। रहा पूरि भरि हिरदै छाई।
जहँवै देखौं तहँवै सोई। और न आवै दिस्टि तर कोई।
आपुन देखि देखि मन राखौं। दूसर नाहि सो कासौं भाखौं।
सबै जगत दरपन कर लेखा। आपुन दरसन आपुहि देखा।

अपने कौतुक कारन मीर पसारिन हाट।
मलिक मुहम्मद बिनहीं हाइ निकसिन तेहि बाट॥

[११]

धूत एक भारत घन गुना। कपट रूप नारद कर जना।

नावँ असाधु साधु कहवावै। तहाँ लगि चलै जो गारी पावै।
भाव गाँठि अस मुख कर माँजा। कारिख तेल घालि मुख माँजा।
परत [हि] दीठि छरत मोहि लेखे। दिनहि माँझ अँधियर मुख देखे।
लोन्हें चंग राति दिन रहई। परपँच कीन्ह लोगन माँ चहई।
भाइ बंधु माँ लाई लावै। बाप पूत माँ घटी करावै।
मेहरी मनुस रैनि का आवै। तरपड़ कै पूरुख अन्हवावै।

मन मैले कै ठग ठगै ठगै न पाएउ काहु।
बरजेउ सबहिं मुहम्मद अस जिनि तुम पतियाहु॥

[१२]

अंग छड़ा औ सूरी भारा। जाइ कहौ अति चंग अधारा।
जौ काहू सौं आनि न छूटै। सुनहु मोर बिधि कैसे छूटै।
उहै नावँ करता कै लेऊ। पढ़े पलीता धूवाँ देऊ।
जो यह धुवाँ नासिक माँ लागै। मिनती करै औ उठि उठि भागै।
धरि बाईं लट सीस झकोरै। करिया थरग जो हाथ मरोरै।
तबहि सँकोच अधिक वै होवै। छाँड़ौ छाँड़ौ कहि कै रोवै।
धरि बाहीं लै थुवाँ उड़ावै। तासौं डरै जो अैस छड़ावै।

है नरकी औ पापी टेढ़ बदन औ आँखि।
चीन्हत उहै मुहम्मद झूठि भरी सब साखि॥

[१३]

नौ सै बरस छतीस जो भए। तब एहि कविता आखर कहे।
देखौ जगत धुंध कलि माहीं। उवत धूप धरि आवत छाहीं।
यह सँसार सपने कर लेखा। माँगत बदन नैन भरि देखा।
लाभ दिए बिनु भोग न पाउब। परें डाँड़ जहाँ [मूर] गँवाउब।
राति कर सपन जागि पछिताना। ना जानौं कब होइ बिहाना।
अस मन जानि बेसाहौ सोई। मूर न घटै लाभ जेहि होई।
ना जानौ बाढ़त दिन जाई। तिल तिल घटै आइ नियराई।

अस जिन जानेहु ओहट है दिन आवत नियरात।
कहै सो बूझि मुहम्मद फिर फिर कहाँ असि बात॥

[१४]

जबहिं अंत कर परली आई। धरमी लोग रहै ना पाई।
जबहीं सिद्ध साधु गा लपा। तबहीं चलै चोर औ जपा।
जाई मया मोह सब केरा। मच्छ रूप कै आई बेरा।
उठिहैं पंडित बेद पुराना। दत्त सत्त दोउ करिहि पयाना।
धूम बरन सूरुज होइ जाई। किस्न बरन सिस्टिहि दिखाई।
दो अद(?) पुरुब दिसि उइहै जहाँ। पुनि फिरि आइ अथइहै तहाँ।
पछि गदहा निकसै दर जालू। हाथ खंड होइ आए कालू।

जो रे मिलै तेहि मारै फिरि फिरि आइ अकाज।
सबई मारि मुहम्मद भूँजि अदूतिया राज॥

[१५]

पुनि धरती का आयसु होई। उगिलै दरब लोग सब लेई।
मोर मोर कै उठिहैं मारी। आपु आपु माँ करिहैं मारी।
अस न केउ जानै मन माहाँ। जो यह सचा अहै सो काहाँ।
सैंति सैंति लेइ लेइ घर भरहीं। रहस कोड़ अपने जिउ करहीं।
खनै उतंग खनै वर साँती। नितहि हुलंच उठे बहु भाँती।
पुनि एक अचरज संचरै आई। नावँ मजारी भँवा बिलाई।
ओहि के सूँघे जियै न कोई। जो न मरै तेहि भक्खै सोई।

सब सुंसार सिराइ औ तेहि मैं केरी (?)घात।
उनहूँ कहँ मुहम्मद बार न लागै जात॥

[१६]

पुनि मैकाइल आएसु पाए। अनवन भाँति मेघ बरसाए।
पहिले लागै परै अँगारा। धरती सरग होइ उजियारा।
लागी सबै पिरिथिमीं जरै। पाछे लागे पाथर परै।
सौ सौ मन कै एक एक सिला। चलै विंद (पिंड?) घुटि आवै मिला।
बजर गोट सस छूटै भारी। टूटै रूख बिरिख सब भारी।
परत धमाग (धमाक?) धरति सब हालै। ओदरत उठै सरग लै सालै।
अधाधार बरसै बहु भाँती। लाग रहै चालिस दिन राती।

जिया जंतु सब मरि घटे जित सिरिजा सुंसार।
कोउ न रहै मुहम्मद होइ बीता संघार॥

[१७]

जिबरईल पाइय फरमानू। आइ सिस्टि देखब मैदानू।
जियत न रहा जगत केउ ठाढ़ा। मारा झोरि कचरि सब गाढ़ा।
मरि गंधाइँ साँस नहिं आवै। उठै बिगंध सड़ाइँध आवै।
जाइ टेउ से करहु बिनाती। कहब जाइ जस देखब भाँती।
देखहु जाइ सिस्टि बेवहारू। जगत उजाड़ सून सुंसारू।
अस्ट दिसा उजारि सब मारा। कोउ न रहा नावँ लेनिहारा।
मरि माजरि पिरथिमीं पाटी। परे पिछानि न दीठी माटी।

सून पिरथिमीं होवै धरती दहुँ सब लीप।
जेतनी सिस्टि मुहम्मद सबै भाइ जल दीप॥

[१८]

मकाईल पुनि कहब बुलाई। बरसौ मेघ पिरथिमीं जाई।
ओनै मेघ भरि उठिहैं पानी। गरजि गरजि बरसैं अति बानी।
झरी लागि चालिस दिन राती। घरी न निमुसे एकै भाँती।
छूट पानि परलौ के नाई। चढ़ा छापि सगरी दुनियाई।
बूड़हिं परबत मेरु पहारा। जलहल उमड़ि चलै असरारा।
जहँ लगि मरि माजरि जत होई। लेइ बहाइ जाइहि भुइँ धोई।
पुनि घटि नीर भँडारै आई। जनौं न बरसा तैस सुखाई।

सून पिरथिमीं होइहि बूझै हँसे ठठाइ।
एतनि जो सिरिट मुहम्मद सो कहँ गएउ हेराइ॥

[१९]

पुनि ईसराफील फरमाए। फूँके सब सुंसार। उड़ाए।
है मुख सूर भरै जो साँसा। डोलै धरती लुपुत अकासा।
भुवन चौदहाँ गिरि बन डोला। जनौं घालि झुलाएसि हिंडोला।
पहिले एक फूँक जो आई। ऊँच नीच एक सम होइ जाई।
नदी नार सब जैहैं पाटी। अस होइ मिले जो ठारे(!) बाटी।

दूसर फूँक जो मेरु उड़ैहैं। परवत समुँद एक होइ जैहैं।
चाँद सुरुज तारा घट टूटैं। परतहि खंभ सेसहि घट फूटैं।

तस रे बजर मयाउब अस भुइँ लेब मयाइ।
पुरुब पछिउँ मुहम्मद एक रूप होइ जाइ॥

[२०]

अजराइल कहँ बेगि बुलाए। जीउ जहाँ लगि सबै लिवाए।
पहिले जिउ जिबरैल के लेई। लौटि जीउ मेकाइल देई।
पुनि जिउ देई इसराफीलू। तीनिहुन का मारै अजराईलू।
काल फिरिस्तन केर जो होई। कोइ न जागै निसि होइ सोई।
पुनि पूँछत जम सब जिउ लीन्हा। एकौ रहा बाच जिउ दीन्हा।
सुनि अजाराइल आगे होइ आउब। उत्तर देब सांस भुइँ नाउब।
आयसु होइ करौं अब सोई। की हम की तुम और न कोई।

जो जम आनि जिउ लेत हैं संकर तिनहू कर जिउ लेब।
सो अवतरे मुहम्मद देखु तहूँ जिउ देब॥

[२१]

पुनि फुरमाए आप गोसाईं। तुमहूँ देउ जिवाइहिं नाहीं।
सुनि आयसु पाछे का धाए। तिसरी पौरि नाँघि नहिं पाए।
परत कीन्ह जिउ निसरन लागे। होई कस्ट घरी एक जागे।
प्रान देत सँवरे मन माहीं। उवत धूप घरि आवत छाहीं।
जस जिउ देत मोहिं दुख होई। अैसे दुखिया भा सब कोई।
जौ जनतेउँ जिउ अस दुख देता। तौ जिउ काहू केर न लेता।
लौटि काल तिनहूँ कर होवै। आइ नींद निधरक होइ सोवै।

भंजन गढ़न सँवारन जिन खेला सब खेल।
सब का टारि मुहम्मद अब हूँ रहा अकेल॥

[२२]

चालिस बरिस जबहि होइ जैहैं। बठिहि मया पछिले [सब] ऐहैं।
मया मोह कै किरपा आए। आपुहि कहँ आपु फुरमाए।
मैं सुंसार जो सिरिजा एता। मोर नावँ कोऊ नहिं लेता।

जेतने परे श्रब सबहिं उठावौं। पुल सिलवात के पंथ रेंगावौं।
पाछे जिए पूछौं सब लेखा। नैन माद (माहँ?) जेता हौं देखा।
जस वाकर सरवन बिन सूना। धरम पाप गुन औगुन गूना।
कै निरमल पौसर अन्हवावौं। पुनि जीवन बैकुंठ पठावौं।

मरन गँजन धन होइ जस जस दुख देखत लोग।
तस सुख होइ मुहम्मद दिन दिन मानैं भोग।

[२३]

पहिले सेवक चारि जियाउब। तिन्ह सब काजे काज पठाउब।
जिबरईल औ मैकाईलू। असराफील औ अजराईलू।
जिबरईल प्रिथिमीं माँ आए। जाइ मुहम्मद का गोहराए।
जिबरईल जग आइ पुकारब। नावँ मुहम्मद लेत हँकारब।
होइहैं जहाँ मुहम्मद नाऊँ। कइउ लाख बोलिहैं एक ठाऊँ।
ठाढ़ि रहे कतहूँ ना पावै। फिरि कै जाइ मारि गोहरावै।
कहैं गोसाइँ कहाँ नै पावौं। लाखन बोलैं जौ रे बोलावौं।

सब धरती फिरि आएऊँ जहाँ नावँ सो लेउँ।
लाखन उठैं मुहम्मद केहि कै उत्तर देउँ॥

[२४]

जिबराइल पुनि आयसु पाए। सूँघे जगत ठाँव सो पाए।
बास सुबास लीन है जाहाँ। नावँ रसूल पुकारसि ताहाँ।
जिबरईल फिरि प्रिथिमीं आए। सूँघत जगत ठावँ सो पाए।
उठहु मुहम्मद होहु बड़ नेगी। देन जुहार बोलाएँ बेगी।
बेगि हँकारे उमत ममेता। आवहु तुरँत साथ सब लेता।
एतने बचन जबहिं मुख काढ़े। सुनत रसूल भए उठि ठाढ़े।
जहँ लगि जीउ मोख सब पाए। अपने अपने पिंजरे आए।

कइउ जुगन के सोवत उठे लोग मत जागि।
अस सब कहँ मुहम्मद नैन पलक ना लागि।

[२५]

उठत उमत कहँ आलस लागै। नींद भरी सोवत ना जागै।
पौढ़त बार न हम का भएऊ। अबहीं अवधि आइ कब गहेउ।

दूसर फूँक जो मेरु उड़ैहैं। परवत समुँद एक होइ जैहैं।
चाँद सुरुज तारा घट टूटैं। परतहि खंभ सेसहि घट फूटैं।

तस रे बजर मयाउब अस भुइँ लेब मयाइ।
पुरुब पछिउँ मुहम्मद एकै रूप होइ जाइ॥

[२०]

अजराइल कहँ बेगि बुलाए। जीउ जहाँ लगि सबै लिवाए।
पहिले जिउ जिबरैल कै लेई। लौटि जीउ मीकाइल देई।
पुनि जिउ देई इसराफीलू। तीनिहुन का मारै अजराईलू।
काल फिरिस्तन केर जौ होई। कोइ न जागै निसि होइ सोई।
पुनि पूँछत जम सब जिउ लीन्हा। एकौ रहा बाच जिउ दीन्हा।
सुनि अजाराइल आगे होइ आउब। उत्तर देब सीस भुइँ नाउब।
आयसु होइ करौं अब सोई। की हम की तुम और न कोई।

जो जम आनि जिउ लेत हैं संकर तिनहू कर जिउ लेब।
सो अवतरे मुहम्मद देखु तहूँ जिउ देब॥

[२१]

पुनि फुरमाए आप गोसाईं। तुमहूँ देउ जिवाइहिं नाहीं।
सुनि आयसु पाछे का धाए। तिसरी पाँरि नाँघि नहिं पाए।
परत कीन्ह जिउ निसरन लागे। होई कस्ट घरी एक जागै।
प्रान देत सँवरे मन माहीं। उवत धूप धरि आवत छाहीं।
जस जिउ देत मोहिं दुख होई। ऐसै दुखिया भा सब कोई।
जौ जनतेउँ जिउ अस दुख देता। तौ जिउ काहू केर न लेता।
लौटि काल तिनहूँ कर होवै। आइ नींद निधरक होइ सोवैं।

भंजन गढ़न सँवारन जिन खेला सब खेल।
सब का टारि मुहम्मद अब हूँ रहा अकेल॥

[२२]

चालिस बरिख जबहि होइ जैहैं। उठिहि मया पछिले [सब] ऐहैं।
मया मोह कै किरपा आए। आपुहि कहैं आपु फुरमाए।
मैं सुंसार जो सिरिजा एता। मोर नावँ कोऊ नहि लेता।

जेतने परे थव सबहि उठावौं। पुल सिलवात के पंथ रेगावौं।
पाछे जिए पूछौं सब लेखा। नैन माद (माहाँ) जेता हौं देखा।
जस धाकर सरवन मिन सूना। धरम पाप गुन औगुन गूना।
कै निरमल कौसर अन्हवावौं। पुनि जीवन वैकुंठ पठावौं।

मरन गँजन धन होइ जस जस दुख देखत लोग।
तस सुख होइ मुहम्मद दिन दिन मानैं भोग।

[२३]

पहिले सेवक चारि जियाउब। तिन्ह सब काजै काज पठाउब।
जिवरईल औ मैकाईल। असराफील औ अजराईल।
जिबरईल प्रिथिमीं माँ आए। जाइ मुहम्मद का गोहराए।
जिबरईल जग आइ पुकारब। नावँ मुहम्मद लेत हँकारब।
होइहैं जहाँ मुहम्मद नाऊँ। कइउ लाख बोलिहैं एक ठाऊँ।
ठाढ़ि रहै कतहूँ ना पावै। फिरि कै जाइ मारि गोहरावै।
कहै गोसाइँ कहाँ नै पावौं। लाखन बोलैं जौ रे बोलावौं।

सब धरती फिरि आएउँ जहाँ नावँ सो लेउँ।
लाखन उठैं मुहम्मद केहि कै उत्तर देउँ॥

[२४]

जिबराइल पुनि आयसु पाए। सूँघै जगत ठाँव सो पाए।
बास सुबास लीन है जाहाँ। नावँ रसूल पुकारसि ताहा।
जिबरईल फिरि प्रिथिमीं आए। सूँघत जगत ठावँ सो पाए।
उठहु मुहम्मद होहु बड़ नेगी। देन जुहार बोलाऍ वेगी।
वेगि हँकारे उमत ममेता। आवहु तुरँत साथ सब लेता।
एतने वचन जबहि मुख काढे। सुनत रसूल भए उठि ठाढ़े।
जहँ लगि जीउ मोटर सब पाए। अपने अपने पिंजरे आए।

कइउ जुगन के सोवत उठे लोग मत जागि।
अस सब कहँ मुहम्मद नैन पलक ना लागि।

[२५]

उठत उमत कहँ आलस लागै। नींद भरी सोवत ना जागै।
पौढ़त वार न हम का भएऊ। अबहीं अवधि आइ कब गहेऊ।

जिबरईल सब कहब पुकारी। अबहूँ नींद ना गई तुम्हारी।
सोवत तुम्हैं कइउ जुग बीते। अैसे तौ तुम हौं नहिं बीते।
कइउ करोरि बरस भुइँ परे। उठहु न बेगि मुहम्मद खरे।
सुनि कै जगत उठी सब झारी। जेतना सिरजा पुरुख औ नारी।
नँगा नाँग उठिहैं संसारू। नैना होइहैं सब के तारू।

कोउ न कबहूँ पुनि बेरै ? दिस्टि सरग सब केरि।
ऐसे जतन मुहम्मद सिरिट चलौ सब घेरि॥

[२६]

पुनि रसूल जहई होइ आगे। उमत चलै सब पाछे लागे।
अध गियान होइ सब केरा। ऊँच नीच जह होइ अभेरा।
सबहीं जियत चहैं सुंसारा। नैनन नीर चलै असरारा।
सो दिन सँवरि उमत सब रोवैं। ना जानौं आगे कस होवै।
जो न रहै तेहि का यह संगा। सुख सूखौ तेहि पर यह रंगा।
जेहि दिन का नित करत डरावा। सोइ दवस अब आगे आवा।
जौ पै हमसे लेखा लेवा। का हम कहब उतर का देवा।

एत सब सँवरि कै मन माँ चहैं जाइ सो भूलि।
पैगै पैग मुहम्मद चित्त रहैं सब फूलि।

[२७]

पुल सिलवात पुनि होइ अभेरा। लेखा लेब अंब (उमत?) सब केरा।
एक दिसि बैठि मुहम्मद रोइहैं। जिबरईल दूसर दिसि होइहैं।
वार पार किछु सूझत नाहीं। दूसर नाहिं को टेकै बाहीं।
तीस सहस्र कोस कै बाटा। अस साँकर जेहि चलै न चाँटा।
बारहु ते पतरा अस झीनी। खड़ग धार से अधिकौ पैनी।
दोउ दिसि नरक कुंड कै भरे। खोज न पाउब तेहि माँ परे।
देखत काँपै लागै जाँघा। सो पंथ कैसे जैहै नाँघा।

वहाँ चलत सब परखब को रे पूर को ऊन।
अबहूँ को जानै मुहम्मद भरे पाप औ पून॥

[२८]

जो धरमी होइहि संसारा। चमकि बीजु गहब जौं पारा।
बहुतक जानु तुरंग भल धैहैं। बहुतक जानु परेरु उड़ैहैं।
बहुतक चाल चलै माँ जैहैं। बहुतक मरि मरि पाव उठैहैं।
बहुतक जानु परेरु उड़ैहैं। पवन कि नाईं जिय माँ जैहैं।
बहुतक जानौं रगैं चाँटी। बहुतक रहैं दाँत धरि माटी।
बहुतक नरक कुंड माँ पड़िहीं। बहुतक रकत पी माँ पड़िहीं।
जेहि क जाँघ भरोस न होई। सो पंथी निभरोसी रोई।

परै तराप सो नाँघत को रे धार को पार।
कोउ तरि रहा मुहम्मद कोउ बूड़ा मँझधार॥

[२९]

लौटि हँकारब यह जब भानू। तपै कहँ होइहि फुरमानू।
पूँछब कटक जहाँ ते आवा। को सेवक को बैठे खावा।
जेहि जस आहि जियन मैं दीन्हा। तेहि तस संमर चहौं मैं लीन्हा।
अब लगि राज देस कर भूँजा। अब दिन आइ लिखा कर पूजा।
छः मास कर दिन करौं आजू। आउ क लेउँ औ देखौं साजू।
से चौराहा बैठै आवै। एक एक जनौ का पूँछि पकरावै।
नीर खीर हुँत काढ़ब छानी। करब निनार दूध औ पानी।

धरम पाप फरियाउब गुन औगुन सब दोस।
दुखी न होहु मुहम्मद जोखि लेब धरि जोस॥

[३०]

पुनि कम होइहि दिवस छ मासू। सुरुज आइ तपहिं होइ बाँसू।
कै सउहैं नियरे रवि हाँकै। तेहि कै आँच गूद सिर पाकै।
बजरागिनि अस लागै तैसे। [बि] लम्बैं लोग पियासन बैसे।
जनौ अगिनि अस बरसै घामू। भूँजि देह जरि जाए चामू।
जेइ किछु धरम कीन्ह जग माहाँ। तेहि सिर पर किछु आवै छाहाँ।
धरमिहि आनि पियाउब पानी। पापी बपुरहि छाहँ न पानी।
चोरा जपा सो काज न आवै। इहाँ का दीन्ह उहाँ सो पावै।

जो लखपती कहावै लहै न कौड़ी आधि।
चौदह धजा मुहम्मद ठाढ़ करहिं सब बाँधि॥

[३१]

सवा लाख पैगम्बर जेते। अपने अपने पाप तेते।
एक रसूल न बैठहिं छाहाँ। सबही धूप लेहिं सिर माहाँ।
घामै उमत दुखी जेहि केरी। सो का मानै सुख अवसेरी।
दुखी उमत तौ पुनि मैं दुखी। तेहि सुख होइ तौ पुनि मैं सुखी।
पुनि करता कै आयसु होई। उमत हँकारु लेखा मोहिं देई।
कहब रसूल कि आयसु पावौं। पहिले सब धरमी लै आवौं।
होइ उतर तिन्ह ही ना चाहौं। पापी घालि नरक महँ पाहौं(?)बाहौं।

पाप पुन्नि केते खरे होइ चहत है पोच।
अस मन जानि मुहम्मद हिरदै मानेउ सोच॥

[३२]

पुनि जैहैं आदम केरे पासा। पिता तुम्हारि बहुत मोहिं आसा।
उमत मोरि गाढ़े है परी। भा न दान लेखा का धरी।
दुखिया पूत होत जो अहै। सब दुख पै बापै से कहै।
बाप बाप कै जो कछु खाँगै। तुमहिं छाँड़ि कासौं चित बाँधै।
तुम जठेर पुनि सबहीं केरा। अहै संतति मुख तुम्हरै हेरा।
जेठ जठेर जो करिहैं मिनती। ठाकुर जबहीं सुनिहैं मिनती।
जाइ देउ सैं बिनवौ रोई। मुख दयाल दाहिन तोहि होई।

कहहु जाइ जस देखै जेहि होवै उदघाट।
बहु दुख दुखी मुहम्मद बिधि संकर तेहि काट॥

[३३]

सुनौ पूत आपन दुख कहऊँ। हौं अपने दुख बाउर रहऊँ।
होइ बैकुंठ जो आयसु ठेलौं(ठेलेउँ)। दूत के कहे मुख गोहूँ मेलौं(मेलेउँ)।
दुखिया पेट लागि सँग धावा। काढ़ि बिहिस्त से मैल ओढ़ावा।
परलौ जाइ मँडल मुंसारा। नैन न सूझ निसि अँधियारा।
सकल [ज]गत मैं फिरि फिरि रोवा। जीउ जान बाँधि कै खोवा।

भएँ उजियार पिरथिमीं जइहौं। औ गोसाइँ के अस्तुति कहिहौं।
लौटि मिले जौं होवै आई। तो जिउ कहँ धीरज भा जाई।

तेहि हुते लाजि उठै जिउ मुहँ न सकौं दरसाइ।
सो मुहँ लाइ मुहम्मद बात कहौं का जाइ॥

[३४]

पुनि जैहैं मूसै केर दोहाई। ऐ बंधू मोहिं उपगरु आई।
तुम का विधिनै आयसु दीन्हा। तुम नेरे होइ बातें कीन्हा।
उम्मत मोरि बहुत दुख देखा। भा निदान माँगत है लेखा।
अब जौ भाइ मोर तुम अहेऊ। एक बात मोहि कारन कहेऊ।
तुम अस तुहसे बात का कोई। सोई कहेउ बात जेहि होई।
गाढे मीत कहौं का काहू। कहौ जाइ जेहि होइ निबाहू।
तुम सँवारि कै जानौ बाता। मकु सुनि माया करै बिधाता।

मिनती किहेउ मोर हुते सीस नाइ कर जोरि।
है है करैं मुहम्मद उमत दुखी है मोरि॥

[३५]

सुनहु रसूल बात का कहौं। हौं अपने दुख बाउर रहौं।
कै कै देखेउँ बहुत ढिठाई। मुँह कड़ुवाना ग्वात मिठाई।
पहिले मो कहँ आयसु दीन्हा। फरऊँ से मैं झगरा कीन्हा।
रोद नील कै डावसि चाला। फुर भा झूँठ झूँठ [भा] भला।
पुनि देखौ बैकुंठ पठाएउ। एकौ दिसि करै पंथ न पाएउ।
पुनि जो मो कहँ दरसन भएऊ। कोह तूर रावट होइ गएऊ।
भा अनेक मैं फिर फिर जाँपी। हर दावँन कै लीन्हेसि चापी।

निरखि नैन मैं देखौं कतहुँ परै नहिं सूझि।
रहौं लजाइ मुहम्मद बात कहौं का बूझि॥

[३६]

दौरि दौरि सनही पा जैहैं। उतर दिहें सब फिर यहिरैहैं।
ईसौ कहिन कि कस नहि कहतेउँ। जौ किछु चहेउ उत्तर बैठेउँ (?)।

मैं मुए मानुस बहुत जियावा। औ बहुते जिउ दान दिवावा।
इब्राहिम कहा फस ना कहतेउँ। बात कहे बिन मैं ना रहतेउँ।
मोसौं खेल हिंदू जो खेला। सर रचि बाँधि अगिनि माँ मेला।
तहँ अगिनि हय (हुत?)भइ फुलवारी। अपडर डरौं न बिरह सँभारी।
नूह कहिन जब परलौ आवा। सब जग बूड़ रहेउँ चरि(चढ़ि?)नावा।

केउ कहै काहू से सबै उड़ाउब भार।
जम कै बनै मुहम्मद करु आपन निस्तार॥

[३७]

सबै भार अस मेलि उड़ाउब। फिर फिर कहब उतर ना पाउब।
पुनि रसूल जैहैं दरबारा। पैग मारि भुइँ करब पुकारा।
तैं सब जानसि एक गोसाईं। कोउ न आव मोरी उमत के ताईं।
जेइ से कहौं सो चुप होइ रहई। उमत लाइ केउ बात न कहई।
मोरे घाँड़ केऊ नहिं चाँड़ा। देखा दुख सबहीं मोहिं छाड़ा।
मोहिं अस तुहीं लाग करतारा। तुहि होई भल सोइ निस्तारा।
जो दुख चहरि उमत का दीन्हा। सो सब मैं अपने सिर लीन्हा।

लेखि जोगि कहियावन ?) मरन गँजन दुख दाहु।
सो सब समैं (सहँ?) मुहम्मद दुखी करौ जनि काहु॥

[३८]

पुनि रिसाइ कै कहै गोसाईं। फातिम कहँ ढूँढ़हु दुनियाईं।
का मोसौं उन भगरि बिसारा। हसन हुसैन कहौ को मारा।
ढूँढ़े जगत कतहुँ ना पैहैं। फिरि कै जाइ मारि गोह रैहैं।
ढूँढ़ि जगत दुनिया सब आएउँ। फातिम खोज कतहुँ ना पाएउँ।
आयसु होइ अहैं पुनि ताहाँ। उठै नाथ हैं धरती माहाँ।
मूँदै नयन सकल सुंसारा। बीबी उठैं करै निस्तारा।
जो कोउ आव देखै नैन उघारी। तेहि कहँ छाह करौं धरि जारी।

आयसु होइ देउ कर नैन रहै सब झाँपि।
एक ओर डरै मुहम्मद उमत मरै डर काँपि॥

[३६]

उट्ठिन बीबी तब रिस किहें। हसन हुसेन दुवौ सँग लिहें।
तैं करता हरता सब जानसि। झूँठ फुर नीक पहिचानसि।
हसन हुसेन दुवौ मोर बारे। दुनहु यज़ीद कौने गुन मारे।
पहिले मोर नियाव नियारू। तेहि पाछे जेतना सुंसारू।
समुझें जीउ आगि महँ दहऊँ। देहु दादि तौ चुप कै रहऊँ।
नाहि त देउँ सराप रिसाई। मारौं आहि अर्स जहिर जाई।

वहु संताप उठै जिया कतहूँ समुझि न जाइ।
बरजहु मोहि मुहम्मद अधिक उठै दुख दाइ॥

[४०]

पुनि रसूल कहँ आयसु होई। फातिमा कहँ समुझावहु सोई।
मारे आहि अर्स जरि जाई। तेहि पाछे आपुहि पछिताई।
जौ नहिं बात क करे बिवादू। जानौ मोहिं, दीन्ह परसादू।
जौ बीबी छाँड़हि यह रोखू। तौ मैं करौं उमत कै मोखू।
नाहिं तौ घालि नरक महँ जारौं। लौटि जियाइ मुए पर मारौं।
अगिनि खंभ देखहु जस आगे। हिरकत छार होइ तेहि लागे।
चहुँ दिसि फेरि सरग लै लावौं। मुँगरिन मारौं लोव(लोह?)चटावौं।

तेहि पाछे धरि सारौं घालि नरक के काँट।
बीबी कहँ समुझावै जौ रे उमत कै चाँट॥

[४१]

पुनि रसूल तलफत तहाँ जैहैं। बीबी आइ बार समुझैहैं।
बीबी कहब घाम कत सहाै। कस ना बैठि छाहँ माँ रहौ।
सब पैगंबर बैठे छाहाँ। तुम कस तपौ बजर अस माहाँ।
कहब रसूल छाहँ का बैठौं। उमत लागि धूपहु नहिं बैठौं।
तेइँ सब बाँधि घाम महँ मेले। का भा मोरे छाहँ अकेले।
तुम्हरे कोह सबहि जो मरै। समुझहु जीउ तबै निस्तरै।
जो मोहिं चहौ निवारहु कोहू। तब बिधि करै उमत पर छोहू।

यहु दुख देखि पिता कर थीवो समुझा जीउ।
जाइ मुहम्मद बिनया ठाढ़ पाक (पाग) के गीउ॥

[४२]

तब रसूल [कि] कहँ भइ माया। जिन चिंता मानौ भइ दाया।
जौं बीबी अबहूँ रिसियाई। सबहि उमत सिर आनि बिसाई।
अब फातिमा का बेगि बोलावौं। देउ दाद सौं उमत छोड़ावौं।
फातिमा आइ के पार लगावा। धरि यजीद माँ गोवा [आवा ?]।
अंत कहा धरि जान से मारै। जिउ देइ देउ पुनि लौटि पछारै।
तस मारब जेहि भुइँ गड़ि जाई। मन सन मारै लौटि जियाई।
बजर अगिनि जारब कै छारा। लौटि धोवै (दहै?) जस धोवै (दहै?) लोहारा।

मारि जारि घिनियावौं धरि दोजख माँ देब।
जेतनी सिस्टि मुहम्मद सबहि पुकारै लेब॥

[४३]

पुनि सब उम्मत लेब बुलाई। हरू गरू लागब बहिराई।
निरखि रहौतौ कारब (गारब) ज्ञानी। करब निनार दूध औ पानी।
बाप पूत ना पूतै बापू। पाप पुन्नि ना पुन्नै पापू।
आप [हि] आप आइ कै परी। क्वाउ न क्वाउ क धरहरि करी।
कागज काढ़ि लेन सब लेखा। दुख सुख जो पिरथिमी महँ देखा।
पौन पियाला लेखा माँगब। उतर देत उन पानी खाँगब।
नैन का देखा स्रवन का सुना। कहब करब औगुन औ गुना।

हाथ पाँव मुख काया स्रवन सीस औ आँखि।
पाप न छपै मुहम्मद अते भरैं सब साँखि॥

[४४]

देह का रोवाँ बैरी होइहैं। बजर बिया एहि जीउ के बोइहैं।
पाप पुन्नि निरमल कै धोउब। राखब पुन्नि पाप सब खोउब।
पुनि कौसर पउब अन्हवाए। जहाँ कया निरमल सब पाए।
बुड़की देब देंह सुख लागी। पलुहब उठि सोवत अस जागी।
खोरि नहाइ धोइहैं सब दुंदू। होइ निकरहिं पुनिवा कै चंदू।

सब के सरीर सुबास बसाईं। चंदन कै अस खानी आईं।
मूठे सबहि आप पुनि साँचे। सबहि नबी के पाछे बाँचे।

नबी छाँड़ि सब होईं बरह् बरिस कै राह।
सब अस जानौं मुहम्मद होइ बरिस कै राह॥

[४५]

पुनि रसूल नेवतब जेवनारा। बहुत भाँति होईं परकारा।
ना अस देखा ना अस सुना। जौ सरहौं तौ है दस गुना।
पुनि अनेक बिस्तर जहँ डासब। बास सुबास कपूर से बासब।
होइ आएसु जौ पैग(बेगि?)बोलाउब। औ सब उमत साथ लेइ आउब।
जिबरईल आगे होइ जइहैं। पग डारैं का आयसु होइहैं।
चलब रसूल उमत लै साथा। परग परग पर नावत माथा।
आवैं भीतर बेगि बोलाउब। बिस्तर जहाँ तहाँ बैठाउब।

झारि उमत सब बैठे जोरि कै एकै पाँति।
सब के माँझ मुहम्मद जानौ दुलह बराति॥

[४६]

पुनि जेंवन का आवन लागै। सब [कि] आगे धरत न खाँगै।
भाँति भाँति के देखब थारा। जानब ना दहुँ कौन प्रकारा।
पुनि फुरमाउब आपु गुसाईं। बहुतै दुख देखौ (देखेउ?)दुनियाईं।
हाथन से जेंवनार मुख डारब। जीभ पसारत दाँत उघारब।
कूँचत खात बहुत दुख पावौ। तहँ ऐसै जेवनार जेंवावौ।
अब जिनि लौटि करट जिउ करौ। सुख संवाद औ इंद्री भरौ।
पाँच भूत आतमा सेराईं। बैठि अघाइ औरे ना भाईं।

ऐस करब पहुनाई तब होईं संतोख।
दुखी न होव मुहम्मद पोखि लेहु धरि पोख॥

[४७]

हाथन्ह से केउ कौर न लेईं। सेइ जाइ मुख पैठै जोईं।
दाँत जीभ मुख किछु न डोलाउब। जस जस रुची तस तस खाउब।

जैस अन्न बिनु फूंचे रूचै। तैस सिठाइ जौं कोऊ फूँचै।
एक एक परकार जा आए। सत्तर सत्तर स्वाद जो पाए।
जहँ जहँ जाइ के परै जुड़ाई। इंछा पूजै ग्वाइ अघाई।
अन चाखे चाखे (!) फिर चाखा। सब अस लेब अपरस रस राखा।
जनम जनम कै भूख बुझाई। भोजन केरे साथै जाई।

जेंवन अँचवन होइ पुनि पुनि होई खिलवान।
अमृत भरा कटोरा पियौ मुहम्मद पानि॥

[४८]

एक अमृत औ बास कपूरा। तेहि कहँ कहा शराब न पूरा।
लागब भरि भरि देइ कटोरा। पुरुब ग्याँन अस फर महोरा।
ओहि कै मिठाइ भाति एक दाऊँ। जनम न मानब होइ अब काहूँ।
सचु मतवार रहब होइ मर्दा। रहस [औ] कोड़ सदा सरबर्दा।
कबहुँ न खोवै जनम खुमारी। जनौ बिहान उठै भरि मारी।
ततखन बासि [बासि] जनु घाला। घरी घरी जस लेब पियाला।
सबहि क भा मन सो मधु पिया। तब औतार भवा औ जिया।

फिरै तँबोल माया सै कहब आपुन लेइ खाउ।
भा परसाद मुहम्मद उठि बिहिस्त मौं जाउ॥

[४९]

कहब रसूल बिहिस्त ना जाऊँ। जब लै दरस न तुम्हार न पाऊँ।
उघर न नैन तुमहिं बिनु देखे। सबहि अँबिरथा मोरे लेखे।
तौ लै केउ बैकुंठ न जाई। जौ लै तुम्हरा दरस न पाई।
करु दीदार देखौं मैं तोहीं। तौ पै जीउ जाइ सुख मोहीं।
देखे दरस नैन भरि लेऊँ। सीस नाइ पै भुइँ कहँ देऊँ।
जनम मोर लागा सब यारा। पलुहै जीउ जो गीउ उभारा।
होइ दयाल करु दिस्टि फिरावा। तोहि छाँड़ि मोहिं और न भावा।

सीस पाइ भुइँ लावौं जो देखौं तोहि आँखि।
दरसन देखि मुहम्मद हिये भरौं तोरि साँखि॥

[५०]

सुनौ रसूल होत फुरमानू। बोल तुम्हार कीन्ह परमानू।
तहाँ हुतेउँ जहँ हुतेउ न ठाऊँ। पहिले रचेउँ मुहम्मद नाऊँ।
तुम निनु अनहुँ न परगट कीन्हेउँ। सहस अठारह का जिउ दीन्हेउँ।
चौदह खंड उतर फ रारोडेउँ। नौंद चलाइ भेद यहु भाखेउँ।
चार फिरिस्ते बड़े औतारेउँ। सात खँड बैकुंठ सँवारेउँ।
सवा लाख पैगंबर सिरिजेउँ। कहि करतूति उन्हहि धै बंधेउँ।
औरन्ह का आगे निति लेखा। जेनना सिरजा को ओहि देखा।

तुम तन एता सिरिजा आइ कै अंतर हेत।
देखहु दरस मुहम्मद आपनि उमत समेत॥

[५१]

सुनि फुरमान हरख जिउ बाढ़े। एक पावँ से भए उठि ठाढ़े।
झारि उमत लागी सब नारी(तारी?)। जेवा सिरिजा पुरुख औ नारी।
लागे सब से दरसन होई। ओहि बिनु देखे रहै न कोई।
एक चमकार होइ उजियारा। छपै बीजु तेहि के चमकारा।
चाँद सुरुज छपिहैं बहु जोती। रतन पदारथ मानिक मोती।
सो मन दिपैं जो कीन्ह थिराई। छप सो रंग घात पर आई।
ओहु रूप निरमल होइ जाई। और रूप ओहि रूप समाई।

ना अस कबहूँ देखा न केऊ ओहि भाँति।
दरसन देखि मुहम्मद मोहि परे बहु भाँति।

[५२]

दुइ दिन लहि कोउ सुधि न सँभारे। बिनु सुधि रहे ना नैन उघारे।
तिसरे दिन जिबरैल जो आए। सब मधु माते आनि जगाए।
जेहि भेदियहि सुदरसन राते। पड़े पड़े लोटैं जस माते।
सब अस्तुति कै करैं बिसेखा। अैसा रूप हम कतहुँ न देखा।
अब सब गएउ जनम दुख धोई। जो चाहिय हठि पावा सोई।
अब निहचिंत जीउ बिधि कीन्हा। जौ पिय आपन दरसन दीन्हा।
मन कै जेति आस सब पूजी। रहे न कोउ औ आस गति दूजी।

मरन गँजन औ परिहँस दुख दलिद्र सब भाग।
सब सुख देखि मुहम्मद रहस कोइ जिया लाग॥

[४३]

जिबराईल कहँ आयसु होई। अछरिन्ह आइ आगे पथ जोई।
उमत रसूल केर पहिराउब। कै असवार बिहिस्त पहुँचाउब।
सात बिहिस्त बिधिनै औतारा। औ आठए सदाद सँवारा।
सो सब देब उमत का बाँटी। एक बराबरि सब का आँटी।
एक एक का दीन्ह देवासू। जगत लोक बिरसैं कैलासू।
चालिस चालिस हूरैं सोई। औ सँग लागि बियाही जोई।
औ सेवा का अछरिन केरी। एक एक जनि का सौ सौ चेरी।

अैसे जतन बियाहैं जस साजै बरियात।
दूलह जतन मुहम्मद बिहिस्त चले बिहँसात॥

[४४]

जिबराईल तात कहँ धाउब। जौलहि आनि उमत पहिनाउब।
पहिरहु दगल सुरँग रंग राते। करहु सोहाग जनहु मद माते।
ताज कुलाह सिर मुहमद सोहै। चंदन बदन औ कोकब(कोकिल?)मोहै।
न्हाइ खोरि जस बनी बराता। नबी तंबोल खात मुख राता।
तुम्हरे रुचे उमत सब आनब। औ सँवारि बहु भाँति बखानब।
खड़े गिरत उधमाते अैहैं। चढ़ि कै घोड़न का कुदरैहैं।
जिन भरि जनम बहुत हिय जारा। बैठइ पाँएउँ दुइ जन पारा।

जैसे नबी सँवारै तैसे नबी पुनि साज।
दूलह जतन मुहम्मद बिहिस्त करै सुख राज॥

[४५]

तानब छत्र मुहम्मद माथे। औ पहिरै फूलन्ह बिनु गाँथे।
दूलह जतन होब असवारा। लिए बरात जैहैं संसारा।
रचि रचि अछरिन्ह कीन्ह सिंगारा। बास सुबास उठै महकारा।
आज रसूल बियाहन अैहैं। सब दूलह दुलहिनि सो नैहैं।
आरति करि सब आगे अैहैं। नद सरोद पुनि सब मिलि गैहैं।

मँदिलन्ह होइहि सेज बिछावन। आजु सबहि के मिलिहैं रावन।
बाजन बाजे बिहिस्त दुवारा। भीतर गीत उठै झनकारा।

घनि घनि बैठीं अछरीं बैठि जोहैं कैलास।
बेगइ आउ मुहम्मद पूजै मन कै आस॥

[४६]

जिबरईल पहिले. से जैहैं। जाइ रसूल बिहिस्त नियरैहैं।
खुलिहैं आठौ पँवरि दुवारा। औ पैठे लागे असवारा।
सकल लोग जब भीतर जैहैं। पाछे होब रसूल सीधरैं(सिधैहैं?)।
मिलि हूरैं नेवछावरि करिहैं। सबके बदन फूल रस झरिहैं।
रहसि रहसि तिन करब किरीरा। अगर कुमकुमा जो भरि सरीरा।
बहुत भाँति कर नंद सरोदू। बास सुबास उठै परमोदू।
अगर कपूर बेना कस्तूरी। मँदिल सुवास रहब भरपूरी।

सोवन आजु जो चाहै साजन मरदन होइ।
दीन सोहाग मुहम्मद सुख बिरसै सब कोइ॥

[४७]

पैठि बिहिस्त जौ नौ निधि पैहैं। अपने अपने मंदिल (सीधरैंसिधै हैं?)।
एक एक मंदिल सात दुवारा। अगर चन्दन के लाग केवारा।
हरे हरे बहु खंड सँवारे। बहु [त] भाँति दइ आपु सँवारे।
सोनै रूपै घालि उँचावा। निरमल कुहुकुहु लाग गिलावा।
हीरा रतन पदारथ जरे। तेहिक जोति दीपक जस बरे।
नदी दूध कै अँतरिख कै बहैं। मानिक मोति परे भुइँ रहैं।
औ परि गा अब छाह सोहाई। एक एक खंड चहा दुनियाई।

तात न जूड़ न गुनगुन दिवस राति नहिं दुक्ख।
नींद न भूख मुहम्मद सब बिरसैं अति सुक्ख॥

[४८]

देखत अछरिन केरि निकाई। रूप ते नोहि रहत मुरझाई।
लाली करत मुख जोहत बासा। कीन्ह चाहैं किछु भोग बिलासा।
हैं आगे बिनवैं सब रानी। औंर हम सब चेरिअ की रानी।
यहि सब आवैं मोरे निवासा। तुम आगे तो अपनि कैलासा॥

जहाँ अस रूप पाट परधानी। औ सबहिन्ह चेरिन कै रानी।
बदन जोति मनि माथे भागू। औ विधि आगर दीन्ह सोहागू।
साहस करैं सिंगार सँवारी। रूप सुरूप पदुमिनी नारी।

पाट बैठि बैठीं जो हिये हँसि जारैं माँस।
दीन दयाल मुहम्मद मानी भोग विलास॥

[५६]

सुनि अस रूप विहसी बहु भाँती। इनहिं चाहि जो हैं रुपवाँती।
सातौं पवँरि नखत मन मेखत (पेखव?)। सातौं आयसु कौतुक देखव।
चले जाव आगे तेहि आसा। जाइ परब भीतर कैलासा।
तखत बैठि सब देखब रानी। जीवहि सब चाहि पाट बड़ मानी।
दरसन जोति उठै चमकारा। सकल बिहिस्त होइ उजियारा।
बारह बानी सरि हो सुबरना। तेहि का चाहि रूप अति लोना।
निरमल बदन चंदन कै जोती। सबकै सरीर दिपै जस मोती।

बास सुबास तस छूवै बेधि भँवर कहि जाव।
बर सो देखि मुहम्मद हिरदै माँ न समात॥

[६०]

पैग पैग जस जस नियराउब। अधिक सवाद मिलै कर पाउब।
नैन समाइ रहे चुप लागे। सब के आइ लेइहैं होइ आगे।
बिरसहु दुलहिनि जोबनबारी। पाएउ दुलहिनि राजकुमारी।
एहि माँ सो कर गहि कै लेइहैं। आधे तखत पर लै बैठैहैं।
सब अछूत तुम का भरि राखे। यहै सवाद जोरे जौ चाखै।
निति पिरीति निति नव नव नेहू। निति उठि चौगुन जोरे सनेहू।
नित्त अनित्त जो बारि बियाहै। बीसौ बीस अधिक ओहि चाहै।

तहाँ न मीचु न नींदु दुख रह न देह माँ रोग।
सदा अनंद मुहम्मद सब सुख माते (मानै ?) भोग॥

——

म हरी बाईसी

[१]

सुनो विनति मैं किरति बखानौं महरा जस महराई रे।
गयेउ केवट को नाव चलावै को लागेउ गहराई रे॥
कोइ गुन लाइ पंथ सिर धुनहू चला डोर गुन खींचइ रे।
तीर नीर उथलैं भै सोई गहिरैं तौ फल पाँचइ रे॥
कोइ तरवार सूति अस कहतौं भाव भीर मन माने रे।
काहू फंद तिरिस्ना देखा परा जाल अरुझाने रे॥
काहू समुँद माँह बुड़कावा ढूँढि सिस्ट लै आनेउँ रे।
कोइ टकटोरि छूँछ होइ बहुरा हाथ छार पछतानेउँ रे॥
कोई औघट हारिगा बहुरत रहा बीच होइ ठाढ़ो रे।
कोइ अवगाह परा गहिरे में सो भल आहि जो काढ़ो रे॥
कोइ लै थाह उठा पानी सौं तीर तीर बहि लागें रे।
कोइ सत छोड़ि दिसउ गहिरे पुनि गा हर दिसि चह खाएँ रे॥
कहै मुहम्मद रहो सम्हारे पाव पानि मैं घालें रे।
टोइ टोइ भुइँ पाँव उठाओ नाहिं तो परिहौ खालें रे॥

[२]

वार भए जो पंथ तिहारे अहै पार जेहि जाना रे।
चढ़ेउ जो नाव पार सो उतरेउ नाहिं तो मन पछिताना रे॥
ऊभि बाँह कै ठाढ़ पुकारै केवट वेगि न पावसि रे।
लहै लोरु बहु मूरख आया पै पुनि कहँ चढ़ै बतावसि रे॥
दूरि गौन साँभर जहँ साईं तू बुड़ढा (!) भा डोलै रे।
चेति चलावै सोइ न बोई केवट गरब न बोलै रे॥
जेहि अस बूझ सूझ मारग कै गाँठि सोधि कै आवा रे।
माँगत दान दीन्ह जेहि पहिले तेहि धरि बाँह चढ़ावा रे॥
औ‌र अस्तुनी पाँय परि बिनवै बिनती किए न मानै रे।
रंचहु रहा न कीन्ह चिन्हारी अब कैसे पहिचानै रे॥

भाइ बंधु औ मीत सँघाती सो न मिलै जेहि चाहै रे।
दरब हुते मन कुरवै अकेला कोई तेहि निरवाहै रे॥
कहै मुहम्मद पंथ न भूलउ आगें अइस उतारा रे।
सो कै चलहु पार जेहि उतरहु नत बूड़हु मँझधारा रे॥

[३]

चढ़ि कै नाव भरम जेहि माहीं जो लगि पार न लागै रे।
मारै मंछ जाइ भरि झोंका माँझधार होइ खाँगै रे॥
बहुत घाट भइ भादौं नदिया गुरू बूझि जनि बूझहु रे।
फैलव कहाँ कहाँ होइ लागै यहु मन सोच न सोचहू रे॥
उठहि पवन औ समुँद हिलोरैं पवन बात खट डोलै रे।
देखि वार जिउ छिन छिन कंपै कौन भरोसें बोलै रे॥
कछु औ सूस चहूँ दिसि उठईं मगरगोह घरियारा रे।
होइ मँझधार डरावन लागै कैसें उतरब पारा रे॥
करिया पोढ़ करहु जिनि डोलै सिअर डाँड़ तेहि लाइहि रे।
केवट हीं गहू लाइ चित्त कहुँ गुन गहि तीर लगाइहि रे॥
ऊँच करार चढ़त दुख होइहि धाइ तीर जनु खाइहि रे।
जेहि खन तीर लै [?] लाइहि पैठि पेट जिउ आइहि रे॥
कहै मुहम्मद धुंध सबाई सुनौ मूढ़ बुधि अइसें रे।
छाड़हु मोह एक चित बाँधहु पार उतारै जइसें रे॥

[४]

धीमे चलहु धीर मन कीन्हें जस बक नाउँ उचारी रे।
धरम करै लीले सैं काटै को ओहि जाहि न टारी रे॥
जौ लगि राति नींद नहिं साधे दिन नहिं करहि रहतरा रे।
तौ लगि मछरी वार पार नहिं लागै जो कीजै सो पहरा रे॥
मेलि सिरिट चारहि चित बाँधहु रहा दिरिट मन लाएँ रे।
जस दुख देखि रहँट बहु ऊ.र तस सुख होइहि बाएँ रे॥
जौं खुटकार वेगि ना लागै हिएँ निवारहु कोहू रे।
गाढ़ डोर ढील कै खींचहु तौ पै पावहु रोहू रे॥
नाहिं तो घोर रूप लै भेंटेउ नदी भई जहाँ सूते रे।
कहुँ कोओ सवार सब नगरी पावहु खेव किमि मूते रे॥

कहै मुहम्मद यह समझौता समझु मूरुख अब ताईं रे।
चैन नाहीं आए डिगा वासों तें बैठो सुरताई रे॥

[५]

जेहि अस साध होइ गहि की औ चाहै जो राखा रे।
चढ़हि तुरंगै तो बौराई लीन्हें हाथ बघारा (?) रे॥
कौड़िया लोभ मरत मछरी के अमर जाल धरि घाला रे।
बहुत पसार सकति वहि भँवरी परा जीउ कर लाला रे॥
महरहि भली खेल यहु चाँचरि जेइ रे खेल अस खेला रे।
मछरी डारि मेलि पाले (पानी!) में देखै चरत अकेला रे॥
लै लौका रे जाल पसारै रहै खंड खंड ताना रे।
लावै फंद टूट तस मेरवै तिरवारी औंर छाना रे॥
लै एक चाल मेलि बाने पानी?) में तस धरि हाथ फिरावै रे।
पढ़िना परा जाइ जल तजि कै सत कै जाइ फँदावै रे॥
चा (?) भेद रूप लाइ भुइं डाँड़ा सकति हाँक लै आवै रे।
जो पुनि माँछ जाइ कै छूटै सब जिउ जाइ गँवावै रे॥
कहै मुहम्मद काल अहेरी वहि सौं काउ न बाँचो रे।
सबहीं तारि रहा थिर अपुना सोंह बोल वहु साँचो रे॥

[६]

जेइ रे टोह मछरी बड़ि पाई सो तीरे लाग छनावै रे।
गुरू घेरि तीनहि लै जो रे हिलि कै कतहुँ खसावै रे॥
गरुवे ताप लाइ भुइँ जो रे [?] संग औ मुकरी रे।
घालि हाथ ढ़ूँढ़ु सैं जेहि के नाथ छहंदह अँगुरी रे॥
वार पार लै लावहि भौंरा जोट घड़े सब बैठे रे।
खिन एक देखि चलै खुटकारी पुनि सब घालि समेटै रे॥
पलना अहै पाल चलि आगे तीर तीर कस टोवसि रे।
उलले रहसि बरिस जिन घर बिनु मंत हाथ भुकि घोरसि रे॥
गहे गहाइ तीर लै लाएसि लाग लोग सब बीनै रे।
जे पावा तेहि तहाँ छपावा बरनि न पावै छीनै रे॥
जे संजुत अगुमन कै राखा फिरा मंछ लै दहरी रे।
जेहि के हाथ पाँव कछु नाहीं लाग धरै सो सहरी रे॥

कहै मुहम्मद तहाँ न पारे जहाँ न लहरि बुड़ाई रे।
जहाँ मान आपन नहिं देगे लापन छाँड़ पराई रे॥

[७]

है कापर झाँगर अरुझाना सकहुँ त चलहु छुँड़ाई रे।
एक राह जो गुरू बताई साथ पाँच ममुहाई रे॥
बरजत रहहु होइ जनि करकच करहुँड कौन झँकारे रे।
... ... *

मनुवहिं गहो रहिअ मन मारे खोझहु खोझि न बोलिअ रे।
मनुवा मीत मिलाइ न छोड़ै कामों(?,काहुँ न खोलिअ रे॥
भोगहिं भूलि भुगुति नहिं भूलहु जोग जुगुति पुनि साधहु रे।
जो एहि भाँति करहु मतवारे तौ मद सौं चित बाँधहु रे।
नाहिं तौ ठाकुर है अति दारुन करहु धार कोइ धारी रे।
मारहु बाँधि डाँड़ कै लेहू निसरहिं सब मतवारी रे॥
जबहिं सोंटिया आइ तुलाइहि सांगि परह पर टूटिहि रे।
भाइ बंधु ठाढ़हिं सब देखें काहू के कहे न छूटिहि रे॥
लै घिसियाइ चलहिं राउर कहँ उतर देत मुँह मारिहि रे।
कुइवा लोग कहा नहिं लागे कहे न को उर पारिहि रे॥
कहै मुहम्मद सो मतवारा जो पिउ के मदमाते रे।
वाकर पिया नीक मोहिं लागै नाहीं तो झूठे नाते रे॥

[८]

हुडुक झाँझ सब बाजत आवहिं औ घेरा सब नाचै रे।
चढ़ि कै दूलह ब्याहन आवै दुलहिनि बहु रंग राचै रे॥
रहस कोड सब महरी गावहिं सब कर अइस वियाहू रे।
नैहर छाँड़ि चलब अब सोहरें समुझि परै नहिं काहू रे॥
बात सुनहु तुम्ह सखी सहेली सत गोलौं तुम आगे रे।
सँवरि सेज मन पियकै डरपौं रहै खुरुक जिम लागे रे॥
गीत बाद मोहिं कछू न भावै हौं तेहि संग नगाई रे।
कंत बाँह धरि पूँछै बैना कहा कहब तेहि ठाईं रे॥

---

* यह पंक्ति प्रति में नहीं है।

इहाँ खेलि लेहु जो खेलन उहाँ खेल कस होई रे।
सास ननँद देइहैं उलहाना लाज रहब मुँह गोई रे॥
देवर जेठ केर सुनतहि सनका निसरि होब तहीं ठाढ़ी रे।
गुनवर ससुर देखि कस बोलब निसि दिन घूँघट काढ़ी रे॥
कहै मुहम्मद सोइ सुहागिनि जो अइसै पिउ रावै रे।
नैहर केर होइ गुनवंती तब ससुरें सुख पावै रे॥

[६]

सखी सहेली सुनहु सोहागिनि सब केउ अइसि बियाही रे।
नैहर दिवस चारि लै रहना ससुरें ओर निबाही रे॥
जनमत दुइ बटवा होइ जाहीं अस चरित्र बिधि खेला रे।
दुइ दुइ लाइ जगत सब जोरा आपुन रहा अकेला रे॥
सरग लाइ धरती सों जोरा चंद सूर दुइ कीन्हे रे।
दिन औ राति भोर औ साँझा सेत स्याम दुइ चीन्हे रे॥
भै इस्तिरी पुरुख दुइ हौं लै ईसर गौरा सानेउ रे।
उहाँ सबद एक सुना स्रवन दुइ जब दुइ मथवा बाजेउ रे॥
चले लखपती होइ दुइ भारा भारदुख सुख कर लीन्हा रे।
जो नहिं होत बरन दुइ प्रगटे कहा कहिअ सो कीन्हा रे॥
हिंदू तुरुक दोउ पर देखौं जो बारा सो व्याहा रे।
बूझि बिचारि देखु मन अपने भए जनम कर लाहा रे॥
कहै मुहम्मद दुइ जग तारे लीन्हे पिउ कर आएसु रे।
जेहिं जेहिं पँथ चलावै सजना हठि हठि मारग जाएसु रे॥

[१०]

सुनि रे अयाने होइ हुसियाले गुरू ग्यांन मति लीन्हे रे।
चलि पनिहारी परग सँभारी पानि भरन जब दीन्हे रे॥
होइ सँग साथी घालैं माथैं रहसि चतुर भइ नागरि रे।
मारग आवत बाँह डोलावत चित सों टरै न गागरि रे॥
बात सखी सें मन गागरि सों तेहि बिधि चिचन डोलै रे।
जो जब छूटै गागरि फूटै पानी जाइ पिउ बोलै रे॥
गुपुत रहहु तस लखै न कोई रैनि चोर दिन साहू रे।
करनी के खेत न होइ बरक्कत हसद न दीजै काहू रे॥

मन महँ चहिअहि करै मंत यह करि रिन काहू पूँछै रे।
भरी जो ढारी सकति अधारी भरे बहुत दुक्ख छूँछै रे॥
भई जनायन सुनि पिय रावन बूझहि मतह बिचारी रे।
हिरदैं राखहु सब रस चाखहु होहु सोहागिनि नारी रे॥

[११]

देखहु पिय सेवक जेहि सह सेवक बदे न काहू घेरा रे।
तौ पिउ पाइअ जो मन लाइअ रहिये निम दिन सेरा रे॥
जिन जग बाँहे सब सुख चाहे भेंटे दै के निबाहे रे।
जो निस्तारैं पार उतारै नत बूड़ै अवगाहे रे॥
कोइ एक टेकैं अइस आइकैं अपने रँग कर राजा (राचा?) रे।
जीउ आहि अस राज रजाएसु तेहि सिंगार सब छाजा रे॥
सब सिंगार पुनि करब करब जनु अधिक भएउ हो आगे रे।
टार सोहागिनि करै दोहागिनि अंग दुक्ख नहिं लागै रे॥
कहै मुहम्मद बेगि करहु सुधि सुनहु न बचन हमारा रे।
पग पग तेरे आवै देरी बेगि करहु सिंगारा रे॥

[१२]

साजहु माँग झारि दुइ पाटी चतुरि न चीर सवारहु रे।
बेनी गूँथहु ईंगुर लावहु रचि रचि सेंदुर सारहु रे॥
अंजन तैस करहु दुइ नैना खंजन उपमा पूजै रे।
केहरि लंक बनी छुद्रावलि कुँजर सिंघ सो गूँजै रे॥
दुइ भौंहनि सारँग अस्थापहु दुइ कर कँगन कलाई रे।
निहकलंक ससि तिलक सँवारहु चहुँदिसि नखत तराई रे॥
दुइ कानन कुंडल पहिरहु औ लाइ बिज्जु चमकारा रे।
भीतर नाक दिपै गज मोती सोहै सोहिल तारा रे॥
कोकिल कंठ सँपूरन अभरन हिरदै हार बिसाला रे।
दोउ कुच बीच बनी रोमावलि चंप कुसुम कै माला रे॥
दुइ पायन पायल औ घूरा अस कै कीन्ह सिंगारा रे।
काया साजि माँजि कै दरपन देखै सबहि सिवारा रे॥
कहै मुहम्मद कौन सुनै दुइ दुइ जग से सब जानेउ रे।
दाहिन बावँ बूझि कै होइ रहु तौ आपुहि पहिचानेउ रे॥

[१३]

साजहु साजहु होउ चहूँ दिसि गै बरात निअराई हो।
सुनि पिय केर गहगहे बाजन धिक धिक जीउ चुराई हो।।
खिन खिन असुवा दुरि दुरि आवहि ले चला मँदिर गोसाई रे।
बिछुरहिं बाप भाइ महतारी समुझि न रहै रोवाई रे।।
लाग बरावी भीतर पैठे अब मिलि लेहु सहेली रे।
तुम ठाढ़े सब घूँघट देखहु हौं धनि देव अकेली रे।।
चाहिअ चित्र भोग मत बिसरहु बाउर होइ जिउ जाई रे।
हँसि हँसि कंत बात जो पूँछहि रोइ रोइ उत्तर पाई रे।।
वासों प्रीति पेट भरि करिहौ जो ओहि के मन भाई रे।
पिय कर खेल मरन धनिआ कर बोले कछु न बसाई रे।।
जा तिस नगर ठौर है मुहमद मनुवाँ सो निति जूझै रे।
मारे मरै न मान मनोरथ बाउर कभी न पूजै रे।।

[१४]

निचिंत रहिउँ जानि नहिं पाइउँ आए खटोलिनहारा रे।
ठावँहिं ठावँ रहा सब अस पुनि सुनि पिय केर कहाँरा रे।।
समदि तू लोक को मीत भाइ बंधु तैं [न ?] नियर ठहरावे रे।
अब नैहर तजि भई पराई चला लोग पहुँचावै रे।।
ये ही पर दिन दस परहेली रही पीउ आधारी रे।
अस्थिर ठाउँ तहाँ अब गौना जहाँ जाइ जम बारी रे।।
डाँड़ी फाँदि बेगि तहँ आनी चलहु चलहु सब आवे रे।
लै चढ़ाइ पिउ चला सूख रस घटहि जो कित कोउ राखै रे।।
करवत देइ बहुरि नहिं पारै साँकर होइ खटोला रे।
बोलि न सकै सजन जन गोहने घूँघट जाइ न खोला रे।।
कहै मुहम्मद सुदिन सँवारहु धरी न जो बिसराहू रे।
सो कै चलहु पार जो उतरहु न त पाछें पछिताहू रे।।

[१५]

खेत जाइ आगे भा घेरा जस आगे वहि सूझे रे।
अगुवा कहै करै सो पिछुवा आगू कहै सो पूँछै रे।।

मन महँ पहिअहि फरै मंत यह करि जिन काहू पूँछै रे।
भरी जो ढारी सकति अधारी मरे बहुत दुक्ख छूँछै रे॥
भई जनायन सुनि पिय रावन बूझहि मतह बिचारी रे।
हिरदै राखहु सब रस चाखहु होहु सोहागिनि नारी रे॥

[११]

देखहु पिय सेवक जेहि सह सेवक बदे न काहू चेरा रे।
तौ पिउ पाइअ जो मन लाइअ रहिये निस दिन सेरा रे॥
जिन जग वाहै सब सुख चाहै भेंटे दै कै निबाहै रे।
जो निस्तारै पार ततारै नत थूड़ै अवगाहै रे॥
कोइ एक टेकै अइस आइकै अपने रँग कर राजा (राचा?) रे।
जीउ आहि अस राज रजायसु तेहि सिंगार सब छाजा रे॥
सब सिंगार पुनि करब करब जनु अधिक भएउ हौ आगे रे।
टार सोहागिनि करै दोहागिनि अंग दुक्ख नहिं लागै रे॥
कहै मुहम्मद वेगि करहु सुधि सुनहु न बचन हमारा रे।
पग पग तेरे आवै देरी बेगि करहु सिंगारा रे॥

[१२]

साजहु माँग झारि दुइ पाटी चतुरि न चीर सँवारहु रे।
बेनी गूँथहु ईंगुर लावहु रचि रचि सेंदुर सारहु रे॥
अंजन तैस करहु दुइ नैना खजन उपमा पूजै रे।
केहरि लंक बनी छुद्रावलि कुँजर सिंघ सो गूँजै रे॥
दुइ भौंहनि सारँग अस्थापहु दुइ कर कँगन कलाई रे।
निहकलंक ससि तिलक सँवारहु चहुँदिसि नखत तराई रे॥
दुइ कानन कुंडल पहिरहु औ लाइ बिज्जु चमकारा रे।
भीतर नाक छिपै गज मोती सोहै सोहिल तारा रे॥
कोकिल कठ सँपूरन अभरन हिरदै हार बिसाला रे।
दोउ कुच बीच बनी रोमावलि चंप कुसुम कै माला रे॥
दुइ पायन पायल औ चूरा अस कै कीन्ह सिंगारा रे।
काया साजि माँजि कै दरपन देखै सबहि सितारा रे॥
कहै मुहम्मद कौन सुनै दुइ दुइ जग से सब जानेउ रे।
दाहिन बावँ बूझि कै होइ रहु तौ आपुहि पहिचानेउ रे॥

भयेउ नियान तहाँ मति(?;मंडप महं सकति आनि हिय फेरी रे।
पूजा पाती देयस न राती सय मानै चहुँ फेरी रे॥
कंत निबाहै दुलहिनि चाहै पहिले तस वहि पासा रे।
संग सहेली रहाँ अकेली तौ पूजै मन आसा रे॥
अवधू अथिरे धूइहु सतरे जौ लहि हो भिनुसारा रे।
पुनि हम आउब आनि उठाउब लै जाउब घर वारा रे॥
अस कहि कोई रात दरोचे (?) देखै बज्र किवारा रे।
मंडप महँ मैं फिरब सकाना नगर आव अँधियारा रे॥
कहै मुहम्मद सँवरहु ओही जो वहि भार बहु खाँचे रे।
मुवसि न जौलहि मरा न तौ लहि जा मरि जिअै सो नाँचे रे।

[१८]

आए जन दोइ देखत हौं जोइ धाइ रहे मेरे द्वार रे।
धरि हथियारन आवहिं मारन पूँछन पिअ के सिवार रे॥
कंत तुम्हारे को कहु नाऊँ बसै तोर जिउ काहे रे।
का गुन गहती गहि जत दहती अपने नैहर माहे रे॥
कहँ संग खेली कस दिन पेली हास जो बारी भोरी रे।
कै संजुत अब चलहु बहुत पै चहुँ पिउ लावै खोरी रे॥
को तोर आगु आगु तोर पछुवा को आहै दिसि तोरी रे।
कौन पेम जो कुसल खेम आए अन्हवारा जोरी रे॥
हिय यहु मान केवट पुनि जागै उहाँ चाह सब काहू रे।
जो मोहिं परसै सब सुख विरसै कहा गौन जिमि ब्याहू रे॥
पूछौं हौं अब उत्तर देइत मोख मुकुति नहिं देऊँ रे।
नातर एक कला उन ताहीं मारि मारि जिउ लेऊँ रे॥
कहै मुहम्मद समुझहु मूरुख सो बेदन सो पीरा रे।
सोइ सम्हारहु आपुहिं तारहु गुन गहि लावहु तीरा रे॥

[१९]

अस फिरि घाव अँगइत पावा मूढ़ सँवारहि ठाऊँ रे।
सो सँवरत छिन उठहि अगति मन जेहि खोलै पिय नाऊँ रे॥
पिय मोर महरा गुन मोर गहरा जिउ मोहि दीन्ह गोसाईं रे।
एक जो कहेउँ और नहिं चीन्हहुँ दीन्ह कस दोस रिसाईं रे॥

गहि लगि दहिने मुहँ टेकी यूड़ा पाउँ उठावहु रे।
अधा रे मन के है जागे सो तेहि लाभहि पावहु रे॥
उपर घाम तर भूँभुर होइहि छाँह न कतहूँ पाई रे।
लगते झकोला अधिल दुख धाजा भेंट ना पुनि महतारी रे॥
कस अस जानि पसीजहु कछु कस ना छतरी जहँ छाई रे।
धूम बरन धुँधरा सब दीखै सो रे सजन कर गाऊँ रे॥
तहवाँ जात नीक मोहिं लागै जो निदहत तेहि ठाउँ रे।
त्रिस्ना नगर नाँघत दुख होई पैग पैग बिसँभारी रे॥
कहै मुहम्मद भार न लीजै खिन अपने गरुवाई रे।
चलत बाट फुनि दूभर होई ममुझि परै तेहि ठाईं रे॥

[१६]

आइहि सुतार जो सत्त बना है नैहर मे लरिकाई रे।
थारि बैसि के खोट गहे लिहे अब तस करब गोसाई रे॥
जो समुझहि ना तूँ मन बहुता तब के गरब तो लाए रे।
कहा न सुनते ओइ फिर दहते कछु न होइ पछिताए रे॥
कहन न ओाता रिस का बूझा रिस अरे राँड़ की लहुराई रे।
नैन लरे जो देखन पौढ़हि(?) यह कस दोसरि साईं रे॥
भूँजत तेरें डर भा हेरें राखहि सीर (?) गोसाईं रे।
महरी गावत हुडुक बजावत रात करब सब आई रे॥
खिन खिन काँपै औ मुख झाँपै तहाँ न आपन कोई रे।
चहुँ दिसि बूझै कहूँ न सूझै तेहि दुक्ख हौं रोई रे॥
कंत पियारा हो कनहारा हौं धनि निरखन हारी रे।
जो हँसि बैठे सब दुख मेटै तौ पै कुसल हमारी रे॥
कहै मुहम्मद पिउ मद मातेउ कहौ मोर कछु नाहीं रे।
भार जो लादहु सो सत छाँड़हु पुनि पाछें पछिताहीं रे॥

[१७]

सबहीं सेवा दुरा मा जीवौं कासौं कहौं को साखी रे।
घरी जस होई लाग तस ..*फिरि नहिं धधा राखी रे॥

---

*प्रति में यह शब्द छूटा हुआ है।

भयेउ नियान तहाँ मति(?)मंडप महं मकति आनि हिय फेरी रे।
पूजा पाती देवस न राती सब मानें चहुँ फेरी रे॥
कंत नियाहि दुलहिनि चाहि पहिले तस वहि पासा रे।
संग सहेली रहीं अकेली तौ पूजै मन आसा रे॥
अवधू अथिरे यूड़हू सतरे जौं लहि हो भिनुसारा रे।
पुनि हम आउव आनि उठाउव लै जाउव घर बारा रे॥
अस कहि कोई रात दरोबे (?) देखै बज्र किवारा रे।
मंडप महँ मैं फिरय सकाना नगर आव अँधियारा रे॥
कहै मुहम्मद सँवरहु ओही जो वहि भार बहु साँचे रे।
मुवसि न जौलहि मरा न तौ लहि जा मरि जिअे सो नाँचे रे।

[१८]

आए जन दोइ देखत हौं जोइ आइ रहे मोरे द्वार रे।
धरि हथिवारन आवहिं मारन पूँछन पिअ के सिवार रे॥
कंत तुम्हारे को कहु नाऊँ यसैं तोर जिउ काहे रे।
का गुन गहती गहि जत दहती अपने नैहर माहे रे॥
कहँ संग खेली कस दिन पेली हास जो बारी भोरी रे।
कै संजुत अब चलहु बहुत पै चहुँ पिउ लावै खोरी रे॥
को तोर आगु आगु तोर पछुवा को आहै दिसि तोरी रे।
कौन पेम जो कुसल खेम आए अन्हवारा जोरी रे॥
हिय वहु मान केवट पुनि जागै उहाँ चाह सब काहू रे।
जो मोहिं परसै सब सुख विरसै कहा गौन जिमि ब्याहू रे॥
पूछौं हौं अब उतर देइत मोख मुकुति नहिं देऊँ रे।
नातर एक कला उन ताहीं मारि मारि जिउ लेऊँ रे॥
कहै मुहम्मद समुझहु मूरुख सो बेदन सो पीरा रे।
सोइ सम्हारहु आपुहिं तारहु गुन गहि लावहु तीरा रे॥

[१६]

अस फिरि घाव अँगइत पावा मूढ़ सँवारहि ठाऊँ रे।
सो सँवरत छिन उठहि अगति मन जेहि खेलै पिय नाऊँ रे॥
पिय मोर महरा गुन मोर गहरा जिउ मोहि दीन्ह गोसाईं रे।
एक जो कहेउँ और नहिं चीन्हहुँ दीन्ह कस दोस रिसाई रे॥

बैठहु पुरुष के निअहुर पच्छिम उत्तर दखिन भी सोई रे।
यहि विधि चिंता रहती निता सदा इहै दुख रोई रे॥
अगुवा सेवक पिउ के सेवक सूध मारग लै आनेउँ रे।
गुरु जो पढ़ाइउँ नाउ चढ़ाइउँ तीर घाट मैं पाइउँ रे।
अस रँग राती तहाँ न जाती सुनै जहाँ कोउ बोलै रे।
औ पग परिया बिनती करिया कबहूँ नाँव नहिं डोलै रे॥
गहै मुहम्मद बूझि करहु सुधि नेहि चित आँखिन्ह बाँधे रे।
सवति न दूसर बाउल ओसर अस कै पिउ अवराधे रे॥

[२०]

भा भिनुसार अधिकारा होतहिं [*] पाछिल पहरा रे।
दूलह बोलावहु चौक पुरावहु औ हँसि बोला महरा रे॥
हुडुक तबला झाँझ मँजीरा महुवर बाँसुरि बाजै रे।
सबद सोहावा मेहरिन गावा घर घर महरी साजै रे॥
पूजा पाती दुलहिनि राती दूलह भा असवारा रे।
बाजन बाजे कियेउ सब साजे भा सब तत्त पसारा रे॥
मंगलचारा भा चहकारा चले गरब सब केली रे।
...　...　...　...　†
सुंदरि लै लै महरी दही दही राती सबहीं डोली रे।
महा सत भीनेउ भोला तीनौ (?) जस फागुन कै होली रे॥
कहै मुहम्मद मोइ सो रहहु जो दिन आगे आवै रे।
है एकै नग सुँदरी सब जग दीन्ह सोहाग को पावै रे॥

[२१]

जोग चढ़ाइ काँप तब जोरै जो मुख दीपक बारैं रे।
कहा सो नारी खेलनवारा प्रेम प्रीति उजियारैं रे॥
नाउँ ओइ सारा हुवा सम्हारा पूरा सोहार सो बारी रे।
जस भादौं होइ नदिया भारी पुरुख जिवा धनि हारी रे॥
सो धनि बारी है कलवारी सँवारि बेल अस चाखै रे।
जेउँ जेउँ कलियाँ औ रस रलियाँ सेज साजि धनि राखै रे॥

---

*प्रति में यहाँ शब्द छूटा हुआ है।
† प्रति में यह पंक्ति छूटी हुई है।

कान्ह चले तजि सब गयेउ भागी को बजागि [करे ?] बागा रे।
गोकुल छाँड़ा छाए मधुबन छिप कुब्जा पर बागा रे॥
कहै मुहम्मद नारि होइ रा[नी ?] चंत दिस्टि जो पहरे रे।
अधिक बादि (?) कै रहै मकरा दै आनि नियाजै फेरे रे॥

२२

दीन्ह बसेरा गाउँ अस पावा भले भई जस धावै रे।
बेधा भँवर बास रस भूला चहुँ दिसि फँटवा जावै रे॥
बिधि का चरित देइ नहिं जो गति जस भरि रस न पिदार रे।
तरवर डारि देहि लै बैरे बैरै दीन्ह को भँडार रे॥
जोग सेवक आपुन कै जानै तेहि घरि भीख मँगावै रे।
कहता पंडित दुक्ख दरद महँ मुकुत राज घर जावै रे॥
चंदन जहाँ नाग तहाँ बदि कै जहाँ फूल तहाँ काँटा रे।
मधु जहवाँ किन माखी तहवाँ गुर जहवाँ तहँ चाँटा रे॥
करि कुबेर तिरसूल कीन्ह घरि समुँद खार किय पानी रे।
छपद छनार अकेला कीए मेटिका रावत गहि मानी रे (?)॥
कहै मुहम्मद जो रे भलो वड़ धनी गरब धरि घूरा रे।
निहकलंक बस आपु गोसाईं बारह बानी पूरा रे॥

१—मालक मुहम्मद जायसी (एक प्राचीन चित्र)

२—जायसी का घर

३—जायसी की समाधि

४—'पदमावत' की प्रति प्र० १ म
छंद ११७ का पृ

५—'पदमावत' की प्रति प्र० २ में वही

६—'पदमारत' की प्रति द्वि० १ में वही (१)

७—'पदमावत' की प्रति द्वि० १ में वही (२)

८—'पदमावत' की प्रति द्वि० २ में वही

६—'पद्मावत' की प्रति द्वि० १ में वही (१)

७—'पद्मावत' की प्रति द्वि० १ में वही (२)

८—'पद्मावत' की प्रति द्वि० २ में वही

९—'पद्मावत' की प्रति द्वि० ३ में यही

१०—'पद्मावत' की प्रति द्वि० ४ में

—'पद्मावत' की प्रति द्वि० ५ में यही

'...' की प्रति द्वि० ७ में वही

१४—'पदमावत' की प्रति तृ० १ में वही (१

१४—'पदमावत' की प्रति नं० १ में वही (२)

वही " १५ की प्रति नं० २ में वही

१७—'पदमावत' की प्रति तृ० ३ में वही

१८—'पदमावत' की प्रति च० १ में वही

१—'आखिरी कलाम' की लीथो प्रति का एक पृष्ठ

२०—'अखरावट' की हस्तलिखित प्रति का एक पृष्ठ

२२—'पद्मावत' की प्रतियों का प्रतिलिपि-संबंध
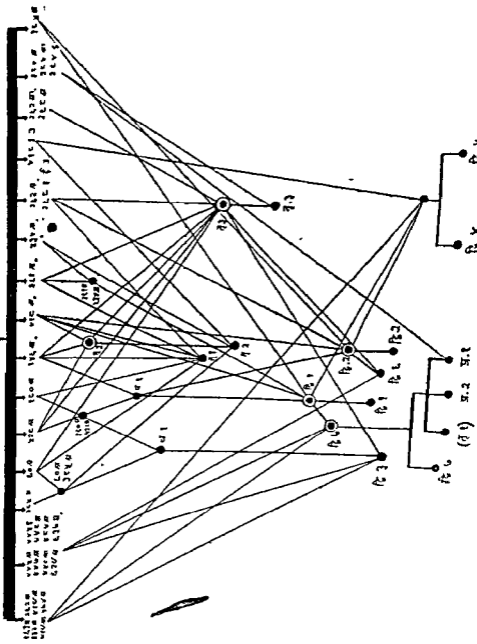
शुद्धि-पत्र

अ. भूमिका और मूल पाठ

पृष्ठ-पंक्ति	अशुद्ध	शुद्ध	पृष्ठ-पंक्ति	अशुद्ध	शुद्ध
४१-२०	सकवनी	लक्तनी	२०८-७	होइह	होइहि
४७-२०	८ २१२.७-९	२१२.७-९	२०९-५१	जोगिन्ह	जोगिहि
४७-२६	रक्ता	रक्त	२२०-१६	मगुमनबूँ भा	मगुमनँबूमा
६२-२८	५२८३	५२८ उ	२३०-१५	राए	राऐ
८२-२३	२६८ अ, इ	२६८ अ, आ, इ	२३२-३	नमो नमो नमो	नमो नमों
८३-२८	२६८ अ	२६८ अ, आ, इ	२४३-३	बिद्दरन	बिद्दुग्न
८६-४	६४१ अ,	६४१अ,६४४अ,आ,	२४८-६	पहुँ	घहुँ
		इ,ई, उ,ऊ,अं,	२४९-६	लन्ह	लीन्ह
		अः, ६४५ अ, आ,	२४९-१५	कीन्ह	कीन्हि
१०८-१५	प्रतिमा	प्रति	२५२-१०	होइ	होउँ
१०९-२४	पेरवन	पेसन	२६०-१०	जियन	जियत
१११-२३	'गथ'	'गठि'	२६७-४	हथि	हाथ
११२-२९	'ओरिग'	'ओरगि'	२७२-९	रात	राति
११४-११	हृदय	हृदय	२७२-१८	धाइ	घाइ
११४-२२	संस्मरण	संस्करण	२८३-२	गरु	गुरू
१२४-१	टटि	टूटि	२९०-११	ललि	लगि
१४४-१२	हँथौडा	हँथौडा (हटौरा ?)	२९४-९	होऊँ	होउ
१४७-१५	सत[१६]सत	सत[१६]	२९८-१२	क्रिस्न	क्रिस्नुन
१४८-७,१५१-८	नित	निति	३०२-८	का	की
१५२-६	उँजियारी	उजियारा	३०९-५	सूरज	सुरुज
१५४-१०	दिया	दिपा	३१०-१३	कँन	कँन
१६४-३,१७०-५	छूँछा	छूँछा	३११-१८	तह	तहाँ
१६८-२	वधु	विधु	३१६-७	सत	सात
१६८-४	साखा	साजा	३१९-८	हुति	हुँति
१७१-१	दहुँ	दहुँ	३२०-१२	जान	जानु
१७१-१६	रजा	राजा	३२५-१०	ा ईं	भाईं
१८५-१६	धुँधुरवारि	घुँघुरवारि	३६१-४	मेरहु	मेरवहु
१८७-६	दइ	दुइ	३६३-११	करे	करै
१८९-७	ठँख	ढंख	३७०-६	दख	दुख
१८९-१५	दखि	देखि	३७३-६	तुन्ह	तुम्ह
१९२-१०	तेहतें	तेहितें	३७४-१४	जीम	बाँमि
१९८-७	का पहँ	पा कहँ	३८०-५	परिरि	परिखि
१९८-१०	नीवी[१६] बंध	नीवी बंध[१६]	३८४-१	परं	परे
२०८-४	काकर	काकरि	३८५-१२	की	[illegible]

पृष्ठ-पंक्ति	अशुद्ध	शुद्ध
३९०-१०	करि	कर
३९३-४	बँध	बंध
३९६-७	न सँगा	नहिं सँगा
३९८-९	सैवा	सेवा
३९९-२४	साँद	समुँद
४०१-२६	स	सो
४०६-४	चेतन	चेतनि
४१०-१	पर्मेरू	परसेरु
४३३-८	दीन्ह	दीन्हि
४३६-४	सिरी	सिरि
४३८-१२	अपन्ह	अधन्ह
४४८-१३	रतनसेन	रतनसेनि
४५१-१४	सुरितानी	सुलतानी
४७१-२	उघा	उगा
४७४-२	कहै, गहगहे	कही, गहगही
४७८-१४	हराएँ	पराएँ
४७९-५, ५३३-२०	जूझ	जूझि
४९०-१	मरेठा	गरेठा
४९८-९	नरि	नहिं
५१२-२४	एक	एइ
५१७-७	प्रीत	प्रीति
५२५-१३ ५२६-९	सूरज	सुरुज
५२६-१४	मत मुनि हम आइ	मति मुनि हम आए
५३९-१	पुरसन्द	पुरसन्ह
५४०-५	स्वामि सँकेरैं	स्वामि सँकरैं
५८८-१४	[४८ ड]	[४१८ ड]
६५१-२५	घीड	घीउ
६६१-१	अपुहि	आपुहि
६७१-१०	गड़ै	बढ़ै
६७०-६	हर	हरै
६७४-८	किया	कया
७०४-२४	लागा सब यारा	लागे सब धारा
७०७-८	(सीधरैं	सीधरैं (

आ. पादटिप्पणी

पृष्ठ-पंक्ति	अशुद्ध	शुद्ध
२९-१	द्वि० १,३,७, तृ० १,२,	द्वि० १,७, तृ० १,२,३,
२७८-५	८. ०३ गए	८. द्वि०३ गए
१९८-११	नीवी	तीवी
२९८-२४	(तिं) सँग बंध	सग
२८१-१९	पं० दिनदि	दिनहि
२९६-१३	द्वि० ६ में एक	द्वि०६, तृ०३ में एक
२९६-१३	तृ० १,३ में दो	तृ० १ में दो
२९८-९	द्वि०२में दो तथा द्वि० ३	द्वि० २,३ में दो
३०२-६	द्वि० ०,५,७	द्वि० ४,५,६
३०२-७	पाँच	पाँच तथा द्वि० २ में छः
३०७-७	प्र० ३,५,७	द्वि० ३,५,६, ७
४०२-१४	इस	इन
४०६-५	प्र० १ में इसके अनंतर चार,	प्र० १,
४१८-१५	द्वि० ४,५,६,७, तृ० १	द्वि० ४,५,
४३७-१०	'करना'	'करन'
४७६-१४	[नहीं है]	*द्वि०१ में इसके अ… तीन अतिरिक्त छंद
५१४-५	[५५१]	[५११]
५२५-१	ती छंद हैं।	तीन छंद हैं। (देखिए परिशिष्ट
५४७-९	जिनमें से	जिनमें से द्वि० ६, ७, तृ० १ में भी
५४८-४	द्वि० ६,(तृ० १)	द्वि० ६,७,(तृ०
५५२-९	पूर्वोक्ति	पूर्वोक्त
५५३-१	६४६	६५०

अनुस्वार और सानुनासिक ध्वनियों के चिह्न प्रायः छूट गए हैं। उन्हें पाठक स्वतः ठीक कर लेंगे।